

॥ श्रीज्ञानकीवल्लभो विनयते ॥

श्रीमदग्राचार्य चरण चंचरीक स्वामी श्रीनारायणदासजी

श्रीनाभा स्वामोजी कृत

भक्त-माल

स्वामी श्रीपियादासजी कृत

भक्ति-रसबोधिनी टीका एवं

श्रीअयोध्या मणिवधतस्य श्रीरामग्रन्थान्गारके संस्थापक मानसतत्त्वान्वेषी

वेदान्तभूषण स्वामी श्रीरामकुमारदासजी कृत

भक्तमाल-भास्कर सहित

जिसको

श्रीअयोध्या ज्ञानकीघाट निवासी साकेतवासी श्रीसंपदापाचार्य

जगदोद्धारक जगद्गुरु अनन्त श्री संवलित स्वामी

पं० श्रीरामवल्लभाशरणजी महाराज के

हार्दिक भावानुसार संशोधित करके

ज्ञानकीदास श्रीवैष्णवने

अर्थ प्रकाशिका टिप्पणी सहित संपादित किया

प्रकाशक :—

ठाकुरप्रसाद एन्ड सन्स बुकसेलर,

राजादरवाजा एवं कचौड़ीगली

वाराणसी ।

मूल्य ३०० रुपये

(पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार प्रकाशकके आधीन हैं)

वाराणसी-संस्कृत-विश्वविद्यालय के अनुसन्धान-विभागाध्यक्ष
पं० बलदेव उपाध्यायजी महोदय की सम्मति



Director

RESEARCH INSTITUTE
VARANASI SANSKRIT UNIVERSITY

VARANASI-2

२६।११।६।१९६५

मैंने श्री जानकीदासजी श्रीतैष्णव द्वारा संपादित 'भक्तमाल' को यद्यतव देखा। ग्रन्थ यह परिश्रम तथा मनोयोग के साथ संपादित किया गया है। प्रियादास जी की प्रख्यात टीका के साथ यह ग्रन्थ पहिले भी प्रकाशित था, परन्तु यह संस्करण इतः पूर्व संस्करणों से अनेक अंश में विशिष्ट है। सम्पादक ने मूल तथा टीका के पाठ संशोधन के निमित्त अनेक प्राचीन हस्तलेखों का भी इसमें विवेक के साथ उपयोग किया है। साथ ही साथ जिन महात्माओं के विषय में प्रियादास जी मौन हैं अथवा स्वल्पाक्षर में ही विवरण दिया है, उनका विवरण यहाँ विशेष रूप से श्री जानकीदास जी ने दिया है। इस प्रकार यह नूतन संस्करण मूल के उपबृंहण के साथ ही साथ प्रियादास जी की टीका का भी उपबृंहण प्रस्तुत करता है। ऐसे सुन्दर तथा विद्वत्तापूर्ण, प्राभाषिक तथा सुविशुद्ध संस्करण के प्रस्तुतकर्ता जानकीदास जी भक्तों तथा साहित्य रसिकों के धन्यवाद के समुचित पात्र हैं। मैं इस ग्रन्थ के बहुल प्रचार की कामना करता हूँ।

बलदेव उपाध्याय

भूमिका

(ले०—परम मनीषी डा० रामतत्वक्याजी शर्मा डि. लिट., प्राध्यापक
हिन्दी विभाग पटना-विश्वविद्यालय, पटना १।)

प्राणी-मान, विशेषतः वपु-धारियों का सिरमौर मानव, स्वभावतः आनन्द-मितापी है, सुखान्वेपी है^१। 'आनन्द' तत्त्व का ही उसमें अभाव जो है। वह आनन्द-स्वरूप परात्पर ब्रह्म की उपासना में निरत रहे अथवा अत्याकर्षक आधिभौतिक सुख की साधना में संलग्न रहे: "मुच्यमानेषु सत्त्वेषु येते मानोद्यसागराः" (बोधिवर्षावतार) एवं "अमृतत्वस्य तु नाशा मनसाप्यस्ति विचेन विचसाध्येन कर्मणेति"^२ (वृ. २।४।२ की जीवन का मूल मन्त्र बनावे अथवा "यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्, अथा कृत्वा मृतं धिमेत्" (चार्वाक) तथा "लाओ, पीओ, मौन करो" की पूर्णतः धार्मिकता करे; उसकी सुख-चिकीर्षा के सम्बन्ध में सन्देह के लिए अवकाश नहीं हो सकता। अस्तु, मानव-जीवन का एकमात्र उद्देश्य आध्यात्मिक सुख^३ किंवा अक्षय्य आनन्द की उपलब्धि है।^४ हाँ, उस एक

१—महाभारत शान्तिपर्व १८०।१२ :- नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्। श्रीमद्भागवत ७।६।१ :- 'दुर्लभं मानुषं जन्म'। पुनः १०।५।१।४७ :- 'लब्ध्वा अनौ दुर्लभं मत्र मानुषम्'। कीटिल १ :- 'नास्तथा पुनरुत्पत्त्यः'। धम्मपद :- 'किञ्चो मनुस्स पटिलाभो। हेमचन्द्र त्रिपिटकालाकापुस्तकचरित :- 'अस्मिन्नपारे संसार पारावारे शरीरिणाम्। महारत्नमिषा उपार्थ्य मानुषमति दुर्लभम्॥' पुनः १।५।५५ :- 'संसार-ध्वाविहा'... 'दुर्लभं मानुषं जन्म, महो रत्नमिषोत्तमम्। मानस ७।४।१७ :- 'वडेभाग मानुष तन पावा। पुनः ७।१२।१६ :- 'नरतन सप्त नहि क्वचिज्ज देहो।

२—महाभारत शान्तिपर्व १६।६२ :- 'सर्वस्य सुखमोषितम्, पुनः १६।०।६-सुखार्थमनिधोयन्ते। महावीर :- 'सन्ने जीवा पिवाउआ सहसाया दुक्ख पविकूला।

ALBERT EINSTEIN 'Out of my Later years. (London, 1950) P. 15 We all try to escape pain and death, while we seek what is pleasant,

३—तै० उ० १।६ :- आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्। आनन्दादर्थेव खलितमानि भूतानि जायन्ते। आनन्देन जातानि जीवन्ती आनन्दं प्रयत्यमि संशिशन्तीति" पुनः २।७।६, २।६। वृ० उ० १।६।२८ :- 'विज्ञानमामन्दं ब्रह्म'। ब्र० सू० १।६।१२ :- 'आनन्दमवोऽभ्यासात्'। अग्नि पु० १।११ :- 'आनन्दः सत्त्वस्तस्य व्यज्यते सकदाचन। सुरागार १०।१०।६ या ७२।७२ :- 'सकल सुखकी सीव। मानस १।१६।७।६ :- जो आनन्द सिधु सुहराशी। सीकरतै त्रैलोक्य सुपावी। सोसुखधाम राम असनामा।

४—गीता ६।२१ :- सुखमात्यन्तिकं... ५—तिलक गीतारहस्य प्र० ४।५।

ही लक्ष्य तक पहुँचने के हेतु, देश-काल-पात्र-भेद से, भिन्न-भिन्न मार्ग आविष्कृत अथवा अनुसृत होते रहे हैं। और, विश्व के दूरदूर विचारकों एवं दार्शनिकों ने, दृष्टिकोण-भिन्नता के कारण, कभी एक की तो कभी अपा की ओरता का प्रतिपादन भी किया है¹। किन्तु तात्त्विक दृष्टि एवं समन्वय-बुद्धि द्वारा उक्त दृश्यमात्र विरोध का भी सहज निरसन संभाव्य है²।

आध्यात्मिक-चरमोत्कर्ष काल के भाव-प्रवण ऋषियों तथा मनीषियों ने अज्ञा-विश्वास की अमित महत्ता का उद्घोष अवश्य किया था,³ परन्तु बुद्धि-विवेक की

1—(क) यजुर्वेद ४०।२ :- 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि'... महाभारत शान्तिपर्व २७६।२० :- यथा कर्म तथा लाभ ...। गीता १८।११ :- नहि देहभुजा शस्य सक्तुं कर्मावशेषतः। विष्णु पुराण :- 'अपहाय निजकर्म कृण्वन् कृष्येतिवादिनः। ते हरेर्द्वेषिताः पापाः धर्मार्थं जन्म बदरेः। मानस २।६२।२ :- निजकृतं कर्म भोग'...। गुरु अर्जुन :- उद्यमं करे दियौ जीअ तू, कमा वंदियां सुख सुखं।'

HERBERT SPENSER—'The great aim of education is not knowledge but action G. B. Shaw—The way to have a happy life is to be busy doing what you like all the time having no time left to consider whether you are happy or not.

(ख) ब्रह्मसूत्र ३।१।२०, ४२, ४३, ४४। गीता ४।२६, २६।

(ग) गीता १८।६६ :- 'श्वयधर्मान्परिचर्यन्' मायुचा^१ मानस ७।१२२ क :- 'चारिभये वृत्तं होयवक्तुं सिकताते वरु तेल। विनु हरिमकन न भवतसिय, यह सिद्धान्त अयेल ॥' पुनः ७।१२५।३, ४ :- 'सुनुष्यगेश हरिमक्ति विहाई। जे सुखचाहहि आन उपार्इ ॥ तेशठ महासिन्धु विनु तभी। पैरि पार बाहहि लडकरसी ॥'

2—म० म० प० गोपीनाथ कविराजः 'भारतोक संस्कृति और आना' (प्रथम खण्ड), पृ० २११। लोकमान्य बा० गं० तिलकः गीता-हृदय, पृ० ४३३।

3—ऋग्वेद ६।११३।२ :- 'आ पवस्व'... अद्वया तपसा सुत इन्द्रायै नो परि त्व' ॥ यजुर्वेद १६।३० :- 'ब्रतेन'... अद्वयामप्नोति अद्वया सुखमाप्नोते ॥' पुनः २०.२४., सुषडकोपनिषद् १.२.११., कठोपनिषद् २.३.१२., छान्दोग्योपनिषद् १.२.१० श्रीमद्भगवद्गीता ४.३६, १७.३, १३.२७, २८.१८, १७.३ :- 'अद्वयमयोऽयं पुरुषो यो बद्धदः स एव सः' ॥ त्रिपुरारहस्यम्, शान्तस्वरः—६.२५ :- 'अद्वहि जगतां धात्री अद्वहि सर्वस्य जीवनम्। मानस १.२ श्लोक :- 'भवानीशङ्करौ बन्दे अद्वैतविश्वारूपिणी। पुनः ७.६० क :- 'विनु विश्वास भगति नहि' ॥

उपेक्षा कदापि नहीं की थी^१। और, आधुनिक विज्ञान एवं भौतिकवाद के युग में तर्क तथा बौद्धिकता का तर्क-नाद तो हुआ है, किन्तु निष्ठा की उपयोगिता अस्वीकृत नहीं हो सकी है^२। अकर्मण्यता की प्रतिष्ठा न तब थी, न अब है। वस्तुतः ज्ञान, कर्म और भक्ति—ये तीन भिन्न योग या मार्ग नहीं, अमिट्ट एक ही सरणि के तीन क्रमिक सोपान हैं, एक ही प्रक्रिया की तीन क्रमिक अवस्थाएँ हैं। ज्ञान हमारे लक्ष्य-निर्धारण में सहायक होता है तथा विभिन्नानुसंधेय पथ की आलोचन-कृत करता है कर्म हमें स्थित अथवा गति-शोध बनाता है और भक्ति से हृदयमय तथा रस-भग्न होते हैं। सुतरां, जीवन को पूरा, समुत्पन्न तथा समरस बनाने के हेतु तीनों ही अपरिहार्य हैं। किन्तु वहीं ज्ञान एवं कर्म आनन्द-प्राप्ति के साधन-मात्र हैं। वहीं भक्ति की साधन-साध्य-रूपा उभयात्मक स्थिति है। ज्ञान-लोक तथा कर्म-क्षेत्र में हम जिस आनन्द की संप्राप्ति के अर्थ निश्चयन और उपयोग करते हैं, उसी आनन्द को अविरल धारा में निरन्तर होने का सुखवश हमें भक्ति की भूमिका में आते ही प्राप्त होने लगता है। वहीं भक्ति की अनिवार्य-नीयता का रहस्य है।

भक्ति-महाशानी की अपभार महिमा के लक्ष्य से समग्र भारतीय वाङ्मय सुजायमान है। किन्तु उसे पुरुषार्थ-साध्य नहीं माना गया है। वह तो गुरु-कृपा, शक्त-भक्त-कृपा अथवा भगवत्कृपा से ही संभव है। पुनः गुरु, सन्त-भक्त तथा भगव-

1—ऋग्वेद १.३.११-१२, १०.१२५.१-८। यजुर्वेद ३२।१४-१५ :- 'या मेधां देवमयाः'... 'मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥ मेधां मे वरुणो ददातु' ॥ पुनः ३।३५.१-तत् सवितुर्वरेण्यं... 'विदो यो नः दधीदधातु' ॥ अथर्ववेद ६।१०८।१-४ :- 'स्वो नो मेधे प्रथमा'... 'मेधाविनं कुरु' ॥ महाभारत शान्तिपर्व १८०।१ :- 'प्रज्ञा प्रतिष्ठा भूतानां प्रज्ञा लाभः परो मतः। प्रज्ञा निःश्रेयसो लोके प्रज्ञा स्वर्गो मतः कृतम् ॥' पुनः २४८।३५ :- 'बुद्धिरात्मा सनुष्यन् बुद्धिरेवात्मनाऽऽत्मनि' ॥ कालिदासः मालविकाग्नि मित्र १।२। मानस १।२।२, १।६, १।७.३, १।१८।७-८।

2. Albert Einstein : Out of My Later Years [London, 1950], P. 26 "But science can only be created by those who are thoroughly imbued with the faith...I cannot conceive of a genuine scientist without that profound faith." Sir Arthur Eddington : 'The Philosophy of Physical Science [Cambridge, 1939], P. 222 "In the age of reason, faith yet remains supreme, for reason is one of the articles of faith."

वान्—इन तीनों में भी सर्वाधिक महत्त्व किनका है, यह विचार का विषय बन चुका है। भगवान् से महत्तर तो कहीं सन्त-मक्त को भी माना गया है और कहीं गुरु को भी; परन्तु गुरु तथा सन्त-मक्त में “को एक छोटा कदम अपराध” कह कर ही मौन हो जाना पड़ता है। हाँ, ‘भक्तमाल’ के प्रणेता श्रीनारायणदास जी ने अवश्य ही इस जटिल समस्या का एक सुलभ समाधान प्रस्तुत किया है। उनकी दृष्टि में भक्त, भगवान् और गुरु तत्त्वतः अभिन्न हैं। यही नहीं, उन्होंने तो इससे भी एक कदम जागे बढ़कर “भगत भगति भगवन्त गुरु, चतुर नाम वपु एक” (मूल १) की स्थिति उद्घोषणा की है। इस प्रकार भक्त न केवल गुरु और भगवान् से अपितु स्वयं भक्ति से भी अभिन्न सिद्ध होते हैं। अस्तु, भगवद्गुरुभक्तिरूप सन्त-मक्तों को भगवद्-भक्ति प्राप्त करने का प्रयास नहीं करना पड़ता। वे स्वयं तद्रूप जी हैं। और, उनका चरित हमें न केवल राम-भक्ति की गुरु-श्रिता में अपितु ज्ञान-कर्म-भक्ति की त्रिवेणी (मानस १।२।७, ८, ९, दश १।२) में भी मोता लगाने का सुयोग प्रदान करता है जिससे हमारे समस्त कल्मष दूर होते हैं और हमें परम शान्ति तथा अभ्यास आनन्द की उपलब्धि होती है।

भक्ति, भक्त और भक्त-चरित की गहरी वस्तुतः अवगनीय है और ‘भक्तमाल’ अत्युन्नत कोटि के भगवद्भक्तों तथा सन्त-महात्माओं के विरल चरितों को माला है जो सबों की सम भाव से सुरभिषित एवं सुशोभित करने में समर्थ है। भक्त-चरित अनर्घ वारस है जो लार्थ-मात्र से जीवन-लोभ को तथा स्वर्ग में परिणत कर देता है। ऐसे एक शत का, (उसके सांख्यिक सम्पर्क का) भी जब इतना महत्त्व है, तब ‘भक्तमाल’ तो ऐसे शतों की माला है। फिर उससे माहात्म्य का क्या कहना। वह उस अलौकिक एवं अमोघ शक्ति से सम्पन्न है जो समग्र पाप एक को प्रक्षालित कर जीवन में श्रुतता, सुन्दरता तथा सरलता का संचार करती है। भक्ति के सम्बन्ध में तो परम सत्यनिष्ठ (टीका २) टीकाकार श्री प्रियादास का जोरदार कथन अक्षरशः सत्य है—“विना भक्तमाल भक्तिरूप अति दूर है।” (टीका ९) इस महार्घ ग्रन्थ-रत्नको शताब्दियों से विद्वद्गण एवं जन-आधारण के हृदय में समानरूप से जो सम्मानास्पद स्थान प्राप्त होता रहा है, वह सचमुच इसकी अद्भुत शक्ति तथा प्रभुत्वश्रुता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। अस्तु, इसकी अनोखी महत्ता सर्व स्वीकृतपात्र है और एतत्पर्यन्त की विशिष्ट दिप्पत्तियों की अपेक्षा नहीं मतीत होती।

दिनानुदिन बढ़ती हुई मांग की प्दान में रखकर यदि ऐसे महत्त्वमय एवं लोकप्रिय ग्रन्थ में अनेक संस्करण हो चुके हों तथा भविष्य में और भी अधिक संस्करण निकलते रहें, तो इसे कुछ अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता। किन्तु प्रस्तुत संस्करण की अपेक्षा केवल मांग-पूर्ति के निमित्त नहीं है। वस्तुतः इसकी अनिवार्य आवश्यकता थी जिसकी सम्पत् पूर्ति का श्लाघ्य प्रयास (प्रातः स्मरणो

महर्षिकर पं. श्रीरामवल्लभाशरणजी महाराज के प्रिन्सिपल) विद्वान् सम्पादक श्रीमानकीर्तिदासजी श्रीविष्णुजी ने किया है। इस सम्पत्का अनुभव तब होता है जब हम प्रत्यक्ष संस्करण की कतिपय ध्यातव्य विशिष्टताओं पर दृष्टिपात करते हैं।

‘भक्तमाल’ के अनेकानेक संस्करणों ने जहाँ भक्ति-प्रवण एवं अदाविल जनो को तोष प्रदान करने में विशिष्ट योग-दान किया है, वहीं अज्ञान-गमाद-आग्रह-जन्य पाठान्तर ने उनके समस्त अनेक जटिल श्रमियों एवं मध्याह्न समस्याएँ भी उत्पन्न की हैं। ‘श्रीरामचरितमानस’ प्रभृति अन्य सुख्यात ग्रंथों की ही भाँति ‘भक्तमाल’ की भी कोई ऐसी प्रति उपलब्ध नहीं होती जो स्वयं रचयिता द्वारा लिखित अथवा संशोधित हो। ऐसी परिस्थिति में शुद्ध पाठ का निर्णय करना कितना कठिन है, इसे वे ही समझ सकते हैं जिन्होंने पाठानुसंधान के दुराग पथ पर चलने का यत्किंचित् भी आयास किया हो। यह सचमुच हर्ष और संतोष का विषय है कि कतिपय अनिवार्य बाधाओं तथा सीमाओं के रहते हुए भी प्रस्तुत संस्करण में पाठ-शोध का कार्य अपेक्षित अवधानता अथवा आशातीत सफलता के साथ सम्पादित हो सका है। फलतः अनेक असमावेय समस्याओं का सहज समाधान हुआ है।

प्रस्तुत संस्करण द्वारा न केवल परिशुद्ध पाठ का परिचय होता है, प्रस्तुत कतिपय सर्वथा अज्ञात धारणाओं का सम्यक् निराकरण भी होता है। उदाहरणार्थ ‘भक्तमाल’ के प्रणेता का वास्तविक नाम ‘श्रीनारायणदास’ था (मूल २।१४) जिन्हें ‘नामा’ जी भी (टीका ६।२२) कहा जाता था। किन्तु अनेक जगत्प्रसिद्ध विद्वानों ने, न जाने क्यों, उन्हें ‘नामादास’ के नाम से उल्लिखित किया है। पुनः ‘भक्तमाल’ के प्रख्यात टीकाकार श्रीप्रियादासजी वस्तुतः श्रीद्विपान्धसम्प्रदाय के श्रीमनोहररायजी के शिष्य थे (टीका ६।२०, ६।२१) जबकि स्वयं भक्तमालकार श्रीरामानन्द-सम्प्रदाय के श्रीअग्रदेवान् चार्यके शिष्य (मूल ४, २।१४) थे। किन्तु इतनी स्पष्ट बातों के सम्बन्धमें भी विख्यात विद्वानों ने, यह भ्रम फैलाकर कि ‘प्रियादासजी नामादासजी के शिष्य थे’ इस वेद-वाक्यको चरितार्थ किया है—“उत त्वः पर्यन्त ददश वाचमुत्तलः शृण्वन् शृणुस्विनाम्।” (श्रुक् १०।७।१। इसी प्रकार श्रीरामानन्दवाचार्वादि के जीवन-वृत्तान्त के विषयमें जो धारितियाँ फैली हुई हैं। प्रस्तुत संस्करण में ये सभी समुचित रीत्या निराकृत हुई हैं।

१. पं. रामचंद्र शुक्ल : ‘हिंदी-साहित्य का इतिहास’ (पाँचवाँ संस्करण), पृ. १२८, १४६, १४७, १७४, १८५, १९४, ४०५। मिश्रबंधु : ‘हिंदी-नवरत्न’ (सप्तम संस्करण), पृ. २८, ५६, ५७, ५८।

२. मिश्रबंधु : ‘हिंदी-नवरत्न’ (सप्तम संस्करण) पृ. ५७ “नामादास गोस्वामीजी के समकालीन थे। सं. १७६६ बांके उनके शिष्य प्रियादास ने गोस्वामीजी के संबंध में ११ छंद कहे हैं।”

श्रीप्रियादासजी की 'भक्तिरसयोधिनी कविस टोका' मूल 'भक्तमाल' का अविच्छेद्य भाग बन चुका है, फलतः मूल को सम्पूर्ण रूपेण हृदयंगम करने के लिए यह टोका अपरिहार्य है। 'भक्तमाल' के कुछ संस्करणों में तो यह टोका है ही नहीं और किसी-किसी संस्करण में यह आंशिक रूप में प्रकाशित है। प्रस्तुत संस्करण में मूल के साथ-साथ यह टोका भी समग्र रूप में प्रकाशित हो रही है, यह पर्याप्त संतोष की बात है। यही नहीं, जिनके विषयमें श्रीप्रियादासजी ने मौन धारण किया है उनके विषयमें भी अनेक स्रोतोंसे प्रभूत प्रामाणिक सामग्रियोंका संकलन हुआ है। वह कार्य श्रीजानकीदासजीकेसे कहीं उल्लासी तथा निष्ठावान् व्यक्तित्वकी ही संभव था। पुनः मूल तथा उपयुक्त टोकाकी विशेष बोधगम्य-बनानेके हेतु जो पाद-टिप्पणियाँ दी गयी हैं, वे भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। और, साधुत्व, कथित्व तथा वैदुष्य की सबीब प्रशिक्षा या भक्तत्वान्वेषों पर श्रीरामकृष्णदासजी (श्रीरामग्रन्थालय, प्रणि-पर्वत, श्रीवृन्ध) की समर्थ लेखनीसे प्रसूत 'भक्तमाल भास्कर' तो इस संस्करण का अग्रज ही सिद्ध है। इस संस्करण का सविस्तर परिचय सम्पादकके प्राक्कथन तथा ग्रन्थ के अक्षकौकन से ही प्राप्त करना समीचीन होगा।

अतः 'भक्तमाल' का प्रस्तुत संस्करण अनेक दृष्टियों से विशिष्ट महत्त्व एवं सम्पत् सम्मान का अधिकारी है। इस समर्पणीय अथवा स्तुहीय सफलता के लिए सुशोभ एवं कर्तव्य-निष्ठ सम्पादक महोदय की जितनी भी प्रशंसा हो, थोड़ी है। आशा है, अपनी असाधारण महत्ता तथा उपादेयता के कारण यह ग्रन्थ-रत्न भक्त एवं सुधी पाठकों का कण्ठहार बन सकेगा।

पाठकीर्तु (पटना)
आश्विन कृष्ण एकादशी
भौमवार, सं० १०२२ वि० }

रामतत्वक्या शर्मा

नोटः—भक्तमाल के प्रस्तुत संस्करण के विषय में उन परमपूज्य महात्माजी की सम्मतियों का तो कोई प्रश्न ही नहीं रहता कि जिनके आशीर्वादात्मक ओला-हन के आधार पर ही इसका प्रकाशन हुआ है (जिनके नाम सम्पादकके प्राक्कथन में आ चुके हैं) उनके अतिरिक्त जिन विद्वानों, मुक्तजनों की सम्मतियाँ प्राप्त हुई हैं उनमें से वाराणसीय संस्कृत विश्वविद्यालय के अनुसन्धान विभागध्यक्ष महा-प्रोफेसर विद्वद्वर श्रीवल्लभ उपाध्यायजी महोदयकी सम्मति ही ली जा सकी है। अन्य सम्मतियाँ त्यागनामात्र से नहीं की जा सकी हैं। अतः हम सभी समिति प्रवक्ताओं के एवं हमारे परम आदरणीय भूमिका लेखक विद्वद्वरिष्ठ डॉ० श्रीरामतत्वक्या शर्माजी के परम आभारी होते हुए सबको कोटिश धन्यवाद देते हैं।

—संपादक।

प्राक्कथन

(बिना भक्तमाल भक्ति रूप अति दूर है)

श्रीमद्भगवद्भक्ति रस रसिक महानुभावों से यह अविदित नहीं है कि अनादिपदैक श्रीसम्प्रदायाचार्य अनन्त श्रीस्वामी श्रीअग्रदेवा-चार्य चरण चंचरीक प्रातः स्मरणीय स्वामी श्रीनारायणदासजी उपनाम श्रीनाभास्वामीजी रचित भक्तमाल ग्रंथका भक्तिमार्ग एवं भक्त जगत में क्या स्थान है ? क्या सम्मान है ?।

यों तो भक्त चरित से वेद पुराण श्रीमद्रामायण महाभारत आदि सभी आर्ष ग्रन्थ ओत प्रोत हैं, श्रीमद्भगवत में विस्तार से वर्णित है, परन्तु वहाँ सब यत्र तत्र प्रकीर्ण रूप में ही प्राप्त होते हैं। स्वतंत्र ग्रंथ के रूप में लाने का श्रीनाभास्वामीजी का प्रायः यह सर्व प्रथम प्रयास है।

भक्तमाल के टीकाकार स्वामी श्रीप्रियादासजी महाराजने आरंभ में ही (कविस सं० ८ में) भक्ति के समस्त अंगोंके लक्षणों का वर्णन करते हुए लिखा है कि इन सब से युक्त हो जाने पर भी भक्तमाल के अध्ययन श्रवण के बिना भक्तिका रूप बहुत दूर की चीज है।

भक्तमाल क्या है ? भक्तमाल है भगवान के महाप्रेमी महान सन्तों के अलौकिक और व्यावहारिक चरित्रों का चित्रण। वेद पुराणादि जिस भक्ति के आचरण करने का उपदेश करते हैं उसके नाना प्रकार से किये हुए आचरणकी गाथायें। अतः जीव को जो ज्ञान इन प्रत्यक्ष किये हुए आचरण की कथाओं से प्राप्त होता है वह उपदेश के कथन श्रवण मात्र से नहीं हो सकता, तभी तो गोस्वामीपाद श्रीतुलसीदासजी ने यह सिद्धान्त किया है किः—

“मति कीरति गति भूति भलाई। जब जेहि जतन हाँ जो पाई ॥

सो जानव सत्संग प्रभाऊ । लोकहु वेद न जान उपाऊ ॥
विन सत्संग विवेक न होई । राम कृपा विन मुलधन सोई ॥”

सत्संग शब्दका अर्थ है सत्पुरुषों (सन्तों) का संग=साथ=सह-वास । सन्तोंके साथ समय विताने में भगवच्चरित्र एवं उपदेश वचन तो अनायास सुनने को मिलते ही हैं, उनके आचरित चरित्र भी देखने को मिलते हैं, जिनसे भक्ति के क्रियात्मक ज्ञानकी प्राप्ति होती है । नम यही लाभ भक्तमाल के अध्ययन श्रवण मनन से भी होता है । भक्त-माल में भक्तों के भक्तिमयी क्रिया कलाप का विषद वर्णन हुआ है जिसको पढ़ने सुनने समझने और विचार का विषय बनाने से भक्तिका अनावृत्त रूप जो हृदय में प्रविष्ट होता है वह किसी भी अन्य ग्रंथ के श्रवण पठनादि से संभव नहीं हो सकता । ऐसी परिस्थिति में श्रीगिर्यादासजी की “विना भक्तमाल भक्तिरूप अति दूर है” वाली वक्ति परम युक्त है यही कहना पड़ता है ।

(भक्तमाल का वर्णन क्रम और शैली)

भक्तमाल के आदि में श्रीमद्भागवतादि आर्ष ग्रंथों में आये हुए भगवान के नित्य विभूति के पार्षदों के, भगवान श्रीशंकर आदि देव भक्तों के और भक्त ऋषि महर्षि राजर्षियों के चरित्रों का चित्रण वन्दन आदि है और संख्या २८ के छपै एवं २९ के दोहे में वैष्णव चतुः सम्प्रदाय में संगठित चारों सम्प्रदायों के प्राधान्याचार्यों का गुणगान होकर छपै संख्या ३० से ३३ तक कलियुग के आदि में अवतरित होने वाले आचार्यपाद श्रीशठकोप स्वामीजीके श्री सिन्धुजा सम्प्रदाय के आचार्यों का स्वतंत्र रूप से (क्रम रहित) वर्णन हुआ है तथा छपै ३४ के “श्रीभारग उपदेश कृत श्रवण सुनो तिनकी कथा” से छपै ४१ में स्वाचार्य श्रीअग्रदेवाचार्यजी तक श्रीसंप्रदाय (श्रीरामानन्द सम्प्रदाय) के आचार्यों का वर्णन हुआ है । इसके आगे भगवत्पाद श्रीशंकराचार्यजी से आरंभ होकर जिस भक्तमणि का जब भी परिचय प्राप्त हुआ उसको उसी स्थान पर इस भक्त रत्नमाला में पुरो दिया

गया है इसके अतिरिक्त भक्तमाल में आदि से अन्त तक न कोई काल का क्रम है न किसी भी सम्प्रदाय की गुरु परम्पराका और न गुरु शिष्य का ही कोई क्रम है । कहीं भसंगवश उल्लिखित हो जाने वाले कुछ स्थलों को छोड़कर भक्तमाल में उन महापुरुषों (भक्तों) के वर्ण कुल जन्मस्थान स्थिति काल तथा उनके द्वारा निमित्त ग्रंथों के नामों का भी कोई उल्लेख नहीं है । इस ऐतिहासिकों की आवश्यक सामग्रीके न रहते हुए भी भक्तमाल से जो यथार्थ इतिहास मिलता है वह प्रायः अन्यत्र नहीं प्राप्त होता । दक्षिण भारत के कुछ भक्तों की कथायें दक्षिणकी तमिल तेलगू आदि भाषाओं में हैं परन्तु वे स्व सम्प्रदायकी सीमा में सीमित बहुत ही अल्प हैं, जब कि भक्तमाल में स्व पर की कोई सीमा नहीं ।

(वैष्णवचतुः सम्प्रदायके संगठन और अन्य सम्प्रदायों का समादर)

वैष्णव चतुः सम्प्रदाय के आचार्यों को तो भक्तमाल कार, भगवान के चौबीस अवतारों की भांति एक ही भगवत्त्व मानते हैं, इसके अति-रिक्त अन्य सम्प्रदायों को भी वे उसी समादरकी दृष्टि से देखते हैं इतनाही नहीं भक्तमाल में तो भक्त मात्र सब एकही दृष्टि कोण से देखे जाकर उनके गुणगान हुए हैं । वैष्णव वैष्णव में तो भेद का कोई प्रश्नही नहीं चउता, भक्तमाल में तो भेद भाव वैष्णव अवैष्णव में भी नहीं, शैव वैष्णव में भी नहीं एवं किसी दार्शनिक मतभेद को लेकर भी नहीं है । भक्तमाल में भेद है केवल आस्तिक और नास्तिक में, भक्त और अभक्त में ।

भक्तमाल में सम्प्रदाय परिषाटी पद्धति मार्ग मत पथ या पंथ आदि शब्द समानार्थक (पर्याय रूप) में व्यवहृत हुए हैं, किसी भेद भाव से या ऊंच नीच की भावनाको लेकर नहीं । मात्र एक बार एक साथ वैष्णव चतुः सम्प्रदायका वर्णन भी इसी लिये हुआ है कि, श्री-रामानन्द श्रीनिम्बार्क श्रीविष्णुस्वामी एवं श्रीमाध्वाचार्य के चारों सम्प्रदायों का संगठन भक्तमाल काल में हो चुका था । चारों सम्प्रदायों

की संयुक्त रूप में ५२ द्वारा गादियों एवं अनी अखाहों आदि का भी प्रायः निर्माण हो चुका था। इन चारों सम्प्रदायों में महान ऐक्य अनादि काल से चला आता है जो अद्यावधि अविच्छिन्न रूप में विद्यमान है।

चारों सम्प्रदायों में दीक्षा के पंच संस्कारों में माला संस्कार का परिगणन, सतत श्रुतिलसी कंडी का धारण (हीरा=तुलसी का १ मणि पाँ धारण भी इसी कारण से प्रचलित है कि जब एक ही काल में एक ही महापुरुष के द्वारा महसों को दीक्षा प्रदान की जाती है तो तुरंत इतनी अधिक कंडियों का प्राप्त होना असंभव हो जाता है और एक एक मणियाँ पुरोकर प्रदान कर दिया जाना ही संभव हो सकता है), भूत भावन भगवान श्रीशंकर का भवतराज रूप में पूजन, भोजन व्यवहार, आचार विचार, रहन सहन एवं व्रतादि उपासन, आरती स्तुति एवं पंगत के जयघोष तकमें ही वह ऐक्य सीमित नहीं, इससे भी आगे देखा जाता है कि एक सम्प्रदाय में दीक्षा प्राप्त वैष्णव दूसरी सम्प्रदाय के महापुरुषों के साधक शिष्य बन जाते हैं, वे उन सिद्ध गुरुदेव की भी उसी प्रकार से भगवद्रूप मानते हैं जिस प्रकार से मंत्र प्रदाता श्रीगुरुदेव को और मंत्र तिलक नाम या उपास्य भगवद्रूप के परिवर्तन की न कभी उन साधक शिष्य को कोई आवश्यकता प्रतीत होती है न सिद्ध गुरुदेव को एवं यदि मंत्रप्रदाता गुरु देव जीवित हैं तो उनको भी यह सुनकर कोई शोक नहीं होता प्रत्युत प्रसन्नता ही होती है और कभी दोनों आचार्यों का एक साथ समागम हो जाता है तब वे वैष्णव अपने को कृत कृत्य मानते हुए समान भाव से दोनों की सेवा में तत्पर हो जाते हैं।

श्रीरामानन्द सम्प्रदाय में एकादशी आदि व्रतों में ५५ घटिकात्मक वेध की मान्यता है और श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय में ४५ घटिकात्मक की। शास्त्र में ऐसे वचन प्राप्त होते हैं किसी भी कारण से

पूर्ववद्धा व्रत नहीं होना चाहिये, पर बद्ध होनेमें कोई हानि नहीं। अतः इस महान ऐक्य की ही यह चरम महिमा है कि श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के उन छावनी आदि महान स्थानों में ४५ घटिकात्मक वेध मानकर ही व्रत होते हैं जहाँ सभी सम्प्रदायों के अधिकाधिक सन्त विराजते हैं। इन स्थानों की आरती की स्तुति पंगत की जय आदि में भी चारों सम्प्रदायों की मान्यता का समानरूप से समादर किया जाता है। यह महान ऐक्य अन्यत्र असंभव है।

श्रीरामानुजाचार्यजी श्रीनिम्बार्काचार्यजी श्रीमाध्वाचार्यजी और श्रीविष्णु स्वामीजी ये चारों आचार्य दक्षिण भारत में प्रकट हुए हैं इस कारण से कुछ लोग चतुःसम्प्रदाय के संगठन में श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के स्थान पर श्रीरामानुज सम्प्रदायको कहते और समझते हैं परंतु किसी संगठन में एक देश जाति या कुल में उत्पन्न होना उतना आवश्यक नहीं होता जितना आचार विचार और पारस्परिक व्यवहार में एकता होना आवश्यक होता है। यह एकता श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के साथ ही देखी जाती है, श्रीरामानुज सम्प्रदाय के साथ इसका होना असंभव है।

श्रीनिम्बार्काचार्यजी श्रीमाध्वाचार्यजी और श्रीविष्णुस्वामीजी के जन्म दक्षिण भारत में हुए हैं परंतु इनका निवास और प्रचार का केन्द्र उत्तर भारत ही विशेष रहा है। श्रीरामानुज सम्प्रदाय की तरह से इनके ग्रंथ भी दक्षिण की द्रविड तामिल तेलगू आदि भाषाओं में अधिक न होकर संस्कृत एवं ब्रज भाषा में ही हैं। इन सबके यहाँ द्रविडगम या द्रविड वेद वेदान्त प्रथक न होकर संस्कृत भाषा के ग्रंथों ही की मान्यता है। अतः ये सम्प्रदाय उत्तर के आनन्द भाष्यकार श्रीरामानन्दाचार्यजी के सम्प्रदाय के महान विरक्त समाजमें ही संगठित हुए और संयुक्तरूपमें ५२ द्वारा गादियों एवं अनी अखाहों आदिकी स्थापना की। व्रतोत्सव सेवा पूजा आरती मसद पंक्ति में भी परस्पर

समन्वय स्थापित कर चारों सम्प्रदाय श्रीभगवद्भक्ति रूपी दुग्धामुधको समान रूप से प्रदान करनेवाले एक ही मऊ के चार स्थलों की उपमा को प्राप्त हुए हैं। इतना होते हुए भी श्रीभक्तमालकार समन्वयाचार्य श्रीनाभास्वामी का यह कोई आग्रह नहीं कि वैष्णवों के सम्प्रदाय चार ही हैं, इनके अतिरिक्त अन्य कोई सम्प्रदाय हैं ही नहीं। वे दक्षिण के श्रीरामानुजादि एवं उत्तर के श्रीराधावल्लभीयादि सभी सम्प्रदायों को समानरूप में ही मान सम्मान देते हैं।

यह हुई भक्तमाल के वर्णन क्रम और शैली की बात अब हम भक्तमाल की टीका टिप्पणियों और भक्तमाल का आधार लेकर लिखे गये ग्रंथों का कुछ जिक्र करके भक्तमाल में प्राप्त पाठों की अशुद्धियों और संशोधन के विषय पर विचार करेंगे।

(भक्तमाल पर टीका टिप्पणी और आधारित ग्रंथ)

पूज्यपाद श्रीरूपकलाजी महाराजने अपनी टीकावाली भक्तमाल के पृष्ठ ३५ पर एक तालिका दी है जिसमें भक्तमाल पर टीका टिप्पणी और आधारित १६ ग्रंथ उल्लिखित किये गये हैं।

- १ भक्तिरस बोधिनी कवित्त टीका (श्रीमियादासजी कृत)
- २ भक्त उरवसी अनुवाद (श्रीलालचन्द्रदासजी कृत)
- ३ भक्तमाल टिप्पणी सहित (श्रीवैष्णवदासजी श्रीनिम्बाकीय कृत)
- ४ फारसी अनुवाद (श्रीगुपामीलालजी कृत)
- ५ गुरुमुखी भक्तमाल (श्रीकीर्तिसिंहजी कृत)
- ६ भक्तिपदीष, २४ निष्ठावाली उर्दू (श्रीतुलसी रामजी कृत)
- ७ भक्तकल्पद्रुम, २४ निष्ठावाली हिन्दी (श्रीप्रतापसिंहजी कृत)
- ८ श्रीरामरसिकावली (श्रीवा अरेश श्रीधुराजसिंहजी कृत)
- ९ श्रीरमिक भक्तमाल (स्वामी श्रीजीवारासजी श्रीयुगलप्रियाजीकृत)
- १० भक्तमाल छप्पै (भारतेन्दु बा० श्रीहरिश्चन्द्रजी कृत)
- ११ रमूने मिहरे वफा, फारसी (श्रीतपस्वीरामजी कृत)
- १२ हरिभक्ति प्रकाशिका (पं० श्रीज्वाला प्रसादजी मिश्र कृत)

१३ भक्तनामावली (श्रीध्रुवदासजी कृत)

१४ भक्तनामावली (श्री राधाकृष्णदासजी कृत) काशीनागरी सभा

१५ भक्तमालका अंग्रेजी खर्चा (श्रीभानुवतापजी तिबारी कृत)

१६ ग्लिमिंग्स अंग्रेजी (सरनार्जग्रिपर्सन कृत)। इनके अतिरिक्त संस्कृत श्लोकवद्ध भक्तमाल आदि अन्य भी अनेक हैं जिनका इस तालिका में उल्लेख नहीं है।

इनमें प्रथम परिगणित श्रीमियादासजी कृत भक्तिरस बोधिनी टीका ही एक ऐसी टीका है जो मूल का अभिन्न अंग बन गई है और भक्तमाल मूलको इस टीकाके बिना अब प्रायः कोई नहीं पढ़ते सुनते।

संख्या ९ की श्रीरमिक भक्तमाल श्रीनाभास्वामीजी के पीछे के भक्तों की कथाका परमोत्तम ग्रन्थ है।

श्रीवानरेशकी श्री रामरसिकावली स्वतंत्र ग्रंथ है।

२४ निष्ठावाली उर्दू और हिन्दी में बहुत कम कथायें संक्षिप्त और स्वतंत्र रूप से लिखी हुई हैं।

सं० ३ वाली में कुछ टीका कवित्त निकाल दिये गये हैं।

अंग्रेजी फारसी आदि एवं अन्यान्य सबके विषय में यही कहा जा सकता है कि ये सब भक्तमाल के कुछ भाग एवं कथाओं को लेकर निर्माण किये गये स्वतंत्र ग्रंथ हैं।

भक्तमाल श्रीमियादासजी की टीका के सहित मूल के और हिन्दी गद्य टीकाओंके सहित जितने भी संस्करण प्रकाशित देखने में आते हैं उनमें सामान्य पाठान्तर तो श्रीरामचरित मानस की तरह से देखे ही जाते हैं, इन पर हमें कुछ भी विचारणीय नहीं है जिनमेंकि ग्रंथ के छन्द में अथवा अर्थ में कोई अन्तराध नहीं उपस्थित होता, क्योंकि श्रीरामचरित मानस की भांति ही भक्तमाल की भी कोई प्रति ग्रंथकर्ता के हाथ की अथवा टीकाकार श्रीमियादासजी के हाथ की लिखि हुई उपलब्ध नहीं होती परन्तु पाठान्तरों के अतिरिक्त जो पाठ ऐसे अशुद्ध

मिलते हैं कि जिनसे ग्रंथका छन्द ही भंग हो जाता है अथवा तो अर्थ में महान ऐतिहासिक दोष उपस्थित होता है, वे संशोधनीय हैं और इस संस्करण में उनका संशोधन हुआ है।

(भक्तमाल संशोधन का आधार)

अनन्त श्रीस्वामी मणिरामजी की छावनी श्रीअयोध्याजी के समा-भवन में जब अनन्त श्रीगुरुदेव (श्रीअयोध्या जानकी घाट निवासी श्री साकेत वासी साधुकुल कमल दिवाकर जगदोद्धारक जगद्गुरु अनन्त श्री पं० रामवल्लभाशरणजी महाराज) श्रीभक्तमालकी कथा करते थे तब विद्व सन्तों द्वारा यह प्रश्न हुआ ही करता था कि भक्त-माल ग्रंथमें जो ये छन्दभंग गतिभंग यतिभंग आदि महान काव्यदोष और ऐतिहासिक त्रुटियोंके उत्पादक अप्रासंगिक अर्थदोष वाले अशुद्ध पाठ छपे हुए प्राप्त हैं यह अशुद्धियाँ श्रीनाभास्वामीजी की रचना में ही हैं अथवा पीछे से प्रतिलिपिकारों के अज्ञानवश एवं आग्रह विशेष के कारण आ गई हैं, एवं श्रीगुरुदेवका यही उत्तर होता था कि ऐसे महान काव्यदोषों को कोई भी ग्रंथकार अपने ग्रंथ में स्थान दे यह तो सर्वथा असंभव है, यह सब दोष पीछे से ही उन्ही कारणों से उपस्थित हुए हैं जो आपलोग कह रहे हैं। ये सब संशोधनीय हैं, श्रीहिण्डीजी ने जब भक्तमाल छपाने को मेजी उससे पहले हमसे जिक्र नहीं किया नहीं तो इनके संशोधनका हमारा विचार रहा और हम उनको संशोधनके लिये कहते हैं।"

जब श्रीचरणों के द्वारा जयपुर के प्रेम प्रकाश प्रेस से प्रकाशित होने के लिये श्रीरामचरितमानस आदि श्रीगोस्वामीजी के ग्रंथों का संशोधन हो रहा था तब भी आप कभी कभी कहा करते थे कि "कभी समय पाकर भक्तमाल का संशोधन भी करना है।"

जयपुर से प्रकाशित होनेवाले सन्त पत्र में श्रीवृन्दावन निवासी भक्तमाल मर्मज्ञ सन्त परमहंस श्रीगंगादासजी महाराजने भी भक्तमाल का शुद्ध पाठ प्रकाशित करना आरंभ किया था, जिसमें इन अशुद्धियों

का बहुत कुछ संशोधन हो चुका था परंतु कालकी करालता से सन्त का प्रकाशन स्वर्गित हो जाने के कारण वह कार्य अधूरा ही रह गया था। तभी से दास के मन में अनन्त श्रीगुरुदेव के हार्दिक भावों के अनुसार भक्तमाल का संशोधित शुद्ध संस्करण प्रकाशित करने की इच्छावली आ रही थी।

भक्त भक्ति भगवन्त एवं श्रीगुरुदेव की असीम अनुकंपासे इधर १०।१२ वर्ष से दासका श्रीअवध बास हुआ तब यह भक्तमाल संशोधन की भावना फिर जागरित हुई और श्रीअवधके भक्तमाल मर्मज्ञ श्रीगुगल भाधुरीकुंज नजर बाग के श्रीमहाराजजी श्रीमैथिलीशरणजी महाराज की श्रीचरण सन्निधि में इसका जिक्र आया तब आपके द्वारा प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। फिर मणि पर्वत श्रीअयोध्याजी के भक्त-माल मर्मज्ञ मानस तत्त्वान्वेषी श्रीराम ग्रंथागार के सस्थापक और संचालक पं० श्रीरामकुमारदासजी महाराज के द्वारा भी प्रोत्साहन मिला इसी समय श्रीवृन्दावनस्थ श्रीजी की कुंज से भक्तमालका हिन्दी गद्य टीकायुक्त एक सुन्दर संस्करण प्रकाशित हुआ था जिसमें किसी विशेष आग्रह के वश श्रीप्रियादासजी की टीका के कुछ कवित्त छोड़ दिये गये थे, जिसके विरोध में भक्तमाल जगतमें हल चल (खच खच) उठी थी, श्रीअवध काशी वृन्दावनादि अनेक स्थानों में सभायें हुई थी, विरोध प्रकाशित हुए थे और उक्त संस्करण के संपादक एवं प्रकाशकों की ओर से समाधान होने पर ही वे कोलाहल शान्त हुए थे। इसी सिलसिले में श्रीचाकशीला स्थान श्रीजानकी घाट श्री अवध में जो सभा हुई थी उसमें जहाँ तक मुझे स्मरण है श्रीअवध के प्रायः सभी शीर्ष सन्त महन्त एवं विद्वान, जैसे बड़ा स्थान श्रीअयोध्या जीके महन्त विन्दुगाथाचार्य श्रीरघुवर प्रसादाचार्यजी महाराज लक्ष्मण दुर्गके महन्त रसिकाचार्य श्री सीतारामशरणजी महाराज, दार्शनिक आश्रम श्री जानकी घाटके आचार्यपाद वर्तमान वाराणसेय संस्कृत

विश्वविद्यालय वाराणसी के वेदान्त व्याख्याता दार्शनिक सार्वभौम स्वामी श्री रामदेवाचार्यजी महाराज, श्री रामवल्लभाकुंज श्रीजानकी घाट के आचार्यपाद वेदान्ती श्री रामपदारयदासजी महाराज, श्री रामकुंज श्री रामघाटके आचार्यपाद पं० श्री अखिलेश्वरदासजी महाराज श्री मणि पर्वत श्री अयोध्याजी के उपरोक्त श्री मानस तत्त्वान्वेषीजी महाराज, श्रीमणिरामजीकी छावनीके ज्ञानवयोद्भूत रामायणी श्रीराममुन्दरदासजी महाराज, श्री तुलसी साहित्यके सिद्धान्त तिलक नामक विषयभाष्य कार स्वामी श्री श्री कान्तशरणजी महाराज, दुर्जन करि पंचानन परम-हंस श्री रामचन्द्रदासजी महाराज, हरिद्वारके योगीराज डा० श्री गोव-त्सजी महाराज, श्री वृन्दावनके महाकवि श्री जयरामदेवजी महाराज आदि अनेकानेक महाविभूतियोंकी समुपस्थितिमें यह प्रस्ताव पारित हुआ था कि इन सब अशुद्धियोंका संशोधन होकर भक्तमालका शुद्ध संस्करण प्रकाशित होना चाहिये ।

उपरोक्त प्रस्तावके अनुसार समन्वय नामक मासिक पत्रमें सटीक भक्तमालका शुद्ध पाठ प्रकाशित होना आरंभ भी हुआ था परंतु अनेक कारणोंसे समन्वय भी आगे न चलकर ४ या ५ महिने में ही बंद हो गया और भक्तमालका कार्य फिर रुक गया ।

अभी कुछ मास पूर्व दासका अनायास श्रीकाशीजी आना हो गया और शुद्ध भक्तमाल प्रकाशित करने के लिये यहाँ से भी मित्र-पोखरा स्थित श्रीकाशी विद्यामन्दिर के संस्थापक संचालक एवं अध्यक्ष आचार्यपाद दार्शनिक-पोस्टाचार्य स्वामी श्रीरामलक्ष्मणाचार्यजी महाराज, आदर्श श्रीमद्रामानन्द महाविद्यालयके प्रधानाचार्य चिद्दूर्य पं० श्रीशिव-रामदासजी महाराज, अपने श्रीगुरु वरधु वेदान्ताचार्य पं० श्री रघुवर गोपालदासजी, व्याकरण वेदान्ताचार्य पं० श्रीबालमुकुन्ददासजी आदिके और यहीं पर वेदान्तपीठ अहमदाबाद (गुजरात) के आचार्यपाद पंडित सम्राट स्वामी श्रीवैष्णवाचार्यजी महाराज एवं विद्वद्वरिष्ठ महंत स्वामी

श्रीवैकटेश्वराचार्यजी महाराजके भी प्रोत्साहनात्मक आशीर्वाद प्राप्त हुए । श्रीरामनवमी पर श्रीअवध गया तब श्रीमणिरामजी की छावनी के वर्तमान होनहार महंत श्रीद्वैतगोपालदासजी महाराज, भूतपूर्व कथावाचक श्रीदेवेन्द्राचार्यजी महाराज एवं वर्तमान व्यास श्रीहर्गिनाम दासजी महाराज, वाटिकावाले महाराजजी श्रीरामसेवकदासजी एवं दास पर पितृवत् वात्सल्य रखनेवाले रामायणी श्रीबालदेवदासजी महाराज, जयपुर मंदिर एवं श्रीलालसाहब दरवार के श्रीमहंत आजानकी-रमणशरणजी एवं श्रीजानकीजीवनशरणजी महाराज एवं श्री हनुमान बाग वाटिकाके सन्तोंके द्वारा भी प्रोत्साहन मिले और काशीकी प्रमुख हिन्दी प्रकाशक फर्म ठाकुर प्रसाद एंड संस, राजदरवाजा के अध्यक्ष सेठ श्रीठाकुर प्रसादजी अग्रवाल ने सहर्ष प्रकाशन करना स्वीकार कर लिया जिसके फलस्वरूप भक्तमाल का यह शुद्ध संस्करण आप सब महानुभावों के कर-कमलों में समुपस्थित है । बिना पाठकों से मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि इस संशोधन में जो आप लोगों की "सत्यं शिवं सुन्दरम्" देख पड़े उसको उपरोक्त महात्माओं का प्रसाद समझ कर ग्रहण करें और जो अमुन्दर मतीत हो उसको दास की मूल जानकर क्षमा करें ।

भक्तमाल की यक्षितसचोविनी कवित्त बद्ध टीका के रचयिता सन्त शिरमौर श्रीमिथदासजी महाराज नितान्त परमार्थ (सत्य) वक्ता हैं । आपने आरम्भ में संख्या २ के कवित्त में कहा है "सचाई सुख-दाई लागै" इसी के अनुसार जिन महापुरुषों के चरित्रों से पूर्ण परिचय प्राप्त करसके उन्हीं के चरित्रों का वर्णन आपने किया है, और रेलगाड़ी आदि यातायात साधनों के अभाव के उस युगमें श्री अयोध्या काशी आदि दूरदेशों के जिन महापुरुषों के चरित्रों से आप को पूर्ण परिचय नहीं हुआ उनके श्रीनामा स्वामीजीके मूल वर्णन पर स्वयं कुछ भी न लिखकर अछूता ही छोड़ दिया है । दास ने इस

संस्करण में ऐसे स्थलों पर तत्त्वसम्प्रदाय के ग्रंथों से लेकर उनकी कथाओं को सम्मिलित करने की यथाशक्ति चेष्टा की है एवं जिन महापुरुषों के विषय में श्रीभियादामजी महाराज ने संक्षेप में लिखा है उनकी कथाओं में परिवर्धन भी किया गया है। टिप्पणी में कुछ कठिन शब्दों के अर्थ और सम्बन्धपूर्ण वाक्य भी दे दिये गये हैं।

भक्तमाल के अन्तर्गत श्रीअयोध्या मणिपर्वतीय श्रीरामग्रंथागार के संस्थापक सञ्चालक मानसतत्त्वान्वेषी स्वामी श्रीरामकुमारदासजी महाराज कृत "भक्त भास्कर" नामक प्रायः २०० पृष्ठपर्यन्त का एक मौलिक ग्रंथ भी दिया गया है जिसमें चित्रम सम्बन्ध का बीसवीं शताब्दी के महापुरुषों (भक्तों) की संक्षिप्त कथाएँ वर्णित हैं। आशा है ये सब साहित्य भक्तमाल के प्रेमी पाठकों को परमोपयोगी और प्रमत्त प्रिय होंगे।

(भक्तमाल में अशुद्ध पाठों का समावेश और उनसे हुई हानियाँ)

मध्यकाल में यवन साम्राज्य के अत्याचारों के कारण उत्तर भारत के ग्रंथ सम्प्रदाय का महाविनाश हुआ, जो कुछ बचे वे अन्धकार मय स्थानों में ही दब पाये, यही कारण है कि यहाँ महात्माओं के मठ मन्दिरों में ग्रन्थ सम्पत्ति का प्रायः अभाव है। (इन पंक्तियों के लेखक को श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के मुख्य पीठ श्रीगलता और रेवास के पुस्तकालयों को देखने का अवसर प्राप्त हुआ था। रेवास में कोई ग्रन्थ ये ही नहीं था गलता में कुछ पुराण एवं स्मृति ग्रन्थों की प्राप्ति होती है परन्तु श्रीसम्प्रदाय के महान् आचार्य श्रीअग्रदेवाचार्यजी के अपार संस्कृत एवं हिन्दी ग्रन्थों की, भक्तमाल की, या पीछे होने होने वाले गलतागारी के आचार्य श्रीमधुराचार्यजी एवं श्रीहर्षाचार्यजी के अपरिचित संस्कृत हिन्दी साहित्यसे से किसी ग्रन्थ की तो क्या किसी ग्रन्थके एक पत्रे या एक पंक्ति का भी दर्शन नहीं हुआ जबकि इनमें से बीसियों छोटे बड़े ग्रन्थ अन्यत्र के अन्धकार मय स्थानों से प्राप्त होकर प्रकाशित भी हो चुके हैं।)

साम्प्रदायिक साहित्य के अदृश्य हो जाने से मध्यकाल का श्रीरामानन्द सम्प्रदाय का इतिहास अन्धकारच्छन्न हो गया। वास्तविक साम्प्रदायिक इतिहास से अनभिज्ञ कुछ लोग श्रीरामानन्द सम्प्रदाय को श्रीरामानुज सम्प्रदाय के अन्तर्गत कहने और समझने लगे और इन्हीं में से कुछ लोगों ने भक्तमाल के पाठों में मनमाने परिवर्तन करवाले जिनके फल स्वरूप ये सब गड़बड़ गोठाले समुपस्थित हो गये।

विज्ञ पाठक ध्यान देकर देखेंगे तो भातुरम हो जायगा कि भक्तमाल के मूल छापे २८ के प्रथम चरण में "श्रीरामानुज उदार सुधानिधि," पाठ होने से छन्द में एक मात्रा की वृद्धि होकर एवं रामानुज अथवा रामानुग उदार सुधानिधि पाठों में एक मात्रा की न्यूनता होकर छन्दोभङ्ग होजाता है तथा इस स्थान पर "रामानन्द उदार सुधानिधि, पाठ होने से छन्द की आवश्यक मायाओं की पूर्ति होकर छन्द शुद्ध हो जाता है। अतः इससे स्पष्ट ही परिलक्षित है कि यहाँ श्रीरामानुज, रामानुज या रामानुग पाठ (जोकि पूर्व मुद्रित प्रतियों में प्राप्त होते हैं) कविकृत नहीं, परिवर्तित पाठ हैं।

मन्त्रा २९ के दोहे में भी पूर्व मुद्रित पाठ की प्रायः ऐसी ही स्थिति है और छपे १६ का चतुर्थ चरण जो (जाबाली यमदक्षि मायादर्श कश्यप पशुपति परवत् पदगजधरो) इत्यादि लंबा छपा मिलता है उसका भी यही कारण है कि भगवान् बोधायन महर्षिजी का नाम निकाल कर ये अनेक नाम समाविष्ट कर दिये गये हैं। इसी प्रकार मूल संख्या ३५ के छपे के अन्तिम चरण का पाठ भी नितान्त अप्रसङ्गिक है। उक्त पूरे छपे में यदि सम्राट् आनन्दभाष्यकार श्रीरामानन्दाचार्यजी काही वर्णन हुआ है श्री रामानुजस्वामीजी का नहीं।

इन गड़बड़ आलों का परिणाम यह हुआ कि भक्तमाल और भक्तमाल में वर्णित भारत की महा विभूतियाँ (आचार्य प्रवर श्रीरामानन्दाचार्यजी एवं गोस्वामी पाद श्री तुलसी दामजी आदि) के विषय

में अन्वेषण करते हुए वास्तविक साम्प्रदायिक इतिहासों से अनभिज्ञ होने के कारण डा० सर ग्रियर्सन आदि पाश्चात्य एवं अनेकानेक भारतीय अन्वेषक गए बड़े भारी भ्रमजाल में पड़ गये और श्रीरामानुजाचार्यजी से अनेक पीढ़ी पीछे शकाब्द १२९३ ईस्वी सन् १३७० में) जन्म लेने वाले आचार्यपाद श्रीवत्सगुप्ति स्वामीजी को ईस्वी सन् १३०० से भी पूर्व अवतरित होने वाले आनन्दभाष्यकार भगवान श्रीरामानन्दाचार्यजी के अनेक पीढ़ी पूर्व के आचार्यों का भी गुरु लिख मारा । उन भगवान बोधायन श्री पुरुषोत्तमाचार्यजी का भी गुरु बना हालांकि जिनका स्थितिकाल विक्रम से भी ५०० वर्ष पूर्व है और जिनके श्रुतिग्रंथ के विषय में आचार्यपाद श्रीरामानुजाचार्य स्वामीजीने अपने श्रीभाष्य में कहा है कि "भगवद्बोधायनकृता विस्तीर्णा ब्रह्मसूत्रवृत्ति पूर्वाचार्याः सञ्चिक्षिपुः तन्मतानुसारेण सूत्राक्षराणि व्याख्यास्यन्ते" अर्थात् भगवान बोधायनकृत विस्तीर्ण ब्रह्मसूत्र श्रुतिको हमारे पूर्वाचार्यों ने संक्षिप्त किया है उसीके मत के अनुसार मैं ब्रह्मसूत्रों के अक्षरों की व्याख्या करूँगा ।

यूरोप के उक्त महान विद्वानों के द्वारा लिखाजाने के कारण यह सब गड़बड़ गोवाला एतद्विषयक समस्त अंग्रेजी साहित्य में तो व्याप्त हो ही गया अंग्रेजी एवं अंग्रेजों से प्रभावित भारतीय विद्वानों के द्वारा हिन्दी के तन्त्रग्रंथों में भी फैल गया, इतनाही नहीं अंग्रेजी और फारसी के महा विद्वान हो कर तत्कालीन अंग्रेजी भारत सरकारकी सेवाओं में २० वर्ष से भी अधिक बिताने के कारण अंग्रेज अंग्रेजी और अंग्रेजियत में घुल मिल जाने से हमारे सन्त शिरोधार्य द्विष्टी माह्व पूज्य पाद स्वामी श्रीसीतारामशरण भगवानप्रसाद (श्रीरूपकला) जी ने भी कोई ध्यान नहीं दिया और भक्तमालकी अपनी भक्तिसुधा स्वाद नामक गद्य टीका में भी लिख हालांकि (इस अंग्रेजी के कुप्रभाव के कारण ही आपने टीका में अनेक महात्माओं के अन्य संवत् आदि भी

साम्प्रदायिक इतिहासों से भिन्न गलत-मलत लिखे हैं जिनके फल स्वरूप अब के अन्वेषक भी वही दरें पर दलते चले जा रहे हैं जिसके उदाहरणके रूप में डा० भगवती प्रसाद सिंह जी एम. ए. पी. एच. डी. का "रामभक्ति में रसिक संप्रदाय नामक ग्रंथ उपस्थित है ।

अब भारत वर्ष स्वतंत्र हो चुका है (चाहे भाषा, शिक्षा संस्कृति आदि में अभी मानसी परतंत्रता ही भोग रहा हो) भारत के नौनिहाल विद्वान डाक्टरेटकी उपाधि प्राप्तकरने के लिये अपना विषय चुनते हुए भारतीय विद्वानों ग्रन्थकारों महात्माओं आदि के अन्वेषण को अपनाने लगे हैं और इनको यथार्थ इतिहास जानने के लिये भक्तमाल की भी शरण लेनी ही पड़ती है, अतः इन सबको भक्तमाल के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान होना ही चाहिये इसलिये भक्तमाल में के उन पाठोंका संशोधन होना परमावश्यक हो गया है जो वास्तव में ग्रन्थकार के लिखे नहीं हैं । अज्ञान या किसी आग्रह विशेषके बसीभूत होकर बदले गये हैं ।

थोड़ा भी विचार करके देखिये कि कोई भी कवि ऐसे छन्दों भंगादि दोषों की सृष्टि कर सकता है क्या ? और ऐसे इतिहास विपरीत अप्रामाणिक प्रसंग भी मर्माचीन हो सकते हैं क्या ?

(भक्तमालकार जीनामाख्याओं का संप्रदाय)

जिन लोगों ने भक्तमाल का नाम लेकर श्रीरामानुज सम्प्रदाय और श्रीरामानन्द सम्प्रदाय को एक सम्प्रदाय कहा है या करते हैं यह उनकी महान भूल है नितान्त भ्रान्त धारणा है ।

द्वैत और अद्वैत का समन्वय कर विशिष्टा द्वैत वेदान्त मिद्धान्त के आदि प्रवर्तक उपवर्ष, कृत कौटि, अध्याचित आदि अग्रनामधेय भगवान बोधायन की अनुयायिता में एक होने हुए भी दक्षिणका श्रीरामानुज सम्प्रदाय और उत्तरका श्रीरामानन्द सम्प्रदाय परम्परा प्रकट है ।

इसी रामानुज सम्प्रदाय भगवान बोधायनका सिद्धान्तः अनुयायी है, उस सम्प्रदाय की इसी गुरुपरम्परा में भगवान बोधायन का नाम-स्मरण नहीं किया गया । वह परम्परा भगवान श्रीमन्नारायण

श्रीलक्ष्मीजी से आरंभ होकर द्रविड देश के महाभागवत श्रीशठकोपादि आलवारों एवं श्रिनाथमुनि श्री यामुनाचार्यादि पूर्वाचार्योंको लेती हुई श्री रामानुजाचार्य स्वामीजी एवं आगे कुछ पीढ़ियों के पीछे उन श्री चरवरमुनि स्वामीजी तक पहुँचती है जिनके जन्म का तिथि मास सम्भवत आदि गीताथ संग्रह दीपिका नामक ग्रन्थ की भूमिका में कांची प्रतिवादिभयंकर मठाधीश श्री अनन्ताचार्य स्वामीजी ने इस प्रकार से लिखा है ।

आचार्योयं ४४७१ वर्षेषु कल्पतिष्ठ ४४७२ तमे कल्पादि वर्षे १२९२ तमे शालिवाहन शकाब्दे (D A 1370) साधारण नामनि सवन्तरे तुनामासे शुक्ल चतुर्थ्या मूलनक्षत्रेवतीर्णोऽभूत् । अस्यामवतार काल प्रतिपादकः श्लोकः पठ्यते: —

पायोभावाद्गतायां कलियुग इरदि अद्गये शकान्दे
वर्षे सावराणार्ये समधिगत तुले दामरे तीर संल्ये ॥
शारे जीवे चतुर्थ्या समजनि व तिर्था शुक्ल पदे सुकर्मा
आजन्मूलारूपतारे यनिपतिरपरे रम्यजामातृ नाम ॥१॥

श्री रामानन्द सम्प्रदाय की परम्परा पुरुष नर परात्पर पुरुषो-त्तमाभिधेय श्री माकेलाधीश्वर द्विभुज नित्यकिशोर धनुर्धर श्री राम श्री माताजीसे हनुमान जी ब्रह्मार्जिके द्वारा श्री वशिष्ठ परामर व्यास शुक बोधायनादि ऋषिमहर्षियों को लेते हुए आनन्द भाष्यकार भगवान् श्री रामानन्दाचार्यजी तक पहुँचती है, जिनके अवतार काल के विषय में अमस्त्यसंहिता अध्याय १३२ का ७ वां श्लोक प्रसिद्ध है "खं नभो लोक वेद प्रतिमे वर्षे गते कलौ" अर्थात् विक्रम सम्बत १२५६ के द्वातीन होने पर सं० १२५७ । (विद्वद्भ्यं श्री रामावतार शर्मा जीने अपने 'ईश्वरवाद' नामक ग्रंथ में भी १२५७ लिखा है ।) उपरोक्त श्लोक का पाठ "ख तभो लोकवेद" के स्थान पर खनभो वेद वेद" भी देखने में आता है जिसका अभिप्राय होता है विक्रम

सम्बत १३५६ । श्री रामानन्द द्विभुजयकार पण्डितगण स्वामी श्री भगवदाचार्यजी आदि अनेक लेखकों ने यही लिखा है ।

यदि सार्वभौम आचार्यपाद श्रीरामानन्दाचार्यजी का अवतार हुआ १२५७ या १३५६ विक्रम में, अर्थात् १२०१ या १३०० ईस्वी सन् में और रम्यजामातृ मुनि (श्री चरवर स्वामीजी) का जन्म हुआ १३७० ईस्वी में अतः श्री रामानन्दाचार्यजी से भी १७० या ७० वर्ष पीछे अवतरित होतewाले श्रीचरवर मुनि स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजी के अनेक पीढ़ी पूर्व के आचार्य भगवान् बोधायन श्री परपोतमाचार्यजी अथवा श्रीदेवानन्दाचार्यजी क पुत्र कैसे सम्भव हो सकते हैं ? यह किमी ने भी नहीं विचारा और श्रीरामानन्द सम्प्रदाय की श्रीरामानुज सम्प्रदाय के अन्तर्गत कह डाला एवं लिख डाला । वेद का विषय है कि द्विडी साहब स्वामी श्रीमानारामशरण भगवान् मसादजी (श्री रूप कलाजी) की दीक्षाकी भक्तमालका प्रथम सम्स्करण अपने के बहुत पूर्व से उपरोक्त ऐतिहासिक तथ्य मुद्रित होकर प्रकाशित हो चुके थे परन्तु संस्कृत की प्रायः अनभिज्ञता और अज्ञानी एवं अज्ञेयों के लेखों का प्रभाव हृदय पर जमा होने के कारण आपका भी ध्यान इस ओर नष्ट हो सका और यकिन सुधा स्वाद दाका में भी उसी अशुद्ध पाठ परम्परा का समावेश हो गया । परन्तु यह तो निश्चय ही है कि इन सांप्रदायिक एवं ऐतिहासिक तथ्यों के पतिकूल जो लेख हैं वे भ्रमात्मक हैं, गलत हैं, फिर वे चाहे आजके लिखे हो या कुछ पहिले के हों ।

यतिमहारा श्री रामानन्दाचार्यजी के प्रधान द्वादश शिष्य प्रसिद्ध हैं, जिनमें सबसे बड़े श्रीअनन्तानन्दाचार्यजीके शिष्य सिद्ध शिष्यामणि पर्योहारो श्रीकृष्णदासजी के शिष्य आचार्यपाद श्रीअग्रदेवाचार्यजी थे, इनका शिष्य भक्तमालकार स्वामी श्री नारायणदासजी उपनाम श्री नाथा स्वामीजी हुए हैं । आचार्य शिष्यामणि श्री रामानन्दाचार्यजी

के अन्य शिष्य श्री नरहरिचन्द्राचार्यजीके शिष्य विश्वविह्वल कवि श्रीरामचरितमानसकार गोस्वामीपाद श्री तुलसीदासजी हैं और श्री नंदामजी की शिष्या वे श्री मोरारि हैं जो श्रीद्वारिकापुरी में सशरीर श्रीरघुनाथजी के विश्रुत में लीन हो गई थी।

श्री सम्प्रदायकी पूरी गुरु परम्परा का चित्र भी आप अन्यत्र इस पुस्तक में अवलोकन करेंगे।

(एक शंका और उसका समाधान)

इस सम्प्रदाय की परम्परा में कुछ लोग यह शंका किया करते हैं कि नर रूप श्रीरामजी श्रीसीतानी और श्रीहनुमानजी ने तो त्रेतायुग में अवतार लिया है और ब्रह्माजी तो समस्त संसार के उत्पन्न करने वाले पितामह हैं, फिर वे श्रीहनुमानजीके शिष्य कैसे हुए। अतः सम्प्रदायके सृष्ट्यन्त विद्वान् आचार्यपाद दशरथ सावर्भौम स्वामी आचार्यदेवाचार्यजी महाराजके प्रसाद रूपमें मास इस शंका का कुछ स्वरूप में समाधान भी यहाँ दिया जा रहा है।

श्री सम्प्रदाय के परमाचार्यवर्य गोस्वामी पाद श्रीतुलसीदासजी के श्रीरामचरितमानस का जिनने गौर से पढ़ा है उन विद्वान् पाठकों से यह अविदित नहीं है कि बालकांड अनुच्छेद १४० से आरंभ होने वाले श्रीमनु सवरूपानी की तपस्या और वरदान के प्रकरण में श्रीशिवजी कहते हैं "जदि कारण अज अगुण अनृपा। ब्रह्म भयेउ कोशलपुर भूपा ॥" फिर महाराज मनु का वचन है—

अगुण अमर्ष अमन्य अनादी। जेहि चितहि परमाग्य वादी ॥
नेति नेति जेहि वेद निरुपा। चिदानन्द निरुपाधि अनृपा ॥
शेष विरंचि विष्णु भगवाना। उपनिषदि जामु अंश तैं नाना ॥
ऐसेउ प्रभु सेरक वश अहरी। भक्त हेतु लीला तनु गहरी ॥

फिर तपस्या से प्रसन्न हो आकाशवाणी से वर माँगने की आज्ञा होने पर मनुजी कहते हैं—

"जो स्वरूप भम शिव मनमाहीं। जेहि कारण भुनि यन्न करहीं ॥

जो हृष्टहि मन मानस हैसा। सगुण अगुण जेहि निगम प्रशंसा ॥
देखहि हम सो रूप भरि लोचन ॥" इस मार्थना पर प्रभु दर्शन देने हैं जिनकी रूप माधुरी का वर्णन वहीं पठनीय है। उन श्रीराम के पार्श्व में आदिशक्ति छविनिधि जगतकी जड़-अपने अंश से अनन्त लक्ष्मी, पावनी और ब्रह्माणी को उत्पन्न करने वाली श्रीसीताजी भी सुशोभित हैं।

पाठकों को स्मरण रखना चाहिये कि आने अयोध्या के महाराजा दशरथ और कौशल्या रूप में जन्म लेने पर पुत्र रूप से स्वयमेव अवतरित होने का वरदान देने वाले श्रीराम सीतानी अपने अनन्त नित्य परिकर (पारषद श्रीहनुमानजी आदि) के सहित त्रिपाद विभूति (नित्य श्रीमाकेवधाम) में नित्य विराजते हैं। इन्हीं के लिये श्रीशिवजी ने पार्वतीजी को कहा है कि—

"पुरुष प्रसिद्ध प्रकाशनिधि, प्रकट परावर नाथ।

रघुकुलमणि मम स्वामि मोह, कहि शिव नायक माथ ॥"

अर्थात् पुरुष शब्द से जो वेदादि शास्त्रों में प्रसिद्ध है, प्रकाश (ज्ञान) के समुद्र हैं, पर ब्रह्मा विष्णु शिव, जिनके मामले अवर हो जाते हैं ऐसे समस्त संसारके स्वामी ही श्रीरघुकुलमणि रूप में अवतरित हुए हैं और वे ही मेरे स्वामी हैं।

पुरुष शब्द जो वेद का सर्व प्रधान भाग है और चारों वेदों में पठित है उसमें उस जगज्जन्मस्थितिलयादि हेतु वेदवेद्य आत्म नर पुरुष परमात्मादि शब्द वाच्य सविदानन्द ब्रह्म को अनेक संज्ञों में पुरुष शब्द से बोधित किया गया है और अतः स्मृति पुराणेतिहासादि में सर्वत्र वे शिव ब्रह्मा विष्णुनागयणादि के आदि कारण परब्रह्म परमात्मा पुरुष नर आदि पदों से बोधित हुए हैं। पाठकों के मन्तोपार्थ ऐसे हजारों वचनों में से यहाँ दो चार वचन उद्धृत किये जा रहे हैं—

"वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् आदित्यवर्णं तपसः परस्तात्।

तमेव विदित्वाऽतिमृत्यु मेति नान्यः पंथा विद्यतेऽप्यनाथ ॥”

(पुरुष सूक्त)

“आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नम्यूनवः ।

तास्तस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः ॥” (मनु)

“नराऽनातानि तन्वानि नारायणानि विदुर्बुधाः ।

तानितस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः ॥” (पुराण)

“सत्त्वं रजस्तम प्रकृतेषु णास्तै-

र्युतः परः पुरुष एक इहास्यधत्ते ।

स्थित्यादये हरि विरिञ्चि हरंति संज्ञाः

श्रेयसि तत्र खलुमन्द तनोतिणास्तुः ॥” (भा० १।३।१)

अब भागवत में यह भी देख लीजिये कि वे पुरुष कौन हैं -

श्रेयं सदापारिभवधनमर्षाष्टदेह तार्थाम्पदं शिवाविराजनुतं शरस्यम् ।

सुन्याविहं प्रणतगालभवाविभवातं चन्द्रेमहापुरुषं ते वरुणारविन्दम् ॥

त्यक्त्वा सुदुस्त्यजं सुरेष्मितराजलक्ष्मीं धर्मपुत्रार्थवचसायदमादशयम् ।

मायामृगं द्रयितयेष्मितमन्वधावद्वन्दे महापुरुषं ते वरुणारविन्दम् ॥

(भा० १।१।५।३३, ३४)

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण के प्रथम सर्ग में महर्षि श्रीवाल्मीकिजी देवर्षि श्रीनारदजी से प्रश्न करते हैं “महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवं विधं नमः” (श्रीग० १।१।५) इस प्रश्न में यह कहा गया है कि ऐसे नर (परात्परव्रज) को जाननेमें आप समर्थ हैं । और श्रीनारदजी ध्यानके द्वारा प्रभुके स्वरूप रूप गुण विभूतिका अनुसन्धान काके उत्तर देते हैं कि-

“मुने ब्रह्माभ्यहं बुध्वा तैर्युक्तः श्रूयतां नरः ॥” (श्रीग० १।१।७)

हे मुनिवर मैं (इन आपके द्वारा कथित अनन्त दिव्य कल्याण गुण गणाकर) नरको ‘बुध्वा’ जानकर, कहता हूँ, आप (ममाहित होकर) सुनिवे !

अब विज्ञ पाठकों के विचारने की बात है कि इस श्रीनारदजी

और वाल्मीकिजीके प्रश्नोत्तरमें आया हुआ नर शब्द क्या मनुष्यका वाचक है ? नहीं, कभी नहीं । यहाँ यह नर शब्द दोनों ओरसे ही उसी आत्म नर पुरुष मच्चिदानन्द परब्रह्म आदि पद बाध्य नित्य किशोर द्विभुज साकेत विहारी श्रीराम का वाचक है यह निश्चय है ।

महर्षियों का अनुभव है कि—

वेद वेद्ये परे पुंमि जाते दक्षगयात्मजे ।

वेदः प्राचेतसादामोन्साक्षाद्रायायणात्मना ॥

अर्थात् वेद के द्वारा जानने के योग्य परात्पर ब्रह्म जब अयो-

ध्याधि पति महाराजा दशरथ के पुत्र होकर अवतरित होते हैं तब वेद महार्षि वाल्मीकिजी के द्वारा श्रीमद्रामायण रूप में प्रकट होते हैं ।

विज्ञ पाठकों को यह भी ध्यान में रखने की बात है कि वेदों में उस पर पुरुष का वर्णन द्विभुज रूपमें ही हुआ है । पुरुष सूक्त के “बाहू राजन्यः कुत” वचन में बाहू शब्द द्विवचनान्त होने से यह स्वतः सिद्ध है । कुछ आग्रही विद्वान् पण्डितों ने सूत्रों में महती बुद्धि लगाकर इस बाहू शब्द को एक वचनान्त कहने का प्रयास करते हैं, परन्तु तार्त्तरिण्य पुरुष सूक्त में १२ वें मंत्र का “मुखं किमस्य कौ बाहू” द्विवचनान्त प्रश्न वचन उस प्रयासको असफल काके यह सिद्ध कर देता है कि यजुर्वेद में भी बाहू पद द्विवचनान्त ही है । अतएव यह सिद्धान्त है कि द्विभुज परब्रह्म ही परोपारम्भ है ।

सबसे बड़ी बात यह है कि यज्ञपुरुष भगवानसे श्रुत्यजुः सामादि वेदोंका आविर्भाव कह अश्व गो अजादि सृष्टिका वर्णन करके “यत्पुरुषं व्यदधुः” (तै० पु० ११) से मानव देव सृष्टि का वर्णन करते हुए अन्तमें कहा है—“वेदाहमेतं पुरुषं मशानम् । आदित्यं वर्णं तपस्तुषारे । सर्वाणि रूपाणि विवित्पचीतः नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते ॥१६॥ धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः । तमेव विद्वानमृत इह भवति नान्य पंथाः अयनाथ

विवक्षिते ॥१७॥ इस सिद्धान्त वाक्यमें "तमेव विद्वान्" वाक्य स्पष्ट कह रहा है कि द्विभुज परब्रह्मका उपामक उपामन बेलामें ही अमृतत्वको प्राप्त करता है । इतने कथनसे भी सन्तुष्ट न होकर श्रुति भगवती कहती है कि (अथनाथ) मोक्षके लिए (अन्यः पन्थाः न विद्यन्ते , दूसरा कोई मार्ग ही नहीं है ।

मानव स्वभाव सुलभ अशुद्धियाँ इस संस्करणमें भी रही हैं, जिनका आग लगाये गये शुद्धि पत्र में यथा शक्ति निराकरण किया गया है । मात्रा आदिके दृढ़ जानेसे दानेशाली अशुद्धियाँ शुद्धि पत्रमें नहीं दी गई हैं । अतः पाठकोंसे प्रार्थना है कि सब अशुद्धियोंको शुद्ध करके पढ़ें ।

प्राकथन लया हो गया है और जिन ग्रंथों से, व्यक्तियों से, एवं संस्थाओं से मुझे इस संशोधन संपादन में सहायता मिली है उसका कृतज्ञ होना मेरा कर्तव्य है, नाथ उनके बहुत हैं, अतः यहाँ उनके सब नाम न लिखकर मैं हृदयमें ही उनका स्मरण कर लेता हूँ और ग्रंथोंके रचयिताओं प्रकाशकों एवं मुझे प्राप्त करानेवालों, चित्र प्राप्त करानेवालों, प्रोत्साहन एवं आश्वासन प्रदान करनेवालों, ग्रंथोंको प्रकाशित करनेवालों, मुद्रित क मन्त्रालों और किसी भी प्रकार से मुझे जिनने कुछ भी सहायता प्रदान की है उन सबका आधार मानता हुआ सबका शतशः धन्यवाद देता हुआ मैं अपने इस प्राकथन को यहाँ समाप्त करता हूँ बोलो भक्त भक्ति भगवान और श्रानुदेव की जय ! जय !! जय !!!

खन्ध निवास आकाशपुरी

आप सबका एक लघु सेवक

आकृष्ण जन्माष्टमी

सं० २०२२ वि०

जानकीदाम श्रीवैष्णव

व्यवस्थापकः—श्रीवैष्णव साहित्य संस्थान

श्रीरामचरणभार्याश्रम
जडीवालों की बगोची, आगरा रोड
जयपुर (राजस्थान)

श्रीहनुमान वाटिका
श्री अयोध्याजी
(उत्तर प्रदेश)

भक्तमालका सूची-पत्र

(कृपया भक्तोंके नामोंके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़ें)

विवक्ष	पृष्ठ	भक्तनाम	पृष्ठ
प्राकथन	१	सू० सोलह पार्षद (विष्वदसेन, १६	
सूचीपञ्चादि	२३	जय, विजय, प्रवल, वल, नन्द,	
सम्भावनीय मङ्गलाचरणादि	१	सुनन्द, सुभद्र, भद्र, चण्ड,	
टीका मङ्गलाचरणादि टी० १	५	प्रचण्ड कुमुद, कुमुदाक्ष, शील,	
टीका का नाम एवं माहात्म्य टी० २,		सुरशील, सुप्रेक्ष टी० २५	
सक्तिमहाराणीका शृंगार टी० ३ ६		सू० ६ प्रियभक्त (सप्तमी, गुरुद, २०	
टीका का चमत्कार टी० ४	"	१६ उपरोक्त पार्षद, श्रीहनु-	
वैजयन्तीमालाका रूपक टी० ५	७	मानजी, जाम्बवन्तजी, सुधीष	
सत्संग महिमा टी० ६	"	जी, विभीषणजी, शत्रुजी,	
प्रथम महिमा टी० ७	८	जटायुजी, भृङ्गजी, चतुर्वज्रजी,	
ग्रंथ महिमा टी० ८	"	अम्बरौषजी, विदुरजी, अकर	
सू० १-४ मङ्गलाचरण बोधा	९	जी, सुदामाजी, चन्द्रहासजी,	
भक्त भक्ति भगवान और गुरु	"	चित्रकेतुजी, माह, गजराज,	
के लक्षण टी० ९		पांडव, कौषारवजी, 'मैत्रेयजी'	
मंथरपनाकी आचार्याज्ञा टी० १० १०		कुन्तीजी, द्रौपदीजी) टी० २६	
श्रीनामास्थामिचरित टी० १२	११	हनुमानजी टी० २७	२०
सू० ५ अष्टतार विनय टी० १४	१२	विभीषणजी टी० २८	२१
सू० ६ श्रीरामचरणचिन्ह टी० १५	"	शत्रुजी टी० ३१	२२
सू० ७ द्वादशमहामागवत (महा,	१६	गुहाराज जटायुजी टी० ३८	२५
नारद, शिवजी, सनकादिक,		महाराजा अम्बरौषजी टी० ३९	"
कपिलदेवजी, स्वाम्यशुक्लमनुजी		विदुरजी टी० ५१	२०
प्रह्लादजी, राजाजनकजी,		सुदामाजी टी० ५३	२१
भीष्मजी, राजावलि, शुक्रदेव		चन्द्रहासजी टी० ५८	२३
जी एवं धर्मराज)		कौषारव (मैत्रेयजी)	२४
श्रीशिवजी टी० २०	१७	चित्रकेतुजी टी० ६९	
अजामीलजी टी० २३	१८	माता कुन्तीजी टी० ७०	"

(कृपया भक्तोंके नामोंके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़ें)

भक्तनाम	पृष्ठ	भक्तनाम	पृष्ठ
रानी द्वीपदीपा टी० ७१	३६	राजा रन्तिदेवजी टी० ६४	५०
मू० १० श्री योगेश्वर, भुतिदेव, ४०		निवावराज गुरुजी टी० ६५	५१
अंग, सुषुक्तुन्द, प्रियव्रत, धृष्ट, ५०		मू० १३ निमि और ६ योगेश्वर	"
परीक्षित, शेषनाग, सुत, सौतक		मू० १४ मणधामक्ति के नेता	"
प्रचेतागण, रानी सतरूपाजी,		(परीक्षित, शुक्रमुनि, प्रधू,	
सुनीति, सती, मन्दासरा, वज्र		प्रह्लाद, लक्ष्मी, अकूर, हनुमान,	
पत्नियाँ, अजगोपिनी टी० ७३		अजुन, बलि)	
मू० ११ प्रचीरवर्हि, सत्यव्रत, ४१		राजा परीक्षित टी० ६७	५२
रङ्गनाथ, सगर, मगौरथ, दोनों		मुनिवर्य शुक्रदेवजी टी० ६८	५३
बास्मीकि, जनकराज, कर्मा		प्रह्लादजी टी० ६९	"
गद, हरिश्चन्द्र, भरत, दध्याचि,		अकूरजी टी० १०१	५४
सुरभ, सुचन्दा, शिनि, बलि-		देवराज बलिजी टी० १०२	५५
पत्नी, नौल, मोरध्वज, ताज-		मू० १५ प्रसादरसिक (भगवान	"
ध्वज, अलक टी० ७४		शकर, शुक्रमुनि, सनकादिक,	
रवपच बास्मीकिजी टी० ७५	"	कपिलमुनि, नारद, विष्णुसेन,	
हनुमान्दजी टी० ८३	४५	प्रह्लाद, बलि, मोक्ष, अजुन,	
राजा हरिश्चन्द्र, सुचन्दा, शिनि,		ध्रुव, अम्बरीष, विभीषण,	
दध्याचि टी० ८६	४६	अकूर, गुरु)	
विन्ध्यादली (बलिपत्नी) टी० ८७	"	मू० १६ महर्षि पुनस्त्य, अगस्त्य, ५६	
राजा मोरध्वज टी० ८८	४७	क्यबल, सोभदि, वशिष्ठ, कर्षम,	
अलक टी० ८९	४८	अग्नि, ऋषिक, गर्ग, गौतम,	
मू० १२ अमु, इक्ष्वाकु, ऐल, ५०		व्यास, शुक्रदेव, सोमस, धृगु,	
गाधि, रघु, अंग, शतधन्वा,		दालभ्य, अंगिरा, ऋषि,	
अमूर्ति, रन्तिदेव, वसंत, मूनि,		माण्डव्य, विश्वामित्र, दुर्वासा,	
देवल, मनु, नहुष, क्वाति,		अठासी हजार-ऋषिगण,	
दिलीप, पूरु, बटु, गुरु,		जाबाली, यमदग्नि, वराहद,	
सान्वासा, पिण्डल, निमि,		वाधायन	
भरद्वाज, वसु, सरभंग, संजय,		म. मोधाधन श्रीपुत्रोत्तमाचार्यजी "	
रामीक, चत्तामपाव, याग्य-		मू० १७ अठारह पुराण	५१
धरम		मू० १८ अठारह स्तुति	"

(कृपया भक्तोंके नामोंके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़ें)

भक्तनाम	पृष्ठ	भक्तनाम	पृष्ठ
मू० १९ श्रीरामसचिव (धृष्टी, ६२		मू० २६ खेतहीपके भक्त टी० १०३	६५
विजय, कथन्त, राष्ट्रवर्धन,		मू० २७ धामके द्वारपाल अष्ट-	६६
सुराष्ट्र, अशोक, धर्मपाल, सुमन्त्र)		कुलो नाग	
मू० २० श्रीराम सहचर (सुमावजी "		मू० २८, २९ वैष्णवचतुःसंज्ञ-	६७
अज्ञवजी, हनुमानजी, वधि-		दायों के प्रधानाचार्य वर्य	
मुवजी, द्विचिदजी, मयन्दजी,		मिन्धाक स्वामिजी टी० १०६	६८
लाम्बवानजी, कर्का, लुखेण,		विष्णु स्वामीजी	६९
दरीमुख, कुमुद, नील, नल,		मन्वाचार्य स्वामिजी	७०
शरभजी, गवयजी, गचाङ्गजी,		मू० ३० श्रीसिन्धुजाष्टप्रदायके "	
पनसजी, गन्धमादनजी एवं		आचार्य (विष्णुसेनजी, राठकोपा-	
अठारह पक्ष यूयपति)		चार्यजी बोधदेवती मंगल-	
मू० २१ नवनन्द (प्रानन्दजी, "		मुनिजी माधमुनिजी पुंढरी-	
धृषनन्दजी, सपनन्दजी, अग्नि-		काक्षजी राममिन्नी परा	
नन्दजी सुनन्दजी, कर्मानन्दजी,		कुशजी यामुनमुनिजी रामा-	
धर्मानन्दजी, वज्रभजी,		मुजाचार्य स्वामीजी)	
नन्दरायजी)		मू० ३१ आचार्यपाव श्रीरामानुजा-	
मू० २२ श्रीकृष्ण परिकर (नन्द-		चार्यजी टी० १०७	७१
रायजी सपनन्दजी करानन्दजी		मू० ३२ अतप्रज्ञजी भुतदेवजी	८६
माता वशोक्ता वृषमानुजी माता		अतधामजी भुव कवधिजी	
किरतिदा राधारानीजी सहचरी-			
चुन्द, भगल, सुवल, सुबाहु,		मू० ३३ लालाचार्यजी टी० ११०	"
भोज अजुन, श्रीप्रामा एवं		मू० ३४ श्रीसन्धवावापदेष्टा गंगा-	८६
सखा मंजुलके ग्वालवाक		धराचार्य स्वामिजी टी० ११५	
मू० २३ श्रीकृष्ण अनुचर (रक्तक, ६४		मू० ३५ देवान्धाचार्य स्वामिजी ६०	
पत्रक, पत्रि, मधुकटी, मधुव्रत,		हर्षानन्दचार्य स्वामिजी रावधा-	
रघाल, विशाल, भेसकन्द,		मन्वाचार्य स्वामिजी आनन्द-	
मकरन्द, सदानन्द, चन्द्रहास,		भाष्यक वल्लभगुप्त श्रीरामा-	
पवद, वकुल, रसवान, शारदा,		मन्वाचार्य स्वामिजी	
बुद्धिप्रकाश)		श्रीरामानन्द जन्मास्तवजतकवा ६१	
मू० २४ सातहीनों के भक्त	"	(श्रीअगस्त्यसंहितोक्त)	
मू० २५ नवसंज्ञों के भक्त	६६	श्रीरामानन्द यशावली	१०७

(कृपया भक्तोंके नामोंके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़ें)

भक्तनाम	पृष्ठ	भक्तनाम	पृष्ठ
प्रसंगपरिजातांक सत्सिद्ध वृत्त	१२५	निवासाचार्यजी) गदाधर	
ऐतिहासिक विवेचन	१४०	स्वामिजी देवदास स्वामिजी	
श्रीवेङ्कटमहादेव भास्कर	१४६	हेमदास श्री कल्याणदासजी	
मू० ३६ द्वादशशिष्यों सहित	१६५	गंगादेवाजी विष्णुदासजी कान्हर	
आचार्यपाद आनन्दभास्कर		जी रंगजी चौदनजी शिवरोषा	
श्रीरामानन्दाचार्य स्वामिजी		साकेतनिवासाचार्य(श्रीटीकाजी) २२२	
श्रीचमन्तानन्दाचार्य स्वामिजी	१६४	प्रभावकलानिधि (ग्रंथ)	२२३
श्रीयोगानन्दाचार्य स्वामिजी	१६७	प्रपत्तिकुसुमाञ्जलि "	२२६
वेरायपचीसी (ग्रंथ)	२०२	मू० ४० श्रीकृष्णदेवाचार्यजी	२२८
श्रीमालवातन्दाचार्य स्वामिजी	२१०	टी० १२९	
श्रीभानानन्दाचार्य स्वामिजी	२१५	मू० ४१ श्रीचमन्दाचार्यजी	२३०
मू० ३७ श्रीचमन्तानन्दाचार्य	२१६	टी० १२३	
स्वामीजीके शिष्य (योगानन्दा-		श्रीअमरस्वामि चरित	२३१
चार्य स्वामिजी भयेश स्वामि		श्रीरामभक्त स्तोत्र (ग्रंथ)	२३६
जी कमधन्व स्वामिजी कन्ह		श्रीरामाष्टक स्तोत्र "	२४१
स्वामिजी पयोहारो आकृष्ण-		श्रीमंत्रराज परम्परा "	२४३
दास स्वामिजी रामदास स्वामिजी		मू० ४२ भगवान शंकराचार्यजी	२४५
रंगजी नरहर्याहन्दाचार्यस्वामिजी		टी० १२४	
रंगजी टीका ११७	"	मू० ४३ नामदेवजी टी० १२७	२४६
मू० ३८ प. श्रीकृष्णदासजी टी. ११६ २२०		मू० ४४ कवि चक्रवर्ति जयदेव	२४३
मू० ३९ श्रीपयोहारजीके शिष्य २२१		जी टी० १२४	
कील्लदेवाचार्य स्वामिजी		मू० ४५ आनन्द टीकाकार	२६१
अमरदेवाचार्य स्वामिजी		शोध स्वामिजी टी० १६४	
केवलदासाचार्य स्वामिजी		मू० ४६ किल्लमगलसूरदासजी	"
चरणदास स्वामिजी हठोनारा-		टी० १६५	
यक स्वामिजी सुषं स्वामिजी		मू० ४७ विष्णुपुराजी	२६८
पुरुषा स्वामिजी महाराजा		टी० १७७	
पृथ्वीराजजी त्रिपुर स्वामिजी		मू० ४८ ज्ञानदेवजी टी० १७८	२६६
पद्मनाभ स्वामिजी गोपाल		त्रिलोचनजी टी० १८०	२७०
स्वामिजी टेक स्वामिजी		आचार्यपाद श्रीवल्लभाचार्यजी	२७३
टीका स्वामि (श्रीसाकेत		टी० १८७	

(कृपया भक्तोंके नामके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़ें)

भक्तनाम	पृष्ठ	भक्तनाम	पृष्ठ
मू० ४९ भक्तदासजी लीजानु		नन्ददासजी टी० २४८	३०१
करणीजी, रतिमतीजी	२७४	मलहस्वामिजी टी० २४६	३०२
भक्तदासमूप कुलशेखरजी	"	भक्ता वारमुखीजी टी० २५०	"
टी० १६०	२७५	मू० ५१ भक्त वृष्णाक्ष, टी० २५३	३०३
लीजानुकरणीभक्त एवं		मू० ५६ वेपनिष्ठ राजा टी. २५५	३०५
रतिमतिवार्जी टी० १/२		मू० ५७ अन्तनिष्ठराजा टी० २५६	३०६
मू० ५० आगे के ४ भक्त	२७६	मू० ५८ गुरुचरननिष्ठ टी० २५८	३०७
जगदीशपुरी के राजा टी० १६३	"	मू० ५९ श्रीदेवासजी टी० २५९	३०८
करमाबाईजी टी १६६	२७७	मू० ६० श्रीकवीरजी टी० २६८	३१३
सिलपिस्तेभक्ताबाई टी० १६८	२७८	मू० ६१ श्रीबापाजी टी० २८२	३१८
पुत्रविषदाजी २ बाई टी २०५	२८१	मू० ६२ आभताजी टी० ३०६	३२६
मू० ५१ अगाधआपस ३ भक्त	२८४	मू० ६३ अ सेनजी टी० ३०६	३४१
श्रीरंगमन्त्रिरोजमोता मामा	"	मू० ६४ श्रीसुखानन्दाचार्य	३४३
भानजा टी० २९२		स्वामिजी	
हंस भक्त टी० २९६	२८६	मू० ६५, ६६ अ सुखसुरानन्दा-	३४६
सदात्रयी महाजन टी० २९६	२८७	चार्य स्वामिजी	
मू० ५२ आगे के ६ भक्त	२९०	मू० ६७ श्रीनरहर्यानन्दाचार्य	३५३
राजा सुवनसिंहजी चौहान	"	स्वामिजी	
टी० २९४		मू० ६८ पद्मानाभजी टी० ३९१	३५७
देवापंढाजी टी० २९७	२९१	मू० ६९ तरवाजीवाजाटी० ३९२	३५८
कामध्वजजी टी० २९०	२९३	मू० ७० माधवदासजी टी० ३९५	३६६
जयमलजी राठीद टी० २९१	"	मू० ७१ रघुनाथगुहाईजी टी० ३९७	३६५
ग्वालभक्तजी टी० २९३	२९४	मू० ७२ नित्यानन्दस्वामिजी एवं	३६६
शोधस्वामिजी टी० २९४	"	गौरांग महाप्रभुजी टी० ३९६	
मू० ५३ आगेवाले ३ भक्त	२९६	मू० ७३ महाकवि सूरदासजी	३६६
निष्कल हरिपाजजी टी० २९६	"	मू० ७४ परमानन्ददासजी	३७०
श्रीसाक्षी गोपालजी टी० २९८	२९७	मू० ७५ केशव काश्मीरी	३७२
रामदासजी डाकोरी टी० २९२	२९८	महाचार्यजी टी० ३३३	
मू० ५४ आगेवाले ४ भक्त	३००	मू० ७६ श्रीभट्टजी	३७५
असुस्वामीजी टी० २९६	३०१	मू० ७७ हरिदासदेवजी टी० ३३८	"

(कुर्या भक्तोंके नामके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़ें)

भक्तनाम	पृष्ठ	भक्तनाम	पृष्ठ
सू० ७८ दिवाकरजी	३७६	गो० गोपालभट्टजी टी० ३७५ ४०२	
सू० ७९ विह्वलनाथ गोस्वामीजी	३७७	अलीमगवानजी टी० ३७६ "	
त्रिपुरदासजी टी० ३४०	३७८	विह्वलविपुलजी टी० ३७७ ४०३	
सू० ८० गोस्वामी विह्वलनाथजी	३७९	यानेश्वरी जगन्नाथजी टी० ३७८ "	
के ७ पुत्र		लोकनाथ गोस्वामीजी टी० ३७९ ४०४	
सू० ८१ कृष्णदासजी टी० ३४४ ३८०		मधुगुसाईजी टी० ३८० "	
सू० ८२ वर्धमान एवं गंगलजी	३८१	कृष्णदास अधिकारीजी टी० ३८१ "	
सू० ८३ सैमगुसाईजी	"	प० कृष्णदास जी टी० ३८२ ४०५	
सू० ८४ विह्वलदासजी चौबे	३८३	भूगर्भगुसाईजी टी० ३८३ "	
टी० ३४८		सू० ८५ रसिकमुरारीजी टी० ३८४ ४०६	
सू० ८५ हठीले हरिरामजी	३८६	सू० ८६ सोमाजी, सीधाजी, ४१०	
टी० ३४५		आधारजी, हरिजी, हरिनाथ	
सू० ८६ कमलाकरभट्टजी	३८७	जी, त्रिलोकनजी, आसाधर	
सू० ८७ नारायणभट्टजी	"	जी, धीराजजी, नीराजी,	
सू० ८८ वल्लभजी	३८८	सधनाकसाईजी, दुखमोचनजी,	
सू० ८९ रूपसनातन गोस्वामीजी		काशाधर अष्टभूतजी, कृष्ण-	
टी० ३४७	३८९	किकर जी, कटहरिया जी,	
सू० ९० आचार्यपाष विनहरिचंरा		शोभुरामजी, लदारामजी,	
गोस्वामीजी टी० ३६४	३९०	हुंजरजी, पद्मनाभजी, पदारथ	
सू० ९१ हरिदासजी टी० ३६७	३९०	जी, रामदासजी, विमलानन्दजी,	
सू० ९२ व्यासदेवजी टी० ३६८	३९०	सधना कसाईजी टी० ४१४ "	
सू० ९३ जोब गोस्वामीजी	४०१	काशीश्वर गुसाईजी टी० ४१८ ४१२	
टी० ३७४		सू० ९७ बलिरामराकलजी श्याम-	
सू० ९४ गोपालभट्टजीहरीचैराजी, "		दास जी, खंजी स्वामि जी,	
विह्वलविपुलजी रससागरजी,		सन्तसोहा जी, दूल्हराम जी,	
यानेश्वरी जी, जगन्नाथ जी		पद्मनाभ जी, मनोरथ जी,	
लोकनाथ जी, बलमुनि जी,		राका स्वामि जी, उद्योगू जी,	
मधुजी, रंगजी, कृष्णदास		जाडा जी, आचाजी, गुरुजी,	
पंडितजी, कृष्णदास अधि-		सदाईजी, चान्दाजी, नापाजी	
कारी जी, बर्मजी, सुगल-		स्वामि श्रीशेजीजी टी० ३९६ ४१३	
किशोरजी, भूगर्भ गुसाईजी		स्वामि राका बाका जी टी० ४०९ ४१४	

(भक्तोंके नामके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़ें)

भक्तनाम	पृष्ठ	भक्तनाम	पृष्ठ
सू० ९८ धनचरचंरी भक्त लक्ष्मण ४१५		बाकजी, कामहरजी, केशवजी,	
जी, लफराजी, लड्डू जी, जोध-		प्रयागदासजी, काहंगजी, गोपाल	
पुर के त्यागी जी, सूरज जी,		जी और नागुशीके पुत्र	
कुम्भनदास जी, विधानी जी,		सू० १०१ तीन घास के पुजारी ४१६	
सैमदासजी, चिरागीजी,		(केशवजी, हरिनाथजी, भीमजी,	
भावनजी, विरहोजी, भरत		खेताजी, गोविन्दजी ब्रह्मचारी	
जी, नफरजी, हरिकेशलदेराजी,		बालकृष्ण जी, बलभरत जी,	
हरिदासजी, अयोध्यादासजी,		अक्युतजी, अप्पथ जी, पंडा	
चक्रपाणिजी, त्रिलोकजी,		गोपालनाथजी, मुकुन्दजी, गज-	
पुखरदा जी, वितलीजी, उद्धवजी		पतिजी, यशगोपालजी)	
लड्डू जी टी० ४०४	४१५	सू० १०२ कविगण (विद्यापतिजी, "	
सन्तदास टी० ४०५	४१६	ब्रह्मदासजी, बहोरनजी विहारी	
त्रिलोकी जी टी० ४०६		जी, गोविन्द जी, गंगा-	
सू० ९९ भीमजी, सोमनाथजी, "		रामजी, रामनाथजी, परशु-	
सोम जी, निखोजी, विशाखजी,		रामजी, प्रियदासजी, काहू	
लमव्याजी जी, महदा जी,		के भक्त भाई जी, केशव जी	
मुकुन्द जी, गणेशजी, त्रिविक्रमजी,		आसकराय जी, पूरण जी,	
रघुजी राघवजी, बालमीकजी,		नरपतिजी, जन्मदासजी, ४२२	
वृद्धदास जी, जगनजी, माधू		सू० १०३ रघुनाथजी, गोपालनाथ	
जी, विह्वलदासजी, आचायजी,		जी, रामभट्टजी, दासस्वामीजी,	
नालाजी, भूदेवजी, बाहुवलजी,		गुंजामाजीजी, उत्तमचित्तजी,	
हरिजी, राघवजी, छाखाजी,		विह्वलजी, नरहट्टजी, निष्का-	
हरिधरजी, वल्लवजी, कपूरजी	४१८	मोजी यदुनन्दनजी, रघुनाथ	
धारमजी, सूरोजी		जी, रामानन्दजी, गोविन्दजी,	
सू० १०० नरहर्यानन्दजी, देवा-		भोजीय मुरलीधर जी, मिश्र	
नन्दजी, मुकुन्दजी, महीपतिजी,		हरिदासजी, भगवानजी, मुकुन्दजी	
सन्ध रामजी तन्कोजी,		दंडावी केशवजी, अतुर्भुजजी	
सैमदासजी, नन्दजी, रंग जी,		परिश्रम जी, विष्णुदास जी,	
विष्णुजी, बाजूजी, विदाजी,		वेणोजी टी० ४१५	
जीवसजी, द्वारिकाजी, माधव		सू० १०४ भक्तयुवति सुन्द सीता ४२३	
जी, माँहनजी, रूपाजी, दामो-		जी, भाती जी, सुमति जी,	
दरजी, नरहरिजी, भगवानजी,			

(रूपया भक्तोंके नामके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़ें)

भक्तनाम	पृष्ठ	भक्तनाम	पृष्ठ
उमाजी, शोभाजी, प्रभुताजी,		मू० १०८ नरसोमहताजी	
अट्टियानीजी, रांगराजी, गौरीजी,		टी० ४२६ ४३०	
कुँवरजी, गोपाजी, उबीडा		मू० १०९ यशोधरजी	४४१
जा, गानागोशदेईजी, कलाजी,		मू० ११० नन्ददासजी	४४२
लखोजी, कृतगढाजी, मानमली		मू० १११ जनगोपालजी	"
जी, सत्यभामाजी, यमुनाजी,		मू० ११२ साधवदासजी टी० ४५६ ४४३	
केलीजी, रमाजी, सुगाजी,		मू० ११३ अगदजी टी० ४६७ ४४४	
देवाजी, दोरजी, कमला जी,		मू० ११४ कराजी नरेश	
देवकीजी, हीराजी, बेरीजी		चतुर्भुजसिंहजी टी० ४६५ ४४७	
रानी श्रीगणेशदेईजी की कथा		मू० ११५ मारावाईजी टी० ४७१ ४५०	
टी० ४१७ ४२४		मू० ११६ आमेर नरेश पृथ्वी-	
मू० १०८ नरबाहनजी, बाहनजी ४२५		राजजी टी० ४८१ ४४६	
वरोराजी, जपूजी, जयमलजी		मू० ११७ भक्त नरेश	
बोधावत, जयन्तजी, धाराजी,		मेरवाके जयपालजी, टोडे के	
अनुमबीजी, ऊडाजा रावत,		रामचन्द्र जी, अभय-	
अजु नजी, जनादनजी, गोविन्द		रामजी, भीमाजी, कामसि	
जी, जाताजी, दामोदरजी,		में भगवानजी, ईश्वर-	
ईश्वरजी, हेमचिन्ताजी,		सिंह जी, अक्षयसिंह जी,	
मयानन्दजी, तुलसादासजी		रायमलजी, मधुकरसिंहजी ४६२	
नरबाहनजी टी० ४१६ "		राजाजयचक्रजी टी० ४८६ ४६१	
मू० १०९ बाघरी में भगवानदास		मधुकरसाहजी टी० ४८८ ४६३	
जी, जटियाने ग्राममें भाऊजी,		मू० ११८ खेमाजी रत्नजी राठोड	
बूंदोमें बणिक रामदासजी,		मू० ११९ रामदेवजी राठोड	
संडोलेमें मोहन बारीजी और		टी० ४८६ ४६४	
दाऊजी, भांडोली में जगदीश		मू० १२० रामदेवजी की राखी टी० ४८०	
जी, चटखावल में जयमलजी,		मू० १२१ किशोरसिंह जी	
सुनपम में भगवानजी, मल-		टी० ४८९ ४६६	
खान में गणपालजी चधारिया		मू० १२२ हरिदासजी राठीड ४६७	
एवं जावनेरी में गोपालजी,		मू० १२३ कांतन निष्ठ चतुर्भुजजी ४६७	
गोपालजी टी० ४२० ४२६		टी० ४६३	
मू० १०७ साखाजी टी० ४२२ ४२७			

(रूपया भक्तोंके नामके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़ें)

भक्तनाम	पृष्ठ	भक्तनाम	पृष्ठ
मू० १२४ कृष्णदास जी चालक ४६६		मू० १४१ काथानरेस शिम्बाजी ५२६	
मू० १२५ सन्तदासजी टी० ४६७ ४७०		टी० ५४१	
मू० १२६ मदनमोहन सुरदासजी		मू० १४२ आमेर राज्यबधू ५३०	
टी० ४६८ ४७१		रत्नावतीजी टी० १४२	
मू० १२७ कात्यायनीजी ४७३		मू० १४३ पुरोहित बगसावजी ५३७	
मू० १२८ प्रहारीदासजी टी० ५०३ ४७४		काथखटा टी० ५४३	
मू० १२९ गोस्वामी श्री तुलसी-		मू० १४४ मधुरादासजी कीर्तनियाँ "	
दासजी टी० ५०८ ४७६		टी० ५५४	
मूल श्रीगुप्तों ईश्वरित ४६२		मू० १४५ नरेंद्र नारायणदासजी ५३६	
मू० १३० सानदासजी ५१५		टी० ५६१	
मू० १३१ गो० गिरिधरलालजी "		मू० १४६ भक्त समूह (बोहितजी ५४०	
मू० ५३२ गो० गोकुलनाथ जी		रामकुमारजी, कुमरजी, गोविन्द	
टी० ५१६ ५१६		जी, सातस्वामिजी यशवंतजी,	
मू० १३३ बनवारीदासजी ५१७		गदाधरजी, अनन्तानन्दजी,	
मू० १३४ नारायण मिश्रजी ५१८		दोनदासजी, हरिनाथजी,	
मू० १३५ राघवदासजी "		बलपलजी, कन्हारजी, नारद-	
मू० १३६ बावनजी ५१९		जी, मासूरामजी, श्यामजी,	
मू० १३७ परशुरामदेवजी "		हरिनारायणजी, कृष्णजीका-	
मू० १३८ गदाधर मट्टजी ५२०		जी, भगवानजी और श्याम-	
मू० १३९ चारण भक्त चव		विहारजी	
जी जगतनारायणजी, ईश्वर		मू० १४७ संसार निवृत्त भक्त- ५४०	
जी, कर्मानन्दजी, कोल्ह जी,		समूह धूपेत निवासी	
अरुहजी, भाघवजी, जीवा-		चट्टवजी, रामदेवजी, परसाजी,	
नन्दजी, नारायणदास जी,		गंगारामजी, रोषसाई निवासी	
मोहनजी ५२४		सन्त विश्वामदासजी, किकर-	
कर्मानन्दजी टी० ५३१ "		कुंडा में कृष्णजी और लेमजी	
काहजी एवं अरुहजी टी० ५३२ ५५५		सांडा ग्राममें गोपातनन्दजी,	
नारायणदासजी टी० ५३७ ५२७		जयनारायण में विदुरजी, दयाल-	
मू० १४० बीकानेर नरेश पृथ्वी-		जी, दामोदरजी, मोहनजी,	
राजजी टी० ५३८ "		परमानन्द कृष्णमें चट्टवजी,	

(कृपया भक्तोंके नामके पूर्व "ओ" लगाकर पढ़ें)

भक्तनाम	पृष्ठ	भक्तनाम	पृष्ठ
रघुनाथजी और चतुराजी		तैवर टो० १७६	
जयतारकके विदुरजी टो० ५६३ ५४१		मू० १५५ चशबन्तसिंह जी ५१०	
मू० १४८ चतुराभगवतजी	"	राठोड	
टी० ५६४		मू० १५६ हरिदासजी वैश्य ५११	
मू० १४९ माधुकरवृत्तिके भक्त ५४३		टी० ५७८	
द्वारिकामें गोमाजी व परमा-		मू० १५७ बाबाजी के गोपालजी	
नंदजी, खोरामें मथुरादासजी		एवं काशी के विष्णुदासजी	
काकलख और सागानेरमें दोनों		टी० ५८० ५१२	
भगवानजी, टोडेमें विद्वत्जी,		मू० १५८ श्रीकृष्णदेवाचार्य	
गोनेर में लंसजी पंडा बोधर		कृपापात्र ऋषि-एन आश-	
जी पीपजी प्रयतारण में		करणजी, रूपभगवानजी,	
केवल कृपाजी		चतुरदासजी, खोतरजी, लाखा	
कंकलकृपाजी टी० ५६७ ५४३		जी, अद्भुतराजजी, खेमजी, राध-	
मू० १५० श्रीअमरदेवाचार्य कृपा-		मल्लजी, गोरजी, देवदासजी,	
पात्र खंजी, प्रयागदास		दामोदरदासजी ५५४	
जी, विदेशीजी, पूरुदास		मू० १५६ नाथभट्टजी ५५४	
जी, बनबारी दास जी,		मू० १६० करमंती बाईजी ५५५	
नृसिंहदासजी, भगवानजी,		टी० ५८४	
दिवाकरजी, किशोरदास		मू० १६१ खड्गसेनजी कावख ५५६	
जी, जगतजी, जगन्नाथ		टी० ५८२	
दासजी, छल्लोधी, खेम-		मू० १६२ गंगवाल्मीकी टी० ५८३ ५५६	
दासजी, लीचीजी, कनोदासजी		मू० १६३ श्रीश्रीय दिवाकरजी ५६०	
मू० १५१ साकेतनिवासाचार्य ५४७		मू० १६४ जालदासजी ५६१	
(टीलास्वामीजी) के शिष्य		मू० १६५ माधव स्वाक्षजी "	
अंगदजी परमानन्ददास जी		मू० १६६ प्रयागदासजी ५६२	
खेमदासजी, त्योकाजी,		मू० १६७ प्रेमनिधिजी टी० ५८४ ५६२	
हरिरामजी		मू० १६८ दूधरामदासजी ५६५	
मू० १६२ कान्हरदासजी ५४८		मू० १६९ हरिनारायणजी, पद्म	
मू० १६३ नीसा खेतसीजी "		जी, कंधाजी, तुलसीदासजी,	
मू० १५४ भगवानसिंह जी ५४६		देवकरायजी, बीगाराभजी.	

(कृपया भक्तोंके नामोंके पूर्व "आ" लगाकर पढ़ें)

भक्तनाम	पृष्ठ	भक्तनाम	पृष्ठ
मुजानजी, परमानन्दजी ५६६		प्रबोधानन्द सरस्वतीजी टी० ६१२ ५५७	
मू० १७० अचलाचुन्द (हेमाजी, "		मू० १८२ द्वारकादासजी ५७८	
रामबाईजी, हीरामणिजी		मू० १८३ पूर्णदासजी ५७८	
लालीजी, मारानी, लच्छीजी,		मू० १८४ लक्ष्मण भट्टजी ५७९	
दांती पोखरीजी लीचनि		मू० १८५ आचार्यपाद पयोहारी ५७९	
जी, केरीजी, घनाजी, गोमती		कल्याणदासजी महाराज टी० ६१३	
जी, वादरायणजी, गंगाजी,		मू० १८६ गदाधरदासजी ५८०	
यमुनाजी, रैवासिनीजी, जेबाजी		मू० १८७ नारायणदासजी ५८१	
हरदासजी, बापसमीजी, कुमरि		मू० १८८ भगवानदासजी ५८२	
जी, रायजी		मू० १८९ कल्याणसिंहजी ५८४	
मू० १७१ कान्हरदासजी ५६७		मू० १९० सन्तरामजी एवं	
मू० १७२ लदेरा केशवजी "		माधवदासजी ५८५	
मू० १७३ केवलरामजी टी० ६०० ५६८		मू० १९१ कान्हरजी आत्मारामजी ५८५	
मू० १७४ आसकरजी टी० ६०१ ५६९		मू० १९२ अ० गोविन्ददासजी ५८६	
मू० १७५ हरिदशजी ५७०		मू० १९३ जगतसिंहजी टी० ६२२ ५८६	
मू० १७६ कल्याणजी ५७१		मू० १९४ गिरिधर गोपालजी	
मू० १७७ विद्वत्दासजी "		टी० ६२३	
मू० १७८ रंगजी, सदानन्दजी, ५७२		मू० १९५ गापाजीभाईजी ५८८	
रामदासजी, लघुलम्बजी, लाखा		मू० १९६ रामदासजी टी० ६२४ ५८९	
जी, वरीनारायणजी, चैतानी		मू० १९७ रामरायजी ५९०	
कल्याणजी, परशुरामजी,		मू० १९८ भगवन्तजी टी० ६२६ ५९१	
स्वाक्ष गोपालजी, शंकरजी		माधवदासजी टी० ६२६ ५९२	
मू० १७९ बीकावत राजा हरि- ५७२		मू० १९९ जालमती भाईजी ५९३	
दासजी टी० ६०४		मू० २०० सन्त महिमा "	
मू० १८० कल्याणदासजी टी० ६११ ५७६		मू० २०१ भक्तवत्स महिमा ५९४	
मू० १८१ सन्याधी विशुखजी, ५७७		मू० २०२ भक्त के उत्कर्ष में	
दामोदरतायजी, नृसिंहारवणजी,		कोई संराय न करे "	
मधुसूदन सरस्वतीजी, माधवजी		मू० २०३ से ११४ फल स्तुति ५९५	
परमहंस प्रबोधानन्दजी,		गुरु वखन समापन टी० ६३० ५९७	
भगवानन्दजी		मूल टीका ऐक्य, टीका तिथि ५९८	
		भगवान से अन्तिस याचना ५९९	

भक्तमाल-भास्करका सूची-पत्र

(कृपया भक्तोंके नामोंके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़)

क्रमांक	भक्तनाम	पृष्ठ	क्रमांक	भक्तनाम	पृष्ठ
मंगलाचरण गुरुपीरम्बरा					
१ हनुमानजी	३१		२६ स्वामी रामचरणदास		
२ मध्याज्ञा	३		(कल्याणसिन्धु) जी	११	
३ बरिशष्टजी	४		२७ स्वामी रघुनाथदासजी		
४ पराशरजी	४		(बकी दावना)	१२	
५ वेदव्यासजी	४		२८ स्वामी युगलानन्दशरणजी	१२	
६ गुरुदेवजी	५		२९ पं० जानकीशरणजी	१२	
७ म० बोधायन पुनर्बोनाईजी	५		३० भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी	१३	
८ आनन्द भाष्यकार भगवान			३१ स्वामी सीतारामशरण		
रामानन्दाचार्यजी	५		(रामरसरंगमणि) जी	१३	
९ अनन्तानन्दाचार्यजी	६		३२ स्वामी श्रीकारामजी		
१० पीपाजी	६		(श्रीगुणलमिचजी)	१३	
११ सुरसुरानन्दाचार्यजी	६		३३ रघुनाथदासजी रामनेही	१४	
१२ सुखानन्दाचार्यजी	७		३४ स्वामीकृष्णानन्दजी गौडिया	१४	
१३ रमादास (वैदासजी)	७		३५ स्वामी गौमतीदास (श्रीमती		
१४ धनानन्दजी	७		शरण) जी महाराज	१४	
१५ सेनानन्दजी	८		३६ माणिकरामदासजी बगली	१५	
१६ कवीरदासजी	८		३७ गुरुदेव स्वामी हरिनामदासजी		
१७ योगानन्दाचार्यजी	८		महाराज	१५	
१८ भावानन्दाचार्यजी	८		३८ स्वामी पं० रामवल्लभशरणजी		
१९ गालवानन्दाचार्यजी	८		महाराज जानकापाद	१५	
२० नरहरिचरणदासजी	८		३९ महन्त रामवल्लभशरणजी		
२१ गान्धर्वजी तुलसादासजी	१०		महाराज गोकुलपाद	१६	
२२ स्वामी नारायणदासजी	१०		४० वेदोपासकभाष्यकार स्वामी	१६	
२३ स्वामी रामप्रसादाचार्यजी	१०		मगधदाचार्यजी महाराज		
२४ स्वामी हरिदासचार्यजी	११		४१ अमजीवनदासजी कोटवा	१६	
२५ स्वामी मणिरामदासजी	११		४२ म० भगवानदासजी झांसी	१७	
			४३ रामप्रसादजी चौबे, बलिया	१७	

(कृपया भक्तोंके नामोंके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़)

क्रमांक	भक्तनाम	पृष्ठ	क्रमांक	भक्तनाम	पृष्ठ
४४ महामहोपाध्याय स्वामी			६७, ६८, ६९ समुदाय	१५, १६	
रघुबराचार्यजी महाराज	१७		७० मधुसूदनदासजी, चाँद	"	
४५ वार्षनिक सार्वभौम स्वामी			बारा (बाँदा)	"	
वासुदेवाचार्यजी महाराज	१८		७१ महन्त जयदेवदासजी, कर्वा	"	
४६ पंडितसम्राट स्वामी वैष्णवा-			७२ पं० रामदत्तदासजी प्रयाग	१७	
चार्यजी महाराज	१८		७३, ७४, ७५ समुदाय	"	
४७ स्वामी रामसुन्दरदासजी			७६ पं० रामगुलामजी खिबेदी	"	
महाराज रामायणी	१८		मिर्जापुर	"	
४८ म० रामशोभादासजी-महा०	१९		७७ छक्कनलालजी	"	
४९ महन्त रामशोभादासजी			७८ पं० रामकुमारजी शर्मा रा०	१८	
महाराज आवू पहाड	१९		७९ महामानवी पं० वन्दन	"	
५० नारदानन्द सरस्वतीजी	"		पाठकजी	"	
नेमिपारख	"		८० भाष्यदासजी रामायणी	"	
५१ खजूरीवालके सन्तजन	२०		८१ भक्त प्रवर रामाजी	२०	
५२ महन्त श्रीनृसिंहदासजी	"		८२ वैष्णवरत्न रूपकलाजी	"	
महाराज ब्रह्मदासदा	"		८३ ब्रह्मचारी बिन्दुजी	"	
५३ प्यादे मोहनदासजी वृन्दावन	"		८४ महात्मा बालकरामजी	२१	
५४ महाकवि जयरामदेवजी	२१		८५ पं० सूर्यप्रसादजी	"	
५५, ५६ समुदाय	"		८६ देगीसाधवल्लभजी वीरगणिक	"	
५७ रामदासजी शास्त्री	२२		८७ भवानी सहायलालजी रा०	२२	
५८ करपात्रो हरिहरानन्दजी ख०	"		८८ पं० रामबालकदासजी	"	
५९ विश्वधंस महात्मा गान्धीजी	"		महाराज रामायणी	"	
६० ब्रह्मचारी प्रसुदसजी भूखी	२३		८९ परमहंस रामसंगलदासजी	"	
६१ पं० सियाविहारी शरणजी	"		९० प्रोफेसर रामदासजी गौड़	२३	
(सीखी)	"		९१ स्वामी ब्रह्मचरिशोरदासजी	"	
६२ राष्ट्रकवि मैथिलीशरणजीगुप्त	"		९२ स्वामी वेदेन्द्राचार्यजी	"	
६३ पं० रामभरोसे पंडे	२४		९३ जानकीशरण (स्नेहलता) जी	२४	
६४ झां. का प्रसाद पंडेय	"		९४ परमहंस रणछोडदासजी	"	
६५ महंत रघुवरदासजी शिवबाम	"		चित्रकूट	"	
६६ लक्ष्मणानन्दन त्रिवेदी व्यासरा	२५		९५ बालमुकुन्ददासजी तपस्वी	"	

(कृपया भक्तोंके नामोंके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़ें)

क्रमांक	भक्तनाम	पृष्ठ	क्रमांक	भक्तनाम	पृष्ठ
६६	स्वामी रामरत्नदासजी, करह	३५	१२२	पंडितराज स्वामी खरबू-	
६७	बाबा रामदासजी रामायणी	"	दासजी महाराज	४३	
	श्वालियर		१२३	भक्त रामशरणदासजी	
६८	कोठावाले बाबा स्वामी	"	पिलखुवा (मेरठ)	४३	
	रामकिशोर शरणजी		१२४	महन्त अवधविहारीदास	
६९	पं० रामकिशोरशरणजीशुक्ल	३६	जी घड़े कुटिया	४४	
१००	पं० श्रीकान्तशरणजी रामायणी,		१२५	सहन्त रामपूजाजी दिव्य-	
१०१	प्रेमदासजी रामायणी	"	कला कुज	४४	
१०२	पं० ज्ञानभूषण रामजी रामा०	३७	१२६	वेदान्ती रामपदारथदासजी	
१०३	पं० राधवल्लभभाशरणजी रा०	"	महाराज जानकापाठ	४४	
१०४	दक्षिण विहारी (महन्त	"	१२७	पं० अखिलेश्वरदासजी	४५
	जानकोपसाव) जी		१२८	समुदाय	४५
१०५	सुदर्शनसिंह जी चक्र	३८	१२९	माधवदासजी भक्तमाली	४५
१०६	बाबू शारदा प्रसादजी	"	१३०	केशवदासजी भक्तमाली	४५
	(मानससंघ रामवन)		१३१	महन्त कौराक्षकिशोरदासजी	४६
१०७	रामसुखदासजी रामसेही	"	१३२	दीनबन्धुदासजी नासिक	४६
१०८	हरिदाबाजी	३९	१३३	रामकृष्णदासजी मौनी	४६
१०९	पडिया बाबाजी	"	१३४	महन्त कृष्णदासजी अजमेर	४७
११०	पद्मावाले बाबा रामचित्र	"	१३५	महन्त रामदासजी बडिया	४७
	जी(शंकरदास) शरण		१३६	कविश्वर राघवदासजी	४७
१११	जयदयालजी गोयन्दका	४०	१३७	अज्ञानीनन्दनशरणजी	४८
११२	हनुमानप्रसादजी पौहार	"	१३८	परमहंस रामगोपालदासजी	४८
११३	समुदाय	"	१३९	गोस्वामी विन्दुजी वृन्दावन	४८
११४	परमहंस अवधविहारीदासजी	"	१४०	जानकादासजी जयपुरी	४९
११५	जयरामदासजीदीप रामायणी	"	१४१	करपात्री मौनीबाबा अवध-	
११६	रघुवीरदासजी चित्रकूटी	४१	विहारोशरणजी जनकपुर	४९	
११७	रायसाहब राजेन्द्रप्रसादजी	"	१४२	पं० गंगाधर पाथे ब्रह्मचारी	
११८	सोतारामोय जनेन्द्रप्रसादजी	४२	टाटबरी हनुमानगढ़ी	५०	
११९	वे० शं० रामलुजाचार्यजी	"	१४३	समुदाय	५०
१२०	समुदाय	"	१४४	योगीराज डा० रामस्वरूपदास	
१२१	अमोलकराजजी शास्त्री	४३	(गोवत्स) जी	५०	

(भक्तोंके नामके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़ें)

क्रमांक	भक्तनाम	पृष्ठ	क्रमांक	भक्तनाम	पृष्ठ
१४५	स्वामी अखण्डानन्दजी	५०	१६४	ब्रह्मचारी अखण्डजी बरहज	"
१४६	महन्त हयामसुन्दरदासजी		१६५	पं० रामकान्तत्रिपाठी पम०	५०
	रामायणी कड़ा प्रयाग	५१	१६६	पं० बाँकेरामजी मिश्र तुलसी	"
२४७	पं० बाबुदेवदासजी वेदान्ता			घाट काशी	
	मणिपर्वत	५१	१६७	महन्त देवदासजी, झाकोर	"
१४८	पं० किशोरदास जी वृन्दावन	५१	१६८	स्वामी रामदेवजी जोगेश्वर	५८
१४९	समुदाय	५२		कानपुर	
१५०	पुजारी जगदेवशरणजी	५२	१६९	परमहंस परमहंस	५८
१५१	प्रियाअजीजी आकी बाबा	५२		रामाचारदासजी	
१५२	महन्त जानकादासजी	५३	१७०	विद्योगी हरिजी	"
	चिन्तीक गढ़		१७१	ब्रह्मचारी बामदेवचार्यजी	५९
१५३	महन्त मोददासजी पुष्कर	"		अंपादक विरक्त	
१५४	ब्रह्मचारी लखकुमार	"	१७२	राजकुमार रघुवीरदासजी	"
	शरणजी			'अमराकाता, वगसरा राज्य	
१५५	समुदाय		१७३	भक्तवर रामप्रसाद स्वरोकार	"
१५६	रामदेवजी मिश्रदाहा टोला	"		(सिधनी बाबा)	
	पटना		१७४	कलाहारी गोविन्ददासजी	६०
१५७	रामदास कँहार	"	१७५	स्वामीमल्लरामदासजी	"
१५८	पं० रामरत्नदासजी 'लक्ष्म'	"		अछजदा, इटावा)	
	जयपुर		१७६	प्रियतावाले सुतोदणजी	"
१५९	स्वामी रामदासचार्यजी	"	१७७	महन्त नरालमदासजी	६१
	वरवार पिहोरी बाम			घोटाकु वृन्दावन	
१६०	परमहंस बाबा राघवदासजी	"	१७८	रामायणी चद्रवदासजी	"
	बरहज			रामकोट अयोध्या	
१६१	मानस राजहंस पं० बिजया-	"	१७९	हृषदासजी महाराज	"
	नन्दजी त्रिपाठी काशी			वृन्दावन	
१६२	स्वामी जानकीदासजी	५६	१८०	विनीत विहारीदासजी	६२
	"जगद्गुरु"		१८१	महन्त गंगादासजी	"
१६३	स्वामी रामचरण शरणजी	"		छोटाहरान, पुरी	
	शास्त्री		१८२	नवद्वीपके सन्तगण	"

(कृपया भक्तोंके नामके पूर्व "श्री" लगाकर पढ़ें)

क्रमांक	भक्तनाम	पृष्ठ	क्रमांक	भक्तनाम	पृष्ठ
१८३	अभिगासदासजी रामायणी ६३		१९४	त्यागी महन्त रामचरण	"
	मानस कोकिल			दासजी बंगाली	
१८४	परमहंस रामचन्द्रदासजी "		१९५	लालपद्मेशजी वस्ती	६७
	प्रतिष्ठादी भस्कर रामबाट			भूतपूर्व मैनेजर ओकनक	
१८५	फलाहारी रामबालकदासजी "			भवन	
	सुजतानपुर		१९६	पं० जागेश्वरजी शर्मा, ६७	
१८६	रामायणी प्रियतमदासजी ६४			परास (बाराह क्षेत्र)	
	जौरा (मुरैना)		१९७	पं० रामचन्द्रागर तिबारी	
१८७	विन्दुगाद्याचार्य जगद्गुरु "			पुरुषार्थ अयोध्या	६७
	शुक्लप्रसादाचार्यजी		१९८	महन्त जानकीवल्लभशरण	
१८८	पचाहारी उपेन्द्रदासजी "			जी श्रीरामबाना मठ छपरा ६८	
	महाराज पकाली		१९९	महन्त गुरुनन्दनशरणजी	
१८९	परमहंस रामचरणदासजी ६५			हनुमन्त निवास	६८
	वेदान्ता अरुण प्रयाग		२००	डा० रामतपक्या शर्मा	
१९०	वाणा भूषण पं० रामस्वरूप "			एम० ए० डी. लिट, पटना ६८	
	दासजी भागवत त्यास		२०१	स्वामी रामवल्लभशरण	
१९१	मंडलेश्वर महन्त रामबालक "			जी चित्तूर	६९
	दासजी योन श्वर		२०२	महन्त नृत्यगोपालदासजी	६९
१९२	महन्त अर्जुनदासजी ६६			श्रीमन्नीरामजीका छायाजी	६९
	तेरह माई त्यागी		२०३	पं० सीतारामशरणजी	
१९३	सीतारामाचार्यजी शास्त्री "			महन्त श्रीलक्ष्मण किन्ना	६९
	नासिक		२०४	पं० रामगोपालशर्मा आगरा ७०	



ॐ श्रीज्ञानकीर्तनो विजयते । श्रीमते हनुमते नमः । ॐ
 नमो भगवते बोधायनाय । श्रीमद्रामानन्दाचार्याय नमो नमः ॥
 श्री अग्रदेवाचार्य चरण-कमल-चंचकरी स्वामी
 श्री नारायणदासजी (श्री नाभा स्वामीजी)
 रचित

भक्त-माल

श्रीगोरांग-पदपद्म-मधुकर श्री प्रियादामजी कृत
 भक्तिरसबोधिनी (कविता) टीका महित

(संपादकीय मंगलाचरण एवं प्रस्तावना)

दो०— वन्दौ श्री महगुरु चरण, हरण जगत जगल ।
 जिनके सुमिरणते सकल मिटि होत वन्काल ॥ १ ॥
 श्रीरदवाच्या श्रीसिया, श्रीपति श्रीगुनन्द ।
 श्रीहनुमत नित पाणपद, वन्दौ पद सुखकन्द ॥ २ ॥
 जगकर्ता 'अज' 'अजमुवन, बहुरि पराशर व्यास ।
 जिन पुराण बरें बहुरि, किय वेदान्त प्रकाश ॥ ३ ॥
 व्याख्याता भार्गवके, परमहंस-गिरिनाज ।
 शुक्मुनि पद वन्दन करौ, जिनकर मुण्ड 'दराज ॥ ४ ॥

१ श्री ब्रह्माजी २ श्री वशिष्ठजी ३ श्री वेदव्यासजी ४ विष्णुजी

नीचे की पंक्तिमें बायीं ओर सर्वप्रथम भक्तमालकार श्रीनाभा स्वामीजी खड़े हैं ।

बोधायन आचार्य वर श्रीपुरुषोत्तम नाम ।
 युग मीमांसा शास्त्र जिन, विरची शक्ति लताम ॥ ५ ॥
 द्वैताद्वैत विवादको, सुभग समन्वय कीन्ह ।
 रुचिर विशिष्टाद्वैत मत, थापि जगत् जिन दीन्ह ॥ ६ ॥
 धर्मसूत्र स्मृतिशास्त्र जिन, विरचे ग्रन्थ अनेक ।
 हरि हर आराधन कथे, भेद कियो नहि नेक ॥ ७ ॥
 गंगाधर आदिक सकल, पूर्वाचार्य महान ।
 वन्दौ सबके पद कमल, सकल सुपंगल खान ॥ ८ ॥
 भाष्यकार 'स्तवराजके, स्वामी इयानन्द ।
 तिनके श्रीगणेश वर, स्वामि राघवानन्द ॥ ९ ॥
 तिनके शिष्य अनन्त श्री रामानन्दाचार्य ।
 गच्छेत् हिन्दू धर्म जिन, किये परास्त अनार्थ ॥ १० ॥
 'प्रस्थानत्रय पर रचे, माण्य रुचिर आनन्द ।
 'भास्कर आदिक ग्रन्थ पुनि, रचे अनेक 'अमन्द ॥ ११ ॥
 जगद्गुरु श्रीआचार्य वर, स्वयं राम-अवतार ।
 भक्ति सेतु बाँध्यो सुहृद, तार्यो सब संसार ॥ १२ ॥
 अजामील आख्यानके, 'द्वादश भक्त प्रधान ।

१. श्रीरामस्तवराज २. सत्य अहिंसादि हीन, अन्याचारी अनाचारी लोग । ३. उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और गीता ४. श्रीवैष्णव-मत्तारज-भास्कर ५. देदीप्यमान ६. श्लोकः—स्वयंभूनाम्भिः शंसुः कुमारः कपिलो मनुः । महादो जनको भीष्मो बालिर्वैयामिकिर्वयम् । द्वादशैते विजानीमो धर्म भागवतं भटाः ॥ (श्रीमद् भागवते) अगस्त्यसंहिता के अनुसार यही १२ महा भागवत अवतार लेकर यतिसार्वभौम श्री आचार्य महाप्रभुजी के प्रधान शिष्य हुए हैं जिनका वर्णन आगे के कवित्त में देखिये—

'अवतार जिनकी शरणागति, थापे भक्ति विधान ॥ १३ ॥
 कृष्णदास शुभ नाम श्री पयहारी नरनाथ ।
 जिन कलि मर्द कृत युग कियो, अनिधि धर्म प्रतिपालि ॥ १४ ॥
 अश्वदेव आचार्यवर, रसिक राज रसधाम ।
 पद पंकज बिनवौ सदा, जन मन पूरण काम ॥ १५ ॥
 अश्वदेव दाया लही, अन्तर बाहर दृष्टि ।
 भक्तमाल रचि जिनकरी, भक्ति सुधारस वृष्टि ॥ १६ ॥
 अस श्रीनामा के बरण, बन्दि हरण दुखद्वन्द ।
 दास प्रकाशित करत है, भक्तमाल सुखवन्द ॥ १७ ॥
 परम अनूठो काव्य यह, भक्तमाल परिशुद्ध ।
 'लिपिकारन अज्ञान धो, ताकर पाठ अशुद्ध ॥ १८ ॥
 मात्रा अक्षर को कहै, पद अक्षर शब्द अनेक ।
 बहिरंग अक्षर कछु बदलिये, छपिये 'बिना चिदक ॥ १९ ॥
 पुनि जे जन टीका लिखे, तिनहुँ न करी मैभार ।
 पाठ शुद्ध कीन्है नहीं, हरिगे बाही द्वार ॥ २० ॥
 याहीके परिणाम भ्रम, फैले अप्रित प्रकाश ।
 कहन लगे नाभारचित, 'इनकहँ बिना विचार ॥ २१ ॥
 भारत और विदेशके, 'अन्वेषकहु अनेक ।
 परिगे याही भ्रम विपै, सितहुँ न 'कियो चिदक ॥ २२ ॥

१. कविश—ब्रह्मा अनन्तानन्द, नारद सुरसुरानन्द, शंकर सुखानन्द, कुमार नरहरियानन्द । कपिल में योगानन्द, मनु महाराजा पीपा, महाद कवीर, पुनि जनक में भावानन्द, भीष्म भये सेनभक्त, बलि भये धनभक्त शुक में गालवानन्द, रामदास यमद्वन्द । पञ्चजाश पञ्चावति, त्रयोदश प्रधान शिष्य विश्वगुरु रामरूप आचार्य श्रीरामानन्द ॥ १ ॥ २. लिखनेवाले= प्रतिलिपि करनेवाले । ३. अज्ञान से । ४. अशुद्ध पाठोंको । ५. खोज करनेवाले ६. ध्यान नहीं दिया ।

काहु यह सोची नहीं, कविकृत अम नहि होय ।
 छन्द भंग निज काव्य भई, किमि राखै कवि कोय ॥ २३ ॥
 श्रीनाभा मम कविपवर, रचि न सकत अस पाठ ।
 अवुष और स्वार्थी जनन, ठाठे यह मध ठाठ ॥ २४ ॥
 श्रीगुरु दीनदयाल मम, सकल सन्त शिरनाज ।
 अखिल विश्व फँल्यो मुभग, जिनकर मुयस दगाज ॥ २५ ॥
 जे दिनकर मम तपत से, वैष्णव जगताकाश ।
 विनश्यो अति अज्ञान तम, निज विज्ञान प्रकाश ॥ २६ ॥
 श्री अनन्त गुन नाम शुभ, पूरण जन मन काज ।
 रामवल्लभाशरण श्री पीडितजी महाराज ॥ २७ ॥
 अवध जानकी घाट पर, जिनकर स्थान महान ।
 वर्तमान राजत जहाँ, सन्त सकल गुण खान ॥ २८ ॥
 रामपदारथदासजी वेदान्ती महाराज ।
 वैष्णव विद्वज्जनन विच, जिनकर शुभ यश धराज ॥ २९ ॥
 श्रीगुरु अरु सन्तन कृपा पाठ भये मोहि प्राप्त ।
 पाठ अशुद्धी और भ्रम, जिनने सब नशि जात ॥ ३० ॥
 मोही हो प्रकटित करत, लिखिये मज्जन वृन्द ।
 भूल चूक क्षमि दास पर, करिये कृपा अमन्द ॥ ३१ ॥
 नहि त्रिया नहि बुद्धि कलु, नहीं भजन तप त्याग ।
 सब विधिहीन अवोध जन, जानि करिय अनुराग ॥ ३२ ॥
 मूक महा व्याख्या करै, पंगु गहन निरि धाय ।
 अम करुणा जो रावरी, ताकर आश्रय पाय ॥ ३३ ॥
 दास जानकी कार्य यह, शिरपर लियो उठाय ।
 या कहँ पुरवहु करि कृपा, सन्त हृदय इषाय ॥ ३४ ॥

(टीका संग्रहावरण और प्रस्तावना)

टीका क०—महाप्रभु कृष्णचैतन्य 'मनहरण' वृत्ते
 चरणको ध्यान मेरे नाम मुख गाइये ।
 ताही समय नाभाजूने आज्ञा दई लई धारि
 टीका विमलारि भक्तमाल की सुनाइये ॥
 कीजिये कवित्त वद्व छन्द अति प्यारो लगै
 'जगै जगमाहि' कहि वाणी विरमाइये ।
 जानौं निज मति ऐपै सुन्यो भागवत 'शुक
 द्रुमनि प्रवेश कियो ऐसेही कहाइये ॥१॥

(टीका का नाम एवं माहात्म्य वर्णन)

रची कविताई सो 'सचाई सुखदाई' लागै
 निपट सुहाई 'पुनरुक्ति' ले मिटाई है ।
 अक्षर मधुरताई 'अनुप्रास' 'यमकाई'
 अति छवि छाई मोद भरीसी लगाई है ॥

१ श्री प्रियादासजी के गुरुदेव । २ मसिद्ध हो । ३ श्रीमद्भाग-
 वत में मसिद्ध है कि श्री शुकदेवजी जन्मते ही जब वन को चल पड़े
 और विष्णुतुर श्री वेदव्यासजी पीछे पीछे दौड़े, तब श्री शुकदेवजी ने
 अपने योगबल से वृक्षों में प्रवेश करके "शुकोऽहम् शुकोऽहम्" (मैं शुक
 हूँ, मैं शुक हूँ) कहलयाया था, उसी प्रकार से श्री नाभास्वामीजी भी मेरे
 ऊपर कृपा करके टीका की रचना करवा लेंगे । ४ चरित्रों की यथार्थता ।
 ५ एक ही बात बार बार कही जाना । ६ शब्द के अन्त में एक ही
 अक्षर का बार बार प्रयोग । ७ काव्य चमत्कार ।

काव्यकी बड़ाई निज मुख न भलाई होत
नाभाजू कहाई ताँतें प्रौढ़ के सुनाई है ।
हियो मरसाई जोपै सुनिये मदाई
अम भक्तिरसबोधिनी सुनाम टीका गाई है ॥२॥

('भक्तिमहाशायी' का शृङ्गार वर्णन)

श्रद्धाही फुलेल ओ उवतनी श्रवणकथा,
मैल अभिमान, अंग अंगते छुड़ाइये ।
मनन सुनीर अन्हवाय, अँगुछाय दया
'नवनि वसन, प्रण सौंधो, ले लगाइये ॥
'आभरण नाम, हरि माधु सेवा कर्णफुल,
मानसी सुनथ, 'मंग' अजन बनाइये ।
भक्ति महाशायी का शृङ्गार चारु, बीरी 'चाह
रहे जो निहारि, 'लहै लाल प्यारी गाइये ॥३॥

(टीका का चमत्कार वर्णन)

शान्त दास्य सम्य वानसल्य ओ शृङ्गार चारु
पाँचों रस मार विसतार नीके गाये हैं ।
टीका को चमत्कार जानोंगे विचारि मन
इनके स्वरूप सो अनूप ले दिखाये हैं ॥

१ 'भक्तिरसबोधिनी' इस टीका का नाम है । २ भगवानकी भक्ति को भुक्तिमान (नायिका का) रूप देकर उसके बस्राभूषणों का वर्णन कर रहे हैं । ३ सुर्गाधित (चमेलीका) तेल । ४ सुन्दर जल । ५ नम्रता । ६ इत्र । ७ आभूषण । ८ सत्संग । ९ प्रभु मिलन की उत्कट इच्छा । १० श्रीगुरु सरकारको प्राप्त करे । ११ शास्त्र भाते हैं ।

जिनके न अश्रुपात पुलकित गात कभू
तिनहूको भावसिंधु चोरि सो छकाये हैं ।
जालों रहै दूर रहै विमुखता पूर हियो
होय चूर चूर नेक श्रवण लगाये हैं ॥४॥

(भक्तमाल का वैजयन्तीमाला के रूप में वर्णन)

'पंचरम मोई पंच रंग फूल 'थाके नीके
पिया पहिरायवे को रचिके बनाई है ।
'वैजयन्ती दाम भाववती 'अली नाभा नाम
लायी 'अभिराम श्याम मति ललचाई है ॥
धागी उर प्यारी माला करत न न्यागी प्रभु
देखो गति न्यागी हरि पायन को आई है ।
भक्ति 'द्वि भार ताँतें 'नमित शृङ्गार होत
होत वश लग्यै जोई याते जान पाई है ॥५॥

(सत्संग महिमा वर्णन)

भक्ति तरु पौधा ताहि विघ्न डर छेरीहूको
'बाड दे विचार वारि सौँच्यो मतमंग मो ।
लाग्योई बढन गोंदा चहुँ दिशि कढन सो
चढन अकाश यश फैल्यो बहु रंग सो ॥

१ उपरोक्त शान्तादि पाँचों रस । २ गंठे=गुच्छे । ३ पाँच रंग के फूलों की माला को वैजयन्ती कहते हैं । ४ सखी । ५ परम सुन्दर । ६ सोभा । ७ आभूषणों के नीचे लटक आई है । ८ बकरी । ९ काँटों का घेरा । १० कोंपल ।

सन्त उर 'आलवाल' शोभित विशाल न्याया
जिये जीव जाल ताप गये यों प्रमग मो ।
देखो बटवार जाहि अजा ह की शंका हुती
ताही पेड़ बाँधे भूमि हाथी जीति जंग मो ॥६॥

(ग्रन्थ और ग्रन्थकार की महिमा का वर्णन)

जाको जो स्वरूप मो अनूप ले दिखाय दियो
कियो ज्यों कवित्त पट 'मंही मध्य' 'लाल' है ।
गुण जो अपार साधु कहे 'आँक' चार ही में
अर्थ विस्तार कविगज 'टकमाल' है ॥
सुनि सन्त सभा भूमि रही 'अलि' श्रेणी मानो
कहे धूमि धूमि यह कहा धों रमाल है ।
मुने हैं अगर अब जाने हम अग्र मही
'चोवा' भये नाभा औ सुगन्ध भक्तमाल है ॥७॥

(भक्तमाल महिमा वर्णन)

बड़े भक्तिमान निशिदिन गुणगान करें
हर जग पाप जाप रहै भरपूर है ।
जानि सुखमानि हरि मन्त मनमान साँचे
बाँचेउ जगत रीति प्रीति जानि 'मूर' है ॥
तोऊ 'दुराराध' कोऊ कैमे के अराध सकै
समभयो न जात मन काँपि भयो चूर है ।

१ यामला-कुन्डी । २ पतले-भोजने । ३ रत्न । ४ अक्षर । ५ परीक्षा स्थान ।

६ भोंगोंका भुँड । ७ इत्र । ८ जड़ । ९ आराधना करनेमें कठिन ।

शोभित तिलक भाल माल उर गजै ताँपै
जिना भक्तमाल भक्तिरूप अनि दूर है ॥८॥

*** मूल मंगलाचरण ***

दा० 'भगत भगति भगवन्त गुरु, 'चतुर
नाम 'वपु एक । इनके पद वन्दन किये,
नाशहिं विघ्न अनेक ॥ १ ॥

(भक्त, भक्ति, भगवान एवं गुरु के लक्षण वर्णन)

टीका क०-हरि गुरु दामन सों साँचो मोही "भक्त" मही
मही एक 'टक' फिर उरने न ठरी है ।
"भक्ति", रस रूप को स्वरूप यहै अवि मार
'चारु' हरि नाम लेत अँसुवन भगी है ॥
वही "भगवन्त", मन्त प्रीति को विचार करें
धर दूर ईशता ज्यों पांडव सों करी है ।
"गुरु" गुरुताई की मचाई ले दिग्याई ताहि
गाई 'पयोदारीज' की गीति रंग भरी है ॥६॥

मूल छ०-मंगल 'आदि विचार रह, वस्तु न
और अनूप । हरिजनको यश गावते, हरिजन

१ भक्त भक्ति, पाठ में शब्द शुद्ध रहते दृष्ट भी दूषित 'र' गण होता है अतः मंगल मय 'न' गण युक्त 'भगत भगति' पाठ ही समीचीन है ।

२ चार । ३ शरीर-वास्तवमें । ४ गण । ५ सुन्दर । ६ भक्तमाल मूल सं. ३८ 'जाके शिरकर धरयो तासु कथननहि अट्टहयो' । ७ आरंभिक मंगलाचरणके विचार में अन्य कोई अनुपम वस्तु नहीं दृश्यती ।

मंगलरूप ॥२॥ सन्तन मथि निर्माण कियो,
श्रुति पुराण इतिहास ॥ भजये को दांही
सुभग, कै हरि कै हरिदास ॥३॥ अग्रदेव
आज्ञा दई, भक्तन को यश गाव ॥ भव-
सागर के तरन को, नाहिन आन
उपाव ॥४॥

(ग्रंथ रचना की आज्ञा का वर्णन)

टीका क०—मानसी स्वरूप में लगे हे अग्रस्वामीजी वे
करत वयार नामा मधुर मँभार सों ।
बढ्यो जो जहाज परयो शिष्य एक आपदामें
करयो ध्यान सरयो मन छूट्यो रूपमार सों ॥
कहाँ हे समर्थ गयो बोधित बहुत दूर
आओ छविपूर फिरि दगे 'वाही डार मों ।
लांचन उधारिक निहारि कहा बल्यो कौन
वही जौन पाल्यो शीथ दै दै 'सुकुमार सों ॥१०॥
अचरज दयो नया यहाँ लों प्रवेश भयो
मन सुख लयो जानि सन्तन प्रभाव को ।
आज्ञा तव दई यह भई तोपै मन्त कृपा
कहाँ उनट्टीके रूप गुण हिये भाव को ॥

१ पवन । २ खिचा । ३ जहाज । ४ कौटिकाप विमोहन प्रमुख
५ पूर्व वत । ६ बचपन से ।

बोले कर जोरि, याको मिले नहीं 'आर बोर
गाऊँ राम कृष्ण नहीं पाऊँ भक्त, भाव को ।
कही ममभ्रातृ वेदी हिये आय कहैं सब
जिनने दिखाय दई 'सागर में नाव को ॥११॥

(श्री नाभा स्वामीजी की पूर्व कथा का वर्णन)

हनुमान वंशही में जनम प्रभिद्ध जाको
भयो दृगन्वीन मो नवीन ज्ञान 'धारिये ।
उमर बरस पाँच मानके अकाल आँच
माना वन छोडि गई विपति विचारिये ॥
कीन्ह औ अंगर ताही डगर दरश दियो
लियो यों अनाथ जानि पृथ्वी मो उचारिये ।
बड़े मिद्ध जललै कमंडल मों मँचे नैन,
चैन भयो खुले चचु जोडी को 'निहारिये ॥१२॥
'पाँव परे आँसू आये, 'कृपाकरि मंग लाये
कीन्ह आज्ञा पाय मंत्र अंगर सुनाये हैं ।
गलते प्रगट माधु मेवा जा विराजमान
जानि अनुमानि ताहि टहल लगाये हैं ॥

१ आदि अन्त । २ वे अन्त ही । ३ समुद्र । ४ हनुमान वंश
जिसको आगे (भक्तमाल छापै १००) नाम्वाजीकी कथा में वानर वंश
कहा गया है । संभवतः जिसमें भाट चरण अथवा कथिक आदि गुण
गान करने वाली जातियाँ परिगणित होती हैं । ५ सम्भक्त । ६ देखा ।
७ श्री नाभाजी । ८ श्री कीन्हस्वामीजी और श्री अग्र स्वामीजी ।

चरण प्रक्षाल सन्त शोध सों अनन्त प्रीति
ताने रस रीति जानी हिये रंग द्याये हैं ।
भई बटवार ताको पावै कौन पारावार
जैसे भक्त रूप सो अनूप गिरा गये हैं ॥१३॥

(भगवान के चौबीस अवतारों की प्रार्थना)

मूल छ०—जय जय 'मीन' 'वराह' 'कमठ'
'नरहरि' बलि-बावन । परशुराम रघुवीर
कृष्ण कीर्ति जगपावन ॥ बुद्ध सुकलकी
व्यास पृथ्वी हरि हंस मन्वन्तर । यज्ञ ऋषभ
हयग्रीव सु ध्रुववरदेन धन्वन्तर ॥ 'वद्री-
पति' दत्त कपिलदेव, सनकादिक करुणा-
करो ॥ चौबीस रूप लीला रुचिर, अग्र-
दास उर पद धारो ॥५॥

टीका क०—जेते अवतार सुखसागर न पारावार,
करैं विमतार लीला जीवन उधार को ।
जाहि रूप माहिं मन लागै जाको पागै नाहि,
जागै हिये भाव सोही पावै क्यों न पार को ॥

१ चरणामृत । २ शोधप्रसाद=उच्छिष्ट । ३ मत्स्य । ४ शूकर ।
५ कच्छप । ६ वृषिह । ७ वद्रीनारायण । ८ दत्तात्रेय ।

मवही हैं नित्य ध्यान करत प्रकाशे चित्त,
जैसे पावै वित्त जोपै जानै रत्न मारको ।
केशन 'कुटिलनाई' त्योही मीन सुखदाई,
'अगर' सु रीति भाई वसो उर द्वार को ॥१४॥

(सन्तों के सहायक श्रीरामजीकेचरण चिन्हों का वर्णन)

मूल छ०—अंकुश 'अम्बर' 'कुलिश' कमल यव
ध्वजा धेनुपद । शंख चक्र स्वस्तिक जंबू-
फल कलश 'सुधाहृद' ॥ अर्धचन्द्र पट्-
कोण मीन 'विंदूरध' रेखा । अष्टकोण
त्रयकोण इन्द्रधनु 'पुरुष' विशेषा ॥ सीता
पति पद नित वसत, एते मंगल दायका ॥
चरण चिन्ह रघुवीर, के सन्तन सदा
सहायका ॥६॥

टीका क०—मन्तन सहाय काज धारे नृपराज राम
चरण मरोजनमें चिन्ह सुखदाइये ।
मन है 'मतंग' मतवारो हाथ आवै नाहिं,
ताके लिये अंकुश लो धारयो हिये ध्याइये ॥

१ उवापना । २ श्री अग्रस्वामीजी की सुन्दर पद्धति । ३ वस्त्र ।
४ वज्र । ५ अमृतकुण्ड । ६ विन्दु और ऊर्ध्व रेखा ७ मनुष्य ।
८ हाथी ।

शठता मतावे शीत ताने ही अम्बर धम्बो,
 हरे जन शोक ध्यान कीन्हें सुखदाइये ।
 ऐने ही कुलिश पाप परवत फोरिवेको,
 भक्ति निधि जोरिवेको कंज मन लाइये ॥१५॥
 सुनो यव हेतु सदा दाता सिद्धि विद्याको सो,
 सुमति सुगति सुख सम्पति निवास है ।
 छिनमें समीत होत कलि की कुचाल लम्बि,
 ध्वजा सों विशेष जानो अभै को विश्वास है ॥
 गोपदमों होय भवसागरते पार जन,
 जोपै नैन हियेमें लगावै मिटै त्रास है ।
 कपट कुचाल मायाजाल सब जीतवेको,
 दरको दरम किये, होत अनायास है ॥१६॥
 कामही निशाचर को भारिवेको चक्रधरयो
 मंगल कल्याण हेतु स्वस्तिक ही मानिये ।
 मांगलिक जम्बुफल फल चार और मन-
 कामना अनेक विधि पूरै जोपै ध्यानिये ॥
 कलश सुधाको सर भरयो हरि भक्तिरस
 नैन पुट पान कीजे जोजे मन आनिये ।
 भक्तिको बढावै ओ घटावै तीनतापन को

१ सूर्यता । २ दैहिक (देहके) दैविक (दैवयोग से आ जानेवाले,
 भौतिक (भूत प्रेत राक्षस या पशु पक्षी कीट पतंग देव मनुष्य आदी
 जीवों से होनेवाले) ताप-दुःख ।

अधे चन्द्र धारण काण यह जानिय ॥१७॥
 विषय भुजंग वनमीक तनमाहि वमै
 दामको न डमै यात यत्न अनुसरयो है ।
 अष्टकोण पटकोण औ त्रिकोण यंत्र किये
 धारण सो जानै जाने ध्यानउर धरयो है ॥
 मीन विन्द नामन्द धारयो पद कंज माहि
 ताहीत निकाय जन मन जात हरयो है ।
 जगत समुद्र सो न पारपार पावे ताने
 ऊर्ध रेखा दाम हेतु सेतु बन्ध करयो है ॥१८॥
 धनु पद माहि धरयो हरयो शोक ध्यानिको
 मानिको माख्यो मान रावणादि साखिये ।
 पुरुष विशेष पद कमल वमायो राम
 हेतु सुनो अभिराम श्याम अभिलाषिये ॥
 मूधो मन मूधो वैन मूधी करतूति सब
 ऐसो जन होय ताका याहि भाँति राखिये ।
 जन बुधिवन्त रमवन्त गुण संपति में
 करि हिय ध्यान हरिनाम मुख भाषिये ॥१९॥

१ सर्प । २ बिल । ३ समुद्र । ४ धनुष ।

श्रीसीतारामजी के युगल चरणों में शास्त्रों ने चौबीस चौबीस
 चिन्ह कहे हैं जिनके वर्णनका एक भाग स्मरणीय पंचक आगे
 देखिए—

(प्रधान द्वादश भक्तराज गुणगान)

मूल छ०—विधि नारद शंकर सनकादिक
कपिलदेव मनुभूप । नरहरिदास जनक
भीषम बलि शुकमुनि धर्मस्वरूप ॥
अन्तरंग अनुचर हरिजूके जो इनको यश
गावैं । आदि अन्तलों मंगल तिनके श्रोता
वक्ता पावैं ॥ अजामेल प्रसंग यह निर्णय
परम धर्मको जान ? इनकी कृपा और पुनि
समझे द्वादश भक्त प्रधान ॥७॥

श्रीगामक्षिणपदस्थमधोद्ध रेखा स्वस्न्याष्टकोण कमला हल मीमलंच ।
शर्प शराम्बर सरोज रथ सवज्जं यायेत्यर्थं सुगतं जनकामपूरम् ॥१॥
भूयोकुश-वजाकर द युत सचक्रं मिहामनं चकलितं यमदण्डचिन्हम् ।
छत्रं सचामरनरं जयमालमेतद्देवाक्षि संख्यमभिशा मनमा स्मरामि ॥२॥
वामे पदे स्थितमहं सगद्य सुतार्थं गापाद भूमि पट शोभित मुत्पनक्तम् ।
जम्बूफलार्थं शशि शंख पडम्ब युक्ते त्रयकोणकच गया सह जीव मीडे ॥३॥
चिन्दुं च शक्त्यमृतकुण्डं बलित्रयं च मीनं स पूर्णशशि वीर्य महं भजामि ।
वंशी शरामन युते पुत्रि राजदंभं सीतापतेः श्रुतिचूर्तं सह चन्द्रिकं च ॥४॥
सीतांघ्रिपंकजपिदं हि विषययेण वामे पदं च मुद्रियः परिभावयन्तुम् ।
चिन्दानि चाष्ट जलधिः प्रमितानि नित्यं व्यापेन्नो रघुपतेर्लभते सुधाममा ॥५॥

इनमें से श्री राधा स्वामीजी ने यहाँ केवल २४ का ही स्मरण किया है ।

(श्रीशिवजीकी सती मोह वाली कथा)

द्वादश प्रसिद्ध भक्तराज कथा भागवत
अति सुखदाई नानाविधि करि गाये हैं ।
शिवजी की बात एक बहुधा न जानै कोऊ
सुनि सरमाने हिये भाव उरभाये हैं ॥
सीताक वियोग राम विकल विपिन देखि
शंकर निपुण मती बचन सुनाये हैं ।
कैसे ये प्रवीण ईश ? कौतुक नवीन देख्यो
मनैहु स्मरन मती वेप सो बनाये हैं ॥२०॥
सीताको स्वरूप वेप लेश ह न फेर फार
गमज निहारयो नेक मनमें न आई है ।
तब फिर आयके सुनायदई शंकरको
अति दुःख पाय बहु विधि समझाई हैं ॥
उष्ट्रको स्वरूप धरयो ताते तनु परिहरयो
परयो बड़ो शोच मात अति भरपाई है ।
ऐसे प्रभु भाव पगे पोथिन में जगमग
लगे मोको प्यारे ताते बात रीझि गाई है ॥२१॥

(श्रीशिवजीकी दूसरी कथा)

चले मग जात उभै खिरे शिव दृष्टि परे
कियो सो प्रणाम हिये भक्ति लागी प्यारी है ।
पारवती पूछी कियो कौन को प्रणाम प्रभु

दीमै नाहि 'जन कोऊ तब यों उचारी है ॥
 वरम हजार दशा बीते यहां भक्त भयो
 अब पुनि व्है हैं दूजी ठौर बीते 'धारी है ।
 सुनके प्रभाव हरि दासन मों भाव बढ़यो
 रह्यो कैसे जात रंग चढ्यो अति भारी है ॥२२॥

(श्रीजामेलजी की कथा)

धरयो पितुमानु नाम अजामेल सौचो भयो
 भयो 'अजामेल 'छोटी निया शूद्र जातिकी ।
 कियो मद्यपान सो 'मयान गहि दूर डारयो
 गारयो तन वाही साथ कीन्हो जाने पातकी ॥
 करि 'परिहाम काहु दुष्ट ने पटाय माधु
 आयै गृह देखि बुद्धि आयगई मात्तिकी ।
 सेवा करि सावधान सन्तन रिभाय लिये
 नारायण नाम धरयो गर्भ बाल 'वानकी ॥२३॥
 आय गह्यो काल मोह जाल में लपट रह्यो
 महा विकराल यमदूत हु दिखाइये ।
 सुत नाम नारायण बही जो कृपा कै सन्त
 दियो सो पुकारयो स्वर आर्त 'मो मुनाइये ॥
 सुनत ही पारपद आयै वाही ठौर दोरि
 तोरि डारे पाश कहाँ धर्म समझाइये ।

हारि डारि पाश जाय ग्वाभियै पकार, कहाँ
 सुनो पञ्चवार मत जायो 'हरि गाइये ॥२४॥

(श्रीमन्नारायण के पारपदों की प्रार्थना)

मूल छ०—विष्वक्सेन जय विजय प्रबल
 बल मंगलकारी । नन्द मुनन्द सुभद्र
 भद्र जग आमयहारी । चंड प्रचंड विनात
 कुमुद कुमुदाक्ष कृपालय । शील सुशील
 सुपेण भाव भक्तन प्रतिपालय ॥ लक्ष्मी-
 पति 'प्रीणन 'प्रवीण भजनानंद 'भक्ता-
 निहद । मोचितवृत्ति नित तहँ रहो जहँ
 नारायण पारपद ॥८॥

पारपद मुख्य कहे पाडप स्वभाव गिद्ध
 सेवाही की 'ऋद्धि बहु राखी दिये जोर कै ।
 श्री पति नारायण क प्रीणन प्रवीण महा
 ध्यान करै जन पालें भाय दृग कोर कै ॥
 सनकादि दियो शाप प्रेरिके दिवायो आप
 प्रगट हैं कद्यो पीवो सुधा मीजि 'धोर कै ।
 गली प्रतिकूलताई जोपे यही मनभाई
 याने रीति 'हृद गाई धरी रंग बोर कै ॥२५॥

१ भगवान का नाम लिखा है । २ प्रसन्न करने में । ३ चतुर ।

४ भक्तों में सामारूप । ५ सम्पत्ति । ६ मसल घोलकर । ७ पराकाष्ठा ।

१ मनुष्य । २ बहुत । ३ अजा=माया से मिलाप । ४ लुद्ध । ५ चतुर=
 जातिपञ्च । ६ हँसी=मजाक । ७ पात करनेपर । ८ अज्ञान । ९ दुःख भरे ।

(प्रभुके प्यारे भक्तों से मार्चना)

मूल छ०—कमला गरुड मुनन्द आदि
 पौडष प्रभुपद रति । हनू जाम्ब सुग्रीव
 विभीषण शबरी खगपति । ध्रुव उद्धव
 अँवरीष विदुर अक्रूर मुदामा । चन्द्रहास
 चित्रकेतु ग्राह गज पाँडव नामा ॥ कौपा-
 रव कुन्ती वधू पट ऐँचत लज्जा 'हरी' ।
 हरिवल्लभ सब प्रार्थी, जिन पदरज आशा
 धरी ॥९॥

हरिके जे बल्लभ ते दुर्लभ भुवनमाँझ
 तिनहीकी पदरंगु आशा जिय करी है ।
 योगी यती तपी नामों मेरो कछु काज नाहि
 प्रीति परतीति रीति मेरी मनि तरी है ॥
 कमला गरुड हनुमान कपिलि आदि
 सबै स्वादरूप कथा पोथिन में धरी है ।
 प्रभुमों सचाई जग कोरति चलाई अति
 मेरे मन भाई सुखदाई रम भरी है ॥२६॥

(श्री हनुमान जी की एक कथा)

रतन अपार सार सागर उद्धार किये
 लिये हिय चावसों बनाय माला करी है ।

१ प्रीतिवाले । २ द्रोपदी । ३ भगवान ।

सब सुख माज रघुनाथ महाराज जू क
 भक्तजो विभीषण सो आनि भेट धरी है ॥
 सभा केरी चाह अवगाह हनुमान गरे
 डारि दई सुधि भई मति अरवरी है ।
 राम विन काम कौन फोरि मणि डारि दिये
 खोलि त्वचा नाम सो दिखायो बुद्धि हरी है ॥२७॥

(श्री विभीषण जी की एक कथा)

भक्ति जो विभीषणकी कहै ऐसों कौन जन
 तोपै कछु कही जात सुनो चित्त लायके ।
 चलत जहाज परथो अटकि विचार कियो
 काँऊ अंगहीन नर दियो है बहाय के ॥
 लाग्यो लंका टापू ताहि राक्षसन गोदलियो
 मोद भरे राजा पास गये किलकायके ।
 देखत मिहसुन ते कूदि परे नन भरे
 याही के आकार राम देख्यो भाग्य पायके ॥२८॥
 विरचि श्रंगार मिहसुन लै बैठायो ताहि
 राक्षसन रीझ देत मानि शुभ घरी है ।
 जोवत मुखारविन्द अतिहि आनन्द भरि
 ढरकत नैन नीर टाढे टेकि छरी है ॥
 तऊ न प्रमन्न होत क्षण क्षण क्षीण होत
 हुजिये कृपाल, कथ्यो मेरी मति छरी है ।

१ चबड़ाई । २ प्रसन्न होकर । ३ इनाम । ४ दुबला ।

करो सिन्धु पार मोके यही सुख सार, दिये
रतन अपार लाय, बाही ठार करी है ॥२६॥

राम नाम लिखि शीश मध्य धरदियो वाके
यही जल पार करै भाव साँचो पायो है ।
ताही ठौर बैठयो मानो नयो औरै रूप भयो
जा जहाज चढ़ि आयो मोती फिरि आयो है ॥
लियो पहिचानि पृथ्वी सब सो बगवान कियो
हियो हूलमायां मुनि विनै के चढ़ायो है ।
शंका किये कृपा नीर नेकु न परम करयो
हरयो मन देखि रघुनाथ नाम भायो है ॥३०॥

(श्री शबरीजी की कथा)

वन में रहत नित्य शबरी कहत सब
बहत दहल साधु तन न्यूनताई है ।
रजनी रहत ऋषि आश्रम प्रवेश करै
लकरिन बोझ धरि आवै मनभाई है ॥
न्हायवे को मग भारि काँकरी सो चीन डारै
बगि उठि जाय कभूँ जान ना लग्गाई है ।
उठत मैवारे ऋषि कहै कौन भारि गया
शोचत हृदय कोऊ बडा सुखदाई है ॥३१॥

१ करके । २ लोगों के शंका करने पर वह समुद्र में कूद गया
परन्तु जल ने उसको स्पर्श नहीं किया (भिगोया नहीं) । ३ चली जाय ।

वहे ही 'अमंग वे मतंग रसरंग भरे
धरे देखि बोझ कह्य कौन चोर आयो है ।
कर नित चोरी सेवा, 'गहो बाहि एक दिन
बिना पाये प्रीति बाकी मन भरमायो है ॥
बैठे निशि चौकी देत शिष्य सब सावधान
आय गई गहिलई काँपै शीश नायो है ।
देखत ही ऋषि जलधारा चली नैनन तें
बैनन मों कहा ताहि कहा कछु पायो है ॥३२॥
दीटि हूँ न 'मौही होत मानि तन 'गोत छाते
परी जाय 'शोचमांत कैसे के निकारिये ॥
भक्ति को प्रताप ऋषि जानत निपट नीके
केऊ कोटि विप्रताई यापै बारि डारिये ॥
दियो वाम आश्रम में श्रवण में नाम दियो
कियो मुनि रोप सब कीन्ही पाति न्यारिये ।
शबरी मों कयो तुम राम दरशन करो
हम परलोक जात आज्ञा प्रभु 'पारिये ॥३३॥
गुरुको वियोग महा दारुण सो शोक भयो
जियो नहीं जान तोपै राम आस लागी है ।
न्हायवे के घाट निशि रहत बहारें सब
भई एक दिन बार देखि व्यथा पागी है ॥

१ इच्छा रहित । २ पकड़ लो । ३ सामने । ४ जानि की छूत ।
५ चिन्ता धारा । ६ पालनी है ।

छुड़ गयो एक ऋषि स्वीकृत अनेक भाँति
 करिके विवेक गयो न्हावे 'यह भागी है ।
 जल सो रुधिर भयो नाना कृमि भरि गयो
 नयो पायो सोच तऊ जान्यो ना 'अभागी है ॥३४॥
 लागै वन बेर लागी रामकी ओमेर फल
 चाखै धरि राखै सोचै मीटै उन्ही योग हैं ।
 मारगमें जाय रहै लोचन बिछाय कभूँ
 आवैं रघुराई दृग पावैं निज भांग हैं ॥
 ऐमेही बहुत दिन बीते मग 'जोवन ही
 आय गये औचक ही मिटे सब 'संग हैं ।
 ज्योंही तन न्यून ताई सुधि आई छिपी जाय
 पूछैं आप शवरी को ठाढ़े 'जोई लोग हैं ॥३५॥
 पूछि पूछि आये तहाँ शवरीको स्थान जहाँ
 कहाँ वह भाग्यवती देखौ दृग प्यासे हैं ।
 आयी तब आश्रममें जानिके पधारे आप
 दूरही ते दंडवत करी 'चक्षु भामे हैं ॥
 'हवकि उठाय लई व्यथा तन दूर गई
 नई नैन भरी लागी, प्रभु प्रेम प्यासे हैं ।
 बैठे सुख पाय फल खायके सराहि कहाँ
 कहा कहाँ मेरे सब मग दुःख नाशे हैं ॥३६॥

१. शवरी । २. वह अभागा ऋषि । ३. देखते । ४. शोक-
 दुःख । ५. जो लोग खदे थे उनसे । ६. देख पड़ते ही । ७. लपक कर ।

करत हे शोच ऋषि बैठे निज आश्रमनिह
 जलको विगार सो सुधार वसे कीजिये ।
 आवत सुने हैं वन पथ रघुनाथ कहूँ
 आवैं जव सब याको भेद कहि दीजिए ॥
 इतनेही भाँक सुनी शवरीके बैठे आय
 गयो अभिमान चलो पद गहि लीजिये ।
 आये 'खुनमाय कही नीरको उपाय कहाँ
 गहि पग भीलनीके स्वच्छ जल 'भीजिये ॥३७॥
 (पक्षिराज श्री जटायुजीकी कथा)

जानकी दृरण कियो रावण मरणकाज
 सुनि सीतावाणी ग्वगराज दौरि आयां है ।
 बडीये लराई लीन्ही देह वार फेर दीन्ही
 राखे प्राण राम मुख देखिबो सुहायो है ॥
 आये आप शीश गोद धारि दृगधार सौँच्यो
 पाय सीता सुधि निज करते जरायो है ।
 दशरथ तात सम मानि जलदान कियो
 अति सनमान निजरूप धाम पायो है ॥३८॥

(महाराजा श्री अम्बरीषजीकी कथा)
 अम्बरीष भक्तकी जो 'रीस कोऊ और करै
 बडो मति 'बौर 'कयोहूँ जात नही भाषिये ।

१. स्वीकृत । २. स्नान करो । ३. बराबरी । ४. बावला ।
 ५. किसी प्रकारसे भी ।

दुरवासा ऋषि सीख सुनी नहीं काहूकी सो
 मानि अपराध शिर जटा खँचि नाखिये ॥
 लई उपजाय काल कृत्या विकरालरूप
 भूप महाधीर रहे दाढे अभिलाषिये ।
 चक्र दुःख मानिके 'कृपानुतेज राखकरी
 परी भीर ब्राह्मणको भागवत साखिये ॥३६॥
 भाग्यो दशों दिशा सबलोक लोकपाल पास
 गयो, नयो, चक्र तेज चूण किये डारै है ।
 ब्रह्मा शिव कही यह 'देव तुम बुरी गद्दी
 दासन को भेद नहि जान्यो वेद धारै है ॥
 पहुँचे वैकुण्ठ जाय कद्यो दुःख अकुलाय
 हाय हाय रामो प्रभु खरो तन जारै है ।
 मैं तो हूँ आधीन तीन गुणको न मान मेरै
 भक्तवात्मल्य गुण सबही को टारै है ॥३७॥
 मोर अति प्यारे साधु इनको अगाध मन
 करयो अपराध तुम सहयो कैसे जात है ।
 धाम धन वाम मुन प्राण तन त्याग करै
 ठरै मेरी ओर निशिभोर मोरी बात है ॥
 मेरे ह न सन्त विन और कछू साँची कहाँ

१. अपने तेज की अग्नि से । २. आदत । ३. शरणपाल,
 अर्तिहरण ब्रह्मण्यदेव इन आपकं कहे तीनों ही गुणों का—

जाओ 'वाही ठौर जाते मिटै उतपात है ।
 बडे ही 'दयालु वे दीन प्रतिपाल करे
 न्यूनता न धर काहु, भक्ति गात गात है ॥४१॥
 ह्व कर उदास ऋषि आये नप पास चले
 गर्व सो गँवाय, पद गहे, 'दीन भापे हैं ।
 राजा लाज मानि 'भृत्यकहि मनमान करि
 भुकि चक्र और करजोरि 'अभिलाषे हैं ॥
 भक्त न सकाम कभूँ कामना न चाहत हैं
 चाहत हों, विप्र दुःख दूर करो 'चाम्बे हैं ।
 देखिके विकलताई मदा सन्त सुखदाई
 आई मन माँझ सब तेज ढाँकि राम्बे हैं ॥४२॥

(दूसरी कथा)

एक नृप मुता सुनि अम्बरीष भक्तिभाव
 भयो हिये भाव ऐसो वर कर लीजिये ।
 पितामों निशंक होके कही पति कियो मैं ही
 विनै मानि मेरी बेगि चीठी लिखि दीजिये ॥
 पाती लेकर चल्या विप्र 'क्षिप्र वाही पुरी गयो
 नयो चाव जान्यो तापै तिया कैसे 'धीजिये ।

१. अम्बरीषजी के पास । २. अम्बरीषजी । ३. गरीबी के ।
 ४. अपनेको दास कहकर । ५. चक्र में माँगा । ६. अपने कियेका फल
 चखलिया । ७. शीघ्र । ८. विश्वास किया जाय ।

कह्यो नृप कह्यो जाय रानी बैठी शत आय
बोल्यो ना सुहाय माँको, सेवा माँझ भीजिये ॥४३॥

कह्यो नृप सुतासों ज कीजिये जतन कौन
पौन जिमि गयो आयो काम नहीं किया 'को ।

फिरिके पठायो सुख पायो मैं तो जान्यो यही
बड़ा धरमज्ञ वाके लोभ नहीं लियाको ॥

बोली अकुलाय मन भक्ति ही रिझाय लियो
कियो पति, मुख नहीं देखूँ और पियाको ।

जायके निराक तुम बात यह कह्यो मेरी
बेरी ज्यो न करिहो तो लेहो पाप 'जियाको ॥४४॥

कही विप्र जाय, सुनि चाह, राय करि सभा
दयो लै खडग यासों फेरा फेरि लीजिये ।

भयो जू विवाह उत्साह कहूँ मात नहीं

आई पुर अम्बरीष देखि अवि भीजिये ॥

कह्यो नये मन्दिर में भारिके बसेरा देवो

देवो सब भोग विभौ नाना सुख कीजिये ।

पूरव जनम काँऊ मेरे भक्ति 'गंध हुती

जाहीते संबन्ध पायो यही मान लीजिए ॥४५॥

'रजनी के शेष पति भौन में प्रवेश कियो

लियो प्रेम साथ द्विग मंदिर के आईये ।

१ कोई । २ अन्य पतिका । ३ भाण इत्या का । ४ कामना । ५ कुछ रात रहते ।

बाहरी टहल पात्र चौका करि 'रीझि रही
रही कोने जाय जामें 'होत ना लखाइये ॥

आये जव राजा देखि 'अनिभिष लोचन मे
कौन चोर आयो मेरी सेवा ली चुराइ ये ।

देखि दिन तीन फेर चीन्हे के 'प्रवीण कही
ऐसा मन जोपै प्रभु माथे पधराइ ये ॥४६॥

लई बात मानि मानो मंत्र लै सुनायो कान
होत ही 'विद्वान सेवा नीके पधराई है ।

करक सिंगार फिर आपही निहार रहे
लहै नहीं पार दृग भगीमी लगाई है ॥

भई बढवार राग भोगसों अपार भाव
भक्ति विमलार गीति पुरमव आई है ।

नृपहु सुनी तो अव लागी चाँप देख्येकी
आये ततकाल गति अति अकुलाई है ॥४७॥

'हरे हरे पाँव धरें 'पौरियन मनाकरै
खरै अरवै कव देख्यो भाव भगी को ।

गये चलि मंदिर लों सुन्दरी न सुधि अंग
रंग भीजि रहे दृग लाइ रहे भरीको ॥

वीण लै बजावै गानै लालही रिझावै त्यो-त्यो
अतिमन भावै कहै धन्य है या घरीको ।

१ प्रसन्न हुई । २, देख न पड़े । ३, आश्चर्य चकित हो टकटक देखने लगे । ४, चतुर राजा । ५, सवेरा । ६ धीरे धीरे । ७ पहरेदारोंको ।

द्वार पै रह्यो न जाय गये ललचाय ढिंग
 भई उठि ठाढ़ी देखि राजा गुरु हभीको ॥४८॥
 वैसे ही बजावो वीण तान सो नवीन लौके
 भीन स्वर कान परे जात मति खोइये ।
 जैसे रंग भीजि रही कही सो न जात मोपे
 तोपे मन नैन चैन कैसे जात गोइये ॥
 करके अलपचारी फेरिके सँवारी तान
 आइ गयो ध्यान रूप ताही माँक भोइये ।
 प्रीति रसरूप भई रैनि सब चीत गई
 ऐसी यह रीति नई जामें नहीं सोइये ॥४९॥
 बात सुनी रानी और रजा रहे नई ठौर
 भई शिरमोर अब कौन बाकी सरी है ।
 हमहु ले सदा धरें पति मति वश करै
 ध / नित ध्यान विपै बुद्धि राखि धरी है ॥
 सुनिके प्रमत्त भया अति अम्बरीष हियो
 लागी चोप फल गई भक्ति धर धरी है ।
 वहुँ दिन दिन चाव ऐनोई प्रभाव भक्ति
 पलटै स्वभाव लागै आनंद की भरी है ॥५०॥
 (श्री विदुरजी की कथा)
 नहात रही विदुरानी अंगनि प्रक्षालि नीके
 आय गये द्वार कृष्ण बोलिके सुनायो है ।
 १ पग गई ।

सुनतहि स्वर सुधि डारीनै निटरि मानो
 रही मद भरि दोरी पट न धगायो है ॥
 डारिदयो पीत पट कटि लपटाय लयो
 हियो अकुलायो वेष वेग ही बनायो ।
 बैठी आय ढिंग केरा छील के खवाये छायोत
 आये पति स्त्रीके दुःख कोटि गुनो पायो है ॥५१॥
 प्रेम को विचार आप लागे फलसा देन
 चैन पाय कछो नारी बड़ी दुःखलाई है ।
 बाले रीझि श्याम तुम कीन्हो बड़ो काम तोपे
 स्वाद अभिराम जैसी वस्तु में न पाई है ॥
 निया सकुचाई कर काट डारो हाथ प्राण
 प्यारे को खवाये छायोत तोऊ निन्है भाई है ।
 हिन ही की बात दोऊ कोऊ पार पावै नाहि
 प्रभुहि लडानै सोई जानै यहै गाई है ॥५२॥

(श्री सुदामाजीकी कथा)

बड़ो निष्काम मेर चूनहु न धाम रहे
 आई वाम ताने प्रीति हरि सों जनार्द है ।
 सुनि शोच परयो हियो स्वरो अस्वरयो
 मन गाढ़ो कैके बोल्यो हांजी अति सरसाई है ॥

१ कपड़े भी नहीं पहने । २ छिलके । ३ गरी । ४ सुन्दर स्वादवाली ।
 ५ प्रेम विषय हो छिलके खिलाना भी और पत्नीको फटकारकर गरी
 खिलाना भी । ६ शस्त्रों ने और संतों ने कही है । ७ सचमुच । ८ प्रेम ।

जाओ एक बार वह वदन निहारि आओ
 जोपै कछु पाओ लाओ मोको सुखदाई है ।
 कही भली बात सातलोक में कलंक ब्रह्म है
 जानै जग याही लागि कीन्ही मित्रताई है ॥ ५३ ॥
 मुनि तिया कछो कृष्ण रूप क्यों न चाहौ जाओ
 दहै दुःख आपही सों, वचन सो भाये हैं ।
 आई सुधि प्यारे की विचार दर डारे मव
 धारे पग मग भूमि द्वारावति आये हैं ॥
 देख कं विभूति सुख उपज्यो अभूत अति
 चलयो मुख माधुरी क लोचन तिसाये हैं ।
 डरपत हियो छोटी लगि मन गाढो कियो
 लियो कर गहि चाह तहाँ पहुँचाये हैं ॥ ५४ ॥
 देख्यो श्याम आयो मित्र चित्रवत रहे नेक
 हित को चरित्र रोइ दौरि गर लागे हैं ।
 मानो एक तन भयो लयो नेमे जानी लाय
 नयो यह प्रेम छुटै नाहि अंग पागे हैं ॥
 आई दुबराई सुधि मिलनि झुड़ाई ताने
 आनि जल रानी पावँ धोये भाग जागे हैं ।
 मेज पधराय गुरु चरचा चलाय सुख
 सागर डुबाय आप अति अनुरागे हैं ॥ ५५ ॥

१ अपने ही आप । २ जैसा कि पहले कभी नहीं हुआ था । ३ बरवाना ।
 ४ मिलने की लालसा । ५ दुर्बलता का खयाल ।

चिरवा छिपाये कांख पूछी कहा लाये भोको
 अति सकुचाये भूमिताक दृग भीजे हैं ।
 खैचनई गाँठ मूठी एक मुख मांभ दई
 दूमरी हू लेत स्वाद पाय आप रीके हैं ॥
 गह्यो कर रानी सुखदानी प्यारी वस्तु पाय
 बाँटि पाई जात श्री सुदामा प्रेम धीजे हैं ।
 श्यामजू विचारि दीन्ही संपत्ति अपार विदा-
 भये पै न जानी सार, विछुरन छीजे हैं ॥ ५६ ॥
 आये निज ग्राम वह अति अभिराम भयो
 भयो पुर द्वारिका सो देखि मति गई है ।
 तिया रंग भीनी मंग अमित महेली लीन्ही
 कीन्ही मनुहार यों प्रतीति उर भई है ॥
 वहै हृदि ध्यान रूप माधुरी को पान तानों
 राखै निज प्राण जामों प्रीति रीति भई है ।
 भोग की न चाह धरें, तन निरवाह करें,
 करें सोई चाल मुख जाल रस मई है ॥ ५७ ॥

(श्री चन्द्रहासजीकी कथा)

हुतो नृप एक ताको सुत चन्द्र हाम भयो
 परी जो विपत्ति धाय लाई और पुर है ।
 राजाको दिवान ताके घर रही आनि बाल
 आपने समान संग खेलै रंग दुर है ॥

१ तत्व-मर्म । २ वही पुरानी । ३ धात्री=दासी । ४ दूसरे ।
 ५ बालकको लेके । ६ रंग (अलगाव) छुप गया ।

भयो ब्रह्म भोज कोई ऐसोई संयोग बन्यो
आये वे कुमार जहाँ विप्रनको सुर है ।
बोली उठे सबै तेरी सुताको जु पति यह
हुयो चहै जानि सुनि गयो लाज धुर है ॥५८॥

पर्यो सोच भारी कहा करों यों विचारी अहो
सुताजो हमारी ताको पति ऐसो चाहिए ?
डारों याहि मार याको यही है उपाय ठीक
बोली नीचजन कह्यो मारो हियो दाहिये ॥

गये लौके दूर देख्यो बाल छविपूर यह
योनि परे धूर दुःख ऐसो अवगाहिये ।
बोले अकुलाय ताहि मारेंगे महाय कौन
मांगो एक बोल जोभी चाहो मन मांहिये ॥५९॥

मांग्यो यही बोल मो कपोल में से गोल एक
गंडकीको सुत काहि सेवा नीके कीन्ही है ।
भयो तदाकार यों निहारि सुख भार भरि
नैननकी कोरही सो आज्ञा बध दीन्ही है ॥

गिरे मुरझाय दया आई हिय भाय भरे
ठरे प्रभु और मति आनंद सो सीनी है ।

१ चन्द्रहाम । २ देवता । प्रधान । ३ लज्जामें घुल गया ।
४ अधिक लोग । ५ जलाता है । ६ महान मुन्दर । ७ हजना पड़ता
है । ८ वचन । ९ गले मलाका । १० शालिग्राम । ११ अपार
मुखमें भरकर । १२ अधिक लोग मुरझाकर गिर गये ।

हुती छटी आंगरी मो काटिलई दूषण ही
भूषण भयी मो जाय दई साँच चीन्ही है ॥६०॥

वाही देश भूमि में रहत लघु भूप और
और मुख सब ताके सुत चाह भारी है ।
निकम्यो विपिन आय देखि याही मोद भरयो
कीन्हे खग छाँह घेरे सृगपति सारी है ॥

दौरिके निशंक लियो मानों निधि पाई रंक
कियो मन भायो मो बधायो निधि वारी है ।
कछु दिन बीत भये नृप चित्त चीने
दीन्हे राज को निलक भाव भक्ति विमतारी है ॥६१॥

रहै जाके देश मो तरेग कर पावै नाहीं
बौह बल जार दियो मचिव पठाव के ।

आयो घर जानि कियो अति मनमान
सो पित्रान लियो बहै बाल मारों छल बाव के ॥
दई लिखि चीठों कही मेरे सुत हात दीजे
कही कीजे बही अत लायो जो लिखाय के ।

आयो पुर पाम बाग सेवा मति पागि करी
भरी नीद दृग नेक सोयो सुख पाय के ॥६२॥

सुता ताही पंजी की सो खेलत मखिन मग
आठे बाग मांझ भई न्यारी देखि सीनी है ।

१ छोटा राजा-जामीरदार जमीन्दार । २ आनन्द । ३ रक्षामें ।

'पागलें सो पाती छवि माती भुकि खैचि लई
 खोलि बाँची लिख्यो विष देन पिता 'खाँभी है ॥
 विषया सुनाम निज मोई दृग अंजन ले
 विषया बनायो मनभाई रस भीजी है ।
 आय मिली आलिन में लालन को ध्यान दिये
 पिये मद मानो गृह आई तब 'धीजी है ॥६३॥
 उठ्या चन्द्रहास जिहि पाम लिख्यो पत्र लायो
 भयो देखि मन भायो गरे सों लगायो है ।
 दई कर पाती बात लिखी सो मुह्यती बोलि
 विप्र धरी एक माँझ व्याह उघरायो है ॥
 करी ऐसी रीति लीन्हे बड़े नृप जीनि
 निधि देत गई बौति चाव पार पै न पायो है ।
 आयो पिता नीच देख घूम आई धीव मानो
 वानो लखि दूल्ह को शूल सरमायो है ॥६४॥
 बंठयो लै एकान्त सुत करी कहा भ्रान्ति तेने
 कह्यो मो वृत्तान्त कर पाती ले दिखाई है ।
 बाँचि आँच लागी में तो बडो ही अभागी तो पै
 मारो मति पागी बेटी 'रौडू सुहाई है ॥
 बोलि 'नीच जात कही जाओ तुम देवी मठ
 आवैं तहाँ कोऊ मारि डारो मोहि भाई है ।

१ मस्तक पर : की पगड़ी । २ क्रुद्ध हुई । ३ विश्वस्त हुई ।

४ विधवा । ५ अधिक ।

चन्द्रहामजी मों बोल्यो देवी पूज आओ आज
 मेरी कुल पूज्य, सदा रीति चलीआई है ॥६५॥
 चले ये करन पूजा देशपति राजा मोची
 मेरे सुत नही राज वादी को ले दीजिये ।
 मचिव सुवन सों जु कह्यो तुम लाओ जाओ
 पाऊँ न समय फिर अवे काम कीजिये ॥
 दोरयो सुख पाय चाव मग ही में मिल्यो जाय
 दियो मो पठाय नृप रंग माँझ भीजिये ।
 देवता मम्मान हेत गयो मंत्री सुत आप
 जात मारि डारयो यासों भाष्यो भूप लाजिये ॥६६॥
 काहू आय कही सुत तेरो मारयो नीचन ने
 मींचत शरीर दृग नीर भरी लागी है ।
 चलयो ततकाल देगि गिरयो हो विहाल शीश
 पाथर सों फरयो मरयो, ऐमो ही अभागी है ॥
 सुनी चन्द्रहास चलि वेग मठ पाम आय
 ध्याय देवता को विनै कीन्ही अनुरामी है ।
 कह्यो तेरो दोषी याही कोप करि मारयो मैं ही
 विनै कै जिवाये दोऊ बडो बडभागी है ॥६७॥
 क्रियो ऐमो गज सब देश भक्त राज भयो
 ढिंग को समाज ताकी बात कहा भापिये ।
 हरि हरि नाम अभिराम धाम धाम सुनै
 और काम कामना न सेवा अभिलापिये ॥

काम क्रोध लोभ मद आदि लेके दूर किये
जिये नृप पाय ऐसो नैनन में राखिये ।
कही जिती वान आदि अन्त लों सुहात हिये
पटै प्रात पावै सुख जैमिनी है साखिये ॥६८॥

(भक्त समूह वर्णन)

कौमारव नाम जो उग्यान कियो नाभा जू ने
मैत्रेय ऋषि नाम जान लिजे वान में ।
आज्ञा प्रभु दई जाहु निदुर है नक्त मेरो
करो उपदेश रूप गुण गात गात में ॥
चित्रकेतु प्रेमकेतु भागवत ग्यात जाने
पलटयो जनम प्रतिकृत फूल घात में ।
अकरूर ध्रुव आदि भये स भक्त भूष
उद्धव से प्यारे नीके ग्यात पात पात में ॥६९॥

(श्री कुन्तीजी की कथा)

कुन्ती की मी करतूत करै कौन दूजो प्राणी
गौतम विपत्ति जानों भारें मद जन हैं ।
देख्यो मुख चाहों लाल ! देखे निनिये माल
हुजिय कृपाल नहीं दीजे वाम वन है ॥

१ प्रेम की वज्रा । २ मल्ल आज्ञा से वृत्रासुर रूप विरोधी
जन्म लेकर ब्रज के मभाव को भी फूल सा अनुभव किया ।
३ लोग । ४ हे श्री कृष्ण । ५ दुःख । ६ कृपाकर रहो या वनवास दे दो ।

देखि विकलाई प्रभु आँख भरि आई, फेरि
घर ही लेआई कृष्ण प्राण तन धन है ।
श्रवण वियोग सुनि नेकह न रह्यो गया
भयो 'वपुन्यारो अहो येही साँचो प्रण है ॥७०॥

(श्री द्रोपदी जी की कथा)

द्रोपदी मती की वान कहै ऐसो कौन पद
सौचत ही पट, पट कांठि गुने भये हैं ।
हारिका के नाथ कहि बोली तब माथ दूने
हारिका सों फिरि आये भक्त वाणी नए हैं ॥
गये दुर्वासा ऋषि वन में पठाये नीच
धर्मपुत्र गोले न्याय आया प्रणलये हैं ।
भोजन निवारि तिय आई कही मोच पट्टे
चहैं तन त्याग, कही कृष्ण कहै गये ? हे ॥७१॥
मुन्यो भागवती को वचन भाक्त भाव भर्या
कियो मन आये श्याम पूज मनकाम है ।
आवनही कही मांति भव लागी देवो कछु
मन मकुचाये माँगें प्यारे नहि धाम है ॥
विश्व के भरणहार धरे हैं अहार अन्न
हमसों दुराजो कही वाणी अभिनन है ।
लग्यो शाक पत्र पात्र जलमँग पाय गये
पूर्ण भे त्रिलाक विप्र गनै कौन नाम है ॥७२॥

१ शरीर छूट गया । २ चतुरा । ३ आदर किया है ।

(भक्त समूह से चरण कमलकी याचना)

मूल छ०—योगेश्वर श्रुतदेव अंग 'मुचु
प्रियव्रत जेता । पृथू परीक्षित शेष सुत
सौनक 'परचेता । 'शतरूपा 'त्रयसुता
सुनीति सती मन्दातस । 'यज्ञपत्नि
'व्रजनारि किये केशव अपने बश । ऐसे
नर नारी जिते, तिनही के गाऊं यशैं । पद
पंकज 'बाँछों मटा, जिनके हरि
नितउर वसै ॥१०॥

टीका क०—जिनही के हरि नितउर वसै तिनहीकी
पदरेणु चैन देन आभरण कीजिये ।

योगेश्वर आदि रस स्वाद में प्रवीण महा
विप्र श्रुतदेव ताकी बात कहि दीजिये ॥

आय हरि घर देखि गयो प्रेम भर हियो
ऊँचो करि कर पट फेरि मति भीजिये ।

जिते माधु संग तिनहै विनय प्रमंग कियो

'कियो उपदेश मोमो बड़े पाँव लीजिये ॥७३॥

१ मुचुकुन्द । २ प्राचीन बर्हि के पुत्र पचेता । ३ मनुपत्नी ।
४ तीन मनु कन्या प्रसूनी, आकूती और देवकुती । ५ यज्ञ कर्त्ता
माधुगोकी पत्नियाँ । ६ गोपियाँ । ७ चाहों । ८ सुख । ९ आभूषण ।
१० (भगवान ने उपदेश दिया कि मन्त मुझसे भी बड़े हैं उनके चरण
पकड़ो ।)

(भक्त समूह से चरणरज की याचना)

मूल छ०—प्राचीन बाह सत्यव्रत रहुगणा
सगर भगीरथ । वाल्मीकि मिथिलेश गये
जे जे गोविंद पथ । रुक्मांगद हरिचन्द
भरत अरु दधिचि उदारा । सुरथ मुधन्वा
शिविरु सुमति अति बलिकी दारा । नील
मोरध्वज ताम्रध्वज अलक कीरति राचि
हों । अंग्री 'अंबुज 'पांशुको जन्म जन्म
हों याचिहों ॥११॥

टीका क०—जनम जनम को न मेरे कछु शोच अहो
मन्त पदकंज रेणु शोश पर धारिये ।

प्राचीनबर्हि आदि कथा सुप्रसिद्ध जग
उभय वाल्मीकि कथा उरते न टारिये ॥

भये भील मंग भील ऋषि मंग ऋषिभये
राम दरसन पाय लीला विमत्तारिये ।

जाहि जग गाय सुनि मकै न अधाय 'क्योंहु
भाव भरे हियो, भरि नैन नीर ढारिये ॥७४॥

(श्री श्वपच वाल्मीकि जू की कथा)

हुनो एक श्वपच सु वाल्मीकि नाम ताको
श्याम ने प्रकट कियो 'भारत में गाइये ।

१ कमल । २ रजःधूरी । ३ किसी प्रकार से भी । ४ महाभारत ।

पांडवन मध्य मुख्य धर्मपुत्र राजा आप
 कीन्हो यज्ञ भारी ऋषि आये भूमि छाड़ये ।
 ताको 'अनुभाव शुभ शंख साप्रभाव कहै
 जोंपै नहिं बाजै तो अपूरण जनाइये ।
 सोई बान भई वद बाज्यो नहीं शोक परयो
 पूछी प्रभु पाम आय न्यूनता बताइये ॥७५॥
 बोले कृष्णदेव याको भव मत्र सुनि लेहु
 नीकें मगनि लेब वान 'दुरी मगभाइये ।
 भागवत मन्त समन्त कोऊ जेयो नाहिं
 ऋषि सभूह भूमि चहुं दिशि छाड़ये ॥
 जोंपै कहौ भक्त नाहिं, नांही कैसे कहो, याही
 नगर बसै मो कुल जाति को बहाइये ।
 दामनक दाम अभिमानको न 'वास कहै
 पूरण की आस जा पै ऐसो लै जिमाइये ॥७६॥
 ऐसो हरिदाम पुर आम पाम दीसै नाहिं
 'वास दिन कोऊ लोक लोकन में पाइये ।
 तुमरे नगर माक निशिदिन भार साक
 आलौ जय तोंपै काहु वान ना जनाइये ॥
 मुनि मत्र चाकि परे भाव अचरज भर
 हरे मन नैन अत्रु बेगही बताइये ।

१ पूर्णतया लक्षण । २ कभी । ३ गुप्त । ४ छोड़दी । ५ गंध ।
 ६ वासना=कामना ।

कहा नाम कहाँ ठाम जहाँ हम जाय देखें
 लेखें निज भाग धाय पाँय लपटाइये ॥७७॥
 जेने मेरे दाम कभी चाहें ना प्रकट भयो
 करों में प्रकाश मानें महा दुःख दाइये ।
 मोको परयो शोच यज्ञ पूरण को 'लोच स्थि
 लिये बाको नाम 'जनि गाम तजि जाइये ॥
 'एमे प्रभु कहो जामें रहो तूम न्यारे मदा
 हमही लिवाय लावै नीकें कै जिमाइये ।
 जावो बाल्मीकि घर बड़ा 'निर्व्यर्त्तिक साधु
 कियो अपराध हम दियो जो बताइये ॥७८॥
 अर्जुन ओ भीम सेन चले इन पित्रनको
 'अन्तर उधारि कयो भक्ति भाव दूर है ।
 पहुँचे भवन जाय चहुं दिशि फिर आय
 परे भूमि भूमि घर देख्यो 'द्विपूर है ॥
 आय नृप राजनको देखि तजे काजन को
 लाजन सो काँपे तन भयो मन चूर है ।
 'पाँयन को धारियेजू जूटनि लो डारियेव
 पाप गेह टारिये आ कीजे भाग भूर है ॥७९॥
 'जूटन ले डारो नदा डार को वुठारो नाही

१ प्रेम । २ कहीं । ३ इस प्रकारसे । ४ पाया रहित । ५ अन्तःकरण
 खोल कर । ६ भगवान । ७ यह अर्जुन ने कहा है । ८ यह बाल्मीकि
 ने कहा है ।

और को निहारों अजू यही सँचोपन है ।

कहो कहा जेवों कछु पाये लै जिवाँवो हमें
जानी गई रीति भक्ति भाव तुम तन है ॥

तब तो लजानो हिये कृष्णपै रिसानो नृप
चाहौ सोही ठानो मेरे संग कोऊ जन है ।

भोरही पधारो अब यही उर धारो और
भूलि ना विचारो कही भले जो पै मन है ॥८०॥

कही सब रीति सुनि धर्मपुत्र प्रीति भई
करीले रसोई कृष्ण द्रौपदी सिन्धुई है ।

जेनिक प्रकार सब व्यंजन सुधारि करों
आज तोरे दानन की होत सफलई है ॥

ल्याये जा लिवाय कही बाहर जिवाय देवो
कही प्रभु आप लावो अंक भरि भाई है ।

आनिके विठायो पाकशालामें रमाल ग्रास
लेत बाज्यो शंख हरि छडी की लगाई है ॥८१॥

ग्राम ग्राम प्रति क्यों न बाज्यो कछुलाज्यो कहा
भक्त को प्रभाव तू न जानत यों जानिये ।

बोल्या अकुलाय जाय पयो अजी द्रौपदी सों
मेरो दोष नाही यह आप मन आनिये ॥

१ यह अर्जुन का वचन है । २ वाल्मीकि का वचन है । ३ सहायक ।

४ अर्जुन ने कहा । ५ वाल्मीकि ने । ६ अच्छा ।

मानी साँची बात जाति बुद्धि आई देखि याहि
सबहि मिलाये मेरी 'चातुरी विद्वानिये ।
पूछे ते कही मो वाल्मीकि में मिलायो याने
आदि प्रभु पायो पाऊँ स्वाद 'उनमानिये ॥८२॥

(श्रीकृष्णार्जुन की कथा)

कृष्णार्जुन बाग शुभ गंध फूल पागिरहे
करि अनुराग देव बधू लेन आवहीं ।

एकदिन रही एक कांटो चुम्बो बैंगन को
सुनि नृप माली, पास आयो सुख पावहीं ॥

पूछी सो उपाय कही जातैं स्वर्ग जाय सको
कही एकादशी को मंकल्प दिये जावहीं ।

व्रत को तो नाम इहि ग्राम कोऊ जानें नाहीं
कीन्हों व्है अजान काल्ह लावो गुण गावहीं ॥८३॥

फेरी नृप डोंडी सुनी वनिककी लोड़ी भूखी
रही ही निगोड़ी निशि जागी उन मारिये ।

राजा टिंग आय करिदियो व्रतदान त्योही
भरि सो उडान निज लोक को पधारी ये ॥

महिमा अपार देख भूपने विचार कियो
एकादशी अन्नखाय ताहि मारि डारीये ।

याहीके प्रभाव भाव भक्ति को विस्तार भयो
नयो चोज भयो सब पुरी लै उधारी ये ॥८४॥

१ चतुराई को नष्ट कर दी । २ अनुभव होगा ।

एकादशी व्रतकी मनाई नै दिखाई राजा
 सुनाकी निकाई सुनो नीके चित्त लायके ।
 पिता घर आयो पति भूख ने सतायो अति
 मांगै तिया पास नहीं दियो यह भायके ।
 आज हरि वासर सो तामर न कोऊ पूछै
 डर कहा 'मीच को यो मानी सुख पाय के ॥
 तजे उन प्राण पाये बेगि भगवान वधू
 हिये मरमान भई कछो प्रण गाय के ॥८५॥

(भक्त समूह का वर्णन)

सुनो हरिवन्द कथा व्यथा विन दियो द्रव्य
 तथा नहीं राख्यो बेचे सुत तिया तन है ।
 सुरथ सुधन्वात्रु सो दोष के करत मरे
 शंख ओ लिखित विप्र भयो मैलो मन है ॥
 इन्द्र और अग्नि गये शिवि पै परीक्षा लेन
 काटि दियो मांस रीफे मांसो जान्यो प्रण है ।
 भरत दधीचि आदि भागवत बीच गाये
 सवन सुहाये जिन दियो तन धन है ॥८६॥

(राजा बालि की मदावाणी विन्ध्यावली की कथा)

विन्ध्यावली तिया मीन देखी कहुँ तिया नैन
 बांध्यो प्रभु पिया देखि कियो मन चौगुनो ।

१ उन्नमता । २ आतिथ्य भोजन की बात । ३ मृत्यु । ४ दुःख
 माने बिना । ५ कुछ भी ।

करि अभिमान दान देन बैठयो आप ही को
 कियो अपमान मै तो मान्यो सुख मौगुनो ॥
 त्रिभुवन श्रीनि लियो दियो बैरी देवतान
 प्राण मात्र रहे हेरि आन्यो नहीं औगुनो ।
 ऐसी भक्ति होय जो पै जागै रहै मोय भले
 रहै भव माँझ तो पै लागै नहीं मौगुनो ॥८७॥

(मदारामा श्रीमोरचण्डजी की कथा)

अर्जुन के गर्व भयो कृष्ण प्रभु जान लयो
 दिय रस भारी याहि रोग ज्यों मिटाइये ।
 कही मेरो भक्त एक तोको ले दिखाऊँ ताहि
 भये विप्र वृद्ध संग बाल बलि जाइये ॥
 पहुँचत भाष्यो जाय मोरचण्ड राजा कहाँ
 वग सुधि देखो काट बात यह जनाइये ।
 राजा प्रभु मेवा करें, नेक रहो, पाँव धगे,
 जाय कहाँ, आप बैठो, आग सी लगाइये ॥८८॥
 चले अनखाय पाँय गहि अटकाये जाय
 नृप को सुनाई ततकाल दौरि आये हैं ।
 बड़ी कृपा करी आज फरी मेरी चाह बेलि
 निपट नवल फल लाग्यो जानि पाये हैं ॥
 दीजे आज्ञा मोहि सोई करौ सुख भरो मन

१ भगवान । २ औगुण भी । ३ भव=संसार का गुण । ४ आनन्द ।
 ५ अर्जुन को बालक बनाया । ६ इच्छा लाना ।

पीजे रस जानि मेरे नैन ले मिराये हैं ।
 सुनि क्रोध गयो मोद भयो सो परीक्षा हेत
 भयो चित्त चाव ऐसे वचन सुनाये हैं ॥८६॥
 देवे की प्रतिज्ञा करो, करी जू प्रतिज्ञा हम
 जाही भांति सुख होय मोही मोकों 'भाई है ।
 मिल्यो म... मिह यहि बालक को ग्वाये जात
 कही... मोहि, नहीं यही सुखदाई है ॥
 काहु भांति छोड़ो बाल्यो नृप को शरीर आधो
 आवै तो तजों मैं याहि बात यों जनाई है ।
 बोलि उठी निया अरधांगी मोहि जाय देवो
 पुत्र कहै लेओ मोको बोल सुधि आई है ॥८७॥
 मुनो एक बात सुन निया ल करात गान
 चीरें धीरे धीरे यह पाछे सिंह भाषिये ।
 कीन्ही वाही भांति अरों नामा लगि आयो जब
 ढरयो दृग नीर भीर 'बाकरी न नाखिये ॥
 चले अनखाय गहि पाँव सो सुनाये वैन
 नैन जल आयो अंग वाम 'काहे 'नाखिये !
 सुनि भरि आयो हियो निज रूप श्याम लियो
 दियो रूप सुख व्यथा गई 'अभिलाषिये ॥८८॥

१ अच्छी लगती । २ सिंह । ३ क्यों । ४ फैका जाय । ५ क्योंकि
 चिरकाल से अभिलाषा थी ।

बदलो न दियो जाय निपट रिझाय लियो
 तऊ रीझ दिये बिना मोरे हिय माल है ।
 मांगो वर कांठि 'चोट बदलो न चूकै तऊ
 मूखै मुख मेरो मुधि आवे 'वह हाल है ॥
 बोलै 'भक्तराज आप वड़े महाराज, काऊ
 थोरों ही करै जो हिन, मानो 'कृत जाल है ।
 एक मांको दोज दान, दियो जू वस्वानो बेग,
 साधु की परीक्षा 'जनि करो कलि काल है ॥८९॥

(श्रीअलर्कजी की कथा)

अलर्क कीर्ति में 'राचों नित माँचे हिये
 किये उपदेश ह न छूटै विषै वामना ।
 माताजू मन्दालमाकी बटी ही प्रतिज्ञा रही
 आवै जो उदर मेरे गहै 'गर्भग्राम ना ॥
 पतिको 'निहारो नाते रह्यो छोड़ो कोरों
 बाको ले निकास्यो देय काशी नृप 'शामना ।
 'मुद्रिका उधारि ओ निहारि दत्तात्रयजु को
 भये भव पार करि प्रभु की उपासना ॥९०॥

१ धाव । २ आगेसे चीरने का । ३ मोखवत । ४ बहुत अधिक
 किया । ५ नहीं । ६ लय । ७ द्वाबर गधमे आनेकी आशा । ८ आग्रह ।
 ९ भय । १० माता की दी हुई अंगुठी जिसमें लिखकर रख दिया था
 कि 'संगः सर्वात्मना त्याज्यः यदि त्यक्तु न शक्यते । मद्भिरेव प्रकृतव्यः
 सत्संगो भव भजनः ॥'

(मायाभुक्त राजर्षि महर्षि भक्तगण चरण रम बन्दन)

मूल छ०—ऋभु इक्ष्वाकु ऐल गाधि रघु अँग
शतधन्वा । अमुरति रन्ति उत्तंग भरि
देवल अरु मन्वा ॥ नहुप ययाति दिलोप
पुरू यदु गुह मान्धाता । पिप्पल निमि
भरद्वाज दक्ष शरभंग मँघाता । संजय
शभीक उत्तानपाद, याज्ञवल्क्य यज्ञ जग
भरं । तिन चरण धूरि मो भूरि शिर,
जे जे हरि माया तर ॥१२॥

(श्रीरत्नदेवजी की कथा)

अहो रन्तिदेव नृप सन्त भो दुष्यन्त वंश
अतिही प्रशम मो आकाश वृत्ति लई है ।
भग्ये को न देस्य सकै आवै मो उठाये देत
नैति नहीं कर भग्ये देही क्षीण भई है ॥
चालीस आठ दिन पीछे जल अन्न आयो
दियो विप्र शूद्र नीच श्वान यह नई है ।
हरि ही निहारे उनमांभ तब आये प्रभु
मोंग्यो जग दुःख में ही भोंगो भक्ति छई है ॥६४॥

१ नहीं । २ दुर्बल । ३ अभूत पूर्व बात । ४ मैं ही भोग लूँ
(और किसी को न भोगना पड़े) ।

निषादराज श्रीगुहजी की कथा

भीलन को राजा गुह राम 'अभिगम प्रीति
भयो वनवाम बिल्यो मारग में आयके ।
करो यह राज जू विराज सुख दीजे मोको
बोलें महाराज तज्यो आज्ञा पितृ पायके ॥
दास्य प्रियोग अकुलात दग अश्रुपात
पीछे लोह आवै ताहि सके तीन गायके ।
रहै नैन मृदि रघुनाथ विन दे ? कहा ?
अहो प्रेम रीति थाके हिये रही छाये ॥६५॥
चौदह वरम पाछे आये रघुनाथ जवै
साथ के जो भील कहैं आये प्रभु देखिये ।
बोल्हो अवपाऊँ कहाँ ? होती न प्रताति मोहि
प्रीति करि मिले राम कहाँ मोको पेलिये ॥
परमि पिछाने लपटाने सुख सागर-
समाने, प्राण पाये मानो, भाल भास्य लेखिये ।
प्रेम की जो बात क्योंहूँ वाणीमें समात नहीं
अति अकुलात कहों कैसे कै विशोपिये ॥६६॥

(महाराजा निमि और नौ योगीश्वरोंकी मार्यना)

मूल छ०—कवि हरि कर भाजन सुभक्ति
रत्नाकर भारी । अन्तरिक्ष अरु चमस
अननता पधति उधारी । प्रबुध प्रेमकी

१ परम सुन्दर ।

राशि भूरिदा अविरहोता । पिप्पल द्रु मिल
प्रसिद्ध भवाब्धि पारके पांता । जयंती
नन्दन जगतके, त्रिविधि ताप आमय
हरण । निमि अरु नव योगेश्वरन, पादत्राण
की हों शरण ॥ १३ ॥

(नवधा भक्ति के नेता भक्तगणों से दया याचना)

मूल छ०—श्रवण परीक्षित सुमति व्यास
सावक सुकीर्तन । प्रभु पूजा प्रह्लाद स्मरण
कमलापद सेवन । बन्दन सुफलक सुवन
दास्य दीपत मुकुपीश्वर । सख्यत्वे पारत्थ
समर्पण आत्म बलि धर ॥ उपजीवो
इन नामके, एते त्राता अगतिके । पद
पराग करुणा करो, नेता नवधा
भगति के ॥ १४ ॥

(महाराजा श्री परीक्षित जी की कथा)

श्रवण रमिक कहैं सुनना परीक्षित से
पान हू करन लागै कोटि गुनी प्याम है ।

१ व्यास पुत्र-शुकदेव । २ अक्षर । ३ सुन्दर श्रीहनुमानजी । ४ अर्जुन ।
५ रूपराशि-भगवान । ६ दुर्गतिसे बचानेवाले । ७ अगुआ ।

मुनि मन माँझ कभूँ आवत न ध्यावत हू
सोही गर्भ माँझ देखि आयो रूप राम है ॥
कही शुक देव तू सों देव मेरी लीजे जानि
प्राणलागे कथा नहीं तक्षक की त्राम है ।
कीजिये परीक्षा उर आनि मति मानी अहो
वाणी विरमानी तहाँ जीवन निराम है ॥ ६७ ॥

(श्री शुकदेवजी की कथा)

गर्भ ते निकमि चले वन ही में कियो वाम
व्याम से पिता को नहिं उत्तरह दियो है ।
दशमश्लोक मुनि गुनि मति हरि गई
लई नई रीति पढि भागवत लियो है ॥
रूप गुण भार मन सद्यो जात कैसे ताहि
आये नृप मभा दरि भीज्यो प्रेम हियो है ।
पूछे राजा ऋषिन उपाय भोरेपरे मग
आप उठे गाय, मानो रंग भर कियो है ॥ ६८ ॥

(श्री प्रह्लादजी की कथा)

मुमिरण माँचो कियो लियो देखि सब ही में
एक भगवान कैसे काटे तलवार है ।

१ भगवान की । २ आदत । ३ भय । ४ रुकी कि । ५ मधाम ।
६ श्रीपद्मभागवत दशम स्कंध का श्लोक "अहो भकीय स्तन-
काजकृत जिघांसया पाय यदप्यसाध्वी । लब्धेभति धातुचिन्ता
ततोऽन्यं कं वा दयालुं शरलं प्रजेप ॥" ७ रंग की भट्टी लगा दी ।
८ अब क्या करना है? यही विचारते हैं ।

काटिबो खडग जल बांरिबो है शक्ति जाकी
ताहि को निहारैं वहुँ शोर सों अपार है ॥
पूछे ते बतायो स्वप्न, तँह ही दिखायो रूप
प्रगट अनूप, भक्त वाणी ही सों प्यार है ।
दुष्ट डारयो मारि गरे आँतैं लई डारि तरु
कोध कोल पार, कौनै कल यों निचार है ॥६६॥
उरें शिव राज स्मृति देख्यो नहिं कांध पेजो
शावत न दिग काऊ लक्ष्मी हू को त्रास है ।
तब तो पठायो प्रह्लाद अहलाद भरयो
महाभक्ति भाव पग्यो आयो प्रभु पास है ॥
गोदमें उठाव लियो शीश पर हाव दियो
दियो हुल सायो वाणी कही विनो राम है ।
आई दया पग परि श्री नृसिंह जू मोँ अरयो
जगहिं छुडावो कस्यो नाया ज्ञान नाश है ॥१००॥

(श्री सुफलक पुत्र अक्रूर जी की कथा)

चले अकूर मधु पुरीतैं विमुरि नैन
चली जल धारा कब देख्यो शवि पर को ।
शकुन मनायो एक देख्यो ही भाँलें हेर-
मुधि विमल्यो नमि लोट पग फर को ॥

१ प्रह्लाद जी की वाणी को विनय समूह वाली बनाता और
उन्होंने समझी स्तुति की २ बिल खाकर । ३ चरण चिन्हों को ।

वन्दन प्रवीण चाह निपट नवीन भई
दई शुकदेव कहि जीवनकी मूर को ।
मिले राम कृष्ण मिले मनोरथ पाय निज
हिले दग रूप भयो दियो चर चर को ॥१०१॥

(दैत्य राज श्री बलिजी की कथा)

दियो मन्त्रम करि अति अनुग्रह बलि
पागि गयो लियो प्रह्लाद मुधि आई है ।
गुरु भगवानों कहि नीति गाम्भारों बोल
उरमें न आयौ, किनी भीति उपजाई है ॥
कस्यो मोती कियो मँने भाव प्रण लियो अहो
नियो डर हन्नि ने मति न चलाई है ।
रीति प्रभु रहे डार भये बश हार मानि
श्री शुक वस्योनी प्रति रीति मोई गाई है ॥१०२॥

(श्रीप्रह्लाद का यज्ञगान करनेवाले प्राध्यापिक भक्त भण)

मूल छ०—शंकर शुक मनकादि कपिल
नारद भगवाना । विष्वक्सेन प्रह्लाद
बली भीषम जग जाना ॥ अजुन
ध्रुव अँवरीष विभीषण सहिषा भारी ।
अनुरागी अक्रूर सदा उद्धव अधिकारी ॥

१ प्रसन्न हुए । २ हृदय के दुकड़े दुकड़े हो गये ।

भगवन्त भुक्त अवशिष्ट की कीर्ति
कहन सुजान । हरि प्रसाद रसस्वाद
के भक्त इते परमान ॥१५॥

(श्रीभगवद्भक्त ऋषिगणों से शरण याचना)

मूल छ०—पुलह पुलस्त्य अगस्त्य च्यवन
सौभरि वसिष्ठ ऋषि । कर्दम अत्रि
ऋचीक गर्ग गौतम मुन्यास शिपि ॥
लोमश भृगु दासभ्य अंगिरा श्रुंगि
प्रकाशी । मांडव विश्वामित्र द्रुवासा
सहस्र अठासी ॥ जाबाली यमदग्नि
पराशर बोधायन पदरज धरो । ध्यान
चतुर्भुजचित धरयो तिन्है शरण हों
अनुसरों ॥१६॥

(महर्षिवर्य श्री बोधायनजी की कथा)

भगवान् बोधायन श्रीपुरुषोत्तमानन्दजी का अवतारकाल
विक्रम संवत् से लगभग ५०० वर्ष पूर्व, नन्द काल है ।
आपके पूज्य पिताजी का नाम श्री ऋक्ष दत्तजी एवं माताजी का
नाम श्री चामुकी देवीजी था । आपकी जन्मस्थली एवं तपस्थली
होने का संभाव्य भी 'धूमि निलक सम तिरहुन सब जग जानिय,
वाली श्रीमिथिला वहीको ही प्राप्त हुआ था । जगज्जननी श्रीजानकीजी

की प्राकट्यस्थली (हस्तस्थली) वर्तमान श्रीमीना मही में एक योजन पूर्व
जिसको अब पन ग्राम कहा जाता है, श्रीवापसी से आगेवाले बाजपट्टी
नामक स्टेशन से प्रायः १ मील दक्षिण श्रीबोधायनाश्रम का संगेवर
बोधायन सर नाम से अद्यावधि प्रसिद्ध है, जहाँ श्रीबोधायन जयन्ती
(पौषकृष्ण १२ को दुरदुर में धर्मप्राण नागविक्रम जन एवं आसपास
के श्रावण पक्षविक्रम होकर स्नानदान दर्शन परिक्रमा करके अपने
आपको धन्य धन्य मानते हैं, इसी वन्य प्रदेश में आपके पिता
श्रीवाय-शिरोमणि पंडित-प्रवर श्रीमान् शकटदत्तजी निवास करते
थे एवं धीरे तपस्या करके श्री ब्रह्माजी से पुत्र बनकर अवतार
लेने का वरदान प्राप्त किया था, अतः भगवान् वाचायय श्री ब्रह्माजी
के अवतार थे ।

भगवान् बोधायन के एक बड़े भ्राता थे जिनका नाम पंडित
प्रवर श्री वर्षजी था । वर्ष पंडित अपने समय के अद्वितीय वन्य करण
थे । व्याकरण अष्टाध्यायी के रचयिता श्री पाणिनी मुनि एवं वातिक
के ग्रंथकार श्रीवररुचि इन्हीं महर्षि श्री वर्षजी के शिष्य थे ।

भगवान् बोधायन का जन्म नम था श्री पुण्डरीक जी । अष्टविंश
वर्षजी के आप अनुभूत थे, इसी लोम आपका ३९ वर्ष नाम से ही
संवाधन किया करते थे । आगे चलकर आपके अलौकिक पांडित्य ने
मुख्य होकर विद्वानों के समूह ने आपका बोधायन (बुद्धि के खजान) की
पदवी प्रदान की, तब से आप बोधायन नाम से प्रसिद्ध हो गये । आपकी
अपरिमित ज्ञान के प्रभाव से तन्हालीन पाटली पुत्र (वर्तमान पटना)
के महाराजा श्री नन्द और उसी मया के मयापट्टों ने आपकी अया-
चित श्री पदवी प्रदान की, अतः आपका एक नाम अयाचित भ।
लिखा जाने लगा । शिष्यों के द्वारा 'लो'ट' 'म'ए' मुद्राओं के उपहार को
अस्वीकार करके लौटा देने एवं 'लो'ट' संस्कृत श्लोक परिचित ग्रन्थ
रचना करने से आपका कृतश्रेष्ठ कहा जाने लगा । तुरीया-

वस्था में भगवान श्री शुकदेव जी के द्वारा श्री वैष्णवी दीक्षा एवं तुरीयाश्रम की प्राप्ति पर आपका नाम श्री परमोत्तमाचार्य जी हुआ। आपने युवानस्था में अनेकानेक धर्म सुत्रों स्मृति शास्त्रों एवं देव मीमांसा तथा धर्म मीमांसा के ऊपर वृत्ति ग्रंथों का निर्माण किया, एवं तुरीयावस्था में भगवान वेद व्यास प्रणीत ब्रह्ममीमांसा पर विस्तृत वृत्ति ग्रन्थका समाप्ति किया अतः प्रतिकार भी आपका एक नाम ही हो गया। आपके उल्लेख सभी नाम प्राचीन ग्रन्थों में उल्लिखित हैं। परन्तु विद्वत् विद्वत् समाज (आश्विन, शंकर रामानुज आदि भाष्यकारों में भगवान बोधायन, उपनिषद् और प्रतिकार नामोंका सम्बन्धी अधिक हैं।

आपकी कथा को पूरे विश्वान से लिखने पर तो एक विशाल-काय स्वतन्त्र ग्रन्थ होगा, अरुके लिये यहाँ अवकाश नहीं, अतः अब मैं यहाँ ब्रताकर इस कथा को समाप्त करता हूँ कि आपके विषय में अधिक जानने की इच्छा रखने वाले पाठकों को कौन कौन प्राचीन एवं अर्वाचीन ग्रन्थ देखने चाहिये। १. श्री सोमदत्त विरचित कथा-सरितसागर एवं २. श्रीचेमन्द्र विरचित ब्रह्मसंस्कृत आदि ग्रंथों में चरित्र, एवं भाष्यकार श्रीशबर स्वामी, श्रीशंकर स्वामी श्रीरामानुज स्वामी एवं श्रीरामानन्द स्वामी आदि के ग्रन्थों में, श्रीरामानन्द संप्रदाय के अनेकानेक ग्रन्थों में एवं श्रीरामानुज संप्रदाय के श्रीभाष्य, पाराशर्य विनय आदि अनेक ग्रंथों में आपके विद्वान् प्राप्त होंगे। इनके अतिरिक्त दार्शनिक आश्रम जानकीषाठ श्रीअर्य व्यास निवामी, वर्तमान वागवत्सेय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रेधान्त्याख्याता आचार्यपाद दार्शनिक मार्बोम स्वामि श्रीचन्द्रदेवाचार्यजी महाराज, श्री कृष्णामे उनके पूर्व लेखाको संकलित करके ललितियामराय (हरमना विहार के सुप्रसिद्ध वकील महाभाषावत बाबू श्रीपद्मलाल जी। श्रीमयारामजी के द्वारा श्री बोधायनाख्यान नामक एक संक्षिप्त ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है जिसमें

सूत्र रूप से प्रायः सभी विषय संग्रहीत हो गये हैं। यह सब द्रष्टव्य हैं। श्रीबोधायनाख्यान ग्रंथ (स्वयं मौनित अथवा डाकजपय के लिए टिकट भेजने पर) प्रकाशक से बिना मूल्य प्राप्त हो सकता है।

अन्त में आपके प्रशिष्य स्वामी श्री सदानाथजी विरचित श्री बोधायन पञ्चक एवं वैष्णव भाष्यकार पंडित-सम्राट स्वामी श्री वैष्णवाचार्यजी रचित श्री बोधायन पञ्चलाहक देकर इस लेख को समाप्त किया जाता है।

❀ श्रीबोधायन पञ्चक ❀

साताराधवपादपरानिरतः

पञ्चासनेनास्थितः

तत्त्वज्ञाननिबिद्धिदण्डनिर्गतः

विज्ञान मुद्राधरः।

गौरी

ध्वजपरायणोऽर्द्धविक्रमनीलान्जलुर्वेक्षणः

श्रीबोधायनवृत्तिकृद् विजयता बोधायनः शाश्वतम् ॥१॥

योगन्यक्तकपायधुदहृदयः

कापायवर्णाम्बरो-

न्यग्रोधस्य नले वणिष्ठनयामूले कुङ्कुमवर्चः।

आसीनः मुनिर्ध्वजपुण्ड्रलसितो यज्ञोपवीतो शयी

श्रीबोधायनवृत्तिकृद् विजयता बोधायनः शाश्वतम् ॥२॥

पार्श्वे यानि शुभं कर्मफलं तथा दुर्शान्विता भूमिका

मीमांसार्थविश्रामिनी सुमहती वृत्तिः पुण्यस्य सः।

सद्भाष्यजर्मस्तथाच तन्मभिः पुणैः समासेवितः

श्रीबोधायनवृत्तिकृद् विजयता बोधायनः शाश्वतम् ॥३॥

गमो ब्रह्मपरः करं धृतमनं भक्तैश्च निःश्रेयसम्,

शेषायेन च शेषिणो मधुरमेतन्निवा इति स्वाकृतम्।

अनं सुखित्युतं मनं खलु विशिष्टातिर्क यस्य सः

श्रीबोधायनवृत्तिकृद् विजयता बोधायनः शाश्वतम् ॥४॥

मन्त्रं रामपदहरं शुक्रमुनेर्वैयामिकैर्योऽब्रवीद्
 ग्रीवायां तुलसीसर्जं च परितोभास्त्वत्पभामदलम् ।
 आचार्यः पुरुषोत्तमः मदपरं यस्याधिधानं परं
 श्रीबोधायनमुनिमुद्र विजयतां बोधायनः शार्दूलम् ॥ ५ ॥
 बोधायन प्रणिप्य श्रीमदानन्दार्यं निमित्तम् ।
 पठताम्पञ्चकञ्चैतद्भवाच्छ्रेयो विधायकम् ॥

❀ श्रीबोधायन मङ्गलाष्टकम् ❀

ब्रह्मणो रामचन्द्रस्योपासकाय महर्षये ।
 ब्रह्मणश्चावताराय बोधायनाय मङ्गलम् ॥ १ ॥
 चारुमतीतनूजाय विपशंकरमुनिवे ।
 श्री वैष्णवावर्तमाय बोधायनाय मङ्गलम् ॥ २ ॥
 यतीना धर्मवक्त्रेय यतीनां वेप धारिणे ।
 यतीनां सार्वभौमाय बोधायनाय मङ्गलम् ॥ ३ ॥
 ब्रह्मविद्यानिधानाय ब्रह्मविद्योपदेशिने ।
 व्याख्यात्रे ब्रह्मसूत्राणां बोधायनाय मङ्गलम् ॥ ४ ॥
 विशिष्टाद्वैतमिद्धान्तालिने कीर्तिमालिने ।
 जितवादिममुद्राय बोधायनाय मङ्गलम् ॥ ५ ॥
 बोधायन महावृत्ति विधात्रे ब्रह्मवादिने ।
 शुक्राचार्यस्य शिष्याय बोधायनाय मङ्गलम् ॥ ६ ॥
 व्याससिद्धान्तवक्त्रे च व्यासमिद्धान्त वेदने ।
 व्यासस्य छात्रव्याय बोधायनाय मङ्गलम् ॥ ७ ॥
 पुरुषोत्तमव्याय पुत्पुत्तममुद्रवे ।
 श्रीपुरुषोत्तमव्याय बोधायनाय मङ्गलम् ॥ ८ ॥
 वैष्णव भाष्यकार श्रीवैष्णवाचार्य निमित्तम् ।
 मङ्गलां भवनादनन्द भवमङ्गलकारकम् ॥ ९ ॥

❀ -

(अष्टादश पुराणस्मरण)

मूल छ०-ब्रह्म विष्णु शिव लिंग पद्म
 असकंद विस्तारा । वामन मीन वराह
 अग्नि अरु कूर्म उदाग ॥ गरुड नारदी
 भविष्य ब्रह्मवैवर्ते श्रवण शुचि । मार्कंडे
 ब्रह्मांड कथा नाना उपजै रुचि ॥ परम
 धर्म श्रीमुख कथित, चतुर्गुणलोकी निगम
 सत । साधन स्वरूप सतरह पुराण, फल
 रूपी श्रीभागवत ॥ १७ ॥

(अष्टादश स्मृतिकार वन्दना)

मूल छ०-स्मृती मनू आत्रेय वैष्णवी
 हारित यामी । याज्ञवल्क्य अंगिरा शने-
 श्वर सँवृतकनामी ॥ कात्यायनि सांख्य
 गौतमी वशिष्टि दापी । मुरगुरू शानातपी
 पराशर क्रतुमुनि भापी ॥ आशा पाश
 उधार धी, परलोक लोक साधन उभो ।
 दश आठ स्मृति जिन उच्चरी, तिन पद
 सगसिज भाल मो ॥ १८ ॥

१. वशिष्टी । २. आशाकी फांसी से बुद्धिका उद्धार करनेवाली ।

(श्रीराम सचिव वन्दना)

मूल छ०—धृष्टी विजय जयन्त नीतिपर
सुचिर विनीता । राष्ट्रवधेनहिं निपुण
सुगष्ट सु परम पुनीता । आनन्द सदा
अशोक धर्म पालक ततवेता । मंत्रीवयं
सुमंत्र चतुर्गुण मंत्री जेता ॥ अनायास
रघुपति कृपा, भवसागर दुस्तर तरें । लहें
भक्ति अन पापिनी, जे राम सचिव सुभि-
रणा करें ॥१९॥

(श्रीराम सहचर वृन्दसे कृपाकटाक्ष याचना ,

मूल छ०—दिनकर सुत हरिराज 'बालिवछ'
केशरि औरस । दधिमुख द्विविद मयन्द
'ऋक्षपति सम को पौरुष ॥ उल्का सुभट
सुपेण दरीमुख कुमुद नील नल । शरभ
सु गवय गवाक्ष पनस गंधमादन अति-
बल ॥ पद्म अठारह यूथपति, राम काज
भट भीर के । शुभ दृष्टि वृष्टि मोपै करो,
ये सहचर रघुवीर के ॥२०॥

१ बालिपुत्र-अंगद । २ केशरी सुवन-श्रीहनुमानजी । ३ श्रीजाम्बवानजी ।

(अष्ट भ्राताओं सहित श्रीनन्दरायजीका दर्शन)

मूल छ०—धरानन्द ध्रुवनन्द तृतीय उपनन्द
सुनागर । चौथे तह अभिनन्द नन्द मुख-
मिथु उजागर ॥ मूढि सुनन्द पशुपाल
विमल निश्चय अभिनन्दन । कर्मा धर्मा-
नन्द अनुज वल्लभा जगवन्दन ॥ आस-
पास वा बगर के, विहात पशुप स्वच्छन्द ।
ब्रजबडे गोप पर्जय के सुत नीके नव
नन्द ॥२१॥

(श्रीराधा कृष्ण परिकर चरण रज याचना)

मूल छ०—नन्द गोप उपनन्द धरानन्द
महरि यशोदा । कीरतिदा वृषभानु कुँवरि
सहचरि मनमोदा ॥ मंगल सुबल सुबाहु
भोज अर्जुन श्रोदामा । मण्डल ग्वाल
अनेक श्याम मंगी बहु नामा ॥ 'घोष
निवासिन की कृपा, बाँछत सुर नर
आदि अज । बाल वृद्ध नर नारि जे,
हो अर्थी तिन पाद रज ॥२२॥

१, ग्वालों की वस्ती । २, जम्माजी ।

(श्रीकृष्ण अनुचर वर्णन)

मूल छ०—रक्तक पत्रक और पत्रि सबही
मन भावै । मधुकण्ठी मधुवर्त रसाल
विशाल सुहावै ॥ प्रेमकन्द मकरन्द सदा
आनन्द चन्द्रहासा । पयद बकुल रम-
दान शारदा बुद्धि प्रकाशा ॥ सेवा समय
विचारिके, चारु चरित चितकी चहै ।
ब्रजराज सुवन संग सदन बन अनुग
सदा तत्पर रहै ॥२३॥

(समद्वीप के भक्तों की वन्दना)

मूल छ०—जम्बू और पलक्ष शाल मलि
बहुत राज ऋषि । रक्षा पवित्र पुनि कौंच
कौन महिमा सो सके लिपि । शक्र विपुल
विस्तार प्रसिध नामी अति पुष्कर । पर्वत
लोकालोक ओक टापूकश्चन धर ॥ हरि
भृत्य वसत जे जे तहां, तिनसों नित
प्रति काज । समद्वीपमें दास जे, ते मेरे शिर
ताज ॥२४॥

१. सेवक । १. जोड़ ।

टीका १००] नी खंड और श्वेत द्वीप के भक्तों की वन्दनायें

(नी खंड के भक्तों की वन्दना)

मूल छ०—इलावर्त अधिपति संकर्षण
अनुग सदाशिव । रमणक मछ मनुदाम,
हिमराय कर्म अर्यम इव ॥ कुरु वराह भू
भृत्य वप नरहरि प्रह्लादा । किं पुरुष
राम कपि, भरत नागयण वीणानादा ॥
भद्राश्व ग्रीवहय भद्रश्रव, केतु काम कमला
अनूप । मध्य द्वीप नव खंड में, भक्त
जित मय भूप ॥२५॥

(श्वेत द्वीप के भक्तों की कथा)

मूल छ०—श्रोनागयण वदन निरन्तर
ताही जेसैं । पलक पर जो बीच कौटि 'यम
यातन लेसैं ॥ तिनके दर्शन काज गये
तहें वीणाधारी । श्याम दई करि मैन
'उलटु यह नहि अधिकारी ॥ नागयण
आख्यान हट्ट, तहें प्रसंग नाहिन तथा ।
श्वेत द्वीपमें दास जे, श्रवण सुनो तिनकी
कथा ॥२६॥

१ नरक की पीड़ा । २ समझते हैं । ३ नारदजी । ४ लौट जाओ ।
५ वैया=उपदेशादि का ।

टीका क०—श्वेत द्वीप वामी सदा रूपके उपासी, गये
नारद 'विलासी उपदेश आशा लागी है ।
दई प्रभु सैन जनि आओ इहि ऐन, दृग
देखे सदा चैन, मति अति अनुरागी है ॥

फिरे दुःख पाय जाय कही, श्री वैकुण्ठ नाथ-
माथ लिये चले, लखो भक्ति अंग पागी है ।

देख्यो एक सर 'स्वग रह्यो ध्यान धर, ऋषि
पृथ्वी कह्यो हरि, कही बडो बड भागी हैं ॥१०३॥

वरम हजार बीते भये नहीं 'चित्त चीते,
प्यामो, जल रहै तोपै पानी नहीं पीजिये ।

पावे जो प्रसाद तब जीम मों मवाद लेत
खावै नहीं और याकी मनि रम भीजिये ॥

लीजे वात मानि, जलपान करि डारि दियो
लियो चोंच भरि, दृग भरि बुद्धि 'धीजिये ।

अचरज देखि 'चख लगै न 'निमेष 'क्यों हूँ
'चहूँ दिशि फिरे, कहै सेवा याकी कीजिये ॥१०४॥

चलो आगे देखो, कोऊ रहै ना परेम्बो, भाव
भक्ति करि लेखो, गये द्वीप हरि गाइये ।

१ दृश्यप्रिय । २ पक्षी । ३ मनचाहा । ४ विश्वास करके ।

५ नेत्र । ६ पलक । ७ किसी प्रकार से भी । ८ परिक्रमा की ।

९ कहने लगे कि इसकी सेवा करें ।

टीका १०३-१०५] विष्णुव चतुः सम्प्रदाय प्रधानाचार्यावतार वर्णन ६७

आयो एक जन धाय आरती 'समो विद्याय
सैचि लिये प्राण केर वधू वाकी आइये ॥

वही इन कही, पति देखै नहीं मही परयो ?

हरयो याको जीव तन गिरयो मन भाइये ।

ऐसै पुत्र आदि आये साँवे 'हित मै दिखाये

फेरिके जिवाये ऋषि गाये चित लाइये ॥१०५॥

(श्री धामके द्वारपाल अष्टकुली नामोंका वर्णन)

मूल० छ०—इलावर्त अरु शेष राम कीरति
विस्तारत । पद्म शंकु प्रण प्रकट ध्यान
उरते नहिं टारत ॥ अंशु कम्बल वासुकी
अजित आज्ञा अनुवरती । करकोटक
तक्षक सुभद्र सेवा शिर धरती ॥ आग-
मोक्त शिव संहिता, अग्र एक रस भजन
रति । उरग अष्टकुल द्वारपति, सावधान
हरि धाम धिति ॥२७॥

(विष्णुव चतुः सम्प्रदाय प्रधानाचार्यावतार वर्णन)

मूल छ०—रामानन्द उदार सुधानिधि
अवनि कल्पतरु । विष्णुस्वामि बांहित्थ
मिन्धु संसार पार करु । माधवाचारज

१ समय । २ वेदमन्त्र ।

मेव भक्तिसर ऊसर भरिया । निम्बादित
आदित्य कुहर अज्ञान जु हरिया ॥ जग
जनमि भागवत धर्मकर, सम्प्रदाय थापे
अघट । चौबीस प्रथम हरि वपु धरे, त्यों
चतुर्व्यूह कलियुग प्रकट ॥२८॥

दोहा-रामानंद श्रीपद्धती, विष्णु स्वामि
त्रिपुरारि । निम्बादित सनकादिका, मधु-
कर गुरु मुख चारि ॥२९॥

(आचार्यपाद स्वामी श्रीनिम्बार्काचार्यजीकी कथा)

निम्बादित्य नाम जाते भयो अभिराम, कथा
आयो एक दगड़ी ग्राम, न्योतो करि आये हैं ।
पाक में अँवार भई, मन्थ्या मानिलई यति
रती है न पाऊँ, वेद वचन सुनाये हैं ॥

आँगन में नीम तापे आदित्य दिखायो वाहि
भाजन करायो पाछे निशि चिन्ह पाये हैं ।
प्रकट प्रभाव देखि जान्यो भक्ति भाव जग
दाव पाय नाम परयो हरयो मन गाये हैं ॥१०६॥

भगवान श्री निम्बार्काचार्य जी की श्री प्रियादासनी ने यह एक
कथा लिख दी है, अन्य तीन आचार्य चरणों के विषय में तो कुछ
भी नहीं लिखा ।

श्री निम्बार्क संप्रदायमें आपके चरित्र के ऊपर प्रकाश डालने वाले

अनेक ग्रंथ हैं, जिनमें आपके शिष्य श्री आदुम्बराचार्य जी प्रणीत श्री
निम्बार्क विक्रान्ति आदि मुख्य हैं । उक्त ग्रंथों के आधार पर आपके
श्रोपिताजीका नाम श्री अक्षय ऋषि और माताजीका नाम श्रीजयन्ती
देवीजी था । आपका अवतार द्वापर युगके अन्तिम चरणमें कालिक
शुक्ल १५को दक्षिण भारतमें ब्राह्मण कुलमें हुआ था । आप श्रीगुरुदर्शन
चक्रके अवतार माने जाते हैं । आपकी गुरु परम्परा इस प्रकार है ।

१ श्रीहंसावतार भगवान । २ श्रीसनकादिक भगवान । ३ देवर्षि
श्रीनारद भगवान । ४ आचार्य पाद श्रीनिम्बार्क भगवान ।

आपके सवधान शिष्योंमें । १ श्री श्रीनिवासाचार्यजी ।
२ श्री आदुम्बराचार्यजी । एवं ३ श्रीगौरमुखाचार्यजी मुख्य हैं ।

आपके द्वारा रचित ग्रंथों में । १ वेदान्त पारिजात सौरभ ।
२ संत रहस्य पौडर्पा । ३ प्रपन्न कल्पवल्ली । ४ वेदान्त दशश्लोकी ।
५ प्रपत्ति चिन्तामणि । ६ सदाचार प्रकाश । ७ श्रीपद्मराजद्वीपा
वाक्यार्थ एवं अनेक स्तोत्र प्रमुख हैं ।

आपके विषय में विशेष ज्ञानमेंकी इच्छावाला कौन नाम्प्रदायिक
ग्रंथोंका अवलोकन करना चाहिये ।

(आचार्य पाद भगवान श्रीविष्णु स्वामीजीकी कथा)

श्रीरूप कलाजीने अपनी भक्तमाल टीकामें जो लिखा है उसके
सिवा आचार्य पाद श्रीविष्णुस्वामीजी एवं श्रीमाध्वाचार्यजी के चरित्र
इन पंक्तियों के लेखक को कुछ भी प्राप्त नहीं हो सके । अतः यहाँ पर
पूज्य पाद श्रीरूपकलाजी के आधार पर ही संक्षिप्त परिचय लिखे जा
रहे हैं । आचार्य पाद भगवान श्रीविष्णु स्वामीजी का अवतार दक्षिण
देशमें ब्राह्मण कुलमें हुआ था, आप श्रीशिव संप्रदायके आचार्य
हैं । आपके पूयाचार्य श्रीप्रेमानन्दजी या श्रीपरमानन्दजी की कांची
पुरीमें श्रीवदराज भगवानकी आज्ञा से भगवान श्रीशंकरजीने शिष्य
किया था । अतः आपका संप्रदाय श्रीशिव संप्रदाय भी कहलाता है ।

आगे चलकर आचार्यपाद भगवान श्रीवल्लभाचार्य स्वामी आपसी की संप्रदायमें हुए हैं ।

(आचार्यपाद स्वामी श्रीमाध्वाचार्यजीकी कथा)

स्वामी श्रीमाध्वाचार्यजी श्रीब्रह्म संप्रदायके आचार्य हैं, आप भी दक्षिण देशमें कांचीपुरीमें नैऋत्यकोणमें उरपीकुण्ड नामक ग्राममें ब्राह्मण कुलमें उत्पन्न हुए थे । आपने पंजाब देशमें पधार वहाँके राजाके अभिमान को नष्टकर दलचल सहित उसको वैष्णव बनाया था । आपकी श्रीगुरुपरम्परा इस प्रकार कही जाती है ।

१ श्रीहंस भगवान् । २ श्रीव्यासजी । ३ श्रीनारदजी । ४ श्री वेदव्यासजी । ५ श्रीमुमुक्षाचार्यजी । ६ श्रीनरहर्याचार्यजी । ७ श्री माध्वाचार्य स्वामीजी ।

आचार्यपाद अनन्त श्रीस्वामी रामानन्दाचार्यजीकी कथा आगे मूल संख्या ३५ में देखिये ।

(श्री सिंधुजा संप्रदायके आचार्य गणका वर्णन)

मूल छ०—विष्वक्मेन मुनिवर्य सु पुनि
शठ कोप प्रणीता । वोपदेव भागवत लुप्त
उधरचो नव नीता ॥ मंगल मुनि श्रीनाथ
पुराडरीकाक्ष परम यश । गममिश्र रस
राशि प्रकट परताप परांकुश ॥ यामुन
मुनि रामानुज, तिमीर हरण ज्यों भानु ।
संप्रदाय शिरोमणी सिंधुजा, रच्यों सु
भक्ति वितान ॥३०॥

(श्री लक्ष्मी संप्रदायके पूर्वाचार्योंकी संक्षिप्त कथाएँ)

श्रीरामानुज संप्रदायके इन पूर्वाचार्योंके विषयमें श्रीप्रियादासजीने कुछ नहीं लिखा अतः इनकी कथाएँ श्रीपद्मनाभनादि ग्रंथोंके आधार पर अत्यन्त संक्षेपमें दी जा रही हैं ।

श्रीविष्वक्मेन जी भगवान् श्रीमन्नारायणके नित्य पारपद (सेना-पति हैं) इन्हींके अवतार श्रीशठकोप स्वामी हुए जो इन्हीं के शिष्य भी हुए । श्रीशठकोप स्वामीजीका अवतार कलियुगके ४३ दित वीतने पर दक्षिण देशमें पूर्वी समुद्रके पश्चिम तट पर ताम्रपर्णी नदीके किनारे कुरिकापुरी नामक नगरीमें वैशाख शुक्ल १४ शुक्रवार को शूद्रवर्णके भक्त वर पिता श्रीकारिजी व याता श्रीनाथ नायकीजीसे हुआ था । आपने नगरी से बाहर एक तितृणीके वृक्ष कीटमें निवास कर भगवान् श्रीमन्नारायणका आराधन किया एवं सहस्रभीति आदि अनेकानेक द्रविण यथोक्त निर्माण किया जो द्रविडागम या द्रविड वेद संज्ञासे प्रसिद्ध हैं । जिनके पठन पाठन से आगे चलकर द्विजवर्य आचार्यपाद श्रीयामुनाचार्य श्रीरामानुजाचार्य प्रभृति संस्कृत भाषा और वेद वेदान्तके महान् आचार्योंने भी अपने आपको कृत कृत्य माना है ।

छापमें श्रीमद्भागवत के उल्लेख श्रीवोपदेवजी का नाम भी है, जिनका श्रीरामानुज संप्रदायकी गुरुपरम्परामें कोई उल्लेख नहीं मिलता, एवं मंगल मुनि पदकी यदि श्रीनाथमुनि का विशेषण मान लिया जाय तो ठीक है अन्यथा प्रथक नाम माननेसे उनका भी वहाँ कोई उल्लेख नहीं है ।

श्रीनाथ मुनिका अवतार चोल और तु'डीर के मध्यके प्रदेश में कलियुग के ३०४० वर्ष व्यतीत होनेपर जेष्ठ शु. १५ को ब्राह्मण कुल में हुआ । आपने ३२४० वर्ष पूर्व अवतारत होने वाले श्रीशठ कोप स्वामीजी से श्रावैष्णवी दीक्षा प्राप्त कर उनके दिव्य द्रविड प्रबन्ध-ग्रंथों का प्रचार किया ।

स्वामी श्री पुंडरीकाक्षजी श्रीरंगम् क्षेत्रमें वायव्य कोणमें तीन कोस पर श्वेत गिरि श्रीपद्माक्ष भगवान की नगरी में चैत्र पूर्णिमा को प्रकट हुए थे ।

स्वामी श्रीराममिश्रजीका जन्म सांगन्धकुल नगर में माघ शुक्ल १४ को ब्राह्मण कुल में हुआ था ।

आचार्य वर्य श्रीधामुनाचार्यजी श्रीनाथमुनीजा के पात्र थे आपके पिताजीका नाम श्रीईश्वरमुनिजी और माताजी का नाम श्रीरंगनायकी देवीजी था । आप भगवानके सिंहासन के अवतार कहे गये हैं । कर्मभारका पूर्णिमा को आप प्रकट हुए थे । आप भगवान श्रीरामानुजाचार्यजी के दादा गुरु थे आपके ५ शिष्यों से श्रीरामानुज स्वामीने शिक्षा दीक्षा प्राप्तकी थी । इनके नाम भक्तमालमें नहीं आये हैं ।

(आचार्यपाद भगवान श्रीरामानुजाचार्यजी की कथा)

मूल छ०—गोपुर हैं आरूढ़ उच्चस्वर मंत्र
उचार्यो । सूते नर परे जाग चोहत्तर
श्रवणन धार्यो ॥ तितनीही गुरुदेव
पधति भइ न्यारी न्यारी । कुरु तारक
शिप प्रथम भक्तिवपु मंगलकारी ॥ कृपण
पाल करुणा समुद्र, रामानुज सम नहि
वियो । सहस्र आस्य उपदेश करि, जगत
उधारण यतन कियो ॥३१॥

१. पद्धति=परिपाटी । २. शिष्य ।

आस्य सो वदन नाम, सहस्र हजार मुख
शेष अवतार जानो, वही सुधि आई है ।
गुरु उपदेश मंत्र कह्यो नीके राखो अन्तः
जपत ही श्यामजू ने मूर्ति दिखाई है ॥
करुणानिधान मोची सब भगवान पाये
चढ़ि दरवाजे सो पुकारयो ध्वनि छाई है ।
मुनिलियो शिष्यन सो चोहत्तर सिद्ध भये
नये भक्ति चोज यह रीति लेके गाई है ॥१०७॥
गये नीलाचल जगन्नाथजा के देखने को
देख्यो अनाचार सब पंडा दूर किय है ।
मंग लै हजारों शिष्य रंगभरि सेवाकरें
धरें हिय भाव गूढ़ दरमाय दिये हैं ॥
बोले प्रभु वेई आर्षे करे अंगीकार में तो
प्यार ही को लेत कभू औगुण न लिये हैं ।
तोऊ हटु गहीं प्रभु कही नहीं कान कीन्ती
लोन्ही वेद-वाणी-विधि कैसे जात छिये हैं ॥१०८॥
जोरावर भक्तमो वसान नहीं कही किन्ती
रत्नी हू न लावैं मन चोज दरमायो है ।
गरुड को आज्ञा दई मोई शीश धरी उन
शिष्यन समेत निजदेश छोडि आयो हैं ॥

१. स्वप्नमें श्रीजगन्नाथ देख पडे हैं । २. जब रहस्य ।
३. कौतुक दिखाया ।

जागे तो निहारि और और ही मगन भये
दियो यों प्रकट करि गूढ भाव पायो है ।
वेडें सब सेवा करें श्याम मन हरे सदा
साँचो प्रेम दिये माहि प्रभु जू दिसायो है ॥१०६॥

भक्तमाल और श्रीमयादासजी की टीका में आपकी उपरोक्त दो तीन लीलायें वर्णित हैं, इनके अलावा आपकी सम्प्रदाय के श्रीगणेश-मृतादि ग्रंथों में जो आपका विशाल जीवन चरित्र वर्णित है, उसके आधार पर कुछ मुख्य घटनाओंका उल्लेख किया जाता है ।

पद्मनाभ मठ में आपके जन्म संवत्का उल्लेख नहीं मिलता है अतः वह अन्य ग्रंथों से लिखा गया है ।

पद्मनाभ मठ की आदि अध्याय में वर्णित है कि एकवार श्रीवैकुण्ठ धाम में भगवान के सुखाविन्दको चिन्ताकुल देख श्री शेषजीने कारण पूछा तो भगवान ने कहा "इन जगतमें पड़े जीवोंको हमारी सेवा प्राप्त हो, इसके लिये पहले हमने स्वयं अनेक अवतार लिये परन्तु इनने हमको परमेश्वर न जानकर केवल राजकुमार गोपकुमार आदि ही समझा । फिर चक्रादि धारणों को भेजा परन्तु हमसे भी पूर्ण सफलता न मिली, इसीसे खिन्नता है । अब आप जाकर इन मेरे जीवोंको उपदेश द्वारा सचेतकर मेरे पास पहुँचाओ ।" इस आज्ञाकी शिरोधार्य करके ही कर्णेश श्रीशेषजी श्रीगमानुज नाम रूपसे प्रकट हुए ।

आचार्य पाद भगवान श्रीगमानुजाचार्यजी का जन्म दक्षिण भारतके तोंडीर मण्डल में पूर्व समुद्र से ३ योजन (२४ मील) पश्चिम भूतपुरी नामक नगरी में दार्शन गोत्रीय द्विजवर श्रीकेशच यज्वाजी की धर्मपत्नी श्रीशान्तिमती देवीजी के गर्भ से मेष की संक्रान्ती में चैत्र शुक्ल ५ गुरुवारको रूद्र उवत नक्षत्रमें मध्याह्न समय कर्कट लग्न में हुआ । विष्णु चिन्ह ग्रन्थ के अनुसार कलि संवत् ४११८ अतः विक्रम सं० १०७४ एवं ईस्वी सन् १०१७ वा)

टीका १०६] आचार्यपाद भगवान श्रीगमानुजाचार्यजी की कथा ७५

पूर्वकथित आचार्यपाद श्रीयामुन मुनि के शिष्य श्रीशैलपूर्ण स्वामी आपके मापा थे, अतः इनने निज भगिनी को पुत्र प्राप्ति के समाचार सुने तो भूतपुरी आसये । बालक के लक्षणों को देख इनको विश्वास हो गया कि श्रीगुरुदेव के द्वारा मुने गये शेषावतार यही बालक है । स्वामी श्री शैलपूर्णचार्यजी ने आपको बारही के दिन ही श्री वैष्णवी दीक्षासे दीक्षित करके श्रीगमानुज नाम प्रदान किया ।

यथा समय अन्नप्राशन मृगहन मंजीवन्धन उपनयन आदि संस्कार होकर ७ वें वर्ष में वेदाध्ययन आरंभ हुआ । १५ वर्ष की अवस्था में चारों वेदों के अध्ययन को समाप्त किया देख पिताजी ने १७ वर्ष की उमर में गङ्गाकाशा नाप की एक कुलवती कन्या के साथ आपका विवाह कर दिया ।

पुत्र का कुछ दिन दांपत्य सुख देख पिताजी वैकुण्ठ वासी हो गये, तब आपकी शास्त्राध्ययनकी इच्छा प्रबल रूप से जागरित हो उठी अतः आप माता एवं पत्नी सहित कांची पुरी में आ गये एवं यहाँ के महा विद्वान यादव पंडित से अध्ययन करने लगे ।

कुछ दिन के बाद कांची के राजा की कन्या को एक ब्रह्मराक्षस लग गया । उसके निवारण के लिये यादव पंडित भी बुलाये गये जिनका पेट ने फटकार दिया और कहा "इनके शिष्य गमानुज आकर मुझे अपना चरणामृत प्रदान करें तो मैं इस लड़की को ही नहीं, अपनी इस नीच यानि का भी छाड़ जाऊँ । श्रीगमानुज बुलाये गये, उनसे आकर अपना चरण लुवाया, चरणामृत दिया और भेत जय जय-कार करता हुआ दिव्य देह धारणकर वैकुण्ठ सिधार गया, लड़की स्वस्थ हो गई । राजाने विपुल धन भेंट किया, जो आपन गुरु यादव जी को अर्पण कर दिया । पंडितजीने धन तो ले लिया परन्तु अब अलायाम प्राप्त हुई श्रीगमानुज को मान प्रतिष्ठा उनके हृदयकी जलाने लगी और वह किसी उपाय से इनको गारडालनेकी सोचने लगे ।

इसके कुछ ही पीछे श्रीगमानुजाचार्यजी के मासेरे भ्राता श्री

गोविन्दाचार्य भी श्रीरामानुज स्वामीजी के महामात्र एवं अध्ययन की इच्छा से कांची आकर यादव पंडितकी पाठशाला में पढ़ने लगे।

एकदिन पंडित यादव जी एक श्रुतिका अर्थ समझा रहे थे, वह श्रीरामानुजकी विपरीत जान पड़ा और इनने नम्रता पूर्वक कहा कि इस श्रुति का अर्थ ऐसा न करके ऐसा किया जाय तो समीचीन हो। पण्डितजी जले हुए ना थे ही, झुल्ला गये और कहने लगे अब तुम मेरे सामने मत आना। पाठशाला से निकल जाओ। ये घर चले आये और पाठशाला न जाकर स्वाध्याय ही करने लगे।

यादव और भी झुल्लाया और शिष्यको भेजकर इनको बुलवाया। पहुँचने पर ऊपर से प्रेम प्रदर्शित किया और पाठशाला आने का आदेश दिया, क्योंकि उसके मनमें तो शांत करने की जो बैठी हुई थी।

कोई एवं काल का यौका देख, यादव ने पूरी पाठशाला सहित प्रयाग त्रिनेली स्नान के लिये यात्रा कर दी और मध्यप्रदेशके बनखंडा में यादव की वह गुप्त जलन और मनोकामनायें जानकर गोविन्दाचार्य ने अपने जेष्ठ भ्राता श्रीरामानुज से कह दी, एवं यहीं से लुप्त हो भागजाने की सलाह दी। तदनुसार श्रीरामानुज वन में खो गये और छुपकर कांची का रास्ता पकड़ा। यादव दृढ़ ढाँढ़ कर दशा हो आगे बढ़ गया और समझ लिया कि सहज में ही कलंक टला, उसको यहां कोई सिंह व्याघ्र उठा ले गया होगा।

रात्री होने पर श्री रामानुज एक वृक्ष के नीचे सो रहे और एक किरात दम्पति भी इनके समीप ही उसी वृक्ष तले आ कर सो गये। ये किरात नहीं भगवान श्री लक्ष्मीनारायण ही किशोर वेष में प्रियवत्स श्री रामानुज की रक्षार्थ पधारे थे। प्रातःकाल उठ करके जब देखा तो इनने उस वृक्ष को कांचीपुरी से थोड़ी ही दूर पर एक कूप के समीप देखा। किरात दम्पति ने प्यास लगाना प्रकट किया और श्री रामानुज ने कूप से जल निकाल कर इनको पिलाया। वे दोनों जल

पी कर वहीं अन्तर्धान हो गये। श्री रामानुज ने घर आकर सब वृत्तान्त माता से कहा, माता भगवान की धन्यवाद देती हुई श्री रामानुज से कहने लगी—अब पाठशाला कभी मत जाना। यहां श्री वरदराज भगवान की सेवा में रहने वाले शुद्ध जातीय महाभागवत श्री कांचीपूर्ण स्वामी हैं, उनसे जा कर सब समाचार कहो और भविष्य में उनके आज्ञानुवर्ती बन कर रहो। श्री रामानुज ने श्री कांचीपूर्ण स्वामी से सब वृत्त निवेदन किया, उनने कहा तुम मन्दिर से स्वर्णपट लेकर उसी कूप से नित्य सेवार्थ जल लाया करो, भगवान सब अच्छा करेंगे आप उसी दिन से जलसेवा करने लगे।

उधर श्रीरंगपुरी में सिंहासनावतार श्री यामुनाचार्य स्वामी ने मर्मंग कथा के उपरान्त वैष्णव वृन्द से कहा—इसकी मालूम हो गया है कि श्री वैष्णव धर्म के संरक्षण संवर्धन के अर्थ भगवान अनन्त श्री शेषजी अवतारित हो चुके हैं, अतः आप तारा दश देशान्तर का भ्रमण कर उनका एका लगाओ कि महान प्रातःप्रातः अवतारी बालक कहीं कहां देखने में आता है। उक्त सब ने कुछ दिन अनुसंधान कर श्री यामुनाचार्य स्वामीजी ने निवेदन किया कि आपक बनाये लक्षणों से वृत्त पक श्री रामानुज नायक बालक कांची में निवास करने हैं और यादव पंडितजी से अध्ययन करने हैं।

उधर यादव पंडित ने प्रयाग स्नान किया और यह सोचते हुए लौटे कि रामानुज कहीं भाग न गया हो? कांची न पहुँच गया हो? कांची आ कर श्री रामानुजाचार्यजी के समाचार सुन वह बहुत दुःखी हुआ, पर कर क्या सकता था। माथा ठनक कर रह गया।

श्रीरामानुजाचार्य त्रिद्यागुरु से मिलने गये तो उम्मेने पाठशाला आ कर अध्ययन चालू रखने का आग्रह किया और ऊपर से बड़ा प्रेम प्रदर्शित किया। आप पाठशाला जाने लगे।

श्री यामुनाचार्य स्वामीजी कांची में अवतारी बालक के होने के समाचार प्राप्त कर कांची पधारे और श्री वरदराज भगवान के

मन्दिर में यादव पंडित और समस्त विद्याधियों के साथ आये हुए श्री रामानुज स्वामी को दूर से देखा तथा शोषावतार होने का मन में ठीक निश्चय कर बिना ही परिचय दिये कराये जुपचाप श्रीरंगम लौट गये।

एक दिन की बात है कि पाठशाला में पाठ चल रहा था और यादव पंडित व्याख्या करते हुए ही तेल मालिश करवा रहे थे। श्री रामानुजाचार्य ही उनकी पीठ में तेल मल रहे थे, उस समय भगवान्‌के नेत्रों की उपमा में आये 'कप्पास्य' श्रुतिपद का अर्थ पंडितजी ने किया कि वानर की चूतड़ के समान लाल भगवान्‌के नेत्र हैं। यह सुन श्री रामानुज के नेत्रों में जल आ गया और कुछ बूंदें यादवजी की पीठ पर गिर पड़ी। यादवजी ने चकित हो पिछाड़ी देखा तो रामानुज की आंखों में आँसू थे। उनके कारण पूछने पर श्री रामानुज ने कहा, उक्त श्रुति तो भगवान्‌के नेत्रों को कमल के समान अरुण कहती है। यह सुन यादव फिर झुल्ला गये और श्री रामानुज स्वामी को फिर पाठशाला जाना छोड़ देना पड़ा। आपने पुनः श्री वरदराज भगवान्‌की जलसेवा करना आरंभ कर दिया तथा अधिक समय श्री कांचीपूर्ण स्वामी के सत्संग में बिताने लगे।

इधर श्रीरंगपुरी में स्वामी श्री यामुनाचार्यजी ने विचार किया कि हम तो अब श्री वैकुण्ठ धाम गमन करना आवश्यक है, अतः शोषावतार रामानुज को श्रीरंग मन्दिर का अधिकार प्रदान कर देना चाहिये। ऐसा विचार कर आपने अपने प्रधान शिष्य श्री महापूर्ण स्वामी को कांची भेजा। ये जा कर श्री वरदराज भगवान्‌के मन्दिर में टिके। मानःकाल भगवान्‌को श्री यामुनाचार्य विरचित आलवन्दार स्तोत्र का पाठ सुना रहे थे उस समय में श्री रामानुज स्वामी भगवान्‌का कलश ले कर पहुँचे और उस अन्यद्भुत स्तोत्र को सुन कर इनका मन उधर खिंच गया। वहीं खंड हो कर बड़े ध्यान पूर्वक संपूर्ण पाठ सुनते रहे।

श्री आलवन्दार के श्रवण से आप बहुत प्रभावित हुए एवं श्री महापूर्ण स्वामी से स्तोत्रकार के विषय में प्रश्न करने लगे। उनसे कहा इस स्तोत्र के रचयिता वैष्णव कुल कमल दिवाकर स्वामी श्री यामुनाचार्यजी श्रीरंगधाममें विराजते हैं। यह सुन कर उनके दर्शनार्थ आप श्री महापूर्ण स्वामी के साथ हो लिये।

अघटित घटना पटीयमी प्रभु की लीला तो विचित्र है, वे अपने स्वजनों का वैभव प्रकट करने के लिये नाना लीलायें किया ही करते हैं। आप लोगों को श्रीरंगपुरी में पहुँचने से पूर्व ही नदी किनारे श्री वैष्णवों का विशाल समूह देख पड़ा, समीप जा कर पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि आचार्यपाद श्री यामुनाचार्य वैकुण्ठ सिधार गये जिनका शव अन्त्येष्टि के अर्थ यहाँ उपस्थित है।

ये दोनों भी समागोद में सम्मिलित हो गये और श्रीरामानुज स्वामीने समय से पश्चात् पहुँचने का दुःख मानकर बहुत विलाप किया। आपने जब शव के दर्शन किये तो देखा कि श्रीयामुनाचार्यजी की तीन उंगलियाँ विशेष प्रकार से मुड़ी हुई हैं। आपके पूछने पर लोणा ने कहा कि जीविनावस्था में तो ये उंगलियाँ सीधी ही थीं, मुड़ी हुई नहीं थीं, न जाने कैसे मुड़ गई पता नहीं क्या कारण हुआ ?

श्रीरामानुज स्वामी यह सुनकर एक क्षण के लिये ध्यानस्थ से हो गये, फिर कहने लगे श्रीस्वामीजी की मुझे तीन आज्ञायें देने की इच्छा थी, इन उंगलियों के मुड़ने का यही कारण है। मुझ अमागे के समय पर न पहुँचने के कारण संकेत के द्वारा श्रीस्वामीजी मुझे वे तीन आज्ञायें प्रदान कर रहे हैं। ये तो भगवान्‌के नित्य पारपद हैं जन्म मरणादि तो इनकी लीलायें हैं। ऐसा कह कर कहने लगे मैं आपके संकेत को समझकर आप के हृदयजन्य भावके अनुसार प्रतिज्ञा करता हूँ कि यदि यह उंगलियाँ दामकी यही संकेत प्रदान करने के अर्थ मुड़ी हैं तो इनको सीधी कर लेने की कृपा करें।

१. मैं वैष्णव मन को ग्रहण करके अज्ञान मोहित जनोंको पंच-संस्कार पूर्वक प्रपत्तिधर्म में दीक्षित कर धर्म रक्षा करूँगा ।

२. वेद के तत्त्व ज्ञानके समस्त अर्थको एकत्रितकर श्रीवैष्णव धर्म रक्षार्थ श्रीपापकटा निर्माण करूँगा ।

६. पराशर मुनि रचित पुराणमन्त्र श्रीविष्णु पुराण का प्रचार करूँगा ।

जैसे जैसे श्रीरामानुज स्वामीने प्रतिज्ञायें की वैसे वैसे श्रीरामानुज-चार्यजी की एक एक उगली सीधी होनी गई और इस प्रकार तीनों उगलियाँ सीधी हो गई । उपस्थित समस्त जन समूह की यह धारणा दृढ़ हो गई कि श्रीरामानुज स्वामी ही, तथा आपसे श्रीरंगम् पधार कर स्थानका भार वहन करने की सवने प्रार्थना की, परन्तु श्रीरामानुज स्वामीने कहा श्रीरंगनाथ स्वामीने मुझे श्रीरामानुज स्वामी से मिलने भी नहीं दिया, अतः उनकी सेवामें इस समय प्राप्त होनकी मुझमें शक्ति नहीं है । अभी तो मैं उनके दर्शन भी नहीं करूँगा । ऐसा कह आप वहाने कांचीपुरी लाठे आये । यहाँ आकर सारा वृत्तान्त श्रीकांचीपूरुज्जी से निवेदन किया जिसे सुनकर वे बड़े दुखी हुए ।

श्रीकांचीपूरु स्वामी के भक्तिभावसे रामानुज स्वामी बहुत प्रभावित हो चले थे, इनको गुस्सन ही मानते थे, अतः एकदिन इनका भुक्तावशिष्ट, सीधे प्रसाद लेनेकी कामनासे भोजनके अर्थ अपने घर पर इनको आमन्त्रित किया । निश्चित समयमें विलम्ब हुआ देख श्रीरामानुज स्वामी श्रीहस्तिशैल के दक्षिण मार्ग से मंदिर आये । इधर श्रीस्वामीजी उत्तर मार्ग से उनके घर पहुँच गये और उनकी पत्नी रक्षकास्वासे प्रसाद माँगकर पा लिया तथा पत्तल साइर फेंक, चौका लगा, दक्षिण मार्ग से मंदिर की रवाना हो गये । श्रीरामानुज स्वामी मार्ग में ही लौटते हुए मिल गये । इससे श्रीरामानुज बड़े दुखी हुए परन्तु उनमें उस दुःख को प्रकट नहीं

किया । घर आये तो देखा कि चौका बरतन होकर पुनः रसोई चढ़ी हुई है । मनमें क्रोध तो बहुत आया परन्तु कहा किमी से कुछ नहीं । भगवानको भोग लगा, प्रसाद पाकर मंदिर पहुँच श्रीकांचीपूरु स्वामी से विधिपूर्वक अपना शिष्य बनालेनेकी प्रार्थना करने लगे । श्रीकांचीपूरुने यह उचित नहीं समझा तब आपने कहा कि आप श्रीवाद्वाज भगवान से पूछ कर बतावें कि मैं क्या करूँ ? किसका शिष्य बनूँ ? श्रीकांचीपूरु स्वामीने भगवान की आज्ञा पाकर बताया कि आप श्रीमहापूरु स्वामी के शिष्य बनिये । यह भगवदाज्ञा प्राप्त कर आप श्रीरंगम् को रवाना हो गये ।

इधर श्रीरंगपुरीमें श्रीवैष्णवों की महती सभामें निर्णय हुआ कि स्वामी श्रीरामानुज स्वामी के आदेशानुसार शंपावतार श्रीरामानुज स्वामी को यहाँ लाया जाय और श्रीरंगनाथ की सेवा का सारा भार उनके ऊपर ढाला जाय, उनको लाने के लिये श्रीमहापूरु स्वामी स्वयं पधारें । इस निर्णय के अनुसार श्रीमहापूरु स्वामी रवाना हो गये और मार्ग में ही दोनों की भेट हो गई । श्रीरामानुज स्वामीने उसी स्थान पर दीक्षा प्रदान करने की प्रार्थना की तथा गुरुशिष्य संबन्धम् आचर्य हो दोनों कांची चले आये । श्रीरामानुज स्वामीने अनुनय वनय कर श्रीमहापूरु स्वामीको सपरिवार अपने ही घर में निवास कराया तथा उनमें शास्त्र पुराणादि के गूढ़ रहस्यों का अध्ययन करते रहे । इसके माघ ६ मास पश्चात् माना श्रीकान्तिमती देवी का वैकुण्ठ वास हो गया तथा माना के उत्तरकार्य में व्यस्त श्रीरामानुज स्वामी को छोड़ श्रीरंगनाथ के मानसिक आदेश के अनुसार श्रीमहापूरु स्वामी श्रीरंगम् चले गये ।

श्रीरामानुज स्वामी की धर्म पत्नी रक्षकास्वा का स्वभाव बड़ा कर्कश था, सामके सामने तो उसका अधिक असर नहीं होता था पर अथ तो वह तबलुन यह स्वामिनी थी । एकदिन एक सुवार्त श्रीवैष्णव

को आया देख श्रीरामानुज स्वामीने कुछ सीधा सामान (अन्न) देने को कहा, परन्तु उत्तर मिला कि इस समय तो घर में कुछ है ही नहीं। यह सुन श्रीरामानुज स्वयं घर में गये और अन्न लाकर उनको दिया।

इससे पूर्व कई बार कृष्ण पर जल भरते में गुरुपत्नियों तक का तिरस्कार किया जा चुका था, इन सब लीलाओं से तंग आकर श्रीरामानुज स्वामी ने वृहस्पतिश्रम को छोड़ सन्यास ले लेने का निश्चय कर लिया और समय पाकर पत्नीको पिता के घर भेज श्रीवरदराज भगवानकी आज्ञासे आपने वैष्णव समूह की सन्निधि में तृदण्ड कापाय धारण कर सन्यास लेलिया तब श्रीकांचीपूर्ण स्वामी ने बड़े सम्मान के साथ चमर छत्र पालकी लेजाकर आपको मन्दिर में लाकर मन्दिर के मठ में निवास कराया और यतिराज शब्द से संबोधित करते हुए सब वैष्णवों ने आपकी स्तुति की।

आगम निवासी श्रीअनन्त दीक्षित श्रीरामानुज स्वामी के बहनोंई थे, इनके दो पुत्र श्रीकुरेश और श्रीदाशरथी (यतिराज के भानजे) आये और शिष्य हो गये। इसके पश्चात् अपनी माता की शिक्षा और वरदराज भगवानकी आज्ञासे आपके विद्यागुरु यादव पंडित भी एक दिन आकर आपके शिष्य हो गये जिनका नाम गोविन्ददाम पड़ा। इनने धर्म मधुचक्र नामक ग्रंथका प्रणयन किया और थोड़े दिन पीछे वैकुण्ठ वासी हो गये।

कुछ काल पश्चात् श्रीरंगपुरी के श्रीवैष्णवों की इच्छा और श्रीरंगनाथकी आज्ञा पाकर श्रीयामुनाचार्यजी के पुत्र श्रीरंगीवर जी (जो अलौकिक गायक थे) कांची आये और अपने गान तान से भगवान वरदराज को प्रसन्नकर वरदान में माँगकर यति रामको श्रीरंगधाम ले गये। श्रीमहापूर्ण स्वामी के महित श्रीरंगम्के श्रीवैष्णव समूह ने बड़ेगन्कार के साथ छत्र चमर पालकी आदि लवाजमों के साथ

ले जाकर श्रीरंगमन्दिर में निवास कराया। भगवान श्रीरंगनाथ ने आपको उभयविभूति का अधिकार प्रदान करते हुए आज्ञा दी कि अपने आश्रितों को लीला विभूति (इमलोक) में सुख सौख्य और दिव्य विभूति (श्रीवैकुण्ठ धाम) में हमारा कैर्कर्य प्रदान करने का आपको पूर्ण अधिकार होगा।

श्रीयतिराजके माँसेरे भाई श्रीगोविन्दाचार्य (जो अध्ययन काल में आपके साथ थे और अब प्रयागराज में गंगा स्नान करते हुये मासतुल्य शिव लिंग का अर्चन पूजन करते हुए अपने को कष्ट शोक सम्भरते थे) को सन्मार्ग पर लाने के लिये अपने मामा श्रीशैलपूर्ण स्वामीको भेजा जिनके उपदेश से वे यतिराज की शरण में आ गये (शिष्य हो गये)

श्रीयतिराज एकदिन अपने दीक्षागुरु श्रीमहापूर्ण स्वामी के घर गये और प्रार्थना पूर्वक उनसे द्वय मंत्रका अर्थ ग्रहण किया। वहाँ से श्रीगोष्ठी पूर्ण स्वामी के यहाँ गये और उनसे अष्टाक्षर मंत्रका अर्थ बताने की प्रार्थनाकी परन्तु उनसे कहा—वह परम गोपनीय है अभी आप उसके अधिकारी नहीं हैं, आप निराश हो लौट आये।

एकवार किसी उत्सव पर श्रीगोष्ठी पूर्ण श्रीरंगम् आये तब स्वयं श्रीरंगनाथ ने आज्ञादी कि यतिराज श्रीरामानुज मंत्रार्थ के अधिकारी हैं उनको प्रदान करिये। तब आप श्रीयतिराज से कभी गोष्ठी-पुर आने को कह गये, परन्तु फिर जानेपर वही कहा, और कहा समय आने दीजिये। इस प्रकार श्रीयतिराज ने अठारह बार प्रार्थनाकी और हताश होकर लौट आये। यतिराज इस परम रहस्य को जानने के लिये व्याकुल हो गये। यह व्याकुलता उत्सवमें दर्शनार्थ श्रीरंगधाम आनेवाले गोष्ठी पुर के श्रीवैष्णवों ने श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामी के सामने वर्णन की, तब अपना शिष्य भेजकर आपने श्रीयतिराज को पुलाया

और कहला दिया कि मनुष्यनी क्या यज्ञमूत्र और त्रिदंड के अतिरिक्त कोई जड़ पदार्थ भी आप के साथ न आना चाहिये ।

आप श्रीदाशरथी और कुरेशकी साथ लेकर पहुँचे । श्रीगोष्ठी पूर्णने कहा यह तो हमारी आज्ञाका उल्लेखन हुआ, तब आपने विनम्र होकर कहा स्वामिन् यही तो मेरे मूत्र और त्रिदंड हैं । श्रीगोष्ठी पूर्ण स्वामी बोले यदि ऐसा है तो इनकी अधिकारी परीक्षा लेकर फिर कभी आप इनको उपदेश करना, अभी तो नहीं होगा । ऐसा कह एकान्त में लेजाकर किसीको न बताने की शपथ करा आपको न्यास मुद्रा अथि छन्द स्वर आदि जप विधि के सहित मंत्रार्थका उपदेश किया एवं महात्म्य सुनाया ।

इस अवसर पर गोष्ठीपुर में श्रीमृत्तिहोत्सव हो रहा था, श्री वैष्णव ब्राह्मणों की भीड़ लगी थी । श्रीयतिराजने यह उपयुक्त अवसर देख गोपुर (द्वार तोरण) पर चढ़ कर बड़े उच्च स्वर से मंत्रार्थ कहा जिसको ७४ चोइतर द्विजश्रेष्ठों ने चरण कर लिया (इसीका निकर भक्तमाल में हुआ है) यह सुनकर श्रीगोष्ठीपूर्ण बहुत क्रुद्ध हुए और श्रीयतिराजको बुलाकर कहने लगे 'इसीलिये तो हम नहीं देते थे अबतो आपके लिये नरक का दरवाजा खुल गया, आपने करबद्ध हो उत्तर दिया स्वामिन् ! यदि इतना जन समुदाय श्रीवैकुण्ठ प्राप्तकर प्रभुसेवा का लाभ प्राप्त करें और उनके बदले में मैं एक नरक भोगूँ तो इसमें मेरे उद्देश्य की सफलता ही तो है । श्रीगोष्ठी पूर्ण प्रसन्न हो गये और कहने लगे जिनको रहस्य प्रदान करने की आज्ञा स्वयं श्रीरंगेश प्रदान करें वे ऐसे क्यों न हों । हे यतिराज ! आप सचमुच श्री शेषावतार हैं, अब मुझको भी पूर्ण विश्वास हो गया । आप जोकों के कल्याणार्थ ही अवतरित हुए हैं ! फिर श्रीगोष्ठी पूर्ण स्वामीकी आज्ञानुसार श्रीयतिराजने श्रीरंगेश्वरजी एवं श्रीमालाधारीजी से परम पुरुषार्थ और महसगीति के रहस्यों को ग्रहण किया और

पूर्ण परीक्षा लेकर श्रीदाशरथी और श्रीकुरेशको सब रहस्य प्रदान किये ।

एकदिन यज्ञ मूर्ति नामक एक महा विद्वान् शास्त्रार्थ के लिये आया और हासकर वह यतिराज का शिष्य हो गया जिसका नाम श्रीदेवप्रबन्ध हुआ, श्रीरंगेश्वर श्रीगोष्ठीपूर्ण श्रीमालाधारी गुण आदि गुरु जनों के वंधु बांधव पुत्र कलत्र भी सब यतिराज के शिष्य हो गये ।

ईर्ष्या वस कुछ अर्चकादि ब्राह्मणों ने प्रसाद में मिला कर एक दो बार श्रीयतिराजको बिध भी खिलाया, जिसका कभी आपके ऊपर कोई असर नहीं हुआ, परन्तु फिर श्रीगोष्ठी पूर्ण आदि गुरुजनों के आग्रह से एक सुधर्माक्षित शिष्य के द्वारा प्रथक ही पाक बननेका प्रबन्ध हो गया ।

इसके पश्चात् उत्तर अवस्था में आपने तीर्थ यात्रा की, जिनमें सर्व प्रथम श्रीशालपूर्ण स्वामी के यहाँ गये । उनसे श्रीमद्रामायण का अध्ययन किया और गाविन्दाचार्यको मांगकर लाये । उत्तर भारत की यात्रा में काश्मीर से वाधायन वृत्ति लाने की चेष्टा हुई, परन्तु वे लोभ मार्ग से ही उसको वापस ले गये, वह तो श्रीकुरेशने तब तक उसको हृदयंगम करली थी अन्यथा श्रीभाष्य निर्माणमें बड़ी कठिनाई होती । इस यात्रा से लौटकर ही आपने शारीरिक मूत्र एवं मीलापर भाष्य रचे ।

इस समय चोल देशका राजा कट्टर शैव हुआ और उसने यतिराज श्रीरामानुजाचार्यजी को पकड़ कर ले आने की अपनी सेना श्री रंगम् भेजी, जिसके साथ श्रीकुरेश अपनेका रामानुज कह कर गये । यतिराज दंड कापय छोड़ वेश बदलकर उत्तर भारत में आ गये, इसी यात्रा में जमदीश पुरी और हजार मुखसे उपदेश करनेकी घटनायें हुई जो भक्तमालमें उल्लिखित है ।

श्रीयादवादीय भगवानको मूर्तिल से प्रकट करना, श्रीमण्डकुमार भगवानकी मूर्तिको दिल्ली के बादशाह के यहाँ से लाकर नागधण पुर में प्रतिष्ठित करना, अनेकानेक अश्रितों की परीक्षायें लेकर उनके वैभवको फैलाना, अनेकानेक चतुर्थ वर्णीय वैष्णवों की महिमा को प्रशस्त करना और फिर रंगपुरीमें पधार कर इसीप्रकार के मंगलमय चित्रोंका जो विस्तृत वर्णन श्रीमपन्नामृतमें हुआ है वह विस्तार भय से यहाँ नहीं दिया गया है। आपने अपनी १२० वर्ष की दीर्घायु के के प्रथम ६० वर्ष भूतपुरी कांनो पुरी आदि में और उत्तर ६० वर्ष श्रीरंगपुरी एवं यात्रा आदि में बिताकर श्रीरंग भगवानकी आज्ञा प्राप्त कर श्रीवैष्णव धामको गमन किया। आपके अन्तिम वषर्देश ७२ वाक्य के नाम से प्रसिद्ध है जो सभी जिज्ञासु मुमुक्षुओं को संपुण्य है।

(श्रीगमानुजाचार्यजीके चार गुरु भ्राताओंकी कथा)

मूल छ०—श्रुतिप्रज्ञा श्रुतिदेव ऋषभ पुष्कर इभ ऐमे । श्रुतिधामा श्रुतिउदधि पराजित वामन जैसे । रामानुज गुरु बन्धु विदित जग भंगलकारी । शिव संहिता प्रणीत ज्ञान सनकादिक सारि ॥ इन्द्रिग पधति उदार धी, सभा साखि सायर कहें । चतुर महत दिग्गज चतुर, भक्ति भूमि दावे रहें ॥३०॥

(आचार्य ज वत् श्रीलालाचार्यजीकी कथा)

मूल छ०—मालाधारी मृतक बह्यो सरितामें आयां । दाह कियो ज्यों बन्धु न्योति सब

कुटुम बुलायो । नाक सकोडहिं विप्र तवें हरिपुर जन आये । जैवत देखे सबन जात कहू न लखाये ॥ लालाचारज लक्षधा, प्रचुरभई महिमा जगति । आचारज जामातकी, कथा सुनत हरि होय रति ॥३३॥

टीका क०—आचारजको जामात बात ताकी सुनोनीके पायो उपदेश मन्त बन्धु करि मानिये ।

बीजे कोटि गुनी प्रीति, बने जो न ऐसी रीति तोपे एती करो, कभूँ बरती न जानिये ॥

मालाधारी माधु तन सरिता में बह्यो आये लायोधर 'फेरि के विमान सभी जानिये ।

मावत बजावत सो नदीतीर दाह कियो दियो दुःख पायो सुख पायो समाधानिये ॥११०॥

कियो सो मोने के ज्ञानि विप्रनको न्योत, दियो कोऊ नल आये कान्ही शंका दुःख दाइये ।

भये 'इतजै माया करे सब 'बोर कहु कहें बात बोरै बरी देह बली आइये ॥

१ विमानको शम में फिगत हुए । २ समझाने मानवता देने पर । ३ एक स्थान पर—एकत्रित । ४ बावलें गमल ।

याने नहीं खात बाकी जानत न जान पांत
बड़ो उत्पात घर लाय जाय दाहिये ।
'मग जुगवत नहीं आये तब सोच परयो
सोली आय पूछी गुरु कैमेकै निवाहिये ॥१११॥

आय श्रीआचार्य जू पै वारिज बदन देखि
करि साष्टांग बात कहि सो जनाई है ।
जाओ निरांक वे प्रसादको न जानै रंक
जानै जे प्रभाव आवैं वेग सुखदाई है ।

देखो नभ द्वार आवैं वैकुण्ठ निवासी जन
देखे घर आय पांति दिग हँक आई है ।
कहैं वे विरोधी विप्र इन्हें अब जानदेवा
गहि करे हांभी जब ग्वाय घर जाई है ॥११२॥

आये देखि पारपद गयो पंडि भूमि मद्र
हृद करी कृपा यह जानि निज जनको ।
पायो लै प्रसाद स्वाद कहि अहलाद भयो
नयो लयो मोद सांघो जान्यो मन्त पनको ॥

विदाहैं पधारे नभ मगने सिधारे, विप्र
देखत विचारे द्वार व्यथा भई मनको ।
गयो अभिमान आये मन्दिर मगन भये
नये दृग लाज वीन वीन लेत कन को ॥११३॥

१ बाट देखते हुए भी । २ दसिद्र-कंगाल-मूर्ख ।

पांय लपटाय अंग धरिमें मिलायकहैं
करो मन भायो हमि दैन्य बहु भाष्यो हैं ।
कही भक्तराज आप कृपा ये समाज पायो
गायो जो पुराणनमें रूप नैन चाख्यो हैं ॥
छांडो उपहास अब करो निज दाम हमें
पूजो हिय आम मन अति अभिलाष्यो हैं ।
किन्ही सो प्रशंसा मानो हंस ये परम कोऊ
ऐसो यश लालाचाय घर घर भाख्यो हैं ॥११४॥

(श्रीगंगाधराचार्यके उपदेश भगवान बोधायन के शिष्य
स्वामी श्रीगंगाधराचार्यजी की कथा)

मूल छ०—गुरु गमन कियो परदेश शिष्य
सुगधुनी दृढाई । नहीं मज्जन नहीं पान
हृदय बंदना कराई ॥ गुरु गंगामें प्रविशि
शिष्यको वेग बुलायो । विष्णुपदी भय
जानि कमल पत्रन पर धायो ॥ पाद पद्म
तादिन प्रकट, सब प्रसन्न मुनि परम
रुचि । श्रीमार्ग उपदेश कृत, श्रवण
मुनो आख्यान शुचि ॥३४॥

टीका क०—सुरसरी तीर सा कुटीर बहु माधु गंग
रहैं गुरु भक्त एक न्यारे नहीं हो सकें ।
चले मुनि गाँव जनि तजो बलिजाउँ, कटौ

करो भाव गंगा मम, पद कैसे धौ सकें ॥
 क्रिया सब कूप करें विष्णुपदी ध्यान धरे
 रोष करें सन्तश्रेणी भाव नहि लवौ सकें ।
 आये गुरुदेव दुःख मानि ते वस्त्रान कियो
 जानी मन आनी मुनि, अंग कैसे धौ सकें ॥११५॥
 गये अमनान मुनि शिष्य गंग लौके गंग-
 नाहि पैठि बंले भो अंगोछा वेगिलाइये ।
 करत विचार शोच मिथु का न पावौ पार
 गंगाजू प्रकटि कदयो कंजन पै आइये ॥
 चले सो अधर पग धरत मधुर जाय
 वस्त्र ताथ दिशो, लियो, नीर भीर छाइये ।
 निकमत धाय सब पाँय लपटाय गये
 बढयो सो प्रताप अम निशदिन गाइये ॥११६॥
 (पूर्वाचार्यो सहित भगवत्पाद श्रीरामानन्दाचार्य स्वामीजीकी कथा)
मूल० छ०—देवाचारज द्वितीय महा-
महिमा हर्यानंद । तस्य राघवानन्द भग्ये
भक्तनको मानद । पत्रावलम्ब पृथ्वी
करीव काशी स्थाई । चार वरणा आश्रम
सबहीमें मक्ति दहाई ॥ तिनके रामा-
नंद प्रकट, जगमङ्गल जिन वपुधरचा ।
रामानंद पद्धति प्रताप, अवनि अमृत
हैं अनुसरचा ॥३५॥

अनादिवैदिक श्रीसम्प्रदाय प्रधानाचार्य साक्षात् श्रीगणेश्वर
 मस्थानत्र आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु भगवत्पाद अनन्त श्रीरामानन्दाचार्य
 जीके विषय में श्रीपिपादासजी ने कुछ भी नहीं लिखा । अतः अन्य
 ग्रन्थों के आधार पर श्रीआचार्यपाद की कथा दी जा रही है ।

श्रुतिप्रणीत ग्रंथोंमें श्रीअगस्त्यसंहिता भविष्य खंड के अध्याय
 १३१ से १३५ तक श्रीगणानन्द जन्मोत्सव व्रत कथा के हैं, जिनमें
 जन्म कथा एवं पूजा का विधान वर्णित है । उसको यहाँ अविकल
 उद्धृत किया जा रहा है ।

अथ श्रीअगस्त्यसंहिताोक्त श्रीरामानन्द जन्मोत्सव व्रत कथा प्रारम्भः ।

मिहासने समामीनः सहितः सीतयानुजैः ।
 अतमीकुसुमश्यामो गमो विजयनेऽनिशम् ॥ १ ॥
 स्वाश्रमे संश्रितं शिष्यैः प्रतर्हृत हुताशनम् ।
 बोधयन्तं परं तत्त्वं तमगम्य महामुनिम् ॥ २ ॥
 कृतक्षणः सुतीक्ष्णस्त्वमुपागम्य कृतांजलिः ।
 पश्यन्वनानि रम्याणि विचरंश्च महामुनिः ॥ ३ ॥
 भाषिनो न्दन्कलौ बुद्धा दिष्यामकचेतमः ।
 अज्ञानाल्पायुषः श्रीमच्छाशांदिदिमुत्मान् भुवि ॥ ४ ॥
 संसारागर्भवममजान् कृपान्दुर्मतिभक्तमः ।
 उद्धर्तुं कामर्त्तास्तम्मात पृष्ठवान् श्रय उन्नमः ॥ ५ ॥
 भगवन्मुनिशार्दूल सर्वज्ञ कलशोदभव ।
 नृणां श्रग्विमृदानां श्रयश्चितय शुभ ॥ ६ ॥

उपायं वदनिश्चित्य तेषां श्रेयो यथा भवेत् ।
 परोपकारनिरताः साधवो हि कृपालवः ॥ ७ ॥
 कुम्भजोऽथ निशम्नेत्यं वाचं मुनिसमीरिताम् ।
 अल्पाक्षरमनल्पार्था धर्मसंप्रश्नभूषिताम् ॥ ८ ॥
 प्रसन्नरदनान्भोजः प्रशम्य मुनिपुंगवः ।
 तं प्रत्युवाच मंथीतो वाचं हृदयहृषणीम् ॥ ९ ॥
 श्रुयतामितिहासोयं कुमारभ्यो मया श्रुतः ।
 मुनिवर्यो महाभाग जगतामुपकारकः ॥ १० ॥
 हिरण्यगर्भमंभूतो मतिमान् वाग्विदाम्बरः ।
 सर्वलोकजनान् दृष्ट्वा विमूढान् विमुञ्चाञ्छ्रुतेः ॥ ११ ॥
 चिन्तयन्स्वत तच्छ्रेयो दिव्यं धामं जगाम सः ।
 कृपालुरच्युतम्यार्थं सिद्धिभिः सिद्धभूषणम् ॥ १२ ॥
 तत्र सिद्धासनं दिव्यं मध्यासीनं जगत्प्रभुम् ।
 निजैर्वरायुधैः सर्वैर्मूर्तिमद्विभूतं रूपामितम् ॥ १३ ॥
 पार्षदप्रवरैः कृत्स्नैर्महार्हाम्बरभूषणैः ।
 पद्मपत्रदिशालालं पद्मया पद्मनेत्रया ॥ १४ ॥
 उपविष्टं जगद्धतुं नारदोऽपश्यदच्युतम् ।
 दिव्याम्बरधरं देवं दिव्यभूषणभूषितम् ॥ १५ ॥
 प्रणतस्तं प्रनुष्टाव हृष्टात्मा जगदीश्वरम् ।
 जगद्योनिरयोनिस्त्वं व्यक्ताऽव्यक्ततरो विभुः ॥ १६ ॥
 कर्त्रे विश्वस्य संभर्त्रे संहर्त्रे ते नमोनमः ।
 आदिमध्यान्तहीनाय प्रभवे परमात्मने ॥ १७ ॥

नमस्ते विश्वरूपाय नमस्ते विश्वबन्धवे ।
 विश्वंभर नमस्तेस्तु विश्वनाथ कृपाम्बुधे ॥ १८ ॥
 संमारेऽस्मिन्महाघोरे पापाभिरतचेतनाम् ।
 जन्तूनां का गतिर्देव कर्मणा भ्रमतामिह ॥ १९ ॥
 मुक्तिस्तेषां कथं श्रीश भवेद्धर्मे कथं रतिः ।
 कृपाकूपार भगवज्जन्तूनुद्धर साधवः ॥ २० ॥
 श्रुतिस्मृत्युदिता धर्माः क्लेशसाध्या नृभिः सदा ।
 अतस्त्वं सुकरोपायं वद त्वद्भक्तिं वर्धनम् ॥ २१ ॥
 सर्वबन्धविनाशाय मुक्तये प्राणिनां प्रभो ।
 प्रवक्तास्त्वं हि धर्माणां भविता जगतामपि ॥ २२ ॥
 हृत्थमाकर्ण्य भगवान् वाचं मुनिसमीरिताम् ।
 तं प्रत्युवाच मंथीतः शुचिस्मितमुखाम्बुजः ॥ २३ ॥
 मुनिवर्य महाभाग जगतां हितकारक ।
 मया जगद्धितायैव पुर तदवधाग्निम् ॥ २४ ॥
 दिव्ये हि भारते वष तीर्थराजे सुविश्रुते ।
 प्रयागे पुण्यसदने भवदिमर्नित्यसूरिभिः ॥ २५ ॥
 सार्द्धमवावतीर्याहं प्रणेष्ये मोक्षसाधनम् ।
 दृढमंसारचक्रस्य शासनं भक्तिवर्धनम् ॥ २६ ॥
 सुबोधं सुकरं सर्वधर्ममार्गं सुखावहम् ।
 वेदवेदान्तसञ्छास्त्रसारभूतं सदाश्रयम् ॥ २७ ॥
 तत्र तत्रावतीर्णास्तु भवन्तो वीतकल्मषाः ।
 मदुक्तस्योपदेशारः प्राणिभ्यो मत्परायणाः ॥ २८ ॥

भविष्यन्ति नानाज्ञानो जगदुद्धार हेतवः ।

सुशीला धर्मनिरता जगतामुपकरकाः ॥२६॥

ये ब्रह्मोप्यन्ति सन्मार्गं प्राणिनो भक्तितत्पराः ।

स्यादनायासतो मोक्षस्तेषामत्र न संशयः ॥३०॥

वाणीपीयूषमाम्बाद्य क्षणमासीद्वरेमुनिः ।

मग्नः सुखसुधाम्मोक्षौ विनीतो गतमंशयः ॥३१॥

निशम्य तदुवाक्यमप्येषमद्भुतं हिरण्यगर्भाङ्गमद्भुतौ मुनिः ।

महृष्टोमावलिभूषिता कृतिः कृती कृतज्ञः कृतकृत्यदर्शितुः ॥३२॥

दृष्टव्रतस्याथ चित्तप्रकंधरः स्मरन् सुरेशस्य विभोः प्रतिश्रुतम् ।

मण्ड्यं तं देववर्चं रमापति महाविभूतेनिरगात्ततः सुधीः ॥३३॥

सुवादयन् दिव्यपशोऽथ वल्लकीं हरेः स्वरज्जलविभूषितामसौ ।

गार्ग्यश्च लोके विधिवत् सवेतः सुरासुखेन्द्रेणैव पूजितो मुनिः ॥३४॥

मुनीश्वरे देवच्छर्पा विनिर्गते सुरैरपीड्यो जगतामधीश्वरः ।

रेखे रमेशो रमयास्मितामनः प्रभूतभूतेनिरजदिव्यधामनि ॥३५॥

इति श्रीपद्मस्त्यर्साहिताय भविष्यखंडोऽध्यायः सुतीक्ष्ण संवादे

श्रीरामानन्दावतारोपक्रमे श्रीविष्णुनारद सम्प्रशान्तं—

नामैकत्रिंशद्विंशततमोऽध्यायः ॥१३१॥

व्यतीते द्वापरं पुण्ये श्रीमदुभयवतोऽभिक्ते ।

कलौ सत्त्वहरे पुंसां प्रवृत्तेऽधर्मवर्द्धके ॥१॥

जनेऽधमरुचौ नित्यं शौचाचारविवर्जिते ।

मोक्षसाधनमार्गेभ्यो विमुखे पशुतां गते ॥२॥

मन्दे मन्दमतौ शश्वदल्पभाग्येऽल्पजीवने ।

तत्रत्ये पापनिरते महत्संगविवर्जिते ॥३॥

प्रवर्धमानानभितो वादेर्निर्जित्य नास्तिकान् ।

आचार्यैर्भगवद्भक्तैर्वेदवेदान्तशरणैः ।

स्थापितोऽपि महायोगैर्वृद्धिं नैव गमिष्यति ॥४॥

विधातुं सत्यमनघ सुरेभ्यो निजभाषितम् ।

वीक्ष्य विष्णुः कृपासिन्धुः प्रबुद्धं तादृशं कलिम् ॥५॥

सदृशोऽजनान्मर्वान्दुर्मतीन्क्लेश मंथुतान् ।

मनः कर्ताऽवताराय स्मृत्वाथो म्वं प्रतिश्रुतम् ॥६॥

‘खं नभो’ लोक वेद (४३००) प्रमिते वर्षे गते कलौ ।

कालिन्दीजाह्नवी-मंगशोभिते देवपूजिते ।

तीर्थगजे महापुण्ये प्रयागे तीर्थोत्तमे ॥७॥

गृहे श्रीपुण्यमदनद्विजानेभूरिकर्मणः ।

योगिनो योगयुक्तस्य कान्यकुब्जशिरोमणेः ॥८॥

पतिमेवापरा तस्य सुशीलागृहिणी ततः ।

माघकृष्णस्य मत्तम्यां शुभधर्मप्रवर्तकं ॥९॥

सप्तदशद्विदगते सूर्ये मिद्वयोगयुजि प्रभुः ।

नक्षत्रेत्वष्ट्रदैवत्ये कुम्भलग्ने शुभग्रहे ॥१०॥

एवंमव गुणोपेते देशे काले च माधवः ।

गुण्ये पुण्ये शरण्यः स शरणागतवत्सलः ॥११॥

आविर्भूतो महायोगी द्वितीय इव भास्करः ।

‘रामानन्दः’ इति ख्यातो लोकोद्धारणकारणः ॥१२॥

अष्टमेऽब्दे चापवीतं जातं तस्य तदा ह्यमौ ।

ब्रह्मचर्यं गृहीत्वा तु विद्याभ्यासं कारिष्यति ॥१३॥

वर्षे द्वादशके जाते काश्यां गत्वा पुनः स्वयम् ।
 वेदवेदाङ्गशास्त्राणि पुराणानि पठिष्यति ॥ १४ ॥
 आचार्यं लक्षणैर्युक्तं वेदवेदान्तपारगम् ।
 श्रीसम्प्रदायश्रेष्ठं च जनोद्धारपरं सदा ॥ १५ ॥
 विज्ञाय राधवानन्दं लब्ध्वा तस्मात्पण्डितरम् ।
 रहस्यत्रयवाक्यार्थं तात्पर्यार्थं च सन्मतम् ।
 आचार्यलक्षणैर्दिव्यैर्लक्षितो वै भविष्यति ॥ १६ ॥
 प्रवक्ता सर्वधर्माणामनुग्राता च कर्मणाम् ।
 रक्षिता धर्ममेतूनामुपदेष्टा महायशः ॥ १७ ॥
 शश्वदुर्वेणवधर्माणां महाकीर्तिरुदारधीः ।
 प्रमन्नवदनाम्भोजो विशालाक्षो महाभुजः ॥ १८ ॥
 कृपालुस्सर्वजीवानामितरेषां च नित्यशः ।
 संसाराम्भोनिधेर्गोरात्ममुद्धारपरायणः ॥ १९ ॥
 वेदवेदान्तनिरतस्सर्वशास्त्रविशारदः ।
 कामान्पूरयित्वा नन्दनां कविः कल्पद्रुमो यथा ॥ २० ॥
 गुणानन्दयितः पूज्यस्सर्वज्ञो विजितेन्द्रियः ।
 शोभिष्यति धर्मरतैस्सद्भिः परिवृतोऽनिशो ॥ २१ ॥
 लोके पूर्णकलः खे वै शीतांशुर्भगणैरिव ।
 सुशीलस्समदृक्शान्तो दान्तः श्रीमाङ्गगदगुरुः ।
 नित्यं सत्संप्रदायस्य वर्तयिता मुनीश्वरः ॥ २२ ॥
 कृपया यस्य लोके स्मिन्ननास्सर्वे निरामयाः ।
 श्रीरामभक्तिनिरतास्सदा धर्मपरायणाः ॥ २३ ॥

तादृशस्य महाबुद्धेयोंगिवर्यस्य सत्कवेः ।
 गुणान्कात्स्न्येन संवक्तुं कविकः क्षमतेऽधुना ॥ २४ ॥
 तेऽद्याप्यवतरिष्यन्ति भगवन्मतकोविदाः ।
 स्वयंभूप्रमुखास्सर्वे महान्तो नित्यमूरयः ॥ २५ ॥
 इंगितज्ञा हरराज्ञां वहन्तः शिरसा मुदा ।
 नाना देशेषु वर्णेषु तत्तत्कालेऽकर्मन्निभाः ॥ २६ ॥
 आयुष्मन्कृतिकायुक्तपूणिमायां धने शनौ ।
 स्वयंभूः कार्तिकम्याद्वाऽनन्तानन्दो भविष्यति ॥ २७ ॥
 योगनिष्ठः सदा धीमान् सदाचारपरायणः ।
 शिष्य आचार्यवर्यस्य रामानन्दस्य धीमतः ॥ २८ ॥
 जातः सुरमुगानन्दो नारदो मुनिमत्तमः ।
 वेशास्वामितपक्षस्य नवम्यां म वृषे गुरौ ॥ २९ ॥
 शुक्र वरुणभ योगे शीलरत्नाकरो महान् ।
 मन्त्रमन्त्रार्थसन्निष्ठो गुरुभक्तिपरायणः ॥ ३० ॥
 तस्यामेव तुलालग्ने तादृशीन्दुरिवाग्रधाः ।
 शम्भुरेव मुग्वानन्दः पूर्वार्चायार्थनिष्ठकः ॥ ३१ ॥
 व्यतीपातेऽनुराधाभे शुके मेघे गुणाकरे ।
 वमास्वकृष्णपक्षस्य तृतीयायां महाभतिः ॥ ३२ ॥
 कुमारो नरहरीयानन्दो जात उदारधीः ।
 वर्णाश्रमकर्मनिष्ठश्शुभकर्मरतस्सदा ॥ ३३ ॥
 वेशास्वकृष्णसप्तम्यां मूले परिधर्मयुते ।
 बुधे कर्केऽथ कपिलो योगानन्दो जनिष्यति ॥ ३४ ॥

योगनिष्ठो महायोगी मत्प्रेषित पदार्थजः ।
 सदा वैष्णवधर्माणामुपदेशपरायणः ॥ ३५ ॥
 मनुः पीपाभिधो जात उत्तराफाल्गुनी युजी ।
 पूर्णिमायां ध्रुवे चैत्र्यां धनवारे बुधस्य च ॥ ३६ ॥
 निष्ठातदीयकैर्कर्यैः सतस्तस्य महात्मनः ।
 नक्षत्रे शशिदैवत्ये चैत्रकृष्णाष्टमीतिथौ ॥ ३७ ॥
 प्रह्लादोपि कबीरस्तु कुजे मिहे च शोभने ।
 जानो वेदान्तमन्निष्ठः चैत्रवासस्तत्पदा ॥ ३८ ॥
 भवानन्दोऽयं जनको मलं परिधमंयुते ।
 वेशाखकृष्णपण्ड्यां तु कर्के चन्द्रे जनिष्यति ।
 राममेवापरो नित्यं स महात्मा महामतिः ॥ ३९ ॥
 भीष्मस्मेनाभिधो नाम तुलायां रविवामरे ।
 द्वादश्यां माधवे कृष्णे पूर्वाभाद्रपदे शुभे ।
 तदीयाराधने सक्तो ब्रह्मयोगो जनिष्यति ॥ ४० ॥
 वेशाखस्यासिताष्टम्यां वृश्चिके शनिवामरे ।
 धनाभिधो बलिस्माक्षात्पूर्वाषाढयुते शिवे ॥ ४१ ॥
 वरो भक्तिमतां जातस्तदीयाराधने रतः ।
 मदाचारपरो धीमान् गुरुपादाम्बुनार्चकः ॥ ४२ ॥
 वामवो गालवानन्दो जात एकादशीतिथौ ।
 चत्रे वयसकिञ्चन्द्रे कृष्णे लग्ने वृषे शुभे ॥ ४३ ॥
 सर्वदा ज्ञाननिष्ठोऽयमुपदेशपरायणः ।
 वेदवेदान्तनिरतो महायोगी महामतिः ॥ ४४ ॥

चैत्रशुक्लद्वितीयायां शुक्ले मेपेऽहपणे ।
 यम एव रमादामस्त्वाष्ट्रे प्रादुर्भाविष्यति ॥ ४५ ॥
 पालनं वैष्णवाज्ञानां कुर्वन्नित्यमतन्द्रितः ॥
 धर्ममेवाचरँल्लोके धर्माधीश उदारधीः ॥ ४६ ॥
 चैत्रे शुक्लत्रयोदश्यां गुरौ कर्के ध्रुवान्विते ॥
 उत्तराफाल्गुनीमङ्गे जाता पद्मावती सती ॥ ४७ ॥
 श्रीमदाचार्यमन्निष्ठा सा पदमेवापरामदा ॥
 धर्मज्ञा धर्मनिरता गुरुभक्तिपरायणा ॥ ४८ ॥
 एवमेतादृशैस्तैः शिष्यैर्द्वादशभिर्महान् ॥
 शोभिष्यत्यर्चितां देव्या पदमावत्या च संततम् ॥ ४९ ॥
 श्रीमानाचार्यवर्योऽयं रामानन्दो महामतिः ॥
 शिष्योपरिशिष्यैरन्यैश्च शाभितोऽहर्दिन भुवि ॥ ५० ॥
 पूज्यो ध्येयश्च जगतां रामरूपो जगद्गुरुः ॥
 हेतुः कल्याणमार्गस्य शुभदा ज्ञानदाऽनिशम् ॥ ५१ ॥
 यस्य दर्शन मात्रेण स्मरणेन सदा क्षितौ ॥
 नामव्याहरणाद् यस्य नरा मुक्ता न मंशयः ॥ ५२ ॥
 यदीयमतमालम्ब्य मंत्रमंत्रार्थभूषितम् ॥
 भूयते भूरियं लोकैराजितैर्मुनिवृत्तिभिः ॥ ५३ ॥
 गगनन्दायत लोके कीर्तियस्य महात्मनः ॥
 विशदा पावनी पुण्या शृङ्खला पाप नाशिनी ॥ ५४ ॥
 हरिभक्तिप्रदा मृणां तथा ज्ञानप्रकाशिनी ॥
 मोहान्धकारसंघप्रध्वमिनी शुभदायिनी ॥ ५५ ॥

स एष भगवद्रूपो धर्मो विश्रवणानिव ॥

द्विषतामिह दुर्धर्पस्सैवनीयस्मतां सदा ॥५६॥

तज्जन्ममासर्जनियो तदीयैस्तदीयजन्मोत्सवमुत्सवोत्सुकैः ॥

विधेययेव प्रतिकर्षणं विधानविज्ञैर्विधिना हि वैष्णवैः ॥५७॥

पूजोपहारैश्चैतैर्यथोचितं देवं समभ्यर्च्य सशिष्यसंघम् ॥

वाद्यैर्मृदगादिभिर्द्रुमैः परैर्द्रुमैस्तथागीतवरैः प्रसादयेत् ॥५८॥

तदीयजन्मोत्सवसत्कथाभिस्ततोपहेतुस्तुतिभिस्तथैव ।

अन्यैस्तदीयाचरितैर्व्रतादिभिर्निस्तन्निरेवं गुण्यभक्तितत्परः ॥५९॥

पदं मकुर्वन् विधिनस्तद्वर्त्तनं तन्नोपहेतुं च महोत्सवं बुधः ।

निरालसो भक्तिपुत्तोलनेन स्वाभीष्टमिदं महतीं न संशयः ॥६०॥

निशम्य तद्वाक्यमथो महात्मनो मुनेः प्रहृष्टः कलशोदभवस्य ।

मुनिः सुतीक्ष्णस्मसुतीक्ष्णबुद्धिविधिं च प्रष्टा हि तद्वर्त्तनेषुनः ॥६१॥

इति श्रीमदभक्त्यसंहितायां भविष्यखण्डे अगस्त्यमुतीक्ष्ण-

संवादे श्रीमद्भगवान्दावतारोपाख्यानं नाम

द्वाविंशदुत्तराष्टतमोऽध्यायः ॥१३२॥

॥ सुतीक्ष्ण उवाच ॥

तज्जन्म पावनं पुण्यं कथितं परमं त्वया ।

तदर्चनविधिं मह्यं वक्तुमर्हस्यथाऽधुना ॥ १ ॥

जगतामुपकर्ता त्वं दयालुर्धर्मा वरः ।

समभ्यर्च्यजना येनाचार्यं श्रेयं समानुयुः ॥ २ ॥

श्रूयतामितिचामन्त्र्य कथयिष्यति कुम्भजः ।

अम्बुजं वतुलाकारं त्रयोदशदलान्वितम् ॥ ३ ॥

सुव्यक्तं तैर्दलैर्व्यक्तेर्दर्शनीयं सुशोभनम् ।

तन्मध्येकर्णिकायान्तु यंत्रं षट्कोणमालिखेत् ॥ ४ ॥

तत्राचार्यवरं देवं रामानन्दमुदारधीः ।

विन्यसेत्सांगमर्काभं तं दिव्यगुणशालिनम् ॥ ५ ॥

सपूर्वदिशमारभ्य दलेषु क्रमशो न्यसेत् ।

अनन्तानन्दमुख्यैस्तान्पदमावृत्या तथा सह ॥ ६ ॥

यंत्रमेवं सुमंपाद्य तदर्चनपरायणः ।

पूजयेत्तत्र तान्सर्वानर्घ्यापाद्यादिभिर्वरैः ॥ ७ ॥

पूजोपहारैस्मकलेर्भक्त्या परमया युतः ।

एकाग्रमनसो भूत्वा तमेव मनसा स्मरन् ॥ ८ ॥

नम आचार्यवर्याय रामानन्दाय धीमते ।

मोक्षमार्गप्रकाशाय चतुर्वर्गप्रदाय च ॥ ९ ॥

इति मंत्राभिधानेन समर्चेद् विधिनार्चकः ।

अर्घ्याद्यादिभिस्तैर्गन्धपुष्पाक्षतैः फलैः ॥१०॥

नैवद्य रुतमेः श्रेष्ठैः पङ्कजैः सु मनोहरैः ।

ताम्बूलैर्दक्षिणाभिस्तं तोषयेन्नृत्यगीर्तितैः ॥११॥

एवं दलेषु शिष्यास्तान्पूजयेद्मलात्मना ।

प्रणवादि चतुर्थ्यन्त नाममन्त्रैर्विधानतः ॥१२॥

स्तुवीत मन्त्रिभिर्देवं मशिष्यं भक्तितत्परः ।

ज्ञानविज्ञानदीपतमुदारयशसं प्रभुम् ॥१३॥

जगद्गुरो तमस्तेऽस्तु हरये विश्वबन्धवे ।

मोक्षमार्गप्रकाशाय प्रणतार्तिं हराय ते ॥१४॥

सपार्षदाय सांगाय सदापावनकीर्तये ।

नमस्तेऽगाधवांघाय प्रणताभीष्टदायिने ॥१५॥

सत्यव्रताय शान्ताय दान्ताय जगदात्मने ।
 नमोऽनन्ताय महते निर्जिताशेष विद्विषे ॥१६॥
 विवृतज्ञानमुद्राय यागिने योगशालिने ।
 नमस्तेऽस्तु दयामिन्धो जगज्जन्मादि हेतवे ॥१७॥
 भीमे भवार्णवेऽनन्यः शरणः पतितः प्रभो ।
 पादपद्मद्वयं तेहं व्रजामि शरणं सदा ॥१८॥
 इत्यभिष्टुय तं धीमान्द्रव्यात्पुष्पाञ्जलिं मुदा ।
 प्रणमेद्दृग्दृग्वदभूमौ माष्टाङ्गं विधिवत्ततः ॥१९॥
 अथ जन्मप्रकथान्तस्य शाण्ड्यात्पापनाशिनीम् ।
 गदतां शङ्कतागाशु विशदां तां शुभप्रदाम् ॥२०॥
 एवं मुने त्वं जानीहि तदर्चनविधिं महत् ।
 लोकेऽनन्त विधानेन तमभ्यर्च्य महामनिम् ॥२१॥
 प्राप्स्यन्ति च क्षितौ लोका वाञ्छितार्थमसंशयम् ।
 नरास्तद्भावनायुक्ताः प्रणता विशदाशयाः ॥२२॥
 मुने स भगवानित्यं सुतीक्ष्ण जगदीश्वरः ।
 सत्यसन्धो हरिर्जातो विधाम्यति शुभं नृणाम् ॥२३॥
 चार्वाकादिमतारूढान्वहुधा दुर्मतीन्कलो ।
 करिष्यति नरान्जित्वा रामभक्तिं परायणाम् ॥२४॥
 यत्प्रतापवशादेव भविष्यन्ति कलौनराः ।
 धर्मनिष्ठास्तपोनिष्ठा मोक्षमार्गस्तास्मदा ॥२५॥
 तस्मिन्महीतलं याते नृणां किं वर्णयाम्यहम् ।
 भागं साक्षाद्भारौ प्रीते सच्चिदानन्दविग्रहे ॥२६॥

धन्यास्तदा तन्मुख्यर्पकजं नराः द्रक्ष्यन्ति ये तापहरं च पश्यताम् ।
 श्रोष्यन्ति वाचं परमामृतायनां ते भूमिभाग्या वत निर्मलाशयाः ॥
 इति श्रीमद्भगवत्स्यमंहितायां भविष्यत्संहो सुतीक्ष्णभक्त्यसंवादे
 सांग-संश्लेष-श्रीरामानन्द्यश्रार्चनप्रकारो नाम

त्रयस्त्रिंशदुत्तरस्ततमोऽध्यायः ॥१३३॥

शिष्यैर्द्वादशभिः श्रीमानथ तैर्कर्मन्निभैः ।
 सूर्यैर्द्वादशभिर्नित्यं यथा विष्णुः प्रतापवान् ॥१॥
 विराजमानस्मत्ततं पर्यटन्नवनीमिमाम् ।
 द्वारकादिषु तीर्थेषु तत्र तत्र जगद्गुरुः ॥२॥
 विद्विषां जित्वरो वादैः श्रुतिस्मृतिममुत्थितैः ।
 विपरीतान्वशीकुर्वन् कुर्वन् शिष्यांश्च तानथ ॥३॥
 शङ्करं मन्त्रगजं तेभ्यश्चोपदिशन्मुनिः ।
 मन्त्रार्थं श्रावयन्नित्यं मन्त्रज्ञैस्तेरुपामितः ॥४॥
 आसमुद्रं चतुर्दिक्षु विचरन्धर्मतत्परः ।
 कर्ता वै बहुधालोकं रामाभिरत्नमुत्तमम् ॥५॥
 लेप्यन्ति नास्तिकास्तस्य प्रतापद्वतनैजमः ।
 तमोपऽहे यथा सूर्येऽभ्युदिते तारकागणाः ॥६॥
 एवमेवात्र विवरन् सुतीक्ष्ण सर्व तो मुनिः ।
 श्रेयः संपादयन्नृणां हरन्नज्ञानजं तमः ॥७॥
 राजिष्यते स्वयं स्वीयैर्भानुभिर्भानुमानिव ।
 अमंहेप्यैर्गुणैः शुभ्रैर्जगत्पालनतत्परः ॥८॥
 प्रकृत्या शीलसम्पन्नो दयारत्नाकरो महान् ।
 धर्मत्राणाय लोकेऽस्मिन्नवतीर्णः परः पुमान् ॥९॥

महाव्रतधरो धीमान् सर्वविद्याविशारदः ।
 निःस्पृहः सर्वकामेभ्यः स्वात्मारामो महामुनिः ॥१०॥
 रामानन्द उदारकीर्तिरतुलः श्रीयोगिवर्याग्रणीः ।
 पाखण्डाद्रिविभेदनाशनिरहो धर्माभिसंवर्द्धनः ॥
 श्रीमान् दिव्यगुणालयो निजयशः स्तोमाङ्कितक्षमातलः ।
 सिद्धय्येषपदाम्बुजो विजयते ज्ञानान्धकारोऽपहः ॥११॥

वेदार्थसंपादकसम्पुखाम्बुजस्त्रितापमहारक चारुलोचनः ।
 भवाविषमंतरकपादपंकजो निजेषूपन्यासितकल्पपादयः ॥१२॥
 विभूतशत्रुर्धृतिमान् धरातलं यज्ञस्ममूर्धेर्विदधत्पुनर्मलम् ।
 प्रकाशमानान्मविभूतिभूषितः प्रभूतविद्याप्रभवः प्रभाववान् ॥१३॥
 प्रतापमंतापितशत्रुमण्डलः सुमयशोऽलङ्कृत भूमिमण्डलः ।
 समीहिता शेष जगत्सुमंगलः मदर्वनीयोऽखिलमंगलायन ॥१४॥
 सत्संपदायाम्बुज भास्करोऽग्रणी विनीतनीताखिलवाङ्मिताथदः ।
 निगूढवेदार्थविदीपनस्तेरुदारवृक्षैर्महिना महान्मभिः ॥१५॥
 गुणेन शीलेन श्रुतेन कर्मणा प्रकाशमानः किरणैर्यथा रविः ।
 हरस्तपो नैशमुदारदीधिनिविनिजिता शेष सपरत मंडलिः ॥१६॥
 कगेतु नोऽध्वदयोधिप्रह्वलं सपार्षदोदशितभूर्यनुग्रहः ।
 गृहीतधर्मयितनाकृतिः कृती कृतार्थपल्लोकमिमज्जराचरम् ॥१७॥
 उपमूलं धर्मावरोधिभिर्जगत्सनाथमाधो विदधन्कृपानधिः ।
 विधत्सुरस्याघ निवर्हणं यशस्तनोतु नोऽजसयमो सुप्रह्वलम् ॥१८॥
 जगत्प्रतीवानभितो निरक्षयश्चकार धर्मापिरतं सतां प्रभुः ।
 अशेषसत्पूजितपादपंकजस्सुमंगलं नो चितनोतु सर्वदा ॥१९॥
 इति श्रीमद्गणस्यसंहितायां भविष्यखण्डे अगस्त्य सुतीक्ष्ण सवादे श्रीरामानन्द
 दिग्विजयवर्णनं नाम चतुस्त्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३४ ॥

रामानन्दमहं वन्दे योगिध्येयांघ्रिपंकजम् ।
 उदारयशसं देवं शान्तमूर्तिं शुभप्रदम् ॥१॥
 अष्टोत्तरशतं वक्ष्ये नाम्नां यस्य महात्मनः ।
 यैरिज्यमानो भगवान्कामानाशु प्रदाम्यति ॥२॥
 पठतां पठितैर्यातैर्यायतां शृण्वतां श्रुतेः ।
 शुभप्रदैस्सतां ब्राह्मैर्महापापप्रणाशिनैः ॥३॥
 रामानन्दो रामरूपो राममंत्रार्थवित् कविः ।
 राममंत्रप्रदो रम्यो राममंत्ररतः प्रभुः ॥४॥
 योगिवर्यो योगगम्यो योगज्ञा योगसाधनः ।
 योगिमेव्यो योगनिष्ठो योगात्मा योगरूपधृक् ॥५॥
 सुशान्तः शास्त्रकृत् शास्ता शत्रुजिह्वान्निरूपधृक् ।
 समयज्ञश्शमी शुद्धः शुद्धधोश्शुद्धवेषधृक् ॥६॥
 महान्महामनिर्मान्यो वदान्यो मीमदर्शनः ।
 भयहृद् भयकृद् भर्ता भव्यो भवभयापहः ॥७॥
 भगवान्भूतिदो भोक्ता भूतेज्ज्यो भूतभृद्विभुः ।
 ज्ञानज्ञेयोऽतिगंभीरो गुरुज्ञानप्रदो वशी ॥८॥
 अमोघोऽमोघहृद् दान्तोऽमोघनात्तिरमोघवाक् ।
 सत्यस्सत्यव्रतस्मभ्यः सत्प्रियः सत्परायणः ॥९॥
 मिद्धपः मिद्धिदः साधुः मिद्धिभृत् मिद्धिसाधनः ।
 मिद्धसेव्यः शुभकरः सामवित्सामगो मुनिः ॥१०॥
 पूतात्मापुण्यकृतपुण्यः पूर्णः पूर्तिकरोऽध्वहा ।
 अज्ज्योऽर्चकः कृती सौम्यः कृतज्ञः क्रतुकृत् क्रतुः ॥११॥

अजय्यः शीलवाञ्छेता विनेतानीतिमान् स्वभूः ।
 वाग्मी श्रुतिधरः श्रीमान् श्रीदः श्रीनिधिरात्मदः ॥१२॥
 सर्वज्ञः सर्वगः साक्षी समः समदृशिः सदृक् ।
 शुभज्ञः शुभदः शोभो शुभाचारः सुदर्शनः ॥१३॥
 जगदीशो जगत्पृथ्वो यशस्वी द्युतिमान्ध्रुवः ।
 इतीदं कीर्तितं यस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥१४॥
 अधोयीताथ शृणुयाच्चश्चापि परिकीर्तयेत् ।
 अवाप्नुयान्छिष्यान्लोके विपुलां श्रद्धया युतः ॥१५॥
 अर्चन्तस्तत्रेन यो नित्यमुपचारैस्सुमम्भृतैः ।
 अनेन विधिवत्तस्य प्रसीदेत्स गुणाकरः ॥१६॥
 तस्मिन्देवे प्रमन्ते तु न किञ्चित्तस्य दुर्लभम् ।
 इहलोके परत्रापि जगदीशे जगद्गुरौ ॥१७॥
 श्रद्धया भाषमासेऽर्चन्तस्सम्यां तु विशेषतः ।
 संवत्सरार्चनाज्जातमाप्नुयात्फलमुत्तमम् ॥१८॥
 श्रद्धालवे सुशीलाय गुरुभक्तियुताय च ।
 उपदिशेद् ब्रह्मनिष्ठाय वेदव्रतरताय च ॥१९॥
 गोपनीयमिदं सद्भिस्सदा सर्वं प्रयत्नतः ।
 न देयं नास्तिकायाथ निन्दकाय गुरुद्रुहे ॥२०॥

स पूजितेष्टप्रदपादपङ्कजः समर्चकानां विदधातु मंगलम् ।

स ताम्रजस्रं जगदीश्वरो हरिर्यथाऽश्रितोऽस्मी कलिकल्पपादपः ॥२१॥

विराजतेऽयं तस्मां प्रसूतिगुणाकरस्मच्चरितो द्विजार्थ भूः ।
 सञ्जनाग्यसाभिष्टुतो वशंवदो बृहद्ब्रतश्चाकृत्यावलीढितः ॥२२॥
 इति श्रीमदगस्त्यसंहितायां भविष्यत्खण्डे अगस्त्यमुनीश्वर-
 संवादे श्रीरामानन्दाष्टोत्तरशतनामार्चनमाहात्म्यवर्णनं
 नाम पञ्चविंशदुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३५ ॥

❀ इति श्रीरामानन्दजन्मोत्सव सम्पूर्णम् ❀

इस अगस्त्य संहितोक्त श्रीरामानन्द जन्मोत्सव व्रत कथाका ललित
 हिन्दी पद्यानुवाद दोहा चौपाई में, श्रीअयोध्या निवासी साकेतवासी
 प्रसिद्ध भक्तमाली श्रीराघवेन्द्रसत्वा स्वामि श्रीमीतारामशरण रामरस-
 रंगमणिजी ने श्रीरामानन्दयशावली नाम से किया है वह आगे देखिये ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथ श्रीरामानन्द यशावली प्रारम्भः ।

श्लोकाः—

रामं कापलश्याममुन्दरतनुं पीताम्बरालंकृतम् ।
 कोटीन्दुकप्रकाशमानममलं राजीवनेत्रं विभुम् ।
 केशोरं द्विभुजं धनुःशरधरं श्रीमीतया संयुतम्
 वन्देऽहं भरतादिवन्धुसहितं राजाधिराजं परम् ॥ १ ॥
 फुल्लश्याममरोजमुन्दरदृशीं सौंदर्यमद्वैभवाम्
 भास्वत्कोटितनुप्रभां स्वजनहृद्धान्तापहां तापह्वाम् ।
 सीतां कोटिशरच्छशिखवियुतां श्रीरामपार्श्वस्थिताम्
 वन्देराघवराजपट्टमहमहिषीं माधुर्यमीमामुखीम् ॥ २ ॥
 रामानन्दमहं वन्दे श्रीरामांशाऽवतारकम् ।
 आचार्याणां शिरोरत्नं मंत्रराजप्रचारकम् ॥ ३ ॥

सो०-वन्दौ सीताराम, भरत लखण रिपुहन सहित ।
 सरयू अवध सुधाम, सकल मंत हनुमंत गुरु ॥ १ ॥
 वन्दौ देव गणेश, भक्ति भारती शिव शिवा ।
 रामायण श्रुति शेष, कुम्भजादि मुनि राम रत ॥ २ ॥
 जय जगजलधिजहाज, भक्ति प्रपत्ति मुनिधि भरित ।
 श्रीसम्प्रदा दराज, कर्णधार आचार्य जय ॥ ३ ॥

एक समय कुम्भज अपिराजू । करि प्रभान ह्वनादि सुहाजू ॥
 बैठे आश्रम शिष्यन पाई । रामतन्त्र उपदेश करहीं ॥
 मुख्य शिष्य तेहि समय सुहाये । आय सुतीक्ष्ण पद शिरनाये ॥
 बैठे गुरु सम्मुख कर जोरी । पर उपकार कृपामति शोरी ॥
 होनहार कलिमई नर जानी । अल्पाधुपी अधम अभिमान्ती ॥
 विषयविलीन विमुख श्रुवीरा । सब विधि बूढ़े भवनिधि भीरा ॥
 तिन मुखकारण तारण काजू । पूछे परम उपाय जहाजू ॥
 मुनिय सिन्धु शेषक मम स्वामी । कल्याणकर सबज्ञ अगामी ॥
 कलियुग नर हं ई अनि मुदा । वेद विमुख शानक आरुदा ॥
 तिनकर जेहि उपाय कल्याणा । होइ कहिय मोइ कृपा निधाना ॥
 सुनत आसुर्य सुतीक्ष्ण वाणी । धर्म प्रश्न परपारथ मानी ॥
 आम्बर अल्प अर्थ विस्तारा । मे प्रमत्त मन मुदित उदारा ॥

दो०-बोले वचन सुतीक्ष्णहिं, अति सराहि मुख पाय ।
 पर उपकारी कलशभव, शिष्य हियहिं दर्पाय ॥ १ ॥
 धन्य सुतीक्ष्ण धन्य तुम, पर उपकार प्रवीण ।
 कोन्ह प्रश्न अतिशुचि सुखद, कारक कलिमल क्षीण ॥ २ ॥

कहाँ सुनहु इतिहास सुहावा । जो सनकादिक मोहि सुनावा ॥
 बहभागी मुनिवर मतिभारी । विधिसुत नारद नग उपकारी ॥
 लोक विलोकि लोग अधलीना । वेद विमुख विमूढ बहु दीना ॥
 तब चिन्तत तिनकर कल्याणा । दिव्यधाय गे मुनि मतिमाना ॥
 तहाँ महा सिद्धमन माहीं । बैठे प्रभु शिर छत्र सुहाहीं ॥
 सिद्धिन माँहत मिद्धि अवतमा । वेद वन्दि वपु कर्त प्रशमा ॥
 सकल वरायुध वरतनु धारे । सेवहि प्रवर पारपद प्यारे ॥
 दिव्य विभूषण वसन सम्हारे । निज निज सेवा लिये मुखारे ॥
 श्याम कामशन सुभग कृपाला । उर भुज राजिव नयन विशाला ॥
 नख शिखर दिव्य विभूषण भ्राजैं । दिव्य दुहल पीत अति राजैं ॥
 वाम भाग बाया अधिरामा । शोभित सारस नयनी श्यामा ॥
 युगल किशोर अखंड अनूषा । राजत मञ्चित आनन्द रूपा ॥
 दो०-अम आसीन अशेष जग कारण करुणाधाम ।
 नारद नयन निहारी अवि, कीन्हें उ दंड प्रणाम ॥ ३ ॥
 करि प्रणाम कर जोरि तन पुनर्कित गदगद वैन ।
 करन लगे अमनुति अमल, नेह नीर भरि नैन ॥ ४ ॥
 जय जगयोनि अयोनि अनूप । विभु अव्यक्त व्यक्त तर रूप ॥
 नमो अनन्त स्वतन्त्र अविकारी । भव संभव पालन लयकारी ॥
 जय जय प्रभु परमात्म स्वामी । रहित आदि मध्यान्त अगामी ॥
 प्रभो विश्ववपु विश्व सुबन्धो । जय विश्वम्भर कल्याण सिन्धो ॥
 नाथ जीव शानक रत भारी । परे घोर संसार मभारी ॥
 अमल अमित कर्मन वश परिके । सहत दुमहु दुख बहुतनु धरिके ॥
 धर्म विमुख आलस आधीना । विषय विवश मानस अनिदीना ॥
 सुखहित करहि उपाय अनेका । लहहि न लेहाहु सुख लव एका ॥
 ते केहि युक्ति मुक्ति मुख सोवैं । केहि विधि धर्म निगमनि होवैं ॥
 कृपामिधु सोइ करिय उपाई । जेहि विधि जीवन कर दुख जाई ॥

कहे धर्म वेदादिक माहीं । कष्ट माध्य नर कस्त सो नाहीं ॥
ताते अतिशय सुगम उपाऊ । कहहु नाथ निज भक्ति बढाऊ ॥

दो०—बन्धन विविध विनाशकर, जीव मुक्ति दातार ।

जग रक्षक अम धम के, तुमहि बतावन द्वार ॥५॥

सुनि शुचि नारद की विनय, विहँमि वदन वर वैन ।

प्रीति सति रमरङ्गप्रणि, बोले राजिव नैन ॥६॥

सुनिये मुनिवर अति बहुभागी । कहत आप जो जगहित लागी ॥

सो मथ्यहि हम मन गुणिगारवा । करव तुम्हार पूर अभिलाषा ॥

भगवत्पद मंडित अनुराग । तेहि मधि तीरथ राज प्रयाग ॥

प्रायत पुण्यमथ वेदन माहीं । लेख अंश अवतार तहाँ ही ॥

तुमहि आदि निज नित्य समीपी । परिकर प्रेम प्रभाव मद पी ॥

अवतीरण हाई सबन समेता । युक्ति प्रचारव मुक्ति मुद्रेता ॥

जो भव चक्र बक्र शमनीया । वर्धक भाव भक्ति रमणीया ॥

सुगम सुमाधन बोध विधायक । सुखद धर्म पथ परम सहायक ॥

वेद शास्त्र वेदान्त न लारा । शुचि सन्तन आचरित अचारा ॥

तहाँ तुम सब अवतरि शुभदेशा । कबिहूँ मम मारग उपदेशा ॥

जे गहिहै मम सत्पथ प्राणी । भक्ति समेत परमाहित जानी ॥

ते बिन श्रम संशय सुख स्वामी । लहिहैं सुगति सुधारस सानी ॥

द्व०—सानी सुधारस नाथ वाणी सुनि सुमुनि नारद तहाँ ।

आनन्द अम्बुधि मग्न मानस मिटगये मंशय महा ॥

वह प्रेम अम्बु प्रवाह अम्बक वपुष पुलकावलि बई ।

अनुभवत दृढ़व्रत हरि वचन अभिलाष उर पूरण भई ॥१॥

पुनि जोरि कर कृत कृत्य श्रीपति पद पदुम शिरनायक ।

पर धामने गमने परम मुद आय आयसु पायक ॥

स्वर ब्रह्म लीन वजाय वीण सुगाय रघुवर गुण पगे ॥

पूजित सुरामुर विधिमुवन मुनि लोक निहूँ विचरन लगे २

सो०—गमने देवकृपीश, तब सुर मुनि वन्दित मुदित ।

वमत रमत जगदीश, दिव्यधाम रामा सहित ॥३॥

कारक जीव उधार, हरि नारद मंवाद यह ।

भयो यथा अवतार, सुनहु सुतीक्ष्ण मो चरित ॥४॥

अब गत द्वापर पुराय निधाना । गे निज लोक कृष्ण भगवान्ना ॥

तब प्रवेश कीन्हो कलि काला । अधम वर्धक कठिन कराला

भे पातक रत सब नर नारी । शांख अचार गहित अविचारी ।

विष्णुख सुगति साधन पथ नाना । निन्द्यमन्दपति पशुन समाना ॥

अल्पापुष मुख रहित अधामी विपरी सन्त संग परित्यागी ॥

बाटे जे नास्तिक चहुँ ओरी । तिन कहैं जीति वाद वरजोरी ॥

आचरन वेदान्त विज्ञाना । भगवत धर्म मदा सुखदाना ॥

धापन यदपि किये जगमाहीं । पै नहि बहत देखि तिनकाहीं ॥

तब हरि कृपा मिधु भगवान्ना । कारक सत्य वचन निज धाना ॥

बदन किलोके अति कलि काला । दुख दुर्मतिपुत जीव विहाला ॥

सुमिरि मथम निज गिरा उदार । तब मन कीन्ह लेन अवतारा ॥

विधि नारद आदिक अनुशामी । सबहि दिये अनुशासन स्वामी ॥

दो०—चारि सहस शत तीनिभो, गत कलिकाल मलीन ।

तेहि अवसर नरलोक हरि, निवसन हित चित दीन ॥७॥

गंग यमुन भंगम जहाँ, तीरथराज प्रयाग ।

पुण्यरूप जेहि पूजही देव सहित अनुराग ॥८॥

तहाँ महाभागी अनुशामी । कान्य कृष्ण द्विज जाति आदागी ॥

नाम भूरिकर्मा शुभ शर्मा । भक्ति योग युत रत निज धर्मा ।

नाम सुशीला तिनकी नारी । मनहुँ अदिनि कश्यप की प्यारी ॥
 आयो माघ अयोध पुनीता । पक्ष अमित सातैं रवि प्रीता ॥
 नखन सुचित्रा चारु विचित्रा । सिद्ध योग युत परम पवित्रा ॥
 प्रभु प्रकटन कर अवसर जानी । नव ग्रह योग भये शुभ धानी ॥
 विमल मलिल निर्मल नभ आशा । शुभिसन्तन मन परम हुलामा ॥
 मधुर बयानि नहै सुख देनी । दुग्धधार चलि-ललित त्रिवेशी ॥
 मान दंडदिन आयो जनही । कुम्भ लगन संपन्न भो तवही ॥
 मकटे रवि इव करुणाकन्दा । सन्त सरोजन प्रद आनन्दा ॥

दो०-जगनिवाम जगदीशहरि, जगत शरण दातार ।
 जनरक्षण प्रण दक्ष अति, लीन्ह मनुज अवतार ॥६॥

छं०-अवतरे परेशा मनहुँ दिनेशा मुतद्विजेश तनुधारी ।
 पूजित शिव शेषा शुभ उपदेशा तारकमंत्र प्रचारी ॥
 कलिकलुषविनाशी प्रेमप्रकाशी मुखराशी दुखहारी ।
 प्रभुइच्छाचारी स्ववशाविहारी जगजीवन्ह उपकारी ॥३॥

रक्षक श्रुतिमेतू मत्कुलकेतू वन्दित सदा अमानं ।
 निगमादिसुगीतं चरितपुनीतं भवभयशमन निदानं ॥
 सेवित वर चरणं चानुर वरणं शरणाद कृपानिधान ।
 प्रदमणिरसंगहि मियवरसंगहि प्रेमभक्ति वरदानं ॥४॥

दो०-अथ घालक गो मन्त द्विज, पालक कृपाअगार ।
 बालकवपु रोदनलगे खलन रुवावन द्वार ॥१०॥

सुनि मृदु रुदन सदन सब नारी । गाय बटी सोहिलो सुवारी ॥
 तब द्विजवर मन मोद अगाधा । किये कर्म नान्दीमुख आधा ॥
 दयी बहुत संपदा लुटाई । वजन लगी आनन्द बधाई ॥

द्विज जाया मति मंगलधारा । आई सब द्विजराज अमारा ॥
 कण्ठि निछावर देहि अशीषा । चिर जीवहु सुत हं जगदीशा ॥
 भो अम जन्म महात्मव भारी । कीन्ह छटे दिन छटी सुवारी ॥
 होत गान आनन्द बधावा । वरहैं नामकरण दिन आवा ॥
 ज्ञाना भणक पुनोहित आये । विधि मम जन्मपत्र लिखि लाये ॥
 मंगलकर्म सविधि करवाये । गमानन्द सुनाव सुनाये ॥
 लखि लक्षण अदभुत अनुगम । फल कृपडली सुनावन लागे ॥
 मुनहु द्विजेश मुकुन परिपाके । सकल विलक्षण लक्षण याके ॥
 होइहि अति आपुनी अंगीसी । आचारज लक्षण पुन योगी ॥

दो०-विशद वेद वेदान्त मत शास्त्र समेत पुराण ।
 ज्ञाना वक्ता धर्मको, कर्ता कर्म ब्रह्मान ॥११॥
 कीर्तिदान उदार अति, ज्ञानवान गुणवान ।
 नीतिमान मतिमान पुनि, द्वै द्वै वशी निदान ॥१२॥

धर्म सेतु रक्षक उपकारी । भवनिधि वृद्ध जीव उधारी ॥
 वैष्णव धर्म सदा उपदेशी । राम भक्त पर प्रेमावेशी ॥
 पूज्य मन्त्रिप्रिय इन्द्रिय जेता । जगद्गुरु मुनि शील निकेता ॥
 चारित्र वर्ण इतर जिव जाला । जगद्गुरु सब पर परमकृपला ॥
 समदर्शी विरक्त श्रीमन्ता । श्रीमन्ता विचर्यन धन्ता ॥
 आनन अमृतज सदा प्रमन्ना । अमित दिव्यलक्षण संपन्ना ॥
 कहैं लखि गुणगण कहैं द्विजेशा । नव सुत भयो सनहु परमेशा ॥
 मुनिसुत गुणदम्पति द्विज राजा । भयं मुदिन मन सहित समाजा ॥
 दिये दान बहुमान समेता । गये पुनोहित आश्रिष देता ॥
 नित नव मंगल द्विज वर गेहा । लालत मन्त्रहि सहित सनेहा ॥
 अन्न प्राशनी आदि उल्लाहा । कन भये सादर द्विज नाहा ॥

दो०--यजिनिधि रामानन्द प्रभु, परम प्रेम आधीन ।
सब शिशुर्नला ललित करि, मान पिन्नि मुखदीन ॥१३॥
पाँचवर्ष कीने विमल, जननी बाल विनोद ।
किये द्विजानि सुजातियुत, मुरडन मंडित मोद ॥१४॥

तब लै बहु महिसुरसुत संग । बंधिन विचरहि पाल उमंग ॥
खेलहि मिले बालकन माहीं । रघुवर लीला ललित कराहीं ॥
जम लख प्रभु पूजन पितु पाहीं । तेमोइ करि हार ध्यान धराहीं ॥
बधु बुधि विमल बहै यह भाती । जस शशि कला पक्ष सत राती ॥
आठ वर्ष के मे मनिमाना । भयो यज्ञ उपर्वन विधाना ॥
तबने अन्नचर्य भग लीन्हे । पढ़न विरह दिना विनदीन्हे ॥
पिताई प्रबोधि बोध मुख राशी । पुनि आयि करुण कर काशी ॥
तहाँ वेद वेदान्त विशेषा । सकल किये करनल अवशेषा ॥
सोइ वर्ष विमल वय जानी । करन चहे भगगुरु विज्ञानी ॥
जोहि जानि जग जलधि जहाजू । श्रीमदा नलिन दिनराजू ॥
गुरु राघवानन्द महाना । राम भक्त विज्ञान निधाना ॥
आत्म अरुणि लिये उपदेशा । तारक राममन्त्र परमेशा ॥

दो०--दोउ महान मिलि मोहहीं, सम वशिष्ठ रघुनाथ ।
उपमा अषग समुद्र जम, सहित ब्रह्मद्वय पाथ ॥१५॥
स्वामिहि सेवा वश किये, रामानन्द उदार ।
दै सरवम गुरु रामपुर, गवने दशयें द्वार ॥१६॥

तब श्रीरामानन्द दिनेशा । उदित भये तारक उपदेशा ॥
छायो लोक प्रताप प्रकाशा । कलि करनष पातक तमनाशा ॥
घोर कुपन्थ चोर बिलखाने । कुमुद कर्म कांडी सकुचाने ॥
सोईवादी तारा तय मे । नास्तिक कुल उलूक लुकि लयमे ॥

रामभक्त सरसीकह टुन्दा । रविलखि मे विकसित सावन्दा ॥
श्रद्धा विरति धामवत धर्या लहे कोक कोकी मुख पन्दा ॥
जबने रामानन्द सुषामी । निवसे जगत प्रकाशी काशी ॥
तबने मये सकल मुखराशी । काशी काशीईश निवासी ॥
नितप्रति रामकथा मतसंगा । कहत बहत जनु दूगारि गंगा ॥
तारत जीवन मरत मडेसु । स तन तरत स्वामी उपदेशु ॥
मरे ललन कहैं भैरव सोयें । प्रभु दै दण्ड जियन परवोयें ॥
गुण अनल तिनके मुखकारी । तब वणैं अम को मति धारी ॥
छ०--भारी प्रभाव प्रताप रामानन्दको को कहियेके ॥
जा परम प्रभु अवतार शारद बदन यश जाको जकै ॥
जे गणक गुण प्रथमहि सुनाये कुरडली गाये जवै ॥
ते प्रगट लक्षण जग बिलक्षण देखिये दूने मवै ॥५॥
जय धन्य रामानन्द स्वामी लोकमें जाकी कृपा ॥
श्रीराम भक्त अशेष वेश बिलोकि खल खाने त्रपा ॥
जेहि संप्रदाय मुआय दुखगत विमुख सब शुभ अंगह ॥
भो सुखी भीतारामशरण कहाय मणिरमरङ्गह ॥६॥
मो०--राम लियो अवतार, रामानन्द कहाय के ।
मो मय चरित उदार, कहेउ सुनीक्षण गायके ॥
प्रभु अनुशासन पाय, विधि शिव नारद आदि दै ।
अवतीरण मे आय, जेहि विधि अब सो यश सुनो ॥७॥
पये प्रगट परिकर हरि प्यारे । श्री सम्पदा प्रचारन हारे ॥
जानन वारे रति हरि मनकी । कारक शिर धरि आज्ञा निमकी ॥
विधि नारद शिव सनत कुमारा । कपिलदेव मनु भूप उदारा ॥
निधि पहलाद जनक अरु भीषम । बलि शुक्रदेव रमा तेमहि थम ॥

ये तेह प्रगटे जगमाहीं । पाय सु मधु अनुशासन काहीं ॥
 भये स नाना वरण विनीता । नाना देशन किये पुनीता ॥
 नखत कृत्तिका कातिक धून । शनि धन लग्न भये द्विज सुन ॥
 प्रथम आय अवतरे विधाता । नाम अनन्तानन्द बिल्याता ॥
 पदे वेद वेदान्त द्विजार्ह । सुमिरि स्वरूप शिष्य भे आई ॥
 मित्र परम प्रेमी रघुनाथा । सिष्य ह्यथ धरे जिनह माथा ॥
 रामानन्द शिष्य वर सोई । जेहि समान जग और न कोई ॥
 पुनि वैशाख कृष्ण गुरु वारा । तिथि नवमी वृष लग्न उदारा ॥
 दो०-मुनि नारद द्विज वंश महँ, भये सुसुरानन्द ।
 श्रीरामानन्द शिष्य निज, कीन्हें करुणा कन्द ॥१७॥
 मन्त प्रभाद प्रभाव विद, प्रथमहि पाये स्वाद ।
 मोह याहु तन मत करी, महिमा महाप्रसाद ॥१८॥

माधव शुक्ल नौमि भृगुदिवसा । तुलालग्न मतधिषा सुनिवसा ॥
 सुखानन्द मे शंभु गुजाना । शालवान मतिमान महाना ॥
 आचार्य गुरुभक्ति निधाना । निरत मंत्रमंत्रार्थ विधाना ॥
 तीज कृष्ण वैशाख सुपामा । मेष लग्न दिन शुक्र सुवासा ॥
 व्यतीपात अनुगथा माहीं । मननकुमार धरे तन काहीं ॥
 भयो नाम नरहरियानन्दा । राम भक्त कुल कैरव चन्दा ॥
 तिथि सोइ मास कृष्ण बुध साँनै । कर्क लग्न अरु मूल मिलानै ॥
 योगानन्द कपिल भे आई । योग निधान निरत रघुगई ॥
 कारक रामतत्व उपदेशा । परम भागवत धर्म हमेशा ॥
 प्रभुके पौत्र शिष्य मुखकन्दा । दीन्हें भँव अनन्तानन्दा ॥
 चैत्र लग्न धन पूरण पामी । ध्रुव बुध उत्तर फाल्गुनि खासी ॥
 मनु महाराज अवतरे पीपा । रामानन्द शिष्य कुल दीपा ॥

दो०-जगत विदित मियरामपद, पापा प्रेम प्रताप ।
 लगी भागवत भुजन में, जिनकी लाई आप ॥१६॥
 अमित अष्टमी चैत्रकी, सिंह लग्न कुज वार ।
 नखत भृगुशिरा जानिये, शोभन योग उदार ॥२०॥

नाम कशीर भये प्रहलाद । छाके रायना रम स्वाद ॥
 रामभक्त वेदान्त विज्ञाता । काशी वाम निरत जन वाना ॥
 छत्र वैशाख अमित काँश वारा । मूल शनि ननुकर्क उदारा ॥
 जनमें आय जनक महाराजा । भावानन्द सुनाम दशजा ॥
 निरत राम सेवा मतिमाना । गुरु प्रेम विज्ञान निधाना ॥
 माधव कृष्ण द्वादशी काही । पूर्वा तुला भानुदिन माहीं ॥
 भीष्म सो मेन भक्त अवतार । भये रामपद प्रेम अगार ॥
 महा सन्त सेवा मति पाया । भक्तियोगायुत अति बढ भारी ॥
 तानै मास पक्ष वृश्चिक शनि । आठै पूर्वाषाढ नखत भनि ॥
 बलि अवतीर्ण भये अविदाता । धना नाम जग धन्य विन्याता ॥
 सुमति सन्त सेवा लयलीना । महाचार गुरु भक्ति प्रवीणा ॥
 चैत्र अमिन एकादशि काहीं । सोम धनिष्ठा धनतनु माहीं ॥

दो०-मे शुक्रदेव मुज्ञान निधि, नाम गालवानन्द ।
 उपदेशक वेदान्तविद, योगी रत रघुचन्द ॥२१॥
 चत्र शुक्ल चित्रा दृढ़ज, भृगुदिन लग्न सुभर ।
 जनमत भ यमराज जग, रचि रैदास मुवेर ॥२२॥

रामदास शासन मति दामी । महा भागवत धर्म प्रकाश ॥
 निह किचन उदार गुरुमेवा । भावुक रामतत्वके मेरी ॥
 कर्कलग्न सित चैत्र त्रयोदशि । ध्रुवशुक्रदिन उत्तर फाल्गुनिलमि ॥
 पञ्चावती पञ्चमा अशा । अवतीरण भइ तिय अवतंसा ॥

विषय विगत रघुवर रति सानी । गुरु पद भक्ता तन मन बाणी ॥
 परम पुरुष गुनि राम विहारी । और सबै जग जान्यो नारी ॥
 ये प्रभु शिष्य मुख्य मति भावा । तरुण तरुणि सम तेज निधाना ॥
 नाना वरण सु नाना देशा । प्रगटि आय लीन्हें उपदेशा ॥
 इनके चरित विमल विधि नाना । भक्तमाल यशजाल प्रमाणा ॥
 सहित तेरहों शिष्य आरामी । राजन श्री रामानंद स्वामी ॥
 शिष्य शिष्य उप शिष्य समेता । शोभित पूजित कृपा निकेता ॥
 जगद गुरु आचार्य भूष । रामानन्द रामके ७५ ॥

ख०-श्रीरामरूप अनूप रामानन्द स्वामी हैं मदा ।
 शुचिज्ञानदायक ध्यानलोक हरण मल भाया मदा ॥
 श्रीमं प्रदाय ब्रह्म विभवे मनु मम रघुनाथ क ।
 जग जलधि से जीवन उतारे जलधि करुणापाथ क ॥ ८॥
 जिन्ह नाम गावत चरण पदवत जीव निगत प्रयाणी ।
 प्रभु मनहि भावत भक्ति मुक्तिहुँ लहत जन संशय नारी ॥
 गहि जामु तारक मंत्र मार्ग लहि अभय जन गाजरी ।
 भू लोक को अपित किये वर भक्ति मुनि मम गजरी ॥ ९ ॥
 सो०-शारद शशी समान, कीरति रामानन्द की ।
 पावन पुण्य महान, हरणी पातक छन्द की ॥ १० ॥
 रामभक्ति दाता, ज्ञान विराग विधायनी ।
 मुनतहि भली प्रकार, नृखदमोह तम हारणी ॥ ११ ॥

अम प्रभु भगवत रामानन्दा । परम धर्म सतु जनु मुखकन्दा ॥
 हिय विचार किय कृपा निकेतु महि दिग्विजय कनके हेतु ॥
 मंग शिष्य पर शिष्य अनन्ता । निमि निहूँ सम्प्रदाय बहु मंता ॥
 आगे फहरत ध्वजा निशाना । तेहि पर लस वीर हनुमाना ॥

जय जय मियाराम ध्वनि छाई । चले विजयकर शंख बजाई ॥
 प्रथम पूर्व जगदीश पधारे । शासन रघुवर भक्ति प्रचारे ॥
 पुनि गे दक्षिण दिशि अभिरामा । रामेश्वर रंगादिक धामा ॥
 तदुपरि पश्चिम दिशि प्रभु आये । द्वारिकादि लखि दुस्ति दृवाये ॥
 पुनि उन्नत चद्रपनि पेखी । आज्ञा थापन किये विशेषी ॥
 तिमि सब अन्तर के शुभदेश । स्ववश स्वाधि कीन्हें उपदेशा ॥
 जीति कुवादिन वेद विवादा । थापन करी धर्म मर्यादा ।
 हिमा कर्म कांड मन जेते । किये भक्त नरसिंहके तेने ॥

दो०-चारवाक मतनिरत अरु, जंजी बोधी वाम ।
 उल्लङ्घ्य, खल चेष्टकी, आरा नामिक आम ॥ १२ ॥
 खंडन किये उपय मय, यथा योग्य दे दण्ड ।
 मतभारन ध्यान तिनहि, करि उपदेश अखंड ॥ १३ ॥

चिस्वरण आश्रयन माही कीन्हें रामभक्त मव काही ॥
 राम मंत्र मन्त्रार्थ विधाना, यथा योग्य दीन्हें सनिमाना ॥
 यहि विधि करि दिग्विजय उदडा । थारी रघुपति भक्ति अखंडा ॥
 प्रभु जिहि हेतु लियो अवतारा । मन्त्रमंथ सोइ कियो प्रचारा ॥
 शिष्यन मन्त्र विराजहि कैले । द्वादश भानु सहित हरि जेले ॥
 पुनि तारागण सज्जन वृन्दा । रामानन्द सु पूरणचन्दा ॥
 चरणश्रित जन कुसुद चक्रोरा । विकसित मुखी लखि प्रभु ओरा ॥
 बहुलकांत वपु धारण कान्हे । भूमहैं भक्ति भावभरि दीन्हें ॥
 जामु नितक विचोकि जनमाला होत जगत यमदुत विहाला ॥
 जीवन्ह राम उपामक कारी । विदित विश्व मंगल वपुधारी ॥
 रामानन्द प्रताप अपारा । को कवि लई कथन करि पारा ॥
 तदपि यथा मति अति सुखदाई रामानन्द विजय में गाई ॥
 अम प्रभु जगपावन वपुधारी, कृपाविधु दासन हिनकारी ॥

दो०—आचारजवर दिग्विजय, जे जन मुनहि सप्रम ।
विजय विवेक विभूति ते, लक्ष्मि भक्ति युतसेव ॥२५॥
रामानन्द उदार अति, कनिमल नाशनहार ।
मेवतभक्ति समेतशुभ, भुक्ति मुक्ति दातार ॥२६॥

अम प्रभु जग पावन वपुधारी । कृगमिथु दामन हितकारी ।
दशार्थ अति दण्डन कारी । मज्जन मेवन योग्य मठादी ॥
ताते तामु जन्मदिन याही । जन्म महोत्सव रीति उहाही ॥
प्रति येवन विधि जाननहार । करै मऊन वैराग्य हरणहार ॥
पूजाभाज सैवारि सचेता । पूजे स्वामिहि शिष्य समेता ॥
नाच गान आनन्द बधाई । व्रत अरु स्तुतिहु करै मनबाई ।
जन्म कथा सम कथित सुहाई । मुनै सुनीक्षण जन कहवाई ॥
तजि आत्मस यहि भौलि सचेता । करै महोत्सव भक्ति समेता ॥
सो गुरुभक्त रामप्रिय होई । लहि हे सकल मनारथ होई ॥
मुनत सुनीक्षण गुम्बर वाणी । रामानन्द कथापूत सानी ॥
अनिमलदिन पुनि पुनि पलकाहो । बहै प्रेमजल नयनन माही ।
पुनि कर जोरि बैन सुखदाई । वीज कुम्भज पद शिर नाई ॥

दा०—धन्य आप प्रभु धन्य अति, कथा यथार्थ गाय ।
आचारज अवतारकी, दोनही मोहि मुनाय ॥२७॥
जन्म कर्म पावन परम, सुन्यो सुवश शुभ गाय ।
अब पूजनकी विधि सकल, अरु स्तुति कहियेनाथ ॥२८॥

जग उपकारी आप महाना । दयावान मनिमान मुजाना ॥
ताते कहिये सविधि बखानो । पूजन करि तरिहै भव पाणी ॥
मुनत अमरुत्य सुनीक्षण बना । बोल वचन उपांग उर चेना ॥
तीक्ष्ण समति सुनीक्षणनारी । पर उपकार प्रीति नहि थोरी ।
ताते कहौ मुनहु मनिमाना । आचारज पूजन सविधाना ॥

वाघ पीठपर यंत्र बनावै । अथवा चन्दन मो लिखवावै ॥
वर्तुल ललित कमल तेरह दल । मध्य कणिका कलित लिखो बल ॥
लिखि पटकोण यंत्र के माही । तह आचार्यदेव वर काही ॥
थोपै सहित अंग मुख कन्दहि । व्यावै रति सम रामानन्दहि ।
गौर वेष वपु बैठ मुखामन । चरण कमल नखशुनि तम नागन ।
कटि कापाय दह उपजाता । रामराजि उर उदर पुनीता ॥
मुजन छाप मरवाप विगजै । तयवर नापाइलि भलि धान ॥
दा०—अधपुंड्र ममालि श्रीरामानन्द दादगुरु अम ।
मुजन तुलासकी माल गल, पुनी प्रेम परापर ॥२९॥

शुभ प्रबंध मुद्रा कर धारी । आनन चन्द नात्र त्रय हारी ॥
हित उपदेशक मुखा सुवयना । कृपावेलोकांन रतिव नयना ॥
अम स्वरूप विभे मनमाही । प्रेम सहित पूजै प्रभु काही ।
शिष्यन थोपै दलन मुजाना । दहिनावतै धृक्कय माना ॥
अनन्तानन्द सुरसुगरनन्दा । तदुपरि मुखानन्द मुखरन्दा ।
पुनि नरहरियानन्द सुदीपा । यानानन्द लिखै पुनि पोषा ।
लिखै कवीनहि भावानन्दहि । बैसेह सेनावनन अपन्दहि ।
वटुरि गालवानन्द पतापी रामादास प्रसावान थापी ॥
मखव बीज युत हनके नामा । पुनि कहि आय नया अभिरामा ॥
यहि विधि जानै सबके मंत्रा । तेह लिख पढि पूजै वर यत्रा ॥
करि आवाहन आपन माना । अर्घ्य पाय आचमन विधाना ॥
पुनि अपनान वचन उपजाता । चन्दन भूषण सुमन पुनीता ॥

दो०—धूप दीप तेरेय बहुत, परम सुत फल मून ।
जल अचवन अरु वीटिका, आरति अंजलि फूल ॥३०॥
यदि विधि सब शिष्यन मरित, स्वामिहि पूजि मरित ।
करि प्रदक्षिणा जोरि कर, विनती करै दिनीत ॥३१॥

जय जय जय श्रीगमानन्दा । हरि अवतार हरण दुख द्वन्दा ॥
 जय त्रयनाथ रामन मुख कन्दा । राम भक्तकुल कैरव चन्दा ॥
 आन्यागम काम मद जेता । योगिराज मुनि करधरता ॥
 नमो सत्यवत दान्त महन्ता । जगदात्मा शुचि शान्त अनन्ता ॥
 जयति जगद्गुरु करुणामिन्धो । आश्रित पाल दीन जन कन्धो ॥
 दीक्षादान दक्ष कूल केतु । भक्ति पक्ष रक्षक श्रुति मेतु ॥
 जयति मोह रावण रघुवीर । भगवद्धर्म धुरंधर शीर ॥
 वर्धन विमल विराग सुवेश । सम्प्रदाय श्री नलिन दिवेश ॥
 जय नृदण्ड ३ खच खग वाज । नास्तिक भक्त हस्ति मृग राज ॥
 नमो राघवानन्द मुनन्दन । वीथी वापी वृन्द निकन्दन ॥
 जैनी जलधर पटल परंजन । लुपति मगंधि वहन जन रंजन ॥
 जयति दयार्निधि दुर्गुण रंजन । पावन कीर्ति कलुष विधेजन ॥

दो०-जयाने पातन पावन प्रसा । जगत विदित गुणगाथ ।
 जय जग जलनिधि सेतु कर यश मिन्धु रघुनाथ ॥३२॥

जयान प्रेमपथ पूरण पंडित । रामभक्त विज्ञान अखंडित ॥
 चारदाक वन मधन धनंजय । जय आचारज जन अधमोजय ॥
 आम्बुद मुद्रित महि मंडल । जय कारक दिग्विजय अखंडन ॥
 जय अमान मानद मुद्र मंडन । कुलिश कुंभ पाखंड विह्वलन ॥
 जयान तरण तारण दुखदारण । जियपर करुणाकरण अकारण ॥
 तज कृतज्ञ अज्ञता नाशक राम नाथ जप यज्ञ प्रकाशक ॥
 नमो मोक्षमग सुगम विधायक । सब विधि मुजन मनोरथ दायक ॥
 जयति भक्ति विस्तारक मुखपथ । अनित अगाध बोध तत्र जय जय ॥
 तारक मंत्र प्रचारक श्वापी । शिष्य त्रयादश सहित नमार्थ ॥
 कर्म वचन पन शरण तुम्हारी । पाहि पाहि प्रणतारति हारी ॥
 कदशा करि समरंगमणी पर । राम भक्त अविचल दीजे वर ॥

दो०-करि यह अस्तुनि अमल अति, चरण कमल मन लाय
 करै दंडवत प्रणति गुनि, त्राहि त्राहि मुख गाय ॥३३॥
 दे पुष्पांजलि तब करै, हरिदासन सबकार ।
 ब्रह्मरि कथा मुनि नाम धुनि, नृत्यगान अनुसार ॥३४॥
 यहि विधि गमानन्द की, पूजा यंत्र प्रकार ।
 कहैर मुनीक्षण जे करिहि, ते उतहि स्वपार ॥३५॥
 गुमति मुनीक्षण यनि चरित, अरचन रीति अमन्द ।
 गुरु कुम्भज पद नाग शिर, पूरे परमानन्द ॥३६॥

यह आचारज गुण अनुवाद । करण मोद मन हरण विपादा ॥
 न जन शानहि सनहि मयेमा । ते पावहि मुख भंगल जेमा ॥
 गुरु आचारज वरण मनेहा । केवल प्रभु तोषण जन येहा ॥
 नाते गमानन्दिन काही । करिबो उचित उछाह यदाही ॥
 नासु जन्म दिन मे न अनन्दी । कहवावत श्री गमानन्दी ॥
 तो रै कहा कहा निन काही । समझि कोहि मज्जन मन माही ॥
 चार सहस्र त्रय शत कलिकाला । रीते प्रकटे परम कृपाला ॥
 तबते विमल विराग सुवेश । पूरेहु पुहुमी माहि अशेषा ॥
 नीचहु जासु अनुग कहवाई । पूजित होत साधु समताई ॥
 नाहि भजिय हिम प्रेम बवाई को नहि गुरुन यजे शति पाई ॥
 दृढज चन्द्र शिव शिर संयोगा । कुटिल मन्द बन्दहि सब लोग ॥
 श्रीधुत गमानन्द प्रभावा । केहि विधि जाय एकमुख गावा ॥

दो०-मलिनहु मम वाणी विमल, भई स्वानियश गाय ।
 यथा कजल समरंगपणि, गंग संग मुक्तिनाथ ॥३७॥
 अनगिन बालक वन बधन, मम गुणगण थुल नाहि ।
 जननि जनक सम मुजन मुनि, मुख पै हे मनमाहि ॥३८॥

सत संगति वश यही भलाई । भई हेतु मौन देखै सुनाई ॥
 अवध महल मानसके हंसा । गुरु आचार्य निष्ठ अवतशा ॥
 कृपा पात्र श्रीशीलमणी के । मानाशरण सरवा मित्रपीके ॥
 तिन निमज्जुन डीठ मोहिनान्यो । कृतक धवन अमवचन वखान्यो ॥
 मुनि कुम्भज स्वसंहिता माहीं । खंड भविष्य मुनीक्षण पाहीं ॥
 रामानन्द जन्म यश गाये । करहु ताहि भाषा मन लाये ॥
 जायें समझि पर सब काही । भावहि न्यामि जन्मदिन माहीं ॥
 यद्विधि आरज आज्ञा पाई । करि रमरंगमणी मुदिटाई ॥
 विरचि दियो दाहा चाँपाई । मुजन सुधारहि क्षमि चपलाई ॥
 उनइम सौ पैनालिम माला । चेत राम स्वामी मुदमाला ॥
 अवध मगधु पिय कुंड समीप । पूरण किया कृपा रघुदीपा ॥
 जय जय अवध जननि जय मरजू । देहि निशान भक्ति मित्रवजू ॥
 दो०—जय जय श्री आचार्यवर, भगवत रामानन्द ।
 करिय कृपा निज जानि जन, हास्य सकल दुखद्वन्द ॥३६॥
 जय जय जय गुरुद्व श्री कामदन्द्रमणि मार ।
 मन्त्रविधि मुधर रावर, कृपा नयन का कर ॥४०॥
 आभारज वर चरित माण, अचली अति अभिराम ।
 रामानन्दयशावली, भया ताहिल नाम ॥४१॥
 इति श्रीमन्महाशक्तिधारा श्रीगणेशचन्द्राकरमन्त्रप्रचारक श्रीमदाचार्यवर्य
 चारु चरित चिन्तामणि पंजरीक रमरंगमणि मनि सूत्र पात कविमल
 तम नाशनि निर्पला श्रीरामानन्दयशावलीमयामः ।
 पूजामंत्र :—नमः आचार्यवर्याय रामानन्दाय धीमते ।
 मोक्षमार्ग प्रकाशाय चतुर्दशप्रदाय च ॥

अगस्त्य संहिताके अतिरिक्त वैश्वानर संहिता और भविष्यपुराण में भी आपके विषयमें कुछ वर्णन मिलते हैं । जो कुछ सामान्य भेद के साथ इस अगस्त्य संहिता के वर्णन के अतगत हो जाते हैं ।

इन ऋषि प्रणीत आर्ष ग्रंथोंके अतिरिक्त यतिगजराजके जीवन चरित्र विषयक एक प्राचीन (तत्कालीन) ग्रंथ “प्रसंगपरिज्ञान” नामक प्राप्त होता है । इसमें उल्लिखित है कि इस “प्रसंगपरिज्ञान” नामक ग्रंथकी रचना पिशाचगण भाषाके सांकेतिक शब्दयोगसे देशवादी प्राकृत भाषा पद्य (अप्रपदी अदना छन्द) में श्रीमदाचार्यपादके सदैव साथ रहनेवाले विषयविषय कविवर श्रीचेतनादासजीने, श्रीमदाचार्यपादके श्रीमाकेत गमनके १ वर्ष पीछे विक्रम संवत् १५१६ में आरंभ की और संवत् १५१७ के श्रीमदाचार्यपाद जयन्ती उत्सव (माघ कृ. ७) को पूर्ति की ।

यह भाषा संभवतः वर्तमानमें कहीं भी बोलचाल या ग्रंथ लेखन में प्रचलित नहीं पाई जाती । प्रस्तुत इसके जानकार भी प्रायः अप्राप्य हैं । काशी अयोध्या जयपुर में तो यथाशक्ति पूर्ण प्रयत्न करने पर भी कोई नहीं प्राप्त हुए ।

इसकी हिन्दी टीका आनसे प्रायः ४० वर्ष पूर्व श्रीअयोध्याजी से प्रकाशित होनेवाले श्रीतुलसी पत्रके यशस्वी सम्पादक महाराज श्रीबालक-रामजी विनायक ने की है जो २ स्थानों से प्रकाशित हो चुकी है । एक तो श्रीअयोध्या गयगंज श्रीगणनाम मन्दिर के अध्यक्ष पं० श्रीमदवदासजी मिश्रके द्वारा मूलके साथ प्रकाशित हुई है जो २) ४० से बड़ी से प्राप्त होती थी, परन्तु अब इस समय अप्राप्य है । यही से इस हिन्दी टीकाका अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित हुआ है जो ३) ४० मूल्यमें प्राप्य है । एवं दूसरी श्रीहनुमन् प्रेम श्रीअयोध्याजी में छपकर प्रकाशित हुई है जो केवल टीकापत्र है ।

इस ग्रंथकी प्राचीन दो प्रतियां इन पत्तियोंके लेखक ने उक्त मन्त्र

श्रीविनायकजी के पास उन्हीं दिनों में देखा थी जब वे टीका लिख रहे थे। एककी लिपि ऐसी थी जो पढ़ने में नहीं आनी थी और दूसरी फारसी लिपि में लिखा हुई थी। उनमें नागरी लिपि में टीकाके साथ श्री विनायकजी ने नागरी प्रति बनाई थी और उस टीका की प्रति लिपियां श्रीअवध के अनेकानेक महान्माओं ने करली थी जिनमें से १ पेरे ज्येष्ठ गुरुभाना पं० श्रीरामकिशोरजी शुक्लवकीनके द्वारा मुझे भी प्राप्त हुई थी।

इसी टीकाके आधार पर श्रीमदाचार्य पाद के चरित्र की मुख्य मुख्य भटनाओं को एक सूची सी बनाकर यहाँ दी जा रही है। जो कि सुर्चामात्र देने से पढ़ने में मगस न होना हुए भी ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इस ग्रंथ में श्री आचार्यपाद के पढ़ने पाठन, ग्रंथ प्रणयन आदि सामान्य चरित्रों का अपेक्षा चमत्कारपूर्ण चरित्रों का वर्णन अधिक हुआ है, इसमें आज की पाश्चात्य विचारधारा की दृष्टि में जवड़े हुए पाठकों को इनमें अद्भुत न होना स्वाभाविक है, परन्तु जो इतिहास के विद्वान् तत्कालीन विद्वानों के इतिहास से परिचित हैं उनको इसमें कुछ भी विचित्रता नहीं जान पड़ेगी। यवन साम्राज्य की तलवार और आसुरी मिद्धियोंमें आतंकित भारतवर्षमें उस समय परिस्थिति ही ऐसी थी कि जिसको श्रीमदाचार्यपादने ही विषय विरक्त और धर्म अनुत्कृत समाज का संघटित कर जनबल और अपने अलौकिक सिद्धिबलके द्वारा पुरातन हिन्दू धर्मकी रक्षाकी थी। 'मस्थान-त्रयी' (श्रीमद्भगद्गीता, उपनिषद् और ब्रह्मसूत्रों) पर आनन्दभाष्य और श्रीवैष्णवमताञ्जमास्कगादि ग्रंथों का प्रणयन कर श्रीमम्पद्रायका संवर्धन किया था और उत्तर जालमें अपने शिष्य प्रशिष्यों को जनवाणी में श्रीराम गुणमानका आदेश दिया था, जिसके परिणाम स्वरूप श्रीराम-चरित मानस जैसे विश्व विख्यात पशुपती ग्रंथों का प्रणयन हुआ है, "प्रसंग पारिजात" नामक उक्त ग्रन्थ में १०८ अष्टपदियाँ हैं, जिनमें इस प्रकार से श्रीमदाचार्यपाद के चरित्रोंका वर्णन है।

प्रसङ्गपारिजात ग्रन्थमें :-

अष्टपदी १ से ४ में निम्न विभूति में पधारकर श्री नारदमुनि का भगवान से कलिजीवों के उद्धार के अर्थ प्रार्थना करना और प्रभु का आश्वासन देते हुए श्रीरामानन्द नाम से प्रयाग राज में अवतरित होकर मनोय पूर्ण करने का वरदान देना एवं जन्म प्रसङ्ग वर्णित है जिसमें तत्कालीन भारतवर्ष की दुर्दशा का भी समुचित वर्णन हुआ है।

५ में सुणहन कर्णध्व मौजीवन्धन आदि एवं अध्ययनारम्भ के वर्णन में कहा गया है कि अक्षरागंघ के दिन ही आपने श्रीमद्बाल्मीकीय रामायणको पढ़कर ही नहीं मन्त्रुत मस्वर गान करके सुना दिया, जिसका सुनकर मन्त्र उपास्थित पशुनुभाव रुड़ने लगे कि यह बालक मनुष्य नहीं कोई अवतार है। ८ वष की आयु में यज्ञोपवीत हुआ, फिर काशी आये, माता पिता भी साथ आये और नैऋतिक पं० आचार्य श्वरजी के यहाँ विराजते जोकि श्री आचार्यचरण के मामा थे।

७ में वर्णित है कि १६ वष में पूर्व ही आप वेद वदाम और शास्त्र पुराणमें पारंगत हो गये। एक अलौकिक वृद्धा द्वारा विवाह के सम्बन्ध में प्रश्न हुआ, जिसमें आपने साफ उत्तर करत हुए आजीवन नैष्टिक ब्रह्मचारी रहनेका निश्चय सुनाया, तब भी पिताजी को संतोष न होकर एक माँदिल्य गोत्रीय द्विज कुमारी से विवाह संबंध स्थिर किये जाने का आशयन हुआ तथा कुमारी को विवाह होने पर तुरन्त विधवा हो जाने का स्वप्न हुआ।

८ वीं अष्टपदी में उपरोक्त कन्या के भी आजीवन ब्रह्मचर्य पूर्वक जीवन बिताने का निश्चय करके परमार्थ दीक्षार्थ काशी आने और श्री आचार्यपाद से ही दीक्षा ग्रहण कर तत्काल ब्रह्मांड फटका उसमें से निकली ज्योति के सूर्य किरणों में विलीन हो जाने की कथा है।

९ और १० में वर्णन है कि माता पिताओं को अपनी पूर्व जन्म की तपस्याओंकी स्मृतिसे, कुमारीकी दीक्षासे और महा प्रयाण लीला से

एवं पुत्रकी जन्म से अवसक की अलौकिक लीलाओं से निश्चय हो गया कि हमारे पुत्र मातात् भगवान श्रीराघवेन्द्र के अवतार हैं। वे भगवद्भाव से भावित हो पुत्र से ही दीक्षा देने की प्रार्थना करने लगे। जब पिताजीका दीक्षा प्रदानका आग्रह अधिक बढ़ा, तब कुमार श्रीरामानन्दाचार्य अदृश्य हो गये, माताजी पुत्र वियोग से दुःखित हो परलोक सिधार गई और उस समय परमाचार्यवर्य स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजी ने वहाँ पधारकर दर्शन दिया।

११ में पिताजी एवं प्रेमी वृन्द की स्वामी श्रीराघवानन्दाचार्यजी से कुमार के दर्शन करा देने की प्रार्थना, प्रार्थियों की प्रेम परीक्षा, श्रीपरमाचार्यवर्य द्वारा यज्ञानुष्ठान कुमार का पाकअन्न एवं परमाचार्यवर्य श्रीराघवानन्दाचार्यजी द्वारा आर्यपत्नी दीक्षा तथा इच्छाप्रमाण के वरदान की कथा है।

१२ और १३ में पिताजी के द्वारा श्रीपरमाचार्यवर्य एवं सज्जनों के प्रति कृतज्ञता प्रकाश और श्रीरामानन्दाचार्य महाप्रभु का पिताजी से द्वि। हा गंगातट निवासका वर्णन है।

१४, १५ और १६ में कलिदुःखका आगमन प्रार्थना और वरदान का वर्णन है।

१७ में यक्षमा रोगसे पी डन पुत्रको लेकर सुधावलकी रानीका आना, कल्प पुत्रको गंगार्ज्यामें फेंक देनेकी आज्ञा पाना, माताके ऐसा न कर सकने पर श्रीआचार्य वचनों पर हृद विश्राम कर राजकुमार का स्वयं गंगामें कूट पड़ना, वहाँ दिव्यलोककी लीलाओका आनन्द प्राप्तकर एक सप्ताहमें स्वस्थ हो श्रीगंगार्ज्यासे निकलकर माता एवं परिवार वृन्दको आनन्दित करते हुए कारी घामियों को आश्चर्य चकित कर देना वर्णित है।

१८ में भोगके लिये स्वयं श्रीगंगार्ज्याके पायस लाने की और श्रीरैदासजीके पूर्व जन्म की कथा है।

१९, २० में श्रीगेरी मठके शरणाचार्य श्रीभारती तीर्थजीका अनुज समेत आ। और गीताके कर्तृत्वाभिमान एवं फलानुसन्धान रहित कर्मयोग पर सत्यम का वर्णन है।

२१, २२ में महाशिवजी की श्रीविश्वनाथजी का दर्शन करने एवं परस्पर नमन स्तुति का वर्णन है।

२३, २४ में पुरय क्षेत्रमें पवित्र द्विदकुलमें पिता श्रीअनन्दाजी और माताजी के यहाँ कानिही पूर्णमासा सम्बन्ध १३४३ में अचिराम नामक नामस श्रीअनन्दाजीके अवतार लेकर मायागममें परम निष्ठ और वद्विचर कृपया विद्वान होकर बालपनेमें एतद्द होते दृष्ट्यकरण रातारों आ आर्यभट्टजी दीक्षा प्राप्तकर श्रीअनन्तानन्द नामक रूप होनेकी तथा अजि नामकी राजकुमारी के आकर अभिनिर्दिष्ट। प्रियतम की प्राप्त करने की कथा है।

२५ में जलकल्याणनामक नागर महान गंग नामक ब्राह्मणके आने, उसके ब्रह्मलोक भ्रमरों के हनाने और श्रीरामानन्दाचार्य नामके जयचरण के प्रभावसे २० अद्वैत सन्देशालों जयमकुन्दर कुमारके द्वारा बन्धना नाकर आचरण करण प्राप्त होन की कथा है।

इसको विपरीतमें लिखा है कि उक्त जलकल्याण १४०४ में गुलबर्गाका बादशाह हुआ और उसने वहाँ अपना नाम हमन गज़ू रखा।

२६, २७, २८ में देश और विदेशों में आकाश और भूतलकी महाविभूतियोंका श्रीयतिराज राजकी सन्निधिमें प्राप्त हो, उपदेश सत्यममें क्षीण संशय हाकर आनन्द विभोर हो लीलेका वर्णन है।

२९ में श्रीपाचर मुनिको और ३० में श्रीअनन्तानन्दाचार्यजी की प्रदान किये गये श्रीआचार्य चरण के उपदेश कथित है।

३० में श्रीमनुशतरुवाजीके वरदानकी, ३१ में जगज्जननी श्रीजनकीजी द्वारा श्रीहनुमानजी को श्रीहनुमानजी द्वारा श्रीब्रह्माजी को और श्रीब्रह्माजी द्वारा श्रीवशिष्ठजी आदि ५ मानस पुत्रों की श्रीगम-

मंत्र प्रदानकी तथा ३२ में श्रीमन्नाराजके माहात्म्यकी कथा है।

३३ में दक्षिण भारतके जैन वैष्णवों के परस्पर विरोधका एवं उत्तरमें वैष्णव विरोधी पाशुपत, लिगायत, वीर शैव, कामरूप, कुलाचारी पंचमकारी चामुंडी, भैरवी आदिके अत्याचारोंका वर्णन है तथा वैष्णव शिरोमणि समझकर श्रीआचार्य चरण को अपने विद्यावल्ल योगवल्ल तपोवल्ल जनवल्ल एवं शस्त्रवल्ल आदिसे परास्त करनेकी इच्छामें काशी आकर उपद्रव प्रचारनका और श्रीयतिराज राज पर किसी भी क्रिया या छलकण्टक कुछ भी प्रभाव न होना देख विन्मज्जित हो लौटने तथा मार्ग में ही श्रीभस्वनाथ द्वारा अपने कुकृत्यों के फल स्वरूप प्राणदंड प्राप्त करने का वर्णन है।

३४ में पदुआ ग्राम निवासी एशी मतके अनन्तोली नामक एक भक्त सन्तका श्रीचरणों में प्राप्त हो अधमयानि से उद्धार का वर्णन है।

३५, ३६ में योगीराज कृपाशंकरजीका धवलागिरिसे जमान सहित आकाश मार्गसे अम्ना, श्रीअनन्तानन्दाचार्यजी द्वारा अधर (आकाश) में ही उनका स्वागत स्तुकार एवं श्रीमदाचार्य चरणके दर्शन उपदेश से कृतार्थ हो तत्कालही प्रणवमें विलीन हो जाना वर्णित है।

३७ में श्रीआचार्यपादका श्रीअनन्तानन्दाचार्यजीकी मदत्त निम्न उपदेश वर्णित है।

महापद्म अगस्त्यजी के आश्रममें समाप्त भगवान सदा शिवसे भवधि सार्धन्यजीने प्रश्न किया कि "धन और बाणीसे परे कौन है ? समस्त ईश्वरोंका ईश्वर कौन है ? निर्गुण और समुण दोनों से परे कौन है ? कार्य और कारणसे परे कौन है ? मुक्तिका निवास किस मंत्रमें है ?

भगवान शंकर ने उत्तर दिया कि "जिसके नाम रूप लीला धाम चिन्मय है, जिसके प्रकाश को ही मनातन ब्रह्म कहा जाता है और जिसकी ख्याति नाम रूपमें विद्यमान है वही मन बाणीसे अगोचर श्री साकेतधिपति भगवान श्रीराम है। उन्हीं के दक्षिणोक्त क्षीरार्घ्य पति नारायण, हृदयांत परनारायण, वामांश रमानकुंठाधिपति नारायण

एवं चरणांश नर नारायण है। जिनका महान्त नाम रकार मकार युक्त है। जिनके अनन्त मंत्रोंमें तं न तं, अनन्त यंत्रोंमें तीन यंत्र, प्रधान है एवं चतुर्वर्ग के दानी है। इसके आचरण से बड़ा है जिनके कर्मका स्वरूपतः त्याग न करते हुए हृदयसे कर्मफल एवं कृत्याभिमानको त्याग दिया है और सत रज तम इन तीनों गुणोंसे अलग हो गये हैं।

३८ में काशीवासी स्वामी विचारण्यजीका ईश्वर बुद्धि उत्पादक उपाय के प्रश्न युक्त पत्र लेकर उनके शिष्यका अन्ता एवं उत्तर पत्र प्राप्तकर कृत कृत्य हो लौटना वर्णित है।

३९ और ४० में चंद्र ग्रहण के अवसर पर श्री सीरेश्वर नाम्नी जी को अमुआ बनाकर महानुभाव समुदायका काशी आ श्रीमदाचार्य पाद का मर्मसंग प्राप्त कर कृतार्थ होना वर्णित है।

४१ और ४२ में प्रसिद्ध कर्म कांडी पं० विश्वनाथ जी का श्री राम नाम तन्त्र ज्ञान विषयक प्रश्न, श्रीआचार्यपाद का समाधान और उनका शरण प्रदण कर कृत कृत्य होना वर्णित है।

४३ में श्रीसेनभक्तजी के शरण में आनेकी और ४४ में उपी नामक किन्नरी का उद्धार होने की कथा है।

४५ में श्री कवीरजी के जेष्ठ पूर्णिमा को प्रकट होनेकी और एक योगीराज को निर्वाण प्रदान की कथा है।

४६ में श्रीकवीरजी के नीरु और नीमा नामक जुलाहा दंपति द्वारा पालन पोषणकी, नाम करणके समय मोमिनको आश्चर्य चकित करने की और कर्मा नामक ब्राह्मणी का स्नान पान करने की कथा है।

४७ में एक रामनराम गुरुदास को अन्तर बाहरकी दृष्टि प्रदान होने को ४८ और ४९ में काहडा ग्राम के ज्ञानी और तन्त्र वेत्ता पं० योगीजी को उपदेश की तथा ५० में भगवान श्रीशिवजी के श्रीसुखानन्दाचार्य के रूप में अवतरित होकर शरणमें आने की कथाएँ हैं।

५१ में अयोध्या नरेश हरिमिह के भ्राता गज मिह का आकर यवनों के अन्ध-आचार निवेदन करना और उसको शांत करनेकी प्रार्थना है। गजमिह कहते हैं मर्षा ! मेरे भाई वैराग्य शु० १० शनिवार संवत् १३८१ को मिहामन छोड़ तगाईमें चले गये, हम सब अयोध्या नामी यवनस्पर्श से भ्रम भ्रष्ट हो गये, जिसके प्रार्थान्त्रिक के लिये हमने यहाँ भी पंडितों से बहुत प्रार्थना की, परंतु ठुकराये ही जा रहे हैं। आप पतित पावन हैं, हम पर कृपा कर, हमारा उद्धार करने की कृपा किये। श्रीमहाचार्यपाद यतिगजाराजने उसको मान्यता देने हुए कहा आज के ठीक तीसरे दिन तुम सब श्री अयोध्याजी में मर्याद पर एकत्रित रहना, हम आयेग और एक साथ सबका उद्धार करेंगे। ऐसीही दृष्टि और समस्त धर्म पतितों को श्री आचार्य चरण में श्री मर्याद स्नान करा जय राय का मंत्र प्रदान कर उनका उद्धार किया।

५२ में श्रीमृत्सूरानन्दाचार्यजी का शरण में आना ५३, ५४ और ५५ में वेदान्ताचार्यजी नामक ज्ञानीदासणात्मको उपदेश एवं दीक्षा प्रदान करना वर्णित है।

५६ में एक जैनी और एक अद्वैतवादी के, जिनमें दम महिमे से विवाद चलता था उनके द्वारा तत्त्व नियम के उपदेश की प्रार्थना और जैन एवं अद्वैत के समन्वय पूर्वक उनका समाधान कथित है।

५७ में बलुभीपुरी के धनमदमत्त एवं अपुत्रतासे दुखी लिउटा नामक वर्णिकको मदहरण पूर्वक शरण प्रदान एवं पुत्रदान की कथा है।

५८ में श्रीनरहर्यानन्दाचार्यजीके शरणमें आनेकी ५९, ६० में लुम्बवाहन एवं चन्द्रपथ नामक गंधर्वों के शाप मुक्त होने एवं दीक्षा प्राप्तकर कुल कुलकृत्य होने की कथा है।

६१ में वाँसवाहा वाले काशीवासी न्याय के प्रकांड विद्वान श्री

अज्ञेयशुद्धजी के भगवान् शंकर के उपदेश में आकर श्रीआचार्यचरण की शरण ग्रहण कर श्रीगोमानन्दाचार्य नाम प्राप्त करने की कथा है।

६२ में हिमालय गढ़ के लोहिणनाथजी योगराजका कृत कृत्य होना एवं ६३ में एक अज्ञामुखी कुमारीका शाप मुक्त होना वर्णित है।

६४ में एक मन्त्र के मानस रोषोंका निवारण ६५ में विन्नी नामक मांत्रिका द्विज कुमारी के अन्ध-आचार से मृत पुत्रक को प्राणदान एवं विन्नी का उद्धार होने की कथा है।

६६ में दक्षिणी पं० चिपलूणकरजी एवं ६७ में सिन्धी विनय मुनिजी के मन्त्रों से कृत कृत्य होने की कथा है।

६८ में गांगानगढ नरेश ओर्पापार्जी के श्रीआचार्यचरण शरण में आने की एवं ६९ में दो प्रेता की मुक्ति तथा वश्य कुमार की प्रेतबाधा मुक्ति की कथा है।

७० में अमराक देश के परमार्थ प्रिय नामवर नामक अपीर के कृत कृत्य होकर काशी वास करने की तथा ७१ में एक श्रीनिम्बार्क मान्दायिक भजनानन्दी महात्माको श्रीविष्णु प्रियतम के प्रत्यक्ष दर्शन कराये जाने की कथा है।

७२ में आकवीरजीको लखर होन बान काशी के कालाहल और समझी शान्तिका एवं ७३ में धवगडा केशवा के मानुजपुत्र वन दृष्टनाथ नामक व्यक्ति को तथा एक पतितारण भता ब्राह्मण के पतनका प्राणदान की कथा है।

७४ में रत्नाजा निजामुद्दीन आलिया के शिष्य कविवर तुमरु का पत्र लेकर आना, पाँछे से दाना पक्षा क रूप में आलियाजीका आना तथा कृत कृत्य होकर जाना वर्णित है।

७५, ७६ और ७७ में दिल्ली में तमूर के अन्ध-आचारी और लखनऊ के उपद्रवों से व्रत महानुभावों के कष्ट निवारण एवं दुष्टों

को उचित दंड प्रदान होने की प्रार्थना एवं श्री पतिराज राजके प्रभाव से ममस्त भारत की मस्जिदों में नमाज की अज्ञान के समय मुस्लिमों के कंठ रुक जाने और अज्ञान न देने की तथा इसके फल स्वरूप दिल्ली से अधिकारी वर्ग सहित मुख्य मुस्लिम मालश्रियों के श्रीकबीरजी की शरण में आने की एवं श्री कबीरजी को लेकर श्रीमदाचार्य चरण की शरण में प्राप्त होने की कथा है तथा उन लोगों के द्वारा बाटमाह के निम्न १२ शर्तों स्वीकृत करके अज्ञान के लिये गलत खुलवाने का वर्णन है। जहाँ इस प्रकार है —

१. अजिया कर हटा दिया जाय।
२. मंदिर बनवाने की रोक हटा ली जाय।
३. बलपूर्वक धर्म-परिवर्तन न हो।
४. मांसजड़ के सामने से जाने वाले दर (दुल्हा) को पालकी से न उतारा जाय।
५. साथ की कुश्मानी बन्द हो।
६. धर्माभ्यास प्रचार में मुस्लिम लोग विघ्न न करें।
७. धर्म-ग्रन्थ न जलाये जाय।
८. मुहम्मद में हिन्दू लोहास मनाने पर रोक न हो।
९. स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा हो।
१०. कुम्भ आदि पर्वों पर कर न लगे।
११. कथादि में शंख ध्वनि पर रोक न हो।
१२. यदि कोई हिन्दू श्रद्धा करके किसी फकीर के पास जाय तो उसको हिन्दू धर्म में दृढ़ किया जाय, मुसलमान न बनाया जाय।

७८ में दक्षिण देश के तिरुभुवि ग्राम में द्विजकुल में श्रीलक्ष्मीजी के श्रीपद्मावती नाम से अवतार लेकर श्रीआचार्यपाद की शरण में आने की कथा है।

७९, ८०, ८१ में दाक्षणात्य भाऊजी शास्त्री के अनेकानेक दार्शनिकों सहित आने एवं श्रीआचार्यपाद के दर्शन उपदेश तथा गुफा में सूत्रकार भगवान वेदव्यासाचार्य एवं अनेकानेक प्राचीन वाच्यकारों के दर्शन से कृतकृत्य होकर लौटने की कथा है।

८२ में दक्षिण से श्रीविठ्ठल पंतजी का शरण में आकर श्री भावानन्दाचार्य नाम प्राप्त करने की पीछे उनकी पत्नी के प्रणाम करने पर पुत्रवती देने का वरदान प्राप्त करने की तथा विठ्ठलपंतजीका दिव्य सन्ततिका प्रबोध करा कर वापस घर भेज दिये जाने की कथा है।

८३ में दुष्काल में पीड़ित लोगों का आसाम से आकर श्रीमदाचार्य चरण कुपा से सफल मनार्थ होना कथित है।

८४ में श्रीरामजी एवं श्रीकबीरजी को पथ प्रवर्तितकर समाज से वद्विभूत लोगों का भी सुनिश्चय (श्रीगणनाम) में प्रवृत्तकर मनु भंमुख करने की आज्ञाका वर्णन है।

८५ में यात्रा के पस्थान की, गोंगाँनगढ़ पधारकर महागजा पीपाजीको कृतार्थ करने की तथा सती मा-बीराती श्रीसीता महर्षीजी सहित उनको बेसमय प्रदत्त कर यात्रामें साथ लाने की कथा है।

८६ में श्रीजगदीशपुरी में स्वर्ण भगवान श्रीजगन्नाथजी द्वारा स्वागत मन्दार प्राप्तकरने, श्रीकबीरजी के द्वारा चिमटा गाढ़कर समुद्र के आकण्णको रोकने एवं श्रीआनन्दवाचार्जनीके द्वारा चन्दन तालाब में जल श्रोतके आविर्भाव होने की कथा है।

८७ में आरामेश्वर के एवं वैष्णव विरोध और श्रीआचार्य पाद द्वारा उनकी शांति की एवं स्थाई शांति व्यवस्था के लिये श्रीयोगानन्दाचार्यजी का बड़ा लोह जानेकी कथा है।

८८ में विजयनगर के महाराजा बुक्कारायका हृद्रोगसे मुक्त होना एवं सेवा मत्कार किया जाना कथित है।

८९, ९०, ९१ में जमातका कांचीपुरी पहुँचा, वहाँ के ब्राह्मण

समाजका जात्याभियान मद से अंधे होकर चर्मकार और जुलाहा कह कर श्रीरदायजी और श्रीकवीरजी का एवं जमानका निरस्कार करना, जात्याका अपने अपने घर पर लीके में श्रीरदायजी और कवीरजी के दर्शन होना और श्रीलीला महचरीजी के द्वारा वस्त्र व्यवसाय के नष्ट होने का शाप एवं शापानुग्रह का वर्णन है ।

९२ में श्रीरदायजीका उपदेश एवं पंजाब में श्रीविदेहराज, बंगाल में श्रीकृष्ण भगवान तथा पश्चिम श्रीरत्नप्रादीजी और श्रीहनुमानजी के अवतरित होने की भविष्य वर्णियां वर्णित हैं ।

९३, ९४ में जमानका श्रीराम पदमनाभ जनार्दन एवं वैद्यक गिरि आदिकी यात्रा करते हुए श्रीद्वारिकाजी पहुचना, वहां श्रीपद्माजी का श्रीरत्नाद भगवान के प्रत्यक्ष दर्शन एवं समुद्र प्रयाग कर जाना, उनको दिव्य द्वारिका और श्रीभगवानके दर्शन पर संतुष्ट कर चिन्ह प्रदान होना ८ दिन पंछ समुद्र में बाहर आकर उनको आश्रय चकित करना तथा जमानका द्वारिका से शत्रु दुःखावन होने पूरा साया-पुरी, हरिद्वार, पहुचना और श्रीनारायणका स्वरुप हरिद्वार आकर दर्शन देना वर्णित है ।

९५ में जमानका हरिद्वार में लौटकर पुनः दुःखावन करना वहां श्रीआचार्यपद द्वारा अनन्तर्मी रुक्मिणी कुमार कुमारीका भंडारा किया जाना और उसमें आचार्यपदका पथार कर श्रीआचार्यपद से मोक्षकर तस्मई ग्रहण करने का वर्णन है ।

९६ में श्रीदुःखावन में श्रीचिन्मय पथारना, श्रीचक्रवर्तुम भगवान शिवशंकर द्वारा स्वागत स्कार, चतुर्मास भर चित्रकर निवास, श्रीचित्रकूट की अर्चोकर लीलाका अवलोकन, वहां में चलकर १ दिन प्रयाग में रहते हुए श्रीद्वारिका पथारना एवं काशी वारमियों के हर्षोल्लास तथा उत्सवादि का वर्णन है ।

९७ में यात्रा के पश्चात् विशाल भंडारा, ९८ में दिग्भिजयी विद्वानों

का विद्याभद्र निवारण एवं ९९ में विद्वज्जनों को भोजन वस्त्र दान दक्षिणा एवं उपदेश प्रदान होने का वर्णन है ।

१०० में पर्व विशेष पर एकत्रित भारत के सभी धर्म संन्यासियों एवं मत्तपंथों के सन्तों का एकही पंक्ति में विशाल भंडारा, प्रसाद माहिया तथा श्री कवीरजी आदिकों के सहित सभी साधु सन्त आलिया फरींग आदि को उपदेश एवं नरत्नम मुद्रा प्रदान होने की कथा है ।

१०१ में शान्ति की कामना करने वालों को अपने हृदय मान्दर की पवित्र बनाने का आदेश, किन्तुवत्त को अद्वा समभव एवं सत्कार का उपदेश तथा एक स्त्री पुरुषके शिष्ट रविन बालक को पुण्यत्र प्रदान होने की कथा है ।

१०२ में पूजा काल के अनिश्चित सत्र श्रीआचार्यपद के दर्शन उपदेश, मन्त्रों का द्वारा प्रवृत्त होने का वर्णन है ।

१०३ में पश्चिम में विविधा स्वभाके दो शिष्यों चारुगूर नाम के सर्वज्ञ और हाडा नाम के व्याघ्र राम का आला, काशी में कोट द्वार होना आश्रम में आने पर उनका देव रूप होकर श्रीआचार्यपद का उपदेश श्रवणकरना एवं अपने गुरु महाराज के शिष्य सम्मिश्र ले कुल कुलपति लौट जाना कथित है ।

१०४ में यात्री नामक मश पंडित का सर्पदश में मृत्यु का प्राप्ति होकर स्व का आश्रम पर लया जाया; भास्की शर्मा ज्ञान भिन्न पर सपना आकर प्रवृत्ता देना एवं श्रीआचार्यपद के उद्धार से हुए हुए पंडित और सर्प दोनों का श्रीचरण शरण ग्रहण कर कृतार्थ होना वर्णित है ।

१०५ में हम और कौन के रूप में आकर यात्रायात्री और धर्मराज का महाप्रस्थान के अर्थ प्रार्थना होना । श्रीचरण द्वारा 'पुनर्वस्तु, कहना, उनकी वाणी और सेवा को समझने वाले सिद्ध सन्तों का दुःखी होना, इन दोनों देवताओं की बात को टाल देने की भी कवीरजी

की प्रार्थना और श्री आचार्यपाद का उपदेश तथा लोक कल्याणार्थ प्रवृत्त समस्त प्रवृत्तियों को चालू रखने एवं बढ़ाते रहने का शिष्यों को आदेश वर्णित है।

१०६ में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् १९१५ शनिवार को अग्नि कुरुद की प्रतिष्ठा, महान कर्मकांडी पंडितों द्वारा तारक महामन्त्र का अनुष्ठान, दीन दीन विकलांग अशहाय नर नारियों का सेवा मन्त्रार, मन्त्र अमात्यों की सेवा, प्रेमी वृन्दों का जमाव, उपदेशाभूत चर्चा के द्वारा प्रेमी जन रुपी चानकों को कृत कृत्य करना आदि की, श्रीआचार्यपाद का अनेक रूप धारण कर सभी स्थानों में एक ही समय में समुपस्थित हो दर्शन उपदेश से कृतार्थ करने श्री तथा अष्टमी राववार को अनुष्ठान की समाप्त के समय पादजों को अलग करके समाज के पैरों पर कुमारागत न करने के उपदेश देने की, किमी को भी साथ चलने का आग्रह न कर धर्माचरण में प्रवृत्त रहने की एवं अन्तिम क्षमापन की कथाएँ हैं।

१०७ में कथित है कि रामनवमी सोमवार को मानः कल्प ही आश्रय पर जनताथी अपार भीड़ में बड़े जोर से गन्ध ध्वनि सुनाई पड़कर सदा के लिये विलीन हो गई। आश्रय पर की भीड़ बढ़ने लगी, मध्याह्न समय में अन्नरिक्ष (आकाश) से फिर वही तुमुल गन्ध ध्वनि सुनाई पड़ी, जिसने सभी के हृदय स्तनप को हरण कर लिया। शिष्य गण श्री आचार्य चरण की चरण पादुका लेकर श्री गंगाजी आये, वहाँ गंगाजी का स्पर्श कर पादुकाओं ने पापास रूप धारण कर लिया जा आश्रय में प्रतिष्ठित हुई। इस समय श्री कबीरजी ६० वर्ष के थे।

१०८ में श्री अनन्तानन्दाचार्यजी द्वारा श्री आचार्य चरण के आठ मुख्य शिष्यों को दिग्गजों के समान आठ दिशाओं में स्थापित करना, वार्षिक भंडारे पर समस्त शिष्यों मन्त्रों और प्रेमी वृन्दों के

समारोह में कविवर श्री चेतनदासजी की श्री आचार्यपाद के अलौकिक चरित्रों का संकलन कर ग्रंथ लेखन की आज्ञा होना। तदनुसार देश बाढी प्राकृत में पिशाच (मण) भाषा के साकेतिक शब्द योग द्वारा अदना छन्द की १०८ अष्टपदी में सं० १५१७ के श्री आचार्यपाद के जन्मदिन (माघ कु० ७ शुक्रवार) को इस प्रसंग पारिजात नामक ग्रंथ के पूर्ण होने की कथा है।

इन प्राचीन ग्रंथों के अनिर्वक्त श्रीमदाचार्यचरण के चार चरित्र विषयक आधुनिक काल में निर्मित भी संस्कृत हिन्दी एवं भाषा की अन्यान्य प्रान्तीय भाषाओं में अनेकानेक मुललित काव्य ग्रंथ एवं लघु विद्यालय गद्य पद्य निबन्ध प्रस्तुत हैं, जिनमें से सर्व प्रथम गणनीय है पंडितराज स्वामी श्री भगवदाचार्यजी द्वारा विरचित "श्रीरामानन्द-दिग्विजय" नामक संस्कृत काव्य ग्रंथ एवं स्वामी श्री जय रामदेवजी पद्मरावि विरचित "श्रीरामानन्दायन" नामक हिन्दी काव्य ग्रंथ। श्री रामानन्द दिग्विजय का कथानक एवं वर्णन शैली सर्वथा स्वतंत्र है जिसमें ऐतिहासिक विवेचन सहित हिन्दी भूमिका थी प्रथम संस्करण के साथ छपी है, वह द्रष्टव्य है तथा दूसरे हिरीकाव्यश्रीरामानन्दायन के कथा भाग में अधिकांश रूप से उपरोक्त प्रसंग पारिजात का आधार लिया गया है। इनके अनिर्वक्त इस छे माँ वर्ष के दीर्घकाल में आपके चरित्र विषयक लिखे गये ग्रंथ समुह में ये अधिकांश तो उम्र विद्वेजी और विविध शासन के विप्लव काल में विनष्ट हो गये और जो अवशिष्ट हैं उनकी भी गणना करने पर एक महान संख्या हाताई है जिन सबके नामोल्लेख भी यहां स्थानभाव से असंभव हैं। उनमें से जो पत्र पत्रिकाओं में या पुस्तकरूप में प्रकाशित हो चुके हैं, उनको प्रेमी पाठक देख सकते हैं। इनमें पंडितराज स्वामी श्री भगवदाचार्य जी, पंडित सम्राट स्वामी श्री वैष्णवाचार्यजी, श्रीरामानन्दाश्रम जनकपुर धामके अध्यक्ष स्वामी श्री अरध किशोरदासजी श्री वैष्णव आदि महानुभावों

के निबन्ध प्रचुर परिमाण में और परमोत्तम हैं। जो पाठकों को प्राप्त हो सकते हैं।

अब हम यहां परमानन्दके आनन्द भाष्यकार भाक्षान श्रीगमावनार अनादि वैदिक श्री संप्रदायचार्य अनन्त श्री संवलित जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य महाप्रभुजी के समय निरायके विषय में कुछ ऐतिहासिक विवेचन देकर इस कथा को समाप्त कर रहे हैं।

अगस्त्यसंहिता, वैश्वानरसंहिता, अथर्व्य पुराण और प्रसंग पारिजात नामक चार प्रणीत आर्य एवं पूर्वाचार्य प्रणीत प्राचीन ग्रंथोंमें श्री आचार्यपाद के अवतार काल के तिथि नक्षत्र योग पक्ष योग लग्न आदि का न बरण प्राप्त है परन्तु संवत् का उर्णन किसी भी ग्रन्थ में नहीं है। समस्त के वणन का आधार श्रीअगस्त्य संहिता में एक श्लोकार्थ प्राप्त होता है जो श्लोक संख्या में परिमाणित भी नहीं है और अन्तर्गता में लिखा "एव कुरु दृष्टा है "स्व नभो लोक वेद पवित्रे वर्षे गते कलौ" जिसका अर्थ होता है कि "कलिपुत्र के ४२०० वर्ष बीतने पर आपका अवतार होगा। इसी के बादान्तर में "स्वनभो-वेद वेद" पाठ भी प्राप्त है जिसका अर्थ होता है कलिपुत्र के ४४०० वर्ष बीतने पर आप अवतरित होंगे। कलिपुत्र के ४२०० वर्ष होते हैं विक्रम संवत् १२५६ से और ४४०० वर्ष होते हैं १३५६ में।

यह भी ध्यान देने की बात है कि अगस्त्य संहिता में आपके प्रधान द्वात्रिंश विषयों के जन्म के भी योग पक्ष नक्षत्र आदि उल्लिखित है परन्तु संवत् का उल्लेख नहीं है, इसके ही श्लोकार्थ पर प्रक्षिप्त होने की संका होना भी स्वाभाविक है। भगवान के और पूर्वाचार्य के अवतारों में तिथि नक्षत्र योग लग्न आदि के साथ संवत् का उल्लेख बहुत ही कम ग्रंथों में देखने में आता है। प्रपन्नामृत जैन श्रीगमानुज संप्रदाय के ग्रन्थ में भी आचार्यपाद श्री रामानुजाचार्यजी के जन्म संवत् का उल्लेख नहीं है। अतः प्राचीन काल में संवत् के उल्लेख की प्रथा कम ही देख पड़ती है।

विद्वान् आधुनिक शास्त्रादि के निर्माताओं के मामले उक्त श्लोकार्थ का "स्वनभो वेद वेद" पाठ ही आया होगा इसी से उन्होंने विक्रम संवत् १३५६ में अवतार होना उल्लिखित किया है परन्तु आपके समय की कुछ तथ्यपूर्ण घटनाएँ यह बताती हैं कि आपका अवतार १३५६ में न होकर इससे १०० या ५० वर्ष पूर्व ही होना संभव है।

भक्तमाल, प्रसंगपारिजात, मगदी ज्ञानेश्वर चरित्र और अनेकानेक निबन्धों में सिद्ध है कि मगदी की प्रसिद्ध ज्ञानेश्वरी श्रीमद्भगवद्गीता टीका के रचयिता स्वामी श्रीज्ञानेश्वर या ज्ञानदेवजी के पिता श्रीविद्वत्पन्तजा, श्रीज्ञानेश्वरजी आदि अपनी चारों ही सन्तानों के जन्म से पूर्व पहिल ही श्रीगमानन्दाचार्य महाप्रभु के शिष्य हो चुके थे एवं श्रीज्ञानेश्वरजी का जन्म १३३२ विक्रम में हुआ है यह भाष्यः निर्विवाद है।

"प्रसंगपारिजात" में दर्शित भारत में वेद भाष्यकार स्वामी श्रीविद्यारथजी से समागत एवं राजा बुकागय द्वारा सम्मान स्तकार आदि का वर्णन है। यह सब भी १३५६ में जन्म होने से संभव नहीं होते। अतः उक्त श्लोकार्थ का "वेद वेद" नहीं परन्तु "लोकवेद" पाठ ही श्राव्य है। विद्वद्गुरु श्रीगमावनार रामाजी ने अरुण "ईश्वर वाद" नामक ग्रंथ में आचार्यपाद का जन्म संवत् १२५७ लिखा है। यह आपका उक्त श्लोक के इस शुद्ध पाठ से प्राप्त हुआ अथवा कहीं अन्यत्र से यह तो हम नहीं जानते परन्तु वह संवत् ठीक मिल गया है यह अवश्य जान पड़ता है।

यह जानती है वास्तव्य अन्वेषक श्रीफकुंहर साहब, डा० ग्रियर्सन श्रीजैमस हेम्टिंगम् आदि और उनके पदचिह्नों पर चलनेवाले भारतीय विद्वानों के लेखा के मनमैदा की बात, या इन सब के मूल में यह भ्रांत धारणा है कि किसी भी मनुष्य का (और तो भी प्रायः भारत जैसे उष्ण जलवायु वाले देश में) १०० वर्ष से अधिक तो क्या ८० वर्ष से अधिक जीवन भी असम्भव है। परन्तु इसके विपरीत मजीव

तथ्यों की उपस्थिति में इन ज्ञान धारणाओं का अब क्या मूल्य रह गया है यह पाठक विचारेंगे।

१०० वर्ष के लगभग आयु के जीवन महानुभावों का अस्तित्व आज भी भारत में उपस्थित है। इसमें किसी को शंका हो तो अयोध्या आकर के देखलें। १२५ वर्ष के महान्माओं ने कुछ ही वर्ष पूर्व शरीर छोड़े है जिनमें मुविस्वात नवाही (मिथिला) के परमहंस श्रीरामशरणजी कामदकुज श्री अयोध्याजी के श्री महन्तजी और कुदरुहा के श्रीयोगी-राजजी के दर्शन करने वाले अयोध्याजी में सैकड़ों सन्त उपस्थित हैं। जयपुरमें प्रह्लाददामजी नामक एक औरत संन्यास के योगि माधु थे, उनकी शरीर छोड़े अभी २० वर्ष भी नहीं हुए हैं, उनको इन पंक्तियों के लेखक ने ४० वर्ष तक बसेके बसे (५० या ६० वर्ष की उमर के जैसे) देखा है और अपने पितामह जैसे महानुभावों से सुना है कि हमने हमारे पिता पितामह से भी यही सुना है कि हमने उनकी बाल्यन से ऐसा ही देखा है। अतः वे लगभग २०० वर्ष अक्षयही जीये होंगे। काशी के श्री द्वारकाधीश मन्दिर के श्रद्धास्पद आचार्य योगराज आध्यात्मदा ब्राह्म (जिनका भारत राष्ट्र के भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री राजेन्द्रबाबू और राजर्षि श्री पुष्पोत्तमदासजी टएहन अपने सद्गुरु मानते थे) भी १०० वर्ष से अधिक के परम प्रसिद्ध विराजमान हैं। समाचार पत्रों में भी देश विदेश के कभी कभी दीर्घजीवी भाग्यवानों के समाचार देखने प आही जाते हैं, फिर न जानें क्यों इन आधुनिक इतिहास लेखकोंको श्रीमदाचार्य के दीर्घ जीवन में असम्भाव्यता लगती है ?

भक्तमालमें १०० वर्ष से अधिक रहने वाले अनेक महान्माओं के चरित्र आये हैं परन्तु श्रीनामस्वामी ने "बहुत काल वपू धारि के" केवल श्रीशतिराजराज के लियेही कहा है। श्रीविठ्ठल पंतजी और श्रीकदीरजी के श्रीमदाचार्यपाद के शिष्य होने के उल्लेख बगड़ी हिन्दी आदि अनेक भाषाओं के ग्रंथों में उल्लिखित हैं और जगत प्रसिद्ध हैं।

विठ्ठल पंतजी के दीक्षा में पीछे की सन्तानों का जन्म १३३० विक्रम है और श्री कवीरजी का जन्म १४४५ विक्रम का अतः श्रीमदाचार्यपाद का जन्म विक्रम १३०० से पूर्व और महाप्रस्थान १५०० के पश्चात् होने से ही इन सबकी संगति होती है।

श्रीमदाचार्य के महाप्रस्थान काल का संवत् १५१५ का स्पष्ट उल्लेख है तब क्यों दीर्घ जीवन को असम्भाव्य माननेकी निगाधार तर्क के आधार पर इन सब ऐतिहासिक सत्यासे कुछ मोड़ा जाता है ? इसमें विदेशी मासकों की मित्रा इस जालबाजी के कि "भारतीय जनता का अपने पूर्वजों के ऊपर श्रद्धा न रहे, वे सदा अपनी और अपने पूर्वजों की हानता की भावनाओं से ही ओत प्राप्त रहे, के अतिरिक्त अन्य कोई ऐतिहासिक तथ्य नहीं हो सकता। हम भारतीयों के दुर्भाग्य का विषय है कि अब दागता की चेष्टियाँ कटजाने पर भी हमारी मानसिक दायता नहीं जा रही है। हम अब भी अंग्रेजों से नहीं तो उनकी भ्रान्त विचार धारा से, उनकी भाषा और वेप मूषा से विपके हुए हैं।

अब हम श्री यतिराजराज आचार्यपाद के समकालीन एक विषयी सन्त ने आपके विषय में जो लिखा है सो यहाँ दे रहे हैं।

गोरखपुरीय प्रसिद्ध पत्र कल्याण के सं० १९९४ के मूल अंक में श्री अयोध्याजी के प्रसिद्ध साहित्यकार सन श्री विन्दु कल्याणीजी का "श्री रामानन्दाचार्य" शीर्षक से एक लेख छपा है उसमें उसका अलुषाद इस प्रकार छपा है—

काशी बामो मौलाना रसाददीन साहब अपने "तजकीरउन्फुकरा" नामक ग्रंथमें लिखते हैं कि "उस (काशी) नगरी में पंचगंगा घाटपर एक प्रसिद्ध महान्मा रहते हैं। तेजः पुत्र और पूर्ण योगेश्वर हैं। वैष्णवों के सर्वमान्य आचार्य हैं। सदाचार एवं ब्रह्म निष्ठा के स्वयं ही हैं। परमान्तरहस्य तन्त्रके पूर्ण ज्ञाता हैं। मन्त्रे भगवन्प्रेमियों

एवं ब्रह्म विदों के समान में अन्कृष्ट प्रभाव रखते हैं। अपितु धर्माधिकार में वे हिन्दुओं के धर्मकर्म के सम्राट हैं। केवल ब्रह्म वे आम अपनी पुनीत शुक्राग्ने संगारानानके लिये बाहर निकलते हैं। उन पवित्र आत्माको 'स्वामी रामानन्द' कहते हैं। उनके शिष्यों की संख्या ५०० से अधिक है उस शिष्य समूह में १२ गुरु के विशेष कृपापात्र हैं, कर्षास पीपा और रैदास आदि। भागवता के इस समुदाय का नाम विशाखा है। जो लोक परलोक की इच्छा या का न्याय करना हैं, उसे आत्मता की भाषा में विशाखा कहते हैं। कहते हैं कि इस संप्रदायकी पञ्चतन्त्रा ज्ञापि जगज्जननी (श्री) सीताजी हैं। उन्होंने प्रथमतः अपने सन्निधि सेवक पार्षद रूप (श्री) हनुमानजी को उपदेश किया और अनन्तर आचार्य के द्वारा संसार में उस रहस्य (मंत्र) का प्रकाश हुआ। इस कारण इस संप्रदायका नाम 'श्री संप्रदाय' है। और उसके मुख्य मंत्र की रामनामक कहते हैं। और यह कि उस पवित्र मंत्र की गुरु शिष्यक हास्य दीक्षादत्ते हैं और उत्तर्पण विलक लाम और मोपके आकारका लकार तथा अन्य १२ लकार लगाते हैं। तुलसीदास जीरा जनेउ में गृथकर १२ प्यक गल में पहनाते हैं। उनकी जिहा जपमें और मन सन्ने प्रियतम के दर्शनानुसन्धान में रहा करना है। पूणतया भजनमेही कहना इस संप्रदायकी गति है। अधिकांश सन्त आन्माराभी अथवा परम 'सी' जीवन निवाह करत हैं।"

प्रसंग परिजात ग्रंथ के मूल पाठ से विज्ञ पाठकों को परिचित कराने के लिये यहाँ हम उसमें से प्रथम और अन्तिम दो अष्ट पदियाँ उद्धृत कर रहे हैं। कोई महानुभाव इनकी व्याख्या करके सुना देने की क्षमता रखते हों। तो कृपाकर सूचित करें, इन पंक्तियों के लेखक को इससे महान प्रसन्नता होगी। ऐसे विद्वान का परिचय प्राप्त कराने वाले महानुभाव को पुण्य और यश तो स्वतः ही प्राप्त होगा एवं यदि वे ग्रहण करें तो यथा शक्ति आर्थिक सेवा भी की जावेगी।

प्रसंग परिजात ग्रंथ की आरम्भिक अष्टपदी यह है—

हिम हिम हमन्ता होलडी, मद भाव माधवा मौलडी ।
तल तडित ताडण मौलडी, घर घर घरन्ता घोलडी ॥
वत्सवा करादी सरसई, गङ्गा गलौजा गडरई ।
निङ्गति तलजा मदनई, आमार माणे बैथई ॥
सारङ्ग धर ठियाण ठिया, वाजुगट विभु वैगुण विया ।
माधूम मत्सर मौलिया, चिर जैम जारण जाजिया ॥
मवतूल मण्डित बाहुणी, आमृत मलेच्छ मथा गुणी ।
अणु फागुणी नणु पारुणी, तुरकान दल दल दारुणी ॥
हाहम दोमिक तिपिया, भरदार चौडा किपिया ।
लोलिम नाकरा लिपिया, मित्रिका मणारा लिपिया ॥
हपि फाम फाना फैवडा, सरसून तोनिम तैवडा ।
घुण वास डीहम घैवडा, हिमक अहिमक मैवडा ॥
पालून पैरामू जणम, मावत तैरग तोहमस ।
आयूप कैवम दौद दम, संकर जु पोरस वरस जस ॥
आहम तावर चवरमा, कैयूम वरवा हिच्छरा ।
जे भूम कैमव धम्मदा, मामूम मणित मच्चहा ॥

और अन्तिम अष्टपदी यह है—

सजणी सुमा मामं हुरा, मामी अनन्तानन्द तरा ।
अठ्ठप उठय कैमु लुरा, पमगैथ भुरदाल कुरा ॥
लेवाहमी मुस्तंपु तम, पमा विमन्तिह चतु मस ।
दिहको कुवामी हंनु लस, तिणही दिणाची जंपु वस ॥

धिप धिम चुणाच धेम धुर, निपहाभु चेतणदास नुर ।
 विनां तवस्मि लेम उर, दिगमर मिथाले पम्म दुर ॥
 वसुवीर किरम्मरम भुक्कै, पधि वेहु खुर भामनरुक्कै ।
 उवहा चुमण खीजा णुक्कै, हिचु हर दिभर धाणुं पुक्कै ॥
 पलु पंभरा तप चालुली, मच्छु बेहरा गिण वांकुली ।
 अभणै वुअर्रा लामुली, मकु भिह कुपा दुह धामुली ॥
 अंजाप भण वार्मानुपू, देशवांड प्राकृत सुमु तुपू ।
 पैशावि छवदा चिव धुपू, छन्दाणु अदला लिभुतुपू ॥
 लौमाणु नामम तुपु तही, थिह भिचु वतापिभु टिपु तही ।
 मचुलौ रिवासुह हिसु तही, कपळण पिणरचा हव तही ॥
 वामपिट सिव श्रामिण वगी, त्रिनि और मारित मिह चुगी ।
 छुप मांग पारी जानुगी, दिहणपु रामचु पातुगी ॥

पाठकोंको भगवतपाद अनन्त श्रीरामानन्दाचार्यजीकी रचनासे परिचित होनेकी अभिलाषा होना स्वाभाविक है अतः आपके ग्रंथोंमेंसे सबसे छोटा और मानवमात्रका कल्याणकारी श्रीवैष्णव मनाब्ज भास्कर ग्रंथ मंक्षिम हिन्दी टीका सहित यहाँ दिया जा रहा है ।

❀ श्रीमते रामानन्दाय नमः ❀

अनादि वैदिक श्रीसम्प्रदायाचार्य हिन्दूधर्म रक्षक आनन्दभाष्यकार
 यतिमार्गभाष जगद्गुरु अनन्त श्रीरामानन्दाचार्य प्रणीत

❀ श्रीवैष्णव-मताब्ज-भास्करः ❀

(अथ मङ्गलाचरणम्)

श्रीमन्तं श्रुतिवचमद्भुतगुणश्रामायस्त्नाकरं,
 प्रेयःस्वेक्षणमंसुलज्जितमहीजाताक्षिकोणेक्षितम् ।

भक्ताशेषमनाभिवाञ्छितचतुर्गर्गप्रदस्वर्द्धुमं,
 रामं स्मेरमुखाम्बुजं शुचिमहार्नालादमकान्तिं भजे ॥१॥

वेदोंमें जानने योग्य, लोकोत्तर गुणमय रूप श्रेष्ठरत्नोंके अवलम्ब
 भण्डार, प्रियतम श्रीप्रभुके अपनी और देवोंके कारण अन्यन्त
 लज्जायुक्त श्री भूमिजाजूके हगकोरसे देखे गये हुये, भक्तोंके मनो-
 वाञ्छित संपन्न धर्म, अर्थ, काम और मोक्षको देनेमें कल्पवृक्षके समान,
 खिले हुये कमलके समान मुखवाले, परम निर्मल महानील मणिके
 समान कान्तिवाले, भगवान् श्रीरामको मैं भजता हूँ ॥१॥

प्रत्यृध्यहभङ्गं विदधदुरुचलः शक्तिमान् सर्वकारी,
 भूग्निश्चैः प्रतापो मुनिवरनिकरैः स्तूयमानो विमानः ।
 रक्षादेत्यादिनाशी चुभितजलनिधिर्लोकजिह्वोक्तमान्यो,
 धन्यो नो मङ्गलोऽयं सपदि स कुरुताद्रामशस्त्रास्त्रमंधः ॥२॥

अन्यन्त बलवाले, महान् शक्तिशाली, सब कुछ करनेवाले, अपरिमित
 श्रेय और प्रतापवाले, मुनिवर्य समूहसे स्तुति किये जानेवाले, राक्षसादि
 शत्रुओंके मानको दलन करनेवाले, अगाध समुद्रको भी लुब्ध कर देने-
 वाले, समस्त लोकोंको जीतनेवाले, तीनोंलोकोंके मान्य, घिन्नयादि
 ऐश्वर्यको प्राप्त तथा विघ्नोंके समूहका सर्वदा नाश करते हुये, भगवान्
 श्रीरामके शस्त्रास्त्र समूह शीघ्र हमारा कल्याण करें ॥२॥

ऐश्वर्यं यदपाङ्गमंश्रयमिदं भोग्यं दिगीशैर्जग-
 चित्रं चाखिलमद्भुतं शुभगुणा वात्सल्यसीमा च या ।
 वित्युत्पुन्नममानकान्तिरमितक्षान्तिः सुपद्मेक्षणा,
 दत्तात्रोऽखिलमप्यदो जनकजा रामप्रिया साऽनिशम् ॥३॥

दिकपाल आदिके अद्विष्ट भोग्य ऐश्वर्य, तथा यह संपन्न चित्र
 भगवत्, जिनके कृपाकटाक्षके आश्रित हैं, जो अनन्त शुभ गुणवाली है,

जो वात्सल्यकी पराकाष्ठायुक्त अनन्त विद्युत्के समान कान्तिवाली, अप-
रिमित क्षमावाली और सुन्दर कमलके समान नेत्रोंवाली हैं, वे भगवान्
श्रीरामकी प्राणप्यारी श्रीजानकीजी हमलोगोंको सर्वदा मोक्ष आदि
समस्त सम्पत्ति प्रदान करें ॥३॥

(श्रीसुरसुरानन्दाचार्य उवाच)

तत्त्वं किं किं च जाप्यं भूपतिशरणैर्वैष्णवैर्यनिर्मितं,
मुक्तैः किं साधनं मत्सुभतिमतिमतो धर्म एकोस्ति कश्च ।
धर्माणां वैष्णवाग्ने गुरुवर कतिधा लक्षणां किं च तेषां,
कालक्षेपः किमाय कथमुत्सृज्य भद्रं कुत्र कार्यो निवासः ॥४॥

श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजीने पूछा । हे अज्ञानरूप अन्धकारको नाश-
करनेवाले आचार्य कर्ष इस जगत्में (१) तत्त्व क्या है ? (२) श्री
रामजीकी शरणागति स्वीकार करनेवाले वैष्णवोंको क्या अपना
चाहिये ? (३) उनकेलिये उष्ट्र ध्यान क्या है ? (४) उनकी मुक्तिका
लक्ष्य साधन क्या है ? (५) अनेक धर्मोंमें प्रशस्तविद्वानोंकी बुद्धिसे
परिचरीत और श्रेष्ठ धर्म कौन सा है ? (६) वे वैष्णव धर्म किन्ने
प्रकारके होते हैं ? (७) उनका लक्षण क्या है ? (८) कालक्षेप कैसे
करना चाहिये ? (९) मोक्षप्रद साधन क्या है ? और (१०)
वैष्णवोंको निवास कहाँ करना चाहिये ? ॥४॥

(श्रीगमानन्दाचार्य उवाच)

हृत्थं पृष्टस्त्वया यः सकलहितकरः प्रश्नराशिर्गरिष्ठो,
वेद्यः सर्वश्रुतीनां जगति सुरसुरानन्द सद्यः स तुभ्यम् ।
प्राचार्याचार्यवर्यान् यतिपतिमहितान्मादरं तान् प्रणम्य,
सम्यक्सास्त्रानुसारं गुरुवरवचसा प्रोच्यते श्रूयतां तत् ॥५॥

श्रीयतिमहाराज ने कहा — हे सुरसुरानन्द ! समागमें सबके लिये
हितकर, सर्ववेदोंद्वारा वेद्य, गुरुत्व जो प्रश्न तुमने इस प्रकारसे पूछे हैं,

उन्हें मैं यतिपति—श्रीस्वामि राघवानन्दाचार्यमहाराज, प्राचार्य—श्रीहनु-
मानजी, श्रीवशिष्ठ, श्रीपराशर, श्रीव्यास प्रभृति प्रकृष्ट आचार्यों तथा
आचार्यवर्यान्—अन्य श्रीपुरुषोत्तमचार्यसे लेकर श्रीहर्षानन्दाचार्यादि
सब आचार्योंको आदर सहित प्रणाम करके गुरुवर—श्रीमद्राघवा-
नन्दाचार्य महाराजके वचनोंसे सुना हुआ शास्त्रानुसार अच्छे प्रकारसे
वर्णन करता हूँ, तुम सुनो ॥५॥

(अथ प्रथम प्रश्नस्योत्तरम्)

(प्रकृतिनिरूपणम्)

पृष्ठानामेकमाद्यं त्रिकल्पं शृणु तद्भेदतो नामभेदै-
नित्याऽज्ञाश्चेतना सा प्रकृतिर्विकृतिर्विश्वयोनिःशुभेका ।
नानावर्णात्मिकाऽज्ञा त्रिगुणमुनितयाऽव्यक्तशब्दाभिधेया,
निर्व्यापारा परार्था महदहमितिसूक्ष्मव्यते तत्त्वत्रिदिग्भाः ॥६॥

तुम्हारे पूछे हुए प्रश्नों में एक जो सबप्रथम तत्त्व विषयक प्रश्न है
उसके तीन भेद हैं । एक ही सृष्टिचिदचिद्विशिष्ट ब्रह्म तत्त्व, अचिन्त, अचिन्त,
चित् और ईश्वर भेदमें तीन प्रकार का हो जाता है । उसको अचि-
दादि नामभेद से सुनो । (इन तीन में से) प्रथम अचित् प्रकृति का
निरूपण करते हैं । तत्त्ववेत्ता लोग कहते हैं कि - विकार रहित सकल
विश्व की कारण, एक होकर भी बहुत प्रकार से शोभमान शुक्ल
आदि भेद से बहुत वर्णोंवाली, सतोऽगुण रजोऽगुण और तमोऽगुण की
आश्रय; अव्यक्त, प्रधान आदि शब्दों से वाच्य, स्वतन्त्रव्यापारशून्य,
परार्थ अर्थात् भगवान्के आधीन रहनेवाली, तथा महत्तत्त्व और अहङ्कार
आदिको उत्पन्न करनेवाली को प्रकृति कहते हैं ॥ ६ ॥

(अथ जीवस्वरूपनिरूपणम्)

नित्योऽज्ञश्चेतनोऽज्ञः सततपरवशः सूक्ष्मतोऽत्यन्तसूक्ष्मो,
भिन्नो बद्धादिभेदैः प्रतिकुणपमसौ नैकधा सूरिवर्ग्यैः ।

श्रीशाकंताल्यस्यो निजकृतिफलभुक्ततमहाधोऽभिमानी,
जीवः संप्रान्यते श्रीहरिपदमुमते तत्त्वजिज्ञासुधैवः ॥७॥

जो नित्य अर्थात् सर्वदा एकरूप रहनेवाला है, (जिसका आदि मध्य और अन्त नहीं है,) जो अज्ञ अर्थात् अल्पज्ञ है, चेतन है, अज है, सर्वदा भगवान्‌के आधीन है, सूक्ष्मसे भी दृश्य है, पतिसरीरमें बद्ध, मुक्त और नित्य आदि भेदों से अनेक प्रकारवाला होकर भिन्न भिन्न है, भगवान्‌की व्याप्तिसे युक्त जो शरीरमें रहनेवाला है, स्वकर्मानुसार फल भोगनेवाला है, भगवान् सर्वदा जिसके सहायक है, मैं कर्ता हूँ मैं भोक्ता हूँ, इस प्रकार के अभिमानवाला है, जो नित्य के जिज्ञासुओं के जानने योग्य है, उसे श्रेष्ठ विद्वान् जीव कहते हैं ॥ ७ ॥

(अथ ईश्वरनिरूपणम्)

विश्वं जातं यतोऽद्वा यदवितशस्त्रिलं लीनमप्यस्ति यमिन्,
सूर्यो यत्तेजमेन्दुः सकलमविरतं भामयत्येतदेव ।
यदर्भात्या वाति वातोऽनिरपि सुप्तं गति नैश्वर्यं ज्ञः,
माक्षी कृतस्थ एको बहूशुभगुणवानव्ययो विश्वन्तरी ॥८॥
श्रीमानन्वयः शरणां बहुविधविधुधैर्भोगिम्यांविप्रदामोऽ-
स्पृश्यः क्लेशादिभिः सत्यमुदितमुदशाः सूरिभान्या वदान्यः ।
शश्वन्नीरामचन्द्रः सुप्रहितमग्निमा माधुर्वेदेशेषै-
निर्मुक्त्युः सर्वशक्तिर्विकल्पविजगे रीर्मनाभ्यामगम्यः ॥९॥

जिनसे यह समस्त विश्व उत्पन्न हुआ है, रक्षित है, और जिनमें लीन होता है; जिनके तेज से सूर्य और चन्द्रमा निरन्तर रात्रि और दिन के विभाग से इस समस्त जगत् को प्रकाशित करते हैं । जिनके भयसे वायु बहता है पृथिवी भी पातालमें नहीं जाती है; वही परम-ज्ञानवान्, आत्माओंके कर्मोंके साक्षी, अपने से भिन्न अन्य सब लोकों

को बरकर (आक्रान्त करके) कृतस्थ लोहधनके समान स्थिर रहनेवाले अद्वितीय, कृत्स्न, कुतञ्जल, निभृतत्व, सभृताकारत्व, अपोघक्रोधहर्षत्व, प्रियमत्यजादित्व, शरणागतवन्धुत्व, दृढव्रतत्व, मृदुत्व, सौचभ्य स्थिर प्रज्ञत्व, सत्यसन्धत्व, आदि अनन्तकल्याणगुणाकर, अविनाशी संपन्न जगत्‌के पालन करनेवाले, शरणमें रहनेवाले योगि श्रेष्ठोंसे व्यापमान है चरण-कमल जिनके, जो अपनी कृपाके अतिरिक्त किसी भी क्लेश, माधन द्वारा नहीं मिल सकते, समस्त देव मुनि प्रधानोंसे मान्य और स्तुति किये जानेवाले, मनुष्योंसे जिनका यश वर्णन किया गया है, विद्वानोंके जो मान्य हैं, मोक्ष अदि दुर्लभ पदार्थों को भी जो देनेवाले हैं, समस्त वेदों के द्वारा जिनका माहात्म्य वर्णित है, जो अजर हैं, सर्व शक्तिमान् हैं, निष्पाप हैं, अजर हैं, बाणी और मन से अगोचर हैं, नित्य हैं, वही श्री मीताजी के सहित श्री रामचन्द्रजी ईश्वर हैं ॥ ९ ॥

(अथ द्वितीय प्रश्नस्यात्तरम्)

(श्रीमन्मन्त्रराजपरमार्थनिरूपणम्)

मंजाध्वरनाम्कारुषो मनुजर इह तैर्वाह्वीजं यदादौ,
राभा के प्रत्ययान्तो रममितशुभदस्वधरः स्यान्नमोऽन्तः ।
मन्त्रो रामद्वयाख्यः सकृदिनिस्समप्रान्वितो गुह्यगुह्यो,
भूतादपुत्रमंख्यार्णः सुकृतिभिर्निशं मोक्षकामैर्निपेयः ॥१०॥

ब्रह्मविान् जिसके आदिमें है, 'नमः' अन्तवाला चतुर्थी विभक्तियुक्त रामशब्द जिसमें विद्यमान है, शुभपद है अक्षर है, ऐसा श्रीराम नामक नामक मन्त्रराज समस्त मोक्षाधिनामियों को जपना चाहिये । तथा सुकृती पुरुषों को चरममन्त्रयुक्त २५ अक्षरोंवाले, अत्यन्त गोपनीय रामद्वय नामक मन्त्रका भी निरन्तर तेजन करना चाहिये ॥ १० ॥

मन्त्राणां व्यापकानां भगवत इह चाव्यापकानां तु मध्येऽ-
तिश्रेष्ठो व्यापकः स श्रुतिमुनिमुनतः शिष्टमुख्यैर्गृहीतः ।

नित्यानामाश्रयोऽयं परित उरुशुभो राममन्त्रः प्रधानं,
प्राप्यश्च प्रापकोऽपि प्रचुरतरगुणज्ञानशक्त्यादिकानाम् ॥११॥

श्रीराममन्त्र व्यापक भगवन्मन्त्रों से श्रेष्ठ तो है ही, अपितु व्यापक मन्त्रों की अपेक्षा भी श्रेष्ठ है। वेदों और मुनिजनों से आहत है। परम श्रेष्ठ पुरुषों से परिशुद्ध है। हनुमदादि नित्य जीवों का आश्रय है, सब ओर से परम कल्याणप्रदाता है। प्रधान है। प्राप्य है तथा अधिकाधिक गुण, ज्ञान और शक्ति आदिका प्रदाता भी है। ऐसा यह श्रीराममन्त्र सब मन्त्रों में परम श्रेष्ठ है ॥ ११ ॥

यावद्वेदार्थगर्भं प्रणवि जगदुदाधारभूतं सविन्दु,
प्रव्यक्तं रामबीजं श्रुतिमुनिगदितात्कष्टपटव्यासिभेदम् ।
रेफारूढत्रिमूर्तिं प्रचुरतरमहाशक्तिं विश्वोन्निदानं,
शश्वत्संराजते यद्विविधमकलमंभाममानप्रपञ्चम् ॥१२॥

समस्त वेदार्थ जिसके अन्तर्गत है, प्रणवि (ओङ्कार) जिसमें समाहित है, समस्त जगत् का जो सर्वोपरि आधारभूत है, विन्दु सक्ति जो विद्यान है, जो अत्यन्त व्यक्त है, जिसमें अधिकतम मही शक्ति है, जो विश्व का सर्वोन्निदान मूलकारण है, नाना प्रकार के समस्त प्रपञ्च जिसमें भासमान है 'पिसा परम प्रसिद्ध रामबीज (राममन्त्र का बीज 'रं') जिसमें निरन्तर विराजमान हो रहा है ॥१२॥

तत्राद्येन पदेन रेण भगवान् सीतापतिः प्रोच्यते,
श्रीरामो जगतां गुणैकनिलयो हेतुश्च संरक्षकः ।
तच्छ्रेणी पदतोऽयतो भगवन्नाऽनन्यार्हशेषत्वकं,
व्यावृत्तस्तु गुरान्तरादिगतमत्तच्छेषताया मुहुः ॥१३॥

उक्त बीज के आदि पद रेफ से (समग्र ऐश्वर्य, वीर्य, यज्ञ, श्री, वैराग्य और मोक्ष आदिसे नित्ययुक्त, विदेहराज जनकके तपोबलसे

प्राप्त, विपुलसम्पत्तिवर्द्धनी भगवन्तुल्य ऐश्वर्य, शील, त्रय, कुलाचार आदि से युक्त अयोनिजा महाराज्ञी) श्रीसीता के पति; (शौर्य, वीर्य माधुर्य, कृतज्ञत्व, ददप्रतत्त्व, सर्वज्ञत्व, सौलभ्य आदि) लोकोत्तर गुणोंके एकमात्र आकर; समस्त जगत्के एकमात्र कारण. (संकल्प-विशिष्टवेष से निमित्त सूक्ष्मचिदचिद्विशिष्टवेषसे उपादान, और सहकारि-भूत कालादि के अन्तर्यामी होने से सहकारी कारण), सबके संरक्षक और संहारक; सर्व जीवों के शेषी भगवान् श्रीरामजी का वर्णन किया जाता है। और अकार पद से भगवन् की अनन्यशेषार्हता और ब्रह्मादि देवतान्तर की शेषता की व्यावृत्ति कही जाती है ॥१३॥

पितापुत्रत्वसंबन्धो जगत्कारणवाचिना ।

रक्षयक्षकभावश्च रेण रक्षकवाचिना ॥१४॥

ब्रह्मादिजगत् के निमित्त, उपादान और सहकारि कारणवाची 'र' से पिता पुत्र सम्बन्ध तथा रक्षक वाची 'र' से रक्षय रक्षक सम्बन्ध भी श्रीरामजी का जीवों के साथ कहा जाता है ॥१४॥

शेषशेषित्वसंबन्धश्चतुर्थ्या लुप्तयोच्यते ।

भार्याभर्तृत्वसंबन्धोऽप्यनन्यार्हत्ववाचिना ॥१५॥

र के आगे लुप्त चतुर्थी विभक्ति के द्वारा शेषशेषित्व सम्बन्ध और अनन्यार्हत्ववाची मध्यमत अकार से भार्याभर्तृत्व सम्बन्ध भी कहा जाता है ॥१५॥

अकारेणापि विज्ञेयो मध्यम्येन मन्त्रमने !

स्वस्वामिभावसम्बन्धो मकारेणाथ कथ्यते ॥१६॥

तथा ज्ञानार्थक मन धातु से बने हुये म् कार के द्वारा स्व जीव) और स्वामि (ईश्वर) का स्वस्वामिभाव सम्बन्ध कहा जाता है ॥१६॥

आधाराधेयभावोऽपि ज्ञेयो रामपदेन तु ।

सेव्यमेवकभावस्तु चतुर्थ्या विनिगद्यते ॥१७॥

रामपद से आधाराधेय भाव संबन्ध जानना चाहिये एवं आगे की चतुर्थी विभक्ति से सेव्यसेवकसंबन्ध कहा जाता है ॥१७॥

नमः पदेनाखण्डेन त्वात्मीयत्वमुच्यते ।

पष्ठ्यन्तेन मकारण भोग्यभोक्तृत्वमप्युत ॥१८॥

नमः शब्द दो प्रकार का है एक अखण्ड और दूसरा सखण्ड । अखण्ड नमः पद से आत्मा और आत्मीयभाव कहा जाता है तथा सखण्ड करने से 'न' के आगे 'मः' यह पष्ठ्यन्त पद है और उससे भोग्य भोक्तृत्व सम्बन्ध कहा जाता है ॥१८॥

ज्ञानानन्दस्वरूपोऽवगतिगुणगुणो मेन वेद्योऽणुमानो,

देहादेरप्यपुत्रो विविदितविनिधस्तत्प्रियस्तत्प्रताय ।

नित्यो जीवस्तृतीयेन नृ खलु पदतः प्रोच्यते रवप्रकाशो,

जिज्ञासुर्न मदेत्यं शुभनतिमुमते शास्त्रविस्मजनानाम् ॥१९॥

हे शुभ काशी में सुन्दरयुद्धिवाले सुमुखानन्द ! तृतीयपद 'यु' काग से, शास्त्रज्ञ सज्जन जिज्ञासुओं के सदा जानने योग्य ज्ञानानन्दस्वरूप, ज्ञान और मुख आदि गुणोंवाला, अणु परिमाणवाला, देह इन्द्रियादि से अप्रब, बद्ध आदि भेद से अनेकों प्रकारवाला प्रसिद्ध, परमात्मा का प्रिय, मोक्षादि में परमात्मा ही जिसका सहाय है, जो नित्य और स्वप्रकाश है, वह जीव कहा जाता है ॥१९॥

मदाच्योऽहं रवाच्याय शपभृतोऽस्मि सर्वदा ।

इतीतिमेव वो यो ह्येवार्थार्थस्तद्विविक्तया ॥२०॥

ऐसे ही विद्वानों को यदि मन्त्र का वाक्यार्थ जानने की इच्छा हो तो यह जानना चाहिये कि 'यु' वाक्य में जीव, 'र' वाक्य सर्वशेपी (भगवान् श्रीगणेश) के लिये सर्वदा शेषभूत है ॥२०॥

गणायैति चतुर्थेन श्रिया देव्याम्नु सर्वदा ।

चेतनाचेतनानां च रमणाश्रयतेर्यते ॥२१॥

रामाय इस व्यक्त चतुर्थ्यन्त पदमें श्रीपदवाच्या श्रीजानकी रमण ही चेतन अचेतनके सर्वदा रमण के आश्रय है यह कथित है ॥२१॥

सर्वविधबन्धुत्वं सर्वप्राप्यत्वमेव च ।

सर्वप्रापकता तेन तथा चोभयलिङ्गता ॥२२॥

उसीसे सर्व प्रकार बन्धुत्व सर्वप्राप्यत्व सर्वप्रापकत्व निरन्तरनिश्चित दोषत्व कल्याणगुणाकरत्वरूप और उभयलिङ्गता भी कथित होती है ।

पदेनैवाच्यते मत्यानन्दचिद्रूपता तथा ।

यावद्विभूतिनेतृत्वं रामपदाब्जमज्ञते ॥२३॥

जसी 'रामाय' पद से भगवान् में मत्स्यस्वरूपता, आनन्दस्वरूपता चित्स्वरूपता तथा निश्चिन्तविभूतिका स्वामित्व भी प्रतिपादित है ।

रागादिकारणे बन्धो तेनेव विनिवर्त्यते ।

बन्धुत्वप्रतिपत्तिश्च भाममानाऽविचारतः ॥२४॥

(चतुर्थी से ही) अविचारसे प्रतीयमान राग आदिके कारणभूत आता, पुत्र, कलत्र मित्रादिमें बन्धुत्वज्ञानकी भी निवृत्ति हो जाती है ।

तच्चतुर्थ्या स्वानुरूपकैङ्कर्यप्रार्थनोच्यते ।

विषयान्तरमेवाऽपि प्राप्ता सा विनिवर्त्यते ॥२५॥

चतुर्थी विभक्ति से ही स्वानुरूप (अपने योग्य) भगवान् के कैङ्कर्यकी प्रार्थना तथा अन्य विषयोंकी सेवाशी निवृत्ति भी कही जाती है । पदेन तेनात्र तु पञ्चमेन सं-प्रकथ्यते वै तदनन्यगोपता । प्रहेयमन्यार्थमथो स्वतन्त्रता निवर्त्यते जीवगणस्य मन्तनम् ।

ऊपर कहा जा चुका है कि नमःपद अखण्ड और सखण्ड भेदसे दो प्रकारका है । अब सखण्ड पक्षको लेकर 'न' और 'मः' इनमेंसे 'न' पदका अर्थ बताते हैं ।

चतुर्थ पदकी व्याख्याके अनन्तर इस मन्त्रमें 'न' इस पञ्चम पदसे निश्चय ही जीवोंकी अनन्तशेषता अर्थात् जीवोंका भगवान्‌के अतिरिक्त किसीके भी शेष (भोग्य) नहीं होना कायत है । तथा स्पष्टय जो भगवद्‌निरिक्त प्रयोजन और जीवोंकी स्वतन्त्रता है इनकी मदके लिये निर्गति भी इसी 'न' पदमें की जाती है । तात्पर्य यह है कि भगवान्‌से अतिरिक्त, जीवोंका किसीके साथ कोई प्रयोजन नहीं है और जीव स्वतन्त्र नहीं किन्तु सबदा श्रीगुणाधारीके परतन्त्र ही हैं ॥१६॥

पदेन पठेन म इत्यनेन स्वस्वाम्यनन्यार्हकशेषतापि ।

समुच्यते चेतनवाचिना तु तत्किङ्करत्वेकफलाधिपत्यमा ॥२७॥

जीववाची पठ ' म ' पदसे अपने आपका स्वामित्व (स्वातंत्र्य) और अनन्यार्ह शेषता, भगवद्‌निरिक्त अन्यका शेष नहीं होना) तथा भगवन्‌के द्वारा रूप प्रधान फलका संग्रह किया जाता है । तात्पर्य यह है कि 'म' इस पदमें यह बोधित होता है कि भगवान्‌ ही जीवोंके एक मात्र स्वामी है, वही शेषी हैं, उनकी सेवा ही एकमात्र फल है ॥२७॥

उपायार्थपरेणात्र त्वखण्डनममोच्यते ।

उपायो हि मवाच्यस्य स्वाच्यो राम एव सः ॥२८॥

उपायार्थपरक अखण्ड नमः शब्दसे तो मवाच्य जीवके ' न वाच्य ' श्रीरामजी ही उपाय है, यह प्रतिपादित होता है ॥२८॥

वीजेनेवाथ जीवस्य स्वरूपं प्रतिपाद्यते ।

रामार्येति परस्यापि चतुर्थ्या तत्फलस्य च ॥२९॥

बीज । री, से जीवका स्वरूप, 'रामार्य' से भगवत्स्वरूप और चतुर्थी विभक्तिसे उसके फलके स्वरूपका प्रतिपादन किया जाता है ।

उपायस्य त्वखण्डेन नमःशब्देन चोच्यते ।

सखण्डे तु मकारेण पष्ठ्यन्तेन विरोधिनः ॥३०॥

अखण्ड नमः शब्दसे उपायका स्वरूप कहा जाता है और सखण्ड पक्षमें पष्ठ्यन्त मकारसे विरोधीका स्वरूप प्रतिपादित होता है ॥३०॥

तात्पर्यार्थः समस्तानां शास्त्राणां अविमिश्रयः ।

वाक्यार्थः प्राथम्यमन्विधिरूपानिर्निरूपणम् ॥३१॥

तारकस्य प्रधानार्थः मन्दस्वरूपनिरूपणम् ।

संयन्त्रानुसन्धानमनुमन्वयार्थ इष्यते ॥३२॥

समस्त वेदादि शास्त्रोंकी क्वचि (अभिमत) का आश्रयण करना, तारक मन्त्रराजका तात्पर्यार्थ है, भगवान् श्रीगणेशजीके स्वरूपका निरूपण करना वाक्यार्थ है, जीवस्वरूपका निरूपणकरना प्रधानार्थ है और जीव तथा ईश्वरके अनेक विध सम्बन्धोंका अनुभव करना अनुसन्धानार्थ है ॥३१॥३२॥

(अथ द्वयमन्त्रप्रकरणम्)

उक्तत्वेत्थं तारकाद्यं तु द्वयार्थः प्रतिपाद्यते ।

निर्मल्मराः प्रपश्यन्तु तं गृह्णन्त्ववयन्तु च ॥३३॥

इस प्रकारसे तारक मन्त्रके अर्थको कहके अब ' रामद्वय ' मन्त्रका अर्थ निरूपण किया जाता है । सम्मरगठित विद्वान् उसका चाक्षुषज्ञान (दर्शन, प्राप्त करें, शब्दतः ग्रहण करें और अर्थतः इसे जानें ॥३३॥

श्रीरामद्वयमन्त्रमनुभूततमं वाक्यद्वयं पटुपदं, बाणाक्षिप्रमिताक्षरं तु खलु विद्धि त्वं दशार्थान्वितम् ।

युक्तं तं त्रिपदेन तत्र सुमते पर्व शुभस्याम्पदं,

वाक्यं पञ्चदशाक्षरं तदनु दिग्दर्शनात्मकं तृत्तरम् ॥३४॥

दो वाक्य छ पद और पचीस अक्षरोंसे युक्त दश अर्थोंवाला अत्यन्त आश्चर्यमद, मोलका परम प्रापक उस श्रीरामद्वयमन्त्रका जानो । जिसका पूर्व वाक्य पन्द्रह अक्षर और तीन पदोंसे युक्त है तथा उत्तर वाक्य दश अक्षरोंसे युक्त है ॥३४॥

सर्वाधीशेश्वरप्राप्तिहेतुस्तत्राभिधीयते ।

मीता पुरुषकारार्था श्रीत्यनेन पदेन तु ॥३५॥

प्रथम वाक्यमें स्थित 'श्री' पदसे सकल पदार्थक स्वामी भगवान् श्रीरामचन्द्रजीकी प्राप्तिकी हेतुमत पुरुषकार प्रयोजनवाली महाराणी श्री सीताजीका वर्णन किया गया है ॥३५॥

मता पुरुषकारस्य नित्यसंबन्ध उच्यते ।

रामचन्द्रेतिपदतो वात्मल्यादिगुणस्य च ॥३६॥

'श्रीमत्' में श्रीके आग जो मनुष्य प्रत्ययका 'मन्' है उससे 'अनन्या' च मया सीता भाम्करेण प्रभा यथा' इस वचनके अनुसार प्रभा और मृगके अप्रथक सिद्धि सम्बन्धकी तरहसे स्थित सर्वेश्वर भगवान् श्रीरामजीके साथ पुरुषकारस्वरूपा श्री अम्बाजीका नित्य संबंध प्रतिपादित होता है । तथा 'रामचन्द्र' इस पदमे भगवान्में वात्मल्य आदि दिव्य गुणोंका नित्य सम्बन्ध कहा जाता है ॥३६॥

चरणवित्यनेनैव वात्मल्यादिकसीतयोः ।

विलक्षणस्य दिव्यस्य विग्रहस्याश्रयस्य च ॥३७॥

शरणेतिपदेनैवोपायस्तद्विग्रहो बुधः ।

उपायाध्यवसायस्तु प्रपद्य इति वर्ग्यते ॥३८॥

'चरणौ' इस पद से वात्मल्यादि दिव्य गुणोंका, श्रीसीताजी का तथा विलक्षण दिव्य विग्रह के आश्रय का ॥ ३७ ॥

'शरण' पद से भगवद्विग्रहरूप उपाय का और 'प्रपद्ये' पद से उपाय विषयक निश्चय का विद्वाञ्जन वर्णन करते हैं ॥३८॥

प्राप्य मिथुनमेवेति श्रीमत पदतो मतम् ।

रामचन्द्रेतिपदतः स्वामित्वं प्रतिपाद्यते ॥३९॥

'श्रीमते' पदसे 'श्रीसीतागमजी ही प्राप्य है' यह कहा गया है तथा 'रामचन्द्र' पद से स्वामित्व का प्रतिपादन करते हैं ॥३९॥

विभक्त्याऽऽयेति पदतः शेषवृत्तिर्महात्मभिः ।

विरोधिनो निरामस्य नमःशब्देन वर्यते ॥४०॥

महात्मा लोग विभक्ति 'आय' से जपवृत्ति का श्रवण नमः शब्द से काम क्रीड आदि त्रिगोत्रियों के निराम का प्रतिपादन करते हैं ॥

तात्पर्यायोऽप्य ग्लिय आचार्य्यमविमंश्रयः ।

वास्तव्यस्तु मताभिज्ञैरेव निर्णीयते ॥४१॥

प्राप्यप्रापकशम्बन्धिगवरूपाभिन्निरूपणम् ।

प्रधानार्थस्तु तदुपगमेकैक्यस्य प्रधानता ॥४२॥

स्वदोषाभ्यनुसन्धानमनुमन्वयर्थ उच्यते ।

एवमेवानुमन्वयेयं मोक्षद्वारैरहर्दिवम् ॥४३॥

आचार्य्य (श्रीगुरुदेव) की शक्ति के अनुकूल रहना, (उनकी आज्ञा का अनुसरण करना) विद्वान् जन इस मन्त्र का तात्पर्यार्थ जानते हैं । प्राप्य (श्रीरामजी) प्रापक (जीव) दोनों के सम्बन्धि-स्वरूप का निरूपण वाक्यार्थ निर्णीत किया है । युगल प्रभु श्रीसीता रामजी के कैकय की प्रधानता इस मन्त्र का प्रधानार्थ है ॥ ४२ ॥ अपने दोषों का अनुमन्वान करना अनुमन्वानार्थ कहा जाता है । मोक्षार्थियोंको सदा यही अनुमन्वान करना चाहिये ।

(चरममन्त्रप्रकरणम्)

प्रोक्ता वत्मक ! मन्त्ररत्नविवृतिः सन्मानमाभीष्टदं

सद्देव्यं सकृदित्यवेष्टि चरमं निर्णीतवाक्यार्थकम् ।

रामीयं हि तदीयमन्त्रनिरतेरुद्वान्धनीयं परं

द्वात्रिंशत्प्रमिताक्षरं मनुपदं द्वयद्वं जगद्विश्रुतम् ॥४४॥

हे वत्स (सुरसुरादन्द) ! मन्त्ररत्न का विवरण भल प्रकार से कहा गया । अब सत्पुरुषों के मनके अभीष्ट फल के देनेवाले,

सत्पुरुषों के ही जानने योग्य, निर्णीत वाक्यार्थवाले, भगवन्मन्त्रा-
नुगणियों के लिये परमज्ञेय, ३२ अक्षर और १४ पदवाले (पूर्वार्द्ध
और उत्तरार्ध) दो अर्थवाले, निश्चय ही सर्व प्रधान, जगन्प्रसिद्ध,
श्रीरामजी सम्बन्धी 'सकृदेव०' इस चरम मन्त्र को समझो ॥४४॥

अत्रोपायान्तरम्याथो निवृत्तिः प्रतिपाद्यते ।

सकृदित्येवकारेणान्योपायनिरपेक्षता ॥४५॥

इस चरममन्त्र में 'सकृद्' पद में भगवदतिरिक्त अन्य उपाय
की निवृत्ति तथा 'एव' पद से निरपेक्षा का प्रतिपादन करते हैं ॥४५॥

प्रपन्नायेति पदतत्प्रायश्चानमुच्यते ।

उपायत्वं भगवन्तस्तत्रेतिपदतत्प्रायश्चानमुच्यते ॥४६॥

'प्रपन्नाय' पद से प्रपन्न (उपासक) के लिये कही गई पिद्वध
प्रपन्निरूप परमोपायका आश्रय तथा 'तत्र' पदसे प्रपन्निके फलदाना
भगवान् श्रीरामजीका ही उपायत्व प्रतिपादन किया जाता है ।

अस्मीत्यनेन चोपायस्वीकारः प्रतिपाद्यते ।

समाप्त्यर्थेतिशब्देन तृतीयानन्यतांच्यते ॥४७॥

'अस्मि' पद से उपाय का अङ्गीकार प्रतिपादित होता है और
समाप्ति अर्थवाले 'इति' शब्द से उपाय में अनन्यता (प्रपत्ति से परे
अन्य कोई भी मार्ग न होने) का प्रतिपादन किया जाता है ॥४७॥

चकारतोऽनुक्तममुच्यार्थतो

निगद्यते ध्यान्य उपाय आत्मवित् ।

उपायभ्रंसेव्यधिकारलक्षणं

पदेन व याचत इत्यनेन तु ॥४८॥

हे आत्मवेदिन् ! नहीं कहे गये अर्थ के भी मंग्राहक 'च' पद से अन्य
उपाय कहा जाता है । और 'याचते' पद से उपाय के, सेवन करने
वाले आधिकारी का लक्षण स्वरूप, कहा जाता है ॥४८॥

अथाभयमिति प्राप्यप्रतिबन्धकवारणम् ।

सर्वभूतेभ्य इत्येव प्राप्यम्य प्रतिबन्धकम् ॥४९॥

अभय पद प्राप्य (श्रीश्रीरामजी) की प्राप्ति के प्रतिबन्धको
का निवारक है । तथा 'सर्वभूतेभ्यः' इस पद से प्राप्य श्रीरामजी
के प्रतिबन्धक का स्वरूप निरूपण किया जाता है ।

यहां 'सर्वभूतेभ्यः' यह पद पञ्चम्यन्त और चतुर्थ्यन्त दोनों है ।
पञ्चम्यन्त पक्ष में अर्थ होता है कि भगवान् प्रतिज्ञा करने हैं कि —
'सन्धप्रतिज्ञा, सर्वलोकशरण्य आदि गुणयुक्त मैं, मुझसे अथवा अन्य
किसी से उत्पन्न हुये भय से शरणागत की रक्षा करता हूँ । तथा
चतुर्थ्यन्त पक्ष में अर्थ है कि केवल शरणागत श्री विभीषण कोही
नहीं प्रत्युत सभी शरणागतों को मैं अभय, पाश, पदान
करता हूँ ॥ ४९ ॥

तदाभीतिपदेनाथोपायस्याखिलशक्तिता ।

एतदित्येव पदतोऽमंशयत्वामर्तायत ॥५०॥

'तदाभि' पद से उपाय भूत प्रपत्ति का अथवा प्रपत्ति के
फलदाना भगवान् श्रीरामजी में सर्वशक्तिता का निरूपण, और 'एतत्'
पद से उसमें संशयामाव का प्रतिपादन किया जाता है ॥ ५० ॥

निर्भरत्वानुमन्धानं ममेति प्रतिपाद्यते ।

पदेन व्रतमित्यत्र, तदार्द्धव्यभिधीयते ॥५१॥

'मम' इस पद से 'मम' सर्वदा इसी रक्षा करूँगे' इस चिन्तन
का प्रतिपादन किया जाता है । और 'व्रतम्' इस पद से इस विषय
में उसकी दृढ़ता का प्रतिपादन किया जाता है ॥ ५१ ॥

तात्पर्यार्थोऽस्य विज्ञेयः शरण्यरुचिसंश्रयः ।

तत्प्रापकस्वरूपस्य वाक्यार्थोऽथ निरूपणम् ॥५२॥

इस चरममन्त्र का तात्पर्यार्थ भगवान् की प्रसन्नता का संश्रयण करना जानना चाहिये । अपने आपको प्राप्त करानेवाले श्रीरामजी के स्वरूपका निरूपण वाक्याव है ॥५२॥

प्रधानार्थः परेशस्य स्वरूपस्य निरूपणम् ।

निर्भरत्वानुमन्धानमनुसन्ध्यर्थ उच्यते ॥५३॥

श्रीरामजी के स्वरूप का निरूपण प्रधानार्थ है और निर्भरता का अनुसन्धान करना अनुमन्धानार्थ है ॥५३॥

(अथ तृतीय प्रश्नस्योत्तरम्)

(ध्यानप्रकरणम्)

अद्योऽज्जने महाप्राज्ञ ध्यानं ध्येयस्य चिन्तनम् ।

बुधैरात्मरतेर्नित्यं जितप्राणैर्जितेन्द्रियैः ॥५४॥

भगवान् के महान् अनुरागी, प्राणापामपसायण और जितेन्द्रिय विद्वान् भगवान् के तैलधारधत् अविलिखित चिन्तनको ध्यान कहते हैं । विकल्पद्वन्द्वलायतवीक्षणं विधिभवादिमनोहरमुष्मिनम् । जनकजादृगपाङ्गमर्माक्षितं प्रणतसत्सभनुग्रहकारिणम् ॥

विकसितकमलकी पंखुनियों के मयान नेत्रवाले, ब्रह्म शिवादिके श्री मनाको हरण करनेवाले, इस्य युक्त श्रीजानकीजी के नेत्रों के कटाक्ष से देखे गये और प्रणत सत्पुरुषों पर अनुग्रह करने के स्वभाववाले—

मुनिपतःसुमधुजतचुम्बितस्फुटलभन्मकरन्दपदाम्बुजम् ।

बलवदमुमुतदिव्यधनुःशरामहितजानुविलम्बिमहाभुजम् ॥

मुनिजनों के मनरूपी सुन्दर ध्रुवसे आश्वादिन मकरन्दसे सुजीवित कमल के समान चरणवाले, लोकोत्तर बलशाली, अद्भुत दिव्य धनुष और बाणों से युक्त जानुपर्यन्त विशाल भुजाओंवाले— ॥५६॥

परार्थहाराङ्गद्वन्द्वानुपुरं सुपद्मकिञ्चलकपिशङ्गनामसम् ।

लमदुघनश्यामतनुं गुणाकरं, कृपाण्वं सदृदयांबुजामनम् ॥

आनन्दभाष्यकार यतिसम्राट् श्रीरामानन्दाचार्यजी की कथा १६३

अमूल्य हार, भुजबन्द और सुन्दर नूपुरोंवाले, कमलकी केशरके समान सुन्दर पीत वस्त्रवाले, नूतन मेधके समान शोभायमान शरीरवाले, दिव्य गुणोंकी खान, कृपाके सागर, सत्पुरुषों के हृदयकमलमें विराजमान— ॥५७॥

प्रसन्नलावण्यसुभृन्मुखाम्बुजं जगच्चरितं पुरुषात्तमं परम् । सहानुजंदाशरथिं महोत्सवं, स्मरामि रामं सह सीतया मदा ॥

लावण्यपूर्ण विकसित कमल के समान प्रसन्न मुखवाले, सबको शरण देनेवाले, पुरुषोत्तम, माणप्रिया श्रीजानकीजी और भ्राता श्री लक्ष्मणजी सहित, महोत्सवस्वरूप, श्रीदशरथ-कुमार, सर्वश्रेष्ठ सनातन परमात्मा श्रीरामजी मैं सदा स्मरण करता हूँ ॥५८॥

द्विभुजस्यैव रामस्य सर्वशक्तः प्रियोत्तम !

ध्यानमेवं विधातव्यं मदा रामपरायणैः ॥५९॥

हे प्रियोत्तम ! रामभक्तोंको सर्वदा सर्वशक्तिमान् द्विभुज, धनुर्धारी भगवान् श्रीरामजीका इस प्रकारसे ध्यान करना चाहिये ॥ ५९ ॥

(अथ चतुर्थ प्रश्नस्योत्तरम्)

(भुक्तिसाधन-पञ्चमंस्कार-प्रकरणम्)

एवं तेऽभिहितं ध्यानं शृणु तन्मुक्तिसाधनम् ।

सुमुक्षणां परं त्रेयं विधेयं प्रिय सर्वदा ॥६०॥

इस प्रकारसे मैंने तुम्हें ध्यान कहा । अब सुमुक्षुजनोंको जानने और सर्वदा अनुष्ठान करने योग्य भुक्तिके साधनका सुनो ॥६०॥

तस्मिन् मूले भुजयोः समङ्कनं शरीरे चापिन तथाध्वपङ्कजम् । श्रुतिश्रुतं नाम च मन्त्रमालिके संस्कारभेदाः परमार्थहेतवः ॥

भुजाओं के मूलमें तम बाण और धनुषका अंकन, ऊर्ध्वपुण्ड्रतिलक नाम, पैर और मालिका (श्रीतुलसी कंठी) ये पाँच प्रकारके संस्कार परमार्थ (मोक्ष) के कारण हैं ॥६१॥

परीक्षयशिशुं समुपासकं गुरुवर्षं मनभ्यर्च्य च बह्निद्विताम् ।
चापादिनिर्मितिवैः सुप्रतिष्ठितं मुमुक्षुं नियतः समङ्गयेत् ॥

महादेव जिन गुरु, गङ्गा न से गुरु और भगवान की उपासना करनेवाले (जिन्हा आदि मुक्त) शिष्य को १ वर्ष परीक्षा करके विधि विधान से यदि पूजन करके तबसे ऐसे धनुष और बाणआदि भगवदायुधों से शिवा लिन में अङ्कित करे । ६२॥

तथोत्तरं मुमुक्षुः कुर्वन्तः । ततः सम्यान्तरमथो समुचरेत्
मन्त्रं तथैवोत्तरं द्विद्विधान्तोत्तरां वरां तां तुलसीममुद्भवाम् ।

पश्चात् मुन्दरभृत्तिका से अर्घ्यपुण्ड्र (तिलक) लगाकर रामादि भगवत् नामधूतक दाभ्यपदभुक्त नाम कहै, विधि पूर्वक मन्त्रका उपदेश करे और तुलसीमाता (कलसी) वागए करावे ॥६३॥

एवंमहान् भगवतः सुसंस्कृतो श्रीरामभक्तिविधात्वहर्निशम् ।
महेन्द्रनीलारण्यः कृपानिधे श्रीजानकीलक्ष्मणसंयुतस्य वै ।

इस प्रकार से पञ्च संस्कारों द्वारा संस्कृत हो, महाभागवत बनकर, माणप्रिया श्रीरामकीवी और श्री लक्ष्मणजी सहित महाइन्द्रनीलमणिके समान स्वामकान्तिवाले कृपानिधान श्रीरामजीकी अहर्निश भक्ति करे ।

(पराभक्तिसंक्षणम्)

उपाधिनिर्मुक्तमनेकभदकं, भक्तिः समुत्तर परमात्मसेवनम् ।
अनन्यभावेन मुहुर्मुहुः सदा, महर्षिभिस्तैः खलु तत्परत्वतः ॥

परमभक्तिरमरमिक विद्वद्भ्यः महर्षिणो ने, अनन्यभाव से तत्परता के साथ खल कपट प्रपञ्च आदि उपाधियों से रहित परमात्मा सनातन श्रीरामजी की सदा सेवा को ही पुनः पुनः भक्ति कहा है । ६५॥

(पराभक्तिसाधनम्)

सा तैलधारासमनित्यसंस्मृतिस्तन्तानरूपेशि परानुरक्तिः ।
भक्तिर्विवेकादिकसप्तजन्या तथा यमाद्यष्टसुवधोकाङ्क्षा ॥

वह तैलधार के समान अविच्छिन्न (दर्शन समानाकारा अनुस्मृति रूपा) भगवान की भक्ति विवेकादि साधन सप्तक से प्रकट होती है और यमादि आठ आंगोंवाली परज्ञान रूपा है ॥६६॥

आनन्दभाष्यकार भगवान श्रीरामानन्दाचार्यजी । यह स्नेह आपके १४ पीढ़ी पूर्व के पूर्वाचार्य, विशाखाद्वैत चदान्त के आचार्य भगवान वेदव्यासजी के प्रशिष्य, भगवान बाघायन श्रीपुरुषोत्तमचार्य के उग्र अभिमत का अक्षरमः अनुसरण करता है जो ज्ञान अपनी बोधा नृत्ति में ब्रह्मसूत्र के प्रथम सूत्र का व्याख्या में स्वयं किया है । यथा—

“उपासनं स्यादधुवानुस्मृतिर्दर्शनं च वचनाच्च” “नृत्तिर्विवेक-
विमोकाभ्यामक्रियाकल्याणानवसादानुपूर्वभ्यः सप्तकं च वचनाच्च”
“जान्याश्रयनिमिनादृष्टादन्नात्कायशुद्धितिवेकः ।” “विमोकः
कामानभिन्वङ्गः ।” “आरम्भणश्रीलनं पुनः पुनरभ्यासः ।” पञ्चमहा-
यज्ञाद्यनुष्ठानशक्तिनः क्रिया ।” “मन्याश्रयदयागतादिवानभिन्वाकल्या-
णानि” “देशकालवैपर्यायचक्राकरस्वाद्यनुस्मृतेश्च जटैरन्यमभ्यस्तवत्वं-
मनसोवगादः” “नृत्तिपर्ययत्रातुष्टिकद्वयः ।”

अथत् वह अविच्छिन्न तैलधारान्त दर्शनसमानाकारा अनुस्मृति (जिनका नाम पराभक्ति है) इन विवरण आदि ७ यावना से प्राप्त होती है । आगे उन ७ साधनों को समझाते हैं ।

१. जानिदृष्टि (ज्ञान) लक्ष्मण अंजन कुलंजन एवं तामसी पदार्थ, आश्रयदृष्टि (अन्य द्रव्य आदि के आश्रय से प्राप्त) और निमित्तदृष्टि (नवनीमादि अस्मद्वार्थों के संसर्ग से एवं आद्यादि संकल्प के अन्न से बनकर शरीर को शुद्ध रखने को विवेक कहते हैं ।

२. अमत् कामनाओं के आधीन न होना विमोक कहाता है ।

३. अप्रयाम सेवादि का निरन्तर संशीलन अभ्यास है ।

४. पंचमहायज्ञादि के यथाशक्ति नित्य अनुष्ठान का नाम क्रिया है ।

५. सत्य आर्जव दया दान अहिंसा अनभिध्या कल्याण हैं ।

६. देशकालादि विषमताजन्य मनोमालिन्य न होने को अनवसाद कहा है ।

७. देशकालादि की अनुकूलताजन्य हर्ष का न होना अनुद्धर्ष कहाता है ।

यह साधन समस्त पराभक्ति का प्रादुर्भाव करनेवाला है और यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान और समाधि ये ८ साधन भक्ति के अंग हैं ।

(नवधाभक्ति वर्णनम्)

उदारकीर्तः श्रवणं च कीर्तनं हरेर्मुदा संस्मरणं पदश्रुतिः ।
समर्चनं वन्दनदामसम्बन्धका न्यात्मार्पणं सा नवधेति गीयते ॥

महान कीर्तिवाले भगवान् श्रीरामचन्द्रजीकी कथा श्रवण, नाम कीर्तन, उनके रूप एवं गुणका स्मरण, चरण सेवन, पूजा, वन्दन दासता मुख्यभाव और आत्मनिवेदन ये नवधा भक्ति कही गई हैं ॥६७॥

(एकादशीव्रतनिर्णयम्)

एकादशीन्यादि महाव्रतानि च कुर्याद्विवेधानि हरि-
प्रियाण्यथ । विद्धा दशम्या यदि साऽरुणोदये सद्वादशीं
तूपवसेद्विहाय ताम् ॥६८॥

भगवान् के प्रसन्न करनेवाले वेधरहित एकादशी आदि महान व्रत भी मुमुक्षुओं को करने चाहिये । एकादशी अरुणोदयकाल में दशमी से विद्धा हो तो उसे छोड़कर द्वादशी का व्रत करे ॥ ६८ ॥

शुद्धा दशम्या सृष्टेतिभेदत एकादशी सा द्विविधा
च बुध्यताम् । वेधोऽपि बोध्यो द्विविधोऽरुणोदये, सूर्योदये
वा दशमीप्रवेशतः ॥६९॥

शुद्धा और दशमीसे विद्धा इन दो भेदोंसे एकादशी दो प्रकार की जानी । ऐसे ही, अरुणोदय कालिक एवं सूर्योदयकालिक दशमीके प्रवेश से वेध भी दो प्रकारके होते हैं ॥६९॥

सपञ्चषञ्चप्रमितो ह्येष बुधैः कालस्तु पट्षञ्चमि-
तोऽरुणोदयः । प्रातस्तु सप्तपुमितो निगद्यते सूर्योदयः
स्यात्तु ततः परं तथा ॥७०॥

विद्वान् जन ५५ दण्डात्मक कालको उपः काल, ५६ दण्डात्मक को अरुणोदय काल ५७ दण्डात्मकको प्रातःकाल और ५७ से अधिक के कालको सूर्योदय काल कहते हैं ॥७०॥

प्रातश्चतस्रो घटयोऽरुणोदयो द्विनिश्रयः काल-
विमर्शिभिः कृतः । तथाऽत्र वेधप्रभृतेर्विपरिचतः प्राहुर्वि-
भागरचतुरो विवेकतः ॥७१॥

कालके विचारक विद्वानोंने प्रातःकालकी चार घड़ीको अरुणोदय काल निश्चय किया है । इस प्रकारसे विवेकपूर्वक वेधप्रभृतिके भी चार विभाग कहे हैं ॥७१॥

घटीत्रयं सार्द्धमथारुणोदय वेधोऽतिवेधो द्विघटिस्तु दर्शनात्
रविप्रभासस्य तयोदितेऽर्द्धके सूर्ये महावेध इतीर्यते बुधैः ७२

सूर्यके तेजोदर्शनसे पूर्व माहे तीन घड़ी काल अरुणोदय वेध है, दो घड़ी अतिवेध है और सूर्यके आधे उदय हो जानेपर महावेध काल है ऐसा विद्वान् कहते हैं ॥७२॥

योगस्तुरीयस्तु दिवाकरोदये तेऽर्वाक्मुदोपाति-
शयार्थबोधकाः । सर्वेऽपि वेधा मुनिभिर्विनिश्चिता निर्ण-
तृभिस्तस्यतु तच्चदर्शिभिः ॥७३॥

सूर्योदयमें तुरीय योग होता है। वेधके तत्त्वकी जाननेवाले, मुनियोंने सम्पूर्ण वेधोंको दोषानिश्चयके बोधक निश्चित किया है ॥७३॥
पूर्णति सूर्योदयकालतः माया प्राङ् मुहूर्तद्वयमयुता च।
अन्या तु विद्या पश्चिमादिना द्वेकादशी मा त्रिविधापि शुद्धा

सूर्योदय कालसे पूर दो मुहूर्त संयुक्त पञ्चादशी पूर्ण (शुद्धा) कही जाती है। इसमें भिन्न विद्या कहीं जाती है। शुद्धा पञ्चादशीको भी विद्वानोंने तीन प्रकारका वर्णन किया है ॥७४॥

एका तु द्वादशीमात्राधिका द्वेयमयाधिका।

द्वितीया च तृतीया तु त्रैयैवानुसर्गाधिका ॥७५॥

एक तो वह, जिसमें केवल द्वादशी अधिक हो। दूसरी वह, जिसमें दोनों अधिक हों। तीसरी वह जिसमें दोनों ही अधिक न हों। इन तीनोंमें प्रथम सर्वोत्कृष्ट है ॥७५॥

तत्राद्या तु परैवास्ति ग्रह्या विष्णुपरायणौ।

शुद्धायेकादशी हेया परतो द्वादशी यदि ॥७६॥

इन में से प्रथम अर्थात् द्वादशीमात्र अधिक ही वैष्णवोंको ग्रहण करनी चाहिये और यदि आगे द्वादशीकी वृद्धि हो तो शुद्ध पञ्चादशी भी छोड़ देने चाहिये ॥७६॥

उपोष्य द्वादशीं शुद्धां तस्यामेव च पारणम।

उभयारधिकत्वे तु परंपोष्या विचक्षणैः ॥७७॥

चतुर विद्वानोंको शुद्ध द्वादशीमें उपवासकरके, दूसरे दिनकी अवशिष्ट द्वादशीमें ही पारण भी कर लेना चाहिये। दोनोंकी अधिकता में परका उपवास करना चाहिये ॥७७॥

उन्मीलिनी वज्जुलिनी सुपुण्याः सात्रापृशाथो खलु पक्षवर्धनी। जया तथाष्टौ विजया जयन्ती द्वादश्य एता हति पापनाशनी ॥७८॥

आनन्दभाष्यकार वनिसंघाट श्रीरामानन्दाचार्यजी की कथा १६९

उन्मीलिनी, वज्जुलिनी, सत्रिस्तृता, पक्षवर्धनी, जया, विजया, जयन्ती, और पापनाशनी ये आठ द्वादशी अन्यन्त पवित्र हैं ॥७८॥

आषाढभाद्रोर्जमितेषु मंगला मैत्रश्रवाऽन्त्यादि-
गनाद्विषु पान्त्यकैः। चेदद्वादशी तत्र न पारण दुधः पादोः
प्रकुर्याद्वृत्तचन्द्रहारिणी ॥७९॥

यदि द्वादशी आषाढ भाद्र और कान्तिक मास शुक्लपक्षमें अनुगया, श्रवण, रेवतीके प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण से संयुक्त हो तो उसमें पारण न करे क्योंकि वह समस्त क्रतुका नाश करनेवाली है ॥७९॥

(श्रीरामनवमीव्रतनिर्णयः)

मामे मधौ या नवमी सुयुक्ता शुक्लाऽद्वितीशेन शुभेन भेन।
कर्के महापुण्यतमा सुलग्ने जानोऽत्र रामः स्वयमेव विष्णुः

पुनर्वसु नक्षत्रमें युक्त चैत्रमासके शुक्लपक्षकी ओ पञ्चकल्याणगद परम पवित्र नवमी है उसके शुभ कर्क लग्नमें सर्वत्र व्यापक श्रीरामजी स्वयमेव अवतरित हुए हैं ॥८०॥

नामष्टमीवेधयुतां विहाय व्रतोत्सवं तत्रतु वैष्णवश्चरेत्।
असंख्यसूर्यग्रहणोऽधिका वै या केवला सा नवमीऽप्युपोष्या

अष्टमीके वेधसे युक्त नवमीको छोड़कर अविद्धा नवमीमें वैष्णवोंको व्रतोत्सव करना चाहिये। जो रामनवमी पुनर्वसु नक्षत्रसे रहित हो वह भी अनन्त सूर्यग्रहणसे अधिक फलवाली है अतः उसमें भी सदा उपवास करना चाहिये ॥८१॥

अत्र प्रकुर्वीत मुदा व्रतोत्सवं रामार्चनं जागरणं महाफलम्।
अनेकजन्मार्जितपापनाशनं रामस्य कीर्तः श्रवणं च कीर्तनम्

इस श्रीराम नवमी को प्रसन्नता पूर्वक व्रत उत्सव श्रीरामार्चन और जागरण महान फलदायक है। श्रीरामजी के वक्त्र का श्रवण और

कीर्तन अनेक जन्मों के एकत्रित किये गये पापों का नाश करने वाला है ॥ ८२ ॥

(श्रीजानकीनवमीव्रतनिरूपणम्)

पुण्यान्वितायां तु कुजे नवम्यां श्रीमाधवे मासि सिते हलेन
कृष्ण क्षितिः श्रीजनकेन तस्याः मीताविरासीदुब्रूतमत्र कुर्यात्

वैशाख शुक्ल, नवमी, पुष्पनक्षत्र, मंगल के दिन श्रीजनकराजने
हल से पृथ्वी को जोलाया, उसी में श्रीमीताजी का प्रादुर्भाव हुआ
था अतः इस दिन व्रत करना चाहिये ।

(अथ श्रीहनुमज्जन्मव्रतोत्सवनिरूपणम्)

स्वात्यां कुजे शैवतिथौ तु कार्तिके कृष्णेऽञ्जनागर्भत
एव मेयके । श्रीमान् कपीट् प्रादुरभूत्परन्तपो व्रतादिना
तत्र तदुत्सवं चरेत् ॥ ८४ ॥

कार्तिक, कृष्ण, चतुर्दशी, मङ्गलवार, स्वाती नक्षत्र, मेघशिश में
अञ्जनाके गर्भसे शत्रुतापक कपीश्वर श्रीहनुमान्जी प्रकट हुये, उस दिन
उनका व्रत उत्सव करना चाहिये ॥ ८४ ॥

(अथ नृसिंहजयन्तीनिर्णयः)

वैशाखमासीयचतुर्दशी सितानिशामुखे याऽनिलभेन संयुता ।
मोमेऽवतारो नृहरेरभूदथो व्रतोत्सवं तत्र मुदा समाचरेत् ॥

स्वाती नक्षत्र युक्त वैशाख शुक्ल चतुर्दशी, सोमवार के दिन
मायंकाल श्री नृसिंहजी का अवतार हुआ है । अतः उस दिन प्रेम से
व्रतोत्सव करना चाहिये ॥ ८५ ॥

स्मरेण विद्धा तु चतुर्दशी यदा भवेद्धनापत्यविनाशिनी तदा ।
तत्रापवामो न जनेर्विधीयतां महात्मभिर्विष्णुपरायणैरपि ॥

यदि चतुर्दशी अयोदशी से विद्धा हो तो वह धन और सन्तानकी
नाश करनेवाली होती है । अतः विष्णु भक्त महात्माजनोंको भी उस
दिन उपवास नहीं करना चाहिये ॥ ८६ ॥

अथ कृष्णाष्टमीनिर्णयः

भाद्रेऽसिते निशीथेऽथ रोहिण्यामष्टमीतिथौ ।

मिहमर्के गते सौम्ये कृष्णो जाता विष्टदये ॥ ८७ ॥

भाद्रपद कृष्ण, सिंह के सूर्य, रोहिणी नक्षत्र, और अष्टमीतिथिमें,
चन्द्रोदय होनेपर आधीरात में श्रीकृष्ण भगवान् का प्रादुर्भाव हुआ ।

त्याज्याष्टमी चेदथर्वाजविद्धा तथाग्निविद्धं विधिभं च हेयम्
चेदष्टमी नो विधिभेन युक्ता महात्मभिर्विष्णुपरायणैस्तेः ॥

यदि अष्टमी रोहिणी नक्षत्र से युक्त न हो और मघमी विद्धा
हो तो वह महात्मा वैष्णवजनों के लिये त्याज्य है वैसे ही कृत्ति का
नक्षत्र से विद्धा रोहिणी नक्षत्र भी त्याज्य है ।

विद्धा जयन्ती यदि सप्तमीयुता शुद्धा तथा मा
नवमीयुता यदि । या रोहिणीवद्वियुता तु विद्धिका ज्ञेया
च शुद्धा यदि सा परान्विता ॥ ८८ ॥

श्रीकृष्ण जयन्ती सप्तमी युक्त विद्धा और नवमीयुक्त शुद्धा है
तथा रोहिणी नक्षत्र कृत्ति का युक्त विद्धा और पर (मृगशिरा)
युक्त शुद्धा जानो ॥ ८९ ॥

(अथ वामनद्वादशीनिर्णयः)

भाद्रेऽथ शुक्लेऽभिजिति प्रभुर्हरिया द्वादशी
वैष्णवभेन संयुता । तत्रादितावात्रिभूत्र वामनो व्रतो-
त्सवं तत्र मुदा समाचरेत् ॥ ९० ॥

श्रवण नक्षत्र से युक्त भाद्रपद शुक्ल द्वादशी के दिन अभि-
जित (मध्याह्न) में परम समर्थ सम्पूर्ण पापों के नाश करनेवाले
भगवान् श्रीराम वामनरूप से अवतीर्ण हुये । उस दिन आनन्द से
व्रतोत्सव करना चाहिये ॥ ९० ॥

स्पृशत्येकादशीं किंवा श्रवणं द्वादशी यदि ।

विष्णुशृङ्खलयोगोऽमौ तत्रोपोष्य महत्फलम् ॥६१॥

यदि द्वादशी पञ्चदशी तिथि वा श्रवण नक्षत्रका स्पर्श करती हो तो विष्णुशृङ्खल नामक योग होता है उसमें उपवास करके मनुष्य परम फलको पाता है ॥ ९१ ॥

(अन्यउत्सवविधानम्)

तथा याताकालानन्दितैस्तैश्च विरापादिकमुत्तमवादिकम् ।

सदा विषयं हरितपणं परं शुभप्रदं तद्वद्विषयसम्पन्नम् ॥

तथा समयानुसार सावधान होकर वैष्णवों को, अनेक शास्त्र सम्पन्न यक्षलग्नद, प्रभुको पगन्न करनेवाले रथयात्रादि सर्वोत्तम उत्सव सदा करने चाहिये ॥ ९२ ॥

(निर्हेतुक कृपाप्रकारानिरूपणम्)

कर्मप्रवाहेण नृचेनस्य मग्नस्य संसारमहाणवे चिरम् ।

उपर्यहो संसारतोऽशस्य सा कृपा भद्रवत्येव हरेरहेतुका ॥६३॥

कर्मप्रवाहके द्वारा इस संसार महासागरमें चिरकालसे डूबने (जन्ममते मरने) अमृतमय जीवके ऊपर प्रभुकी निर्हेतुक कृपा प्रकट होती है ।

मोक्षे सुमुखो नरि तारतम्यं फले प्रपन्नस्य नु सत्प्रपत्तेः ।

अस्त्येव तद्विष्णुकृपापलभ्य पतिं श्रियोऽनन्तगुणार्णवंतम् ।

प्रपन्न सुमुखवाको मोक्ष रूप फलमें कोई नर तब भाव नहीं है श्रीरमण भगवान की प्राप्ति रूपी मोक्ष उनकी कृपासे प्राप्त होती है ॥९४॥

भवन्त्युपायान्तर एव सदा स्वातन्त्र्यतो मुक्तिपदप्रदास्ते ।

सुकर्मसंवदनभक्तियोगाः प्रपत्तिनिष्ठैः समनुष्ठितास्तु ॥६५॥

प्रपन्नोले अनुष्ठित भगवद्भक्ति से संवलित कर्मयोग ज्ञानयोग भक्तियोग सभी उपायान्तर मुक्ति के देनेवाले होते हैं ॥९५॥

विभुत्वतो निर्भरतापरेस्तेः श्रीव्याहिराख्यैरभिधीयते हि ।

प्रपञ्चनिर्मातृविरञ्चिहेतुश्रीगणपादान्नजनिविष्टचित्तैः ॥६६॥

प्रपञ्च निर्माता ब्रह्माजीकी भी कारण रूपा श्री श्रीजनकजाजू, सहीत श्रीगणजीके चरणों के अनुगामी आर्य पूर्वाचार्य श्रीजीका विभुतावर निर्भर हो सब जगद श्रीजीकी व्याप्ति वर्णन करते हैं ॥९६॥

नित्यं सा पुरुषकारभूता श्रीरनर्थायनी ।

अनुपायान्तरैर्विज्ञेय्यते तदुपायता ॥६७॥

विज्ञेय समस्त उपायान्तरों से अप्राप्य भगवन्प्राप्ति में अनुपायनी पुरुषकार रूपा श्री (सीता) जी को ही नित्य उपाय मानने है ॥९७॥

इष्टं वात्मन्यमिन्धोश्च वात्मन्यं देवभोगिता ।

नित्यं मयुच्यते तज्ज्ञैः सदाचारपरमार्थैः ॥६८॥

सदाचार निष्ठ भगवान के गुणोंका अनुसन्धान करनेवाले आचार्यगण वात्मन्य गुण महोदधि भगवान श्री रामजीके दोष भोग्यता गुणको ही वात्मन्य कहते हैं । भगवान भक्तोंके दोषोंकी उम्मी तरह भोग्यमानते हैं जिसतरह गऊ नवजान बत्सके अंगपर लिपटे मल मूत्र रुधिरादिको भोग्य बनाकर चाव लेती है ॥९८॥

दयान्यदुःखमय निगद्यते बुधैर्प्राकृतैस्तैरमद्विष्णुता स्तुता ।

कृपामहाब्धेः स्तुतकीर्तिसन्ततेर्विष्णोरचिन्त्यामिखलवैभवस्य वै ।

परमोत्कृष्ट विद्वानोंने महानकृपाके समुद्र, परमकीर्तिवाले, और समस्त अचिन्त्य वैभवशाली भगवान श्रीरामजीके दूसरोंके दुःखोंको न सह सकने को ही दया कहते हैं ॥९९॥

(न्यासस्वरूपनिर्णयः)

स्वीय प्रवृत्तेस्तु निवृत्तिरिष्टो न्यासोऽथ वेद्योपि बुधैः सदैव ।

ऐकान्तिकैस्तत्त्वविचारदत्तैः परात्मनिष्ठैः परमास्तिकैस्ते ॥

तत्त्वविचारमें निपुण, भगवन्निष्ठ, परम आस्तिक, चतुर, एकान्ती विद्वानोंने अपनी प्रवृत्ति (मुखेच्छा) की निवृत्ति को ही न्यास (शरणागति) कहा है ॥१००॥

सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणो मताः शक्त्य अशक्त्य पदयो-
जगत्प्रभोः । नापेक्ष्यते तत्र कुलं बलं च नो न चापि कालो
न हि शुद्धतापि वा ॥१०१॥

उन सर्वेश्वर के चरणोंकी प्रपत्तिमें शक्त और अशक्त सभी अधिकारी मति मये हैं । उसमें मैं कुल, बल, काल और पवित्रता आदि की अपेक्षा नहीं है ॥१०१॥

धर्मत्यागोऽपि परमैकान्तिकैरुच्यते वरैः ।

इत्थं हि कर्मणां त्यागः स्वरूपस्याग्निलस्य च ॥१०२॥

श्रेष्ठ परमैकान्तिक भक्तोंने "सर्वं धर्माभ्यस्तपज्य" के अनुसार अपने लिये कर्म प्रवृत्तिके त्यागके द्वारा ही सर्व कर्म परित्याग कहा है ।

अथोपायान्तराण्येव प्रवदन्ति मनीषिणः ।

विरोधीनि प्रपत्तः संवन्धज्ञानस्वरूपिणः ॥१०३॥

संवन्ध ज्ञानके जाननेवाले विद्वान् प्रपत्ति क अतिरिक्त उपा-
यान्तरको ही प्रपत्तिका विरोधी कहते हैं ॥१०३॥

लोकसंग्रहणार्थं तु श्रुतिचोदितकर्मणाम् ।

शेषभूतैरनुष्ठानं तत्कैवल्यपरायणैः ॥१०४॥

भगवच्छेषभूत, भगवन्कैवल्य परायण, महाजन लोग केवल लोक-
संग्रहार्थ ही श्रुतिचोदित कर्मों का अनुष्ठान करते हैं ॥१०४॥

तन्न्यासाज्ञानुकल्यादौ यस्य कस्य महात्मभिः ।

शेषव्रत्तिपरैर्हानौ प्रपत्तिन्यूनता न हि ॥१०५॥

भगवच्छेषव्रत्तिपरायण महात्मा, भगवत्प्रपत्तिके अनुकल्यादि
अङ्गोंमेंसे किसी एककी हानि होनेसे भी प्रपत्तिकी न्यूनता नहीं मानते ।

रामप्रसादहेतुर्हि न्यासोऽयं विनिगद्यते ।

नित्यशूरैः सदाचारैर्हरिपादाब्जमानसैः ॥१०६॥

सदाचारपरायण हरिचरणाकमलानुगामी नित्यशूर (महात्माजन)
इस न्यास (शरणागति) को श्रीरामजीकी प्रमन्नताका करण कहते हैं ।

कृतप्रपत्तिस्मरणं प्रायश्चित्तमथोच्यते ।

परमासैश्च तन्निष्ठैः केविदैस्तैर्मुमुक्षुभिः ॥१०७॥

भगवन्निष्ठ, परम आत्म विद्वान् मुमुक्षुजन, प्रपत्तिके स्मरण
(अनुसन्धानको) ही प्रायश्चित्त कहते हैं ॥१०७॥

उत्कृष्टवर्णैरपि वैष्णवैर्जनैः निवृष्टवर्णैः स तदीयमेवने ।

तथानुमर्तव्य इतीक्ष्यते बुधः शास्त्रेर्विधेये विधिगोचरैः परैः ।

शास्त्रकी मर्यादाको पालनेवाले ब्राह्मणादि उत्कृष्ट वर्णके वैष्णवों
को भी चाहिये कि जैसे अन्य वर्ण वाले, भागवज्जनोंकी शास्त्रीय
विधानानुसार सेवा करते हैं वैसे ही वे भी करें, पूजाचार्य ने यही च हा है ।

अणुव्याप्तौ च भगवानणुपुत्वाणुरुच्यते ।

पराकाष्ठापरेर्विज्ञैर्मतविद्भिर्भगवात्मात्मभिः ॥१०८॥

भक्तकी पराकाष्ठामें परायण विज्ञ सम्प्रदाय तत्त्व वेत्ता महात्मा-
जन अणुव्याप्ति विषयमें भगवान्को अणु से भी अणु कहते हैं ॥१०८॥

आत्मागमैस्तथोपायस्वरूपज्ञानिभिश्च तेः ।

मतज्ञैर्विरजापारं कैवल्यमिति मन्यते ॥१०९॥

वे आत्मागम उपायके स्वरूपको जाननेवाले, सम्प्रदाय रहस्यज्ञ,
विद्वान्, विरजाके पार भगवद्धाम हैं ऐसा मानते हैं ॥१०९॥

जितेन्द्रियश्चात्मरतो बुधोऽमकुरसुनिश्चितं नाम
हरेरनुत्तमम् ॥ अपारममारनिवारणक्षमं समुच्चरैर्द्वैदिकमा-
चरन् सदा ॥१११॥

जितेन्द्रिय आत्मनिष्ठ विद्वज्जनो ते ठीक से लिखित किया है कि वैदिक धर्मों का आचरण करते हुए, संसार रूपी अपार समुद्र से पार करने में परम समर्थ भगवान् के नाम को मदा उच्चारण करना रहे।

(अथ पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्)

श्रीवैष्णवधर्मप्रकरणम् ॥

एवं तऽभिहितं वत्स ! प्रकृष्टं मुक्तिमाधनम् ।

उत्तमं सर्वधर्माणां शृणु धर्मं सनातनम् ॥ ११२ ॥

हे वत्स मुरमुगानन्द ! इस प्रकार से सर्वोत्कृष्ट मुक्ति साधन मैंने तुम्हें कहा; अब सर्वधर्मों में उत्तम सनातन धर्म को सुनो ॥ ११२ ॥

दानतपास्तथायनिषेवणं जपो न चास्त्यष्टिमामदृशी शुभाकृतिः ।
हिमामगस्तां पविर्जयेज्जनः मुधर्मनिष्ठो दृढधर्मवृद्धये ॥

अहिमा के समान दान, तप, तीर्थनिवास, और जप आदि कोई भी शुभकर्म नहीं हैं। अतः मुन्दर धर्म में निष्ठा रखनेवाले जन दृढधर्म की वृद्धि के लिये हिमाको छोड़ दें ॥ ११३ ॥

श्रयन्ति धर्मास्तु तथा पृथक् स्थितान् सुवक्रगाः
सिन्धुभिन्नपि निम्नगाः । काष्ठस्थवन्हेरिव घातको हरे-
श्चराचरस्थस्थ च जन्तुहिंसकः ॥ ११४ ॥

ढेड़ों-मेड़ी नदियाँ भी समुद्रको पास होती हैं वैसे ही हिमासे पृथक् रहनेवाले मनुष्यको भी सब धर्म आभयण देने हैं। जो हिंसक मनुष्य हैं वह काठमें अग्निकी भाँति चराचरमें व्याप्त रहनेवाले प्रभुकाही घातकरता है।

जलस्थलोत्पन्नशरीरिहिंसया विवर्जयेन्मांसमु-
दारधीः सदा । दयापरोऽधोगतिहेतुरूपया चिराय लभ्यं
भवभीनिवृत्तये ॥ ११५ ॥

उदात्तबुद्धि दयालु वैष्णव अधोगति और जन्ममरण के कारण भूतमांस को त्याग दें ॥ ११५ ॥

शुभानि कर्माणि समर्पयेत्सदा रामाय भक्त्यं च
निवेद्य भक्षयेत् अहर्दिवं वीतभयः समुत्तमं विमुक्तिधीः
स्वाधनिवृत्तिकामनः ॥ ११६ ॥

मुक्तिकी इच्छावाला पुरुष सम्पूर्णपापोंकी निवृत्तिके लिये शुभकर्मों को भगवदर्पण करे तथा सभी पदार्थ भगवान् श्रीरामको निवेदन करके भोजन करे। ऐसा करने से वह संसारके भय से मुक्त हो जाता है।

(अर्चाविवर्तनरूपणम्)

अर्चाविवर्तरोऽपि च देशकालप्रकर्षहीनः श्रितसम्भवश्च ।
सहिष्णुरप्राकृतदेहयुक्तः पूर्णोऽर्चकाधीनसमात्मकृत्यः ११७

अर्चाविवर्त (पूजार्थ प्रतिष्ठित मूर्तिरूप भगवान्) देशकालकी उत्कृष्टतासे रहित अचक्रके सम्पूर्ण अपराधोंको समा करनेवाले, आश्रिता-
यिम्न दिव्यदेहसे युक्त; अपने समस्त कृत्यों में अर्चककी अधीनता स्वीकार करनेवाले होते हैं ॥ ११७ ॥

स्वयं व्यक्तरश्च देवश्च सौद्धो मानुष एव च ।

देशादौ हि प्रशस्ते स वर्तमानश्चतुर्विधः ॥ ११८ ॥

प्रशस्त देश आदिमें वर्तमान वह अर्चाविवर्त स्वयं व्यक्त (श्री शालग्रामादि स्वयं प्रकट नहोवाले) देव (देवताओं द्वारा प्रतिष्ठित) मैद (सिद्ध पुरुषों द्वारा पूजित) और मानुष (मनुष्या द्वारा प्रतिष्ठित) मैद से चार प्रकारके हैं ॥ ११८ ॥

(अर्चाविधिनिर्णयणम्)

आवाहनासनाभ्यां च पाद्याभ्यां च मनोस्तथा ।

स्नानवस्त्रोपवीतैश्च गन्धपुष्पसुगन्धैः ॥ ११९ ॥

दीपनैवेद्यनाम्बूलप्रदक्षिणविसर्जनैः ।

पोडशार्चाप्रकारैस्तमेतैरेवं सदा मुधीः ॥ १२० ॥

विद्वान् पुरुष आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिण, विसर्जन आदि षोडशोपचारसे उक्त अर्चाधिकारोंका पूजन करे ॥१२०॥

जगत्पते श्रीशजगन्निवास प्रभो जगत्कारण रामचन्द्र ।
नमो नमः कारुणिकाय तुभ्यं पदाब्जयुग्मे तव भक्तिरस्तु ॥

हे जगत्के स्वामी श्रियःपति जगदाधार जगत्कारण प्रभो परमदयालु श्रीरामचन्द्रजी ! आपको पुनः पुनः मेरा नमस्कार स्वीकार हो । तथा आपके दोनों चरणकमलोंमें मेरी भक्ति हो ॥१२१॥

मनोमिलिन्दस्तव पादपङ्कजे रमाचिते संरभतां भवे
भवे । यशः श्रुतौ ते मम कर्णयुग्मकं त्वद्भक्तसङ्गोऽस्तु
सदा मम प्रभो ॥१२२॥

हे प्रभो ! लक्ष्मीसे पूजित आपके चरण कमलों में मेरा मनरूप भ्रमर जन्म-जन्म रमण करे । मेरे दोनों कान आपके यशको सुननेके लिये उन्मुक्त रहें और सदा आपके भक्तोंका सङ्ग प्राप्त होना रहे ॥१२२॥
उरःशिरादृष्टिमनावचःपदद्वयप्रराजत्करयुग्मजानुना ।

श्रद्धायुतस्तं प्रणमेन्महीतले दीर्घं कृती मत्कृतधीश्च दण्डवत्
श्रद्धालु, कृती और बुद्धिमान् पुरुष, वक्षः स्थल, शिर, दृष्टि, मन, वचन, पाद, कर और जानु इन आठ अंगोंसे पृथ्वीके ऊपर दण्डके समान पड़कर प्रणाम करे ॥१२३॥

प्रमार्थ बाहु चरणौ च साञ्जलिः स्तवैः स्तुवन्यश्च
नमेदधूतमम् । शतैः क्रतूनां तु सुदुर्लभां गतिं स चाप्नुया-
द्विष्णुपरायणो जनः ॥१२४॥

जो हाथ पग फैलाकर, हाथ जोड़कर, स्तोत्रोंके द्वारा स्तुती पूर्वक, भगवान् श्रीरामजीको प्रणाम करते हैं वे मैकड़ों यज्ञोंसे भी दुष्प्राप्य गतिको पाते हैं ॥१२४॥

(अथ षष्ठप्रश्नस्योत्तरम्)

(वैष्णवभेदनिरूपणम्)

अथोच्यते वैष्णवभेद ईप्सितो ज्ञातुं च ते विष्णु-
परायणैर्जनैः । सुवेदनीयो बहुधा प्रियोत्तम ! सुनिश्चितो
विज्ञवरैर्महर्षिभिः ॥ १२५ ॥

हे प्रियतम (सुरुचिरानन्द) ! वैष्णव जनो एवं तुम्हारे जानने योग्य परम चतुर विद्वानों द्वारा सुनिश्चित वैष्णवोंके भेदों को कहते हैं ।

प्राप्तुं परां सिद्धिमकिञ्चनो जनो द्विजादिरिच्छ-
ज्जगणं हरिर्व्रजेत् । परं दयानुं स्वगुणानपेक्षितक्रिया-
कलापादिकजातिबन्धनम् ॥ १२६ ॥

योग्यरूप परासिद्धि की इच्छा वाले ब्राह्मणादि सभी जन, अपने बान्धव्यादिगुणों के द्वारा जाति बन्धन एवं क्रियाकलापादि की अपेक्षा न रखनेवाले परम दयालु श्रीरामजी की शरण में जावें ॥ १२६ ॥

वदमुक्तप्रभेदेन चेतनोऽपन्यत द्विधा ।

वद्धां मुमुक्षुरित्येवं बुभुक्षुरिति च द्विधा ॥१२७॥

वद्ध और मुक्त भेदमें चेतन दो प्रकारके माने गये हैं । वद्धभी दो प्रकारके हैं । एक मुमुक्षु और दूसरे बुभुक्षु ॥१२७॥

अनादिकर्मोत्करजातनानादेहाभिमानी सुमतोऽथ वद्धः ।

स चाच्युताहेतुकृपाकटाक्षाद्विद्येतराद्याभिरुचिप्रवृत्तः १२८

विमोक्तमिच्छुस्तु मुमुक्षुरुक्तः संवन्धतः प्राज्ञसुसंमतोऽयम् ।

तथैव सांसारिकभोगमिच्छुर्बुभुक्षुरन्यः खलु कथ्यते ज्ञैः ॥

अनादिकर्म समूह से नाना प्रकार के देहों का अभिमानी जीव वद्ध माना गया है । वही भगवान् की निर्हेतुक कृपादृष्टि से कर्मों की

महत्ति के सम्बन्ध से झूटने की इच्छावाला, मुमुक्षु कहता है तथा जो सासारिक भोग की इच्छा वाले हैं उन्हें विद्वज्जन मुमुक्षु कहते हैं ।

मुमुक्षुवोऽपि द्विविधा मर्षिभिः प्रोक्ता अकामाः स्मृतिभक्तिनिष्ठिता । वेदोक्तवर्णाश्रमकर्मकारिणस्तूष्णामकादिप्रतिभेदभेदिताः ।

महापियों ने मुमुक्षु भी दो प्रकार के कहे हैं । कामनारहित तैलधारणवद्विच्छिन्न भगवत्स्मरणपरायण और वेदोक्तवर्णाश्रम कर्म के करनेवाले उपासक ॥ १३० ॥

स्वकर्मविज्ञानचयाधिमाधनं तथोररीकृत्य हि वत्स कंचन । सम्प्राप्य संवन्धविशेषमुत्तमं सदा भवन्त्येव च मोक्षनिश्चयाः ॥ १३१ ॥

हे वत्स सुखसुगानन्द ! (वे) स्व-अनुष्ठितकर्मविज्ञानादि को ही प्रधान साधन स्वीकार करके भगवान के साथ दास्य सत्यादि किसी उत्तम संवन्ध को प्राप्त होकर सदा मोक्ष में निश्चय वाले होते हैं ॥ १३१ ॥

विहाय चान्यत् परमं कृपानिधिं प्राप्य समर्थं निरुपायमीश्वरम् । उपायमेतेऽध्यवसीय सुस्थिताः ज्ञेयाः प्रमत्ताः सततं हरिप्रियाः ॥ १३२ ॥

जो जन अन्य सब कुछ छोड़कर परमदयालु समर्थ, अविनाशी भगवान् श्रीरामजी को ही प्राप्य और उपाय समझकर सुस्थित रहते हैं उन्हें भगवान के सतत प्रिय प्रपन्न जानना चाहिये ॥ १३२ ॥

पुरुषकारैकनिष्ठास्तु हरिस्वातन्त्र्यमक्षय च ।

कृपाप्रचुरमाचार्य्य भक्तोपायमवस्थिताः ॥ १३३ ॥

तथा जो पुरुषकार निष्ठावाले जन हैं वे श्री रामजीकी स्वतन्त्रता का विचार करके, परम कृपालु आचार्य की ही उपाय मानकर स्थित रहते हैं ॥ १३३ ॥

ते चाचार्य्यकृपामात्रप्रपन्ना द्विविधा मताः ।

तथा सेवातिरेकप्रपन्नाश्चेति सदा सताम् ॥ १३४ ॥

वे आचार्यवलम्बी प्रपन्न तथा प्रभुसेवावलम्बी प्रपन्न इन भेदों से दो प्रकार के माने गये हैं ॥ १३४ ॥

प्रपन्नश्चापि दृढः स तथा चार्त इति द्विधा ।

शरीरस्थितिपर्यन्तसाद्योऽत्रव यथोचितम् ॥ १३५ ॥

प्राप्तदुःखादि भुञ्जानः शरीरान्तेऽवसीय च ।

महाबोधोऽतिविश्रामो मोक्षसिद्धिमवस्थितः ॥ १३६ ॥

अथान्त्योऽसहमानस्तत्क्षणमव तु संसृतिम् ।

तथैव भगवत्प्राप्तौ सत्त्वरस्वान्त उच्यते ॥ १३७ ॥

वह भी दो प्रकार के हैं । दृढ और आर्त । दृढ स्वकर्मानुसार प्राप्त सुख दुःखादिको शरीर की स्थिति पर्यन्त यहाँ ही भाग करते हुये शरीर के अन्तमें मोक्ष सिद्धि के महान ज्ञान और अत्यन्त विश्वास-युक्त रहते हैं । और जो संसार रूप बहवान्तको न सहन करते हुये भगवत्प्राप्ति में अत्यन्त शीघ्रता चाहनेवाले हैं उन्हें आर्त कहते हैं ।

श्रवणादिमात्रनिष्ठाः शुद्धभक्ताः प्रकीर्तिताः ।

अन्तर्भाव्यास्तत्र तत्र तानुक्ता मुमुक्षुवः ॥ १३८ ॥

भगवान् के यशके श्रवणकीर्तनादिमें ही निष्ठा वालोंको शुद्ध-भक्त कहते हैं । यहाँपर मुमुक्षुश्रवणों को अन्य भेद नहीं कहे गये हैं उन्हें पूर्वोक्तमें ही अन्तर्भूत समझ लेना चाहिये ॥ १३८ ॥

(मुक्तभेदनिरूपणम्)

नित्यकादाचित्कभेदान्मुक्तद्वैविध्यमुच्यते ।

नित्याः कदाचित्तत्रापि सिद्धाः सुपुरुषा नराः ॥ १३९ ॥

गर्भजन्मादिदुःखं मेऽननुभूय स्थिताः सदा ।

सीतारामप्रियाः शरवत्ते हनूमन्मुखा मताः ॥१४०॥

नित्य और कदाचित्क भेदसे सुक्त दो प्रकारके हैं । गर्भजन्मादि दुःखका अनुभव न करके निरन्तर स्थित रहते हैं वे श्रीसीतारामजीके परमप्रिय हनूमदादि श्रेष्ठ पुरुष । नित्य सुक्त कहाते हैं ॥१३९॥१४०॥

परिजनाः परिच्छदा नित्यमुक्ता अपि द्विधा ।

मामृत्याद्याः किरीटाद्याः प्रमाते च प्रकीर्तिताः १४१

नित्य सुक्त भी दो प्रकारके हैं परिजन और परिच्छद, श्रीहनुमदादि परिजन हैं और किरीट कुण्डलादि परिच्छद कहे जाते हैं १४१

भागवताः केवलाश्च कादाचित्का अपि द्विधा ।

तत्र भागवता बोध्या ये तु ते भगवत्पराः ॥१४२॥

कादाचित्कोंके भी दो भेद हैं । भागवत और केवल । जो भगवत्परायण हैं उन्हें भागवत और अन्यो को केवल जानना चाहिये ॥१४२॥

भगवद् भोग्यभृत्यादिसाक्षात्कारसुखाश्रयाः ।

श्रीराममानसा नित्यं तदनुष्ठानतत्पराः ॥१४३॥

भागवतोंके भी दो भेद हैं । एक तो वे जो भगवानके भोग्य ऐश्वर्यादिके साक्षात्कारजन्य सुखके आश्रय हैं । दूसरेवे जो नित्य भगवत्परायण हैं तथा भगवानका ही ध्यान किया करते हैं ॥१४३॥

केचिदुगुणानुसन्धानपराः कैङ्कर्यतत्पराः ।

इत्थं महर्षिभिः प्रोक्ता द्विविधा भगवत्पराः ॥१४४॥

भगवद्गुणानुसन्धान परायण और कैङ्कर्य परायण, इस प्रकारसे महर्षियोंने भागवतों के भी दो भेद कहे हैं ॥१४४॥

द्विविधाः केवला बोध्या दुःखभावकतत्पराः ।

आत्मानुभूतिपरमा इति प्रोक्ता महर्षिभिः ॥१४५॥

एक दुःखभावपरायण तथा दूसरे आत्मानुभूतिपरायण इस प्रकारसे महर्षियोंने केवल भी दो प्रकारके कहे गये हैं ॥१४५॥

(अथ सप्तमप्रश्नस्योत्तरम्)

(वैष्णवलक्षणनिरूपणम्)

समुच्यते सम्प्रति लक्षणं सन्महात्मनां सद्गुणवैष्णवानाम्
विरिचिशम्भुश्रितरामचन्द्रपदारविन्दस्थितचेतमां तु १४६

अब ब्रह्मा और शिवके द्वारा आश्रयण किये गये भगवान श्रीराम जी के चरणकमलमें स्थित मनवाले महापुरुष वैष्णवोंके ममीचीन लक्षण कहते हैं ॥१४६॥

धृतोर्ध्वपुण्ड्रस्तुलमीसमुद्भवां दधच्च मालाममलो हि कण्ठतः
सज्जन्मकर्माणि हरेरुदाहरेदुगुणाश्च नामानि शम्भुप्रदानि

ऊर्ध्वपुण्ड्र और मनेमें, तुलमीकी मालाको धारण करता हुआ, निर्मल-निर्विकार होकर, भगवानके कन्याणपद दिव्य जन्म कर्म और नामोंका गान करे ॥१४७॥

धनुर्धरस्याश्रुगुणान्निरन्तरं कथां च गायेत्सुयशोऽङ्कितां मुहुः
रूपं तदीयं नृत्तगचरात्मकं पश्यन्मतां सङ्गमुदारधीश्चरत्

उदारबुद्धिवाला होकर धनुर्धारी भगवान श्रीरामजी के सुन्दर पशुकी कथा निरन्तर सुनें, पशुका गान कर तथा भगवानके चराचरात्मक रूपका दर्शन करता हुआ सत्पुरुषोंका सङ्ग करे ॥१४८॥

चापादिपञ्चायुधार्चिन्हेताङ्गकः समीक्ष्य दृष्टश्च
हरिप्रियानमौ । तथाविधान्भक्तिपरः समर्चयेत्सुवैष्णवाञ्जन्म-
फलादि संस्तुवन् ॥१४९॥

भगवान्‌के धनुर्बाण आदि पञ्चायुधोंसे अंकित भगवन्प्रिय पवित्र वैष्णवोंको देखकर, प्रमन्न हो (अपने) जन्म-फल आदिकी प्रशंसा करता हुआ, भक्तिपरायण होकर (उनकी) पूजा करे ॥१४९॥

पञ्चायुधधाङ्का भुवि वैष्णवा ये मुख्याग्रजक्षत्रियवैश्यशूद्राः ।
स्त्रियस्तथान्येऽपि च विष्णुरूपा जगत्पवित्रप्रपवित्रिणस्ते

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री, तथा अन्य जो भी कोई पृथ्वी पर भगवान्‌के पञ्चायुधोंसे अंकित हैं वे विष्णुरूप होनेसे जगतके पवित्र करनेवाले तीर्थादिको भी पवित्र करनेवाले हैं ॥१५०॥

ते सर्वतीर्थाश्रयभूतदेहा देशे महाभागवता वसन्ति ।
यत्रैव तद्दर्शनतस्मिन्स्थितिभ्यां जातः सुपुण्या निम्बिताधशून्य

समस्ततीर्थों के आधार भूत देहधारी वे महाभागवत जिस देश में रहते हैं वह देश उनके दर्शन और निवाससे पवित्र एवं पाप रहित हो जाता है ॥१५१॥

तदर्चनात्तत्पदनीरपानात्तत्सङ्गतेस्तत्प्राणनेर्निधानात् ।

तद्भोजनानन्तरं भोजनाच्चन्यात्कोटिजन्मार्जितपापनाशः

उन महाभागवतोंके पूजन, चरणामृत ग्रहण, प्रणाम, सत्सङ्ग और उनके पश्चात् भोजन करनेसे करोड़ों जन्मके पाप नष्ट होते हैं ॥१५२॥

कापीसकैः सप्तभिरदुभुतेर्गुणैः सुनिर्मितं तत्कटिमूत्रमुत्तमम् ।
कौपीनकं वस्त्रयुगं च धारयेत्ततोऽर्धयुगलदिकमेव वैष्णवः ॥

वैष्णव जन कपासके सुन्दर सान धागोंसे बने उत्तम कटिमूत्र, कौपीन, ऊर्ध्वस्त्र और उर्ध्वपुंदादिकों धारण करे ॥१५३॥

(अथ अष्टमप्रश्नस्यान्तरम्)

(कालक्षेपकारनिरूपणम्)

अथ कार्यः सदा मदिभः कालक्षेपो मुमुक्षुभिः ।

परमात्मपरैरित्थं वैष्णवैरिति कथ्यते ॥१५४॥

अत्र मुमुक्षु सत्पुरुष भगवत्परायण वैष्णवोंको कालक्षेप जिस प्रकारसे करना चाहिये सो कहा जाता है ॥१५४॥

त्रिकालमन्ध्यादि विधाय शक्तेः श्रीरामचन्द्रं च
समर्च्य नित्यम् । भाष्येण रामायणतो हि कालक्षेपो
विधेयोऽपि च भारतेन ॥१५५॥

शक्त पुरुषोंको प्रातः पद्याह्न और सायंकालमें मन्ध्यादि कर्म एवं भगवान् श्रीरामजीकी पूजा करके, भाष्य (प्रस्थानत्रयीके आनन्द-भाष्य एवं भगवान् बोधायन श्रीपुरुषोत्तमाचार्यकृत भाष्य (वृत्ति) श्रीमद्रामायण और महाभारतके द्वागही नित्य कालक्षेप करना चाहिये ।

स्याच्चेदशक्तः शृणुयात्कुतश्चिदुग्रन्थानमूञ्छुद्धत-
माद्विशुद्धः । श्रीरामसन्नामसुकीर्तनं च द्वयानुमन्धानमथो
विदध्यात् ॥१५६॥

यदि इसमें अशक्त हो तो किसी परमपवित्र वैष्णव से इन उपर्युक्त ग्रन्थों का श्रवण, भोगमजी के उत्तम नामका सुन्दर कीर्तन और द्वयमन्त्र का अनुमन्धान करे ॥१५६॥

दिव्येषु दर्शेषु मतां प्रसङ्गं तदीयकैर्कर्यपरायणो वै ।
यावच्छरीरान्तमहर्दिवं तत्कथामुदारां शृणुयाद्भवन्तीम् ॥

अयोध्या चित्रकूट आदि दिव्य देशों में सत्पुरुषों का मङ्गल करता हुआ, भोगवत्कैकर्यानुगामी बनकर, जब तक शरीर रहे तब तक संसार की बाधा को नष्ट करनेवाली भगवत्कथा को श्रवण करता रहे ।

तत्राप्यशक्तास्तु कुटीरमात्रं विधाय कुश्यांस्त्वथ
राघवाद्रौ । अन्यत्र वामं च गुरुपदिष्टान्मन्त्राञ्जपन्तो
ममकारशून्याः ॥१५८॥

इसमें भी असमर्थ हो तो चित्रकूट अथवा अन्यत्र एक छोटी सी कुटिया बनाकर श्रीगुरुमहाराज के दिये हुये मन्त्र का जप करते हुये ममकार (मैं मेरा) आदि से शुन्य होकर निवास करे ॥ १५० ॥

भक्त्यादियुक्तस्य तथानहंकृतेर्महात्मनस्तस्य निदेशपालनम् । उपायमेतं चरमं निरन्तरं सुवैष्णवोऽयं विदधात्वतन्द्रितः ॥ १५६ ॥

उत्तम वैष्णव निरालस्यदा पूर्वक भक्ति आदि से युक्त होकर अहंकार रहित उन महात्मा श्रीगुरु देव की आज्ञा पालनरूप अन्तिम उपाय को निरन्तर सेवन करता रहे ॥ १५९ ॥

तदर्थपुष्पप्रचयेन मंततं तथैव तन्मन्दिरमार्जनादिना । तदीयनामाभ्यमनेन तन्मनाः क्षिपेत्स कालं नितरां निरालसः ॥ १६० ॥

सर्वदा आलस्य रहित होकर भगवान् श्रीगुरु की पूजा के अर्थ पुष्प संग्रह, मंदिर मार्जन आदि करते हुये तन्मय होकर नाम रटन के द्वारा कालक्षेप करे ॥ १६० ॥

तीर्थेषु वासेन महात्मनां च समागमेनाथ तदर्चनेन । जिज्ञासया तद्यशसः श्रवेण तद्ब्रह्मणो न स्मरणेन तस्य ॥

तीर्थ स्थानों के निवास, महात्माओं के संग पूर्व भगवान् की पूजा को करते यश सुनते और अन्योक्तों सुनाते हुए भगवान् की जिज्ञासासे भगवान् का ही स्मरण करते हुए— ॥ १६१ ॥

रामाय साङ्गाय सपार्षदाय मीतासमेताय महानुजाय । आम्नायवेद्याय विधाय शश्वत् कैर्कर्यमीष्यारहितः सुचित्तः ॥

ईर्ष्या द्वेषादि से वृथक् रहकर, सावधान चित्त से अंगों पार्षदों सीताजी और आनाओं सहित वेद से आनने योग्य भगवान् श्रीरामजी के कैर्कर्य में लगे रह कर सर्वदा काल क्षेप करे ॥ १६२ ॥

(अथ नवमप्रश्नस्यात्तरम्)

(परतत्त्वनिरूपणम्)

तथाविधैस्तैः परमार्थभूतं सुवैष्णवैः प्राप्यमथोन्यते तत् ।

जितेन्द्रियैरात्मरतैर्बुधैर्महत्तमैः स्वाभिमतार्थदोहम् ॥

अब समझादि साधनोपेत आत्मपरायण पूर्वोक्त प्रकार से उपासना में निरत श्री वैष्णवों के अभिलषित परम प्राप्य परमार्थ तत्त्व का निरूपण किया जाना है ॥ १६३ ॥

श्रीमान् दिव्यगुणाच्छिरोपनिषदो हेतुः शस्त्रयः प्रभु-

देवेशो जगतामनादिनिधनो ब्रह्मादिदेवाचिनः ।

ताराकर्णलचन्द्रमोबहुमहः मौदामनीभामकोऽ-

जय्यो वीरसवत्नशस्त्रनिचयैर्जता च तेषां मुहुः ॥ १६४ ॥

नित्यो ब्रह्मविधायकश्च परुषस्तद्देवोधा वृधा,

नित्यानां शरणं तपःप्रभृतिभिः सद्योगिनां दुर्लभः ।

एकश्चेतनचेतनो भूतजगद्वेयः स्वतन्त्रो वशी,

स प्राप्योऽस्ति सुमुचुभिः सुगुरुभिः मत्माङ्गिभिस्तत्परः ॥

सद्गुरुनिष्ठ सन्मग परायण सुमुचुओं के प्राप्य, वेदान्त वेद्य, दिव्य गुणाकर, जगज्जन्मादि हेतु, ब्रह्मादि देवों से पूजित, शस्त्रागत रक्षक, चन्द्र सूर्यादि प्रकाशों के प्रकाशक, सद्योगियों के तपाद से भी अप्राप्य, ब्रह्मादिकों के सष्टा, चेतना चेतन जगत् के नियामक, वेद-वेद्य, ब्रह्म, आत्म, नर, पुरुष, महापुरुषादि पद वेदनीय, त्रिपादिसूनि नायक सीताकान्त श्रीराम ही हैं ॥ १६४ ॥ १६५ ॥

तथाविधं प्राप्यमथो सुवैष्णवः सुचिन्तयन्नित्यमनुक्षणं प्रिय ! । मदा सदाचाररतं गुरुं वरं ज्ञातुं भजेताखिलसं- शयच्छिदम् ॥ १६६ ॥

श्री वैष्णव इस तरह निरन्तर विचार करता हुआ उपर्युक्त प्राप्य भगवान्‌को जाननेके लिये समस्त संशयों को छेदन करनेवाले सर्वदा सदाचार निरत श्रेष्ठ गुरुका आश्रयण करे ॥१६६॥

(अचिरादिमार्ग निरूपणम्)

सत्सङ्गतः सन् हि गतस्पृहो मुहुः श्रीशं प्रपद्याथ
गुरोर्मुखादमो । कर्माखिलं संपरिभुज्य चात्मवान् प्रारब्ध-
मेवं महतान्यकर्मकः ॥१६७॥

न्यामात्मवतन्त्रेश्वरजातमहयानिलूनमायान्वय एव
देशिकः । हार्दोत्तमानुग्रहान्धनान्यमन्त्रादीशुभद्वारवहिर्वि-
निर्गतः ॥१६८॥

मार्गं ततः सोर्धिरुपैति मुक्तकम्तथार्चिपोऽहो दिनतः
मुरार्चितः । आपूर्यमाणं विविधैस्तु वासरैः पक्षं प्रभृतोत्तम-
शर्मविज्वरः ॥१६९॥

वह आत्मवान् मुमुक्षु पुरुष मन्मथके प्रभावसे सभी सार्मांगिक पदार्थोंसे निःस्पृह होकर श्री गुरु महाराजके द्वारा मीनाक्रान्त भगवान् श्रीरामजी की शरणागतिका प्राप्त हो, समस्त प्रारब्ध कर्मोंका उपभोग, प्रपत्तिसे संनित कर्मोंका नाश एवं समस्त क्रीयमाण कर्मोंको सुहृद् असुहृदमें विभाजन करके सर्वस्वतन्त्र भगवान् की परम अनुकम्पासे माया से छुटकारा पाकर भगवान्‌के हार्द और उत्तम अनुग्रह को प्राप्त कर सुषुम्ना बाढ़ोंके द्वारा निकल कर अचिरादिमार्गको प्राप्त होता है । अह-
मार्गसे देवपूजित होकर अनन्त दिवसोंसे पूर्यमाण पक्षको प्राप्त होता है । वहाँसे अनन्त उत्तम उत्तम मुखोंकी स्पर्शासे शृङ्ख होकर—
॥१६७, १६८, १६९॥

पक्षादुदङ्मासमथोपडात्मकं तस्माच्चसंवत्सरमवदतोऽरविम-
चन्द्रं ततश्चन्द्रमसोऽथ विद्युतं म तत्र तत्राखिलदेवपूजित
परं पदं सैवमुपेत्यनित्यममानवां ब्रह्मपथेन तेन ।

सायुज्यमेव प्रतिलभ्य तत्र प्राप्यस्य सन्नन्दति तेन माकम-

पक्षसे छैमासबाल उत्तरायणको वहाँसे संवत्सर, सूर्य, चन्द्र, विद्युत् लोकोंमें सर्व देवोंसे पूजित होकर वह महाभाग उस अचिरादि ब्रह्ममार्ग से भगवान्‌के सनातन सर्वोत्कृष्ट साकेतलोकको प्राप्त करके, सायुज्यको प्राप्त होकर, वहाँ भगवान्‌के साथ सर्वथा आनन्दमें विहार करता है ॥१७०॥१७१॥

सीमान्तसिन्ध्वाप्लुत एव धन्यो गत्वा परब्रह्ममुवीक्षिनोऽथ
प्राप्यं महानन्दमहाब्धिमग्नो नावर्तते जानु ततः पुनः सः ।

। इस क्षुत्प्रादिभूति की सीमाके अन्तमें महानदी विरजामें स्नान करके प्राप्य भगवान् श्रीराम) को प्राप्त हो वह धन्य धन्य पुरुष भगवान्‌के कृपाकटाक्षसे कटाक्षित हो महान आनन्दके महामाग्नमें निमग्न होकर पुनः कभी भी वहाँसे नहीं लौटता ॥१७२॥

सदानुसन्ध्येयभिर्मात्रिकालं मुमुक्षुभिस्तं परमार्थमित्यम-
ज्ञात्वा न चैवास्ति सुवेदनीयं जिज्ञासुभिस्तैरवशिष्यमाणम् ।

सायं, प्रातः और मध्याह्न तीनों कालोंमें सर्वदा इस परमार्थ वस्तु (अचिरादि मार्ग) का चिन्तन करना चाहिये । इसके जानने के लिये वैष्णव जिज्ञासुओंको जाननेके लिये कुछ भी शेष नहीं रहता है ॥१७३॥
गुरुद्वे नो न शठाय नूनं न नास्तिकायांपदिशेत्कदाचित् ।
नावेणवायापि रहस्य मेतन्न दीनचित्ताय सुगोपनीयम् १७४

इस अत्यन्त गोपनीय रहस्यका गुप्तदोहीको, शठको, नास्तिकको अवैष्णवको और महाकृपणको निश्चयही कभी भी उपदेश नहीं करना चाहिये ॥१७४॥

जितेन्द्रियः प्रपन्नस्तं बुध आत्मरतिर्हरिम् ।
प्राप्नुयात्परमं स्थानं योऽनुतिष्ठेदिदं मतम् ॥१७५॥

जितेन्द्रिय हो आत्मरतिको प्राप्त करके जो विद्वान् भगवान् श्रीरामजीकी शरणागतिका अवलम्बन करते हुये इस मन्त्रव्यक्ता अनुष्ठान करेंगे वह परमस्थान (नित्य-दिव्य साकेत लोक) को प्राप्त करेंगे ॥७५॥

(अथ अष्टमप्रश्नस्यान्तरम्)

(श्रीवैष्णवनिवामस्थाननिरूपणम्) अर्थ सरल है ।

अथ मोक्षप्रदं शास्त्रमस्मत्तं वत्स तेऽधुना ।
वैष्णवानां च सर्वेषां वासस्थानं निरूप्यते ॥१७६॥
वासुदेवं हि वैकुण्ठे तथामोदे सुकर्षणम् ।
प्रद्युम्नं च प्रमोदे संमोदेऽर्चदनिरुद्धकम् ॥१७७॥
विष्णुः सत्यलोके च पद्माक्षः सूर्यमण्डले ।
क्षीराब्धौ शेषशायी च श्वेते पूज्यश्च तारकः ॥१७८॥
नारायणं वदयां च नैमिषे श्रीहरिं तथा ।
शान्तो दान्तो निरीहः सन्वैष्णवः पूजयेत्सदा ॥१७९॥
शालग्रामममोघदिव्यफलदं दैवं हरिश्चेत्रकेऽ-
योध्यायां रघुपुङ्गवं गुणनिधि श्रीरामचन्द्रं प्रभुम् ।
सत्स्थाने मथुगभिधाश्रमवरे श्रीबालकृष्णं परम् ।
मायायां मधुसूदनं हरिजनो नित्यं मुदा पूजयेत् ॥१८०॥
काश्यां भोगिशयं सनातनमथावन्त्यामवन्तीपतिम्,
श्रीमद्धारवतीतिनाम्नि शुभदे श्रीयादवेन्द्रं मुदा ।
अर्चयेच्चैव जनानामके सुरनुतं गोपीजनानां प्रियं,
ब्रह्मेशादिकिरीटसेवितपदाम्भोजं भुजङ्गाश्रयम् ॥१८१॥

वृन्दावने नन्दसुतं गोविन्दं कालियहृदे ।
गोवर्धने गोपवेषं भवध्ने पद्मलोचनम् ॥१८२॥
गोमते पर्वते शारिं हरिद्वारे जगत्पतिम् ।
प्रयागे माधवं चार्चयेद्गुगुयां तु गदाधरम् ॥१८३॥
गङ्गासागरमङ्गमेऽतिशुभदे विष्णुं तथा राघवं,
शाश्वदभूरि गुणालये मुनिवृत्ते श्रीचित्रकूटे विभुम् ।
नन्दिग्राम उदारकीर्तिनिकरं श्रीराक्षमधनं प्रभुं,
पार्चयेच्चैव मति विश्वरूपिणमथो क्षेत्रे प्रभासेऽमले ॥१८४॥
श्रीकृष्णचल उत्तमे च सदयं कर्म सुरेशोदितं,
नीलाद्रौ पुरुषोत्तमं किल महामिहं च मिहाचले ।
श्रीमन्तं तुलसीवने तु गदिनं सर्वार्थदं तत्प्रिये,
क्षेत्रे श्रीकृतशौचके तु सततं पापापहं पूजयेत् ॥१८५॥
श्रीविठलं तं किल पाण्डुरङ्गेऽर्चयेच्चैव कटाद्रौ कमलामहायम् ।
नारायणं श्रीमनि यादवाद्रौ नृकमरीशं घटिकाचले तु ॥१८६॥
वरदं वारणाद्रौ च काञ्चन्यामम्बुजलोचनम् ।
पूजयेत्सततं श्रद्धायुक्तः श्रीवैष्णवो जनः ॥१८७॥
तोताद्रौ तुङ्गशयनं पूजयेच्चैव वैष्णवोत्तमः ।
अन्येष्वपि च तीर्थेषु निवसेत्पूजयन्हरिम् ॥१८८॥

इत्यानन्दभाष्यकार अनन्त श्रीगङ्गाशुभ्रक्षीरामानन्दाचार्य यति सार्व-
भौमप्रणीतः श्रीवैष्णवमतान्त्रभास्करः समाप्तः ।

(यति मार्कभौम श्रीआचार्यपादेन स्वरचित श्रीमद्भगद्गीता आनन्द
भाष्यके मङ्गलचरणमें इसप्रकारसे पूर्वाचार्योंकी वन्दना की है)

श्रीरामं जनकात्मजामनिलजं वेधो वशिष्ठावृषी
योगीशं च पराशरं श्रुतिविदं व्यासं जिताक्षं शुक्लम् ।

श्रीमन्तं पुरुषोत्तमं गुणनिधिं गंगाधराद्यान् यतीन्
श्रीमद्गु राघवदेशिकं च वरदं स्वाचार्यवर्यं श्रये ॥१॥

❀ श्रीमदाचार्यवर्यपर्यन्तपूर्णपरम्परावन्दनम् ❀

श्रीरामं वसुधात्मजामनिलजं वेधोवशिष्ठौ तथा
तातं व्यासमुनेः शुक्लेन सहितं व्यासञ्च बोधायनम् ।

श्रीगङ्गाधरदेशिकं वरमदाचार्यं च रामेश्वरं
द्वारं देवयुतं श्रुतार्थमहितं श्यामं चिदानन्दकम् ॥१॥

पूर्णानन्दयुतं श्रियायमहितं हर्यार्यवेदान्तितं
त्रय्यन्तार्थविदं त्रिदण्डिषु मणिं श्रीगङ्गवानन्दकम् ।

आनन्दाख्यमुभाष्यरत्नरचकं रामं महायोगिनं
रामानन्दमुनिं यतिक्षतिपतिं वन्दामहे शाश्वतम् ॥२॥

(हिन्दी) श्रीराम सीता हनुमान ब्रह्मा वशिष्ठ

पाराशर व्यास शुक्ल बोधायनाख्य-पुरुषोत्तम ।

गंगाधर मदाचार्य रामेश्वर द्वारानन्द
देवानन्द श्यामानन्द श्रुतानन्द पूज्योत्तम ॥

चिदानन्द पूर्णानन्द श्रियानन्द हर्यानन्द

राघवानन्द श्रीरामानन्द भाष्यकारोत्तम ।

इन पूर्वाचार्यनको सप्रम प्रणाम

जिन आप्यों है श्रीसंप्रदाय कस्पद्र म सर्वोत्तम ॥१॥

पूर्वाचार्यों के सहित जगद्गुरुक जगद्गुरु आनन्द भाष्यकार
आचार्यपाद यति सम्राट हिन्दू धर्म रक्षक अनन्त श्रीरामानन्दाचार्य
जी का चरित्र उपरोक्त षट्पदी संख्या ३५ में जो श्रीनामा स्वामीजी
ने वर्णन किया उसका समयानुसार वर्णन यहाँ तक हुआ, अब प्रधान
शिष्यों के साथ जो षट्पदी संख्या ३६ में वर्णन किया गया है उसको
मेरी पाठक आगे अवलोकन करें ।

(प्रधान द्वादश शिष्यों के सहित भगवान श्रीरामानन्दाचार्य यश वर्णन)

मू० छ०—अनन्तानन्द कवीर योग सुख
नरहरि सुरसुर । पीपा गालव भाव
धना रैदास सेनवर । औरौ शिष्य
प्रशिष्य एकते एक उजागर । विश्व-
मंगलाधार सर्वसुख दशधाआगर ॥ बहुत
काल वषु धारके, प्रणत जनन को पार
दियो । रामानन्द रघुनाथ ज्यों, द्वितिय
मेतु जग तरण कियो ॥३६॥

इस षट्पदी की भी श्रीप्रियादाम जी ने कोई टीका नहीं की, परंतु
आचार्यपाद यति मार्कभौम श्रीरामानन्दाचार्यजी के इन १२ प्रधान
शिष्यों के विषय चरित्र प्राचीन महाकवि श्रीद्विगीशजी, उनके पुत्र
और पुत्र के मित्र जिनका नाम नहीं प्राप्त होता तीनों ने मिलकर
देशवादी प्राकृत भाषा में लिखे हैं जो श्रीअयोध्याजीके प्रमुख साहित्य-
कार एवं पत्रकार स्वामी श्रीविन्दुजी और श्रीबालकृष्णमजी विनायक के
द्वारा हिन्दी में अनूदित होकर "महाभागवत चरित" नाम से २ भागों
में मानस संघ रामवन (सतना) से प्रकाशित हुए हैं, वे प्रेमियों के

अवलोकन के योग्य हैं। उन्हीं के और प्रमंशपरिज्ञात अगस्त्य-संहितादि के आधार पर यहां अन्धन्त संक्षेप में इन महाभागवतों के चरित्र दिये जा रहे हैं। इनमें से श्रीकवीरजी श्रीमुखानन्दाचार्यजी श्रीनरहर्यानन्दाचार्यजी श्रीमुरमुगानन्दाचार्यजी श्रीपीपजी श्रीधनजी श्रीसेनजी और श्रीरैदामजी की कथा आगे द्वय ५९ से ६७ तक में आवेगी और श्रीअनन्तानन्दाचार्यजी श्रीयोगानन्दाचार्यजी श्रीगालवानन्दाचार्यजी एवं श्रीभावनन्दाचार्यजी की यहाँ लिखी जा रही है।

(जगद्गुरु अनन्त श्री स्वामी अनन्तचार्यजी की कथा)

सरदार प्रदेश (श्रीअयोध्याजी के समीप, सरयू पार) में राम-रेखा के तट पर महेशपुर निवासी मनाह्य द्विजवर श्रीविश्वनाथमणि त्रिपाठी निवास करते थे जो प्रायः सभी पर्वों उत्सवों पर और पां भी बराबर श्रीअयोध्याजी की यात्रा किया करते थे, इसी से उनको लोग अवधू पंडित के नाम से कहने लगे थे, अतः उनका नाम अवधू पंडित ही प्रसिद्धि हो गया था।

एक बार इन अवधू पंडित ने रामरेखा और श्रीसरस्वती के संगमस्थल पर घोर तप करके श्रीसरस्वतीजी से वरदान प्राप्त किया, जिसके फलस्वरूप सरस्वतीजी माँ उग्रभ के पं० विशालदेव शुक्ल के यहां अवतरित हो इनसे विवाही जाकर एक पुत्र प्रसव कर अन्तर्धान हो गई और वनदेवियों द्वारा बालक का पालन पोषण हुआ जो छन्नु नाम से पुकारा जाने लगा। कुछ ही काल में श्रीअवधू पंडित जी परलोक मिथार गये और ग्वाल जालि के बीच वन में रहता हुआ बालक छन्नु अपने आप को ग्वाल गोपाल ही समझने लगा तथा गोवत्सचारण करने लगा।

एक दिन छन्नु को गाय बछड़े चराते हुए जंगल में एक अलौकिक रूप लावण्यवान् परम मनोहर स्वर से बंशी बजाते हुए गोपाल 'सैवरु' से भेट हो गई, जिसके सौंदर्य और वेषुवादन से छन्नु

मोहित हो गया। दोनों में मुट्ठ मैत्री हो गई। सायंकाल जब अपने अपने घर लौटने का प्रमंग आया तो छन्नु विद्योगानल से व्याकुल हो गया, परंतु आखिर घर तो लौटना ही पड़ा। इस प्रकार माथ माथ मोचरण कर कुछ दिन दोनों मित्रों ने अपूर्व सुख का उपभोग किया। एक दिन छन्नु सायंकाल विदा लेते हुए मित्र के साथ, अपने घर छुट्टे भी ले चलो-कह कर मचल पड़ा और सैवरु के आदेश के अनुसार आँख मूंदकर मित्र के घर (गोवर्धन) पर पहुँच गया, वहाँ अष्ट सत्वियों द्वारा बड़ा पूजा सत्कार प्राप्त किया, फिर भागवत की कथा सुनते हुए ब्रह्मा के मोह की कथा में वह मूर्छित हो गया और मूर्छा स्थान पर सब दृश्य अदृश्य हो गया एवं छन्नु ने अपने आपको वहाँ अपने घर के पास जंगल में पड़ा पाया।

इधर पं० श्यामकिशोरजी नामक एक विद्वद्रिष्ठ द्विजवर को ध्यान के समय भगवदाज्ञा हुई कि उस ब्रह्मांश से उत्पन्न बालक को लाकर पितृवत् पालन पोषण करो, पढ़ाओ लिखाओ और विद्वान बनाओ। पंडितजी ध्यान सकेंतानुसार स्वप्नते दृष्टते यहाँ पहुँचे और अपने मित्र सैवरु के विरह में व्याकुल बेहाल पड़े सैवरु सैवरु पुकारते बालक को दुलार पुचकार कर मित्र से मिलाने का आश्वासन दे घर ले आये। कालान्तर में गोपाल बालक छन्नु पं० छन्नूलालजी के नाम से पुकारे जाने लगे। इसी बीच में तुगलदाज तुर्क के सेनापति के उन्पीटन से गाँव भाग खूटा, पं० श्यामकिशोरजी भी अपने धर्मपुत्र छन्नु पंडित सहित भागकर श्रीअवधू होते हुए काशी पहुँच गये और श्रीविश्वनाथजी के समीप ही ब्रह्मपुरी नामक मठल्ले में रहने लगे। पीछे पं० श्यामकिशोरजी शरीर छोड़ भगवद्दाम मिथार गये तब पं० छन्नूलालजी काशी में अद्वितीय वेदज्ञ समझे जाने लगे।

एक बार श्रीमहाशिवरात्री के जागरण में जागते हुए पं० छन्नूजी ने आचार्यपाद आनन्दभाष्यकार भगवान् श्रीरामानन्दाचार्यजी

की शंख ध्वनि सुनी, उसका कुछ ऐसा प्रभाव हुआ कि पंडितजी उसी विरहकातर दशा को प्राप्त हो गये जो पहिले बाल्यकाल में मित्र सैवरु के वियोग में हुई थी।

उस मोहिनी वेषुनाद के सदृश इस महापोहक शंख ध्वनि के उद्गम स्थान का पता लगाते पाहत छन्नु लालजी पंच गंगा घाट पर श्री मठ में पहुँचे। वहाँ घंटों नहीं प्रहरी दर्शन की प्रतीक्षा करते उसी विरह व्याकुल अवस्था में पड़े रहे और जब पुनः शंख ध्वनि हुई तो सुनकर उठे तथा सामने ही श्रीमदाचार्यपाद के दर्शन करके वही मुख मान किया जो मित्र सैवरु के दर्शन से होता था। अब पंडितजी घर द्वार धन संपत्ति सबको भुलाकर मनही मन यहीं रहने का निश्चय कर चुके थे, इतने ही में श्रीमदाचार्य चरण की आज्ञा हुई कि अच्छा यहाँ आश्रम में झाड़ू लगाया करो। पंडितजी को न किसी धनविद्याका अभिमान उस नीच टहल से गंका सका और न जानिपौनि या लोक सम्मान का भूत ही बाधा डाल सका। पंडितजी एक दाम की भाँति वहाँ आश्रम में झाड़ू की सेवा में तल्लीन रहने हुए, निवास करने लगे। पूरे एक वर्ष इस प्रकार परीक्षा ली जाने पर श्रीमदाचार्यपाद यतिराज-राज ने उन्हें पंच मस्कार पूर्वक श्रीवैष्णवी दीक्षा में दीक्षित कर श्री अनन्तानन्दाचार्य नाम प्रदान किया। श्रीगुरु रूप में साक्षात् भगवान राम ही को प्राप्त कर, आपके आनन्द की सीमा नहीं रही और अब आप केवल झाड़ू ही नहीं मत्पुत्र आश्रम में श्रीभगवद्भागवत आराधन (पूजा रसोई), आगन्तुकों का आदर सत्कार, जिज्ञासुओं का समाधान और अर्थार्थियों को मनोभिलषित प्रदान आदि सभी काम का भार वहन करने लगे।

आकाशमार्ग से आनेवाले सिद्धों का आकाश ही में स्वागत सत्कार, बिल्लीयों का रूप धारण कर बसु पुत्रियों का आना और उनको आपके द्वारा अभिलषित प्रसाद प्रदान होना, कश्मीरी मीमांसक

महोदय का समाधान, आशौच के कारण ग्वाला के यहाँ से दूध न आने से चिन्तित होने पर बालमित्र सैवरु का दूध दे जाना, श्रीकृष्णजी को शिशु अवस्था में पहुँचाने के लिये श्रीमदाचार्यचरण की आज्ञा से जड़ी लेने जंगल में गये तब किशोर रूप में श्रीस्वामिकानिकजी से संवाद आदि स्वामी श्रीअनन्तानन्दाचार्यजी के अलौकिक चरित्रों का एवं अनेकानेक उपदेश सत्संगों का वर्णन विस्तार से इन ग्रंथों में हुआ है जिस सबका समावेश यहाँ स्थानाभाव से असम्भव है। विज्ञ पाठकों को उन सबका आनन्द उक्त ग्रंथों को पढ़कर अवश्य लेना चाहिये।

(आचार्यपाद अनन्त श्रीस्वामी श्रीयोगानन्दाचार्यजी की कथा)

किमी कविकी शक्ति है :—

योग मुपथ उद्धार हित, योगानन्द कपिल भये ॥
श्रीगुरु पदरज सेह सकल शाम्बन्ध मयिलीन्हे ।
विजय नगर महँ जाय विरोधिन्ह विजय सा कीन्ह ।
श्रीरंगम् महँ जाय वादकरि बरवर जीते ।
चित्रकूट ब्रज अवध परम मुख बहुदिन बीते ॥
गुर्जर धरा प्रचारकरि, कलिहि धर्ममह जिन जये ।
योग मुपथ उद्धारहित, योगानन्द कपिल भये ॥

सिद्धपुर क्षेत्र (गुर्जर देश) निवासी वैदिक तपस्वी श्रीमणि शंकरजी शर्मा को भगवान भास्कर ने वृद्ध ब्राह्मण के रूप से एक फल प्रदान कर पति पत्नी को आधा आधा खालन की आज्ञा दी और वैसा ही करने के पश्चात् दसमास में उनको वैशाख कृष्ण ७ बुधवार संवत् १४१७ को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। मूल नक्षत्र में जन्म होने से १ वर्ष तक पिता की बालक का मुख न देखने का शास्त्र विधान पिताजी की तीर्थ यात्रा के कारण अनायास ही सच गया।

बालक को दीपक की अ्योति में असाधारण प्रेम था, रात हो या दिन, दीपक बुताते ही सोने लगता और जलते हुए दीपक को टकटकी लगाये देखता रहता। इससे सब आश्चर्यान्वित भी थे और चिन्तित भी। ज्ञानयोगोद्भूत श्री-भ्यानदेवजी को समीप के बाम-बामा गांव से बुलाकर सब हाल बताया तो उनसे कहा ये मामान्य बालक नहीं कोई, अवतारी पुरुष है। तुम लोग चिन्ता छोड़ दो और उन्होंने नामकरण करके बालक का नाम यशोशक्त रक्खा।

४ वर्ष का होनेपर बालक दीपक देखना छोड़कर अधस्तुलो आम्बों से रहने लगा, जैसे तो तन्ना (भूपकी) लगी रहने का कोई रोग हो गया हो, परंतु अन्य कोई भी रोग के लक्षण या पीडा नहीं थी। बहुत कुछ खाद फूक दवा डारु की गई परन्तु यह भूपकी न हटी।

एकदिन ग्रामके बाहर अमराई में एक संत पंडली (जमरत) आकर टिकी, शामके सभी स्त्री पुरुष अपने अपने घरों में कुछ न कुछ सेवा योगकी सामग्री ले वहां स्वागतार्थ गये बालक यशोशक्तकी साथ लेकर माता पिता भी वहां गये। जब भगवानकी भोग लगाकर सन्त सब प्रसाद पाने बैठे तब यशोशक्तने श्रीमहन्तजीके समीप जाकर हाथ बढ़ा साथ प्रसाद की याचनाकी, उस समय वह पूरे नेत्र खोलकर सन्तोंकी ओर देख रहा था और उसी समय से वह नेत्रोंकी अर्ध मुद्रितावस्था चली गयी।

९ वर्ष के हुए तब यज्ञोपवीत संस्कार होकर श्रीनारायण की कर्मकांडी की गठशाला में अध्ययन आरम्भ हुआ और फिर कर्मकांडीजी के आदेशानुसार काशी आकर श्रीनारायण भट्टजी शास्त्री से न्याय एवं साहित्य पढ़ने लगे। यहां पढ़ाई में एक वृद्ध कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे उनसे अपनी अन्तिम अवस्था में आपसे प्रार्थना की कि मेरी पुत्री की आप प्रणय करने की कृपा करके मरण काल की इस महा चिन्ता से मुझे मुक्त कर दीजिये। आपने दया प्रवश हो स्वीकृति प्रदान करदी।

गांव में पिताजी की सूचना दी अनः पिताजी सपरिवार काशी पहुँच आनन्दोल्लास पूर्वक पुत्र का विवाह किया कुछ ही दिन में स्वामुर स्वर्ग सिधार गये और आपको वहीं रहने को बाध्य होता पड़ा। सपरन्तीक रहकर भी आप मध्ययन में तल्लीन रहे तथा कुछ दिन में महा विद्वानों में स्थान प्राप्त कर लिया। फिर योग साधना से प्रेम हो गया और उसमें भी आपने कुछ ही काल में परम योग्यता प्राप्त कर ली, समाधि लगाने लगे और तीन लक्ष्मी समाधियां सफलतापूर्वक लगाईं, जिनमें प्रथम १३ मास में, दूसरी ८ मास में और तीसरी १७ मास में उतारी गई।

आपका गृहस्थ जीवन भी पूर्ण सुखी था। पतिप्रिया पत्नी सदा आपका योग साधनादि में अपनी सेवा सुश्रुतादि से सहायता पहुँचाना करती और सदा आज्ञाकारिणी ही नहीं प्रत्युत मानमानु-सागिणी रहती थीं। एक बार आपकी धर्मपत्नी बहुत विमार पड़ गई, किसी औषधि या उपचार से कोई लाभ नहीं हुआ, तब आपने अपने योग बल से उसकी प्राण रक्षा की परन्तु काल की गति तो निश्चित है एक पत्नी घटना घटी कि उसका शरीर छूट ही गया। वह घटना यह है।

एक दिन आप रंगी पार जा रहे थे उस समय जाते जाते न जाने क्यों आपके मुख से हास्य ही हास्य में निकल गया कि हम गंगा पार जाते हैं अब लौटेंगे नहीं। सायंकाल हुआ, गर्मी हो गई, पर आप न लौटे, क्योंकि वहां किसी जंत से सस्तेग छिड़ गया था। इधर पत्नी ने विरह कानर हो सोचा, “कह जो गये थे हम न लौटेंगे” अनः अब न लौटेंगे। और शरीर परित्याग कर दिया। आकर देखा तो बड़े दुखी हुए, अन्तेष्टी की, आरु किया और उसमें सर्वस्व दान कर श्रीशिव शिव के आदेशानुसार नंगे पैरों ही श्री मठ पहुँचे। परदे के बाहर से ही सब उत्तान्त निवेदन हुआ तो भीतर से श्रीमदा-

चार्य पाद की आज्ञा हुई कि सौचही (४० घंटे) एक पाँच से खड़े रहो, पैर न काँपें, तो दीक्षा होगी। आप खड़े हो गये और १॥ दिन रात खड़े रहे अन्त में पैर डिगमगाना ही चाहते थे कि श्रीअनन्ता-नन्दाचार्यजी ने संभाल लिये। परदा हटा, नैयायिकजी श्रीमदाचार्य के चरण कमलों में साष्टांग पड़ गये, ब्राहिमा ब्राहिमा कहने लगे। श्रीआचार्य पाद ने लडाकर पाम देखाया। श्रीवैष्णवी दीक्षा प्रदान कर आज्ञा दी कि जिनसे गिरने से बचाया है उनसे शिक्षा ग्रहण करो, सेवा करो और आह्वानुवर्तन करो।

श्रीमदाचार्य पादने श्रीअनन्तानन्दाचार्यजी से कहा अपने शिष्य को अमृत रस पिलाओ जो आद्याचार्य श्रीआनन्देयजी से प्राप्त हुआ है। श्रीअनन्ताचार्यजी ने वह अमृत रस भी पिलाया और प्रस्थान प्रणीत का आनन्द भाष्यामृत भी पिलाया। स्वयं यतिराज गजने २४ तन्त्रों का तान्त्रिक ज्ञान प्रदान किया जिसमें अर्नरेश्वर सांख्य और शैशव सांख्य का रहस्य भी समझ गये और यह भी समझ गये कि सांख्यवादी ईश्वरको जगत का कारण क्यों नहीं मानते।

श्रीआचार्यपाद की द्वितीय मांगरीन्द आदि की पश्चिम यात्रा के समय आप साथ थे और भगवत सेवा का कार्य किया करते थे। प्रभुका विमान (सिंहासन) मन्तक पर विराजमान कर यात्रा में श्रीआचार्यपादकी पालकी के आगे आगे डलते पैर। पालकी की ओर मुख किये। चलते थे इस समय भगवान् भास्कर के साथ पालखिल्य से प्रतीत होते थे।

श्रीपपाजी के राज्यपाद छोड़कर विरक्त हो श्रीआचार्यचरण के साथ हो लगे पर उनकी पवित्राणा घन्ना श्रीमानामहेश्वरी की पति की आज्ञानुसार कंचल फाड़कर बनाई गई कंकणीको सुन्दर साड़ी बना देना। श्रीजगदीश पुरी में चन्दन तालाब में जीर्णोद्धार के पश्चात् जलश्रोत का लाना। श्रीवैकटाचल में श्रीरामानुजीय वैष्णवोंको अपने योगिक

चमत्कार से चकित कर शैव वैष्णव विरोध एवं उत्तर दक्षिण के मेद भावको शमन करना, वेदभाष्यकार स्वामी श्रीविद्यारण्यजी के साथ विजय नगर आकर वहाँ के शैव वैष्णव विरोध का शान्त करना, लिङ्गमत संप्रदाय के चरकाचार्यजी को शास्त्रार्थ में परास्त कर शिष्य बनाना, श्री श्रीनिवासाचार्यजी से हित उपदेश करना, नीलपाद नामक ग्राम में कुछ दिन निवास कर वहाँ के योग साधक एवं आर्त अर्थार्थी भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण करना, आकाशमार्ग से आनेवाले सिद्धोंको कृतार्थ करना, एक चित्रकार भक्तको नाहरु रंग से मुक्त करना, श्रीरंगम में श्रीवरवर मुनि को श्रीराम यन्त्रके महत्त्वका उपदेश करना, भगवान् शेषजी का प्रकट होकर सांकेतिक उपदेश और उमका आपके द्वारा तात्पर्य प्रकाश होना, फिर दक्षिण देश से कुच्छेत्र पधारना, वहाँ ग्रहण योग में भारतवर्ष के अनन्त संतों का समागम, पूर्व परिचित भियाँ चिश्ती का समागम, वहाँ से श्रीवृन्दावन में कुछ दिन निवास और स्वात्तिके रूप में श्रीगङ्गारानी प्रदत्त दुग्धपान तथा अलमस्त-अवस्था में ब्रजभूमिका भ्रमण, ब्रज से चलकर श्रीचिन्मय पधारना, वहाँ जगज्जननी श्रीविदेहजाजू द्वारा पयप्रदान, तत्पश्चात् श्रीमीना अनुज सप्रेत प्रभु श्रीरामजीका दर्शन, हास्य विनोद एवं दिव्यफल प्रदान, वहाँ से श्रीअश्व आगमन एवं दिव्य श्रीअयोध्यापुरी में दशमए एवं अष्टि मुनियों से सेवित अनन्त दाम सरला एवं आनन्दरूपे परिपूर्ण श्रीयुगल सरकार के दर्शन आदि आपकी अमिट अनीतिक लीलायें प्रसंग पारिजात, भक्तमाल, एवं महाभागवत चरित आदि अनकानेक ग्रंथों में प्रसिद्ध हैं। अन्तिम दिनों में आपने पूर्व समुद्र के तट (गंगा सिन्धु संगम स्थल) पर पहुँच कर श्रीकपिल मुनिके दर्शन प्राप्त किये और वहाँ श्रीकपिलाश्रम पर निवास किया, वहाँ परमाचार्य ब्रह्म यतिराजगज अनन्त श्रीरामानन्दाचार्यजी ने प्रकट हो दर्शन दिये और ज्ञान कहा कि तুম श्रीरामभक्ति के प्रचारार्थ इन्हीं श्रीकपिलदेव

जी के अंश से प्रकट हुए हो, अब तुम्हारा कार्य काल समाप्त हो गया, अतः इन्हीं में विलीन हो जाओ, श्रीमदाचार्यपादकी आज्ञानुसार आप श्री कपिलाश्रम पर भगवान् कपिलदेवजी में विलीन हो गये ।

अनन्त श्रीस्वामी योगानन्दचार्यजी द्वारा प्रणीत अनेक ग्रंथ संस्कृत एवं हिन्दी भाषा के सुने जाते हैं परंतु उनमें से केवल यह एक वैराग्य पचीसी प्राम्म्य होनी है सो पाठकों के हितार्थ यहाँ दी जा रही है ।

❀—

अथ वैराग्य पचीसी

ॐ नमः शिवाय ॥

श्री आचारज जगतगुरु, वन्दो रामानन्द ॥
 वन्दो रामानन्द राम सब जगत विहारी ।
 भाष्यकर भगवान् विश्वतारक अवतारी ॥
 नश्वर भव संसार सार साँचे मीतावर ।
 'योगानन्द' विचारि भजो पदकण्ठ निरन्तर ॥
 रवि समिजनकर तेज लखि, भयो दीप ज्यों मंद ।
 श्री आचारज जगतगुरु, वन्दो रामानन्द ॥ १ ॥
 भोगत कोटिन कलप लौ, नाहिन नशै मनोज ॥
 नाहिन नशै मनाज मलदुस्वदायक साँई ।
 ज्ञानिन को नित शत्रु देत आतम मुख खोई ॥
 लोभ क्रोध लै संग मोह क जाल फैमावत ।
 'योगानन्द' मो नचै जाहिगुरुदेव वचावत ॥
 तजिये कंचन कामिनी, भजिये चरण सरोज ।
 भोगत कोटिन कलप लौ नाहिन नशै मनोज ॥ २ ॥

जैसे गज गजनी निरखि, आय पर्यो अँधकूप ॥
 आय पर्यो अँधकूप रूप आपन नहि जानै ।
 नहीं साँचेदानन्द-कन्द रामहि पहिचानै ॥
 देह आतमा मानि यह निशि वासर खाई ।
 'योगानन्द' विचारि देखु दुख की अधिकाई ॥
 विज्ञानी अज्ञान परि, भूल्यो आपन रूप ।
 जैसे गज गजनी निरखि, आय पर्यो अँधकूप ॥ ३ ॥
 त्यों मन बीच विचार कर, विषयन में मुखनाहि ॥
 विषयन में मुखनाहि यथा पाथर में पंकज ।
 पानी मथिय हजार बार नहि पाइय घृत रज ॥
 भूमी कूटे अन्न मिलै नहि ऊसर बोधे ।
 'योगानन्द' नभ गहन वृथा फल विन दिन खोये ॥
 कंचन फूल मुगंध नहि, तेल न बालु माहि ।
 त्यों मन बीच विचार कर, विषयन में मुखनाहि ॥ ४ ॥
 काल व्याल क गाल में, सब ममात छल छंद ॥
 सब ममात छल छंद प्रलय की आंधी आयै ।
 मनुजन की को कहै कोटि विधि इन्द्र नशाये ॥
 जब उपजै अम बुद्धि शुद्धि तब मनकी होई ।
 'योगानन्द' नदी प्रवाह उलटावै मोई ॥
 यौवन धन गज अश्व रथ, हेम भवन आनन्द ।
 काल व्याल क गाल में, सब ममात छल छंद ॥ ५ ॥

प्रात भये आवत दिवस, ऐमेइ जीवन जात ॥
 ऐमेइ जीवन जात कमाई करत पापकी ।
 पुनि पुनि भोगतनरक विपतिसहि त्रिविध तापकी ॥
 जुवा भयो मद मत्त फिरै हरि नाम न भावै ।
 'योगानन्द' गवाँय जन्म पाये पछितावै ॥
 साँझ भई पुनि रात पनि, रात गये पुनि प्रात ।
 प्रात भये आवत दिवस, ऐमेइ जीवन जात ॥ ६ ॥
 भूँजै ज्ञान विचार मव, पेट जानिये भार ॥
 पेट जानिये भार पेट सों मवही हारे ।
 जो जीतै यह पेट, जाय सो हरि के द्वारे ॥
 भूख भूख चिल्लाये भ्रमत कृकर ज्यों डोलै ।
 'योगानन्द' सो साधु कहा भवग्रंथी खोलै ॥
 जरत रहत ज्वाला प्रवल, भोंकिय अन्न अहार ।
 भूँजै ज्ञान विचार मव, पेट जानिये भार ॥ ७ ॥
 मूढ़ वृथा सोचत मरै, जाके नहि विश्वास ॥
 जाके नहि विश्वास पाप करि पेटहि भरई ।
 चाहत भव निधि तरन करम कृकर सम करई ॥
 दृढ़ करि धारै ध्यान तजै तृष्णा अरु आशा ।
 'योगानन्द' ममाधि मध्य मो लखै प्रकाशा ॥
 तजि पेट विधना गढ़ै, तिनहि भरै अनयाम ।
 भोगत का सोचत मरै, जाके नहि विश्वास ॥ ८ ॥

सर्प डमै केहरि ग्रमै, ताहि भलो करि मानि ॥
 ताहि भलो करि मानि दुष्ट को मंग न कीजै ।
 खल की मीठी बात जहर ज्यों जानि न पीजे ॥
 घात करै मन लिये ज्ञान अरु ध्यान न भावै ।
 'योगानन्द' कुमंग साधु को व्याध बनावै ॥
 दुर्जन की मंगति तजौ, दुष्ट संग अति हानि ।
 सर्प डमै केहरि ग्रमै ताहि भलो करि मानि ॥ ९ ॥
 चंचल वंचक जानिये, मनहि भूत विकराल ॥
 मनहि भूत विकराल जानि थिर करहु योगमों ।
 धारि राम अवि ध्यान, खेचिचित विषय भोगमों ॥
 मानै झूठहिँ सोचि तामु मन नाम कहावै ।
 'योगानन्द' मोई मन्त सकल संकल्प भिटावै ।
 कबहुँ जाय आकाश में, कबहुँ जाय पाताल ।
 चंचल वंचक जानिये, मनहि भूत विकराल ॥ १० ॥
 कोऊ घूँटत धूम मति, देह दई भुरसाय ॥
 देह दई भुरसाय काम बड़ बाध न भाग्यो ।
 विकल होत तिय निरखि ज्ञान को रंग न लाग्यो ॥
 अन्तर अति अभिमान बात बातन महँ गारी ।
 'योगानन्द' विचारि भक्ति नव भाँति न धारी ॥
 कोऊ झूलत अधोमुख, कोउ करि ऊपर पाय ।
 कोऊ घूँटत धूम मति, देह दई भुरसाय ॥ ११ ॥

करनी कतहुँ न देखिये, कथनी आसन मारि ॥
 कथनी आसन मारि अगुण उपदेश सुनावै ।
 साकत जैनी शैव अघोरी अम फैलावे ॥
 आचारिन आचार विवश हरिभक्ति भुलाइ ।
 'योगानन्द' विचारि कहत कलि की कुटिलाई ॥
 कलियुग मत वाटे बहुत, दीन्हीभक्ति विसारि ।
 करनी कतहुँ न देखिये, कथनी आसन मारि ॥१२॥
 तुम जनि भूलौ भक्तिरस, रामानन्दी मन्त ॥
 रामानन्दी सन्त परम निर्मल पथ पाई ।
 पिवहु निरन्तर नाम सुधा रघुपति गुणगाई ॥
 औरन की लखि भूल तुमहु जनि भूलो भैया ।
 'योगानन्द' विचारि देखु जग भूल भुलैया ॥
 यासों प्रगटे जगतगुरु, कीन्ह दम्भकर अन्त ।
 तुम जनि भूलौ भक्ति रस, रामानन्दी सन्त ॥१३॥
 मंथन करि पय तक तजि, लह नवनीत अहीर ॥
 लह नवनीत अहीर लहे जिमि मधु मधुमाखी ।
 तैमेई गहिये सार सकल ग्रन्थन रस चाखी ॥
 साधन सों धन मिलै लगै जब राम नाम मन ।
 'योगानन्द' निहारि नयन सच्चिदानन्दधन ॥
 हंस सार ग्राही गहत, क्षीर तजत सब नीर ।
 मंथन करि पय तक तजि, लह नव नीत अहीर ॥१४॥

प्रीति कीजिये राम मों जिमि पतिवरता नारि ॥
 जिमि सतिवरता नारि न कछु मनमें अभिलाषै ।
 तैमेई भक्त अनन्य टेक चातक ज्यों राखै ॥
 राम रूप रस त्यागि विषय रस स्वाद न चाख ।
 'योगानन्द' सुजान आन को नाम न भाखै ॥
 नेकाई न घन नामई, आनकि ओर निहारि ।
 प्रीति कीजिये राम मों, जिमि पतिवरता नारि ॥१५॥
 विरह ज्वाल जा उर जरे, मोई शीतल होय ॥
 मोई शीतल हाथ पिया बिन कछु नहिं भावै ।
 कल न परे दिन रैन नैन धन ज्यों बरमावै ॥
 दशरथ राजकुमार ताहि हँमि कंठ लगावन ।
 'योगानन्द' जो विरह अनल में अंग जगावन ॥
 नैनन नाद न आवई, रहै रैन दिन राय ।
 विरह ज्वाल जा उर जरे, मोई शीतल होय ॥१६॥
 गूँगो संभाषण करै, अरथ विचारौ मीत ॥
 अरथ विचारौ मीत बात गढि गढि जनि छोलौ ।
 नाम नाद हँ लीन नयन भीतर के खोलौ ॥
 रज कण मध्य मुमरु बुन्द में सिन्धु ममाई ।
 'योगानन्द' चरित्र लखौ करनी करि भाई ॥
 अधरो देखै लोक सब, बहिरो सुनै सुगीत ।
 गूँगो संभाषण करै, अरथ विचारौ मीत ॥१७॥

चल चल ऊरध पंथलग्नु, दिव्यधाम साकेत ॥
 दिव्यधाम साकेत जहाँ सियरमण विराजत ।
 जहं मारुतमुत आदि पारपद सेवक आजत ॥
 प्रलय काल नहिं नाश मदा आनन्द अखंडित ।
 'योगानन्द' विचारि चलौ ऊरध पथ पंडित ॥

मूढ़ न भटके नरक में, कर अपने चित चेत ।
 चल चल ऊरध पंथ लग्नु, दिव्यधाम साकेत ॥१८॥

तौ लों मंत महंत नहिं राम भक्ति रस नाहिं ॥
 राम भक्ति रस नाहिं ज्ञान सागर गर जैसो ।
 योगी सिद्ध महर्षि मदन भय मय कहैं तैसो ॥
 जानि देह सों भिन्न आनमा हौं रहु न्यारा ।
 'योगानन्द' विचारि विषय विष विषय विकारा ॥

विषय स्वाद की वासना जो लों है उर माहिं ।

तौ लों मंत महंत नहिं राम भक्ति रस नाहिं ॥१९॥

रघुपतिध्यान तुरीय सुख, ताकी गति अति भीनि ॥
 ताकी गति अति भीनि बिना माधन को जानै ।
 विन तुरीय अनुभवे राम छवि नहिं उर आनै ॥
 भक्ति न निर्मल होय मलिनता मिटै न मनकी ।
 'योगानन्द' विचारि यथा रविपर गति धनकी ॥

जागृति स्वप्न सुषुप्ति ये, जीव अवस्था तीनि ।

रघुपतिध्यान तुरीय सुख, ताकी गति अति भीनि ॥२०॥

रघुनन्दनकी भलक लखि, भूलिजात मय योग ॥
 भूलिजात मय योग लगै जब राम नयन शर ।
 पुण्य पाप सब जरै बढे उर विरह निरन्तर ॥
 कोटि वर्ष तप करै विरह छिनको बढि तामों ।
 'योगानन्द' विन मीत हृदय की कहिये कासों ॥
 प्रेम रंग जेहि अंग लगै, ताहि सुहात न भांग ।
 रघुनन्दकी भलक लखि, भूलजात मय योग ॥२१॥
 राममन्त्र निशि दिन जपहु, करि निर्जन वनवास ॥
 करि निर्जन वनवास जपहु पट लक्ष पडचार ।
 लागै प्रीति प्रचण्ड देहि दर्शन मिय रघुवर ॥
 श्रीगुरु कृपा प्रताप जनम अरु मरण नशाई ।
 'योगानन्द' करु मफल जान यह जीवन भाई ॥
 धारि माल तुलसी तिलक, होहु राम के दाम ।
 राममन्त्र निशिदिन जपहु, करि निर्जन वनवास ॥२२॥
 निमल गति ताकी सकल, उमगै प्रेम प्रभाव ॥
 उमगै प्रेम प्रभाव सुगन्ध न दूर दुगधे ।
 नहिं ताकै जगज्जोर दिव्य लौ रहै लगाये ॥
 मरिम मान अपमान मरल चित छन्द न ताकै ।
 'योगानन्द' सोइ मुक्त बमै उर रघुवर जाके ॥
 जाके हिय रघुवर बसहि, दुरे न तामु सुभाव ।
 निर्मल गति ताकी सकल, उमगै प्रेम प्रभाव ॥२३॥

आवत है बलि देन रिपु भाग भाग रे लख ॥
 भाग भाग रे भाग त्याग माया व्यालखी ।
 करि मंतत मत्संग अंग रंगावो भक्ती ॥
 फूल हृदय मरोज भावु निरखे उर माहीं ।
 'योगानंद' हरि मिले गर्भ पुनि भूले नाहीं ॥
 'कांठि कल्प बीते कल्पि, जाग जाग जाग ।
 आवत है बलि देन रिपु, भाग भाग र भाग ॥ २२ ॥
 जिनके कोटिन शिष्य मम वर एकादश भ्रात ॥
 वर एकादश भ्रात कवीरदिक जग जानै ।
 जिन कर तेज प्रताप निरखि विधिहु भय मानै ॥
 श्रीगुरु आयसु पाय रची वैराग पत्नीमी ।
 'योगानंद' जो पढ़इ लहइ गति शुक मुनि कीमी ॥
 श्री श्रीरामानन्द प्रभु जगतगुरु विख्यात ।
 जिनके कोटिन शिष्य मम, वर एकादश भ्रात ॥ २५ ॥

इति श्रीयोगानन्दचार्यस्वामीजीकृत वैष्णव पचीमी समाप्त

(जगद्गुरु अन्नन्त श्रीस्वामी गालवानन्दाचार्यजी की कथा)

गालवानन्दाचार्य चरण मंथन चित लाये ।
 योगशक्ति हरिभक्ति पाय कश्मीर सिधायो ॥
 विष्णुरात नृप सदमि यथा भागवत सुनायो ।
 निर्मि कश्मीर नरेशहि श्रीहरि भक्ति दृढायो ॥
 गालव श्रीशुकदेवमुनि, विजय कीन्ह सब पट्टमि थल ।
 ज्यों द्वापर त्यों कलिहुँ पुनि, कीन्हो भक्ति प्रचार भल ॥

श्री व्यासमन्दन मुनि वर्य श्री शुकदेवजी के अवतार स्वामी श्री गालवानन्दाचार्यजी का जन्म मिन्धु एवं पार्वतीय नदियों के संगम स्थल के पंचायी नामक ग्राम (प्राचीन पञ्चावती नगर) में त्रिपवर श्री माध्वमूर्तिजी की धर्म पत्नी श्री भायादेवीजी के गर्भ से चैत्रकृष्ण ११ चतुर्वार वृषलान में हुआ था और उर्ध्वपुङ्गविलक तथा सुन्दर श्याम केश कलाप से अलंकृत हो आप माता के गर्भ में प्रकट हुए थे ।

मुंडन संस्कार के समय ग्राम के नर नारियों ने बालक के इस अलौकिक सौंदर्य वाली केशकलाप को काट देनेका विरोध किया, अतः मुंडनका यज्ञोपवीत संस्कारके समयके लिये राल दिया गया । नवें वर्ष के आरम्भ में यज्ञोपवीत के समयपर एक दिव्य सन्त पधारे, जिनकी आज्ञा में मुंडन भी हुआ और मुंडन के पश्चात् स्नान के समय ही पुनः वह केशके साथ लहलहा आये जिनको देखकर माता पिता व सब समुपस्थित जन चकित रह गये । आगन्तुक दिव्य महात्मा अन्तर्धान हो गये ।

उपवीत के अनन्तर वेदाध्ययन आरंभ हुआ, पिताजी पढ़ा पढ़ाकर हार गये परंतु कुमार ने एक अक्षर भी ग्रहण नहीं किया और निरन्तर प्रणव एवं गायत्री मंत्र के जप में मग्न हो गये । लगानार तीन वर्ष पंथत आप जपानुष्ठान ही में तल्लीन रहे, इसके पश्चात् जपानुष्ठान को समाप्तकर आपने काशी जाने की इच्छा प्रकट की और विनयदशमी के पश्चात् पिता माताही नहीं ग्राम के सभी नर नारियाँ का काशी यात्रा का संकल्प हो गया । सभी के साथ आप काशी आगये ।

एक दिन कोई ऐसे विदेशी पंडित आये जिनकी भाषा में कोई नहीं समझता था, न वे किसी की भाषा में समझ पाते थे । उन्होंने आकर कुमार से संस्कृत में कुछ वाद विवाद आरंभ कर दिया, आप

धारा प्रवाह संस्कृत में उच्चर देने लगे, वंदों तक शास्त्र-विचार हुआ, आसंतुक पंडित आपके समाधान से कृतार्थ हो लौट गये, तब पिताजी ने आश्चर्य-चकित हो आपसे पूछा—भैया ! लाख प्रयत्न करने पर भी तुमने पढ़ा तो एक अक्षर भी नहीं, फिर इस शास्त्रार्थ में यह सहिता उपनिषद् और शास्त्र पराणदि के प्रमाण और यह धारा प्रवाह संस्कृत भाषण तुम्हारे मुख से प्रस्फुटित हो गये, ये कहाँ से आये ? आपने उत्तर दिया—पिताजी ! आपके पुण्य मत्तप और भगवान की निहंतु की अनुकंपा से ३ वर्ष जो मेरे द्वारा मणव एवं वेदमाता का आराधन हो गया उसी का यह सब आनुमंगिक फल है। उसका मुख्य फल तो श्री भगवत्पाद की शरणागति है सो वह भी मधु कृपा करके अब अवश्य प्रदान करेंगे ऐसी आशा है।

इस उत्तर से पिताजी को ऐसा अपार हर्ष हुआ कि हर्षोद्रेक से तुरंत ही उनसे उस नश्वर शरीर का परित्याग कर आराम धाम को गमन किया। भ्राताजी ने पतिदेव का अनुगमन किया जैसे तो उनका पाण पति के प्राणों के साथ ही बँधा था। कुमार ने आन्ध्र कर्मसे निवृत्त हो गाँव वालों से विदा ली और गंगातट पर ही रहने लगे।

एकदिन आप श्रीसुरसरी तट घाटों पर विचर रहे थे कि एक सुन्दरी ने एक थाल में नानाप्रकार के पकान लाकर आपके सामने धर कर कहा इनको पा लीजिये। आपने अस्वीकार करके कहा भूख ही नहीं है। वह चली गई और कुछ काल पीछे दूसरे घाट पर दूध लेकर आई और पी लेने को कहा। आपने अबकी बार उसको गंगाजी समझकर प्रणाम किया और दूध पान कर लिया। आगे आप जब पंचगंगा घाट पहुँचे तो वही सुन्दरी गंगा में स्नान करने दिखाई दी और आपको आकर स्नान कर लेने को कहने लगी। आप ने गंगा में प्रवेश किया त्यों ही सुन्दरी ने हाथ पकड़ लिया और इच्छा भवन में ले गई। यह सुन्दरी रंभा थी, इसने अपना परिचय दिया और पूर्व

जन्ममें भी विहार के लिये प्रार्थना करने की याद दिलाई। आप बहुत खेदा गये, मनहीं मन भगवान से रक्षार्थ प्रार्थना करने लगे, तब तुरंत ही वहाँ आचार्यपाद यतिराजराज श्रीगामानन्दाचार्यजी प्रकट हो गये। रंभाने नत मस्तक हो परीक्षा में आपका उत्तीर्ण होना निवेदन किया। श्रीआचार्यपादने आपका हाथ पकड़ा, गंगा से निकालकर घाट के ऊपर ले आये और अदृश्य हो गये। आप ऊपर चढ़कर श्रीमठ पहुँच गये जहाँ पहुँचते-पहुँचते सब व्यग्रता और अशांति विलुप्त हो गई। परदा हटा, शंखध्वनि हुई, जिसमें आपके सब दुःख द्वन्द नष्ट हो गये। आपने चरण शरण में लेने की प्रार्थना की और श्री आचार्यपादने आपको पंच संस्कार पूर्वक श्रीवैष्णवी दीक्षा प्रदानकर गान्धर्वानन्दोपाध्याय नामकरण किया। गुरु दक्षिणाके लिये प्रार्थी होने पर श्रीआचार्यपादने आज्ञा दी कि काश्मीर जाकर वहाँकी धर्म भ्लानि को दूर करें, यही गुरु दक्षिणा है। तुम्हारा मार्ग प्रशस्त करने का हमने प्रवन्ध कर दिया है तुम्हें अवश्यमेव सफलता प्राप्त होगी।

श्रीमदाचार्यचरणकी आज्ञानुसार आप खाना हूष और हर्षितर पहुँचकर सन्यासीमन्त्र श्रीचिद्धनाश्रमजीके आश्रममें टिके। स्वामीजीने आपका अपूर्व स्वागत स्तुकार किया और मार्ग प्रदर्शन के लिये अपने एक पहाड़ी शिष्यको साथ दे दिया। आप कश्मीर पहुँचे। उस समय वहाँ सिकन्दर नामक यवन राज्य करता था और शिवदेव नामक उसका मन्त्रित्री था जो बड़ा ही नीच था। धर्म प्राण जनता पर नाना प्रकार के अत्याचार होते थे। तिलक कण्ठी यज्ञोपवीत आदि धारण करना अपराध घोषित कर दिये गये थे, मठ मंदिर नष्ट भ्रष्ट हो चुके थे, अतः धर्मप्राण जनता और खाम बरके ब्राह्मण तो विष खाकर मर गये थे अथवा भाग गये थे। श्रीनगर में इन सब बातों का अनुभव कर आप घबैरत नारक स्थान पर पहुँचे और वहीं रहकर श्री भदाचार्यचरण की आज्ञा पालनार्थ सोचने लगे। आप जब चित्तन

समय हुए तो श्रीमदाचार्य चरणों ने प्रकट होकर कहा आज तुमको एक इस कार्यके योग्य व्यक्ति मिलेगा उसको सिकन्दरकी वेगमके गर्भ में प्रवेश करा देना, वह जन्म लेकर जब गद्दीपर बैठेगा तो सब अन्याचार अनाचार बन्द हो जायेंगे। इस प्रकार बिना किसी हिंसा प्रतिहिंसा के कार्य हो जायगा।

समय पाकर परमहंस श्रीरागदेवजी नामक सन्ध्यामी आपसे मिले, उनसे श्री आचार्यपाद के आदेश और कर्णवीर्य कार्यका निकर करते हुए अपना परिचय दिया कि मैं महाराजा परीक्षित का पौत्र जन्मेजय के भाई हिरण्यदेवका पुत्र रामदेव हूँ, कलि संवत् १३२ से २०१ तक मैंने कश्मीर पर धर्म राज्य किया है। यह सातह मंदिर और २५० खंभों की अंगनाई मैंने ही बनवाई थी। पृथ्वीराजदेवकी राज्यदेवता मैंने सन्धास ले लिया। इच्छामरण भी सिद्ध प्राप्त होने से यहीं पर अन्तरिक्षमें रहता हुआ भगवद्भजन करता हूँ। इन अत्याचारों से प्रजाको ब्रह्मदेव मैं भी बड़ा दुखी हूँ, इसका निवारण के उपायम मुझे जो भी आज्ञा होगी उसके पालनकी माण प्रणसे चेष्टा करूँगा।

श्रीगालवानन्दाचार्यजी ने उनसे कहा कि सब प्रथम तो आप यह करें कि इन दुष्टों के अन्याचार से जो भी कुछ हमारे धार्मिक ग्रंथ रत्न बच पाये हैं उनको अन्तर्नागकी (गणिकन्दराओं) में सुरक्षित कर दें और फिर यहाँ की रानी के गर्भ में प्रवेशकर युवराजके रूपमें जन्म लेकर इन अन्धों को दूर करें। सन्धासीजी ने कहा युवराज रूपमें होने पर मेरा ज्ञान नष्ट न हो जाय, इसका भार आपके ऊपर है। आपके एवमस्तु कहने पर उनसे आज्ञा शिरोधार्य करली और राजकुमार जैतुस आवदीन नामसे जन्म ग्रहण कर लिया।

मिहिराक्षर मर गया अस्तु राजकुमार के अवयस्क (नाबालिग) होने से अलीशाह बादशाह हुआ। थोड़े दिन में यह भी मर गया और युवराज जैतुस आवदीन गद्दी नहीं हुआ। इसने अपने राज्यकाल में

सब अत्याचार दूर कर दिये, गोवध अपराध घोषित हो गया, निर्वापित ब्राह्मणों का पुनः राज्य में समाया गया एवं कलात्कार से बनाये गये मुसलमानों ने पुनः हिंदू धर्म में प्रवेश किया। हिंदू मुसलमान भाई भाई की तरह रहने लगे। इसने एक बार सारे भारत के साधुमन्त्र फकीर पत्नी सती पंडित विद्वानों को आमंत्रित करके एक महा सम्मेलन किया। आचार्य श्रीगालवानन्दाचार्यजी भी पधारें और बादशाह जैतुस आवदीन जब सब मन्त्रों विद्वानोंका अतुल धन रत्नों से सम्मान करता हुआ श्रीचरणों तक पहुँचा और नेत्र से नेत्र दिवें तो तुरंत साज्जग कर चरण पकड़ कर विहल हो गया और आपका कर ग्रहण कर जनाने की ओर पड़ानमें लेचला। उसने उसीदिन फकीरी सेली और पारंगत मन्दिर पर आगया। श्रीआचार्यपादकी कृपसे उसका पूर्व योग शरीर गुरुशिर ही था, उसने शार्ङ्ग शरीर छोड़ अपना पूर्वका योग शरीर धारण कर लिया और आचार्यपाद श्रीगालवानन्दाचार्यजी और स्वामी श्रीरागदेवजी दोनों एक साथ अन्तरिक्ष में लीन हो गये।

आचार्यपाद अनन्त श्री गालवानन्दाचार्य जी की कथा।

परम नाथ वैराग्य त्यागि निय यति तनु तान्द्रो ।
पुनि गुरु अग्रमु मानि जाय गृहधर्म सु कीन्द्रो ।
त्रय कृपा हरिभक्त मुक्ति कन्या इक जाई ।
पुनि गुरुद महँ आय योग हरि भक्ति कराई ॥
अनन्तानन्दः शिष्यकरि, कान्द तिन्हें वैष्णवाधिपति ।
गालवानन्दाचार्य पद, अत्रुगाभी भियलविपति ॥

स्वामी श्री गालवानन्दाचार्यजी विधित्ताधिपति महागान श्रीजनक जी के अवतार हैं। आरंभे पूर्वज श्रीमद्विष्णु के परम रामभक्त विद्वद्गुरु पद श्री हरिनाथजी, पद्मपुर, महाराष्ट्र प्रदेश, के आलन्दी नामक ग्राममें जाकरवस गयेथे और वहीं एक द्विज कन्या से विवाह

कर श्री रघुनाथ मिश्र नामक पुत्र प्राप्त किया था, इन्हीं श्रीरघुनाथ मिश्र जी के भगवान श्री विठ्ठलनाथ जी के मंदिर में प्रवेष्टि अनुष्ठान करने से प्राप्त पुत्र रूपमें श्री विठ्ठल एत नाम से महाराजा भी जनक जी ने वैशाख कृष्ण ६ चन्द्रवार मूलनक्षत्र पवित्र योगमें अवतार लिया था।

विठ्ठल पंतजी की धर्म पत्नी पति प्रता थी। वह पति सेवा से अधिक किसी भी जप तप को महत्व नहीं देती थी और पंतजी परम भगवान्जि महा पुरुष थे अतः गृहस्थ जीवन परम मुख्य मय था। एक दिन अंजनी भुक्ताके एक योगी मन्त्र ने आकर सती के पारिव्रतको मन्यक्षक दिया। एक ककौटक वंशीय नाग दम्पति ने आकर एकदिन इतसे बड़े पुगना घर खाली करवा लिया और जिस नये घरमें जाकर ये रहे उसको अपार धन संपत्तिमें भर दिया। पंतजी के न स्वीकार करने पर भी नागदेवताने अनुनय विनय कर भगवत् भागवत् अतिथि और दण्डिनामायण की सेवा का उपदेश करके पंतजीकी स्वीकृति प्राप्त कर ली और तब से पंतजी का घर भागवत् अतिथि और द्नीन दुस्वियों की भीड़ में भर रहने लगा। सत्ता का महानमय उनका अन्न वस्त्र दान दक्षिणादि देनेके व्यवहार में ही बीतता था।

एक दिन एक परम तेजस्वी निराहारी सन्त पधारे, उनका पादार्घ्य से पूजन सत्कार कर आपने भोजन के लिये माथनाकी तब सन्त ने कहा मैं तो पवित्र वृद्ध ही का आहार करता हूँ मैं आपने घर में विचारी पण्डित को पालन प्रण है यह सुनकर पंतजी को आश्चर्य भी हुआ और ऐसे मन्त्र के दर्शनमें परम आनन्दभी मिला। तीसरे दिन महात्माजी ने कहा मैं तीन दिन से अधिक एक स्थान पर नहीं ठहरता अतः अब काशी पुरी को जा रहा हूँ, वहाँ परब्रह्म परमात्मा श्रीरामने यतिराज के वेष में अवतार लिया है, वन्हीं के दर्शन सत्संग का आनन्द लेना है। यह सुन पंतजी भी काशी के लिये तैयार हो गये, पत्नी की अनुमति भी मिल गई, अतः पत्नी को अतिथि सेवा

के लिये छोड़ आपने सन्तजी के साथ काशी के लिये प्रस्थान किया। मार्ग में आपने एक विचित्र चरित्र देखा। सन्तजी के दाये बाये २ परम सुन्दर श्याम गौर राजकुमार साथ चलते हुए देख पड़े, कई दिन तक यह लीला देखते रहे, एकदिन आपने सन्तजी से कहा अतः महर्षि विश्वामित्रजी प्रतीत होते हैं, सन्तजी ने कहा आप भी तो महाराजा जनक हैं। इतना सुनते ही पंतजी मूर्छित हो गिर पड़े, और वे सन्तजी राजकुमारों सहित अन्तर्धान हो गये। आपको जब मूर्छा खुली तो देखा कि काशी पुरी के समीप एक बटवृक्ष के नीचे पड़े हैं। आपको विरह व्यथाने इतना सताया और मूर्छाविस्था में कई दिन निराहार व्यतीत होने में इतने कमजोर हो गये कि मुख से-हे प्यारे! हे चक्रवर्ति कुमार! हे वरम! हे लल! के उच्चारण होने के अनिर्गत बड़मे चलने की शक्ति ही नहीं रह गई। तब वहाँ उम्मी ब्रह्म के नीचे छो बालक आये जिनमें आपको उठाया; प्रसाद पढाया, काशीपुरी में पंचमंमा घाट तक पहुँचाया और वहीं विलुप्त हो गये। कुमारों के न देख पड़ने पर आप फिर विरहकातर हो गये, तभी श्रीमठ में शंख ध्वनि सुँज उठी आप दौड़कर वहाँ पहुँचे तो तुरंत ही श्रीमदाचार्यपाद यतिराजराज का दर्शन हो गया आप माण्डांग पड़ गये और ब्राह्मण ब्राह्मण प्रहने लगे। यतिराजराज की कृपा हो गई, पंच संस्कार पूर्वक वैष्णवी दीक्षा और भावानन्दाचार्य नाम प्राप्त हुआ तथा मनमें जन्म जन्मान्तर के विरक्त अब शरीर (वेष) से भी विरक्त हो आचार्य चरणकी सेवा में रहने लगे।

कुछ काल के पश्चात् गांगरीनगढ़ नरेश श्रीपीपाजी की साग्रह प्रार्थना पर श्रीमदाचार्य चरण की यात्रा हुई। आप भी उस यात्रा में श्रीचरणों के साथ थे। यात्रा में श्रीमदाचार्यपाद पंडरपुत्र भी पधारे और आलन्दी ग्राम में एक दिन विश्राम हुआ। आलन्दी में ग्राम के नर नारियों के साथ आपकी सती साध्वी धर्मपत्नी ने भी आकर

श्रीमदाचार्य चरणों में प्रणाम किया और श्रीधनिराज ने "पुत्रवतीभव" आशीर्वाद दे दिया। मर्तने विनीत भाव से सब हाल निवेदन किया तब धनिराजराजने आपको पास बुलाया और दिव्य मन्त्रान का रहस्य बनाकर घर आकर मन्त्रानेत्पनि करने की आज्ञा प्रदान की जमान अमे वह गई। आपको वहीं रह जाना पड़ा। समय पाकर तीन पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुई जिनमें श्रीज्ञानदेवजी ऐसे प्रतापी हुए कि उनके द्वारा सारा महाराष्ट्र भगवद्भक्ति मार्गाधीन अर्थात्पित हो गया।

इस प्रकारसे आपने श्रीगुरु आज्ञाका पालन किया इसके पश्चात् आपकी पत्नी श्री केंत चाप मिथार गई तब आप काशी आगये और पुनः आचार्य चरणों का सेवा प्राप्त कर परमानन्द में निपन्न रहने लगे।

एक दिन मुनिवर्य श्रीशुकदेवजी ने दर्शन दिये और परम्पर बन्दन स्तुति आदि के पश्चात् श्रीशुक मुनिने पूर्व उपदेश के लिये कृतज्ञता प्रकट करने हुए कहा—पहिने आपको जो दूत-रूप में प्राप्त हुए थे वे ही परब्रह्म अब गुरु रूप में प्राप्त हो गये हैं, आपको धन्य है। अब मैं भी कुछ ही दिन में यहाँ आकर श्रीआचार्यचरणों की शरण प्राप्त करूँगा और आप सबका सेवा का लाभ उठाऊँगा।

श्रीआचार्यपाद जब श्रीमाकेत पधारने लगे तो आपको दक्षिण देश में श्रीवैष्णवधर्म के प्रचारार्थ से। दिया, जो फिर आचार्यपादके वापिक लंडने पर काशी जाये और मध्याह्न के कुम्भ के चढ़ाव पर पधार कर वी लखन शरीर का परिस्वाग कर श्रीमाकेत पधार गये।

अन्य महाभागवतोंके चरित्र आदि अक्षमाला (छाप ५९ से ६७) में जहाँ उनका वर्णन आया है वहाँ देखें।

(आचार्य वर्य श्री अनन्तानन्दाचार्यजी के प्रधान शिष्य गण।)

मू०छ०—योगानन्द गयेश कर्मचंद अल्ह पयहारी। रामदास श्रीरंग अवधि गुण महिमा भारी। पुनि श्री नगहरि उदित मुदित मेहा मंगल तन। श्रुवर यदुवर गाय विमल कीर्ति मंच्यो धन ॥ 'हर्मि भक्ति सिन्धु वेला गचे, 'पाणिपत्र ना शिर दये। अनन्तानन्द पद परभि के लोक पाल ये ते अये ॥२७॥

श्रीरंगजी की कथा।

अ.मा एक आम तहाँ रंग लाल नाम हुता वणिक 'मरावगी की कथा लै ज्ञानिये। मन्तो गुलाम गयो यक्षराज धाम तहाँ

मयो बडो दत, आय कही सुन वानिये ॥

अये 'निजारे लेन देख तू दिशवैं तोहि बेल श्रृङ्ग मध्य बैठि पाँरे तो पिछानिये।

रिसा हरि भक्ति हेल मवही की यही गति

मुन मयो भक्त श्री अनन्त पद आनिये ॥११७॥

१ ग्रंथ का नाम है जो उपलब्ध नहीं है। २ हस्तकामल। ३ जिसके।

४ अथवा जैन। ५ वनपाँके। ७ तब पिछान लेना मन्ती बात जान

लेना। ८ श्री अनन्तानन्दाचार्यजी।

सुतको दिखाई देत भूत निन मृग्यो जात
 प्रेछे कही बात जाय बाकी ठौर सोयो है ।
 आयो निशि, मारिबे को, धायो यह रोप भयो
 देवो गति मोको प्रेत बोलिके सुनायो है ॥
 जानिको सुनार परनारि लगि प्रेत भयो
 लयो तेरो शरणो मे ठूँडि जग पायो है ।
 दियो चरणामृत लै कियो दिव्य रूप वाको
 अतिही अनूप मुनि भक्ति भाव गायो है ॥११८॥

(आचार्यपाद पयोहारी श्रीकृष्णदामजी की कथा)

मू० छ० जाके शिर कर धरयो तासु कर-
 तर नहिं 'अडुचो' । अप्यो पद 'निर्वाण'
 शोक निर्भय करि 'छडुचो' । तेज पुञ्ज बल
 भजन महासुनि 'ऊरध' रेंता । सेवत चरण
 सरोज राय राणा भुवि जेता ॥ 'दाहिमा-
 वंश' दिनकर उदित, सन्त कमल हिय
 मुख दियो । 'निर्वेद' अवधिकलि कृष्ण-
 दास, अन पागहार पय पान किया ॥११८॥

जाके शिर कर धरयो फेर तानर न 'ओडयो' हाथ
 दीनो बडो वर राजा 'कुल्लू' को जु साखिये ।

१ अहाया=छुया । २ मोक्ष । ३ छोडा । ४ बालब्रह्मचारी ।
 ५ महर्षि दधीचि के वंशज ब्राह्मण । ६ वैशाखकी सीमा । ७ फैलाया ।
 ८ काश्मीर ।

परवत कन्दरामें दर्शन दियो ताहिं
 दियो भाव साधु हरि सेवा अभिलापिये ॥
 गिरी जो जलेवी थालमेंते सो उठाई बाल
 भयो हिय 'शाल' 'विन' अरपित 'चाखिये' ।
 लेकर खडग ताहि मारन विचार कियो
 जियो सन्त ओट फेर मोल देके राखिये ॥११९॥

नृपमुत भक्त बडो अवलो विराजमान
 साधु सनमान में न दूमरो बगवानिये ।
 मन्त बधू गर्भ देखि उभै पनवारे दिये
 कह्यो 'अर्भ' इष्ट मेरो ऐसी उर आनिये ॥
 कोऊ बेपधारी मो व्याहारी 'पग' दामिन को
 कही कृपा करो कहा जानें अन्य प्राणीये ।
 ऐपे 'तजि' देवो कृपा देखि जग बुरो कहै
 'जोन' बहु दई कही राम मति मानिये ॥१२०॥

(पयोहारी श्रीकृष्णदामजी महागज के प्रधान शिष्यों का वर्णन)

मू० छ० कीलह अगर केवल चरण ब्रत
 हठी नरायण । सूरज पुरुषा पृथू त्रिपुर
 हरिभक्ति परायण ॥ पद्मनाभ गोपाल टेक
 टीला गदाधारी । देव हेम कल्याण गंग

१ दुःख । २ बिना भोगलगे । ३ खायगा । ४ गर्भगत बालक ।
 ५ जूतियोंका । ६ जूती बेचना छोड दो । ७ कृपि योग्य भूमि ।

गंगा सम नारी ॥ विष्णुदाम कान्हर रंगा
चाँदन शिवरी गोविन्द पर । पयहारी पर
सादते शिष्य सबे भये पारकर ॥३९॥

इस छापय पर भी श्री विष्णुदामजीने कुछ नहीं लिखा है । इसमेंसे अनेकानेक महानुभाव जगत प्रसिद्ध महापतापी दृष्ट हैं । इस पदपदीमें जगद्गुरु श्री टीलाचार्यजी का भी नाम स्मरण हुआ है अतः उनके विषय में जो किंवदन्तियोंमें प्रसिद्ध है एवं उनके जो लघुनिबन्ध प्राप्त होते हैं उनमें से कुछ यहाँ दिये जा रहे हैं ।

जगद्गुरु स्वामी श्रीसाकेतनिवासिचार्यजी (श्रीटीला
स्वामीजी) की कथा

कहा जाता है कि आपका नाम श्रीटीला स्वामीजी एक विशेष अलौकिक घटना के कारण पड़ गया, अन्यथा आपका वास्तव में नाम श्रीसाकेतनिवासिचार्यजी है ।

यह विशेष घटना यह घटी थी कि आप पञ्चान्दोत्तर स्नान कर, समीप के एक बालू के टीला पर विराजमान होकर भजन किया करते थे । और आपके उपदेश मन्त्रोंसे लाभ उठानेके इच्छुक भी यहाँ आसुतन थे । एकदिन एक कोई विज्ञानीय योगी महान्या अपनी सिद्धि का प्रदर्शन करनेके लिये एक वाघ पर सवार हो आपके पास आये और दो कोस पर से ही एक सर्प राजके द्वारा अपने अनेकौ मूचना भेजी । सर्पराज ने आकर जब मानव चारणों में आपसे निवेदन किया तो सन्तर्फी प्रेमी जनों का आश्चर्य आह्लाद और भय तीनों एक साथ हुए । आपने सन्देश सुन आज्ञा की — कि सन्ता के आने पर कुछ दूर साधने जाकर सत्कार करना मानव कर्तव्य है, अतः हम भी आपके साथ चल रहे हैं । ऐसा कह आपने उस टीलेको अपने कर कमलमें

थप थपाया और कहा लां वच्चा अब तुमही लो चलो, सन्त के पास । हम टीला सब समाज को लिये हुए स्विसका और चान की चानमें उनके सन्त के पास पहुँच गया । उन सन्तजीका सिद्धाईका भूत भाग गया और चरणों में पड़कर शिष्य हो गये ।

अब हम यहाँ आपकी रचना समूह में से केवल २ संस्कृत निबन्ध दे रहे हैं ।

—❀—

श्रीटीलादासपीठ संस्थापक मुद्रप्रकार आचार्यपाद जगद्गुरु
श्रीसाकेतनिवासिचार्य उपनाम श्रीटीलाचार्यजी कृत

प्रबोधकृतानिधिः

॥३३॥

जानकानायकारब्धां नत्वाऽऽचार्यपरम्पराम् ।

कुर्वे मिद्धान्तबोधाय सत्प्रबोधकृतानिधिम् ॥

रामो ब्रह्म परात्परं सकलकृद्द राखे विना नो गती

रामेणैव विनाश्यते मतिभयं रामाय नित्यं नमः ।

रामादेव च विश्वमेतदुदितं रामस्य वश्यं तथा

रामे निष्ठति लाम्यते च वदत त्वं राम संरक्ष नः ॥१॥

राम कीर्तय कीर्तनीयरसने कर्णद्वयाकर्णय

श्रीमद्रामकथां कर्गो च कुरुतं रामार्चनं मुक्तिदम् ।

रामं पश्य विलोचनद्वय चिरं चेतः स्मर त्वं सदा

जिघ्र घ्राण च रासपादतुलनीं रामं नम त्वं शिरः ॥२॥

तत्त्वं नेव परेशदिव्यगुणकाञ्चीरामचन्द्रात् परं

मुक्तये नास्ति गतिस्तथा रघुपतेर्भक्तेः प्रपत्तेः परा ।

निर्दोषञ्च मतं परं न हि विशिष्टाद्वततो वैदिकं
 श्रीगणत्रिं हि कीर्तनीयमपरं मुक्तिप्रदं प्राणिनाम् ॥३॥
 ब्रह्मेन्द्रस्त्रिपुरान्तकश्च दहनो ब्राह्मी गणेशोऽन्तकः
 सूर्यो देवचमूपतिश्च वरुणो वाय्वादिदेवास्तथा ।
 रक्षोयक्षगणोऽथ सिद्धदन्तजा नागा दिशां पन्नगा
 श्रीमद्रामपदारविन्दविमुखत्राणे समर्था न हि ॥४॥
 मद्धर्मः श्रुतिधर्मशाम्भविहितो ग्राह्य शुचिर्वेणवः
 सीतामधवविग्रहो जनयुतो पूज्यो शुभवेणवैः ।
 वेदान्तप्रतिपादितं सुखकरं मद्युक्तिभिर्भूषितं
 रामानन्दयतीश्वरस्य रुचिरं मान्यं मतं सन्मतम् ॥५॥
 इष्वासेन तथेपुणा रघुपतेर्वाह वरं चाङ्कितो
 गात्रं द्वादशमूर्ध्वपुण्ड्रलसितं धुन्दा गले शाभिना ।
 सीतामधपदाब्जदाम्यपरकं यस्याभिधेयं तथा
 श्रीमत्तारकदीक्षितः स पुरुषः पूज्यः सतां वेणवः ॥६॥
 हृद्ये यद्ब्रह्मदयाम्बुजे हि मध्ये सीतापती राजते
 भूतानां हितचिन्तको गुरुरतो माध्वर्चको धर्मवान् ।
 सन्निष्टो हरिवासरादिनिर्गतः श्रीरामसङ्कीर्तको
 रामाराधनतत्परः स पुरुषः पूज्यः सतां वेणवः ॥७॥
 मुक्तामुक्तविभेदतो द्विविधतां याता विभिन्ना मिथो
 बोद्धारः सुखबुद्धिरूपकृतमुङ् नित्या अचिन्त्याणवः ।
 दासाकांक्षितवस्तुदक्षितिसुतानाथस्य दासास्तथा
 प्रज्ञाप्राणशरीरतः करणतो भिन्नाः समे प्राणिनः ॥८॥

मत्वाद्यायतनं विकारकरणी नित्या तथाऽचेतना
 बद्धानां सुखबुद्धिहृद् रघुवराधीना जगत्सर्जने ।
 मायारूपा प्रकृतिः सती विकृतिभृद् यस्याः परेशेच्छया
 मूलाद्या निगमान्तविन्निगदिता भेदाश्चतुर्विंशतिः ॥९॥
 ध्येयो दिव्यतनुस्तथा शुभगुणाम्भोधिर्जगत्कारणं
 चिद्व्यादिविभासकः श्रुतिमतां भक्त्यैव मुक्तिप्रदः ।
 नित्या ब्रह्मशिवाचितश्च चिदचिच्छेपी परेशो विभुः
 सर्वज्ञः प्राणतार्तिहृद् रघुवरः श्रीशोऽवतारी स्वराट् ॥१०॥
 ईशित्री जगताऽस्य विश्वजननी लावण्यवारांनिधि-
 र्वात्सल्यादिगुणावधिः श्रितजनाभीप्रार्थदा सर्ववित् ।
 ध्येया मञ्जुगदीशितू रघुपतेर्विम्बी प्रिया चानकी
 यन्कारुण्यदिदृक्षुणा भगवता सर्वं जगत् सृज्यते ॥११॥
 हृत्वा ज्ञानधनं विनाश्य समयं दत्त्वा गर्ति नारकीं
 दुःस्वानाजनकास्त्यजन्ति विषयाः शब्दादयः प्राकृताः ।
 ये तांश्च स्वयमुत्सृजन्ति पुरुषास्ते प्राप्नुवन्ति ध्रुवं
 पाथेयं खलु भक्तिधामगमने सीतापतेश्चिन्तनम् ॥१२॥
 जज्ञश्चाज्ञकृतिः श्रुतिप्रवचनं कान्तारगं रोदनं
 पूर्णं कर्म न शर्मणं भवति सत्तीर्थं न तीर्थायते ।
 सायुज्यप्रमवां शराङ्गरचितां यस्य प्रपत्तिं विना
 सत्रैलोक्यनियामकः कमलदृक् सीतापतिः पातु नः ॥१३॥
 स्वाध्यायः समधीयतामुपकृतिः कार्याऽनुतं नोच्यतां
 हिंसा नैव विधीयतामसुमतां शीतादिकं सद्यताम् ।

सत्सङ्गः क्रियतां तथा सुकृतिभिः काम्या कृतिस्त्यज्यतां
 पापेभ्यश्च विरम्यताममुग्वहद् रामः समाश्रीयताम् ॥१४॥
 आनन्दो विधितो जनैरधिगतः स्वानन्दवन्मन्यतां
 दुःखानाञ्जनकं निजेन विहितं पापं समाबुध्यताम् ।
 सम्पत्तौ तु कृपाम्बुधे रघुपतेर्हेतुः कृपाऽहेतुकी
 सीतारामसमर्पितञ्च सकलं लोके सदा भुज्यताम् ॥१५॥
 मुक्तिर्यद्भजनादृते भवति नो यागादिना कर्मणा
 यं ज्ञातुञ्च समाश्रयन्ति विबुधा आचार्यपादाम्बुजम् ।
 विश्वम्याश्रयभूरचिन्त्यमहिमा स्वीये महिम्न स्थितः
 पुणं ब्रह्म स पानु भक्तसुखदः सर्वेश्वरो राघवः ॥१६॥
 टीलाचार्यकृतश्रायं मत्प्रबोधकलानिधिः ।
 संमरतापहा भूयात् सीतारामप्रमादतः ॥

अथ प्रपत्तिकुसुमाञ्जलिः

रघुपतेऽहमकिञ्चनतां गतस्तव सुरक्षकतामतिविश्वसन् ।
 निजभरं निदधाम्यखिलात्मनि त्वयि परेश विभो गुणसागरे
 ॥१॥
 अननुकूलकुभावविवर्जितस्त्वदनुकूलसुभावगतस्तथा ।
 अहमनन्यतया क्षितिजापते ! सुशरणं चरणञ्च गतोऽस्मिते
 ॥२॥
 मम सुरक्षणकर्मणि यो भरः फलमहञ्च न मे भुवनम्भर !
 अपि तु भक्तसमर्पितहृत् प्रभो ! तव ततश्च निजं हि समर्पये
 ॥३॥

नहि मिलेद् दयनीयजनश्च ते रघुपते मयि चेन्न दया तव ।
 सुदयनीयजनेकनिधे ततः कुरु दयां मयि नाथ दयाम्बुधे
 ॥४॥

त्वमसि नो महते दयनीयवानहमपि त्वदृतेऽस्मि न नाथवान्
 विधिविनिर्मितमेदवेक्ष्य तत् करुणया करुणाकर पाहि माम्
 ॥५॥

सुशरणं चरणं त्वपहाय ते कथमियामहमन्यमकिञ्चनः ।
 रघुपते ! दृढमायतपोतकं त्यजति किं जलधौ लघुवायसः ?
 ॥६॥

इह तिरस्कृततां गमितोऽप्यहं रघुपते ! न जहामि पदञ्च ते
 निजजनन्यवधूतशिशुर्यथा स्वजननीचरणं विजहाति नो
 ॥७॥

वरद दाशरथे वरदापते कुरु कृपामिदमेव च देहि मे ।
 त्वदरविन्दविलज्जकपादयोर्भवतु जन्मनि जन्मनि मे स्मृतिः
 ॥८॥

वसुधया वसुधात्मजया तथा रुचिरया रुचिरं परिसेवित ।
 रघुपते ! सुलभो जगतीपते ! भव भवाम्बुनिधौ पतितस्य मे
 ॥९॥

समवभाति न ते समतां गतस्त्वदधिकोऽपि हि नाथ न कश्चन
 प्रपदनं विदधे पदयोश्च ते निखिलपालक ! पालय मामपि
 ॥१०॥

कृतमवाभव कारणकारण प्रकृतिरक्षक रक्ष्यविलक्षण ! ।
 रघुपते पदयोः पतिते च ते कुरु कृपां कृपणे मयि पामरे
 ॥११॥

तव विभाश्चरणं शरणं गतो जन इह त्रिगुणः परिभूयते ।
अभिहिता रघुनायक भारते प्रकृतितारक तारकता क्व ते
॥१२॥

अधमताव्यथिता पृथिवी पुरा रघुपते त्वयका परिमण्डिता
पुनरिदं हि तथा क्षितिमण्डलं भुवनमण्डलमण्डन मण्डय
॥१३॥

रघुपते त्वयैव युगे युगे समवतीर्य हि दक्षकुरक्षसाम् ।
बलमखण्डयमखण्डय ! सुखसिद्धनं विजहि मत्प्रतिष्ठादिक-
राक्षसान् ॥१४॥

अदयताञ्च गतेऽभयता कुतो न च भयं मदये त्वयि राघव !
अभयतार्थमतः शरणं विभो त्वदपरं पुरुषं न विभावये
॥१५॥

कृतमतिर्जगतः परिपालनं मुकुपणस्य तदा मम रक्षणे ।
कृतमतिप्रभूतेः सहकारिणश्च विफलं जगदीश गवपणम्
॥१६॥

इति श्रीमत्साकेलनिवासाचार्य (श्रीदीलाचार्य) कृत
प्रपत्तिकुसुमाञ्जलिः समाप्ता ।

(आचार्यपाद स्वामी श्रीकीलहदेवाचार्यजीकी कथा)

मू० छ० रामचरण चिंतवन रहत निशि-
दिन लो लगी । 'सर्वभूत शिर नमित शूर
भजनानंद भागी । सख्य योगमत सुदृढ

१ माथी मात्र से बन्दनीय ।

किये अनुभव 'हस्तामल । ब्रह्म रंध करि
गमन गये हरिपद करणी बल ॥ सुमेरदेव
सुत जगविदित, भू विस्तारयो विमल
यश । 'गांगेय मृत्यु गंज्यो नहीं, त्यों
कीलह करण नहिं काल वश ॥४०॥

श्रीसुमेर देव पिता मूत्रे गुजरात हुने
भयो तनुपात मो विमान चटि चले हैं ।
बैठे 'मधुवनो कीलह मानसिंह राजा ढिंग
दंखे नमजात उठि कहीं भले भले हैं ॥
पृथ्वी नृप कामों ? कैसेकै प्रकाशों ? राजा
हठ पग्यो, कही, सुनि अचरज रले हे ।
मानम पठायो सुधि लायो सोची 'आँच लागी
करी माष्टांग बात मानी भाग फले हैं ॥१२१॥

ऐसे प्रभुलीन नहिं कालके अधीन बात
सुनिये नवीन चाहें राम सेवा कीजिये ।
धरीही पिठारी फूल माला हाथ डारया तहाँ
व्याल कर काट्यो कट्यो फेर काटि लीजिये ॥
ऐसे कटवायो बार तीन हुलमायो दियो
कियो न प्रभाव नेक सदा रम पीजिये ॥

१ हथेली में धरे आमले के समान । २ श्रीधामपितामह ।
३ मथुराजी । ४ अविश्वासाग्नि की तपत ।

करके समाज माधु मध्य में विराजि प्राण
तजे दर्शें द्वार योगी थके सुनि जोजिये ॥१२२॥

(रसिकाधिगज आचार्यपाद स्वामी श्रीअग्रदेवाचार्यजी की कथा)

म० छ० सदाचार सो, सन्त पूर्व जैसे
करि आये । सेवा सुमिरण सावधान
राघव चितलाये । प्रसिध बागसों प्रीति
स्वकर 'कृत करत निरन्तर । रसना निर्मल
नाम मनहुँ वर्षत धारा धर ॥ कृष्णदास
करि कृपा भक्तिरस, मनवच क्रम करि
अटल दियो । अग्रदास हरिभजन विन,
काल वृथा नहि बीतियो ॥४१॥

दर्शन काज महागज मानमिह आयो
आयो बाग माँझ बैठे द्वारे द्वारपाल हैं ।

भारके पनोवा गये बाहर लै डारनेको
देखि भीरभार रहे बैठि ये रसाल हैं ॥

आय देखि नाभाजून करी साष्टांग नति

भरी जल आँखें, चले अश्रुवन जाल हैं ।

राजा मग जोहि हारयो आयके निहारि नैन

जानी स्वयं स्वामी भये दासनि दयाल हैं ॥१२३॥

१ बागका कार्य । २ बादल । ३ दंडवत प्रणाम ।

इस श्रीप्रियादासजी के वर्णनके अतिरिक्त रसिकाचार्यपवर
श्रीअग्रदेवाचार्यजीके चरित्र विवरणक एक ग्रंथ श्रीअयोध्या जानकी वाट
निवासी श्री माकेतवासी जयपुरीय महात्मा श्रीलाडिलीलाल शरणजी
(श्रीरूपकलाजी) कृत 'श्रीअग्रस्वामीचरित', प्राप्त होता है उसको यहाँ
अविकल उद्धृत किया जा रहा है संस्कृत और हिन्दी पद्यमें आपके
द्वारा अनेकानेक ग्रंथ रत्नोंकी रचना हुई है जिनमेंसे व्यास पंजरी,
अष्टयाम, कुण्डलिया आदि हिन्दीके और रहस्यत्रय तन्वत्रय अर्थ
पंचक श्रीगुरुपरांपरा अष्टयाम एवं कुछ स्तोत्र संस्कृतके प्रकाशित हुए हैं
इनके अतिरिक्त आपका अपार साहित्य विलुप्त है । सुना जाता है कि
अग्रमाधर नामक एक लक्षवर्दीका ग्रंथ था जिसमें से एक सौ पचीस हैं ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयतेतराम् ।

श्रीमते शायानन्दाचार्यो नमः । श्रीमदसद्गुरुचरणकलेभ्यो नमः ॥

श्री अग्रस्वामी चरित

दो०—श्रीमदगुरु पदरज कृपा जगमगल आधार ।

उर धरि वरणों विशदयश, पावन अग्र विहार ॥ १ ॥

चारुशील पद-रज-कृपा, अगम सुगम हो जाय ।

विमल प्रेम मति गति रमै, समावेशतन पाय ॥ २ ॥

श्रीगुप्त शीला स्वामिनी, पद पंकज शुचि धूर ।

परसत विनमन अघ अमित, उर वस युग अविपूर ॥ ३ ॥

मो०—रूपमरम धरि देह, करुणा गुण ललि लाल को ।

भरनिधि कठिन अवेह, रची तराणि रसचन्द्रिका ॥ ४ ॥

रूपलता सीया मखी, चन्द्र अली रसखान ।

निजचेरी गति करु कृपा, उरवस जानकि जान ॥ ५ ॥

श्री अमरस्य मुनि परम विचक्षण । कछो ललित यश मुन्यो सुतीक्ष्ण ॥
 रामभक्त द्वादश भटधारी । तिनयुत प्रकट भये अमुगारी ॥
 भूतल प्रकटि भक्ति भलि छाई । तदपि मार रसरूप छिपाई ॥
 सुगम सेतु बाँध्यो रामानंद । गे परशाम मोदभरि सानंद ॥
 दो०—तिहि विलोकि श्रीजनकजा, मन्द मन्द मुमकाय ।

पिय मन बोली नेहयुत, महल टहल नहि पाय ॥६॥

सरस भिग मुनि पिय रसलीना । महल टहल कहि तब अधीना ॥
 तुम्हरी कृपाकोर विन सीता । कम पावै रस रहस्य पुनीता ॥
 साते येग द्रवहु अब प्यारी । हैंसि बोली तब जनकदुलारी ।
 चारुशील वर रचो उपाई । जाते सुगम महल सिवकाई ॥
 चार्नशिला कह पिय काँच जानी । चन्द्रकला सब रस गुण खानी ॥
 मीति रीति रसखान सुआली । परम चतुर अरु गुण गण शाली ।
 धरै भूमि आचारज रूपा । जगत प्रचारै रहस्य स्वरूपा ।

दो०—भली कही सर्वेश्वरी, हैंस बोले श्रीगाम ।

चन्द्रकला तुम जाय जग, प्रगटो रहस्य ललामा ॥७॥

चन्द्रकला आयसु शिर लीन्हा । श्रव्य मन्त तन अनुपम कीन्हा ॥
 वचन किशोर मोर तन लीको । दण भुज भाल विशाल सुटीको ॥
 विम रूप बहु अतिहि विचित्रा । रूप शील गुण परम पवित्रा ॥
 युगल चरण पंकज भरि शीशा । विनय वर्ग मुनु पिय अवधीशा ॥
 जो प्रसन्न होइ आयस दीन्हा । सो सब भाँति दामि शिर लीन्हा ॥
 तब पद कृपा सुगम सब मोरे । तदपि नथ कछु चाहौँ औरे ॥
 कलिमल असित जीव अतिपापी । अतिवृद्धन विषयी भदिगपी ॥
 दुष्टाचार कुटिल व्यभिचारी । ते कस नथ महल अधिकारी ॥

दो०—सजल नयन करुणाभरे, कही युगल सरकार ।

तब पदति आश्रित रहै, लखै नतिन अपचार ॥८॥

शत्रुनिकन्दन जग प्रकट, पयहारी अवतार ।
 तिनेते तुम संबन्ध लै, देय करहु विस्तार ॥९॥
 उरधरि पद शुचि नायशिर, मुख प्रसन्न मन मोद ।
 गालव मुनि आश्रम विमल, आये करत विनोद ॥१०॥

फालगुन शुक्ला दोज सुहाई । तब मुनि बाण चन्द्र ममआई ॥
 श्री गुरु पद पंकज घरि शीशा । दीन होय कहे वचन अर्पाशा ॥
 त्राहि त्राहि आरत जन हेतु । विन कारण दयाल भन सेतु ॥
 जय निवेद ज्ञान गुण खानी । सीताराम रहस्य मति सानी ॥
 दीनबन्धु प्रभु जन प्रतिपालक । कलिमल कठिन दोष के घालक ॥
 काम क्रोध सन्ताप नमावन । भक्ति ज्ञान बैराज वदावन ॥
 शरण शरण प्रभु शरण तिहारी । कृपाकन्द अब आगुण हारी ॥

दो०—दीन वचन सुनि मुदित हो, बोले दीन दयाल ।

सर मज्जन करि आवहु, पावहु भक्ति रसाल ॥११॥

करि मज्जन आये तत्काला । गहि पद उर भरि आनंद माला ॥
 पाची दिशि मुख आसन दीन्हा । उत्तर मुख गुरु कियउ प्रवीणा ॥
 मंत्रित जलहि मार्जन कीन्हा । द्वादश तिलक कटियुग दीन्हा ॥
 गमायुध भुज अंकित कियउ । युगलमंत्र सेवा युग दियउ ॥
 अग्रदाम वर नाम धरउ । सगस भाव शुचि नात भरेउ ॥
 पुनि बोले गुरु दीन दयाला । है शरणागत बहू विधि हाला ॥
 प्रभु अनुकूल कर्म कहेँ करहे । पुनि प्रतिकूल कर्म परिहरै ॥
 सियपिय है समर्थ मम रक्षक । प्रभु गुण गण मन मनन सुगन्धक ॥
 आत्मसमर्पण करै दीनता । हरि गुरु सन्तन में न भिन्नता ॥

दो०—लेसम्बन्ध अनन्द उर, करि साष्टांग प्रणाम ।

सब सन्नन शिरनाय पुनि, भे परिपूरण काम ॥१२॥

पृथ्वीराज समय तिहि आये । समाचार सुनि अति सुख पाये ॥
 आज्ञा दीन्ही तब मन्त्री कहैं । होय महोत्सव इहि अवसर मैह ॥
 सुनि नृप आयमु मंत्री धाये । बाजा अमित निशान बजाये ॥
 सिय पिय सनमुख भयो समाजा । अति आनन्द मगन सुनि राजा ॥
 लिये सकल मंगल के सामा । आई दर्शनहित पुर वामा ॥
 भयउ कुलाहल चहुँदिशिमाहीं । पंच शब्द सुनि अति सुख पाही ॥

दो०—नृप रानी वाला लसै, सुनि शुभ भरि आनन्द ।

मुक्ता चौक पुराइ चलि, दर्शन हित गति मन्द ॥१३॥

किये अयाची याचकन, गुरु नृप हिय हुलसाय ।

अभिलाषा पूरी मवन, दी अशीस सुख पाय ॥१४॥

कृपदास उर भइ अभिलाषा । लगे भोग पावै हरिदासा ॥

किये निमंत्रण दशदिशिमाहीं । आये मन्त अमित तिहि ठाहीं ॥

जहैं तहैं सीताराम विराजै । होय नामध्वनि जनु घन गाजै ॥

करहि वेदध्वनि पंडित ज्ञानी । कोउ निरुपहि तत्त्व बजानी ॥

कोई निज पर ज्ञान सुमंडित । कोई करै अद्वैत विखंडित ॥

कोऊ करहि विराग निरुपण । कोउ वर्णहि प्रपत्ति निर्दुषण ॥

कोई भक्ति कहै मति खानी । रस रूपा के भदे बजानी ॥

नवधा दशधा कह तहैं कोई । परामध्य कोउकी मति भाई ॥

कोउ कर कथा कीर्तन कोऊ । कोउ अर्चा पद वन्दन कोऊ ॥

कोउ जप तप व्रत संयम मेसा । कोऊ परे मस्तहीइ मेसा ॥

कोउ मानम रति करत इकन्ता । इहि विधिजुरे अमित वर मन्ता ॥

दो०—श्रीपयहारी दैन्य धुत, करि प्रणाम रस खान ।

यथा योग्य आसन दिये, सवकर करि मम्मान ॥१५॥

भयो परम आनन्द वर, लखि सुर सुनि मिथ नाग ।

सन्त वेष धर सकल तहैं, आये भरि अनुराग ॥१६॥

भयो अनूपम अस आनन्दा । शारद सुद भरि भइ मति मन्दा ॥
 मनु उमगी सत्संगति सखिता । राम भक्ति पय निर्मल भरिता ॥
 तेहि सब जग कहैं पावन कीन्हा । भक्त मारसन अति सुख दीन्हा ॥
 मास दिवस तहैं हरिजन छाये । पुनि निज निज आमनन सिधाये ॥
 सन्तन दीन्हे आशीर्वादा । अग्र हृदय हो भक्ति दराजा ॥
 अग्रदास वर अनुपम पायो । मनक्रम वच गुरु पद रति लायो ॥
 जेष्ठ आत श्री कील्ह देवजू । प्रीति परस्पर शुचि अमेव जू ॥
 प्रीति प्रतीति देख भाइन में । सहज मसख भये गुरु मनमें ॥
 हेमानन्द रहे लघु आना । निन पर प्रीति अधिक सुखदाता ॥
 हेमानन्द नेह मति मागर । भगन सनेह देह धरे नागर ॥
 तिनको सुपश विमल अवहारी । गाय गाय तरिहैं नर नारी ॥

दो०—श्रीगुरु आयसु पाय पुनि, कील्ह महन्ती कौन ।

अग्रदास निज अनुजसह, अमल भक्ति रसलीन ॥१७॥

श्रीरघुनन्दनलपणजिमि, एक रूप जग जान ।

अग्रहेम दोउआततिमि, रीति रहनि रसखान ॥१८॥

अग्रदेव रसना रस नामा । ध्यान धरहि अन्तर मियरामा ॥

बन प्रमोद रसखानि भाव भर । कनक मवन सेवा मुललित कर ॥

भावभरे रस मधुर सुछन्दा । गुप्त केलिवर सिन्धु मबन्धा ॥

देवगिरा अरु भाषा माहीं । स्वे अनेजन अन्य मुहाहीं ॥

ध्यानमंजरी अरु पद मागर । परम प्रसिद्ध ग्रथ भाषाकर ॥

पुनि खल जीव अमित जगनारन । कियो विचार यात्रा चारन ॥

कुटिल कुचाली अति अवगामी । अस जवन हू बान्त प्रकाशी ॥

बणिक एक मग सेवा कीन्हा । तामु सुवन अहि डसि दुख दीन्हा ॥

चरणामृत श्री सन्तन केरो । दे जिवाय हरि भक्तिहि मेरो ॥

कगहु मन्त सेवा मन लाई । यदि सम अपर धर्म नहि भाई ॥

दो०—मग आवत नाभा मिले, लोचन दियउ प्रवीण ।
 निज आश्रम ला मंत्र दे, कियउ भक्तिरम पीन ॥१६॥
 भक्तमाल अद्भुत रची, अति विचित्र रस रूप ।
 तासु तनक अनुमोदने, मिले श्री रघुकुल भूप ॥२०॥
 अकय अनृपम नहनिधि, अमित अखंड भवंड ।
 विधि रिहर मकुचत कहत, तासु प्रभाव उदंड ॥२१॥
 रामिक भक्त सिय पिय मनभाये । सो स्वरूप नाभा दर्शाये ।
 अग्रदाम यश विशद विशाला । पावन करन हरन कलि काला ॥
 ज्ञान विराग भक्ति विस्तारक । पहत मुनस समभक्त निस्तारक ॥
 करत सन्त सेवा रसदाई । अमित सन्त नित रह सुखपाई ॥
 जिहि विधि सन्त परम सुख मानै । निहि प्रकार सेवा विधि ठानै ।
 परिचर्या निजकर प्रभु करई । गत अभिमान रुची अनुसरई ॥
 अर्चा अरु मानस वसु काला । करहि लहावाई श्री ललि लाला ॥
 निजकर वाग अनूप लगायो । सियमनरंजन नाम धरायो ॥
 ता सुवाग मधि विटप रसाला । ता तरु तर मानसि सब काला ।
 मान नृपति दर्शन हित आये । वाग द्वार चर चार विटपाये ॥
 निहि क्षण निजकर बागहि भारा । पत्र बटोर दूर जा दारा ॥
 देखी द्वार भीर नृप जनकी । बैठि विटप तर मानसि मनकी ॥
 बैठ नृपति जोहत प्रभु वाटा । लगे वहां कछु औरहि ठाठा ॥
 भयो विलम्ब स्वामि नहि आये । श्री नाभा देखन हित आये ॥
 प्रभु लखि परि महि दंड समाना । सुमिरि सुगुणगण दगभरि आना ॥
 पुलकित तन मन भरे अनन्दा । जय जय श्रीगुरु करुणा कन्दा ।
 नृपति विचार कीन मन पाई । का अभाम्य दर्शन मे नाहीं ॥
 बाहर आ लखि अद्भुत रचना । महि परि कहि भृदु दोन सुवचना ॥
 हे करुणा निधि परम वदारा । समहित राम कृपा तन धारा ॥
 तब पद पंकज निरखि कृपाला । मोह मान मद मे तत्काला ॥

दो०—करि विनती सानन्द नृप, पाय भक्ति वरदान ।
 श्री स्वामी सियपिय चरण, करत निरन्तर ध्यान ॥२२॥
 एक दिवस सत्संगति माहीं । कीन्ह अग्र हेमानन्द पाहीं ॥
 जेते अनुज श्री स्वामी केरे । अपर सन्त सहै जुटे घनेरे ॥
 तह विश पोगी वैरागी । आये विमल राम अनुरागी ॥
 तबनिहपै ते तत वेंता । माया जीव छल है नेता ॥
 पांच स्वरूप जीव निर्धारा । पांच उपायह पांच विकारा ॥
 पांच महायक ब्रह्म विचार । श्रुति सिद्धान्त अमम निश्वारा ॥
 बोले कीन्ह मृदुल भर प्रेमा । करै भजन निज बल दहनेमा ॥
 बोले वचन अग्र रसदाई । हरि बल सकल कर्म बन आई ॥
 दो०—भये तत्व सिद्धान्त में, भेद अष्ट दश भिन्न ।
 रूपराशि श्रीजनकजा, प्रकरी ताही द्वित्र ॥२३॥
 कीन्ह अग्र पदगहि श्रुति कीन्ही । कृपा दृष्टि किय सिय रसभीनी ॥
 मृदु वच अग्रहि आयसु दीन्हा । रंवासे रचो कुञ्ज रचीना ॥
 अन्तर्धान भई सब सीता । रंवासे मे धर नव सीता ॥
 हेमानंद शिष्यन युत जाई । जानकी बल्लभ रीति चलाई ॥
 लली लाल सेवा पधगई । अष्टकाल पदलि मिखलाई ॥
 राम भोग सेवा विधि नाना । रसिकन सदाचार परमाना ॥
 श्रीविनोद शुचि शिष्य प्रवीणा । यल एकान्त भजन वित दीना ॥
 ताहि समय दिक्ली पति आयो । मुनि प्रभाव दर्शन हित धायो ॥
 दत्तवन करत रसिकवर रूपा । पूछत भयउ यवन वर भूषा ॥
 सुने यहां मे सिद्ध फकीरा । देखु बताय अहो गति धीरा ॥
 कदा काम तुमरो उन पाहीं । बढो मिलै यही शुचि ठाहीं ॥
 दो०—पूंगी फलते दावि पट, कूप अछादित कीन ।
 तापर चढि नृप मोदभरि, तहँ नमाज पढिलीन ॥२४॥

कही अग्रदर सुनहु नृपतिवर । रखो आधार नहीं अद्वैत तर ॥
 निराधार बैठे श्रीस्वामी । देख प्रभाव भयो अनुगामी ॥
 शीश नाथ तब विनती कीनी । कछु सेवा लीजे मति मीनी ॥
 है अनन्द रघुवर की दाया । नहीं कछु चाहिय यह जगमाया ॥
 धेनु चरनहित पड़ो दिन्हो । सो अहीर पशु पालन लीन्हो ॥
 भजन सिद्ध कर आय विनोदी । गढ़े चरण स्वामी अति मोदी ॥
 हरि हरिजन सेवाविधि मारी । सो श्री नाभा कियउ पैमारी ॥
 श्री विनोदि कहैं गादी दीन्हो । आप भजन एकान्त प्रवीनी ॥
 दो०—निज मन्दिर सेवा करी, मे प्रभु अन्तर्धान ।

मर्म न कोऊ जान यह, नाभा मन अनुमान ॥२५॥

अग्रदास शुचि चरित यह, प्रभु प्रेरित कियोगान ।
 रूप कला मति लन्द लगि, क्षमिये कृपानिधान ॥२६॥
 बार बार याचत यही, रूपकला अति दीन ।
 कामक्रोध मत्सर रहित, रह मति पद रति लीन ॥२७॥
 नहीं विद्या नहीं चातुरी, सब विधि परम गैवार ।
 श्रीसुशील श्रीअग्रप्रभु, लीजे मोहि उबार ॥२८॥
 काम क्रोध रति कुटिल लखि, अब न विसारो नाथ ।
 शरण सुखद व्रत निरखि प्रभु, गहि राखो मम हाथ ॥२९॥
 इति श्रीलाटिली लाल शरण (रूपकला) जी कृत श्रीमद्भाग्यार्थ चरितम् ।

आचार्य पाद अनन्त श्रीअग्रचार्यके संस्कृत एवं भाषा के निबंध समूहों से पाठकोंकी जिज्ञासाके सवा यानार्थ "श्रीरामप्रपत्ति" "श्रीराम-ष्टक" "श्रीराममंत्रराज परम्परा" यह तीन निबंध यहाँ दिये जा रहे हैं ।

अथ श्रीरामप्रपत्तिः ॥

स्वामिन् ते शेषभूतोऽहं भोग्यस्ते रक्ष्य एव च ।
 अकिञ्चनोऽनन्योपायस्त्वत्केक्यैकभोग्यकः ॥ १ ॥
 अगतिश्चानुकूल्योऽहं प्रातिकूल्येन रजितः ।
 रक्षिष्यतीति विश्वामी स्वरक्षाप्रार्थनायुतः ॥ २ ॥
 कृपणोऽहं दयामिन्धो सर्व पाप करस्तथा ।
 स्वञ्च स्वीयञ्च यत्किञ्चित्त्वयिन्यस्यामि स्वीकुरु ॥ ३ ॥
 न्यस्यामि किञ्चनः श्रीमन्नात्प्रक्षाभरं त्वयि ।
 त्वत्प्राप्तौ मे उपायस्त्वं कृपया भवराघव ॥ ४ ॥
 एतन्मराचरं सर्वं यच्च यावच्च श्रूयते ।
 सर्वमस्ति त्वदीयं हि श्रुतिमिश्रावगम्यते ॥ ५ ॥
 ननादृशं दृढं ज्ञानं मयि स्वामिन् प्रतिष्ठितम् ।
 त्वन्तु सर्वं विजानासि सर्वं वस्तु ममेति च ॥ ६ ॥
 ममार सागरे भूमन् तत्त्वद्वस्तुनिमज्जितम् ।
 पश्यसि त्वं समर्थः सन्कारणं किं वद प्रभो ॥ ७ ॥
 चेतनाचेतनं सर्वं मदीयं सत्यमस्ति वै ।
 जीवोऽप्यसौ मदीयश्चेत्यभिमानान्निमज्जते ॥ ८ ॥
 यावत्स्वत्वाभिमानोऽस्य तावत्संसार सागरे ।
 निमज्जितोऽभिमानान्ते ह्युद्धरिष्यामि चेद्वद ॥ ९ ॥
 सत्यमहं मदीयञ्च सर्वमन्यत्तवास्तिवै ।
 तथाप्येषोऽभिमानो मे हेतुस्तवनियोजनम् ॥ १० ॥

अहं मदीयञ्चेत्येषो योऽभिमानोदुरत्ययः ।
 त्वयि न्यम्यामि तं स्वामिन्त्वदीयं तंहि स्वीकुरु ॥११॥
 निर्हेतु कृपया सर्वं स्वीकृत्य करुणानिधे ।
 अहं ममाभिमानं मे निखिलं छिन्धिमूलतः ॥१२॥
 यदि नास्त्यानुकुल्यादिर्मयि स्वामिन्यथार्थतः ।
 बद्धाञ्जलिपुटं दीनं रक्ष मां शरणागतम् ॥१३॥
 यथाहं च मदीयञ्च न मे रायस्य तत्त्वतः ।
 भातिमे हृदये सम्यक् तथा कुरु दयानिधे ॥१४॥
 त्वन्मायया मलीममं हृदयं निर्मलं कुरु ।
 येनाहं मंविजानामि त्वां त्वदीयञ्च तत्त्वतः ॥१५॥
 त्वत्कृपादृष्टिमात्रेण तद्धि सर्वं भविष्यति ।
 न वै परिश्रमः कश्चित्तव तत्र दयानिधे ॥१६॥
 प्रार्थयामि महादीनो दीनोद्धार कृपानिधे ।
 एतद्देहावसानेमां स्वं प्रापय दयाकर ॥१७॥
 स्वदत्तज्ञानदीपेन नाशयाज्ञानजं तमः ।
 स्व तत्त्वज्ञानं पूर्वं मां स्वार्थं स्वपपय स्वयम् ॥१८॥
 यानि मंचित पापानि तानि नाशय मे प्रभो ।
 अकृत्येषु प्रवृत्तिं मे वारय बुद्धि प्रेरक ॥१९॥
 यथा निर्मुच्य पापेभ्यस्त्वत्प्राप्तेर्योग्यता भवेत् ।
 मयि स्वामिन् हरे राम तथा त्वं मां स्वयं कुरु ॥२०॥
 न मे पापविनिर्माणे नापि त्वत्प्राप्तिसाधने ।
 शक्तिस्तत्र समर्थस्त्वं स्वप्राप्तेः साधनं भव ॥२१॥

स्वाग्रे मां पतितं दृष्ट्वा श्रुत्वा च प्रार्थनाभिमाम् ।
 अङ्गीचकार श्रीरामस्तदप्यस्मीह निर्भरः ॥२२॥
 इति श्रीमद्भगवात्पाद स्वामी श्रीरामप्रपत्ति समाप्तम् ।

अथ श्रीरामाष्टकः

ममर मागराभाथौ पुत्रमित्र ब्रह्माकुलात् ।
 गोतारौ मे दयामिन्धू प्रपन्नभयभङ्गनौ ॥ १ ॥
 योऽहं ममास्ति यत्किञ्चिद्विद्वल्लोकं परत्र च ।
 तत्सर्वं भवतोरेव चरणेषु समर्पितम् ॥ २ ॥
 अहमस्यपराधानामालयस्त्यक्तसाधनः ।
 अगतिश्च ततोनाथो भवन्तावेव मे गतिः ॥ ३ ॥
 तवाम्मि जानकीकान्त कर्मणा मनसा गिरा ।
 रामकान्ते तवैवाम्मि युवामेव गती मम ॥ ४ ॥
 शरणं वां प्रपन्नोऽपि करुणानिकराकरो ।
 प्रसादं कुरुतां दामे मयि दुष्टेऽपराधिनि ॥ ५ ॥
 मत्समो नास्तिपापात्मा त्वत्समो नास्तिपापहा ।
 इति मंचित्य देवेश यथेच्छमि तथा कुरु ॥ ६ ॥
 अन्यथा हि गतिर्नास्ति भवन्तौ हि गतिर्मम ।
 तस्मात्कारुण्य भावेन कृपां कुरु कृपानिधे ॥ ७ ॥
 दामोहं शेषमतोऽहं तवैव शरणं गतः ।
 पराधितोऽहं दीनोहं पाहिमां करुणाकर ॥ ८ ॥

इति श्रीमद्भगवात्पाद स्वामी श्रीरामाष्टकम् ॥

श्री राममन्त्रराज परम्परा

श्रीकृष्णदास उवाच ।

शुभामने समासीनमनन्तानन्दमच्युतम् ।
कृष्णदासो नमस्कृत्य पप्रच्छ गुरुमन्ततिम् ॥१॥

श्रीकृष्णदास उवाच ।

भगवन्ममिनां श्रेष्ठ प्रपन्नोऽस्मि दयां कुरु ।
ज्ञातुमिच्छाम्यहं सर्वां पूर्वेषां सत्परम्पराम् ॥२॥
मन्त्रराजश्च केनादौ प्रोक्तः कस्मै पुरा विभो ।
कथञ्च भुवि विख्यातो मन्त्रोऽयं मोक्षदायकः ॥३॥

श्रीकृष्णदास उवाच ।

कृष्णदाम वचः श्रुत्वाऽनन्तानन्दो दयानिधिः ।
उवाच श्रूयतां सौम्य वक्ष्यामि तद् यथाक्रमम् ॥४॥

श्रीकृष्णदास उवाच ।

परधाम्निस्थितो रामः पुण्डरीकायतेक्षणः ।
सेवया परया जुष्टो जानक्यै तारकं ददौ ॥५॥
श्रियः श्रीरपिलोकानां दुखोद्धरणहेतवे ।
हनूमते ददौ मन्त्रं सदा रामाङ्घ्रि सेविने ॥६॥
ततस्तु ब्रह्मणा प्राप्तो मुह्यमानेन मयया ।
कल्भान्तरे तु रामो वै ब्रह्मणे दत्तवानिमम् ॥७॥
मन्त्रराजजपं कृत्वा धाता निर्मातृतां गतः ।
त्रयीगारमिमं धातुर्वशिष्ठो लब्धवान्परम् ॥८॥
पराशरो वशिष्ठाच्च सर्वसंस्कार संयुतम् ।
मन्त्रराजं परं लब्ध्वा कृतकृत्यो बभूवह ॥९॥

पराशरस्य सत्युत्रो व्यासः सत्यवतीसुतः ।
पितुः षडक्षरं लब्ध्वा चक्रे वेदोपबृंहणम् ॥१०॥
व्यासोपि बहुशिष्येषु मन्वानः शुभयोग्यताम् ।
परमहंसचर्याय शुकदेवाय दत्तवान् ॥११॥
शुकदेवकृपापात्रो ब्रह्मचर्यव्रते स्थितः ।
नरोत्तमस्तु तच्छिष्यो निर्वाणपदवीं गतः ॥१२॥
सचापि परमाचार्यो गङ्गाधराय सूरये ।
मन्त्राणां परमं तत्त्वं राममन्त्रं प्रदत्तवान् ॥१३॥
गङ्गाधरात्सदाचार्यस्ततो रामेश्वरो यतिः ।
द्वारानन्दस्ततो लब्ध्वा परब्रह्मरतोऽभवत् ॥१४॥
देवानन्दस्तु तच्छिष्यः श्यामानन्दस्ततोऽग्रहीत् ।
तत्सेवया श्रुतानन्दश्चिदानन्दस्ततोऽभवत् ॥१५॥
पूर्णानन्दस्ततो लब्ध्वा श्रियानन्दाय दत्तवान् ।
हर्यानन्दो महायोगी श्रियानन्दाङ्घ्रि सेवकः ॥१६॥
हर्यानन्दस्य शिष्यो हि राधवानन्द इत्यसौ ।
यस्य वै शिष्यतां प्राप्तो रामानन्दः स्वयं हरिः ॥१७॥
तस्माद् गुरुवरात्लब्ध्वा देवानामपि दुर्लभम् ।
प्रादात्तुभ्यमहं तात गुह्यं तारकमङ्गकम् ॥१८॥
एवं परम्परा सौम्य प्रोक्ता ते सम्प्रदायिनाम् ।
मन्त्रराजस्य चाख्यातिर्भूम्यामेवमवातरत् ॥१९॥

श्रीअग्रदास उवाच ।

कृष्णदामस्तु तच्छ्रुत्वा लेभे परमहर्षताम् ।
साष्टाङ्गं प्रणतिं कृत्वा वचनं वेदमब्रवीत् ॥२०॥

श्रीकृष्णदास उवाच ।

पीत्वा श्रीमुखवाक्यजन्यममृतं तापत्रयोद्धारकम् ।
श्रुत्वा वेद निगूढतत्त्वजनिकां वाणीं समुल्लासिनीम् ॥
हित्वा मोक्षद रामतारकमिमं जाने न सारं परम् ।
नीत्वाकालमहं मुमाधकधिया वक्तुं न शक्नोम्यलम् ॥२१॥

श्रीअग्रदास उवाच ।

यः पठेच्छ्रद्धया नित्यं पूर्वाचार्यपरम्पराम् ।
मन्त्रराजर्तिं प्राप्य सद्यो रामपदं व्रजेत् ॥२२॥
इति श्रीमदग्रस्वामि विरचिता श्रीराममन्त्रराजपरम्परा सप्ताष्टा ।

(स्वामी श्रीशंकराचार्यजी की कथा)

मू० छ०—उच्छिखल अज्ञान जिते अन
ईश्वरवादी । बौद्ध जैन चार्वाक आदि
पाखंड विवादी । विमुखन को दे दण्ड
ऐंचि सन्मारग आने । सदाचारकी सीव
विश्व कीरती बखानै ॥ ईश्वरांश अवतार
महि, मर्यादामांडी अघट । कलियुग धर्म
पालक प्रगट, आचारज शंकर सुभट ॥

विमुख समूह लंके किये सनमुख राम
अति अभिराम लीला जग विमतारी है ।
'सेवरा प्रबल वास केवराज्यों फैल रहे
गहे नहिं जाहिं वादी शुचि बात धारी है ॥
तजि के शरीर काहू नृप में प्रवेश कियो
दियो करि अन्य माहमुदगर भारी है ।
शिष्यन सों कह्यो कभूँ देह में आवेश जाता
तब ही बखानो आय सुनि करूँ न्यारी है ॥१२४॥
जानि के आवेश तन शिष्य ने प्रवेश कियो
'रावले में देखि मो सुश्लोक ल उचार्यो है ।
सुनतहि तज्यो तन निजतन आय लियो
कियो सो प्रमाण दाम प्रण पुरो पारयो है ॥
सेवरा हराये वादी आय नृप पाम उच
छतपर बैठे एक माया फन्द डारयो है ।
जल चढ़ि आयो 'नाव भावले दिखाया कहें
चढो नहिं बूडो आप कौतुक सो 'धारयो है ॥१२५॥
आचारज कहीं यों चढावो इन सेवरान
राजाने चढाये गिरि दूक उडि गये हैं ।
तबतो प्रबल नृप पाँव परयो भरयो हियो
कह्यो सोही करयो धर्म भागवत लये हैं ॥

१. सेवरा जैन । २. अन्तःपुर । ३. नवका का दृश्य ।

४. जानलिया ।

भक्ति ही प्रचारी, पाछे माया बाद डारि दीन्हो
कीन्हो प्रभु कह्यो केते विमुख हू भये हैं ।
ऐसे वे गम्भीर सन्त धरी वह रीति जामें
प्रीतिही में साने हरि रूप गुण मये हैं ॥१२६॥

(श्री नाम देवजी की कथा)

मू० छ०—बाल पने 'विह्वल जाके करते
पय पीयो । मृतक गऊ दइ ज्याय
खलन कहँ परिचय दीयो । सेज सलिल
ते कढी प्रथम जैसी ही होती । 'देवल
उलटयो देखि सकुचि रहे सब ही 'सोती ॥
'पांहुँ नाथ किये 'अनुग ज्यो, 'छान
छवाई घासकी । नामदेव पत निर्वही ज्यों
ब्रेता 'नरहरिदास की ॥४३॥

श्रीपा नामदेव हरि देवजी को भक्त बडो
रही एक बेटी पतिहीन भई जानिये ।
द्वादश वरशकीसो भई तब कही पिता
सेवा सावधान मन नीके करि आनिये ॥
तेरे जे मनोर्थ ह्वे हैं पूरण करेंगे येहीं

१. भगवान विह्वल नाथ जी । २. मन्दिर । ३. श्रोत्रीय
(द्विज श्रेष्ठ) । ४. भगवान पाहुँ नाथजी । ५. सेवक । ६. चप्पर ।
७. महाद जी ।

जो पै दत्त चित्त होके मेरी बात कानिये ।
करत रहल प्रभु वेगही प्रमत्त भये
कीन्ही काम वामना सो 'पोखी प्रभु मानिये ॥१२७॥
विधवा के गर्भ रह्यो बात चली ठौर ठौर
दुष्ट शिरमोरनकी भई मनभाई है ।
चलत चलत वामदेवजू के कान पडी
कियो निरधार प्रभु आप अपनाई है ॥
भयो जो प्रकट वाल नाम नामदेव धरयो
कियो मनभायो सब सम्पति लुटाई है ।
जस जस बढ्यो कछु औरैरंग चढ्यो भक्ति
भाव अंग मढ्यो कढ्यो रूप सुखदाई है ॥१२८॥
खेलत खिलौना प्रीति रीति सब सेवाही की
पट पहिरावै पुनि भोग सो लगावहीं ।
घटा ले बजावै नीके ध्यान मन ल्यावै अति
सुख पावै नैनन में नीर भरि आवहीं ॥
वार वार कहै नाम देव वाम देवजूसों
देवो मांढि सेवा करूँ अनिहि सुहावहीं ।
जाऊँ एक गाँव फिरि आऊँ दिन तीन माहीं
दूध लै पिवावो मत भूलो प्रभु भावहीं ॥१२९॥
कौन वह बेर जेहि बेर दिन फेर होय
बेर बेर कहै वहै बेर नहीं आई ये ?

१ मूर्ख की । २ भाष की ।

आई वह वेर ले कराही माँक 'हेरि दूध
 डारयो दोयसेर मन नाँक दे बनाई ये ॥
 चापनके ढेर लागे निपट 'ओमेर दग
 आये नीर घेर जनि गिरि घूँट जाइये ।
 माता कहै टेरि करी बडी तें अँवर अब
 करो मत देर अजु चित्त दे ओटाइये ॥१३०॥
 चल्या प्रभु पाम ले कटारा बविराम तामें
 दूध सो सुवाम मध्य मिसरी मिलायके ।
 हिये में हुलाम निज 'अजुताकी त्राम ऐपे
 करै जौपे दास मोहि महा सुख दायके ॥
 देख्यो मृदु हास्य कंठि चाँदन को भाम कियो
 भावको प्रकाश मति अति सरसायके ।
 प्यायवे की आस करि ओट कछु भरे श्वास
 देख के निराश कही पीवो जु अघाय के ॥१३१॥
 ऐसे दिन बीते दाँय राखी बात हिये गोय
 रहै निशि सोय ऐपे नींद नहि आवहीं ।
 होत ही मँवार फिरि वैसेही सुधारि दूध
 हियो करि गाढो जाय कह्यो पीवो भावहीं ॥
 बार बार कँहु पीवो आप दूध पीवो नाहि
 आवै भोर नाना गरे छुरी दे दिखावहीं ।
 १. देखकर । २. मतीक्षा । ३. अनजान पन । ४. हर ।

महिलायो कर जनि कर ऐमी कही प्रभु
 पीवे लगे कही नेक राखो सदा पावहीं ॥१३२॥
 आये वाम देव तब पूछे नामदेवजी सों
 दूधको प्रमंग अति रंग भरि माप्यो है ।
 मोसों न पिछान दिन दय हानि भई याने
 प्राण देन लाग्यो डर मानि तब चाख्यो है ॥
 पीयो सुखदीयो तब नेक राखनियों में तो
 जीयो सुनि बात 'नाना कह्यो कौऊ 'माख्यो है ।
 धर्यो पै न पीयो अरयो प्यायो सुग्न पायो नाना
 यामें ले दिखायो 'भक्त वश रम राख्यो है ॥१३३॥
 नृप सो मलेच्छ बोलि कही मिले माहिव सों
 दीजिये मिलाय करामात दिखलाइये ।
 होय करामात तो ये काहे को 'कमव करै
 'भरें दिन ऐप बोटि सन्तन सों खाइये ॥
 ताही के प्रताप आप यहाँ लो बुलाये हमे
 दीजिये जिवाय गाय घर चले जाइये ।
 दयी लौ जिवाय गाय सहज सुभायदी में
 अति सुख पाय पाँय परयो मन भाइये ॥१३४॥
 लेओ देश गाँव जाते मेरो कछु नाँव होय
 चाहिये न कछु दर्द संज मणिमई है ।

१. वामदेवजी । २. साखी भी । ३. भक्त के वशीभूत रहने का
 माय रखा है । ४. रोजगार धंधा । ५. परिश्रम करै ।

धरिलई शीश संग दये दश बीस नर
 नाहीं करि आये जलमाहिं डारि दर्ह है ॥
 भूप सुनि चौक परचों, लाओ कही, आये, कहो,
 कही नेक आनिके दिखाओ कीजे नई है ।
 जलतै निकासि बहु भाँति गहि डारी तट
 लीजिये पिछान देखि सुधि वृधि गई है ॥१३५॥
 आय परचो पाँव प्रभु पामते बचाय लीजे
 कीजे एक बात कभूँ साधु ना दुखाइये ।
 लई यह मानि फेर लीजिये न सुधि मेरी
 कहि चले गुण गात मन्दिर लौ जाइये ॥
 देखी द्वार भीर 'पग दासिन को 'कटिबांधि
 करसों 'उछीर करि चाहें पद गाइये ।
 देख लोन्हे जिन काहु दीन्ही पांच सात चोट
 कीन्ही धका धकी 'रिस मनमें न आइये ॥१३६॥
 बैठे पिछवारे जाय किन्ही जू उचित यहै
 दीन्ही जो लगाय चोट मेरे मन भाइये ।
 कान देके सुनो अब चाहत न और कछु
 टेव मोको यही नित्यनेम पद गाइये ॥
 सुनतही आप अति करुणा विकल भये
 कह्यो फेरों द्वार, गहि मन्दिर फिराइये ।

१. जूतियाँ । २. कमर में । ३. भीड़ को हटाकर । ४. क्रोध ।
 ५. आदत ।

जेते रहे 'सोती मोती आवसी उतर गई
 भई हिये प्रीति गहे पाँव सुखदाइये ॥१३७॥
 ओचकही घर माँझ साँझ ही अगिनि लागी
 बडो अनुरागी रहगई सोऊ डारिये ।
 कहै अहो नाथ सब कीजिये जू अङ्गीकार
 हँसे सुकुमार हरि, मोतीको निहारिये ॥
 तुमरो भवन सकै कौन और आय यहाँ
 भये यों प्रसन्न आन छाई आय सारिये ।
 पूछै आय लोग कौनै छाई ओ छवायलीजे
 दीजे जोई भावै, तन मन प्राण वारिये ॥१३८॥
 सुनो और परचे जो आये न कवित्त माँझ
 बाँझ भई माता क्यों न जो न मति पागी है ।
 हुते एक साहु तुला दानको उखाह कियो
 दयो पुर सबै रह्यो नामदेव 'रागी है ॥
 लाओ जू बुलाय एक दोय तो फिराय दीन्हे
 तीसरे सो आयो, कही कहो बडभागी है ।
 कीजिये जू कछु अङ्गीकार मेरो भलो होय
 भयो भलो तेरो 'दीनो देन आसा लागी है ॥१३९॥
 'जाके तुलसी है कहि तुलसी के पत्र माँझ
 लिख्यो आधो राम नाम यामों तोल दीजिये ।

१. श्रोत्रीय आश्रय अथवा सवति पुत्र (विरोधी) । २. प्रेमी ।
 ३. दिया भी और देने की आशा भी लगी है । ४. जिसके यह तुलसी है
 उसके क्या कमी है ।

कहा परिहास करो दरो हूँ दयाल देखि
होत कोऊ ख्याल याको पूरो करो रोमिये ॥
लायो एक कांरो लै चढायो पात सोना संग
भयो भडो रंग सम होत नार्ही छीजिये ।
लई सो तराजू जासों जुने नण पाँच मात
जाति पातिहु को धन धरयो पेन धीजिये ॥१४०॥

परयो शोच भारी दुख पावे नर नारी
नामदेवजू विचारि कद्यो और काम कीजिये ।
जिते व्रत दान और स्नान किये तीरथ में
करि सो संकल्प यापै जल छारि दीजिये ॥

किये सो उपाय पात पल्ला भूमि चिपिरह्यो
रहे वे खिजाय कद्यो इतनोई लीजिये ।
लके कहा करें पात सरवर हुन करें
भक्ति भाव सो लै भैं मति अति भीजिये ॥१४१॥

कियो रूप ब्राह्मणको दूवरो निपट अङ्ग
भयो हिये रंग व्रत परिचै को लीजिए ।
आय एकादशी अन्न मांगत बहुत भुखो
आज तो न दैहो भोर चाहे जितो लीजिए ॥

कियो हठ भारी मिलि दोऊ ताको शोर भयो
समभावै नामदेव याको कहा लीजिए ।

१ भगवानने । २ मातःकाल-कलह । ३ इसमें नाराज क्यों होते हैं ।

बीली 'याम चार मरि रक्षा यों पमार पाव
'भाय को न जाने दई हत्या नहीं लीजिए ॥१४२॥

रचिके चिता सो विप्र गोदलेके बैठे जाय
दिये मुमकाय में पगेछा लीन्ही तेरी है ।
देखि सो सचाई सुखदाई मनभाई मेरे
भये अन्तर्धान परि पाँव प्रीति हेरी है ॥

जागरण माँझ हरि भक्तन को प्याम लागी
गये जल लेन प्रेत आयो कीन्ही फेरी है ।

फेरतैं निकामि ताल गाथो पद ततकाल
बड़े ही कुपाल रूप धरयो छवि देरी है ॥१४३॥

(कवि चक्रवर्ति श्रीजयदेवजी की कथा)

प्रचुर भयो तिहुँलोक गीत गोविन्द
उजागर । कोक काव्य नव रसनि सरस
सिंगार को सागर । अष्टपदी अभ्यास करै
तिहि बुद्धि बढ़ावे । राधारमण प्रसन्न
सुनन निश्चय तहँ आवै ॥ सन्त सरो-
रुह खंडको, 'पद्मावति सुखजनक रवि ।
जयदेव कवो 'नृपचक्रवै', 'खंड मंडलेश्वर
आनकवि ॥ ४४ ॥

१ प्रहर । २ नामदेवजीने सोचा यह ब्राह्मण एकादशीके भावको नहीं जानना इसने हत्या दे दी, इसका दुःख नहीं मानना चाहिये । ३ उनकी पत्नी का नाम है । ४ चक्रवर्ति । ५ छोटे राजा ।

किन्दुविल्व ग्रामतामें भये कविराज राज
 भयो रमराज हियो तन मन चाखिये ।
 दिन-दिन प्रति रुख-रुख तर जाय रहैं
 गहैं एक गूदरी औ कमंडलु राखिये ॥
 कही देन विप्र सुता जगन्नाथ देवजी को
 भयो जब समै चलो देन प्रभु भापिये ।
 द्विज जयदेव नाम मेरोही स्वरूप ताहि
 देवो ततकाल मानि मेरी कही 'साखिये ॥१४४॥
 चलो द्विज तहाँ जहाँ बैठे कविराज राज
 बाल्यो महाराज यह मेरी सुता लीजिये ।
 कहैं कविराज कछु कीजिये विचार आप !
 योग्य वर देखि सुकुमारी यह दीजिये ॥
 द्विज कही जगन्नाथ देवजूकी आज्ञा भई
 पालोयाहि ठरो मोपै ना तो दोष भीजिये ।
 उनको हजार सौहैं हमको पहार एक
 ताते तुम फिरि जावो कहा कहि 'स्वीजिये ॥१४५॥
 सुनासों कही सो तुम बैठी रहो याही ठौर
 आज्ञा 'शिरमौर मोसों जात नहीं टारी है ।
 चलो अनखाय समझाय हारे वातन सों
 मन सों 'कहत कहा कोजे शोच भारी है ॥

१ प्रमाण है । २ रिमावैं । ३ श्रीजगन्नाथ देवजी की । ४ श्री जयदेवजी ।

बोले द्विज बालकी सों, अपनो विचार करो
 धरो हिय ज्ञान मोपै जाय क्यों सँभारी है ।
 बोली कर जोरि मेरो जोर ना चलत कछु
 चाहो सोहो करो 'देही वारि फेरि डारी है ॥१४६॥
 जानी जब भई तिया, कियो प्रभु जोर मोपै
 अब एक भौंपरी की आया करि लीजिये ।
 भई जब छाया श्याम सेवा पधरायलई
 नई एक पोथी में बनाऊ मन कीजिये ॥
 भयो जो प्रकट गीत सरस गोविन्दजू को
 मानके 'प्रसंग "शीश मंडन मो" दीजिये ।
 यह एक पदमुख निकसत शोच परचो
 धरयो कैसे जात लाल लिख्यो मति रीझिये ॥१४७॥
 नीलाचल धाम तामें पंडित नृपति एक
 रची 'यही नामधरि पोथी सुखदाइये ।
 द्विजन बुलाय कही याहि लै प्रसिद्ध करो
 लिखि लिखि पढि देश देशनि चलाइये ॥
 बोले मुसकाय विप्र लाइये, दिखाई लाय
 नई यह कोऊ मति अति भरमाइये ।
 धरी दोऊ मंदिर में जगन्नाथ देवजू पै
 दीन्ही 'बह डारि 'याहि हार ज्यों लगाइये ॥१४८॥

१ शरीर । २ स्मरगरल खंडनं मयशिरसिपंडनं देहिपद पल्लवमुदारम् ।
 ३ यही (गीतगोविन्द) । ४ राजाकी बनाई । ५ श्रीजयदेवजीकी ।

परयो शोच भारी नृप निपट खिसानो तब
 गयो उठि सागरमें वृद्धों यही बात है ।
 अति अपमान कियो जगन्नाथ देवज ने
 सह्यो नहिं जात आँच लागी गात गात है ॥
 आज्ञा प्रभुदई मत वृद्धे तू समुद्र माँझ
 दूसरो न ग्रंथ ऐसो वृथा तन पात है !
 द्वादश सुरलोक लिखिदीजे सर्ग द्वादशमें
 तारी माथ चालै जाकी ख्याति पात पात है ॥१४६॥
 सुता एक मालीकी सो वेगन की बाडी फल
 तोरे गावै "वनमाली" कथा सर्ग पांच की ।
 डोलै जगन्नाथ पाछे काछे अंगमाहीं भँगा
 आछे कहि भूमै सुधि करै विरहाँ चकी ॥
 फाटयो भँगा देखि नृप पूछी अहो भयो कहा
 जानत न हम अब कहो बात सांचकी ।
 प्रभुही जनाई मन भाई मोरे यही गाथा
 लाये बालकीको पालाकीमें कीन्ही नाचकी ॥१४७॥
 फेरी नृप डोंडो यह आँडी बात जानी महा
 कही राजा रंक पढ़े नौकी ठौर जानिके ।
 अक्षर मधुर और मधुर स्वरन ही सों
 गावै तब लाल प्यारी ढिंग हीलै मानिके ॥

१ न कुह नितम्बिनि गमनविलम्बनमनुसरतं हृदयेनाम् । धीरे समीरे
 यमुनातीरे वसतिवने वनमाली । २ विगहानल । ३ नृत्यगान करनेवाली
 बनादी । ४ गुड । ५ प्रियाप्रीतमको । ६ पास ही समझ लें ।

मुनि यह रीति एक मुगलने धारी, पढ़े
 घांटे चढ़ि चले आगे श्याम रूप ठानिके ।
 पोथीको प्रताप स्वर्ग गावत है देव बधू
 आपही जो रीति लिख्यो निजकर आनिके ॥१४८॥
 पाथी की तो बात सब कही में सुहात हिये
 सुनो और बात जामें अति अधिकाइये ।
 गाँठमें मुहर मग चलतमें ठग मिले
 कहाँ कहाँ जात ? जहाँ आप चलि जाइये ॥
 जानलई बात खोलि द्रव्य पकराय दियो
 लियो चादो मोई मोई लेवा मोका भाइये ।
 दुष्टन यमभि कही नौकी इनकर विद्या
 आवै जो नगर देवें बेगि पकराइये ॥१४९॥
 एक कहें डारो मारि भला है विचार यही
 एक कहें मारो मत धन हाथ आयो है ।
 जो पै ल पिछान कहो कीजिये निदान कहा
 हाथ बाँव काटि बड़े घटा पधरायो है ॥
 आयो तहाँ राजा एक देखिके विवेक भयो
 लियो उजियारो सो प्रमन्न दरमायो है ।
 बाहिर निकासे मानो चन्द्रमा प्रकाश राशि
 पूछ्यो इतिहास कह्यो ऐसो तन पायो है ॥१५०॥

१ धारण करके २ जान । ३ देखपड़े ।

बड़े ही प्रभाववान सके को बखान अहो
 अहो कोऊ भूरि भाग्य दरशन कीजिये ।
 पालकी बैठाव लाये किये ठूँठ घाव नीके
 जीके भाये भये कही आज्ञा मोहि दीजिये ॥
 वगैरे हरि साधु सेवा नाना पकवान सेवा
 आवै जोई मन्त तिन्हें देखि रस भीजिये ।
 आये वेही ठग माला तिलक चिलक किये
 किलकि के कही बड़े बन्धु लेके धीजिये ॥१५४॥
 राजाको बुलाय कही हिये हरि भाव भरे
 जागे तेरे भाग्य अब मेवा फल लीजिये ।
 माया लै महल मौक्त टहल लगाये लोंग
 लागे हान भोग जिय शंका तन लीजिये ॥
 मांगे बार बार विदा राजा नहि जानदेत
 अति अकुलाये स्वामी कही धन दीजिये ।
 दैके बहु धन सो पठाये संग मानुषहु
 आवो पहुँचाय तब तुम पर रीक्षिये ॥१५५॥
 पूछी नृपनर कोऊ तुमरी न सरवर
 जिते आये साधु ऐसी सेवा नहि भई है ।
 स्वामीजी सों नातो कहा कहो हम खावैं अहा
 राखियो दुराय यह बात अति नई है ॥

१ चमकते हुए । २ प्रसन्न होकर । ३ मनमें । ४ दुबले होते
 थे । ५ श्री जयदेवजी ६ प्रसन्न होंगे । ७ सपान । ८ सम्बन्ध ।

हुते एक ठौर नृप चाकरीमें तहाँ इन
 कियो अपराध साहिबरो आज्ञा दर्द है ।
 राखे हम हितू जानि नै निदान हाथ पाँव
 ताहि अहमान अब मेवा यह भई है ॥१५६॥
 कहत ही फाटी भूनि ठग सो समाये तामें
 भये जन चकित सो ग्दामी जी पै आये हैं ।
 कही जिती बात भई गार गार कपि सुनि
 हाथ पाँव मीडे भये उगों के त्यों सुहाये है ॥
 अचरज दोऊ नृप पाव जा प्रकाशे जन
 जिये नृप सुनि आगे बाही ठौर धाये हैं ।
 पूछे नृप बात शीश पाँपन पे राखि तिन्हें
 कहिये उधारि भये मेरे मन भाये हैं ॥१५७॥
 राजा अति अड गही कही सब बात खोलि
 निपट अभोल यह सन्तन को वेष है ।
 कैसौ अपकार करै तऊ उपकार कर
 ठरै रीति अपनीही सरस सुदेश हैं ॥
 साधुता न तजै कभूँ जैसे दुष्ट दुष्टता न
 यही जान लीजिए सो रसिक नरेश हैं ।
 जानि नाम ठाम कहाँ रह्यो यहाँ बलि जाऊँ
 भयो मैं सनाथ प्रेम भक्ति भई देश है ॥१५८॥

१ प्रकट किये । २ प्रसन्न हुए । ३ खोल कर ।

लाए जा लियाय लोग कविराज राज लिया
कियो लै मिलाप आप रानो ढिंग आई हैं ।
मरयो रानी भाई एक भई यों भोजाई सती
कोऊ अंगकाटि कोऊ कूदि परी धाई है ॥

सुनत सो रानी हिय बडोही अचम्भो भयो
इनके न भयो फिर कहि समझाई है ।
प्रीतिकी न रीति यह, येता विपरीत ही है
छूटे तन जब पिय प्राण छुटी जाई है ॥१५६॥

ऐसो एक आप कहि, राजामों यों बात कही
स्वामी लेके जायो बाग देखूँ नक प्रीति को ।
नृप कहे बुरी मोची देत मेरे गरे छुरी
निया हट मानि करी वैसे ही प्रतीति को ॥

दामी कही आय स्वामी पाये बाग माहि गति
मुनि सा विकल होय लोटी भूमि रीति को ।
बोली भक्त वधू अजी वे तां हैं निपेट नीके
तुम काहे औचक ही पावत हो भीति को ॥१६०॥

भई लाज भारी पुनि फेरिके मँवारी बात
केऊ दिन बीते पुनि फेर बही कीन्ही है ।
जानी भक्तवधू यह चाहत परीक्षा लेन
कही अजु पाये मुनि देह तजि दीन्ही हैं ॥

भयो मुख श्वेत रानी राजा आयो जानि यह
रचि चिता जरी मेरी भई मति हीनी है ।
भई सुधि आपको सो आये बेगि दौरि नृप
देख्यो मृत प्राय कह्यो मोत मेरी दीन्ही है ॥१६१॥

बोल्हो नृप अजु मोको जरे ही बनैगी अव
सब उपदेश मेने धूरि में मिलायो है ।
कह्यो बहु भाँति तोप आवत न शान्ति नेक
गाई अष्टपदी स्वर लियो तन ज्यायो है ॥

लाजन को मारयो राजा चाहै अपघात कियो
जीयो नहिं जात भक्ति लेशहू न आयो है ।

करि समाधान निजग्राम आयो किन्दुविल्व
जैसो कछु सुन्यो यह परचो लै गायो है ॥१६२॥

देवधुनी सोत हो अठारह कोस आश्रम ते
मदा अमनान करें धरें योग्य ताईको ।

भयो तन वृद्ध तऊ छाड़ें नही नित्य नेम
प्रेम देखि भारी कही गंगा सुखदाईको ॥

आओ मनि ध्यान करो, करो जनि हट ऐसो
मानीनहीं आऊँ मैं ही जानों कैसे आई को ।

फूले देखो कंज तब कीजिये प्रतीत मेरी
भई बाही भाँति सेवें अबलो सुहाई को ॥१६३॥

(श्रीभगवान् के टीकाकार श्री श्रीधर स्वामी की कथा)

मू० छ०—तीन कांड एकत्व सानि कोउ
अज्ञ बखानत । कर्मठ ज्ञानी ऐंचि अर्थ
को अनर्थ बानत । परमहंस संहिता
विदित टीका विस्तारचो । पट् शास्त्रन
अविरुद्ध वेद सम्मत छु विचारचो ॥
परमानन्द प्रसादते, माधव स्वकर मुधार
दियो । श्रीधर श्रीभागोतमें परम धर्म
निर्णय कियो ॥४५॥

पंडित समाज बडे बडे भक्तराज जेते
भागवत टीका करि आपस में स्थाभियो ।
भयो सो विचार काशीपुरी अविनाशी मौक्त
सभा अनुमार जोई सोई लिखि दीजिये ॥
याके तो प्रमाण भगवान् विन्दुमाधव हैं
लाय सब पोथी धरि मन्दिर में लीजिये ।
धरो सब लाय प्रभु स्वकर बनायदई
कीन्हो सर्व ऊपर ले चले मति भोजिये ॥४६॥

(श्री विल्वमंगल सुरदासजी की कथा)

मू० छ०—करुणामृत सुखवित्त युक्ति
अनुच्छिष्ट उचारी । रसिक जनन जीवन

१. भगवन् लगे । २. जिसको पहिले किसीने नहीं कहा ।

सो हृदय हारावलि धारी । हरि पकरायो
हाथ बहुरि तब लियो छुडाई । कहा
भयो कर छुटे 'बदों जब हियतें जाई ॥
चिन्तामणि संग पायके, 'ब्रजगधू' केलि
वरणी अनूप । कृष्ण कृपाको 'पर प्रकट
विल मंगल मंगल स्वरूप ॥४६॥

कृष्णवेणा तीर एक द्विज मतिधीर रहै
हूँ गयो 'अधीर संग चिन्तामणि पायके ।
तजी लोक लाज हिये वाही केरो राज भयो
निशिदिन काज वहे रहै घर जाय के ॥
पिता के सराध नेक रह्यो मन साधि दिन-
शेष में 'आवेश चलों अति अकुलाय के ।
नदी चढ़ि रही भारी तो पै न 'अंगोरी नाव
भाव भरयो हियो 'जियौजात नाँधी जायके ॥४७॥
करत विचार वारिधारमें न रहै प्राण
यहाँ हूँ तो जात 'धारी मित्र मुख जाइये ।
परयो कूदि नीर कछु सुधि न शरीर की है
यही एक पीर कब 'रशन पाइये ॥

१. जानूँ । २. मोपिकाओंके साथ की कृष्ण लीला । ३. सीमा ।
४. व्याकुल । ५. जोशमें । ६. प्रतीक्षा । ७. जानका खनरा ।
८. निश्चय किया ।

पावत न पार तन द्वारि भयो वृडवका
मृतक निहारयो मान्यो नाव मन भाइये ॥
लाग्यो वा किनारे जाय चल्थो पगधाय चाय
आये पट लागे निशि आधी सो बिहाइये ॥१६६॥

अजगर एक दैदयोगतैं लटक रह्यो
मिल्यो सो सहारो चढ्यो छातपर जायके ।
ऊपरों किवार लागे परयो कदि आँगनमें
चौक जागी शोर कियो माने चोर भायक ॥

दीपक जराय जब देख्यो विन्दमंगलको
बोली तू अमंगल है कियो कहा आयक ।

जल अन्हवाय सूखे पट पहिराये बोली
कैसे कियो जल पार और द्वार धायके ॥१६७॥

नवका पठाई द्वार लाव लटकाई देखि
मेरे मनभाई मैं तो तवैं लई जानिकै ।

चलो देखैं अहो यह कहाँलो प्रलाप करै
देख्यो विपधर महा स्त्रीभी अपमान कै ॥

जैसो मन मेरे हाड चाम सों लगायो तैसो
रयामसों लगावै जग जानै तो सयानकै ।
मैं तो भये भोर भजों युगल किशोर जानै
तेरी तूही चाहे सोही करौ मन मानकै ॥१६८॥

१ शव-धुरदा । २ किवाड । ३ चतुर करके । ४ मातः ।

गुल गई आँखें अभिलाषैं रूपमाधुरीको
चाखें रमरंग ओ उमंग रंग न्यारिये ।
बीण लै बजाय गावै विपिन निकंज क्रीडा
भयो मुखपुंज जापै कोटि विषै वारिये ॥
बीत गई रात प्रात चले आप धायके जू
हिये वही ध्यान दृग नीर भरि ढारिये ।
सोमगिरि नाम अभिराम गुरु कियो आय
सकै को बखान लाल भुवन निहारिये ॥१६९॥
रहे एक वर्ष रस सागर मगन भये
नये नये चोजके मुश्लोक पटि लीजिये ।

चले वृन्दावन मन कहै कव देखों जाय
आये मग माँझ एक ठौर मति भीजिये ॥
परयो बडो शोर दृग कोर के न चाहै काहु
तहाँ मर न्हाति तिया देखि आखें रीभिये ।
लगे वाके पाछे पाछे काछेकी न सुधि कछु
गई घर आछे द्वार रहे तन छोजिये ॥१७०॥

आयो वाको पति द्वार देखे भागवत ठाढ़े
बडो भागवत पूछी वासो सों जनाई है ।
कही जू पधारो पाँव धारो गृह पावन को
पाँवन पखारि शीश द्वारों मनभाई है ॥

१ श्रीकृष्ण मय । २ संसार । ३ करके । ४ देखते । ५ वेष । ६ प्राये
चढाऊँ ।

चले भौन माँझ मन 'आरति मिठाववे को
गायवेको जोई रीति सोई के बताई है ।
नारीमों कहां सिंगार करि सेवा कीजे लांजे
परम सुहाग यामें बेग प्रभु पाई है ॥१७१॥

चनीमो सिंगार करि थारमें प्रसाद लेके
ऊँची मो आदारी जहाँ बैठे 'अनुरागी है ।

भनक एनक जाय जोरि कर ठाढी रही
गही मति देखि ताहि 'न्यून वृत्ति भागी है ॥

कही 'युग सुई लावो लाय दई गही हाथ
फोरि डारी आँखें अहो बडी वे अभागी है ।
गई पति पास स्वास भरत न बोली आवै
कही दुःख पाय आय पाँव परयो 'रागी है ॥१७२॥

कियो अपराध हम साधु को दुखायो अहो,
साधु तुम बडे हम नाम साधु धरयो है ।

रहो अजू सेवा करों, करी तुम सेवा ऐसी
जैसी नहीं कोऊ करे मेरो मन हरयो है ॥

चले मुख पाय दृग भूतमे छुडाय पैंडो
निगे ही की आँखन मों अबै काम परयो है ।

बैठे वर मध्य जाय नये जानि आप आय
भोजन कमाय कहै चलो दिन ढरयो है ॥१७३॥

१ दुःख । २ प्रेमी । ३ ओछी । ४ दो । ५ बड़ प्रेमी मुहस्य ।

चले ले गहाय कर छाया घन तरु तर
चाहत छुडायो हाथ छोड़ें कैसे नीको है ।
ज्यों ज्यों बल करें त्यों त्यों तजत न येऊ अरै
लियो है छुडाय गह्यो गाढो रूप ही को है ॥

ऐसेई करत वृन्दावन वन आय लियो
पीयो चाहै रस सब जग लागै फाँका है ।

भई उत्कंठा भारी आये श्रीविहारीलाल
मुरली बजायकर कियो भायो जीको है ॥१७४॥

खुल गये नैन ज्यों कमल रवि उदै मये
देखि रूपराशि बाढी कांठि गुणी प्यास है ।

मुरली मधुर स्वर राख्यो मद भरि मानों
हरि आयो काननमें, आननमें आस है ॥

मानके प्रताप चिन्तामणि मनमाँझ आई
चिन्तामणि जैति आदि बोले रसरास है ।

ग्रंथ करुणामृत विदारण हृदय ग्रन्थि
बाँधे रस ग्रन्थि यश सुगल प्रकाश है ॥१७५॥

चिन्तामणि सुन्यो वृन्दावन रूप देख्यो लाल
हैं गई निहाल आय नेह नानो जानिके ।

उठि बहुमान कियो दियो दूध भान दोना
दैं पठावैं हरि नित जन निज मानिके ॥

लियो कैसे जाय तुम्हैं भादमों दियो जो प्रभु
लेहों नाथ हाथ मो जो देंहैं सनमानिक ।

बैठे दोऊ जन कोऊ पावें नहीं एक कण
रीके श्यामघन दीन्हो दूसरोऊ आनिके ॥१७६॥

(श्री विष्णु पुरीजीकी कथा)

मू० छ०—भगवद्धर्म प्रधान आनकछु धर्म
न देखा । पोतर पटतर विगत निकश
ज्यों कुन्दन रेखा । कृष्ण कृपाकी बेलि
फलित सत्संग दिखायो । कोटि ग्रन्थको
सार त्रयोदश विरचन गायो । महासिन्धु
भागौततें, भक्तिरत्न राजी रची । कलि-
जीव जँजाली कारणौ, विष्णुपुरी बड
निधि मँची ॥१७७॥

जगन्नाथपुरी माहिं बैठे महाप्रभुजी वे
चहुँ थोर भक्तभूष २.२ धति आई है ।

बोले कोऊ विष्णुपुरी काशी मध्य रहैं जाते
जानियत मोक्ष चाह नीके मन आई है ॥

लिखी प्रभु चीटी आप मणिगण माला एक
दीजिये पठाय मोहि लागै जो सुझाई है ।

जान लई बात निधि भागवत रत्नदाम
दर्है है पठाय मुक्ति खोद के बड़ाई है ॥१७७॥

१ कसौरी परकी लीक । २ फला हुआ फल । ३ धन विशेष ।
४ भक्ति रत्न माला । ५ सम्पत्ति । ६ जोड़ा इकट्ठी की ।

(श्री ज्ञानदेवजी की कथा)

मू० छ०—नाम त्रिलोचन शिष्य सूर्य
शशि सदृश उजागर । गिरा गंग अनुहार
काव्य रचना प्रेमाकर । आचारज हरिदास
अतुलबल आनंद दायन । तेहिमग वभछ
विदित पृथू पद्धती परायण । नवधा प्रधान
सेवा सुदृढ, मन वचक्रम हरिचरण रति ।
विष्णुस्वामी सम्प्रदाय दृढ, ज्ञानदेव
गम्भीर मति ॥१८८॥

विष्णुस्वामी सम्प्रदायी बडे ही गम्भीर मति
नाम ज्ञानदेव ताकी बात सुनि लीजिये ।

पिता गृह त्यागि आय ग्रहण मन्याम कियो
दियो कहि भूठ लिया नहि कृपा कीजिये ॥

आई पाछे बधू तब कही पुत्र बती होहु
कही सब कथा सोही मंग करि दीजिये ।

आये लौटि घर जाति बन्धु सो रिसाने सब
किये पांति बाह्य रहे दूर नहीं कीजिये ॥१७८॥

भये पुत्र तीन भक्ति माहिं बडे ज्ञानदेव
जाकी कृष्ण देवजी सों हियेकी सचाई है ।

१ छूना नहीं चाहिये ।

वेदना पटावें छिज कहैं सभी ज्ञाति गई
लई करि सभा कहैं कहा मन आई है ॥
विनम्यो ब्रह्मत्व ताते श्रुति अधिकार नाही
बोल्या यों निहारि पढ़ें भैंसा ले दिखाई है ।
देखि भक्ति भावको प्रभाव आय गहे पाँव
कियो मो स्वभाव गही वही दीनताई है ॥१७६॥

(श्रीत्रिलोचनजीकी कथा)

भये उमै शिष्य नाम देव ओ त्रिलोचनज
सूर्य शशि नाई कियो जगमें प्रकाश है ।
नामदेव बात मुनि आये सुनो दूसरे की
सुनेई बनत भक्त कथा रस रास है ॥
उपज्यो वणिक कुल सेवै कुल अन्युत्तसो
मेवै नहिं बनें एक तिया मात्र पास है ।
टहलुआ न कोई साधु मनकी जो जानिलेय
यही अभिलाष एक दासनको दास है ॥१८०॥
आये प्रभु टहलुआ रूप धारि द्वारोपरि
फटी एक कामरी पन्हैया टटी पाँव है ।
निकमत पृथ्वी अहो कहाँते पधारै आप
वाप महतारी कौन देश कौन धाम है ॥

१ जाति नष्ट हो गई । २ नम्रता । ३ वैष्णव । ४ परन्तु । ५ सेवा करनेवाला । ६ भगवान के दासों का दास । ७ दरवाजे पर । ८ जूतियाँ ।

वाप महतारी मेरे कोऊ नहीं मांजी कौनो
गहों में टहल जोई मितल सुभाष है ।
अनमिल बात कौन दीजिये जनाय
खाऊँ पाच सात सेर उठत रियाय है ॥१८१॥
चारिउ वरणकी है रीति सत्र मेरे मन
साथोहू न चहों सेवा कर्त मनन है ।
भक्तन की सेवा ही तो करत जनम भयो
नयो कछु नाहीं डारे वरस विताय के ॥
अन्तर्यामी नाम मेरो चरो भयो तेरो लो तो
कही भक्त खाओ भावें तितोही अघाय क ।
कामरी पन्हैया सब नई कम्दई और
मीडके न्हावायो तन मैलको छुडाय के ॥१८२॥
बोल्या धर्म पत्नी सों तू रहो याकी दामी होय
जावैं जो उदासी होय ऐसो नहिं पावनो ।
खाय मो खवायो सुख पावो नितनये हिये
जिये जगमाहिं जो लौ मिलि गुण नावनो ॥
आवत अनेक साधु भावत टहल हिये
लिये चाव दावें पाँव सबनि लडावनो ।
ऐमे ही करत माम तेरह व्यतीत भये
गये उठि आप नेक बात को चलावनो ॥१८३॥

१ स्वभाव । २ पसलकर ।

एकदिन गई ही पड़ोसिन के भक्तवधू
पृथ्वी ताने बात एहो काहे को मलीन है ।
बोली मुसकाय वे टहलुआ लिवाय लाये
क्योंहु न अधाय पीम खोट तन छीन है ॥

काहू सों न कहौ यह गहो मन माँझ एरी
तेरी सों सुनेगो जोपै जात रहै भी न है ।
सुनिलई यही नेक गये उठि हुती टेक
दुःख ऐसो भयो जैसे जल विन मीन है ॥१=४॥

धीने दिन तीन अन्न जलसों विहीन भयो
ऐसो मो प्रवीण अहो अब कहाँ पाइये ।
बड़ी नू अभागी बात काहे को कहन लागी
रागी साधु सेवाको सो कैसे करि लाइये ॥
भई नभ बाणी तुम स्वाधो पीवो पानी यह
में ही मति ठानी तेरी प्रतिरीति भाई ये ।

मेतो हूँ अधीन तेरे घरहीमें रहौ लीन
जो पै कहाँ दाम सेवा करिवेको आइये ॥१=५॥

कीन्है हरिदास में तो दामहु न भयो नेक
बड़ो उपहाम मुख कैसे कै दिखाइये ।

कहै जन भक्त भक्ति कहा हम करी कहो
अहो अज्ञताई रीति मनमें न आइये ॥

१ डरा । २ चतुरा ३ आऊँ । ४ भगवानको ।

उनकी तो बात बनि आवत है उनहीमे
गुण ही को लेन दाम औगुण निपाइये ।
आगे घरमाँझ तऊ मूढ में न जान मस्यां
आवै अब कर्म जाय पाँय लपटाइये ॥१=६॥

(स्वामी आनन्दभावाचंजी की कथा)

यि में स्वरूप मवाकरि अनुराग में
हर और जावनक जावनका दाजिय ।
साई लै प्रकाश घर घर में विलास किया
अति ही दुःखाम फन नेननका लीजिय ॥
चारुंग अवधि नेक आतुरी न होतकभूँ
बहुनिशि नाना राग भोग सुख कीजिये ।
वल्लभ जलाम लियो पृथू अभिराम रीति
गोतुलमें धाम गति मुनि पति गीतिये ॥१=७॥
गोकुलके देखवेको गयो एक माधु मृधो
देखके मगन भयो रीति कछु न्यायिये ।

झोकर के वृक्षपर बसुआ कलाय दया
किया जाय दरशन सुख भयो भारिये ।

देखे शाय नाहीं प्रभु फेर आप पास आयो
चित्त सो मलीन देखि कटी जा निहारिये ।
वेमेई स्वरूप बहु आनि बोले सुधि गई
लीजिये पिछानि कह्यो सेवा नित धारिये ॥१=८॥

१ जीवोंके जीवन=भगवान । २ छीला । ३ जाकर देख लो ।
४ करते हैं ।

खुल गई आँखें अभिलाषें पहिचान कीजे
 दाजेजी बताय मोहि पाऊँ निजरूप है ।
 कही जाओ वाही ठौर देखो प्रेम लेखो हिये
 लिये भाव सेवा करा मारग अनूप है ॥
 देखके मगन भयो लाये उरधारि हरि
 नैन भरि आये जान्यो भक्तिको स्वरूप है ।
 निशिदिन लाग्यो पाग्या जाग्या भाग पूरण हो
 पूरण चमत्कार कृपा अनुरूप है ॥१८६॥

(आवेशी भक्तगण वर्णन)

भक्तदास इक भूप, श्रवण सीताहर
 कोन्हो । मार मार कर खड्ग वाजि सागर
 में दोन्हो । नरसिंह को अनुकरण होय
 हिरणाकुश मारयो । बहे भयो दशरथ
 राम विद्युरत तन डारयो । कृष्ण दाम
 बांधि सुने, तिहिक्षण दीन्हे प्राण । संत
 साखि जानि सबै, कलियुग प्रेम प्रधान ॥

(भक्तदास भूप भीकुलसेखरजीकी कथा)

सन्त साखि जानि कलिकाल में प्रकट प्रेम
 बढोई अमत् जाको भक्ति में अभाव है ।
 हुने एक भूप राम रूप ततपर महा
 रामही की लीला गुण सुनै करि भाव है ॥

विप्र जो सुनावै सीताहरण न गावै हियो
 'खरो भरि आवै यह जानत स्वभाव है !
 परबोद्धिज दुखी निज सुवन पढाय दियो
 जानै ना सुनायो भस्यायो कियो घाव है ॥१८७॥
 मार मार मार करि खड्ग निकाम लियो
 दियो घोड़ो सागर में सो आवेश आयो है ।
 मारो याहि काल्ह दुष्ट रावण विहाल करो
 देखो सीता पाँयन को भाव दृढ़ दायो है ॥
 जानकी रमण दोउ दरसन दिये आय
 बोले बिन प्राण कियो नीच फल पायो है ॥
 मुनि सुख भयो शोक गयो अति दाहण मो
 रूप की निहारनि ने फेरिके जिवायो है ॥१८८॥

(लीलानुकरणी भक्त एवं रतिमति बाई की कथा)

नीलाचल धाम तहां लीलानुकरण भयो
 नरसिंह रूप धारि सँचि मार डारयो है ।
 कोउ कहै देश कोऊ कहत आवेश जों
 कगे दण्ड्य, कियो, भाव पूगे पारयो है ॥
 हवी एक बाई कृष्ण रूप में लगाई मति
 कथा में न आई, सुन मुनि, कथो धारयो है ।
 बांधे यशुमति सुनि और भई गति करि-
 दई माँची रति, तन तज्यो मानो वारयो है ॥१८९॥

१. सत्य ही । २. याद है ।

(भक्त समूह का वर्णन)

हों का कहों बनाय बात सबही जग
जानै । करते 'दोनो' भयो श्याम सौरभ
मन मानै । छपन भोगते पूर्व 'खीच'
कर्मा की भावै । 'सिलपिल्ले' उच्चरत
कुँवरि पहुँ हरि चलि आवै ॥ भक्तन
हित सुत विप दियां, भूपनारि, हरिगख
'पति' । प्रसाद अवज्ञा जानिके, पाणि
तज्यो एकै पृपति ॥ ५० ॥

(श्रीजगदीशपुरी के राजा का कथा)

प्रसाद अवज्ञा जानि तज्यो एक नृप कर
कक विवेक मुनो जैमे बात भई है ।
म्येने भूप चौपर सो आयो प्रभु 'भुक्त' शेष
दाहिन में पामे बाँधि छुयो मलि गई है ॥
ले गये फिगाय सो प्रसाद महादुःख पाय
उठ्यो नर देव गृह गया मुनी लई है ।
लियो अनमन हाथ तजो यही छिन तव
साँचो मेरो प्रण विप्र बोलि पृच्छि लई है ॥ १६३ ॥

१. दोना - पुष्प । २. विचड़ी । ३. अर्थ होता है शिला-
पत्थर के बन्धे, परंतु सन्तों ने भगवान का यही नाम बता दिया था ।
४. लज्जा । ५. प्रसाद ।

काटे हाथ कौन मेरो ? रह्यो गहि मौन याने,
पृच्छत मचिव कहा व्यथा सो विचारिये ।
आव एक प्रेत मो दिखार्ड देन नित निशि
डारिके भरोका कर शोर करे भारिये ॥
मोचो डिग आय रहो आपको छिपाय, जब
डारि पाणि आय तब ही मो काट डारिये ।
कही भले, नृप चौकी देत में घुमायो कर
डारयो छेद मंत्री सोई न्यारो करि डारिये ॥ १६४ ॥
देखकै लजानो कहा कियो में अजानो नृप
ही को प्रेत मान्या यह प्रभु सो विगारी है ।
कही जगन्नाथ देव लौ प्रसाद जाओ वहाँ
लाओ हाथ वोचो वाग मोई उर धारी है ॥
चले वहाँ धाय भप मिल्यो आगे आय हाथ
निकस्यो प्रसाद छुयो भयो सुख भारी है ।
लाय कर वोयो ताके फूल भये दोनाके जो
नित ही चढत अजहँ लो हरि प्यारी है ॥ १६५ ॥

(श्रीकरमाबाई की कथा)

हुती एक बाई ताको करमा सुनाम जानी
विना रीति भाँति भोग खीचरी लगावनी ।
जगन्नाथदेव आय भोजन करत नीके
जिनो लागै भोग तामें यह अति भावनी ॥
गये तहाँ साधु, मानी बडो अपराध करे

भरै बहु श्वास सदाचार लै मिखावहीं ।
भई यों अवार देखे खोलके किंवार तब
जुठन लगेही मुख धोये बिन आवहीं ॥१६६॥

पूछै प्रभु भयो कहा कहिये प्रकट खोलि
ब्रूम ह न परै हमें देखि नई रीति है ।
करमा सुनाम एक स्त्रीनरी खवावों मोहि
में सो नित्य पाऊं जाय जानि साँची प्राति है ॥
गये नेरे सन्त रीति भाँति सो मिखाय आये
मत्त सो अनन्त बिन जाने यों अनीति है ।
कही वाही सन्तमों जू साधि आओ वही बात
जायके सिखाई हिये आई बड़ी भीति है ॥१६७॥

(श्रीसिलपिल्ले भक्ता दो बालिकाओं की कथा)

भगवान 'सिलपिल्ले भक्ता' दोय बाई भई
एक नृप सुता एक सुता जमींदार की ।
आये गुरु घर देखि सेवा, ढिंग बैठी जाय
कही ललचाय पूजा करें सुकुमार की ॥
दियो शिला टुक लेके नाम कहि दियो वही
कीजिये लगाय मन गति भवपार की ।
करत कान अनुराग बढ्यो भारी उर
बड़ी ही विचित्र रीति भक्ति शोभासार की ॥१६८॥

१ किला के बच्चे पत्थर के टुकड़े ।

(जमींदार कन्या की कथा)

पाछिले कवित्त कही दोउनकी एक रीति
सुनो अब न्यारी न्यारी नीके मन दीजये ।
जमींदार सुता ताके रहे उभै भाई रामै
आपम में और गाँव लटयो मवे लीजिये ॥
तामें गई सेवा इन बैडोई कलेश कियो
जीयो नहीं जात खान पान कैसे कीजिये ।
रहे समझाय याही कछु न सुहाय तब
कही जाय ल्याओ तेरे दोऊ सम धीजिये ॥१६९॥
गई वाही गाँव जहाँ दूसरो सो भाई रहे
बैठयो हो अथाई में सो कही वही बात है ।
लेओजी पिछान वहाँ बैठे एक टोर प्रभु
बोलि उठयो कोऊ बोलिलोजे प्रीतिगात है ॥
भई आँख राती लागी फाटन सो छानी वह
रोई स्वर आरत सो मानो तन पात है ।
दिये आय लागे मव दुख दूर भागे कोऊ
बडे भाग जागे घर आई न समात है ॥२००॥

(नृप सुता की कथा)

सुनो नृप सुता बात भक्ति गात गात पागी
भागी सो निरव वृत्ति सेवा अदुरागी है ।

१. लोगों के जुटकर बैठने का स्थान । २. बुला लीजिये ।

३. लाल ।

व्याही सो विमुख घर आयो लेन जंग वर
खरी अखरी सोई चित चिन्ता लागी है
करदीन्ही संग भरि आपनेही रंग चली
अलीहू न संग एक वही जामो 'रागी' है ।
आयो दिग पति बोलि कियो चाहै रति याको
भई औरै गति मत आयो व्यथा पार्गी है ॥२०१॥

कोन वह व्यथा ताको कीजिये यतन वेग
बड़ी उत्कंठ नेक बोलि मुख दीजिये ।
बोलयो जो चाहो तो वग्याओ हरि भक्ति हिये
विना हरि भक्ति मेरो अंग जनि छीजिये ॥
आयो गेप भारी तब मन में विचारी या
पिटारी में जो कछु भोई लेके न्यारो कीजिये ।
कभी वही बात मूढ जल मोक्ष डार दई
नई भई ज्वाला जियो आत नई स्वीकारिये ॥२०२॥

तज्यो अन्न जल अब चाहत प्रसन्न कियो
होत क्यों प्रमन्न जाको मरवम लियो है ।
पहुंचे भवन आय दई सोजनाय बात
गात छीन देख कहै कला हठकियो है ॥
सास समझावे कछु हाथ सों खगावे याको,
बोली जब वेई आवे तोही जात जीयो है ॥२०३॥

१. प्रीति की है । २. दुःख । ३. छूड़े ।

आयेवाही और और आय तन भूमि गिरयो
ठरयो नेन जल होय आरत पुकारी है ।
भक्तिवश श्याम जैमे काम वश कामीनर
आय लगे छती सों जू मंग सो पिटारी है ॥
देखी पति सामु आदि जगत विवाद मिटयो
वादिही जनम वीत्यो नेक ना मँभारी है ।
भये सब भक्त हरि साधु सेवा माँझ पगे
जगे कोऊ भाग घर वधू सो पधारी है ॥२०४॥
भक्तदर्शनार्थ पुत्रोंको विष देनेवाली दो बाइयोंकी कथा ।
भक्तन हेत सुत विषदियो उमेकई
तिनहु की बात नीके खोलके बनाइये ।
भयो एक भूप ताके भक्त सो अनेक आवैं
आये भक्त भूप तामों लगन लगाइये ॥
नितही चलन चाहैं चलनन देत राजा
वितये वासर माम कही भार जाइये ।
गई आसट्ट तन छूटवेकी रीति भई
लई बात पूछि रानी सब दी जनाइये ॥२०५॥
दियो सुत विष रानी जानी नृप जीवैं नाहीं ।
सन्त हैं स्वतन्त्र सो इनहिं कैमे राखिये ।
होन चाहै भोर वधू शोर करि रोय उठी
भोय गई रावलमें सुनि साधु भाषिये ॥

१ चक्र । २ व्याप्त हो गई । ३ अन्तःपुर=जनाना में ।

खोलि डारे बांधे पट भवन प्रवेश कियो
 लियो देखि बालकको नील तनु माखिये ।
 पूछी सन्त रानीसों जु साँची कहो कियो कहा
 कहो आप जायो चाहै नैन अभिलाषिये ॥२०६॥

बानी खोलि रोयो कछु बोलहु न आव मुग्न
 सुख भयो भारी भक्ति रीति कछु न्यारी है ।
 जानी उन बात जात पति को विचार कहा
 अहो रस सागर सो सदा उर धारी है ॥

हरि गुण गाय साखी सन्तन बताय दियो
 बालक जिवायो लागी ठौर यह प्यारी है ।
 संगके पठाय दिये रहे जेते भीजे दिये
 मैं तो अब जाऊँ नहीं जो पै मारि डारिये ॥२०७॥

मनो चित लाय बात दूसरी सुहाइ हिये
 जीवै जगमाहिँ तौलो सन्त संग कीजिये ।
 भक्ता नृप सुता एक व्याही सो अभक्त घर
 जाके घर माँझ माधु नाम नहीं लीजिये ॥

पल्यो माधु 'मीथसों' शरीर दृग रूप पले
 जिह्वा चरणामृत के स्वाद ही सों भीजिये ।
 रह्यो नहि जाय वे वसाय अकुलात सोची
 आवैं पुर सन्त तब सुत विष दीजिए ॥२०८॥

आए पुर सन्त तब दासीने जनाय कही
 सही नहीं गई लेके सुत विष दियो है ।
 गए बाके प्राण रोय उठी किलकात सब
 भूमि गिरे आनि टुक भयो जात हियो है ॥

बोली अकुलाय एक जीवको उपाय जो पै
 कियो जाय पिता मेरं केई बार कियो है ।
 कहैं मोई करें दृग भरे, लावा सन्तनको
 कैमे होत सन्त पूछी चेरा नाम लियो है ॥२०९॥

चले ले लिवाय चेरी बोलयो मिखाय दियो
 देखके धरणि पर पाँव गहि लीजिये ।
 कीन्ही वही रीति दृगधारा मानो प्रीति सन्त
 करी यों प्रतोति गृह पावन मो कीजिये ॥

चले सुख पाय दामी आगे ही जनाई जाय
 आय ग्राही पौरि पाँय गहे मति भीजिये ।
 कही हरे बात मेरे पितृ मातु मानों मैं तो
 अंगमें न मात आज प्राण वागि दीजिये ॥२१०॥

रीझ गये सन्त प्रीति देखके 'अनन्त' कही
 होयगी मो वही जो प्रतिज्ञा तेने करी है ।
 बालक निहारि जानि विष 'निरवार' लियो
 दियो चरणामृत सो प्राण 'मंझा' घरी है ॥

देखत विमुख जाय पाँव ततकाल लिये
किये तब शिष्य साधु सेवा मति हरी है ।

ऐसे भूपनारी पत राखी सब साखी जन
रहै अभिलाषी जन देखे यहि घरी है ॥२११॥

(अगाध आशय भक्त समूह का वर्णन)

मू० छ०—रंगनाथको सदन करन बहु
बुद्धि विचारो । कपट धर्म रचि जैन द्रव्य-
हित देह विसारी । हंस पकरिवे काज
बधिक बना धरि आये । तिलक
दामकी सकुच जानि तिन आप वैधायें ॥
सुतबध हरिजन देखिके, दै कन्या आदर
दियो । आशय अगाध इन जननको,
हरितोषण अतिशय कियो ॥२१॥

(श्री रंग मन्दिर निर्माता भक्त मामा भानजाकी कथा)

आशय अगाध दोऊ भक्त मामा भानजे को
दियो प्रभु तोष ताकी बात चित धारिये ।

घरते निकमि चले वलको विवेक रूप
मूरत अनूप तिन मन्दिर निहारिये ॥

१ जो अभिलाषा रहै तो इस समय (आज) भी देखा जा सकता है ।
२ प्रसन्न । ३ ओढ़ा । ४ प्रसन्नता । ५ ज्ञान स्वरूप । ६ गहान सुन्दर ।

दक्षिणमें रंगनाथ नाम अभिराम जाको
ताको लै बनावे धाम काम सब दारिये ।
धनके यतन किये भूमि में न पाया कहूँ
'चहुँ दिशि हेरि देख्यो भयो मुख भारिये ॥२१२॥
मन्दिर मरावगी को प्रतिगा सो पारस की
'आर्ष नहि करें 'दर्शन श्रुति गायो है ।
पावें प्रभु मुख हम नरक गये तो कहा
'धरक न आई जाय कान लै फुकायो ॥
तेमी करी सेवा जामों तब मति केरा ज्यों
'मेवरा मवाज मय नीके के रिक्कायो है ।
दियो मौपि बार तब लेवे को विचार करें
हैं कौन राह वेद 'राजन बतायो है ॥२१३॥
मामा रहै भीतर आ ऊपर सो मानजे हैं
कलश 'भँवर कली हाथ माँ फिरायो है ।
'जगरा न फाँम दीनी मूरति मो खेच लानी
दुजी बार सोऊ आप नीक चढि आयो है ॥
कियां हो जो 'द्वार तामें फुलि तन फँस गयो

१ जाने तुरफ फिरने पर एक जगह देखा सो आगे कवित्त में
कहा है । २ आवक-जन । ३ पारस नाथ की । ४ अच्छे लाग ।
५ दर्शन करना वेद ने नीच कर्म कहा है । ६ घड़क=शंका । ७ शिष्य
हो गये । ८ सेवक-जैन । ९ मार्ग । १० कारीगरों ने । ११ फिरने
वाला यन्त्र । १२ रस्सी । १३ छेद ।

आति सुख पाय तब बोलके सुनायो है ।
 काटि लेवो शीश ईश भेषकी न निन्दा करें
 भरें अंकवार मन कीजिये सवायो है ॥२१४॥
 काटि लियो शीश ईश इच्छाको विचार कियो
 जियो नहीं जात ताँऊ चाह मति पागी है ।
 जा पै तनु त्याग करौ कैमे आश सिंधु तरौ
 गयो वाहो ठौर देखी नाम खुदै लागी है ॥
 भयो शोक भारी हमें ह्वै गई अँवारी काहु
 आर ने विचारी देखो वोही बडभागी है ।
 भरि अँकवार मिले मन्दिर सँवारि मिले
 मिले सुख पाय नैन जानौ सोई रागी है ॥२१५॥

(हंस भक्तों की कथा)

कोटो भयो राजा एक यतन अनेक किये
 एक हू न लागी कह्यो हम मंगवाइये ।
 अधिक बुलाय कही बेगही उपाय करो
 जहाँ तहाँ द्रुढ़ कर यहाँ लणि लाइये ॥
 कमे कर लावें वे तो रहैं मानसर माँफ
 लाओगे छूटोगे तभी चार जने जाइये ।
 देखनहीं उड़जात जानको पिछान लेत
 माधु सों न डरैं जान वेप सो बनाइये ॥२१६॥
 १ बुनियाद । २ छुजाभरके । ३ मसन्न हुए ।

गये पास हंस सन्त बनो सो प्रशंग देखि
 जानके बँधाये राजा पास लेके आये हैं ।
 मानि 'मतमार प्रभु वैद्यको म्वरूप धरि
 आये सो बजार लोग भूप टिंग लाये हैं ॥
 काहे को मंगाये पक्षी आछी हम कों दे
 छोड दीजे इन्हें, कही 'नीउ कर पाये हैं ।
 ओपधि पिसाय सब अंगन लगाय किय
 नीके सुख पाय 'कहि हंसनि छुटाये हैं ॥२१७॥
 लेओ भूमि गाँव बलिजाऊँ या दयालुताकी
 भाल भाग्य जागे तामों दरशन दीजिये ।
 पायो हम सब अब करो हरि माधु सेवा
 मानुष जनम ताकी मफलता कीजिये ॥
 कियो लं निदेश देश भक्ति को विस्तार भयो
 हंस हित सार जाति हिये धर लीजिये ।
 अधिकहू जानी जामों म्वगन्ह प्रतीति कीन्ही
 ऐसो वेप छोडिये न राखो मति भीजिये ॥२१८॥

(सदाब्रती महाजनजी की कथा)

महाजन एक सदाब्रती ताके भक्ति प्रण
 मनमे विचार सेवा कीजे चित लायकं ।

१ सन्तरेप के सम्मान के अर्थ अधिकों को पहचान करके भी
 पकड़ में आजनि के विचार को सार समझकर । २ कठिनाई करके ।
 ३ कठकर ।

आवन अनेक माधु निपट अगाध मति
साथ लेत जैसे आवैं वृद्धि मो मिलायके ॥

मन्त सुखमानि रह गयो धरमांक एक
सुतमों सनेह भयो खेलै मंग जायके ।

इच्छा भगवान् मुख्य गौण लोभ जानां फल
मारि गाडि घूरी आयो गृह पछिताय के ॥२१६॥

देखै महतारी मग बेठा कहां रह्यो पगि
बीते याम चार तऊ धाम में न आयो है ।

फेरी पुर लौंडी ताके मंग आप खुद लौंडी
कहैं यों पुकार सुन कौन विरमायो है ॥

बगिही बताय दीजे आभरण यहै लीजे
कही सो सन्यासी यह मारयो मन लायो है ।

दई ले दिखाय देह बोल्यो पाहि गहिलेहु
याही ने हमारो सुत्र हत्यो नीक पायो है ॥२२०॥

बोल्यो अकृलाय में ता दीनो है बताय मोहि
देखोजी छुडाय नहीं भूट कछु भापिय ।

लेख्यो मननाम माधु जो उपाधि मेढयो चाहो
कही जाओ और कहैं, 'मानी, छोड़ नाखिये ।

आयक विचार कियो जान्यो अकुचायो मन्त
बोली उठी तिया सुता देके नीके राखिये ।

१ मास । २ पात मानसी । ३ छोड़ दी ।

परयो बधू पाँय तांगी लीजिये बलाय पुत्र-
शोकका मिटाय और खरी अभिलाषिये ॥२२१॥

मन्त बोलि कह्यो सुता कीजिये जू अंगीकार
'दुःख ये अपार काहु विमुखको दीजिये ।

बोल्यो अकृलाय में तो मारयो सुत हाय मोपै
जियो ह न जाय मेरो नाम मत लांजिये ॥

देखो माधुनाई धरी शीशपै बुराई जहाँ
गई ह न दोष कियो मेरु मम रंभिये ।

दई बरी व्याहि कही मेरा उर दाह भिटे
काजिये निवाह जगमाहिं जीनौ जीजिये ॥२२२॥

आये गुरु वर मुनि जिनका न सरवर
सिद्ध मुखदाई मन्त मन्त्रा जे बताई है ।

पुत्रयो सुन कों, अजू पायो, कह्यो कान भौनि
भौनि का बखानो जग बीच लपटाई है ।

'प्रभुन परीक्षा लई वे ही हमें अला दई
चलिके दिखायो जहां देहको जगई है ।

गये बाही ठौर शिर मौर मन्त ध्यान कियो
जीयो चलि आया दाम कीर्ति बटाई है ॥२२३॥

१ किनो भगवान् विमुखको लहका देना महान् दुःख है । २ पुत्र
पारने और बेटी व्याह देने की बात सुनकर । ३ जिनने । ४ मृत्यु ।
५ गुरुजी ने कहा ।

(भक्त सप्तर का वर्णन)

मूल छ०—'दारुमई तरवार 'सारमय
रची भुवनकी । देवाहित सित केश प्रतिज्ञा
राखी जनकी । कामध्वज के हेत चिता
'कपि काष्ठ जुलाये । जयमलके रणमाहिं
अश्व चढि आपन धाये ॥ घृत युत
'महिषी चौगुनी, श्रीधर संग सायक
धरणा । चारों युग तत्पर रहैं, भक्त गिरा
साँची करण ॥५२॥

(श्रीभुवनसिंहजी चौहान की कथा)

सुनो कलिकाल ज्ञान और है पुराण स्यान्
भुवन चौहान जहाँ राणा की 'दुहाई है ।
पट्टा युग लाभ स्वात, मेवा अभिलाष साधु,
चने मो शिकार नृप मंग भीर छाई है ॥
मृगी पाये परे कर टूक हुती गर्भिणी मो
आय गयी दया कही काह को 'लगाई है ।
कहैं मोकां भक्त, क्रिया करु' में अभक्तन की
दारु-तरवार धारों अब मनभाई है ॥२२४॥

१ लकड़ी की । २ फौलाद की । ३ श्रीहनुमान जी । ४ स्वयं
भगवान । ५ भैंस । ६ राण्य । ७ मारी ।

और एक भाई ताने देखी तरवार दारु
सक्यो न सँभारि जाय राणा को सुनाई है ।
नृप न प्रतीति करे, करे यह 'सौह नाना
'बाना प्रभु देखि तेज बात ना चलाई है ॥
ऐसे ही बरस एक कहत व्यतीत भयो
कह्यो मोहि मारो जोंपि झूट में बनाई है ।
करी 'गोठ कुंड जाय पायक प्रमाद बैठे
प्रथम निकासि नृप मवन दिखाई है ॥२२५॥
क्रम सों निहारी कटि भुवन विचार कहा
कह्यो चहैं दारु युग निकस्यो मो मार है ।
काटिकें दिखाई मानो विजुरी चमक गई
आई मन माँझ बोल्यो मारो याको भार है ॥
भक्त कर जोरिके वचायो अजू मारिये क्यों
कही बात झूठ नहीं करी करतार है ।
पटो दनादन पावो आवो मत 'मुजरा को
में ही घर आऊं होय मेरो 'निसतार है ॥२२६॥
(उदयपुरस्थ श्रीचतुर्भुजजी के पुजारी श्रीदेवापदजी की कथा)
दरसन आये राणा रूप चतुर्भुजजी के
प्रभु को पौदाइ हार शीश लपटाये हैं ।

१ शपथ । २ तिलक मालादि वेष का तेज देखकर राणाजी ने ।
३ गोष्ठी । ४ अभिवादनार्थ । ५ छदार ।

वेग मो उतारि कर लैके गरे डारि दियो
देखि धोरो वार 'पूछी, 'कही धोरे आये हैं ॥

कहत तो कहि दई मति घबडाई अच
महीपनि डारै मार, हरि पद ध्याये हैं ।
अहो हपीकेश करो मेरे लिये श्वेतकेश
लेशहू न भक्ति, 'कही किये देखो छाये हैं ॥२२७॥

मानि राजा त्राम 'दुखराशि सिंधु बाढयो हुतो
मुनि प्रभु वाणी मीठी फेरि मानो जियो हैं ।
देखे श्वेत वार जानी कृपा मो अपार करी
भरी आँखें नीर, में न मेवा लेश कियो हैं ॥
बडे ही दयाल मदाभक्त प्रतिपाल करें
मे तो हैं अभक्त गोपै महुचान हियो हैं ।
फूँट मनबन्ध सों हू नाम लाजें मरो ही तो
ताते सुख माजें, यह दरमाय दियो हैं ॥२२८॥

आयो भोर राणा श्वेत वार मो निहारि रह्यो
कह्यो केश काहु के पंडा ने ला लगाये हैं ।
एचि लियो एक प्रभु खेचिके चढाई नाक
रुधिर की धारा नृप अंग छिगकाये हैं ॥
गिर्यो भूमि मूर्च्छित हू तन की न सुधि रही
जाग्यो याम बीत अपगध कोटि 'गाये हैं ।

१ राणाजी ने पूछी । २ पंडाजी ने कही । ३ भगवानने कहा । ४ दुख
समूह का समुद्र । ५ कहने लगा मेरे कंगोड़ों अपगध हैं ।

'यही अब दंड राज बैठे सो न आवैं यहाँ
अजहूँ लों आन मानि करें जो मिखाये हैं ॥२२९॥

(श्रीकामध्वजजी की कथा)

भये चार भाई करें चाकरी वे राजाजू की
तामैं एक भक्त करें वन में वसेरा है ।
घरआ प्रसाद पाय पोर उठि जाय तहाँ
भाई कही चलकें 'महीना लीजे तैरो है ॥
जाके हम चाकर हैं रहत 'हाजर मदा
कह्यो तो जरागै मरे सोही जाको तैरो है ।
छूट्यो वन तन राम आज्ञा हनुमान आय
कियो दाह धुवाँ लागे प्रेत तरयो 'तैरो है ॥२३०॥

(श्रीजयमलजी राठौड की कथा)

मेरते प्रथम वाम जयमल नृप ताको
मेवा अनुराग नेक 'खटको न मान ही ।
करे दश घरी तामैं कोऊ जो खबर देन
करे नाहीं कान बाको वही मरवावहीं ॥
हुतो एक भाई वैरी भेद यह पाय गयो
दियो आय धेरो माना जायके सुनावहीं ।
करे 'प्रभु भली, प्रभु घोडा अमवार होय
मारी फौज, लोग कहैं, सुनि मचु पावहीं ॥२३१॥

१ भगवानने कहा राज गद्दी पर बैठे सो यहाँ न आवैं यही
दंड है । २ वेतन । ३ उपस्थित । ४ समीप में रहनेवाला । ५ शब्द ।
६ जयमलजी ने कहा भगवान अच्छा करेंगे ।

देख्यो हाँ पै घोड़ो अहो कौन असवार भयो
 गये आगे तब देख्यो वहै बैरी परयो है ।
 बोल्यो उठि सुखपाय साँवरो सिपाही को है ?
 इकले ही फौज मारी मेरो मन हरयो है ॥
 तुम्ही को दिखायो तन मेरे तरसत नैन
 नैनन सों जानी वही श्याम प्रभु हरयो है ।
 पूछि घर भेज दियो वानै भक्ति प्रण लियो
 किये मे तो दुखी तोऊ भक्त भलो करयो है ॥२३२॥

(श्रीग्वाल भक्तजीकी कथा)

भयो एक ग्वाल साधु सेवा सो रसाल करे
 परे जोई हाथ लंके सन्तन खवावहीं ।
 पायो एकवान लेय गयो सो खवायवे को
 ताही बीच आये चोर भैस सो चुरावहीं ॥
 जानके छिपाई बात मातासों बनाय कही
 दई विप्र भूखे धृत संग फेर आवहीं ।
 दिन द्वे दिवारी रही चोर पहरायो हाँस
 आई घर 'जाम लिये' राँभके सुनावहीं ॥२३३॥

(श्री श्रीधर स्वामीजीकी कथा)

भागवत टीका करी श्रीधर सो जान लेहु
 गेह में रहत करें जग व्यवहार हैं ।

१ बच्चा पाडा । २ भैस के शब्द को राँभना कहते हैं ।

चले जात मठ ठग लगे कहैं कौन मंग
 मंग रघुनाथ मेरे जीवन अधार हैं ॥
 जानी इन कोऊ नहीं मारवेको यत्न कियो
 आये चाप वाण धारि बेही सुकुमार हैं ।
 आय घर चोर पूछै श्याम सुकुमार कहाँ
 आपको बचाये हमें मारे रूप मार हैं ॥२३४॥

(भक्त समूह का वर्णन)

मूल छ०-निष्किंचन इक दास तासुके हरि-
 जन आये । विदित बटोही रूप भये हरि आप
 लुटायें ॥ साखि देनको श्याम 'खुरदहा स्वयं'
 पधारें । रामदासके सदन राय रण छोड
 सिधारें ॥ आयुध क्षत तन अनुग के,
 'बलिवन्धन' निज वयु धरें । भक्तन संग
 भगवान त्यों ज्यों गो 'बछ गोहन' फिरें
 ॥५३॥

(निष्किंचन भक्त श्री हरिपाल जी की कथा)

भक्तन के संग भगवान ऐसैं फिरयो करें
 जैमे वत्म मंग फिरें 'नेहवती' गाय हैं ।

१ जगन्नाथ पुरीके समीप खुदहा ग्राम जहाँ साखी गोपाल जी
 हैं । २ बलिको बांधने वाले भगवान । ३ बछड़ेके पीछे पीछे । ४ मेम
 करनेवाली=नई न्याई हुई ।

हरिपाल नाम विप्रधाम में जनम लिया
 कियो अनुराग माधु दई श्री लुटाय है ॥
 केतक हजार ल बजार को करज आये
 गरज न सरै कियो चारी को उपाय है ।
 विमुख का लेन हरि दामको न दुख दंत
 आये सन्त द्वार लिया भंग बनराय है ॥२३५॥
 बेटे कृष्ण रुक्मिणी महल तहां शोच परयो
 हरयो मन माधु सेवा भाँद रूप कियो है ॥
 पूछी चले कहाँ कही भक्त हैं हमारो एक
 मेहु आऊँ, आयाँ, आये तहाँ, पूछ लियो है ॥
 अजु मग सुन्यो जान बड़ो उत्पान मच्यो
 कोऊ पहुँचाय देयो, लै रूप्या दियो है ।
 करो सनाधान सन्त में विधाय जाऊँ इन्हें
 जाय बनभाँक देखि बटु पन जियो है ॥२३६॥
 देखे जो निहार माला तिलक न सदाचार
 होयंगे भंडार धन जो पै हनो जायो है ।
 करिक विचार कह्यो, यावतार डन्देनो
 दियो सब डार, अल्ला धिगुली में आयो है ॥
 अंगुरी मरोरी, कह्यो बड़ो तू कठोर आयो,
 नाको केमे लाइ, सन्त जेने पाको भायो है ।

१ सम्पत्ति । २ श्रम । ३ आवश्यकता । ४ नहीं । ५ पूरी होती । ६ सेठ । ७ इसी समय । ८ वनिष्ठिका छोटी लंगली । ९ अटक गया ।

प्रकट दिखायो रूप सुन्दर अनूप वह
 मेरो भक्त भूप कहि छातीमें लगायो है ॥२३७॥

(श्री साक्षी गोपाल जी की कथा)

गौड देश वामी उभौ विप्रन की कथा सुनो
 एक वैम बूढो दूजो छोटी वाके मंग है ।
 और और और फिरि आये वृन्दा वन तव
 वृद्ध भयो दुखी कीन्ही टहल अभंग है ॥
 रीझि बूढो विप्र कही निज सुना तोको दई
 रहो नहीं चाह मेरे, लई विनै अंग है ।
 साखी दै गोपाल कही वान प्रति पाल करो
 ग्राम आयें पूछी कहि तिया मों प्रमंग है ॥२३८॥
 बोल्यो छोटी विप्र क्षिप्र कीजिये कही जो वान
 तिया सुन कहैं नहीं, सुना या के योग है ?
 द्विज कहैं नाही केमे करूँ मैं तो दन कही,
 कही कहो भूयो भयो व्यथा को प्रकाप है ॥
 भई मभा भारी पड़े साखी नरनारी सब,
 साखी हैं गोपाल बनवारी और कौन है ।
 लाओ जू लियाय जो पै साखी में आय वेती
 बेटी देहें व्याहि हम करो सुख भोग है ॥२३९॥

१ अवस्था में । २ विपार । ३ प्रसन्न होकर । ४ वहाँ । ५ प्रार्थना करने लगा । ६ विपारी का दौरा था ।

आयो वृन्दावन श्रीगोपालजी सौ बोल्यो चलो
 साखी देवो चलि मोतैं लई है लिखाय के ।
 बीते केऊ मास तब बोले श्याम सुन्दर जू
 प्रतिमा न चलै, 'तो पै बोले क्यो जू भाय के ॥
 लये जब संग युग सेर भोग धरे रंग
 आधे आध पावै चलै नूपुर बजायके ।
 ध्वनि तेरे कान परै पाछे मति दृष्टि करै
 करे, रहों वाही ठौर कहों मैं सुनायके ॥२४०॥
 गये ढिंग गाँव सोच्यो नेकतो चितउँ उत
 चितयो सो ठाढ़े भये दियो मुसकायके ।
 लावो जू बुलाय कही, जायकही आये 'आप
 सुनतही चौकि सब ग्राम आयो धायके ।
 बोलके सुनाई 'साखी पुजी हिय अभिलाषी
 लाख लाख भौंति रंग भरयो उर भायके ।
 आयो न 'स्वरूप फेरि विनैकरि राख्यो घेरि
 भूप मुख 'ढेर दियो अबलौ 'बजायके ॥२४१॥

(भीराम दासजी की कथा)

द्वारिका की ओर सो डाकोर एक गाँव तामें
 रहै रामदाम भक्त भक्ति जाको प्यारीये ।

१ तो प्रेम करके बोले क्यों ? २ भगवान गोपालजी ३ साखी=
 गवाही । ४ मूर्ति । ५ घेरकर-प्रार्थना करके । ६ अपार । ७ ढंकेकी
 चोट ।

जागरण एकादशी करै रण छोड़जू के
 भयो वृद्ध तन, आज्ञा दई नहीं 'धारीये ॥
 बोले भरि नन तेरो आयवो सह्यो न जाय
 चलौ घर धाय तेरे लाओ गाड़ी भारिये ।
 गिरकी जो मन्दिर के पाछे तहाँ ठाढ़ी करो
 भरि 'अंक वारी मोको गाड़ी पधराइये ॥२४२॥
 करी वाही भौंति आयो जागरण गाड़ी चढि
 जानी सब वृद्ध भयो थाकी पाँव गति हैं ।
 द्वादशी की आधीरात लैके चलयो मोद गात
 भूषण उत्तारि धरे जाकी साँची 'रति हैं ॥
 मंदिर उधारि देख्यो परयो हैं उजार तहाँ
 दौरे पाछे, जानी कहैं करै कौन 'मति हैं ।
 'वापी पधराय दूर जाय सुख पाय रहो
 'गह्यो चले जात आनि माख्यो घाय 'अति हैं ॥२४३॥
 देखी चहुँ ओर गाड़ी पै न कहूँ पाये हरि
 पछताओ करि कहैं भक्त चोट लाई है ।
 बोलि उठ्यो एक इहि ओर यह गयो हुतो
 जाय देखैं वावरी को लोह मई पाई है ॥
 दास को जो मारी चोट ओढ़ लई मैं ही अंग
 मैं तो नहीं जाऊँ, बीजी मृ-ति बनाई है ।

१ मानी । २ बाधमें । ३ मति । ४ बुद्धि-उपाय । ५ वावरी ।
 ६ पकड़ लिया । ७ बड़ी ।

मेरी सम मोनो लेहु कही 'जन तोल दहु
बोल्हो मेरे कहाँ, वाली तिया पै जताई है ॥२४४॥

लगे जय तोलवे को वाली पीछे डारि दई
नई गति भई पल्ला उठत न वाली को ।

तब तो गिमाने सब गये उठि घर निज
कैसे नुख पावै फिरो मन ही मुरारी को ॥

घर ही विराज आप कछो भक्ति को प्रताप
जाप कर जोपै फुरै रूप लाल प्यारी को ।

बलि बन्ध नाम प्रभु बांधे बलि भयो तब
आयुध के क्षत हरि धारे दास मारी को ॥२४५॥

(भक्त समूह का वर्णन)

मूल छ०—जसुस्वामी के वृषभ चारि
ब्रजवासी लाये । तेमेई दिये श्याम वर्ष
दिन खेत जुताये । नामा ज्यों नंददास
मुई इक वच्छि जिवाई । अम्ब अल्ह
को नये प्रकट जग गाथा गाई ॥ 'बार
मुखी के मुकुट को, रंगनाथ निज शिर
नये' । 'वत्सहरण पाछे विदित, सुनो
सन्त अचरज भये ॥२४॥

१ पुजारी लोग । २ कान की वाली । ३ झुक गये । ४ बेश्या ।
५ नवाया झुकाया । ६ कुशावतारमें ब्रह्माजीके द्वारा दृष्टा वत्सहरण ।

(श्री जसुस्वामी जी की कथा)

जसु स्वामी नाम गंगा यमुना के मध्य रहै
करै माधु सेवा ताको स्वंती उपजावहीं ।

चोरी गये बैल ताकी इनको न मुधि कछु
तैमे श्याम लाय जोते हल मन भावहीं ॥

आये वृजवासी पैठि वृषभ निहारि कही
इन्हें कौन लाया घर जाय देख आवहीं ।

तेमे बार दोषचार फिरै पे न टीक होत
पृथ्वी मुनि लाये यहाँ उन्हें नहिं पावहीं ॥२४६॥

बडोई प्रभाव देख्या तैमे प्रभु बैल दिये
भयो हिय भाव जाय पावन में परे हैं ।

निपट अधीन दीन भाषा अभिलाषी जनि
दया के निधान स्वामी शिष्य निन्हें करे हैं ।

चोरी त्यागिद्या अति शुद्ध बुद्धि भई नई-
गीति गति लही माधु पन्थ अनुमरे हैं ।

अन्न पहुँचावै दूध दही सौ लड़ावै
आवै मन्त गुण गावै सो अनन्त सुख भरे हैं ॥२४७॥

(श्री नन्ददामजी की कथा)

निकट वरेली गाँव तामें मो हवेली रहै
नन्ददास विप्र भक्त माधु सेवा 'गगी' है ।

करै द्विज द्वेष ताने मुई एक वच्छि लाय

१ मकान । २ मेरी ।

डारि दयी खेत याके गारी बकै लागी है ॥
 हत्या को प्रमंग करें सन्त जाय तासों लैं
 हिन्दू होय मारी गाय बडोही अभागी है ।
 खेतपर जाय ताहि लई है जिवाय देखि
 परे सभी पाँय भक्ति भाय मति पागी है ॥२४८॥

(श्री अल्हजी की कथा)

चले जात अल्ह मग 'लगै वाग देखि परयो
 करि अनुराग हरि सेवा विसतारी है ।
 पाकि रहे आम माँगे माली पाम भोग अर्थ
 कहयो तोरि लेओ तबै भुकिआई डारी है ॥
 चल्याँ दौरि राजा पाम जायके सुनाई बात
 गान भई प्रीति आषु टिंग पाँव धारी है ।
 आय पाँय लोट गयो में तां जू सनाथ भयो
 देवों लैं प्रमाद भक्ति भाव सों सँवारी है ॥२४९॥

(श्री बार मुखी जी की कथा)

वेश्या को प्रमंग सुनो अति रसरंग भरयो
 भरयो घर धन अहो तो पै कौन काम को ।
 चले मग जात जन ठौर स्वच्छ आई मन
 आई भूमि आमन मो लोभ नहीं दाम को ॥
 निकमि भूमि धार हंग ३ दिहारे मव
 कौन भाग जागे मेरे, भेद नहीं नामको ।

१ समय में । २ शीघ्र । ३ सन्त । ४ नाम मात्र कापी ।

मुहरनि पात्र भरि लैं महन्त आगे धरयो
 हरयो दृग नीर कही भोग करो श्याम को ॥२५०॥
 पूछी तुम कौन काके भौन में जनम लियो
 भई सुनि मौन महा चिन्ता उर धरी है ।
 खोलिके निःशंक कहों शंका जनि आनो मन
 कही वारमुखी मेंतो आय पाँयपरी है ॥
 भरयो है भंडार धन करो अंगीकार अघ
 करिये विचार जो पै तो पै दासी भरी है ।
 एक है उपाय हाथ, रंग नाथ देव जू को
 कीजिये मुकुट ऐमो जाय मति हरी है ॥२५१॥
 'विप्रह न ह्युयें ताको रंग नाथ कैने ॥ ६
 'दे हैं हम हाथ, 'तो तो रहैं यहाँ, 'कीजिये ।
 मुकुट बनायो मव घर को लगाय धन
 बनि ठनि चलि बोल हाथ निज लीजिये ।
 मन्त आज्ञा पायके निःशंक गई मन्दिर में
 फिरी यों मशंक देखि तियाधर्म मीजिये ।
 बोले प्रभु बाको, ल्याय आप पहिराय जाओ,
 दियो पहिराय, शीश नयो मति रीभिये ॥२५२॥
 (भक्त दम्पति की कथा)

मूल छ० बीच दिये रघुनाथ भक्त सँग
 ठगिया लागे । निजंन वनमें जाय दुष्ट

१ घर जायगी । २ हाथ में । ३ वेश्याने कहा । ४ मन्त बोले ।
 ५ वेश्याने कहा । ६ सन्त बोले तुम बनवाओ । ७ पुरुषको मारदाला ।

कृत कियो अभागे । बीच दियो सो राम
कहाँ कहि नारि पुकारी । आये सारंग
पाणि शोक सागर तें तारी ॥ दुष्ट किये
निर्जीव सब, दास प्राण संज्ञाधरी ।
कमल नयन सब युगनतें, कलियुग बहुन
कृपा करो ॥५५॥

विप्र हरिभक्त करि गौनो चलो संगतिया
जाक दूनो रंग ताकी बात लें जनाइये ।
मग ठग मिले द्विज पूछी अहो कहाँ जात
जहाँ तुम जाओ यामें मन न पत्याइये ॥
पंथ को छुटाय चाहें वनमें लिवाय जावो
कहै अति सूधो पैडो मनमें न आइये ।
बोले बीच राम, 'तोहू दियो नेक धक धकी
'कही वही वाम राम नाम कहाँ पाइये ॥२५३॥
चले मंग तजि शंक भक्ति रंग भंग जानि
तियापर रीक भक्ति साँची नून जानी हे ।
गये वन मध्य ठग लोभ लागि मारयो विप्र
विप्र लोके चल वधू अति बिलखानी है ॥

१ जी उठे । २ मार्ग । ३ भक्त के मन में प्रची नहीं । ४ उग
बोले अपने बीचमें रामजी हैं । ५ तब भी उनके मनमें धकधकी रही ।
६ स्त्री, ने कहा ।

देखें फिरि फिरि कही कहा देखें मारयो तवें
सो उचारी देखूं वाही बीच जाहि आनी है ।
आये राम प्यारे मय दुष्ट मारि डारे माधु-
प्राण सो उचारे हित गीतियों बखानी है ॥२५४॥

(वेपनिह राजाकी कथा)

मूल छ०-तिलक दाम धरि जाय कोऊ
तिहि गोविंद जानै । पट दरसनी अभाव
सर्वथा घट करि मानै । भाँड भक्तके वेप
धारि तहँ इकदिन आये । नरपतिके दृढ
नेम तिनहुके पाँव धुवाये ॥ भाँड वेप
गाढा गह्यो, दरस परस उपीज भगति ।
एक भूप भार्गव को, कथा सुनत हरि
होय रति ॥५६॥

राजा भक्त राज इम भाट को न काज होय
भोग हरिको जो धन इनको न दीजिये ।
आये वेप धारि सो पुजाय नाचे दे के तारि
नृप सो निहारि कही यों निहाल कीजिये ॥
भोजन कराय भरि मुहरनि थार लाया
आने धरि बिने करी प्रभु यह लीजिये ।

१ प्रेमकी । २ पट शास्त्री=पंडित ।

भाँड गही भक्ति बोले अबे 'वाम' भावै नहीं
बाँह गही प्रभु, कैसे रहें मति भीजिये ॥२५५॥

(एक अन्तर्निष्ठ भक्त राजा की कथा)

मूल छ०—हरि मुमिरगा हरि ध्यान आन
काहू न जनावै । अलग सो इहि विधि
रहै अंगना मर्म न पावै । निद्रावश सो
भूप वदन ते नाम उचार्यो । रानी पति
पर रीझि बहुत 'वसु' तादिन वार्यो ॥
परयो मोच कह्यो नारिसों, आज भक्ति
मेरी 'कुजी' । अन्तर्निष्ठ नृपाल इक, परम
धर्म नाहि न 'धुजी' ॥५७॥

तिया हरि भक्ता कहै पति में न भक्त पायो
रहै मुरझाय मन बढ़यो शोच भारी है ।

मरण न जान्यो निशि मोदत पिछान्यो भाव
विरह प्रबल नाम निकम्यो विहारी है ॥

सुनत हो रानी प्रेम सागर समानी भोर
मग्यति लुटाई मान्यो नृपति सुखारी है ।

देखि उतसाह भूप पृथ्वी निज बात कही
रह्यो तन नहीं जीव गमन विचरी है ॥२५६॥

१ वामना इच्छा २ अच्छी नहीं लगती । ३ फिर वामना कैसे रहें ।

४ घन । ५ कुठिन हो गई । ६ भंडा लेकर चलनेवाला । ७ सुखदायक

देखि तनु त्याग पति भई और गति वाकी
ऐसे रतिमान में न भेद नेक पाया है ।

भयो दुःख भारी सुधि बांधि सो विसारी तब
कछु ना विचारी भाव गति दिये दायो है ॥

निशि दिन ध्यान तजे प्रबल विरह प्राण
भक्ति रमखान रूप जात कापें जाया है ।

जाको यह प्राप्त होय जानै सोई भाव रम
डोर मति खोय सोई प्रकट दिखायो है ॥२५७॥

(श्री गुरुचरणनिष्ठ सन्तकी कथा)

मूल छ०—'अनुचर आज्ञा माँगि कह्यो
कारज को जेहों । 'आचारज कहि बात
तोहि आयो पै कहि हों ॥ स्वामी रहे
'समाय दास पुनि वापस आयो । गुरुके
वच विश्वास फेरि 'शव घरमें लायो ॥
सत्य शिष्य प्रण करनको, सुनत सबै
साँही कह्यो । गुरु गदित वचन है सत्य
अति, दूढ़ प्रतीति गाढो गह्यो ॥५८॥

बडो गुरु निष्ठ साधु कछु धटि करि जानै
स्वामी मन्त पूज्य मानै, कैसे समझाव्ये ।

१ शिष्य । आचार्य-गुरु । ३ मर । ४ मुरदा शरीर । ५ कहा ।

नितही विचारें, पुनि ठारें, पैं उचारें नाहीं
 चल्थो जब रामनको कही फिरि आइये ॥
 स्वामी 'पाये, शव समसान घाट लाये यह
 दृठ परि शव सो फिराय घर लाइये ।
 स्वामी प्राण धारि बात कही साँचो भाव जानि
 सन्त राम गुरु ते अधिक मन भाइये ॥२५॥

(श्री रैदासजी की कथा)

मूल छ०—सदाचार श्रुति शास्त्र वचन
 अविमूढ उचार्यो । क्षीर नीर विवरणसों
 परम हंसन ज्यों धार्यो ॥ भगवत कृपा
 प्रताप परम गति इहि तन पाई । राज
 सिंहासन बैठि ज्ञाति परतीति दिखाई ॥
 वर्णाश्रम अभिमान तजि, पद रज
 वन्दत जामु की । सन्देह ग्रन्थि खंडन
 निपुण, वाणि विमल रैदास की ॥२६॥

स्वामी रामानन्दजी को शिष्यब्रह्मचारी एक
 लावै वृत्ति चुटकी की कहे तामो 'वाणियो ।
 करो अंगीकार साधा कही दस ब्राम वार
 वरमे प्रबल धार तामें वापें 'आनियो ॥

१ मर गये । २ वैश्य । ३ लाये ।

भोग सो लगावे प्रभु ध्यान नहीं आवें अरे
 कामों आज लायो जाय पूछी नीच मानियो ।
 वराजि रख्यो हो स्वामी बामों जनि लायो कर्म
 दियो शाप ताते नीचे कुल में 'उतारियो ॥२५६॥
 माता दूध प्यावै याको छूयो हु न भावै नेक
 मुधि आवै पाछिली सो मेवा के प्रताप है ।
 भइ नभवाणी सुनि 'स्वामी मन जाणी बड़ो
 दंड दियो मानि वेग चलि आये आप हैं ॥
 दुखी पिता माता स्वामि देखि लपटाये पाँव
 कीजिये उपाय कियो शिष्य गये पाप हैं ।
 स्तन पान किये जाये आये ईश जानि उर
 जाने न अजान साथ रहे यही 'ताप है ॥२६०॥
 बाढे रमादाम हरि दामन सों प्रीतिकरी
 पिता न मुहाई दह ठौर 'पिछवार ही ।
 हुतो धन माल तामें दियो न 'विमान कट्टु
 पिता बसीभूत ताके किये जब 'न्यागही ॥
 गाँठे 'पगदासी घर बात न प्रकाशी कर्म
 ल्यावै 'खाल करि जूती सन्त को मँभार ही ॥
 डारि लीन्ही 'ज्ञान कियो मेवाको सुधान रहे
 आप चांड माहि पावै वाँटि साधु 'धारही ॥२६१॥

१ बतार दिया । २ आकाशवाणी । ३ आचार्य महाप्रभु । ४ हृदयमें ।
 ५ जलन । ६ घरके पिछाड़ी । ७ दूसरी माता । ८ अलग । ९ जूती ।
 १० चमड़ा । ११ छप्पर । १२ यही बात धार ली ।

महै अति कष्ट अंग हिय सुख शील रंग
 आये प्यारे हरि लियो भक्त वेप धारिके ।
 कियो बहुमान खान पान सों प्रमन्न हूँ के
 'पारस' सो देय कही राखियो मँभारिके ॥
 मेरो धन राम मेरो 'पाथर' न मारै काम
 दाम में न चाहौ, चाहौ डारौ तन वारिके ।
 गंगी लेय मोनो कियो दियो यों बनाय पुनि
 कही 'ज्यो' गयो दान, 'पीओ' तु निगरिके ॥२६२॥
 आये फेर नारी वेप पाम मो तेरह बीते
 प्रीति करि नेने कही पान की रीति को ।
 दाही और लीज मगे पद न लीजै अब
 चाये मोनो कीजे में तो पारस हों 'भीतिको' ।
 लके 'उठिगये' नये 'पौ' रु सो सुनो पाँवे
 मेरा में मुहर पाँच निर्या प्रतीतिको ।
 मेवाह करत डर लाग्यो निशि कह्यो हरि
 छोड़ो दूठ आपनी सो गयो मोरी जानको ॥२६३॥
 मानि लई दान नर्य 'गौ' लें बनाई चाव
 मन्तन बसाय हरि मंदिर चुनायो है ।
 विविध वितान ताने शनों जो 'प्रमाण' होय
 मोय गई भक्ति पुरी जग परा गायो है ॥

१ पारस पत्थर, जिसके स्पर्श से लोहा स्वर्ण हो जाता है ।
 २ पत्थर । ३ दर । ४ चले गये । ५ गिननी ।

दरशन आवैं लोग नाना विधि राग भोग
 रोग भयो विप्रन को तन मव जायो है ।
 बडे वे खिलारी रहे थेतो आन डारि, करी
 घर पै अटारी फेर द्विजन भ्रमायो है ॥२६४॥
 प्रीति रमराश मो रैदाम हरि सेवत है
 घर में दुगय लोक 'रंजनादि' टारी है ।
 प्रेरे हरि हिये, जाय विप्रन पुकार करी,
 भरी सभा नृप आगे रकें मुख गारी है ॥
 'जनको' चुनाय नृप करि न्याय प्रभु मोपे
 फेल्या जग यश साधु लीला 'मनहारी' है ।
 जेते अनिकूल तिन्हें माने अनुकूल ये तो
 मन्तन प्रभाव मणि हंठरी की तारी है ॥२६५॥
 बसत चित्तौ मँभ गनी एक भारी नाम
 नाम विन कान सुनो आय जिण्या गई है ।
 मंग हुत विप्र सुनिशि प्रतन आग लागी
 भागी मति, नृप आगे भीर जब गई है ॥
 न्यायहित लायके विगजे मिहामन प्रभु
 कही जो उलाय लेवै इन्हें मोही 'जयी' है ।
 पढै विप्र वेद पै न गये प्रभु निन पाम
 'गायो' पद आय मोद बैठ भक्ति 'लई' है ॥२६६॥

१. लुपाकर । २. पुत्र कन्या । ३. रैदामजी । ४. मनको
 हननेवाली । ५. कुझी । ६. शीघ्र । ७. भीतनेवाला । ८. रैदामजी ने ।
 ९. ग्रहण की है-मति विद्यामहन्त्रको प्रभु ग्रहण नहीं करते ।

गई घर भाली पुनि बोलिके पठाये अहो
 जेमे प्रति पाली तेमे आय प्रति पालिये ।
 आप सो पधारे उन बहु धन पट वारे
 विप्र सुनि पाँव धारे सीधो दे निवारिये ॥
 करके रसोई विप्र भोजन करन बैठे
 दू द्वे मध्य एक सो रैदाम को निहारिये ।
 देखि नई आँखे दीन भोपे शिष्य लाखों भये
 'स्वर्ण' को जनेऊ काढ़यो कीन्ही त्वचा न्यारी ये ॥२६७॥

इस श्री मियादासजी कथित प्रसंग के अतिरिक्त अन्योन्य श्री अगस्त्य मंडितादि श्रुति प्रणीत ग्रंथों एवं प्रसंग पारिजात, महा भागवत चरित आदि प्राचीन ग्रंथों में प्रसिद्ध है कि श्री रमादासजी या श्री रैदामजी श्रीयम (धर्मराज) के अवतार हैं। यमराजजी को तीन बार पृथ्वी पर जन्म लेने का शाप हुआ था जिसके अनुसार प्रथम श्री विदुरजी के रूप में दूसरे ब्रह्मचारी के रूप में और तीसरे रैदामजी के रूप में अवतरित हुए हैं।

प्रथम श्री विदुरजी का जन्मकर्म भक्तिभाव आदिकी कथा पुराण प्रसिद्ध है। दूसरे ब्रह्मचारी रूप में आपने काशी के समीप अलसा ग्राम में ब्राह्मण कुल में और तीसरे श्रीरमादासजी के रूप में काशी में रघुजी चर्मकारके यहां चैत्र शु० १ शुक्रवार को अवतरित हुए हैं।

श्री रैदामजी की माता एक गंगाजी में बहती आई हुई काशी में रघुजी के द्वारा गंगा से निकाल, घर ला, आवश्यक उपचार कर

१. टाल दिये। २. नम गई नीचा हो गई। ३. गरीब-निर्धनमान। ४. श्री रैदामजी ने अपने शरीर की त्वचा को हटाकर सोनेका जनेऊ निकालकर सबको दिखलाया।

प्राणदान दी गई हुई कुमारी है, जिसने पंचायत में अपना परिचय देते हुए कहा है मैं ब्राह्मणकी कन्या हूँ, पिता घर गये, माता सती हो गई, मैं गंगा में कूद पड़ी, अब मैं उसीकी दासी होकर रहना चाहती हूँ जिसने मुझे माता गंगा की गोदी से प्राप्त किया है, जीवन दान दिया है। यदि वह मुझे स्वीकार न करेगा तो मैं पुनः गंगाजी की गोदी में ही चली जाऊँगी। इस कथन के अनुसार रघू ने उसे स्वीकार कर लिया और पंनों ने शिवाह करा दिया। शेष कथा प्रायः वही है जो श्री मियादासजी की टीका में आ गई है।

(श्रीकबीरजीकी कथा)

मूल छ०—भक्ति विमुख जे धर्म सो सब
 अधर्म करि गाये। याग यज्ञ व्रत दान
 भजन बिन तुच्छ दिखाये। 'हिन्दू' तुरक
 प्रमाण रमैना शबदी साखी। 'पक्षपात'
 नहि वचन सबहिके हितकी भापी ॥
 आखूढ दशार्ह 'जगतपर, मुख देखी नाहीं'
 'भनी। कबीर कानि राखी नहीं, वरणाश्रम
 'पट दशना ॥६०॥

अतिहि गंभीर मात सरस कबीर हियो
 लियो भक्ति भाव जाति पाति सब टागिये।

१. रमैना शब्दों और साखी में कही गई श्रीकबीरजी की दाखी हिन्दू और तुरक-मुसलमान दोनों के लिये प्रमाण है। २. तरफदारी। ३. लोक से परे-परमार्थ। ४. कही। ५. षट् शास्त्री पंडित।

भई नभ वाणी भाल तिलक बनाय करो
 करो गुरु रामानन्द गरे माल धारिये ॥
 देखें नहीं मुख मेरी मानिके मलेच्छ मोको
 जात है नहान गंगा तन मग डारिये ।
 रजनी के शेष में आवेश में चलत आप
 परै पग, राम कहें, मंत्र सो विचारिये ॥२६८॥
 कान्ही नहीं बात माला तिलक बनाये गात
 नलि उल्लास माता शोर कियो भारी ये ।
 पहुँची पुकार आनी रामानन्द पास आय
 करी करी पहुँची आप नाम सो उचारिये ॥
 न मंत्री पति भक्तो तम कव शिष्य कियो
 लाये करि परदा सो पृथ्वी कहि डारिये ।
 राम नाम मंत्र यही लिरयो मव तंत्रन में
 मोलि पट लिने, माँचो मत, उर धारिये ॥२६९॥
 मुने नानो वानो हिये राम मँडरानो
 कने कहि क कवानों वह रीति कछु न्यारीये ।
 उतनोही करे जामें तन निर्वाह होय
 "मोयगई और बात भक्ति लाग प्यारिये ॥

१. ललाटपर २. कवीरजीने कहा । ३. फिर आकाशवाणीने कहा ।
 ४. मार्ग में । ५. गिरा दो लेट जाओ । ६. कुछ रात रहते । ७. श्री
 आचार्य पाद । ८. आपका नाम लेता है । ९. श्री आचार्यपाद ने
 कहा । १०. परदा । ११. समाई ।

ठाढे मंडी मांभ पट बेचन ले जन कोऊ
 आयो मोको देहु मोगी देह है उधारिये ।
 लागे देन आधो पारि आधे सों न काम होय
 दियो सब लेहु जोपै यहै उर धारिये ॥२७०॥
 तिया सुत मात देखें मग भुखे, आवें कव,
 हाटन में दधि रहं, लावें कहा धामको ।
 साँचो भक्ति भाव जान्यो निपट सुजान वं तो
 कृपाके निधान गेह शोच परयो श्यामको ॥
 तीन बों वितायें दिन बालद ले धाये प्रभु
 आय डारि दई घर देन सो आगमको ।
 माना करे शोर कई हाकिम मंगरि बांधे
 हागे विन जाने मुन लेन नहीं दाम को ॥२७१॥
 गये जन दोय चार हूँठ के लिवाय लाय
 आये घर सुनी बात जानी प्रभु पारको ।
 रहे सुख पाय कृपाकरी रघुराई दई
 छिन में लुटाय सब बोलि भक्त भीरको ॥
 दियो झोड तानो वानो सुख मरमानो हिये
 कियो शेष धाये सुनि विप्र तजि धीरको ।
 क्यों रे तू जुलाहे धन पाये न बुलाये हमे
 शूद्रन्ह जिमाय दीन्हें कहें यो कबीर को ॥२७२॥

१ मन्त । २ दुकानों में छुप रहे थे । ३ अन्न में लट्टे बहुत
 से बेल । ४ कपड़ा बुनना ।

क्यों जो उठि जाऊँ कहा चोरी धन लाऊँ नित
हरि गुणगाऊँ कोऊ राह में न मारी है ।
शत्रुनको मान कियो याही में अमान भयो
दियो हमें जाय जो पै तोही तो जिवारी है ॥
घर में तो नाही भंडी जाऊँ तुम बैठे रहो
नीठके छुडाय पैंडो छुपे व्याधि टारी है ।
आये प्रभु आप द्रव्यलाय समाधान कियो
लियो सुख, भक्त होय कोरति उजारी है ॥२७३॥
ब्राह्मणको रूपधारि आये प्रभु बैठे जहाँ
काहे को मरत भौन जाआ जू कबीर के ।
कोऊ जाय द्वार ताहि देत है अढाई मेर
वेर जनि लाओ चले जाओ यो बहीर के ॥
आये घर मौक्त देखि निष्ठ भगन भये
नये नये कौतुक ये कैसे रहे धीरके ।
बारमुखी लई मंग मानो वाही रंग रंगे
जानो यह बात करी डर अति भीर के ॥२७४॥
सन्त देखि डरे सुख भयो है अमन्तनको
तब तो विचार मनमाक्त और आयो है ।
लैी तप मभा तहाँ गये पै न मान कियो

१ बलाजाऊँ । २ क्या । ३ मैंने कोई रास्ता नहीं लूया है ।
४ जिन्दगी । ५ बजार । ६ मुश्किलसे । ७ रवानाकर दिये । ८ धीरज
करके ।

कियो एक चौज उठि जल ढरकायो है ॥
राजाजिय शाच पश्यो, कह्यो कहा करयो कही
जगन्नाथ पंडा पग वरत बचायो है ।
सुनि अचरज भरि नृपने पठाये नर
लाये सुधि कही अजू साचही सुनायो है ॥२७५॥
कही राजा रानी सो जू बात वह साँचो भई
आँच लागी हिये अब कहो कहा कीजिये ।
चले ही बनत चले शीश तृण बोझ भारी
गलेमो कुटहरी बाँधि तिया मंग भीजिये ॥
निकमे बजार मौक्त डारि दई लोक लाज
कियो में अकाज दिन दिनतन बीजिये ।
दृगते कबीर देखि ह्वे गये अधीर महा
आये उठि आगे कह्यो डारि मति रीझिये ॥२७६॥
देख के प्रभाव फिर उपज्यो दर्भाव द्विज
आयो वादमाह जा को मिकन्दर नाँव है ।
विमुख समूह मंग माता हू मिलाय लई
जाय के पुकारे सो, दुखायो सब गाँव है ॥
लाओरे पकरि बाको देखौ मैं भकर कैंपो
अकर भिड़ऊँ गाढे जकरि तनाव है ।

१ म-पक्षी कहा । २ बोझ ढाल दा, प्रसन्न होजाओ । ३ मिकन्दर का
राज्य काल विक्रम सं० १५४५ से १५७४ तक २९ वर्ष रहा ।
४ दौरी ।

आनि ठाढ़े किये काजी कहत सलाम करो
 जानों ना सलाम जा ने राम गाढ़े पाँव है ॥२७७॥
 बांध के जंजीर गंगा नीर माँझ बोरि दिये
 जाये तार ठाढ़े कहै यत्र मंत्र आवहीं ।
 लकरीन माँझ डारि अगिनि प्रजारि दर्ह
 नई मानो भई देह कंचन लजावही ॥
 विगत उपाय भये तऊ नहि नये आप
 पुनि मतवारो हाथी आनिके भुकावहीं ।
 आवत न टिंग सो चिंधारि मारि भाजि जाय
 आप आगे सिंह रूप बैठे सो लखावहीं ॥२७८॥
 देखि चारुशाह सो प्रभाव गहि पाँव परेचा
 देखि करामात माँत भये सब लोग हैं ।
 प्रभु पै बचाय लीजे हमें न गजब कीजे
 लीजे जोई चाहैं देश गाँव नाना भोग हैं ॥
 चाहैं एक राम जाको जपैं आठों धाम और
 दाम सों न काम जामें भरे कोटि रोग हैं ।
 आये घर जीति साधु मिले करि प्रीति जिन्हैं
 हरिकी प्रतीति वेई गायबके योग है ॥२७९॥
 होयक विमाने क्षिप्र लिये चार विप्रनने
 मूँड मुँडवाय वेप सुन्दर बनाये हैं ।
 दूर दूर गामन में नामन को पुछ पुछ
 नाम ले कबीरजी को झूठे न्यांति आये हैं ॥

आये सब साधु सुनि ये तो दूर गये कहूँ
 चहुँ दिशं सन्तन पै फिरें हरि धाये हैं ।
 इनही को रूप धारि न्यारो न्यारी ठौर बैठे
 येहु मिलिगये नीके पोषिके भिक्षाये हैं ॥२८०॥
 आई अपमरा छलिवेके लिये वेप किये
 दिये देखि गाढ़े फिरिगई नहीं लागी है ।
 निजश्याम रूप प्रभु आनिक प्रकट भये
 लियो फल नैननको बड़ो बड़ भागी है ॥
 शीश धरे हाथ तन साथ मेरे धाम आओ
 गाओ गुण रहो जोनों तोरी मति पागी है ।
 मगहर जाय भक्ति भावको दिखाय बहु
 फूलन मँगाय पीढि मिल्यो हरि रागी है ॥२८१॥
 इसके अतिरिक्त अन्य ग्रंथों के अनुसार श्री कबीरजी के जन्म
 और बाल्य काल की कथा इस प्रकार है ।

श्री कबीरजी आ मल्हादजी के अवतार हैं, चंद्र कृष्ण ८ की
 काशीपुरी में लहरनारा नामक तलाव में एक कमल पत्र पर आपका
 प्राकट्य हुआ, वही से श्री नीरु और नीमा नामक जुनादा दम्पति के
 द्वारा लाकर पाने गये । महान्मा धर्म दाम जी ने कबीर जी का जन्म
 संवत् १४५५ विक्रम लिखा है ।

अनन्त श्री यतिराज राज आचार्यवाद श्री रामानन्दाचार्य जी
 की यात्रा में श्री कबीर दामजी साथ थे और श्रीजगदीशपुरी में चिमटा

१ मगहर नामक गाँव बस्ती और गोरखपुर के बीच में उत्तर
 प्रदेश में है । यहाँ कबीर जी की समाधि बनायी है ।

गोडकर बहते हुए समुद्र को रोकने का और दक्षिण देश में अनेक स्थानों पर श्री कबीर जीके अनेकानेक चमत्कारों का उल्लेख है जैसा कथा श्री विद्या दासजी की टीका में पायः आया है ।

(महाराजा श्रीपीपाजी की कथा)

मूल छ०—प्रथम भवानी भक्त मुक्ति माँगन को धार्यो । सत्य कही तेहि शक्ति मार्ग हरिशरण बताया । रामानन्द पद पाय भये भक्तीकी सावाँ । गुण असंख्य अनमोल सन्त धरि राखत घोवा । परस प्रणाली सरस अति, सकल विश्व मंगल कियो । पीपा प्रताप जग वासना, नाहर को उपदेशिया ॥६३॥

गामसैन गढ़ बड़ा पीपा नाम राजा भयो
लयो देवी मेवा प्रण रंग चढ्यो भारिये ।
आये पुर माधु मीधो दियो जोई मोई लियो
कियो मन बाकी प्रभु बुद्धि फेर डारिये ॥
मोयो निशि रांयो देखि सपनो बेहाल अति
प्रेम हीन देह धर के पछारिये ।

१ अत्यन्त सम्ली प्रणाली (श्रीरामानन्द सम्प्रदाय) का स्पर्श (प्रहण) करके ।

अब न मुदाय कछु बाँहू पाँय परि गई
नई रीति भई याहि भक्ति लागी प्यारिये ॥२८२॥
पुछ्यो हरि पायवेको मग तब देवी कछो
स्वामी रामानन्द गुरु करि प्रभु पाइये ।
लोग जानै चोगे भयो गया वह काशीपुरी
फुरी मति अति आये जहाँ हरि गाइये ॥
द्वार में न जान देत आज्ञा ईश नाहीं कही
राजमीन हेत सुनि मव ही लुटाइये ।
कछो कवां गिरो चले गिरन प्रमत्त हिये
जिये सुख पायो आय दग्ध दिखाइये ॥२८३॥
क्रिये शिष्य कृपा करि दई हरि भक्ति हृद
कही अब जाओ गेह साधु मेवा कीजिये ।
आये आज्ञा पाय धाम कीन्ही अभिराम रीति
आवै मन्त सुख मानि घरमधि लीजिये ॥
बिनये वरस तब सरस टहल जानि
प्रीति को न पागवार चीटी लिखि दीजिये ।
हूजिये कुपाल कही बात प्रतिपाल करो
चले युग वीर जन मंग मति रीक्षिये ॥२८४॥
कबीर रेदाम आदि दाम मव माथ लिये
आय पुर पास पीपा पालकी लौ आया है ।

१ श्रीआचार्यपादने आकर दर्शन दिये । २ जो कही थी । ३ दो सौ बीस अथवा चालीस ।

करी साष्टांग विनै न्यारी न्यारी साधुन में
 धन को लुटाय मो समाज पधरायो है ॥
 जैसी कीन्ही मेवा बहु मेवा नाना राग भोग
 वाणी के न योग्य भाग्य कामों जात गायो है ।
 करी प्रार्थना मो 'घर रहौ कै' अनीन करो
 करिके प्रतीति गुरु पग लागि धायो है ॥२८५॥
 लानी लंग रानी दश देय कही मानें नहीं
 कष्ट को बनावै डरपावै मन ल्यावहीं ।
 कामरी को फारि मध्य मेखला पहरि लेओ
 डारो वस्त्र आभरण जो पै नहीं भावहीं ॥
 कहूँ पै न दाय, दई गेय, भोग भक्ति आई
 छाटी नाम मीना मरे डारी न लजावहीं ।
 यह दूर डारो करो तन का उधारो, कियो
 दई 'स्वामी' आज्ञा तोहू पीपा हि न भावहीं ॥२८६॥
 जो पै यापै कृपाकरी दीजे काहू मंग करि
 मोरे नहीं 'राम पीपा' कहै बार बार है ।
 सोहँ मो दिवाई निज स्वामी तब कर धरि
 चले विप्र एक अरयो छोड़ै न विचार है ।
 खायो विप, ज्यायो पुनि, बोधिके पठायो घर
 आयो यों समाज द्वारावती सुख मार है ।

१ गौंगोन गढमें । २ विप । ३ श्रीआचार्यमहाप्रभु । ४ भेष ।
 ५ समझाकर ।

रहे कोउ दिन आज्ञा माँगी इन रहिबेकी
 कूदे मिन्धु दर्शन मो अपार है ॥२८७॥
 आगे आये वे, ली दिगें हैं पठाय जन
 देखी द्वारावती छत्र भिते बहु भायक ।
 महल महल मौक्त चली पहल लगि
 रहे दिन मात सुग कहे कौन गायक ॥
 आज्ञा दई जाग्यो १ राजो न चाहै ये तो
 पीवें वह रूप कहै कल कल जायके ।
 भक्त बूडि गयो, यह वडो दृढलंक होय
 मेढो तमअंक प्रभु कल अकुलाय के ॥२८८॥
 चले पहुँचायके श्रीक अधीन 'आप
 चिन जल मीन जैमे तेम फिरी आये हैं ।
 'देखी नई बात गात सूखे पट भीजे हिये
 लिये पहिचानि आय पग लपटाये हैं ॥
 दई लैके आप पाप जगत को दूर करे
 'ढरो' कहूँ और मीना कहि समझाये है ।
 छठे ही मुकाम वनमें पठान भेट भई
 लई अनीन लिया 'कियो' चैन प्रभु धाय है ॥२८९॥
 'अभू' चली जाओ घर कैसे कैसे आवैं डर
 बाली हरि जाने पै न भाव 'अभू' आयो है ।

१ काला टीका । २ भगवान श्रीकृष्ण । ३ दारिकावासियों ने
 ४ श्रीपापाजीने दारिकावालोंको । ५ चलो । ६ प्रभुने आकर कष्ट मेढा ।
 ७ अभी भी ।

लेत हो परीक्षा में तो जानूँ तोरी इच्छा 'तोपै
 सुनि दृढ बात कान अति सुख पायो है ॥
 चले मग दूसरें सो तामें एक मिह रहै
 आयो बास लेत शिष्य कियो समझायो है ।
 आयो और गाँव शेषसाई प्रभु नामरहे
 'करे बाँस हरे, 'हरे चीधर सुहायो है ॥२६०॥
 दोऊ तिया पति देखे आयो भागवत तोपै
 घरकी 'कुगति रति साँची ले दिखाई है ।
 लहँगा उतार बेचि दियो ताको सीधो लियो
 करो अज पाक, वधू 'कोठी में दुराई है ॥
 करिके रमोई भोग लगा कद्यो आयो दाऊ
 चीधर सो कहै पाछे लेऊँ मीथ भाई है ।
 स्वामी कहैं नहीं मीता जाओ तुम लाओ वाहि
 सीता गई वाही और नगन लम्बाई है ॥२६१॥
 पूछी कहो बात ये उधारे क्यों हैं मात कही
 ऐसे ही 'विहात माधु सेवा मन भाई है ।
 आवें जवें मन्त सुख होत है अनन्त तन
 ठक्यो के उधारे कहा चरचा चलाई है ॥

१ तरेसे । २ मृगे बासाको हरेकर दिये । ३ कृपाकी । ४ दरिद्र दशा ।
 ५ प्रीति । ६ अन्न रम्बने के लिये मिट्टी का एक ऐसा बड़ा सा पात्र
 बना लिया जाता है जिसमें १०, २० या २५, ५० मन अन्न भरा
 जा सके; इसको कोठी या कोठला कहते हैं । ७ ऐसेही दिन बीतते हैं ।

जानिगई प्रीति राति देखी एक इनही में
 हमको कहत तोपै छटाहु न पाई है ।
 दियो पट आधो फारि गहिक निकारि लई
 भई सुख 'रेल पाछे पीपासों सुनाई है ॥२६२॥
 करे वेश्या कर्म अब धर्म है हमारी यही
 कहि जाय बैठी जहाँ नाजन की ढेरी है ।
 धिरि आये लोग जिन्हें नैनन को रोग देखि
 दूर भयो सोग नेक नीकेहु न हंगी है ॥
 कहैं तुम कौन वारमुखी नहीं भौन संग
 भरुआ सो भौन, सुनि परी मानो बेरी है ।
 करी अन्न राशि आगे मुहरें रुपैया पागे
 पठे दई चीधर के, 'तबही निवेरी है ॥२६३॥
 आज्ञा माँगि टोडे आये कभू भूखे कभू धाये
 ओचकही 'दाम पाये गये अमनान को ।
 मुहरन 'भाँडो भूमि गल्यो देखि छोड आये
 कही निशि तिया कही जाओ 'मर 'आनको ॥
 और आये चोरी करै 'हरे सुनि वाही और
 देखी सो उधारि साँप छूत हने प्राण को ।
 ऐमै घर आन परी मात मन बीस रही
 तोले पांच पांच मत्र एक ही प्रमाण को ॥२६४॥

१ प्रवाह । २ चीधरजीने लेकर उन सबको उसी समय लुटा दिया ।
 ३ कृप्य । ४ मटक । ५ सरोवर तलाव । ६ अन्य-दुमरा । ७ गये ।
 ८ छूते ही ।

जोई आबौ द्वार ताहि देत है अहार और
बोलि के अनन्त सन्त भोजन करायो है ।

भये दिन तीन धन खाय पाय पुरा कियो
लियो मुनि नाम सुरसेन नृप आयो है ॥

देख्यो भक्तियो नयो देवो दीक्षा मंदि
दीक्षा तब लेय कयो आयसु मुदायो है ।

कयो नोई दयो हार पावौ दयो कयो
भयो नोई दयो हार पावौ दयो ॥२६५॥

करके परीक्षा दई दीक्षा मंग रानी दई
भई हो हमारी करो परदा न सन्त मो ।

दियो धन योग, कहु मय्यो मे लियो भूप
तन पद दियो, कहु मय्यो मे लियो भूप ॥

मुनि जर बर गये भाई मेन मूरज के
ऊज मय्यो कयो कहु मय्यो कयो ॥

कयो मय्यो कयो लियो चाहै खेला बहु
दियो मय्यो कयो लियो अनन्त मो ॥२६६॥

१ नमिष । २ अन्तर्गत प्रणाम किया । ३ कृपा करो । ४ श्रीपापाजीने कहा स्वामी रानी और धन हैं लक्ष्मण रख दो । ५ राजा मय्ये सेन ने शरीरका (राजापने का) धर्मद त्याग दिया और प्राणीपापको भक्षणसे कड़ा माना । ६ मदान । ७ श्री पीपाजी । ८ अंत । ९ इनही लोगोंने ।

वनजारा आय 'दाम खोल बोल्यो खेला दीजे
लीजिये जू आय गाँव चरन पठाये है ।

गयो उठि पाछे बोलि सन्तन 'महोखो कियो
आयो बाही समे कही लेहु मनभाये है ॥

दरमन करि हिय भक्ति गा भरि आयो
आनिके वसत ॥ १ ॥ गाधु पालाय है ।

और दिन तीन गये लोका भूत, भूत, भूत
लियो बाँधि दुष्टन ने आयो लनि मय्यो है ॥२६७॥
गयो आप घेडा लेख पाछे वर सन्त 'आयो
अन्न कहु नही 'कहु जयकर लाउये ।

विषयी उणिन पद देनि के मय्यो लई
दई मन लोका लई मरी निजि आउये ॥

भोजन ॥ १ ॥ भक्त पीपाजी पधारं पृथ्वी
वारे तन प्राण जय कलिके जनाइये ।

करके शृंगार गीता चली मुक्ति मेह आयो
कांधे पे चढ़ी आप लियो 'लिकुये ॥२६८॥

हाट पे उजार दई द्वार आप अडे रहे
देखे मुखे पग पाना कैम कर आई है ।

म्यामी दलित मय्यो कयो द्वै निदानी नय
आय पाय मय्यो कयो गयो मुखदाई है ॥

१ कपडा । २ महोखो भंडाग । ३ कभी दूसरे दिन । ४ वर आ गया होगा ऐसा मानकर । ५ पत्नीने विचार । ६ प्रसन्न करो ।

मानो जनि शंक काज कीजिये निशंक धन
दियो विन 'अंक जापै लैरें मरै भाई हैं ।
मरयो लाजभार चाहै मरयो भूमि फारि दृग
बहै नीरधार आई दया दीक्षा पाई है ॥२६६॥

चलत चलत बात नृपति श्रवणपरी
भरी सभा विप्र कहैं वडी विपरीत है ।
भूप मन आई यह निपट घटाई होत
भक्ति 'सरसाई नहिं जानी घटी प्रीत है ॥

चले पीपा बोध देन द्वारे हीने 'सुधिदई
लई मुनि कही जाके कहो 'सेवारीत है ।

कह्यो मूढ राजा 'मोजा गाँठे घैठयो मोर्चाघर
मुनि दौरि आयो 'रहेठाढे कौन नीति है ॥३००॥

हुती घरमाँझ बाँझ रानी एक रूपवती
माँगी काहि लायो वेग चल्यो सोच भारी है ।

डगमग पाँत्र धरै पीपा सिंह रूप धरे
ठाढे, देखि डरै डत आये आये स्वारी है ॥

जावत विलायगयो 'निरादिग' सुत भयो
'नयो भूमि परि कलानानीन निहारी है ।

- १ लिखा पढी के । २ भक्ति की सरसता को राजाने नहीं जानी ।
३ लख ४ सेवा के विधान में । ५ जूता । ६ प्रयो यहाँ क्यों खड़े
रहे ? नीतर क्यों नहीं पधारे ? आपके लिये कौन सा निचम है ।
७ सिंह अदृश्य हो गया । ८ उस बाँझ रानी के पाम पुत्र हो गया ।
९ साष्टांगप्रणाम किया । १० बोला कि आपकी चतुराई जानी नहीं जाती ।

प्रकट्यो स्वरूप निज स्त्रीभिके 'प्रसंग कथ्यो
कहाँ वह रंग शिष्य भयो लाज 'टारी है ॥३०१॥
कियो उपदेश 'नृप हूँ मैं प्रवेश कियो
लियो वही प्रण आप आये निज धाम है ।

बोल्यो एक साधु आय देओ एक निशि तिया,
लेओ, कह्यो भागो संग भागी सीता वाम है ॥

प्रात भये चलै नहीं रैन ही की आजाभई
चल्यो द्वारि आगे घर घर देखी आम है ।
आयो बाही ठौर चलो माता पहुँचाय आऊँ
आय गहे पाँत्र भाव भयो गयो काम है ॥३०२॥

विषयी कुटिल चार माधु वेप लियो धारि
'कीन्ही मनुहार कह्यो तिया निज दीजिये ।

करक शृंगार सीता कोठे पर बैठी जाय
जो है मग आनुर ये कही जाय लीजिये ॥

गये जब द्वार उठी नाहरी मो फारिवेको
फारे नहीं वेप जानि 'आय अति स्त्रीभिके ।

'आपनो विचारो हियो कियो भोग भावनाका,
'मानी माँच भये शिष्य प्रभु मति धीजिये ॥३०३॥

- १ कवि २९८ २९९ में वर्णित प्रसंग । २ रानियों को
लाकर खड़ी करने की लोक लाज छोड़कर । ३ राजा मृग सेनके ।
४ श्री पीपाजीने कहा और कह्ये कुछ चाँदिये । ५ आकर
पीपाजी पर खींचे । ६ श्रीपीपाजी ने कहा अपने हृदयका विचार करो,
आपने अपने हृदयकी भावनाका ही योग किया है । ७ वे सब सत्यमान
कर शिष्य हो गये और प्रभु पर विश्वास हो गया ।

गूजरीको धन दियो पीया दही सन्तनन,
ब्राह्मणको भक्त कियो देवी दी निकांरि के ।

१ पीया घर सन्त आये चहँ दधि पान कियो, आई एक गूजरी
सो बेचती नहँ दही । आये लँ दिवाई येही हिये मरमाई जोही, भक्त
मन आये सोई बात होन है मही ॥ पूछी भक्त राज कही दहीको है
कहा मोल, आज्ञा तीन कहे तब कही दाम है नहीं । जोई भेट आये
आज मोई देई मरमाज सुनि वाने मोन कछु कही बात है मही ॥ १॥
पीया घर गौरी समें एक शिष्य आये, लायो मोनी माला और
उन नु लन न । पच तब बाहे दियो तेरो दही पियो, तोमों बोध
यही मरमाज जगों मांछे होत संत है । सो ज लेवें मारें इस राजामुने स्वामें
घर, बरगज दीन्हो जेये सन्त रसवन्त हैं आज्ञा पाय घर आय मरमनि
सुनाई पीया शिष्यामई जग यज्ञ सो लमन्त है ॥ २॥

२ एक दिन भक्त देवीको प्रवीण महा, लियो सब भाँव न्योति
पीया न पाये है सुनि यह विष शिष्य चलि पीया पास आये, नाय पद
श्रीय नम द नना सुनाये हैं । बोले भक्त राज काज कहा है हमारां नहँ,
राम मनबन्ध बना कहूँ नहि पाये है । कीन्ही तानें इट तब ताकी दीनता
पै रीति, भवन पधारे वाके भये मन भाये हैं ॥ ३॥ कही पीया एकवान
भये नम पारे सोये, पहिनेही भोग हित मोको आनि दीजिये । मरुको
लगाऊँ भोग भै हैं तब पाऊँ पाछे, आठे कहि चले विष अति मन
रीक्षिये ॥ कही वही रीति प्रीति पाणि भांग लया पायो, बच्यो सो
पा द ठन लयो प्रेम भीजिये । ऐसे सो दयाल सन्त जीव प्रतिपाल
करैं, निनरी पी वानें नित मुनि मुनि जीजिये ॥ ४॥

३ विष जब मोथो रात देवी आय कही बात, तेने एतो कियो
आज नहि मूती हो मरी । पीया नी लगायो भोग तभी पारपद आये,
काहि दीन्हा द्वार तैं सो कापतहं हो खरी ॥ सुली जब आलैं विष

तेली को जिवायो भैम चोरन पै फैमिलाये

अभिलाखैं कब कहों, भयो जब प्रात तब आय चित्तरी करी । मुनि
भक्त राज सब अपनी व्यवस्था कही, सो हू याने ठग्यो यह तो कृपा
कीन्ही है दरी ॥ ५॥ सुनि पीया वाली रममानी विप्रजानी तनै, विना
रामभक्ति व्यर्थ आयु क्षीण है गई । चिन्त करि शिष्य भयो छाये
द्विष भाव नयो, पिछ्यो द्विष शोक भूति रामभक्ति छ गये ॥ मर परिवार
और भाँव सब शिष्य भये रामजी विगत दही सब ओरके गये ।
सन्तन के संग रंग चढ़े जेमे रही तेने मानो राम राम गिरि पवन
बुद्धि है गई ॥ ६॥

४. मिली एक मेनिन बलाज प व केने तब, दोन्त मो ते मल
पीया कही बात है । जोग लेय राम नाम ताही तो मरलता है, सन्तन
पाय नातो दृष्टा रीति जान है ॥ सुनि यह शिष्य पायो, तब कन्हा
नहीं, लीन्हा नही नाम ये तो भली नहिं मार है । बचै तो पाय,
जाको पनि मरजाय सोइ लेन दुःख पाय जग नमो दे । जो
बोले भक्त सोई कही ताही तैं तो लाज नमो दे । जग नमो दे ।
दुखी भई है । तब तो पुरानि स्वर आरत नहन लाई, हय राम
राम कियो कहा दई है । पीया आये घर कही आ बरगज, कति न अ
लेन नाम करै रीति नई है । पनि माग्थे नम पद, नहिं दे । अ
कीन्ही कहा च हत हो मोरी बुधि नई है । जो पायो नमो दे ।
अनुरक्त होय कही, करो जनि पेड अत्र भीति भोले है । सोयो
वाने अंगीकार क्षीण पल धारि लिय, पान नमो दे । सो पाय नमो
चेरो है ॥ दया करि नाम दियो कियो मरुदुःखवन्त परम विगत नम
जान्यो दाम मेने है । होय तो प्रतिनि पा । पद
होय ये चरित्र मुनि जन हरि नेरो है ॥ ९॥

५. पीपाजी की भल रात चोर सो चुराय, सो तो जे
आप पाछे अनि भोति सो । बोले महाराज नमो दे । तब जग दू

‘गाड़ी भरि आयो’ तन पाँच ठौर जारिके

दृष्टि के को माज छोड़े जात कोन रीतिमें । इन पवित्राने दिये जाने यह भक्त बड़े, मनमें खिसाने पग गढ़े महा भीतिमें । नाम मुनि रीके भीजे शिष्य भये न्यायि द्यो चोर्गको कुकर्म भैस लाय बाधी नीतिमें ॥१॥

६ देखी भीर भार तब सीता सो विचार कियो कहूँ दूजी ठौर बैठि राम राम कीजये । गये उठि और ठौर तहाँ हूँ पिछानि लीन्हे इति लेय गये सन्त मिलि रम पीजिये ॥ बहु मनमान कियो अन्न और द्रव्य दियो, लाये गाड़ी भरि आप हाँकि चले रीतिमें । चोर भग मिले तिन्हें गाड़ी आप सोपि दीन्ही, कही अब चीन भयो लेहु सुख भीजिये ॥१॥ चले आप एक और चोर तेके गाड़ी चले भये सब आँधरे ओ गिरे खड्ड धाय कै । त्यों भयो ज्ञान उन्हीं, जाने यह सिद्ध काक, पाछे पहुँचाय देन चने मन माय कै ॥ मनि शुद्ध हीनहीं सो नीके भये देख परचो, गाड़ी पाछी लाय पग परे साँ रिक्कायके । नाम जानि चोरी छाँडि कीन्ही और भेट लाय, गाड़ी भरि आछी गये थान पहुँचायके ॥१२॥

७ पाँच आप महोत्सव रहे पाँच सन्तन क पाँचों ही बुलाये बही बीननी सो धारे है । आप बड़े मोच परे कहाँ जानै कहाँ नही, जानै नहीं कैसे सन्त सभी मोहि प्यारे है ॥ त्यों घर सन्त आये सेवा विरमाये आप, पाँचनन बारि पाँचो ठामहु प्यारे है । उत्सव समाप्त हात न्याये तन पाँचो ठौर, शिष्या होय वाई देखि अति दुःख धारे है ॥१३॥ चली ठोढ़े सुधि देन दूजे गाँव आपदेखी यहू पीपा तनु न्यायो चित्त न्याय भई है । याही भाँति पाँचों गाँव देखि के चकित होत, ठोढ़े आप दश पय आन द में रई है ॥ ठोढ़े में विराजमान देखे सन्त सभापथ्य नारायण मध्य जेमे चन्द्र छावि लई है । बाइन मुखारविन्द अति अचरज भई सुनि बात सन्त सभा महा सुख लई है ॥१४॥

‘कागदलै कोरो करयो’ बनिया को शोक कहरयो ‘भरयो घर त्याग्यो’ डारो हत्या हु उतागिके ।

८ आये यह साधु तिन्हें नीके कै अगध आप, नाना विधि पाक अति पीतिसों जियाये हैं । चले जब सन्त कहयो द्वारिका काँ जानै हम, खर्च को न पास दास देहु कृष्ण भाये हैं ॥ घर में न दाम पीपा गये एक साहु पाम, रुकानिखि देय टका चार शत लाये हैं । ए हैं अनायाम तब देहीं बिनापाँगे तोहि, माँगियो नक भूँ वासों वचन मुनाये हैं ॥१६॥ वानै भानि बान कही भने, फेर करी और, बहुदिन बीते तब माँग बहु बार है । येह गये नटि तब निपट रिमाय पच करि एक ठौर करी तिनपै पुकार है ॥ घरन बुलाये आये कही पंच रुक्म लिख्यो कीन्ही धन काहे नहीं देत सो सँवारई । कही आप लावै रुक्मलेन धन याही मयै, जान रुक्मलायै नोन पवै निरधार है ॥१७॥ जवै घर जाय देखे रुक्मा सब कारे भये, भई कहा दंड जिय मोचै बार बार है । जेमे अब जाऊँ वहाँ कहा याँ मुनाऊँ उन्ह, रुक्मा घर बैठि पग्घा भागे लाज भार है ॥ लाये नहि रुक्म पंच कही पारयो भूटो मोग, पाते देहु याको जाति देश ते निकार है । बाने आप माँचा वह, धन लीन्ही हम याको, टाथो यह वचन ते याको ही बिकार है ॥१८॥

९. बड़े यह अज्ञ धन माने यह आपनो कै, जेनी जग सम्पत्ति सो प्रभु की ओ दाम की । ताहि निज जानि तिन्हें देन अभिमान कर, ताकी अज्ञताई तब शास्त्रन प्रकाशकी । पाते हम गये ताहि अभिमान गयो याको, जाय अब देखो रुक्मीमय निजपाम की । देखे घर जाय रुक्मे जैसे हुनैमे भये, गये दुःख, भेट धरी बहु निज पास की ॥

१०. देख्यो जब पीपा घर भर गयो सम्पत्ति सों, पार गनि बोले सीता अब का विचार है । आदर बढ़ानो पंडरानो अन्नराय अब, त्यागो याही त्यागो सुख विरति अपार है ॥ याही भाँति सोचि लुटा गये एक

“गजा को ओमेर भई” “माधु को विभव दई”

कोम दोऊ देख्यो एक ग्राम जाको बड़ाई बजार है ॥ वेटे एक हाट सोही भका दश-वीण दीन्ह, बेटे नहीं दान्हे और लीन्हें वस्त्र स्नान है ॥ २० ॥ बोलें तब लीताजूमां हिये चढ़ो चैन पाय, आदर को रोम बाहुयो ताको उपचार भो । लोगन बताये जाओ आगे सदा अती रहै, आगे नाय देख्यो घर नहीं सो उजार हो ॥ जान्यो परिहास कियो रुक्मिणी देगे दियो दिरो सीता चौका तहाँ करिके विचार हो आनन्द मगन पागे नाय गान ही में दोऊ चहु दिशि छाई धुनि आनन्द अपार भो ॥ २१ ॥

११. मुनि सो महन्त एक आयै हिये रंग छाये, मंग शत शिष्य लेय किय सनमान सो । देख ते मगन स्ये वेटे पास रंग गये होन लाग्यो मुख हिये राम गुणमान सो ॥ तब एक आयो विष शीश नायो चरणन, कही नाथ हस्या लागी मोहि अनभान सो । तीरथ ओ दान मन कीन्हें हे अनक तोऊ, पीव नाही काऊ जल नाथ मेरे हाथ सो ॥ २२ ॥ भर है भंडार घर अमीकार करो नाथ, मात्र सब लाऊ प्रभु भोग धर्म प्राप्ति सो । मुनि दीन वन आय गीमें दया भीज्यो शिष्यो, कष्टो लाय भोग पावै मग्न सब भीति सो ॥ लाया द्रव्य भयो पाक लाग्यो प्रभु भोग सब, कियो वृन्त गान बाने अद्भुत रीति सो । कियो नामगान सब मुनि अभिराम धुनि, आयो दौरि ग्राम सत्र हरयो तिन भीति सो ॥ २३ ॥ देखे सब आय कये पाक नाना भाँति प्रभु भोग को लगाय जेमें सन्त सो अपार हैं । पाँति बीच देखि तहि पूछी सब सन्तन सो कैसे याहि लीन्हो आय नहि अधिकार है ॥ कही सन्त हस्या गई नई देह भई थाकी, भयो यह भागवत दूर हस्या भार है । मुनि सब मुखी होय मान लीन्हो बात शुभ याही भाँति विष केरि हस्या दी चतार है ॥ २४ ॥

१२. गये जब पीपा उठि राजा मूरसेन टोटे भई सो

“लई चिट्ठी मानि गये श्रीरंग उदार”

“श्री रंग के चेत धरयो” “निय हिय मात”

ओमेर जन मेजे वाही गाँव है । अन्न धनवस्त्र बहु भेट री नगन विनै कीन्हो आय तिन भरि बहु भाव है ॥ कही आप तुम आयै हम गये टाढे मिले मूरसेन सो अवहि बाक ठाय है ।

१३. ताही सयै साधु एक आय धन मैथ्या सुता ब्याह होन दना पीपा मगरो उदाय है ॥ २५ ॥

१४. दोसा एक ग्राम तामें रहे सो उदार एक वाचन, लीन श्री रंग जाको नाम है । पीपा का भतीभा चेला किय चहै प । तले लिखी दश वीण चिट्ठी गये नही धाम है ॥ ताकी चिट्ठी लेय जन जायो एक याही ठाँव लिखी अतिदीनता सो परम ललाम है । गहि मोई पाती भरि आई छाती दयाभाव मानि चिट्ठी मार्येना सो पुख किये काम है ॥ २६ ॥

१५. आप बाके घर आप पोरि मध्य वटे जाय, ब्रह्मा कर मानसो सो श्री रंग विचार सा । करिके गृह्यार पूज भाल पहिगायो चहै, अगिगी मुकुट पहि आवैं नहि हार सो ॥ बोल तब आप गुण-तोहि पाहगाय दीजे, दाजे गाँठ फेर मन नीके रैं संधार मं । तुलो मुनि आयैं अभिलार्थ वह बोलै कौन अचरज भरयो बाल्यो पीपाजी उदार सो ॥ २७ ॥ कही आप कौन मौन गहि भौन वटे आय, दीजिये बताय हमें कहा प्रभुनाम है । मुनि आप दोन्ही शिक्षा, कष्टो तुम कौन ऐसे, सन्तन सो पूछबो न नीति अभिगम है ॥ गयो लाज भरि उर करत विचार ऐसे सिद्ध निरधार कोउ आयै मेरे धाम है । फेर हट कीन्हो तब दियो सो बताय नाम, गयो लोटि पापन में पूजे मनकाम है ॥ २८ ॥ बोल्यो पुनि दीनतासो मेरो ये मनार्थ राखो, आयै अब आप तब लाऊँ आम जाय के । कष्टो अब कीजे मोही जोही मन भाई तोहि, बाग कोस एक तहाँ वेटे आप आयके ॥ लायो रंग तहाँ हीवे

“ब्राह्मण को शोक हरयो राजा पै पुजाय के।

सवारी मजाय नीके, छाये पाम एक रंग गेह में अघाय के। दोसा सब भक्त भयो राम भक्ति रंग छयो जो आनन्द भयो वाही सकै कौन गायके ॥२९॥

१६ दोसा माहि कुंड एक तहाँ चले हुन दोऊ, आई नारी दोय कुंडा चीनी मुहाई है। देखि दुःख भरी वडी कृपा करि पीपाजी ने, अनिहि हुलाम तिन्है निकट चुलाई है। तबहि श्रीरंग मन आई अनुचित भई, चले उठि देख कैसे नारि ये पगई है। कही आप स्वास्थ्यों बोलिवा है अनुचित, परमार्थ हेतु नहि अनुचित भाई है ॥३०॥ आई जब पाम आप बोल ऐसो तन पाय, भजै रघुगई तोही लगै यह नीका है। चिन्तामणि छाँडि फूटी कौडी हेत खेद करौ, धरो हिय राम काम पूजै सब जीको है ॥ ऐसे उपदेश करे तिय हिय भाव भरे, करे मन रामशोर जीवन आजीको है। लियो उपदेश कियो मन भायो ताही मर्म, हे गई विरक्त जग सुख लाग्यो फीको है ॥३१॥

१७ गगनी में विद्या नीके चले टोहे तहाँ देख्यो, पाम में विम एक आरत पुकार है। पूछी आप नामों तब वाने कही बात यही सुता भई न्याह योग्य तोही चिन्ता मारे है ॥ गयो यजमान घर वाने कछु दियो नहीं, कौडी नही पाम मुनि दुखी हो विचारै है। हुनो द्रव्य पास सो तो दियो बाहि ताही मर्म, लाय घर कीन्हो ताको आर्ग उपचार है ॥३२॥ लके आये धाम ताको वेष कीन्हो अभिराम, भद्र करदाय माहि अचला धरगयो है। द्वादश तिलक करे मुद्रा तन छापा नीके, गदी पर तक्रिया लगायके बिठायो है ॥ गँठे आगे तरे आप आयो जब राजा कही, मेरे गुरुतुल्य तेरो पाम्य उधरगयो है। मुनि राजा राजी हाय कीन्होबहु भेट पुनि भयो तब आप ताके पद शिर नायो है ॥३३॥ हाथ जोरि बोले पीपा भया करि दीजे विप्र, दाडी मूछ मुँदवाय दुःख में जो दीन्हो है। लीजिये रग्यापफिर कीजिय

“चंदवा बुझाय दियो, “विप्रका लेबैल दियो।
दियो पुनि नेलीहको भयो मुखी पायके।

विवाह सुता, वेष को प्रभाव देखि द्विज सुख लीन्हो है ॥ कियो नहीं वेष दूर हिये धरे छवि पूर; विप्र शिर डारी धूर भाव भक्ति भाँनो है। करके सुता को नशाह आय शिष्य होय भयो, भयो सब पार और कुल ह को कीन्ही है ॥३४॥

१८ टोहे माहि जागरण हुनो हरिवासर को तहाँ सन्त जन गायै पद भक्तिभाव के। कीन्हो तहाँ कौतुक सो सधामध्य ठाढ़े भये, मीने दोऊ होय निज ऊपर उठाय के ॥ नृप मन शंका भई कीन्ही कहा बात इन, पूछो इन्है कही तब बान समझाय के। द्वारिका में कीतन हात में ममाल लागी, चंदवा जल न लाग्यो दियो सो बुझाय के ॥३५॥ अति अचरन भरि राजा ने पठाये जन देखा आप चंदवा में थकरी ला लागी है। रहे सब जागरण माहि तिन्है पूछी कही, हाँ हाँ पीपाजी ने ही बुझाई आग लागी है ॥ देखि सुनि जन आय कही माँची बात जानि, भई अद्वा अनुलिन पाम प्रेम पागी है। सन्तन की महिमा दि जान सके मया काऊ, जमान में नाहीं कहे सब अनुरागी है ॥३६॥

१९ न्हात रह कुंड तहाँ आय एक विम कही, मेरो एक बेल मरयो अब कहा कीजिये। मुखी परयो खेत सब खेती जरी जल बिन, करके दया सो मोहि बेल लेके दीजिये ॥ तहाँ एक तेलीबाल लायो बेल प्याबे जल, छीनि ताते कही आप द्विज देव लीजिये। रोवत सो आय कही मुनि पिता दुखी हाय, राजा पै पुकारयो मेरो बेल दिवा दीजिये ॥३७॥ राजा कही तहाँ जाय करो विन मन्तन मों, तेली आय गिहगिहाय कही दया लागी है। आप कही घर जाय देख बेल बँयो तेरे, नाइक हयसों लरे कहा पति भागी है ॥ जाय घर देख्यो तेली बेल बँयो निज खूँटे, विप्रह के घर बेल देखि

“बडोई अकाल परयो, जीव दुःख दूर करयो
गड्यो धन पायो घर दियो सो लुटाय के ।

“अति विमतार भयो आयो ये विचार मन
ताते संजेष कब्यो भूल नहीं गाय के ॥३०५॥

बुद्धि जागी है । केरि दौर आय भयो शिष्य जग जीत गयो, कलि
बात गाँव सब कहै बड भागी है ॥३०॥

२० पायो सो अकाल देस सोचै अकुराय बीपा, जीव प्रतिपाल
होय रिये का उपाय के । घर ही में रह्यो एक मोगन को पात्र
मिल्यो, मन में भगन होय दियो सो लुटाय के ॥ आवन जे मन
निहै देन ह अनन्त सुख, भूखन का भोजन सा देन ह अशाय के । मुने
मुख मनन लः मान अनुसार कहे, चरित अगार पीपा कहै कान
गाय के ॥३१॥

२१ कीही भक्तमाल नाभास्वामिज दयानन्द नाई, कीन्ही टीका
हुनमाय सन्त प्रियादाम है । जयसिंह गवाई अति भक्तमान रूप
आग, जयपुर आय कियो कथा को विकास है । तामें पीपा कथा
टीका अन्त मुची रूप होय, कवित्त अरण किये अति सुखवास है ।
तिनको विस्तर कवि वेणीकुराय कियो यह, होय सुनि अइन के
हियेहू प्रकाश है ॥३२॥

अन्तिम इन दो कवित्तों में संकेत रूप में कथित चरित्रों को
जयपुर नरेश महाराजा जयसिंहजीके दरबारी कविराज श्रीवेणीकुराजी
में उपरोक्त ४० कवित्तोंमें विस्तारसे वर्णन किये हैं इनको अनन्त
श्रीगुरुदेव भक्तमाल की कथा में कहा करत थे ।

इसके अनतिरिक्त सन्त श्री अनन्तदामजी रचित हिन्दी पद्य
(दोहा चौपाई) में श्रीपीपाजी की परचई नामक ग्रन्थ भी उपलब्ध
है, जिसको जोधपुरस्थ त्रियोलिया के समीप के पीपा पंथी दरजी

श्रीगिरिधारीजीने श्रीपीपाजीके पदोंके लघु संकलनके साथ प्रकाशित
किया है । इसके मुख पृष्ठ पर चार आना में उन्हीं से प्राप्य होना
चल्लिखित है । यह श्री अनन्तदामजी श्री नाभा स्वामीजी के छोटे
गुरु भ्राता श्री विनोदजी के शिष्य थे अतः यह परिचई भक्तमाल से
कुछ ही समय पीछे और श्री प्रियादामजी की टीका से प्रायः १००
वर्ष पूर्व की रचना है । जान पड़ता है श्री प्रियादामजी ने इसी परिचई
से कथा भाग लेकर संक्षिप्त कर अपनी टीका में दिया है । सुना जाता
है श्री अनन्तदामजी ने आचार्यपाद अनन्त श्री रामानन्दाचार्यजी के
श्री कवीरजी श्री रैदामजी आदि अन्यान्य शिष्यों की भी पंचचइयां
लिखी हैं जिनमें से कुछ प्रति लिपियां काशी नामरी प्रचारिणी मभा
में उपस्थित हैं । श्री अगस्त्य संहितादी ग्रंथों के अनुसार श्री पीपाजी
महागज श्री मनुजी के अवतार हैं और चैत्र शुक्ल १५ बुधवार को
अवतरित हुए हैं ।

(श्रीधनाभक्तजीकी कथा)

मूल छ०—घर आवे हरिदास तिनहि
‘गोधूम खवाये । तात मात डर खेत थोथ
‘लांगलहि चलाये । आस पास ‘कृपिकार
खेत की करत बडाई । भक्त भजे की राति
प्रकट ‘परतीति दिखाई ॥ अचरज मानत
जगत में, कहूँ ‘निपज्यो कछु बिन बयो ।
धन्य धनाके भजनको, विनहिं बीज
‘अंकुर भयो ॥६२॥

१ गेहूँ । २ खाली । ३ हल । ४ किसान । ५ विश्वास ।
६ पैदा हुआ है । ७ लग आया ।

स्वत की तो बात कही प्रकट कवित्त भाँझ
 सुनो एक और भई प्रथम जो 'रीति है ।
 आये माधु विप्रधाम सेवा 'अभिराम कर
 बठे ढिंग आय कही मोह दीजे 'प्रीति है ॥
 पाथर ले दियो अति मावधान कियो यह
 छानी लाय जीयो सेवै जैसी 'नेह नीति है ।
 रोटी धरि आगे आँख मूँद लई परदा के
 छूई नहीं नेक देखि भई बड़ी 'भीति है ॥३०६॥
 बार बार पाँय परे अरे भूख प्याम तजि
 धरे हिये साँचो भाव 'पायी प्रभु प्यारीये ।
 आक नित आँखे नीके भांग को लगाये जोई
 छोडे सोई खावै प्रीति रीति कछु न्यारिये ॥
 जाको कोई खाय ताकी टहल बजाय करै
 लावत चराय गाय हरि उर धारिये ।
 आये फिरि विप्र 'नेह खोजे हू न 'पाये कहूँ
 सरसाये बातें लै दिखायो श्याम 'चारिये ॥३०७॥
 द्विज लखि गायन में 'चावन समात नाहीं
 'भावनकी चोट लागी दृग नीर भरी है ।

१ प्रकार । २ भगवानकी । ३ येरा प्रेम है कि सेवा करूँ । ४ प्रेमकी ।
 ५ डर । ६ मथुने खायी । ७ कलेज । ८ प्रेमके कारण । ९ धना जी
 नहीं मिले । १० गाय चराते हुए । ११ आनन्द । १२ भक्ति ।

जायके भवन 'सीतारमण प्रमन्न करै
 बडे भाय मानि प्रीति देखि जसी करी है ॥
 धना को दयाल व्हेके आज्ञा प्रभु दयी करो
 स्वामी रामानन्द गुरु भक्ति मति हरी है ।
 भये शिष्य जाय 'आप छातीमें लगाय लिये
 किये गृह काम सब सुनो जैसी धरी है ॥३०८॥
 श्री धन्ना जी के रूप में (श्रीपन्नजी जाट की धर्म पत्नी रेवा
 के गर्भ से वैशाख कृष्ण ८ शनिवार को) राजा बलि जी अवतरित
 हुए थे । कचवर श्री द्वितीश तनय सखा जी रचित महाभागवत
 चरित में उपरोक्त श्री प्रियादास जी द्वारा टीका में वर्णित दो चरित्रों
 के अनिरिक्त एक बार सन्तों के आने पर माता के पिछाड़ी से सब
 दूध सन्तों को पिला देने और फिर दूध के सब बरतन भरे ही प्राप्त
 होने के तथा इसी प्रकार एक बार सब घर भर की रोटियां सन्तों को
 पका देने पर पुनः ज्यों की त्यों रोटियां प्राप्त होने आदि के कुछ
 चरित्र अधिक मिलते हैं ।

(श्रीसेनभक्तजीकी कथा)

मूल छ०—'प्रभुहि दास के 'काज रूप
 'नापित को कीन्हो । क्षिप्र 'छुरहरो गही
 पाणि दपण पुनि लोन्हो । 'तादृप हूँ
 तिहिकाल भूप के तेल लगायो । उलटि

१ श्री सीतकान्त भगवान रामका । २ श्रीआचार्य महाप्रभु ने ।
 ३ भगवान ने ही । ४ लिये । ५ नाक । ६ उस्तुरा आदि की पेटी ।
 ७ सेन जी के जैसे हो ।

‘राव भयो शिष्य प्रकट परचो जब पायो ॥
श्याम रहत सम्मुख सदा, ज्यों बच्छा हित
धेन के ! विदित बात जग जानिये, हरि
भये सहायक सेन के ॥६३॥

वान्धव गढ़ बास सो साधु सेवा आस लागी
पागी मति अति प्रभु परचो दिखायो है ।

करि नित्य नेम चल्थो भाँके लगान तेन
भयो मग मेन सन्त, फिर घर आयो है ॥

दहन बनाय करी नृप का न शंक धरी
उत श्याम जायकर भूपति रिभायो है ।
पाछे मेन गयो पन्थ पुछ्यो हिये रंग छयो
भयो अचरज राजा वचन सुनायो है ॥३०६॥

‘फिर कैसे आये मुनि वचन लजायो कही
मदन पधार सन्त भई यों अँवार है ।
आवन न पायो बाही मँझ उरभायो, ‘राजा
दौरि शिर नायो देखि महिमा अपार है ॥

भीज गयो हियो दाम भाव दृढ लियो पियो
भक्तिरस शिष्य हूँ के जान्यो यही सार है ।

१ राजा । २ राजाकी । ३ प्रसन्न किया । ४ मार्ग में लोगों से
पूछने पर अपने ही द्वारा राजाके तेल लगाया गया सुन प्रभु कृपा सम्भक्त
सेनजी के हृदय में प्रेम रंग छगया । ५ लौटकर । ६ राजा ने ।

अबलों हू प्रीति मुन नाती बाही रीति चले
होय जो प्रतीति प्रभु पावे निरधार है ॥३१०॥

श्रीविष्णुपितामहजीने ही श्रीसेनजीके रूपमें बांधवगढ़ निवासी
नापित श्रीउग्रसेनजीकी धर्मपत्नी सुशीलाजीके गर्भसे वैशाख कृष्ण १२
शुक्रवारको अवतार लिया था ।

बांधवगढ़ नरेश श्रीसेनकी क्षीर आदि सेवा कुशलता पर मुग्ध थे
और यात्रामें भी साथ ले जाते थे ।

एकवार बांधवगढ़की कार्या यात्रामें राज्य सेवामें निवृत्त हो आप
चंगगा वाटपर श्रीमहा किनारे चले गये, वहाँ एक भद्र पुरुषने उनसे
कहा हम सम्पत्ती देना चाहते हैं हमको भद्र कर दो । इनने उनका भद्र
कर दिया संतुष्ट रहन दो । अर्द्धरात्रि मन्थानिशकी पथानुसार उनने
चुटिया भी हटा देनेका कहा ता अपने कहा चुटिया हिन्दुत्वकी निशानी
है, मैं अपने हाथों आँखों चोटो नहीं हटाऊंगा । बाद बढ़ गया और
आने-आने पक्षक समयक कर्तव्य दोनो पथिमाचर्योम जगद्गुरु
श्रीसुखानन्दाचार्यजीके पास पहुँचे अर्द्ध रात्रिपादने टानाका सपा-
धान कर दिया । मेनती आभदा रात्रि चरख-दर्शनसे बड़े प्रभावित हुए
और श्रीचरण शरण ग्रहण करली । श्रीमहाचार्य चरणने दीक्षा प्रदान
का मन्त्र सेवाकी शिक्षा प्रदान की और बांधवगढ़के साथ ही घर चले
जानेकी आज्ञा दी । घर पर जाकर जो चरित्र हुए वे श्रीविष्णुदासजी
ने संक्षेपमें कहे हैं ।

आचार्यपाद । श्रीसुखानन्दाचार्य स्वामीजीकी कथा ।

मूल छ०—सुख सागर की छाप राग गौरी
रुचि न्यारी । पद रचना गुरुमंत्र मनहुँ

१ निर्धारित अनिश्चित । २ रागका एक विशेष प्रमेद ।

‘आगम अनुहारो ॥ निशिदिन प्रेम प्रवाह
द्रवत भूधर ज्यों निर्भर । हरि गुण कथा
अगाध भाल जनु लसत कलाधर ॥ सन्त
कंज पोषण विमल, अति पियूष सरसी
सरस । भक्ति दान भय हरण भुज,
सुखानन्द पारस परस ॥६४॥

भगवान शंकरजीके अवतार जगद्गुरु स्वामी श्रीसुखानन्दाचार्यजी ने उज्जयनीके समीप किरीटपुर निवासी पं० श्रीत्रिपुरारि भट्टजीकी धर्म पत्नी श्रीगोदावरी बाईके गर्भमें श्रीजानकी नवमी (वैशाख शु० ९) के दिन अवतार लिया ।

आपका जन्म नाम चन्द्रहरि था आपका चरित्र टीकाकार श्री प्रियादासजी कुछ भी न लिख सके, अतः महाभागवत चरितके आधार पर संक्षेपमें लिखा जाता है । आप जन्मसे ही अर्ध विकसित भेज रहा करते थे, पूरे नेत्र खोलकर कभी नहीं देखते थे । माता पितादिने इसकी रोग समझ अनेक औषधोपचार, झाड़-फूक, जादू टोना किये कराये परन्तु वह कोई रोग ही तो मिटे, एक दिन एक मिट्टने कहा यह रोग नहीं इनका योग है, इसकी चिन्ता मत करो ।

एक दिन अपने घरके बगीचेमें माता इनको लेकर सो गई तो आप लुढ़ककर एक पौधेकी आड़में पहुँच गये । माता जगी तो ढूँढने लगी । और भी जोई आया मचने ढूँढा परन्तु बालक न मिला । पिता जी जब ढूँढने लगे तो देख पड़ गये और साथ ही यह दृश्य भी देख पड़ा कि एक विषधर सर्प फन फैलाये आपके ऊपर छाया कर रहा

१ शास्त्रानुकूल । २ चन्द्रमा । ३ सन्त जन रूपी कमल बनका पालन करनेमें आप अमृतकी तलाई के समान थे । ४ स्पर्श-संपर्क ।

है । यह देख बड़ी चिन्ता हुई । फिर सर्प चला गया और माता आपको ले आई । उत्सव मनाये गये ।

घर के समीप एक श्रीभगवन्मन्दिर था जहाँ माता आरती में प्रायः नित्य जाती थी और आपको भी ले जाती थी । कुछ चलने लगे तो कभी माता के न जाने पर आप इकेले चले जाते । एक दिन मोचें से जगकर आप आरती में दौड़ गये । मार्ग में गिर गये तो एक परम सुन्दर कुपार ने आपको उठाकर चरखामृत भस्माद दिला, घर पहुँचा दिया और वहीं अदृश्य हो गया । सबको आश्चर्य और परम सुख प्राप्त हुआ ।

समय पर उपनयन होकर वेद पाठ आरंभ हुआ तो आप अध्यापकजी से बोले मुझे केवल एक अक्षर पढ़ना है जो पदार्थ में रहता है और अपदार्थ देता है, यह मार गभित बचन सुन अध्यापकजी ने पिताजी से कहा कि यह बालक सामान्य बालक नहीं कोई अवतारी पुरुष है, आप इसके तरफ की सब चिन्ता छोड़ दें । इन्हीं दिनों में एक दैवज्ञ किरीटपुर में आये और आपके दर्शन कर आनन्दित हो पिताजी से कहने लगे आपका बालक लोकोत्तर की विभूति है परन्तु एक ध्यान रखना कि इसको १८ वर्ष तक अल्पे या दर्पण में मुख न देखने देना और नदी तालाब कुण्ड बावड़ी आदि में स्नान न कराना । तब से घर में से सब लोग भी यदि क्षिप्रास्नान की जाते तो आपको घरपर ही रहना होता ।

पं० त्रिपुरारि भट्टजी के पिता कभी विवाद में पं० रंगराज दक्षिणजी से परास्त हो गये थे जिसका परास्तकर त्रिपुरारिजी को प्रतिवर्ष देना पड़ता था । एक दिन पं० रंगराज का दूत कर बसूल करने आया तब घरपर केवल आपही थे और सब क्षिप्रास्नानार्थ गये थे । आपने दूत से सब वृत्तान्त जानकर कहा पं० रंगराजजी से कहना अब परास्तकर नहीं दिया जायगा, मैं आज से चौथे दिन आकर

पंडितजी को परास्त करूंगा। दूत के मुख से एक बालक की यह साहसोक्ति सुन पंडितजी मसन्न हुए और समय की प्रतीक्षा करने लगे, निश्चित समयपर पहुँच कर आपने शास्त्रार्थ कर पितृ श्रम से पिताजी को मुक्त किया और पं० रंगराजजी से कहा अब आपको परास्त कर नही देना लेना होगा इस निन्द्य प्रथा को बिना कर दीजिये। इस प्रस्ताव से समुपस्थित पंडित समाज बहुत ममन्न हुआ और इस हेतु प्रथा का अंत हो गया।

घर में सब लोग बालक की अशौकिक लीलाओं से चकित हो आनन्द विषोय उत्साह मना रहे थे और आप जय पराजय दोनों को प्रभु चिन्तन में बाधक मानकर अन्यमनस्क से अपनी मयन काठरी में प्रवेश कर कुन्दी बंद कर प्रभु चिन्तन में लीन हो गये, दिन बीत गया, रात हो गई, उत्सव में आगन्तुक सब लोगों के भोजनार्थ संनिवृत्त होकर घर के लोग भोजन करने लगे तो कुमार की खोज हुई। मयन भवन में जाकर पछ्छा खटखटाया तो उत्तर मिला 'मैं अभी भोजन नहीं करूंगा आप लोग करें, मुझे माने दें। संयोगवस आज दिन में आपने जलपात्र में अपना मुख भी देख लिया था और तभी मे आपकी यह जगत से उद्दामीन दशा हो चली थी। रात कटी, सबेरा हुआ तो सब लोगों ने देखाकि काठरी खुली पड़ी है और कुमार वहाँ नहीं है। कुमार दिन भर चलकर संध्या को एक अमराई में विश्राम कर रहे थे, तभी हुदने वाले लोग वहाँ पहुँचाये। सब गे रहे थे। माना का रोना तो वर्णनार्थ था। यह देख आप भी माना की मोदी में अपना मुख छुपाकर रोने लगे और सबको मिलकर आप से रोना बंद करने की प्रार्थना करनी पड़ी। सब लोग घर लौट चलने को कहने लगे। पिता माना ने कहा तुम जो भी कहोगे सोही हम करेंगे। आपने कहा वस मैं यही एक बात कहता हूँ कि आप सब लौट जाओ और मैं काशी जाकर किसी महापुरुष के चरण में रहकर उस प्रकार की विद्या का

अध्ययन करूंगा, आप लोग इसमें विघ्न न बनें, इसीमें आप हम सबका और लाकडा कल्याण है। पिताजीने एक विश्वासी पंचोलीजीको दूर दूर रह कर आवश्यकता पड़ने पर सहायक होनेके लिये साथ कर दिया और सब लौटगये।

मध्याह्न में विश्रामार्थ एक तड़ागपर गये, वहाँ एक रमणी एक बाल में भोजन आमशी लेकर आई और आपसे ग्रहण करने का आग्रह करने लगी। आपने उसमें से थोड़ा सा पा लिया जिसका यह विचित्र प्रभाव हुआ कि आप में कुमारगणस्था से युवावस्था वर्तमान होने लगी। यह देख आप घबड़ाये और इस घबड़ाहट के समय से लाभ उठा पंचोलीजीने अपने भोले में से निवालकर श्रीभगवानका चरणामृत प्रसाद दिया जिसमें उस अन्नका प्रभाव नष्ट हो गया। पंचोलीजी के उपकार के लिये आपने धन्यवाद दिया और अब साथ मिलकर ही दोनों चलने लगे। इसी रात आपने स्वप्न देखा कि एक पर्वत शिखर पर स्थित मुनि महाराजके पास पहुँचे हैं और वे मुनीजी आज्ञा कर रहे हैं कि कार्य में पन गंगा घाट पर अवश्य स्नान करना, जागर स्वप्न वृत्त पंचोलीजी से कहा तो पंचोलीजीने कहा वहाँ पर तो आचार्य पाद आनन्दभाष्यकार यतिराज राज श्रीगमानन्दाचार्यजी का श्रीमठ है। मैं जानता हूँ वहाँ ले चलूँगा।

प्रातः में विश्राम करते और ग्रामवासियों को एवं सन्त महात्माओं को दर्शन सत्संग से कृतार्थ करते फाफामऊ पहुँचे जहाँ एक मगराजसे भेट हुई। आप आसनपर बैठे भजन कर रहे थे। पामही पंचोली जी थे। पंचोलीजी सर्प से डरे परन्तु आप जीभ के तसे बटे रहे, सप्रभायः दिनभर आपकी परिक्रमा करके सार्यकाल नलागया।

प्रातः काल श्रीगंगा स्नान हुआ। गंगाजलमें मुख देखकर आप ध्यान मग्नसे हो गये और सहसा आपके मुखसे निकला 'अरे यह सब तो नाशवान है, इसके परे ही अमर सत्य है, वही अपना रूप है'

यही पर काशीके सन्यासी श्रीरामभारतीजी से मेट हुई वे आपके तेजः पुंज मुख मंदलके दर्शनसे परम पञ्च द्रुप और उमी रातमें एकाक्षरी विद्या प्रदान की। वहाँसे तीनों साथ चलकर काशीजी आये। मार्गमें भारतीजीने अष्टांग योगकी क्रियायें और जन्म संबन्धी निम्नान्ति ज्ञानकी गाथा बताई। कुछ दिन इनके आश्रम पर रहे, फिर पंचोलीजीके साथ पंचगंगा घाट पर आये। स्नान किया और नाव परसे सब धार्योंका दर्शन किया। अस्मी घाट पर मित्र समुदायसे समागम हुआ जिनके सहयोगसे नीचीबाग मुहल्लेके एक विघ्न भयसे तिरस्कृत मकानमें निवास हुआ। आपके नाना नानी आकर मिले। अब पंचोलीजी घर लौट गये। समाचार पाकर माता पिता और सभी ग्राम ग्रामियोंको हर्ष शोक दोनों हुए। माताजी अपने पीढ़र (काशी) अगाई और अपनी मा के साथ आकर दर्शन कर गई। वह काकामऊ वाला नाम कभी कभी रातमें यहाँ दिखलाई पड़ जाता था।

एकदिन महर्षि ऋचीकजीने प्रातः काल दर्शन देकर कहा 'यह नाम तुम्हारा काल है, इससे बचनेका यही एक मार्ग है।' कि अपने गुरु रामभारतीजीसे परामर्श कर अनन्त श्रीआचार्यपाद स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजीकी शरण ग्रहण करो। आपने वह सब वृत्त श्रीराम भारतीजीसे कहा, भारतीजीने ध्यान करके देखा और कहा कलह हम दोनों चलेंगे और चरणोंमें उपस्थित हो धन्य धन्य हाग। प्रातः काल श्रीमठ पहुँचकर ये दोनों साष्टांग करके बैठे ही थे कि वह सर्प भी वहाँ पहुँच गया। परदा हटा श्रीचरणोंके दर्शन हुए, सर्पने उद्धारकी भिक्षा मांगी सो उसको प्राप्त हुई। भारतीजीने कुमारको शरणमें लेकर दोनोंको कृतार्थ करनेकी प्रार्थना की। प्रार्थना स्वीकार हुई कुमार चन्द्रवर्तिको पंच संस्कार पूर्वक वैष्णवी दीक्षा प्रदानकी गई और सुखानन्दाचार्य नामकरण हुआ। भारतीजीको दिव्य ज्ञानकी प्राप्ति हुई, दोनों अब श्रीमठमें ही रह गये।

एकदिन श्रीसुखानन्दाचार्यजीकी माता और नानी श्रीमठपर आई, पहले तो पुत्र शोककुल हो कुछ मलाप करने लगी परन्तु फिर दिव्य शंख ध्वनी के द्वारा अज्ञानान्धकार नष्ट होवानेपर अनन्त श्रीआचार्यपादकी स्तुतिकर लौट गई।

इसके पश्चात् श्रीमदाचार्य चरणकी आज्ञा हुई कि अब तुम दोनों चित्रकूट जाकर भजन करो। आज्ञानुसार दोनों रवाना होकर मार्गमें अनेकानेक बहधागी देव मुनि मनुष्योंको अपने दर्शन सत्संगसे कृतार्थ करते हुए चित्रकूट पहुँच श्रीराम शय्या स्थान पर बहुत दिन रहकर भजन किया एवं आगतुक मुनिराज, तपस्वी बाबा, जालपा माता, वगैरहके आश्रित जमील साहब, दाक्षीणात्य श्रीवेदान्ताचार्यजी, यज्ञ दम्पति, निर्मली बाबा आदि आदि अनेकानेक महाभागोंको कृतार्थ किया, श्रीचित्रकूटकी परम दिव्य लीलाओंका अनुभव एवं आस्वादन किया और यही श्रीहनुमन्त लालजीकी कृपानिर्मित विलीन हो गये। आपके गुणोंका वर्णन श्री नाभा स्वामीजीने छप्पमें किया है आपकी पद रचना, गायन माधुरी, गीतों रागमे प्रेम, प्रेमाभूत श्राव, भगवत् कथा में अगाधता, पूर्णचंद्रके समान विशाल भालकी दिव्य छाटा, भव-भयशरणा भक्ति प्रदानकरण भुजायें, तथा अपने थोड़ा भी संपर्क स्पर्श करने वालोंको पारसकी नाई दिव्य स्वर्ण बना देनेका स्वभाव विश्व विविक्त है।

(आचार्यपाद स्वामी श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजीकी कथा)

मूल छ०—एक बार मग चलत आपने
'बरा वाक्य छल पाये । देखा देखी शिष्य
हु सो पाछे ते खाये ॥' तिन पर स्वामी

१ बड़ा=पकोड़ा।

खिमे वमन कर विन विश्वासी । तिन
तेसी प्रत्यक्ष भूमिपर कोनी राशी ॥
सुरसरी सुवर पुनि उद्गले पुष्परंगु
तुलसी हरी । महिमा महाप्रसादकी सुर-
सुरानंद साँची करी ॥६५॥

अति उदार दम्पति त्यागि
गृह वनसो गमने । अचरज भाँतहँ एक
मंत मुनि जनि हो विमने ॥ बैठे हुते
इकान्त आय अपुन दुख दीयो । मुमिरे
मरग पाणि रूप नाहर को कोया ॥ सुर-
सुरानंदकी घरनि का मत राख्यो सो स्वत
जिया । महागती गत उपमा, त्याँ गत
सुरसरी को रह्यो ॥६६॥

स्वामी श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजीके विषयमें भी श्रीप्रियादासजी कुछ
त लिख सके अतः महाभाषवत चरितके आधार पर ही संक्षेपमें लिखा
जा रहा है ।

स्वामी श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजीकी अगस्त्य संहितादिमें देवर्षि श्री
नारदजीका अवतार कहा गया है । आपका अवतार लखनऊके समीप,
परगढ नामक ग्राम निवासी पं० श्रीसुरेश्वर क्षमाजीकी पत्नी श्रीमन्ता

१ वनराज हुए । २ देगी । ३ आपकी पत्नीका नाम है । ४ उमली ।
५ दुखी । ६ प्रभुने सिंहका रूप बनाया । ७ मारा । ८ द्रोपदी ।

देवीजीकी कोखसे वैशाख कृष्ण ९, शुद्धवारको हुआ था । आपका
बालपनका नाम भायणकुमार पड़ा था ।

समय पर सुंदन कर्णबिध पड़ोपवीतादि संस्कार होकर आप
गायत्री मंत्रके पुरश्चरणमें लीन हो गये और अनेक वर्षों तक मंत्रानुष्ठान
के पश्चान पूर्णाहुती कर काशीको रवाना हुए ।

आपके मायः सभी संस्कारोंके समय एक अज्ञान ब्राह्मण आते
थे जो अपना नाम नागायण बताते तथा अपनेको कुमारके मामा कहते
थे । उनको आते जाते कोई नहीं देखता केवल उत्सवसे सम्मिलित ही
देखे जाते । कुमारको ये नारद कहा करते थे । काशी जाने समय ये
भी आये थे और न जाने कुमार भायणके कानमें क्या कुछ कहकर चले
गये थे ।

उनके चरके पंथमें एक मातृ-पितृ हीन दण्डि ब्राह्मण कन्या
रहती थी जो आपके तप तुष्टानका दग्ध मरहा मन अपना तन मन
न्याछावर किया करती थी । कुमारकी राशी जानकी रात सुन ये भी
इकना हो का का रवाना हो गई और बहुत पहल हा वहाँ पहुँच गई ।
क्याकि आपका मागमें लोगाका आने दर्शन मन्त्रगमे आनन्द दन
शकते ठहरते कई दिनमें पहुँचे थे ।

पंचगंगा घाटपर स्नानकर आप जैसे ही ओमठ पहुँचे कि मन्त्रग
बेरा पास हो गई, अनापास हो अनन्त श्रीआचार्य चरणके दर्शन मिल
गये, परिचय पूछा जाने पर पिताजीका नाम ठाम बनाया और पूछा
मभा जिनने मेरणाकर मुझे यहाँ भेजा वे नागायण नामक द्विज वर
कौन हैं, जो मुझे नारद कहते थे और अत्यन्त कृपा किया करते थे ?
श्रीमुखसे आज्ञा हुई कि तुम ऐसे धारण करो तुमको अपने आप इन
सब रहस्योंका ज्ञान हो जायगा ।

दूसरे दिन मन्त्रग बेलामें जब सब लोग श्रीमठ पर जमा हो गये
तब शंख बजि हुई, जिसको सुनकर भायणजी तन्द्रादेवीकी गोदमें

पहुँच गये और अन्वक्त वाली सुनने लगे, जैसे तो इन्हींको सम्बोधन करके कहा जा रहा है कि तुमने विवाहकी इच्छा की थी, उसमें विघ्न होनेसे तुमने शाप दे डाला था जिसको अंगीकार कर देने जव नर लीलाकी तो तुमने आकर उपासना दिया उसी कर्म विपाकसे अब तुम्हारा जन्म हुआ है, इस समय तुम्हारी वे सब इच्छायें पूर्णकी जायगी। तुम सदासे हमारी शरणमें हो अतः दोगे मत शीघ्र और सरलतापूर्वक सब कर्म भोग हो जायगा। यह वाली सुन आप जैसेही होशमें आये कि उस सुरसुरी नामक दिन कुमारीकी श्रीमदाचार्य चरण में प्रणाम करते और 'सौभाग्यवती भव' आशीर्वाद मिलने देवा। कुमारीने प्रार्थना की कि प्रभो मैं तो परमार्थ विधाके लिए उपस्थित हुई थी नव आज्ञा हुई कि सब होगा परंतु पतिके साथ।

कुमार भायण और कुमारी सुरसुरी दोनोंको श्रीमदाचार्यपादने पंच संस्कार पूर्वक वैष्णवी दीक्षा प्रदान कर कुमारको सुरसुरानन्द नाम प्रदान किया और कुमारीका पूर्व नाम ही रहा। दीक्षान्तमें दिव्य शक्ति ध्वनि हुई जिसके श्रवणसे इन दोनोंके अन्तर्पट खुल गये और अपने अपने पूर्व जन्मके सब चरित्र साकार होकर देख पड़े। श्रीयतिराज राजने दोनोंको विवाहित हो एक साथ भजन करनेकी आज्ञा दी और कहा छे महिने वासनारहित होकर एकाग्रचित्तसे भजन करना, इस बीचमें तुम्हारी अनेक परीक्षाएँ हो सकती हैं। श्रीअनन्तानन्दाचार्य स्वामीने एक श्रीभगवत्पमादी भाला लाकर कुमारीके हाथमें दी और कुमारके गले में डाल देनेकी आज्ञा दी। कुमारीने कृत कृत्य हो वैसा ही किया।

गुरुराजागरीयसा, श्रीमदाचार्यपादकी आज्ञाको धिगेधायकर दोनों स्वदेश आ गये, माता पिता और ग्रामीणोंके हृषका पारावार न रहा, धूम धामसे विवाह हो गया और तुरन्त ही दम्पतिने वनकी मस्थान कर दिया। पूर्वकी पराजयसे रिसाये कामदेवने अवसर पाकर मार्गमें

अपना ठाठ बाट लगाया। एक सुन्दर उद्यानमें परम मनोहर कुटी जो सुनि आश्रमकी सी होने लूप भी परम सुन्दर और सब भोग सामग्रीयों से समुज्जित थी तथा जिसमें श्रीसुरसुरीजीके ही रूप रंग अवस्था और स्वभाव जैसी १६ महचरित्रियाँ थीं, उपस्थित कर दीं, परन्तु कामदेवकी एक न चली और यह नै एक वनचारी दम्पति ज्यों के त्यों निर्लेप निकल आये। इसके बाद वही चरित्र हैं जो श्रीभक्तमाल मूलमें आये हैं। कुछ कालके पश्चात् श्रीसुरसुरीजी परलोक पधार गईं। आप श्रीमठमें आकर अनन्त श्रीयतिराज राजके चरणोंमें गिरे। और यही रहने लगे। एकबार आपने श्रीमदाचार्य चरणके सम्मुख १० प्रश्न किये जिनके उत्तर प्रथम रूपमें श्रीविष्णुवमनाजभास्करके नामसे प्रसिद्ध हैं। श्रीअनन्तानन्दाचार्य स्वामिने आपने श्रीमदाचार्यपाद प्रणीत प्रस्थानत्रयी भाष्य आदि ग्रंथोंका अध्ययन किया और फिर यदनोंके अन्याचारोंसे श्रीराम आदि के दाक्षणाक्ष मन्दिरोंकी रक्षा की। पुनः आज्ञा हानपर योगबलसे श्रीरंगप, निम्पति बालाजी, चोपाचल आदिमें पञ्चैकन मन्दिर मयादाकी रक्षा की। मलिक काफूरको स्वप्नमें पैगम्बरके दर्शन उपदेश प्राप्त कराकर कृतार्थ किया। पक्षनाभमें पापाय गृहमें १०८ उपनिषदें निकलवाकर पक्षनाभ काचो और रंभामें पटुचार्ड पर्व लौट कर श्रीचरणोंमें उपस्थित हुए तथा अन्न समयमें श्रीअयोध्यापरीमें धर्म प्रचार करत हुए लौना गंवराग की।

। आचार्यपाद श्रीनरहर्यानन्दाचार्यस्वामीजीका कथा ।

मूल छ०—'भर घर लकरी नाहिं शक्ति
को सदन उजारे। शक्ति भक्त सों
बोली प्रतिदिनहि बरही डारे। लगी

१ वर्षाकी भडीमें। २ श्रीनरहरियानन्दजीसे कहकर ३ लकड़ियोंका बोझ।

परोसिन होंस भवानी भवें सो मारै ।
 'बदले की बेगार मूँड वाके सो डारै ॥
 'भरत प्रसंग ज्यों कालिका, 'लहू देखि
 तनमें तई । त्यों नरहरियानन्दका, कर
 दाता दुर्गा भई ॥६७॥

आचार्यपाद भगद्गुरु स्वामी श्रीनरहर्यानन्दाचार्यजीका चरित्र महाभागवत चरित्रमें विस्तारसे कहा गया है, उसीका संक्षिप्त रूप यहाँ दिया जाता है ।

आप श्रीमन्नन्दकुमारके अवतार हैं और तुन्दावनके समीपके रहने वाले पं० महेश्वर मिश्रजीके यहाँ वरदान प्रदाना भवानीसे वशाव्य शुक्ल ३ शुद्धवारकी प्रकट हुए हैं । भगवती आरका प्रकटकर श्रीतुन्दावनकी केलि कुँजोंमें लुप्त हो गईं । देवगणने आपका पालन किया एवं विन्य लेयसे देवनाओंके साथ आप उपनीत हो सगित्पाणि विश्वनाथ पुत्री वागणवी श्रीमदं श्रीअनन्तानन्द चार्यजके आभनके सम्मुख उपस्थित होकर दीक्षार्थ माथी द्रुप । साथके मानवरूप धारी देवगणने माथनाथी प्रभा यह बालक आपका हो है, इसका अपनाया जाय । कुमारकी धारना और साथियोंके वचनोंको सुन समन्तर आचार्यपाद श्रीअनन्तानन्दाचार्यजीने कहा मैं अनन्त श्रीआचार्य चरणसे आपनोगों का सब व्रत निवेदन कर देना हूँ आपने ग वैशिष्ट्य । इसी बीच दिव्य शंख निनाद हुआ जिसके द्वारा कुमार दिव्य दीक्षासे दीक्षित हो समाधिस्थ हो गये और बाह्य जगत्से वहाल हो गये । जब दृष्टा हुआ तो सामने ही अनन्त श्रीपतिमान राजके दर्शन हुए और स्वामी

१ जमीन पीठने लगी । २ दर्वीने अपनी बेगार उनके पंथे डाल दी ।
 ३ श्रीमद्भागवतमें और ४ भक्तमाल मूल ९८ एवं टीका ४०४ में कहा है ।

श्रीअनन्तानन्दाचार्यजीकी आज्ञा हुई कि बालककी दिव्य दीक्षा हो चुकी है अब तुम पंच संस्कार पूर्वक श्रीवैष्णवी दीक्षा से दीक्षित करो । श्रीमदाचार्यजी का पालन हुआ । आप दीक्षित हो वहीं रहने लगे और अल्प काल में ही आपने वेदवेदांग दर्शन शास्त्र एवं भक्ति रहस्यों का अध्ययन कर लिया ।

कार्तिक मास में आकाश दीपक जलाते हुए एक कोकणदेश की ब्राह्मणी का लड़का ऊँचेबाँस से गंगाजी में गिर रहा था । ब्राह्मणी की चीख पुकार सुन आपकी दृष्टि उधर गई तो आपने अपने योग बल से उस को वहीं रोक दिया और फिर एक दलिया के द्वारा उतरवा लिया । यह समाचार सुनकर श्रीयतिराजराजने आपसे कहा-इस प्रकार से परोपकार कार्य तो अवश्य करणीय है परंतु सावधानी पूर्वक (उनमें कर्तृत्वामिमान न हो)

एक दिन आप मधु रूपामृत का आस्वादन करते हुए बड़े अंधेरे ही श्रीगंगा स्नान को चले गये । वहाँ एक मेठकी कन्या बैठी थी, संयोग वर आपका पैर फिसल कर गंगा जी में गिरने लगे तो लड़की ने उठकर महारा दिया, आप तो नहीं गिरे परंतु वह लड़की फिसली और श्रीगंगाजी में गिर ही गई । आपने मृक्ष्य तरीक से गंगा में प्रवेश करके उसको बचाया । कलान्तर में जब उस कन्या के विवाह की बात चली तो उसने कहा जिस सन्त कुमार ने मेरे प्राण बचाये थे उसके ऊपर उसी समय में अपना तन मन न्योछाकर कर चुकी हूँ । वे सन्त हैं, वे विवाह करलें यह असंभव है, अतः मैं आजीवन कुमारी रहकर भजन करूँगी । उसने ऐसा ही किया ।

एक बार श्रीमदाचार्यपाद की आज्ञा पर आप चित्रकूट चले, मार्ग में अन्नोषीदेवीके पास पहुँचते पहुँचते चातुर्मास आरंभ हो गया, मेमियों के द्वारा बड़ी कुटी बनी और उसीमें चातुर्मास निवास हुआ । भक्तमाल में जो "भर वर लकरी नाहि" वाली कथा आई है वह इसी स्थल की है ।

यहाँ चानुमांसान्न में जब आपकी कथा विसर्जन हुई तो सभी नर नारियों ने आरती की एक अलौकिक देवी ने भी आकर आरती की। उसके स्पर्श से वह थाल स्वर्ण का हो गया जिससे आरती की गई थी। आपके सामने जब चरचा आई तो आपने कहा वह थाल त्रिवेणी में फेंक दिया जाना चाहिये। एक व्यक्ति वह थाल अपने घर ले गया उसने कहा गया तो न माना तब उसके घर पर वह देशी मकड़ हो गई और अपना थाल लेकर त्रिवेणी में पविष्ट हो गई।

एक बार दिवाली के दिन कुछ तुआरियों को चमत्कार दिखाकर आपने उस कृत्य से छुड़ाया। उसने प्रतिज्ञा करली कि अब कभी जूआ नहीं खेलेंगे।

चित्रकूट पधार कर आपने जो दिव्य चित्र किये जैसे अलौकिक वृद्ध महात्मा एवं अनंकारेण योगी और योगिनिया का समागम, महर्षि अत्रि और माना अनुसयाजी का दर्शन, दत्तात्रयजी और भगवान शंकरजी का दर्शन, लखण जानकी सहित श्रीमरकार के दर्शन, श्रीशिवजी के द्वारा श्रीबाल्मीकि अवतार एवं मानस रामचरित का उपदेश, नन्दुमार आपका हरिपूर भजन, बालक राम बोला (श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी) की शाली, उपनयन शिक्षा दीक्षा चारह क्षेत्र श्री अयोध्यापुरी आदि की यात्रा, कथा उपदेश, फिर काशी आकर अपने गृहस्थ श्रीगुरु भ्राता पं० श्रीशेष सनाननकी के यहाँ अध्ययनाथ बालक को गुरु श्रीचित्रकूट पधार आना और वहीं पर अपनी लीला का संवरण करना विस्तार से वर्णित है, जिसका समावेश स्थानाभाव से यहाँ अर्थात् है और बहुत सी कथायें आये श्रीगोस्वामीजी की कथा आदि में आभीरही हैं, उनकी पुनरावृत्ति अनावश्यक समझ यहाँ विस्तार न करके इस लेखको यहीं समाप्त किया जा रहा है।

(श्रीकबीरजी के कृपापात्र श्रीपद्मानाभजी की कथा)

मूल छ०—नाम महा निधि मंत्र नाम ही सेवा पूजा। जप तप तोरथ नाम नाम विन और न दृजा ॥ नाम प्रीति अरु बैर नाम कहे नामी बोलै। नाम अजामिल साखि नाम बन्धन ते खोलै ॥ नाम अधिक खुनाथते, राम निकट हनुमत कह्यो। कबीर कृपाते परम 'तत, पद्मनाभ परचो लह्यो ॥६८॥

काशी वामी साह भयो कोही सां निवाहें कैमे परिगये कृमि चल्थो बूडवेको भीर है। निक्मे पदम आय पृथ्वी दिंग जाय गहि कही देह खोलो गुण, न्हाय गंगा नीर है ॥

राम नाम कह बार तीनमें नवीन होत भयोई नवीन कियो भक्ति मति धीर है। गये गुरु पाम तुम महिमा न जानी अहो 'नामाभास काम करै, कही यो कबीर हो ॥३११॥

(श्री तत्त्वाजी एवं जीवजी की कथा)

मूल छ०—भक्ति सुधा जल 'समुद्र भये

१ तत्व । २ भीड़ । ३ पकड़कर । ४ रस्सी । ५ नाम की क्षायापात्र । ६ समुद्र ।

'बेलावलि गाढी । 'पूरबजा की रीति
प्रीति उतरोत्तर बाढी । रघुकुल सदृश
स्वभाव 'शिष्ट गुण सदा धर्म रत ।
शूर सुधीर उदार दया पर दक्ष 'अनन
व्रत । 'पद्म खंड भक्तन पथति, प्रफुलित
कर 'सविता उदित । तत्त्वा जीवा दक्षिण
दिशि, 'वंशोद्धर राजत विदित ॥६९॥

तत्त्वा जीवा भाई उभै विप्र साधु सेवा प्रण
मन धरी बात ताते शिष्य नहीं भये हैं ।
गाँवो एक टूँट द्वार होय हरी 'द्वार अहो
मन्त चरणामृत को लेकर डारें नये हैं ॥
जब सो हरित देखें ताको गुरु कर लेखें
गये श्री कवीर पूजा आश पाँव लये हैं ।
नीठ नीठ नाम धाम दियो परिचय कोई
काम जो पै होय आश्रो काशी, कहि गये हैं ॥३१२॥
काना कानी भई द्विज कही जाति पाँति गई
न्यारे करि दये कोऊ बेसी नहीं लेत हैं ।

१ पर्याद । २ पूर्व दिशामें पड़ने वाली मध्याह्नोत्तरकी छाया ।
३ श्रेष्ठ । ४ अनन्य । ५ भक्तोंकी रीति रूपी कमल वन । ६ सूर्य ।
७ वंश का उद्धार करनेवाले अथवा दक्षिण भारतके वंशोद्धर नामके
ग्राममें । ८ टहनी । ९ यह नई बात है ।

चले एक काशी जहाँ बसत कवीर धीर
जाय कही पीर जब पूछ्यो कौन 'हेत है ॥
तुम दोऊ भाई करो आपमें सगाई, होय
भक्ति सरसाई न घटाई चित चेत हैं ।
आय वहै करी, परी ज्ञाति स्वरभरी, कहें
कहा उर धरि कछु मति हूँ 'अचेत हैं ॥२१३॥
करें यही बात हमें और ना सुहान अव,
सभी हा हा खान कहें व्योडि हठ दीजिये ।
पूछ्योको फेर गये, करो व्याह जो पै नये,
दण्ड करि नाना भाँति भक्ति दृढ कीजिये ॥
तब दई सुता लई 'पातिन्ह प्रमन्न हों के
प्रीति हर भक्तन में सदा रम पीजिये ।
विमुख समूह देख मम्ममुख बढ़ाई करें
धरें हिय माँझ कहें नाम पर रीझिये ॥३१४॥

(श्रीमाधवदासजी की कथा)

मूलच्छ०—पहिले वेद विभागि कथे पुराण
अष्टादश । भारत भागवतादि मथे
उद्धारयो हरि यश । अब शोधे सब ग्रन्थ
अथे भाषा विस्तारे । लीला जय जय

१ प्रयोजन । २ वहकी हुई है क्या ? ३ झुक गये हैं । ४ जाति
वालोंने । ५ विमान करके ।

जयति गाय भव पार उतारे ॥ जगदीश
इष्ट वैराग्य निधि, करुणारस भीज्या
हियो । 'बहुरि व्यास मनो प्रकट है,
जगको हित माधो कियो ॥७०॥

माधोदाम द्विज निजतिथि तनु त्याग दियो
लई इन जानि जग में माई 'व्योहार है ।
सुनके बढन 'योग लियो नित चाहत हो
मई यह औरै ले दिम्बाई करतार है ॥
ताने तजि दियो गेह वहीं मय पाले देह
करे अभिमान मोई जानिये गँवार है ।
आये 'नीलगिरिधाम रहे परि मिन्धु तीर
अति मति धीर भूख प्यास ना छिबार है ॥३१५॥
भये दिन तीन बेतो भूखके अधीन नाहीं
रहे हरि लीन प्रभु शोच परयो भारीये ।
दयो शैल भोग थार लक्ष्मी जु पधारी लेके
हाटक की थारी भन भन पाँव धारिये ॥
बेठे हे कुटी में पीठ दिये रूप रंग रंगे
विजरी मी कौंध गई नीके न निहारिये ।
देखि मो प्रसाद मन बड़ो अहलाद भयो
लयो भाग्यमान पात्र धरयोई विचारिये ॥३१६॥

१ फिरसे । २ व्यवहार । ३ सहयोग । ४ भगवानही । ५ श्रीजगदीशपुरी ।

मंदिर किवार खुले थार नहीं शोच परयो
करयो सो यतन हूँ दयो वाही ठौर पायो है ।
लाये बाँधि मारी बेंत धारी जगन्नाथ राय
भेद तब खुल्यो पीठ चिन्ह दरमायो है ॥
कहीं मै ही दियो तब लियो बानै दोष कहा
मानि अपराध पाँव गहिजे क्षमायो है ।
भई यों प्रमिद वात यश न समात कहूँ
सुनिके लजान माधु शील यह गायो है ॥३१७॥
देखत स्वरूप सुधि तन की विसरि जान
रहजान मन्दिर में जानें नहीं कोई है ।
लाग्यो शीत गात सुनो बान प्रभु काँप उठे
ठई 'मकलान अति प्रीति दिय 'मोई है ॥
लागे जब वेगि वेगि जाय परे मिन्धु तीर
चाहे जब नीर लियो 'ठाढ़े देह धोई है ।
'कर्मके विचार ओ निहारि कही जानें मे तो
दंत हो अपार बुख ईशता ले खोई है ॥३१८॥

१. मोठी रजाई-मोड़ । २. व्याप गई है । ३. प्रभु खड़े थे
उनने शरीर धो दिया । ४. माधो दासजी ने विचार किया और प्रभु
को देखकर कहा मैंने आपको जान लिया आप दासों को अपार दुःख
देकर अपनी ईश्वरता छोड़ कर सेवा करते हो ।

'कहा करों अहो मोपै रह्यो नहिं जात नेक
 'मेढो व्यथा गात 'मोको व्यथा बहु भारी है ।
 रहै भोग शेष और तनमें प्रवेश होय
 ताते नहीं दूर करों ईशता लै टारी है ॥
 बहु बात साँची याकी गौम एक और सुनो
 साधु को न हँसै कोउ ये हू में विचारी है ।
 देखत ही देखत में पीडा सो विलाय गई
 नई नई कथा कहि भक्ति विमतारी है ॥३१६॥
 कीरति अभंग देखि भिक्षाको आरंभ कियो
 दियो काहु वाई खीझि 'पोतो सो चलाय के ।
 देवो गुण लियो नीके जलमों प्रक्षाल कर
 कगी दिव्य वाती दई दिये में वराय के ॥
 मंदिर उजारो भयो हियेको अँधेरो गयो
 गयो फेर देखवेको परी पाँव आय के ।
 ऐसे हैं दयालु दुःख देतहु निहाल करें
 करें नीके सेवा तार्को सके कौन गाय के ॥३२०॥
 पंडित प्रवल एक भूमिजय करि आय
 वचन सुनायो शास्त्रार्थ मोमों कीजिये ।
 दई लिखि द्वार काशी जायके निहारयो पत्र

१ भगवान ने कहा "क्या कहूँ मुझसे दामों का दुःख देखकर
 रक्षा नहीं जाता ।" २ माधोदासजी ने कहा "विमारी ही मेष्ट दो ।"
 ३ प्रभुबोले इस में मुझे बड़ा दुःख यह है कि— ४ चूल्हा पीतने का कपडा ।

'खार अति भयो लिखी जीत वामें 'खीझिये ॥
 फेर मिलों माधोजी सों वैसे ही हरावों और
 'खर सो मगाय कहों चढो तब 'धीजिये ।
 आयो आप स्नान गये आय 'प्रभु वाद किये
 लै चढायो खर 'सोई पुगी सब रीझिये ॥३२१॥
 ब्रज ही की लीला सब गावें नीलाचल माँझ
 चाह भई जाय ब्रज नैनन निहारिये ।
 चले ध्रुन्दावन मग लगे एक गाँव जहाँ
 वाई भक्ता भोजन को लाई 'चाह भागिये ॥
 बैठे ये प्रमाद लेन वाई टग भरे अहो
 कहो कहा बात दुःख हियेको उधारिये ।
 साँवरो कुमर यह कौन को चुराय लाये
 माय कैसे जीहिं सुनि मति सो विमारिये ॥३२२॥
 चले और गाँव जहाँ महाजन भक्त रहे
 गहे मग माँझ आय विनती सों करी है ।
 गये वाकें घर वह गयो काहु और घर
 भाव भरी तिया आय पाँयन में परी है ॥
 ऊपर महन्त करें पाक कही मन्त आये
 कह्यो वे 'समाई नहीं, आई 'अरवरी है ॥

१ हीरान । २ कौंध किया । ३ मधा । ४ विश्राम हो । ५ भगवान ने
 शास्त्रार्थ किया । ६ उसीको । ७ उत्साह । ८ गुंजाइश । ९ घबड़ाई
 हुई ।

कीजिये रमोई सिद्ध होय सोई लावो, दध
नीके के पिवायो नाम कहि भये 'वरी है ॥३२३॥

गये आप पाछे भक्त आयो सो सुनायो नाम
मुनि 'अभिगम दोरे संग सो महन्त है ।

लिये जाय पाँय लपटाय सुख पाय मिले
भिले घर माँझ तिया धन्य तो सो कन्त है ॥

'मन्तपति बोले मैं अनन्त अपराध किये
'कही मेवा जीवन में 'सीध मानि 'जन्त है ।

'आवत मिलाप होय, राखो 'यह बात गोय
आये वृन्दावन जहाँ मदा ही वसन्त है ॥३२४॥

देख देख वृन्दावन मन में मगन भये
गये श्री विहारीजू के चना तहाँ पाये हैं ।

कहि रव्यो द्वार पाल तेक में प्रमाद लीजे
यमुना रमान तट भोग सो 'लगाये हैं ॥

नाना विधि पाक धरे 'म्यामी आप ध्यान करें
बोले हरि भावै नाहीं 'देही लै खवाये है ।

पूछ्यो सो जनायो दृढ़ि लायो छागे 'गायो मव
तुमनों उदाम लाना रस समझाये है ॥३२५॥

१ चले गये । २ आनन्दप्रद । ३ महन्तजी । ४ श्रीगोदासजी ने कहा । ५ मन्तोंकी जूटन । ६ यन्न । ७ लोटनेमें मिलेगे । ८ सीध प्रमाद सेवनका उपदेश । ९ छोड़ी देगमें लालजीका प्रमाद मिलेगा । १० चने । ११ गुसाईंजी । १२ माधोदासजीने । १३ सब कह दिया ।

गय ब्रज देग्वेको भौडीर में खेम रहै
खात रात 'दुरा खीर कृमिले दिग्वाये हैं ।

लीला मुनिबेको हरियाने ग्राम रहे जाय
गोबर दू पाथि पुनि नीलाचल धाये हैं ॥

घरहू को आये सुत सुखी सुन्यो मात वाणी
मार्ग में स्वप्न देके 'वणिक मिलाये हैं ।

याही भाँति नाना विधि चरित अपार जानो
जिते कछु जाने तिने गायके सुनाये हैं ॥३२६॥

(श्रीगुनाथ गुसाईं जी की कथा)

मूल छ०-श्रीतत्त्वगत 'सकलात विदित
पुरुषात्तम दीनो । शौच गये हरिमंग
'क्रिया सेवक का कोना । जगन्नाथ पद
प्रीति निरन्तर करत खवासी । भगवत
धर्म प्रधान मुदित नीलाचल वासी ॥
उत्कल प्रदेश जगदीशपुर, वैनतेय सब
कोउ कहैं । रघुनाथ गुसाईं गरुड ज्यों,
सिंहपौरि ठाढ़े रहैं ॥७१॥

अति अनुराग घर संपत्ति सो रव्यो पाग
ताहु करि त्याग नीलाचल कियो वास है ।

१. लुपा २. उसी वैश्यसे । ३. मोटीरजाई । ४. कार्य ।

धन सो पठावैं पिता सोहू नहीं भावैं कछु
 देख्यो मुहाने महा प्रभु के पाम है ॥
 मन्दिर के द्वार रूप सुन्दर निहार्यो करें
 लाग्यो शीत गात सकलान दई दास है ।
 शौच संग जायवे की रीति को प्रमाण वही
 जैसे पूर्व कथो माधोदाम सुखराम है ॥३२७॥
 महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजी की आज्ञा पाय
 आये वृन्दावन राधा कुण्ड कियो वास है ।
 रहनि कहनि रूप चहनि न कहि मकों
 थकें सुनि तन भाव रूप करि लियो है ॥
 मानसी में पायो दूध भान भस्मात हिये
 लियां रम नाड़ी देखि वैद्य कहि दियो है ।
 कहाँ लौ प्रताप कहाँ आप ही समझ लेंहु
 देहु वही रीति जागों जाय आगे जियो है ॥३२८॥

(श्रीनित्यानन्द एवं श्रीचैतन्यदेव (गौरांग महाप्रभु) की कथा)

मूल छ०—गौड देश पाखण्ड मंदि कियो
 भजन परायण । करुणा सिंधु कृतज्ञ भये
 अगतिन गतिदायन । दशधारस आक्रांति
 महत जन चरण उपासे । नाम लेय
 निष्पाप दुरित तिहि नरके नाशे ॥

१. दर्शन ही । २. प्रसन्न होकर ।

अवतार विदित पूरब मही, उभय महत
 देही धरी । नित्यानन्द चैतन्य की,
 भक्ति दशों दिशि विस्तरी ॥७२॥

(स्वामी श्रीनित्यानन्दजीकी कथा)

आप बलदेव मदा वारुणी सो मत्त रहें
 चहें मन मानों प्रेम मत्तताई चाखिये ।
 मोई नित्यानन्द प्रभु महन्त की देह धरी
 भरी सब थानि पुनि तऊ अभिलापिये ॥
 भयो बोझ भारी क्योहू जात ना सँभारी जब
 ठौर ठौर पारषद गाँझ धरि राखिये ।
 कहन कहत और मुनत सुनत जाके
 भय मतवारें बहु ग्रंथ दत माखिये ॥३२९॥

(गौरांग महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्यजीकी कथा)

गोपिनके अनुराग आगे आप हारे श्याम
 जान्यो यह लाल रंग कैसे आवें तन में ।
 ये तो सब गौर रंग नख शिख बनी ठनी
 खुन्यो यों सुगंग अंग अंग रंगे वन में ॥
 श्यामताई माझ सो ललाई ह समावे जामे
 तामे मेरे जान फिर आई यह मन में ॥

१. प्रेमोन्मत्तता । २. समीपवर्ती । ३. भगवान । ४. प्रेम

रंग ।

यशुमति मुन श्याम शची मुन गौर भये
 नये नये नेह चोज नाचे भक्त गण में ॥३३०॥
 आवै कभूँ प्रेम हेमपिंडवत देह होत
 कभूँ मन्धि मन्धि छूटि अंग बढि जात हैं ।
 और एक न्यारी रीति अश्रु पिचकारी मानो
 उमे लाल प्यारी भवसागर समात हैं ॥
 ईशता बखान कहा करो जू प्रमाण याको
 जगन्नाथ क्षेत्र भव लख्यो साक्षात हैं
 चतुर्भुज पदभुज रूपले दिग्वाय दियो
 कियो जो अनूप हित बात पातपात हैं ॥३३१॥
 कृष्ण चैतन्य नाम जगत प्रकट भयो
 अति अदिराम लौ महन्त दही करी हैं ।
 जितों गौडदेश भक्ति लश ह न जान कोऊ
 मोऊ प्रेम सागर में बोरयो कहि हरि हैं ॥
 भये शिरमोर एक एक जग तारिबे को
 धारिबे को भक्ति साखी पोथिन में धरी हैं ।
 कोटि कोटि अजामीन वारि डरें मेमे दुष्ट
 लिनहु मगन किये भूमि भक्ति भरी हैं ॥३३२॥
 श्रीगोरांग चरित्र के संस्कृत और बंगला भाषा में अनेक ग्रंथ हैं
 हिन्दीमें भी ब्रह्मचारी श्रीपद्मदत्तजी द्वारा लिखित महाविशाल ग्रंथ
 गीता प्रेस गोरखपुर से प्राप्त हैं वे सब प्रेमियोंको परम हृदय्य हैं ।
 १ सोने के डले जैसी ।

(महाकवि श्रीसूरदासजीकी कथा)

मूल छ०—उक्ति चौज अनुप्रास वर्ण
 अस्थिति अतिभारी । वचन प्रीति निर्वाहि
 अर्थ अद्भुत तुकधारी । प्रति विंवित
 दिवि दृष्टि हृदय हरि लीला भासी ।
 जन्म कर्म गुण रूप सबहि रसना
 परकासी ॥ विमल बुद्धि हो तासुकी, जो
 यह गुण श्रवणनि धरै । सूर कवित
 सुनि कौन कवि, जो नहिं शिर चालन
 करै ॥७३॥

श्री बल्लभ संप्रदाय की ८४ वैष्णवन की वारता नामक ग्रंथ के
 आधार पर श्री सूरदास जी की संक्षिप्त कथा दी जा रही है ।

श्री सूरदास जी के माता पिता कुल जन्म स्थान आदि का पता
 नहीं लगता । आप आचार्य महामह श्री बल्लभाचार्य जी के शिष्य
 थे । स्वामी श्री बल्लभाचार्य जी अहेल नामक स्थान से जब व्रज
 भूमि आये तब मार्ग में गऊ घाट पर विश्राम हुआ । श्री सूरदासजी
 गऊ घाट पर ही रहते थे, सूर (अन्धे) डी थे, पद रचना और
 गायन में प्रसिद्धी प्राप्त कर चुके थे । श्री बल्लभाचार्य स्वामी जी को
 श्री सूरदास जी के प्रेमियों से मालूम हुआ तब आपने बुलाने का
 विचार किया, इधर सूरदास जी को भी श्री बल्लभाचार्य जी के
 पधार और पधारने के समाचार मिले तो मध्याह्नोत्तर में आचार्य
 चरण में समुपस्थित हुए और आज्ञा पाकर दोन भाव के स्वरचित पद

गाकर सुनावे । प्रमत्त हो श्री आचार्य महाप्रभु जी ने मुरदास जी के वैष्णव संस्कार कर स्वरचित श्रीमद्भागवत की व्याख्या सहित दशमस्कन्ध की अनुक्रमणिका समझाकर श्री भावल्लीला गान करने की आज्ञा दी, तदनुसार आपने श्री कृष्ण लीला गान की । श्री आचार्य-महा प्रभु ने अल्पन्त समय ही श्री मुरदास जी को अपने साथ ही ले लिया और श्री मुरदास जी अब गोवर्धन गोकुल आदि में श्री आचार्य-चरणों के साथ रहने लगे और अन्त समय में परामोली आकर श्री नाथजी की ध्वजा के समीप शरीर परित्याग कर पश्चिम पधारे ।

श्रीमुरदासजीकी कुछ अन्य साहित्यिक रचनाएँ भी हैं और प्रायः समस्त श्रीमद्भागवत का विषय आपने सवालाख पदों में वर्णन किया है जिस ग्रन्थ का नाम मुरसागर है । इसके जो पद प्राप्त हैं वे अनेकानेक प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं और सर्वत्र प्राप्त हैं बाकी के पद अप्राप्य हैं ।

श्रीमुरदासजी श्रीनाथद्वार से अन्यत्र होते तब भी कीर्तन के समय पर मन्दिर में कीर्तन करते हुए श्रीवल्लभाचार्यजी को दृष्टिमोचर होते थे । जब मुरदासजीका अन्तिम समय आया तो कीर्तन करना नहीं देख पड़े तब श्रीवल्लभाचार्यजी ने यह जानकर कि मुरदासका शरीर अब छूटना ही चाहता है, समुपस्थित प्रेमियों को परामोली जाकर मुरदासजी के दर्शन करने की आज्ञा दी और शीघ्र ही स्वयं भी पधारे । परामोली पहुँच आपने मुरदासजी का दर्शन देकर कृतार्थ किया और उनकी मनोभावना विषयक प्रश्न किये जिनके समुचित उत्तर मुरदासजी ने उस समय भी पदों के रूप में ही निवेदन किये और आचार्य अनुग्रह को पाकर नित्य लीलामें पधार गये ।

(श्रीपरमानन्ददासजीकी कथा)

**मूल छ०—पोंगँड बाल किशोर गोप
लीला सब गाई । अचरज का यह बात**

हुतो पहिलो जु सखाई । नैनन नीर
प्रवाह रहत रोमांच रैन दिन । गद्गद्
गिर उदार श्याम शोभा भोज्यो तन ॥
सारंग छाप ताकी भई, श्रवण सुनत
आवेश प्रद । ब्रज वधू रीति कलियुग विपै-
परमानंद भयो प्रेमहृद ॥७४॥

श्रीपरमानन्ददासजी आनन्द कंद भगवान श्रीकृष्णचन्द्रजी के नित्य सखा हैं, जीवों के उद्धारार्थ ही अवतरित हुए हैं । मूल में श्रीनाभास्वामीजी ने भी आपको नित्य सखा कहा है । आपका जन्म कर्नाज नगर में कान्बकुब्ज द्विज कुल में हुआ है आप परमोत्तम कवि और गायक थे ।

श्रीपरमानन्ददासजी कर्नाज से प्रयाग गये उस समय स्वामी श्रीवल्लभाचार्यजी अडल ग्राम में विराजते थे । परमानन्ददासजी के हार्मिण्य गान की प्रशंसा से आकर्षित हो आचार्य महाप्रभुके जल-घाटिया श्रीकृष्ण छत्रीजी ने एक रात्री में प्रयाग जाकर कीर्तन श्रवण किया और श्रीजलघाटियाजी की मोदी में विराजमान श्रीठाकुरजी ने भी कीर्तन सुना ।

जलघाटियाजी के लौट जाने पर श्रीपरमानन्ददासजी को स्वप्न में जल घाटियाजी की मोदी में विराजमान होकर पद सुनते हुए आनवनीतप्रियाजी का दर्शन और आदेश प्राप्त हुआ । जागनेपर श्रीपरमानन्दजी को आनवनीतप्रियाजीके दर्शनों की उग्र उत्कंठा हुई और दर्शन की प्राप्ति को वे श्रीजलघाटियाजी की कृपा साध्य समझ अडल ग्राम में आकर इनसे मिले । परमानन्दजी ने जाकर जब

श्रीवस्तुभाचार्य स्वामीजी के दर्शन किये तो इनको आचार्य रूप में साक्षात् भगवान् श्रीकृष्णके दर्शन हुए । आचार्यज्ञा पा आपने विरह के पद गाकर सुनाये तब आज्ञा मिली कि बाललीला कहो । परमानन्दजीने विनय की प्रभो ! मैं प्रभु की लीलाओं को समझता नहीं हूँ । श्रीआचार्यपाद ने स्नान करके आनेकी आज्ञा दी । परमानन्दजी जब स्नान करके आये तो आपने ओषधवचस्त्ररणागति (मंत्रोपदेश और घ्राण संबंध पुष्टि) प्रदान की । श्रीमद्भागवत की अनुक्रमणिका का उपदेश किया जिससे आपको संयोग लीला की स्फूर्ति हो गई तब आपने भी सवालसपद रचना की जिसका नाम परमानन्द सागर प्रसिद्ध है । आप भी श्रीआचार्य महामधु के साथ व्रज में आ गये ।

एक बार श्रीआचार्यपाद को आपके द्वारा "हरि तेरी लीला की सुधि आवै" पद श्रवण कर तीन दिन तक मुर्छावस्था रही तब से श्रीपरमानन्ददासजी ने आचार्य सन्निधि में ऐसे विरहके पद नहीं गाये और प्यारे की ललित लीलाओं का गान करते रहे ।

(श्रीकेशव काश्मीरीजी कथा)

मूल छ०—कश्मीरीकी छाप पाप तापन
जन मण्डन । दूढ हरि भक्ति कुठार
अधर्मन विटप विहंडन । मथुरा मध्य
मलेच्छ वाद करि बरबट जीते । काजो
अजित अनेक देखि परचे भयभीते ॥
विदित बात संसार सब, सन्त साखि
नाहिन दुरी । केशव भट नर मुकुट
मणि, जिनकी महिमा विस्तरी ॥७५॥

कीन्ही दिगविजै सब पंडित हराय दिये
लिये बडे बडे जीति भीति उपजाई है ।
फिरत 'चंडोल बढे गज बाजि लोल मंग
प्रतिभा की नदी आय नदिया बहाई है ॥
डरे द्विज भारी महा प्रभुजू विचारी तब
लीला विस्तारी गंगा तीर सुखदाई है ।
बैठे ढिंग आय बोले नम्रता जनाय रघो
जग यश लाय नेकु सुनो मनभाई है ॥३३३॥
लरकन मंग पढो बात बडी बडी गढा
तोपै रढो कहो जोई कहै जापै रीझिये ।
गंगा को स्वरूप कहो चाहो द । आगे सोई
नये शतश्लोक किये सुनि मति भीजिये ॥
तामें एक कंठ करि पढके मुनायो अहो
बडी अभिलाषा याकी व्याख्या करि दीजिये ।
अचरज भारी भयो कैसे तुम सीख लयो
तुमहो प्रभाव दियो सोई यहै कीजिये ॥३३४॥
दपण ओ भूषणहु कीजिये बखान याके
सुनि दुःख मानि कही दोष कहाँ पाहये ।
कवित्त प्रबन्ध मध्य रहै खोटी गंध अहो
आज्ञा मोको देहु कथो कहिके सुनाइये ॥

१ पालकी । २ नवद्वीप । ३ हट करते हो । ४ प्रमत्त हो । ५ उम्हाने यह भी किया है ।

व्याख्या करि दई नई ओगुण ओ गुण मई
आए निज धाम भोर मिले समझाइये ।
सरस्वती ध्यान कियो आई ततकाल बोले
बालपै हरायो सब जगत जिताइये ॥३३५॥

बोली सरस्वती मेरे ईश भगवान वे तो
'मान मेरो कहा मनमुख बतराइए ।
भयो दरशन तुम्हें मन परसन होत
मुनि सुख श्रोत वाणी आए प्रभु पाइए ॥
विनै बहु करि कृपा करि आप बोले अजु
भक्ति फल लीजे काहु भूलि ना हराइए ।
हिए धरि लई भीड भाड छांड दई पुनि
नई दुष्टताई मुनि दुष्ट मरवाइए ॥३३६॥

आए काशमीर मुनि वमत विश्राम तोर
तुरक समूह द्वार यंत्र एक धारिण ।
सहज सुभाय कोऊ निकसत आय ताको
पकरत जाय ताके सुन्नत निहारिण ॥
संग लौ हजार शिष्य भरे भक्ति रंग महा
अरे वाही टोर बोले नीच पट टारिण ।
क्रोध भरि भारे आप सूवा पै पुकारे वे तो
देखि सब हारे मारे जल बोरि डारिण ॥३३७॥

१ शक्ति । २ फटकारे=धमकाये ।

(श्री श्रीभट्टजीकी कथा)

मूल छ०—मधुर भाव रस मिलित ललित
लोला सु वलित छवि । निरखत हपेत
हृदय प्रेम वपेत सु कलित कवि ॥ भव
निस्तारन हेत देत दृढ भक्ति सवन नित ।
जासु सुयश शशि उदय हरत अति तम
भ्रम श्रम चित ॥ आनन्दकद श्रीनन्द
मुत, श्रीवृषभानु सुता भजन । श्रीभट्ट
सुभट प्रकट्यो अघट, रस रसिकन मन
मांद घन ॥७६॥

(श्रीहरिव्यासदेवजीकी कथा)

मूल छ०—खेचर नरकी शिष्य निपट
अचरज यह आवे । विदित बात संसार
सन्त मुख कीरति गावे ॥ वैरागिन के
वृन्द रहत संग श्याम सनेही । नव
योगेश्वर मध्य मनो शोभत वेदेही ॥ श्री
भट्ट चरण रज स्पर्शते, सकल सृष्टि
जिनको नई । हरिदास तेज हरि भजन
के, देवी को दीक्षा दई ॥७७॥

ग्राम चटथावल बाग देखि अनुराग भो
 लियो नित्यनेमकरि चहै पाक कोजिये ।
 देवीको अस्थान काहु बकरा ले मार्गो आय
 देखत गलानि भई पानी नही पीजिये ॥
 भवे निशभई भक्ति नेज नमि गई देवी
 नई देह लई, आई लखिमनि भीजिये ।
 'करोजू रसोई, कौन करे कछु औरै भोई
 दीजे जू प्रसाद मोको शिष्या करि लीजिये ॥३३॥
 करी देवी शिष्या पुनि नगरको 'सटकी' मो
 पटकी ले खाट ताकी बडो सरदार है ।
 चढि छाती बोली में तो भई हरिव्यास दामी
 जो न दास होय तो में अभी डारों मार है ॥
 आये सब भृत्य भवे मानो नये तन लये
 गये दुःख पाप ताप किये भव पार है ।
 केऊ दिन रहे नाना भोग मुख लये एक
 धन्दा कै भवपच आया पायो भक्तिमार है ॥३३६॥

(श्रीदिवाकरजी की कथा)

मूल छ०—उपदेशे नृपसिंह रहत नित

१ देवी ने कहा रसोई करो । २ आप ने कहा रसोई कौन कर
 यहाँ तो और ही बात मगाई है ३ देवीने कहा रसोई कर भोग लया
 भुझे भी भगवानका प्रसाद दीजिये और अपनी शिष्या बना लीजिये ।
 ४ दाँड गई । ५ देवी । ६ भक्तिका सार—भगवान का नाम ।

आज्ञाकारी । 'पक्व वृक्ष ज्यों नमित
 सन्त पोषक उपकारी ॥ 'वाणी भोला
 राम सुहृद सबहिन पर छाया । भक्त
 चरण रज याचि विपद रघुवर गुण
 गाया ॥ 'करमचन्द कश्यप सदन, बहुरि
 आय मनो वपुधरयो । अज्ञान ध्वान्त
 अन्तहि करण, द्वितिज दिवाकर
 अवतरयो ॥७८॥

(गोस्वामी श्रीविठ्ठलनाथजीकी कथा)

मूल छ०—राग भोग नित विविध रहत
 परिचर्या तत्पर । शय्या भूषण वसन
 रचत रचना अपने कर ॥ वह गोकुल
 वह नन्द सदन दीक्षित को सोहै ।
 प्रकट विभव जहँ घाघ देखि सुरपति
 मन मोहै ॥ बल्लभ सुत बल भजन के,
 कलियुग में द्वापर किया । विठ्ठलनाथ

१ पके हुए फलों से लदे वृक्षकी तरह से भुके हुए । २ कविता
 में ओला राम नाम रखते थे । ३ पिताजी का नाम है । ४ गोशाला ।

ब्रजराजज्यों, लाल लडायके सुख
लियो ॥७९॥

(श्रीत्रिपुरदामजी जायस्थकी कथा)

कायथ त्रिपुरदास भक्ति सुखराशि भरयो
करयो ऐसो प्रण शीत दगला पठाइये ।
निपट अमोल पट हिये हित जरि आवे
ताते अति भावै नाथ अंग पहिराइये ॥
आयो कोऊ काल नरपतिने विहाल कियो
भयो ईश ख्याल नेक घरमें न पाइये ।
वही ऋतु आये सुधि आई अँगव पानी भरे
आई एक द्वात दीठ याही बेच लाइये ॥३४०॥
बेचके बजार यों रुपैया एक पायो ताको
लायो मोटोथान मात्र रंग लाल गाइये ।
भीज्यो अनुराग हियो नेन जलधार भीजे
भीज्यो दीनता मो धरि राख्यो और आइये ॥
कोऊ प्रभु जन आये सहज दिखाय दीपी
भाई मन दियो लै भंडारी पकराइये ।
काहु दाम दामी के न कामको पै जाहु लैके
बिनती हमारी जू गुमाई न सुनाइये ॥३४१॥

१ नन्दरायजी की तरह से । २ हृदयके प्रेम से जहकर । ३ राजाने
४ परेशान । ५ द्वात=मसिपात्र । ६ वह छुटियां का थान । ७ दूसरे
बैष्णव ।

दियो लै भंडारीकर रामे धरि पट वापे
निपट मनेही नाथ बोले अकुलायके ।
भये हैं जडाने कोई बेगही उपाय करो
विविध उढाये अंग वसन सुहायके ॥
आज्ञा पुनि दई सो अंगीठी चारि दई फेर
बही भई मुनि रहे अतिही लजायके ।
मेवक बुलाय कही कौन की जराय आई
सब सो मुनाई एक वही ली बचाय के ॥३४२॥
सुन्यो न त्रिपुरदास बोल्यो धन नाश भयो
मोटो एक थान आयो राख्यो है विव्हायके ।
लावो वेग याही क्षण मन की प्रवर्ण जानी
लाये दुख मानि व्योत लड़े सो मिमायके ॥
अंग पहिराई सुखदाई कापे जात गाई
कही तब बात जाडो गया भरमायके ।
नेह सरसाई ले दिखाई उर आई मवे
ऐसी रसिकाई हृदे राखिये वमायके ॥३४३॥

(गोस्वामी विठ्ठलनाथजीके ७ पुत्रोंकी कथा)

मूल छ०—श्री गिरिधरजू सरस शीतल
गोविन्द जु साथहि । बालकृष्ण यश
वीर धीर श्रीगोकुल नाथहि । श्रीरघुनाथ

१ टंडसे परेशान २ वही आज्ञा । ३ प्रेम का रस । ४ रसज्ञता ।

जु महाराज श्रोयदुनाथहिं भजि । श्रो
घनश्यामजु पगे प्रभू अनुरागी सुधि
सजि ॥ ये सात प्रकट विभु भजन जग
तारन तस यश गाइये ॥ श्रीविठ्ठलेश
सुत मुहद श्रीगोवर्धनधर ध्याइये ॥८०॥

(श्रीकृष्णदासजीकी कथा)

मूल छ०—श्रीवल्लभ गुरुदत्त भजन सागर
गुण आगर । कवित नौख निदोष नाथ
सवा में नागर ॥ बाणी वन्दित विपुद
सुयश गोपाल अलंकृत । ब्रजरज अति
आराध्य सोई धारी सर्वसंचित ॥ सांनिध्य
सदा हरिदास वर, गौर श्याम दृढ व्रत
लियो । गिरिधरण रीमि कृष्णदास को,
नाम माहिं साभो दियो ॥८१॥

प्रेम रस राशि कृष्ण दासजु प्रकाश कियो
लियो 'नाथ मानि मो प्रमाण जग गाइये ।
दिल्लीके बजार माँहि जलेवा निहारी नैन
भोग सो लगाई 'लागी विद्यमान पाइये ॥

१ अवतार । २ वैसे ही-अवतारों के ही समान । ३ भगवान्
श्री नाथजी । ४ भोग लगी हुई मंदिर में उपस्थित मिली ।

राग सुनि 'वेश्याको भये मा अनुराग वश
कही शशीमुखी लालचीको जा सुनाइये ।
देखि रिझवार रीभी, निकट बुलाय लई
लई मंग चले, तजि लाज ओ बडाइये ॥३४४॥
नीके अन्हवाय पट आभरण पहिराय
मोथी हु लगाय हरि मन्दिर में लाये हैं ।
देखि भई मतवारी कीन्ही मो अलाप चारी
कह्यो लाल देखे, कही देखे मोहि भाये हैं ॥
नृत्य गान तान भाव भरि मुस्कान दग
रूप लपटान नाथ निपट रिझाये हैं ।
हँके तदाकार तन छूट्यो अंगीकार करी
धरी उर प्रीति मन सबके भिजाये हैं ॥३४५॥
आये मूरदास पास कही बडे 'नागर हो
कोई पद गाओ मेरी छाया ना भिलाइये ।
गाये पाँच सात सुनि जानि 'मुसकात कही
भलेजू प्रभात आय फेरिके सुनाइये ॥
परयो शोच भारी गिरिधारी उरधारी वात
मुन्दर बनाय सेज धरयो सो लम्बाइये ।
आय के सुनायो सुख पायो सो बतायो
तिन पक्षपात मान्यो रंग छायो प्रभू गाइये ॥३४६॥
कूआमें खिमकि देह छूट गई, नई भई
१ पेरया । २ चतुरङ्ग ।

कछु 'सो आशंका आर जनमन आई है ।
रमिकन मन दुःख जानि 'सो सुजान नाथ
दियो दरमाय तन ग्वाल सुखदाई है ॥
गोवर्धन तीर कही आगे बलबीर मय
श्रीगुसाई धीर सों प्रणाम यों जनाई है ।
धनहु बत्तायो खोदि पायो विमवास आयो
हिय सुख छायो शंक पंक लें बहाई है ॥३४७॥

(श्रीभीष्म भट्ट सुत वर्धमान मंगलजीकी कथा)

मूल छ०—श्रीभागवत बखानि अमृतमय
नदी बहाई । अमल करी सब अवनि ताप
हारक सुखदाई । भक्तन सों अनुराग दीन
पर परमदया कर । भजन यशोदानन्द
सन्त संघट के अगार ॥ भीष्मभट्ट अंगज
उदार, कलियुग दाता सुगति के । वर्धमान
गंगल गंभीर, उभाय थम्महरि भागति
के ॥८२॥

(श्रीछेम गुसाईजीकी कथा)

मूल छ० रघुनन्दन को दास प्रकट भूमं-
डल जानि । सरबस सोतागम और कछु

१ अकाल मृत्युको । २ भगवान । ३ पाप । ४ दोनों । ५ स्तम्भ ।

हर नहिं आनि ॥ धनुष बाण सों प्रीति
स्वामिके आयुध प्यारे । निकट निरं,
तर रहत होत कबहुँ नहिं न्यारे ॥ शूर धीर
हनुमत सहश, परम उपासक प्रेमभर ।
रामदाम परतापते, क्षेमगुंसाई क्षेम
कर ॥८३॥

(श्रीविठ्ठलदासजी चौबेकी कथा)

मूल छ०—तिलक दामसों प्रीति गुणहि गुण
अन्तर धारयो । भक्तन को उत्कर्ष जनम
भर रमन उचारयो ॥ सरल हृदय संतोष
जहाँ तहँ पर उपकारी । उत्सव में सुतदान
कर्म कियो दुष्कर भारी ॥ हरि गोविंद जय
जय गोविंद, गिरा सदा आनंददा । विठ्ठलदास
माथुर मुकुट, भयो अमानी मानदा ॥८४॥

भाई उभे माथुर सो गुनाके पुरोहित रहे
लरि मरे आपसमें जियो एक जाम है ।
ताको सुन विठ्ठल सो दास सुख राशि हिये
लाये वम थोरा भयो बडो सेवे श्याम है ॥

१ रसना=बाणीसे । २ पुत्र ।

बाल्यो नृप सभा मध्य आवत न विप्र सुत
 क्षिप्र लौके आओ, 'कह्यो, 'कही पूजे काम है ।
 फेरिके बुलायो करो जागरण याही टौर
 काहु समझायो नाच गावे प्रेमधाम है ॥३४८॥
 गये सब साधु मिलि विनो रंग रंगे सब
 राना उठि आदर दे नीके पधगये हैं ।
 किये जा विद्योना तीन छातनके ऊपर लौ
 नाच गान आयो प्रेम गिरे नीचे आयें हैं ॥
 राजा मुख भयो श्वेत दुष्टन को गारी देत
 मन्त भरि अंक निन्हें घर मध्य लाये हैं ।
 भूप बहु भेट करी देह बाही भाँति परी
 पाछे सुधि आई दिन तीसरे जगाये हैं ॥३४९॥
 उठे तब माता ने जनाय सब बात कही
 सही नहीं जात 'निशि निकसे विचारिके ।
 आये यों 'छटीकरा में गरुड गोविन्द सेवा
 करत रहत हिये मगन निहारि के ।
 राजा के जो लोग सो तो हँदकर रहे बैठि
 तिया माता आई करै रुदन पुकारिके ।
 किये ले उपाय रही किन्ती हाहा खाय आप
 रहे मँडराय तब 'बगी मन दारि के ॥३५०॥

१ विह्वलदासजीसे कहा । २ अनने कहा मेरी कामना पूर्ण हो गई
 मुझे राजासे कुछ नहीं चाहिए । ३ मजिल । ४ रातमें घर छोड़ निकल
 पड़े । ५ ब्रजका एक ग्राम । ६ वहीं बस गई ।

देख्यो जब कष्ट तन प्रभु जू सपन दिखो
 जाओ प्रभुपुरी ऐसे तीन बार भाषिये ।
 आये यहाँ जाति पाँति आयो कछु और रंग
 देख्यो एक 'ग्याती माधु मंग अभिलाषिये ।
 निया रही गर्भवती मती मती शोच रत
 खोदत भू पाई प्रतिमा ओ धन राखिये ।
 ग्याती मों बुलाय कही काढि यहि लेओ तुम
 उन पाँय 'परि कह्यो रूप सुख चाखिये ॥३५१॥
 करै सेवा प्रजा और काम नहीं दूजा जब
 फैल गई भक्ति भये शिष्य बहु भायके ।
 बडोही समाज होत माना मिथु मोत आयो
 विविध बधायो गुणीजन उठे गायके ॥
 आई एक नटी गुण रूप धन जरी अहो
 गावे तान कटी चट पटी सो लगाय के ।
 दिये पट भूषण ले भूख न मिटत 'देन
 चहुँ दिशि हेरि पुत्र दियो अकुलाय के ॥३५२॥
 रंगीराय नाम ताकी शिष्या एक राना सुता
 भयो दुःख भारी नेक जलहु न पीजिये ।
 कहिक पटाई वामो चाहे सोही लीजे धन
 मेरे प्रभु रूप मेरे नैनन को दीजिये ।
 द्रव्य तो न चाहौं रीफि चाहौं तन मन दियो

१ बहई । २ देनेकी ।

फेर के समाज कियो विनती मो कीजिये ।
जिते गुणीजन तिन्हें दीन्हें अनगिन दाम
पाछे नृत्य कियो आप देन मो न लीजिये ॥३५३॥

लाई एक डोला में बैठाव रंगी रायजी को
सुन्दर शृंगारि कही वारी तेरी आई है ।
कियो नृत्य भारी जो विभक्ति मोनों नारी सब
भरि अँकवारि भेट किया हार लाइये ॥
मोहन निश्चार में भयो मोहि लेहु मति
नियो उठि शिष्य तब तज्यो कदा पाइये ।
कह्यो वृ चरित्र बड़े रमिक विचित्रन को
जो पे लान मित्र किय चाते द्विज लइये ॥३५४॥

(श्री हरीले हरिरामजीकी कथा)

मूल छ०—उग्रसुतेज उदार सुघर सुध-
राई सीवा । प्रेम पुंज रस राशि सदा
गद्गद स्वर श्रीवा । भक्तन को अपराध
करे ताको फल गायो । हिरण कशिपु
प्रह्लाद प्रकट दृष्टांत दिखायो ॥ सस्फुट
वक्ता जगतमें, राजसभा निधरक हियां ।
हरिराम हटोले भजन बल, राणाको
उत्तर दियो ॥८५॥

राणा सों मनेह मदा चोपर सो खेल्यो करे
सन्यासी एक भूमि मन्त कर छिनाई है ।
जायके पुकारयो साधु भक्ति विदारयो, परयो
विमुखके वश जान माँच ले भुटाई है ॥
आये हरि रामजी पै मवरी सुनाई गीति
प्रीति करि बोले चले आगे, आओ भाई है ।
गये चोठि, आया जन, मन में न लायो नृप,
तब समझायो भाग्यो फेर भू दिवाई है ॥३५५॥

(श्री कमलाकर भट्टजी की कथा)

मूल छ०—पंडित कला प्रवीण अधिक
आदर दें आरज । संप्रदाय शिर छत्र
द्विनिय मानां माधवाचारज । जेने हरि
अवतार सबै पूरण करि जानै । 'परि-
पाटी' ध्वजविजय सदृश भागवत बखाने ॥
श्रुति पुराण सम्मत सुसृति, तापित
मुद्राधरि भुजा । कमलाकर भट जगतमें,
तत्त्ववाद रापी धुजा ॥८६॥

(श्री नारायण भट्टजी की कथा)

मूल छ०—मथुरा मण्डल गोप्यस्थल

१ धमका दिया । २ रीति । ३ विमय ध्वज = जीत का झंडा
कहाते हुए । ४ ध्वजा = झंडा ।

‘बाराह बखाने । किय नारायण प्रकट
प्रसिध पृथ्वी सो जाने । भक्ति सुधाको
सिन्धु सदा सत्संग समाजन । परम
रसज्ञ अनन्य कृष्ण लीलाको भाजन ॥
ज्ञान स्मारत पक्षको, खंडन कोउ नाहीं
‘वियो । ब्रज भूमि उपासक भट्ट सो,
‘रचिपचि हरि एके कियो ॥८७॥

भट्ट श्री नारायण जी भये ब्रज पारायण
जाही ग्राम जायें तहाँ ब्रत करि ध्यायें हैं ।
बोलिकं दिखायें यहाँ अमुक स्वरूप हैं जी
लीला कुंड जाय श्याम प्रकट दिखायें हैं ॥
ठौर ठौर राम के विलास सो प्रकट किये
जिये यों रसिक जन कोटि सुख पावें हैं ।
मथुरा में कहीं चलो बेणी पूछे बेणी, कहीं
ऊँचे गाँव आये खोदे सोत सो लखायें हैं ॥३५६॥

(श्रीवल्लभजीकी कथा)

मूल छ०—नृत्य गान गुण निपुण रासमें
रस बरसावत । अब लीला ललितादि
बलित दम्पतिहि रिभावत । अति उदार

१ बाराह पुराण में । २ दूसरा । ३ परिश्रम पूर्वक ।

निस्तार सुयश ब्रज मंडल राजत । महा
महांत्सव करत बहुत सबही सुख साजत ॥
श्रीनारायण भट्ट प्रभु, परम प्रीति रस
वश किये । ‘श्रीव्रजवल्लभ वल्लभहिं, दुलभ
सुख नयनन दिये ॥८८॥

(श्री रूप सनातन गोस्वामी जी की कथा)

मूल छ०—गौड देश बंगाल हुते ‘अति
बड ‘अधिकारी । हय गय भवन भँडार
विभव ‘भूभुज अनुहारो । यह मुख अनित
विचारि वास वृन्दावन कोन्हो । यथालाभ
सन्तोष कुंज ‘करवा मन दीन्हो ॥ ब्रज
रहस्य राधार मण, भक्ति ‘तोप उद्धार
कियो । संसार स्वाद सुख ‘वांतज्यो, रूप
सनातन तजि दियो ॥८९॥

कहत वैराग्य गये पाणि नामा स्वामी जु बे
गई यों निवरि ‘तुक पांच लागी ‘आँच हैं ।
रही एक तामें धरथा कोटिक कवित्त अर्थ

१ भगवान ने । २ बहुत बड़े । ३ राज्याधिकारी । ४ राजाओं
के समान । ५ शिकोरा मृत्तिका पात्र । ६ खजाना । ७ बसन ।
८ चरण । ९ श्वात्पाप ।

याही ठौर ले दिखाई कविता की साँच है ॥
 राधा कृष्ण रसकी आचारजता कही यामें
 मोई जीवलाल भट्ट छप्यो वाणी नाँचि है ।
 बड़े अनुरागी वेतो करिये बडाई कहा
 अहो जिन कृपा दृष्टि पोथी प्रेमी बाँचि हैं ॥३५७॥
 वृन्दावन ब्रजभूमि जानत न कोऊ प्राय
 दह इरमाय जैसी गुरुमुनि गाई है ।
 रीतिहु उपासना की भागवत अनुसार
 लियो रममार सो रसिक सुखदाई है ॥
 आज्ञा प्रभु पाय पुनि गोपेश्वर लगे आय
 किये ग्रथ भाव भक्ति भाँति दरसाई है ।
 एक एक बात में समात मन बुद्धि जब
 पुलकित गात दृग भरी लग जाई है ॥३५८॥
 रहे नन्द गाँव रूप आये श्री मनातनजू
 मद्या सुखरूप, भोग स्त्रीर सो लगाई है ।
 नेक मन आई, मुखदाई प्रिया लाडलीजू
 मानों बोई बालकी सो सौज सब लाई है ।
 करके मोई मोई लै प्रमाद पायो भायो
 अमल सो आयो नहि पुत्री सो जनाई है ॥

१ आचार्यत्व । २ इसी प्रकार । ३ नृत्य करेगी । ४ भक्तमाल ।
 ५ पायः अक्षर । ६ समीप-पास । ७ लग जाती है । ८ तन्मई
 ९ लड़की ।

फेर जनि प्रेमी करो यही दृढ हिये धरा
 दूरी निजचाल कहि आँखें भरि आई है ॥३५९॥
 रूप गुण गान होत कान सुनि मभा मव
 अति अकुलानी प्राण मूर्च्छा सी आई है ।
 बड़े आप धीर रहे ठाढ़े न शरीर सुधि
 बुद्धि में न आवे प्रेमी वान मो दिखाई है ॥
 श्रीगुमाई कणपूर पाछे आये देखे आछे
 नेक डिंग भये श्वास लाग्यो तब पाई है ।
 मानों आँचलागी आगि प्रेमी तन चिन्ह भयो
 नई यह प्रेम रीति कापे जात गाई है ॥३६०॥
 श्रीगोविन्द चन्द्र आय निशि में स्वपन दियो
 दियो कहि भेद सब जामों पहिचानिये ।
 रहों में स्वरिक माँक पोषे निशि भोर माँक
 सींचि दूध धार गाय जाय देखि जानिये ॥
 प्रकट ले कियो रूप अनिही अनूप अवि
 कवि कैमे कहै अकि रहै लगि मानिये ।
 कहाँ लो बखानों भरै सागर न गागर में
 नागर रसिक हिये निशिठिन आनिये ॥३६१॥
 रहे श्रीमनातनजू नन्दगाँव पावन प
 आने दिन तीन तें सो दूध लेके प्यारिये ।
 १, गाधों के रहनेका घर । २, बड़े में । ३, श्रीराधागनी ही ।

साँवरे किशोर आये, पूछी किहि ओर रहो,
कहे चार भाई पिता रीतिह उचारिये ॥
गये ग्राम वृद्धि घर हरि पैने पाये कहुँ
चहुँ दिशि हेरि हेरि नैनभरि ढारिये ।
अबकं जो अवि फेर जान नही पावे शीश
लाल पाग भावै निशिदिन उरधारिये ॥३६२॥

कही व्याली रूप वेणी निरखि स्वरूप नैन
जानी श्रीमनातनजू काव्य अनुमारिये ।
गधासर तीर द्रुमडार गहि भूलै फूलै
देखि साँई लफलफान गति मति वारिये ॥
आये यों अनुज पाम, फिरै आस पाम, देखि
भयो अतिआस गहे पाँव उर धारिये ।
चरित अपार उभै भाई हित मार पगे
जगे जगमाहि मति मन में उचारिये ॥३६३॥

(आचार्यपाद श्रीहितहरिवंश गोस्वामीजीकी कथा)

मूल छ०—राधाचरण प्रधान हृदय अति
सुदृढ उपासी । कुंज केलि दम्पति
तहाँकी करत खवासी । सर्वस महाप्रसाद
प्रसिधताके अधिकारी । विधि निषेध

१. ग्राम का नाम और पहुँचने की रीति-मार्ग । २. भासू बहाये ।
३. दुःख ।

नहिं दास 'अननि उत्कट व्रतधारी ॥
'व्यास सुवन पथ अनुसरें, साँई भले
पहिचानि है । हरिवंश गुसाई भजनकी
रीति सकृत् कोउ जानि हैं ॥९०॥

हितजू की रीति कोऊ लाखन में एक जानें
राधा ही प्रधान मानें पाछे कृष्ण ध्याइये ।

निपट विकट भाव होत न स्वभाव ऐमो
उनही की कृपा दृष्टि नेक क्योहूँ पाइये ॥
विधि ओ निषेध छेद डारे, प्रण प्यारे हिये
जिये निज दास होंकं निश दिन गाइये ।
मुखद चरित्र मय रमिक विचित्र नीक
जानत प्रसिद्ध कहा कहिके मुनाइये ॥३६४॥

आये गृह त्यागि राग बढ्यो प्रिया प्रीतम सों
विप्र बड भागी हरि ज्ञान दियो जानिये ।
तेरी उभै मुता व्याहि देवे लेखो नाम मेरो
इनको जो वंश सो प्रशंस जग मानिये ॥

ताही द्वार सेवा विस्तार निज भक्तन की
अगतिन गति सो प्रसिद्ध पहिचानिये ।
मानि प्रिय बात गहगह्यो सुख लख्यो मय
कह्यो कैमे जात यह मन में न आनिये ॥३६५॥

१ अनन्य । २ आपके पिताजीका नाम है । ३ महान ।

राधिकावल्लभ लाल आज़ा सो रमाल दई
मेवामें प्रकाश ओ विलास कुंज धामको ।
सोई विसतारि सखसार दृग रूप पायो
दियो रमिकन जिन लियो पक्ष 'वामको ॥
निशिदिन गान रम माधुरिको पान उर—
अन्तर मुहान एक कामे श्यामा श्यामको ।
गुण मो अनूप कहि कैसे के स्वरूप लहै
लहै मन मोद जैमो और नहीं नामको ॥३६६॥

आगे आपका संक्षिप्त चरित्र श्रीगथादल्लभीय भक्तमाल के आधार पर दिया जा रहा है :—

श्रीनन्दलालाकी वंशीके अवतार श्रीहितहरिवंश महाप्रभुजी कुरु क्षेत्र मंडलके बड़ गाँवमें काश्यप गोत्रीय यजुर्वेदीय माध्व'न्दनी शाखानुयायी गौड़ ब्राह्मण श्रीराममिश्रजी व्यासकी धर्म पत्नी आनाग रानीके गर्भसे अवतरित हुए । इसमें ये आर्ष प्रमाण प्रसिद्ध हैं :—

दापरान्ते कलेरादौ पाखण्डबादखण्डनः ।

हरिवंशेति विख्यातोऽनन्यधर्मप्रचारकः ॥ (आगमे

अहमेव भविष्यामि वंशीरूपेण चार्जुन ।

हरिवंशेति विख्यातो मेम भक्ति रस प्रदः ॥ भार्गवपुराणान्तरे,

हरिवंशेति विख्यातो लोके प्रादुर्भविष्यति ।

समुद्रागम्य जन्तुर्ना मत्पियापक्षपातिनाम् ॥ (आगमे)

शाल्यावस्थामें भक्तभावन भगवान् आनन्दकन्द श्रीकृष्णचंद्रजीने दर्शन देकर इनकी अपनी माँचा पहिरादी और श्यामविन्दु युक्त तिलक लगा दिया । उसी समय आपने प्रभुकी स्तुतिकी वही सुधा निधि नामक २७० श्लोकोंका ग्रंथ प्रसिद्ध है ।

१ श्रीगधारानीका ।

एकवार आपको स्वप्नमें ब्रजमंडलके दर्शन हुए तभीसे ब्रज-यात्राकी चटपटी लग गई और ननिहाल जानेका बहाना कर घरसे खाना हो गये । प्रथम श्रीनन्दग्राम पहुँचे वहाँ भगवान् शंकरने दर्शन देकर कहा कि आपका अवतार ब्रज मंडलको प्रकट करनेके लिये हुआ है, अतः ब्रज भूमिका भ्रमण करके समस्त स्थानोंको प्रकट करें । आप श्रीवर्माना गोवर्धन आदि होते हुए श्रीवृन्दावन आ गये । वहाँ श्रीश्यामसुन्दरकी आज्ञा हुई कि कुछ काल जागतिक सुखोंका उपभोग करके फिर पीछे यहाँ आकर निवास करना । आप घर आ गये और श्रीकृष्णजी देवीके साथ पारिवर्तन हुआ । एकवार सोतेमें श्रीगधारानीने दर्शन देकर कहा कि आपके दरवाजे पर जा पोपलका वृक्ष है, उसकी सबसे ऊपर वाली डालीमें एक लाल कोपल मनसे अलग है, उसीमें मंत्रराजके दर्शन होंगे, उस मंत्रको धारण करी एवं आपके पिताज के बागके कुपमें हमारी द्विभुज मूर्ति है उसे निकालकर सेवा पधरालो । आपने ऐसाही किया । विक्रम संवत् १५४४ से १५४८ तक में आपको चार सन्तान हुईं जिनके विवाह करके श्रीगधारानीकी आज्ञासे आपने परिवारके महिन अपने घर आपको छोड़ श्रीवृन्दावनको पयान किया ।

पार्गमें चलते समय फिर श्रीगधारानीकी आज्ञा हुई कि "चट-थावल ग्राममें हमारे परमभक्त एक ब्राह्मण रहने हैं, उनके दो कन्यायें हैं एवं हमारे स्वयंवरवल श्रीविग्रह हैं जो पूर्वमें शिवजी सनत्कुमार और भाण्डव्य ऋषिसे मेवित थे । राजाचन्द्रधरने शिवाराधन करके प्राप्त क्रिय थे और तबसे भूमंडलपर विराजमान हैं । श्रीशिवजीने ही राजाको इनका नाम श्रीराधावल्लभ ही बताया था । ये द्विजदेव अपनी दोनों कन्यायें आपको उद्दान करेंगे, उनको ग्रहण कर लना । बबहाना नहीं वे दोनों आपके बजन भावमें बाधक न होकर पूर्ण महायक होश और उनके दहेजमें हमारे स्वयं व्यक्त विग्रहभी अनायास प्राप्त हो जायेंगे

जिनका श्रीवृन्दावनमें पधराकर सेवा पूजामें निमग्न रहना । आपने इष्ट आज्ञानुसार सब कार्य किया और श्रीवृन्दावन आकर श्रीसेवाकुंज को प्रकट किया, जहाँ श्रीनाथाराजीके सहित भगवान् श्रीगोविन्दजी विराजते हैं । फिर बिहार घाट प्रकटायो (जहाँ पटना (बिहार) निवासी श्रीमानीरामजीने बाट बनवाया, फिर श्रीगोविन्द घाट प्रकट किया जहापर आपका प्रियतमके राम विलासके लिये राम मंडल बनवाया । इसी स्थलपर एकदिन आप श्रीव्यासजी और श्रीहरिदासजीके सहित विराजमान थे उसी समय श्रीमिया प्रियतमके राम विलासकी अधीश्वरी सखी श्रीललिताजीने प्रकट होकर आशु हाथमें मुकुट और चन्द्रिका दिये, आपने इसका भेद समझकर श्रीललिताग्राम निवासी द्विज वर श्री घमडीलालजीको चुनाकर गान्धारीकी शिक्षा दी, शृंगार सामग्रीका निर्माण कराकर प्रदानकी एवं द्विज कुमाराका प्रकृतिनकर तीनों मूर्ति स्वयं संगीतादि कार्यमें अग्रगण्य इन इस जगतीतलपर रामविलासको प्रकट किया ।

आपकी ख्याति दिन दुनों रात चौगुनी दशो दिशाओंमें व्याप्त हो गई । राजा रुद्रम और सेठ साहूकार आ आकर भेट पूजा चढाते और आप श्रीभगवत भगवत सेवामें उसका विनियोग करते, इसका वर्णन तो स्वयं श्रीनाथ स्वामी ने मूल में जिस सुन्दरता से किया है उससे अधिक और कोई क्या करेंगे ।

स्वामी श्रीरामानाथ शरण भगवान् प्रसादजीने श्रीरुक्मिलालजी। भक्तपाल टीका में आपका जन्म संवत् १५५९ विक्रमीय लिखा है वह सर्वथा असंगत है, सांप्रदायिक इतिहास जब यह बताता है कि १५४० से १५४४ विक्रम संवत्के बीचमें आपके चार सन्तानें हो गई थीं तब इस प्रमाण के सामने १५५९ वि० का जन्म किसी प्रकार से भी संगत नहीं हो सकता । उक्त टीका में और भी अनेक महान्माओं के सन्त संवत् इसी प्रकार भ्रामक उल्लिखित है जो मालुम होता है पाश्चात्य अन्वेषकोंके निराधार आधार पर लिखे गये हैं ।

(स्वामी श्रीहरिदासजीकी कथा)

मूल छ०—युगल नामों प्रेम जपत
नित कुंजविहारी । अवलोकत रहें केलि
सखीमुखके अधिकारी । गान कला
गन्धर्व श्याम श्यामाका तोपैं । उत्तम
भाग लगाय मोर मरकट नित पोपैं ॥
नृपति द्वार ठाड़े रहे, दर्शन आशा
जासुकी । आसधीर उद्योतकर, रसिक
छाप हरिदास को ॥९१॥

स्वामी हरिदास रमणी को वस्त्रान मकै
रमिकता छाप जोई जाप मध्य पाइये ।
लायो कोऊ चोवा बाको अनिमन भोवा चामे
डारयो ले पुलिन याके दिये खोआ आइये ॥
जानी सो सुजान कही ले दिखाओ लाल प्यारी
नेक सो उधारयो पट सुगन्धी बुडाइये ।
पारम पाषाण वत जल डरवाय दियो
कियो पुनि शिष्य ऐसे नाना गुण गाइये ॥३६७॥

१ पिता जी का नाम है । २ जप के बीच में भगवान् से ।
३ समाया हुआ । ४ श्री यमुना तट रेती में । ५ खो दिया ।
६ निमग्न हो गये । ७ पारस को पाषाण की तरह ।

(स्वामी श्रीव्यासदेवजीकी कथा)

मूल छ०—काहूके आराध्य मच्छ कछ
नरहरि गकर । वामन परसाधरण सेनु
बन्धन जु शैलकर । एकन को यह रीति
नेम नवधा सों लावैं । शुक्ल सुभोखन
गुवन अच्युत गोत्रो जुलु डावैं । नव-
गुण तोरि नृपुर्गुह्यो, महत सभामधि-
रागके । उत्कल तिलक अरुदामको,
भक्त हृष्ट अति व्यासके ॥१२॥

आये गृह त्यागि वृन्दावन अनुराग करि
गयो दया पाणि हाय न्यारी तापे श्रीभक्तिये ।
राजालेन आयो तो पे जायवो न भायो
श्रीकिशोर उरसायो मन मेला भक्ति भाजिये ॥
चीरा जरकशी शीश चीकनो खिमक जाय
लहुजी बंधाय नहि आप बाँध लोजिये ॥
गये उठि कुंज सुधि आई सुखपुंज आय
देख्यो बंध्यो मंजु कही कैसे मोपे रीभक्तिये ॥३६८॥
सन्त सुखदेन बैठे संगही प्रसाद लेन

१ पिता जी का नाम है । २ वैष्णव सन्त । ३ जनेऊ ।
४ वृन्दावन से अलग हो । ५ पेचा-पगड़ी । ६ जरतारीका ।

परमति लिया सब भाँतिन प्रवीण है ।
दध वरताय ले मलाई बिटकाई धाय
खीम उठे आप पति पोषन नैकीन है ॥
मेवा सों छुड़ाव दई अति अनमनी भई
भूख दिन बीते तान भयो तन खान है ।
सब समझावैं तब दंडको मनावैं उंग
आभरण बेचि साधु जेवं आजा दान है ॥३६९॥
मुताको विवाह भयो बडो उत्साह कियो
नाना पकवान सब नीक बनि आयें है ।
भक्तन की सुधि करि खरी अरुखरी मति
भावना करत भोग सुखद लगाये है ।
आयगये माधु मा बुलाय कही पादो जाय
पोटनि बंधाय चाव कुंजनि पटायें है ।
वंशी पहिराई द्विजभक्ति ले टट्टाई, सन्त
मण्डपमें चिरिया दे हित सों बसाये हैं ॥३७०॥
शरद उजारी रास रच्यो पिय प्यारी तामें
रंग बढ्यो भारी कैमे कहिके सुनाइये ।
प्रिया अति गति लई विजुरीसी कौंध गई
भई चक चौंध छवि मंडलमें छाइये ॥

१ पाग=पगरी । २ युवा । ३ उदास । ४ कृप=दुर्बल । ५
उत्साह से ।

नूपुर सो दृढ़ छूट परयो 'अखरयो मन
तोरिके जनेऊ गुह्यो वाही भाँति माइये ।

सकल समाजमें यों कह्यो आज काम आयो
दोह्यो है जनम ताकी बात जिय आइये ॥३७१॥

गायो भक्त इष्ट अति सुनिके महन्त एक
लेनको परीक्षा आये संग सन्त भीर है ।

भृग्व सो जनावै वाणी प्यासको सुनावै सुनि
कहि भोग आवै इन मानी नहीं धीर है ॥

तब न प्रमाण करी शीघ्रही प्रसाद दियो
ग्राम दोय चार लेय उठे मई पीर है ।

पातर समेट लई शोध करि मोकों दर्द
खायो तुम और, पाँवो, दग भरे नीर है ॥३७२॥

भये सुत तीन बाँटो निपट नवीन कियो
एक ओर सेवा एक ओर धन धरयो है ।

तीसरी जु ठौर श्याम वन्दनी ओ बाप धरी
करी ऐसी रीति देखि बडो शोच परयो है ॥

एकने रुपैया लिये एकने किशोर जू को

श्रीकिशोरदाम भाल निलक ले करयो है ।

आपे दिये, स्वामी हरिदाम निशिराम कीन्हो
वही रास ललितादि गायो मन हरयो है ॥३७३॥

१ व्याकुल हो गया ।

(श्रीजीव गोस्वामीजीकी कथा)

मूल छ०—'बेला भजन मुपक्व 'कपाय
न कबहू लागो । वृन्दावन दृढ वास
युगल चरणन अनुरागी ॥ पोथी लेखन
'पान अघट अक्षर चित दीन्हो । सह-
ग्रन्थन को सार सबे हस्तामल कीन्हो ॥
सन्देह ग्रन्थि छेदन समर्थ, राम उपा-
सक परमधीर । रूप रसातन भक्तिजल,
जीव गुसाई सर गँभीर ॥१३॥

किये नाना ग्रंथ हृदय ग्रंथि जो छेद डोरें
डोरें धन यमुना जो आवे चहुँ ओर तैं ।

कही दास माधु मेवा कंज, कहै पात्रना न,
करो, नीके करी, बोल्यो कोष कटु जोर तैं ॥

तब समझायो मन्त गौरव बढ़ायो यह
मवको सिन्धायो मीठो बोलै निशि मोरतैं ।

चरित अपार भाव भक्ति को न पागवार
किये जो विराग सार कहै कौन 'ओर तैं ॥३७४॥

(श्रीवृन्दावनमाधुरी आस्वादक भक्त समूहका वर्णन)

मूल छ०—सर्वस राधा रमण भट्ट गोपाल

१. सीमा-पाज । २. काई-मैल । ३. पत्रा । ४. योग्यता ।

५. एक शिरे से ।

उजागर । हृषीकेश भगवान विपुल
विह्वल रस सागर ॥ धानेश्वर जगन्नाथ
लोकबड मुनि मधु श्रौरंग । कृष्णदास
युग पंडित पुनि अधिकारी हरि अँग ॥
धम्मडो युगलकिशोर भृत, भूगर्भ गुसाई
व्रत लियो । वृन्दावन की माधुरी, इन
मिलि आस्वादन कियो ॥९४॥

(गोस्वामी श्रीगोपाल धट्टजी की कथा)

श्रीगोपाल भट्टजू के हृदय वे रसाल बसे
लगे जो रसाल राधारमण स्वरूप हैं ।
नाना भोग राग करें अति अनुराग योग
जगे जगमाहिं दिन कौतुक अनूप हैं ॥
वृन्दावन माधुरी अगाध को मवाद लियो
जिये जिन पायो मोथ भये रस रूप हैं ।
गुण ही को लेत जीव अवगुण त्यागि देत
करुणानिकेत धर्मसेतु भक्त भूप हैं ॥९५॥

(श्रीअलिपगवानजी की कथा)

अलि भगवान मन राम सेवा सावधान
वृन्दावन आये कछु औरै रीति भई है ।
देखि रास मंडल में विहरत रसराशि
वाढ़ी छवि प्यास दृग, सुधि बुधि गई है ॥

नाम धरिराम ओ विहारी सेवा प्यारी लागी
पगी हिय माँझ, गुरु सुनी बात नई है ।
विपिन पधारे आप जाय पग धारे शीश
ईश मेरे तुम सुख पायो कहि दई है ॥३७६॥

(श्री विह्वल विपुलजी की कथा)

स्वामी हरि दासजीके दास नाम विह्वल है
गुरु के वियोग दाह उपज्यो अपार है ।
राम के समाज में विराजि सब भक्त राज
बोलि के पठाये आये आज्ञा बडो भार है ॥
युगल स्वरूप अवलोकि नाना नृत्य भेद
गान तान कान सुनि रही न सँभार है ।
मिल गये बाही ठौर पायो भाव तन और
कहे रस सागर जो ताको यों विचार है ॥३७७॥

(श्री जगन्नाथ धानेश्वरीजीकी कथा)

महाप्रभु पारपद धानेश्वरी जगन्नाथ
नाथ को प्रकाश घर दिन तीन देख्यो है ।
भये शिष्य जानि आप नाम, कृष्णदास धरयो
कृष्ण जू कहत सब आदर विशिष्यो है ॥
सेवा मन मोहन जू कृष्णमें जनाय दई है ।
बाहर निकामि करी लाय उर लेख्यो है ।
मुन रघुनाथजीको स्वप्नमाहिं श्लोकदान
वयके निदान पुत्र दियो प्रेम देख्यो है ॥३७८॥

(गोस्वामी श्रीलोकनाथजीकी कथा)

श्रीमहाप्रभु कृष्ण चेतन्य जू के पारषद
लोकनाथ नाम अभिराम सब गीति है ।
राधाकृष्णलीला मो नवीनमें रंगीन मन
जलमान जैसे तेरे निशि दिन प्रीति है ॥
भागवत गान रसखान सो तो प्राण तुल्य
अति सुख मानि कहैं गावै मोही मीत है ।
रमिक प्रवीण मगचलन चरणलागि
कृपा के जनाय दर्द जैसी नेह नीति है ॥३७६॥

(श्रीमधु गुमाईजीकी कथा)

श्रीमधु गुमाई आप वृन्दावन चाह बढ़ी
देखैं इन नैनन मो कैसे धौ स्वरूप है ।
ढुंढत किन्त वन वन कुंज लता द्रुम
मिटो भूख प्यास नहीं जानै छाँह भूप है ॥
यमुना चढ़त कष्ट करन कनारे जहाँ
वंशीवट तट दीठ परे वे अनूप हैं ।
अंक भरि लिये दोरि आजह लो शिर मौर
चाहै भाग भाल साथ गोपीनाथ रूप है ॥३७७॥

(अधिकारी श्रीकृष्णदासजी व्रतचारी की कथा)

गोस्वामी सनातनजू मदन मोहन रूप
माथे पधराय कही सेवा नीके कीजिये ।
जानो कृष्णदास व्रतचारी अधिकारी भयो
भट्ट श्रीनारायणजू शिष्य कियो रीभिये ॥

करके शृंगार चारु आपही निहारि रहै
गहै नहीं चेत भाव महा मति भीजिये ।
कहाँ लौ बखान करों रागभोग रीति भाँति
अबलों विराजमान देखि देखि जीअये ॥३८१॥

(पंडित श्रीकृष्णदासजीकी कथा)

श्रीगोविन्दचन्द्र रूपराशि रसराशि दाम
कृष्णदास पंडित ये दूमरे यों जानिये ।
मेवा अनुराग अंग अंग मति पागि रही
पागी मति होय जापै तोपै यह मानिये ॥
प्रीति हरिदामनमों विविध प्रमाद देत
हिये लायलेत देखि पद्धति प्रमाणिये ।
महज ही रीतिमें प्रतीति सो विनीत कर
हरं बाही ओर मन अनुभव आनिये ॥३८२॥

(श्रीभूगम गुसाईजी की कथा)

गुमाई भूगम वृन्दावन दृढ वास कियो
लियो सुख कुञ्ज वैठि गोविन्द अनूप है ।
बडेही विरक्त अनुरक्त रूप माधुरी में
ताहीको सवाद लेत मिलि भक्त भूप है ॥
मानसी विचार हिय द्वार मो निहारि रहे
गही मन वृत्ति बेई युगल स्वरूप हैं ।
बुद्धि के प्रमाण अनुमानि में बखान करयो
भरयो बहु रंग जाहि जानै रस रूप हैं ॥३८३॥

(श्रीरसिक मुरारीजीकी कथा)

मूल छ०—तन मन धन परिवार सहित
सेवत सन्तन कहँ । दिव्य भोग आरती
अधिक हरिदूते हिय महँ ॥ श्रीवृन्दावन-
चन्द्र श्याम श्यामा रँग भीने । मगन प्रेम
पीयूष पयधि परचे बहु दीने ॥ हरि प्रिय
श्यामानन्द वर, भजन भूमि उद्धार किय ।
रसिक मुगारि उदार अति, मत्त गजहि
उपदेश दिय ॥९५॥

रसिक मुरारी साध सेवा विमत्तार कियो
पावै कौन पार राँति भाँति कछु न्यायिये ।
सन्त चरणामृत के माँट घर भर रहै
ताही को प्रणाम पूजा करै उर धारिये ॥
आवै हरिदाम तिन्है देत मुख राशि जीभ
एक ना उचारि सकै धकी मो विचारिये ।
करै गुरु उत्सव ले दिनमान सबै कोऊ
द्वादश दिवस जमघट लगै प्यारिये ॥३८४॥

सन्त चरणामृतको ल्याओ जाय नीकी भाँति
जीकी भाँति जानवेको दाम ले पटायो है ।
आयके बस्नान कियो लियो मत्र माधनको
पान करि बोले सो सवाद नहीं आयो है ॥

जिने सभाजन कही चाखो देवो मन कोऊ
महिमा न जानै 'कन' 'जानी' छोडि आयो है ।
पूछी कह्यो कोटो एक रह्यो, आनो, लायो दियो,
पियो मुख पाय नैन नीर ढरकायो है ॥३८५॥
नृपति समाज में विराजमान भक्तराज
कहैं वे विवेक कोऊ कहनि प्रभाव है ।
तहाँ करै एक माधु भोजन करन रोर
देवो दूजो सोटा संग कैसे आवै भाव है ॥
पातर उग्रव 'श्रीगुसाई' पर डार दई
दई गारी सुनि आप बोले लाग्यो 'दाव' है ।
मीथ सो विमुखमें तो आनि मुख माँक दियो,
कियो दाम दूर सन्त सेवा में न चाव है ॥३८६॥
वागमें समाज सन्त चले आप देखवे को
देखत दुरायो जन हुक्का मोच परयो है ।
बडो अपराध मानि साधु सनमान चाह
धूमि तन बैठि कही देख्यो कहैं धरयो है ॥
जायके सुनाई दाम काहु के तमाखू पास
मुनिके हुलाम बढ्यो आगे आनि करयो है ।
झूठे ही उमाम भरि माँवे प्रेम पाय लियो
कियो मन भायो ऐमे शंका दुःख हरयो है ॥३८७॥
उपजत अन्न गाँव आवै साधु सेवा ठाँव

१ जरासी । २ मैं जानली । ३ श्रीरसिक मुरारीजी । ४ भाग्योदय ।

नयो नृप दुष्ट आयो काँव काँव कियो है ।
 गाँव सो जपत करयो, करयो लैं विचार आप
 श्यामानन्द जू को आप पत्र लिखि दियो हों ॥
 जाहि भाँति होओ ताहि भाँति उठि आओ यहाँ
 आये हाथ झूठे अचवन ह न लियो है ।
 पाछे माष्टांग करि लैं निवेदन करी मोई
 भोजनमें कद्यो चलिआयो भीज्यो हियो है ॥३८८॥
 आज्ञा पाय अंचे आये दिये सो पठाय तहा
 दुष्ट शिर मोर जहाँ तहाँ आप आये हैं ।
 मिले सो मुमद्दी शिष्य आयके सुनाई बात
 जाओ उठि प्रात यह नीच जम गाये हैं ॥
 हम ही पठे हैं काम करि समझे हैं सब
 मनमें न आनी जानी नेह डरपाये हैं ।
 कही चिंता जनि करो कहा आगमन मम
 पूज्य भूप आप दिन तीन कहाँ लाये हैं ॥३८९॥
 कही आये गुरुवर भूप कही लाओ यहाँ
 देखों करामात बात यही आ सुनाई है ।
 कद्यो आप अभूँ जाओ, चलो उन मान देखें
 चले सुख मानि आयो हाथी धूम लाई है ॥
 छोड़िके कटार भाजि गये न निहार सके
 आप रस सार वाणी भोले जैसी गाई है ।

१ जम कर लिया=झीन लिया । २ भोले प्रबुध्य कीसी । ३ कही ।

बोले हरे कृष्ण कृष्ण छाड़ो गजतन तम
 सुनि सनिगयो भाव देह सो नवाई है ॥३९०॥
 बहै दृग नीर देखि ह्वे गयो अधीर गज
 कृपाकरि दयी धीर दियो भक्ति भाव है ।
 कानमें सुनायो नाम, नाम दे गोपालदाम
 माला पहिराई गरे प्रकट्यो प्रभाव है ॥
 दुष्ट शिर मोर भूप लगि वाही ठौर आयो
 पाँव लपटायो भयो हिये अति चाव है ।
 निपट अधीन गाँव कंतक नवीन दिये
 लिये कर जोरि मेरो फल्यो भाग्य दाव है ॥३९१॥
 भयो गजगज भक्तभज साध सेवा साज
 मन्तन समाज देखि करत प्रणाम है ।
 आनि डारे गृण बनजारन की वारद सो
 आवे सो पुकारन को जहाँ गुरु धाम है ॥
 आवे महोत्सव महै पावत प्रमाद साथ
 बोले आप हाथी सो यों निन्द्य यह काम है ।
 छोड़ दई रीति तब भक्तन सो प्रीतिवद्दी
 मंगदी समूह फिरें फेल गयो नाम है ॥३९२॥
 मन्त मत पाँच सात संग जित जात नित
 लोग बहु धाँवें लावें सीधे बहु भीर है ।
 चहुँ दिशि परयो हल्ला सूवा सुनि चाह भई

१ हाथीन ।

हाथ पै न आवैं कही आनैं कोऊ धीर है ॥
 साधु वेष जाय गहि लियो पकरायो आप
 मनमें प्रमाद नेम पीवे नहीं नीर है ।
 बीते दिन तीन चार जललैं पिवावैं धार
 गंगाजी निहारि मध्य तज्यो यों शरीर है ॥३६३॥

(संसार निस्वारावलंबन भक्त समूह का वर्णन)

मूल छ०—सोभा साँव अधार धीर हरि-
 नाभ त्रिलोचन । आसाधर द्योराज नोर
 सधना दुख मोचन ॥ काशीश्वर अवधूत
 कृष्ण किंकर कटहरिया । शोभू ऊदाराम
 नाम डूँगर व्रत धरिया ॥ पद्म पदारथ
 रामदास, विमलानंद अमृत श्रये । भव
 प्रवाह निस्तार हित, अवलम्बन ये जन
 भये ॥९६॥

(श्री सधना कसाईजी की कथा)

सधना कसाई ताकी नीकी कम आई जैसे
 चारहवानी मोनेकी कसोटी 'कस' आई है ।
 जीव को न बधकरै तो पै कुलाचार ढेर
 बेचै माम ल्याय प्रीति हरि मो लगआई है ॥

१ रेखा ।

गंडकी को सुत बिनजाने तामों तोल्यो करै
 भरे दृग, माधु आनि पूजे, तौ न भाई है ।
 कही निशि सपने में वाही ठौर मोको देवो
 सुनों गुण गान रीभयो हृदियेकी मचाई है ॥३६४॥
 लोके आयो माधु मेंतो बडो अपराध कियो
 कियो अभिपेक सेवा करी पै न भाई है ।
 ये तो प्रभु रीके तो पै जोई चाहो मोई करो,
 गरो भरि आयो सुनि मति विमराई है ॥
 वेही हरि उरधारि डारि दियो कुलाचार
 चले जगन्नाथ देव चाह उपजाई है ।
 मिल्यो एक संग संग, जात मकुचात तब
 आप दूर रहै जान काहुनो न पाई है ॥३६५॥
 आयो एक गाँव भिक्षा लेन एक ठाँव गयो
 नया रूप देख एक तिया रीभ परी है ।
 नैटो याही ठौर करो भोजन निहारि कह्यो
 रह्यो निशि मोयो आई मोई मति दर्ग है ॥
 लेओ मोको संग, गरो काटो तो न होय रंग
 बूझी नहीं, काटी पति श्रीवा पै न डरी है ।
 कही अब पागो मोमों नातो, कौन मोमों तामों
 शोर करि उठी हन्ह मारयो, भीर करी है ॥३६६॥
 हाकम पकरि पूछी कह्यो हँसि मारयो में ही
 परयो सोच भारी कही हाथ काट डारिये ।

काटयो कर चले हरि रंगमाँझ भिले मानी
जानी कछु चूक मेरी यही उर धारिये ॥
जगन्नाथ देव आगे पालकी पठाई लेन
सधना सो भक्त कहाँ ? चढे ना विचारिये ।
चढे आये प्रभु पाम मपनो सो भिख्यो त्राम
वाने हँ कमोटी हुपे भक्ति विमत्तारिये ॥३६७॥

(श्री कार्शीश्वर गुमाई जी की कथा)

श्री गुमाई कार्शीश्वर आगे अब धूतवर
करि प्रीति नीलाचल रहे लाग्यो नीको है ।
महाप्रभु कृष्णचैतन्य जू की आज्ञा पाय
आये वृन्दावन देखि भायो भयो ही को है ॥
सेवा अधिकार पायो रमिक गोविन्द चन्द्र
चाहत मुखारविन्द जीवन जो जीको है ।
नितही लडाने भाव सागर दवावै कौन
पारावार पावै सुने लागे जग फीको है ॥३६८॥

(भक्त समूह वर्णन)

मूल छ०—यती रामरावल्ल श्याम खोजी
संत सोहा । दूलहा पद्म मनोरथ राँका
उद्योग जप जीहा ॥ जाडा चाचा गुरु
सवाई चान्दा नापा । पुरुषोत्त सो साँच

१ पहिले ।

चतुर जिन मेढ्यो आपा ॥ मति सुन्दर
'धोधाँग श्रम, संसार नाच नाहिन नचे ।
करुणा छाया भक्ति फल, कलियुग ये
पादप रचे ॥३७॥

(श्री खोजी जी की कथा)

खोजी जी के गुरु हरि भावना प्रवीण महा
देह अन्त ममै बाँधी घंटी सो प्रमाणिये ।
पावै प्रभु जत्र तत्र बाज उठे यह जानो
पाये पै न बाजी बड़ी चिन्ता मन आनिये ॥
तन त्याग ममै नही हुने खोजी पछे आये
वाही ठौर पौढि देख्यो आम पाकथा मानिये ।
तोरि ताके टुक किय छोटी एक जन्नु मध्य
गयो सो चिलाय बाज उठी जग जानिये ॥३६९॥
शिष्य की तो योग्यताई नीक बन आई अजु
गुरु हू प्रबल ते पै नेक घटि क्यों मई ।
सुनो याकी बात मन अन्त वत गति कही
मोही ले दिखाई सन्त कथा अति रस मई ।
वेतो प्रभु पाय चुके प्रथम प्रसिद्ध पात्रे
आख्यो फल देखि हरि बोग्य उपजी नई ।

१ पृष्ठ के ताल पर परिश्रम करके नाचने वाले भक्ती तरह से
सत्कार का नाच निम्न नहीं था ।

इच्छा सो सफल श्याम भक्त वश करी लह्यो
वेही यह जानि सब व्यथा उर की गई ॥४००॥

(श्री राँका बाँका जी की कथा)

राँका पति बाँका तिया बने सो पंडरपुर :
उर में न चाह कछु रीति कछु न्यारीये ।
लकरी सो बीनि बेचि जीविका निवाह करें
भरें हरि रूप दिये ताही सो जिवारीये ॥

विनती करत नामदेव 'कृष्ण' देवजी सों
कीजे दुःख दूर, 'कही', मेरी मति हारिये ।
चलो ले दिखाऊँ तब तोरे मन भाँऊ रहे
वन विपि दोऊ, 'थेली' मगमाहीं डारीये ॥४०१॥

आय दोऊ पत्नी पति पाछे बधू आगे स्वामी
औचकही मग माँझ सम्पति निहारी है ।
जानि यों युवति जात कहँ मन चलि जाय
याते नमि 'सभ्रम्म' सों 'धूर' बापें डारी है ॥

पूछी अजू कहा कियो भूमि में 'निहुरि' आप ॥
कही वही बात बोली 'धन' ये विचारी है ।
कही में तो राँका ऐ पै 'बाँका' आज जानी तोहि
सुनि प्रभु बोले बात साँची ही हमारी है ॥४०२॥

१ भगवान । २ भगवानने कहा कि राँका बाँका का दुःख दूर करनेके उपायमें तो मेरी बुद्धिभी एक गई है । ३ स्वर्ण मुद्राओंकी धैली । ४ वीघता से । ५ रेत=मिट्टी । ६ झुककर । ७ धन को आपने वन विचारा तो सही । ८ सुदृढ़ ।

नाम देव हारे हरि देव कही और बात
जो पै दुःख पात चलो लकरी 'सकरिये' ।
आय दोऊ बीनि करी देखी एक थौर ढेरी
दूर बाके पावै तऊ हाथ नहीं छेरिये ।
तबतो प्रकटि श्याम आप लाये निधि घर
देखि मूँड फोरयो कछो याहि प्रभु फेरिये ।
विनती करत करजोरि अंग पट धारां
भागी 'बोझ' परयो लियो चीर मात्र हेरिये ॥४०३॥

(कलिकाल में कामधेनु स्वरूप भक्त समूहका वर्णन)

मूल छ०—लक्ष्मणा लफरा लड्डू जो अरु
सन्त जोधपुर त्यागी । सूरज कुम्भन
दास विमानी क्षेम विरागी ॥ भावन
विरहो भरत नफर हरिकेश लटेरा ।
हरिदास अयोध्या चक्रपाणि सरयू तट
ढेरा ॥ त्रिताक पुखरदो विज्जुली,
उद्धव वनचर वंश के । परमार्थ परायण
भक्त ये, कामधेनु कलियुग भये ॥१८॥

(श्रीलड्डूजी की कथा)

लड्डू नाम भक्त जाय निकमे विमुख देश
लेशहू न जानें सन्त भाव पाप 'पागे' हैं ॥

१ एकत्रित करें । २ आज्ञाका दबाव । ३ लिपटे हैं ।

देवी को प्रसन्न करें मनुष्य को मारि धरें
ले गये पकरि नहीं मारिबेको लागे हैं ॥
प्रतिमाको फारि विकरालरूप धारि 'आई
लेक तलवार काट मुँड भीजे 'वागे हैं ।
'आगे नृत्य करै दृग भरे साधु पाँव धरै
ऐस रसवारे जान जन अनुरागे हैं ॥४०४॥

(श्रीसन्तदासजी की कथा)

मदा साधु सेवा अनुराग रंग पागि रह्यो
गह्यो नेम भिक्षा वृत्ति गाँव गाँव जायके ।
आये घर मन्त पूछी तियामों यों मन्त कहाँ
मन्त चूहे माहिं परां कही अलसाय के ॥
वाणी सुनि जानि चले भग सुखदानी मिले
कहो किन हुते ! सो बग्यानी उर आयके ।
वाली वह साँच वाही 'आँचहीको ध्यान मेरे
आने गृह फेरि किये भगन जिमाय के ॥४०५॥

(श्रीत्रिलोकीजी की कथा)

पूरवमें 'ओक हो तिलोक सो सुनार जाति
पायो भक्तिमार साधु सेवा उर धारिये ।
भपके सुताको व्याह जोरा एक जेहरीको
गह्वेका दियो कट्यो नीके के सँवारिय ॥

१ देवी । २ कपडे । ३ श्रीलङ्कजी के आगे । ४ उसकी
जलन का ही । ५ घर ।

आवत अनन्त सन्त अवसर पावै कहाँ
रहे दिन दोय भोग रोष यों मँभारिये ।
आओ लेके, लाये जन, झाँडिये उकर कही,
नेक रह्यो काम, नहीं आवे मागि डारिये ॥४०६॥
आय गयो दिन छूयो कर हुन इन, नृप
करै प्राण विन वनमाँझ छुप्यो जायके ।
आये 'चर चार पाँच जानी प्रभु 'आँच गाढी
लियो 'सो दिग्वाया साँच चले 'भक्त भाय के ॥
भपको सलाम कियो 'जेहरीको जोरा दियो
लियो कर देखि दृग छाडे न अघाय के ।
भई रभवागी मव चूक मेरि डारी धन
पायो ले 'मुरागी ऐमे बैठे 'घर आयक ॥४०७॥
भोरही महोछो कियो जोई माँग्यो सो ही दियो
नाना एकवान रसखान स्वाद लागे हैं ।
मन्तको स्वरूप धरि लै प्रसाद मोद भरि
गये तहाँ पावोजू तिलोक गृह पागे हैं ॥
कौन सा तिलोक अर दूमरा तिलोक में न
गैन सुनि चैन भयो आवे निशि रागे हैं ।
चहल पहल धन भरयो घर देखि डरयो
प्रभु पद कंज जानी मेरे भाग जागे हैं ॥४०८॥

१ पावण्ड । २ दूत । ३ आपत्ति । ४ जेहरी (चरखभूपण)
का जोड़ा । ५ भक्त (त्रिलोक) का भाव=वेप करके । ६ भगवान ।
७ त्रिलोक के घर आकर । ८ प्रेमी त्रिलोकजी ।

(चिन्तामणि के समान ३१ भक्तों के नाम स्मरण)

मूल छ०—भीमा सोम नाथ पुनि सोमा
विकु विशाख लम ध्याना । महँदी
मुकुंद गणेश त्रिविक्रम रघु राघव जग
जाना ॥ बालमीकि बृधव्यास जगन
भाँभू विठ्ठल आचारज । लाला भू हरि-
दास बाहुबल पुनि हरि राघव आरज ॥
लाम्बा छीथर उद्धव कपूर, घाटम वृरी
किय प्रकाश । अभिलाष अधिक पूरण
करणा, ये चिन्तामणि चतुरदास ॥१९॥

(दिग्गज सम २७ भक्तों का वर्णन)

मूल छ०—नरहरि देवा मुकुंद महोपति
सन्तराम तम्बोरी । स्वम नंद श्रीरंग
विष्णु विन्दा बाजूसुत जोरी ॥ छितम
द्वारिकादास मधू माँडन रूपा दामोदर ।
भल नरहरि भगवान बाल कान्हार केशव
सोहें घर ॥ प्रागदास लोहंग गुपाल,
नाग सुत गृह भक्त भीर । भक्त पाल
दिग्गज भगत, ये शानायित शूर धीर ॥

(भजन परायण १५ भक्तों का वंशगान)

केशव पुनि हरिनाथ भीम खेता गोविंद
ब्रह्मचारो । बालकृष्ण बडभरत अच्युत
अप्पय ब्रद्री व्रतधारी । पंडा गोपोनाथ
मुकुन्दा श्री गजपती महायश । गुणनिधि
यश गोपाल दये भक्त को सर्वस ॥
श्री अंग सदा सन्निध रहें, पुण्यपुंज
भल भाग्य भर । उडीसा बद्रो द्वारिका,
सेवक सब हरि भजन पर ॥१०१॥

(श्रीगजपतिजी की कथा)

श्रीप्रताप रुद्र गजपति जो बखान कियो
लियो भक्तिभाव महाप्रभु पै न देखहीं ।
कियेहु उपाय कोटि और लै सन्यास लियो
हियो अकुलायो अहो कहूँ मोको पेखहीं ॥
जगन्नाथ रथ आगे नृत्य करै मत्त भये
नीलाचल नृप पांय परयो भाग लेखहीं ।
छाती सो लगायो प्रेम सागर बुझायो भयो
अति मन भायो दुःख देत ये निमेष हीं ॥४०६॥

(कविराज भक्तगण)

मू० छ०—विद्यापति ब्रह्मदास बहोरन

१ श्रीगौरंगा महाप्रभु ।

चतुर विहारी । गोविंद गंगा रामलाल
वरसनिया मंगलकारो । परशुराम प्रिय-
याल धक्त भाई खाटूके । नंद सुवनको
छाप कवित केशव के नीके ॥ आस करण
पूरण नृपति, जयदयाल गुणगण
अपार । हरि सुयश प्रचुरकर जगतमें,
ये कविजन अतिशय उदार ॥१०२॥

(कविवर श्रीगोविन्दजी की कथा)

'गोवर्धननाथ मंग ज्वेलौ सदा भेलौ रंग
अंग मख्य भाव हिये गोविन्द सुनाम है ।
'म्यामी करी क्यात ताकी बात मुनि लीजे नीके
मुने मग्मात नैन रीति अभिराम है ॥
खेलत हो लाल मंग गयो उठि दाव लेके
मारी ताकि 'गिल्ली देग्वि मन्दिर में श्याम हैं ।
मानि अपराध साधु धक्कादे निकरि दियो
मत सो अगाध कैसे जानौं ये जो नाम हैं ॥४१०॥
त्रेठयो कुण्डतीर जाय निकसैगो आय वन
दयी हैं लगाय ताको फल भुगताइये ।

१ श्रीवल्लभ सम्प्रदायके ठाकुर श्रीगोवर्धननाथजी । २ भगवान् ।

३ लकड़ी का टुकड़ा जिमको गेंद की तरहसे फेंककर खेलते हैं ।

लाल हिय मोच परयो कैसे 'भरयो जाय यह
अरयो मग मोक्ष भोग धरयो पै न खाइये ॥
कही श्रीगुमाई' जू मो मोको ये न भाई कब्जु
चाहो जो खवायो तो पै वाको जाय लाइये ।
वाको हुतौ दाव मोपै सोतो भाव जान्यो नाहीं
कही मोमो वानै जो 'कुमार' परी चाहिये ॥४११॥
वन वन खेले विन वनत न मोलो नैक
भनत मो गारी अन गिनत लगानैगो ।
सुधि बुधि मोरी गई भई अति चिन्ता माहि
क्याइये जू दृढि वाहि नैन तव आवैगो ॥
भोग जो लगाये में तो तनक न पाये रिम
वाकी जब जाय तब मोको कब्जु भावैगो ।
चले उठि धाये नीठ नीठके मनाय लाये
मन्दिर में खाये मिलि कही गरे लानैगो ॥४१२॥
गये हे वाहर भूमि तहाँ कृष्ण आयो भूमि
करी बड़ी धूम आक डोडिन सो मारिके ।
इनहू निहारि उठि मारिदई वाही सों जू
कौतुक अपार सख्य भाव रम मारिके ॥
माता मग जोय बड़ी देर भगे आई वहाँ
कहाँ वार लाई ओट पाई उर धारिके ।
आयो सो विचार सदाचार अनुमार कियो

१ इसका दाव कैसे भुगताया जाया । २ बड़ी गहरी मार ।

लियो प्रेम गाढो कभू करत सँभारि के ॥४१३॥

आवत हो भोग महा सुन्दर सो मन्दिरमें
रह्यो मग बैठि कह्यो आगे मोहि दीजिये ।

भयो कोप भारी थार डारि जा पुकार करी
मही न अनीति जान सेवा यह लीजिये ॥

बोलिके सुनाई अहो कहा मन भाई आज
बोलिके बताई अजु वान कान दीजिये ।

पहले वे ग्याय वनमाहि उठि जाय पाले
पाऊँ कहाँ धाय मुनि मनि रस भीजिये ॥४१४॥

(श्रीमधुरामंडलके मक्तगण)

मूल छ०—श्रीरघु गोपोनाथ रामचंद दामू
स्वामी । गुंजामाली चितु उत्तम विठल
मरहट निष्कामी । यदुनंदन रघुनाथ
रमानंद गोविंद मुरली सांती । हरिदास
मिश्र भगवान मुकुंद माधव केशव
दंडातो । चतुभुज चरिता विष्णुदा, वेणी
पद मो शिरधरी । मधुरामंडल बसत
जे, दयादृष्टि मो पे करा ॥१०३॥

कही नामा म्भारी आप गाथों में प्रताप मन्त
वमे ब्रजमाहि तो तो महिमा अपार है ।

भयो गुंजामाली गुंजाहारधारी नाम परचो
लाहौर में करे वाम आगे सुनो मार है ॥

सुत बधू विधवा सों बोलिके सुनाई लेहु
धन पति गृह श्रीगोपाल भरतार है ।

देवो प्रभु सेवा माँगै नारा वार वार यह
डारै मव वार यापै गने जग छार है ॥४१५॥

दई सेवा बाहि और घर धन तिया दयो
लियो ब्रजवाम ताकी प्रीति मुनि लीजिये ।

ठाकुर विराजे तहाँ खेलै सुत औरन के
डारै इंट रोडा परचो प्रभु पर खींकिये ॥

दिये तो विडारि धर्यो भोग पैत स्वात हरि
पृथ्वी कही वेही आवैं तबही तो जीजिय ।

कह्यो रिम भरि धर नीकी भोर डारैं भरि
खाओ हम हा हा करें लाये पाये रींकिये ॥४१६॥

(गुवती भक्त वृन्द)

मूल छ०—सोता भाली सुमति उमा
शोभा प्रभुता भटियानी । गंगा गोरी
कुँअरि गुपाली उविठा गरांशदे रानी ।
कला लखा कृतगदो मानमति सुचि
मुन्दरि जतभामा । यमुना केली रमा
मृगा देवा भक्तन विश्रामा ॥ युग न्येत

कमला देवकी, हीराँ चोरी पोषे भगत ।
कलियुग युवती भक्त ये, महिमा सब
जाने जगत ॥१०४॥

(श्रीगणेशदेई रानी की कथा)

मधुकरशाह भूप भयो देश औरखेको
रानी श्रीगणेशदेई काम बाँको कियो है ।
आव बहु सन्त सेवा करत अनन्त भाँति
रह्यो एक साधु खान पान सुख लिया है ॥
निपट इकैली देग बोल्हो धन धैली कहाँ
होय तो बताऊ सब तुम जानो हियो है ।
मारी जाँघ छुरी लखि लोहू बेगि भागिगयो
भयो सोच जानि जनि राजा वन्दि दियो है ॥४१७॥
बाँधि नीकी भाँति पोह रही कही काहु मो न
आया दिंग राजा मत आओ तिया धर्म है ।
बीते दिन तीन जानी वेदना नवीन कछु
कहिये प्रवीण मोमों खोलि सब मर्म है ॥
ठारी बार दोय चार नृपको विचार परयो
समाधान कियो जनि लावो जिय भर्म है ।
फिरि आस पास भूमि परि तन राशि करी
बिहो प्रताप बाज्यी तिया पति शर्म है ॥४१८॥

(भक्त समूह वर्णन)

मूल छ०—नर वाहन वाहन वरीश जापू
जयमल बीदावत । जयन्त धारा रूपा
गोविन्द अनभइ तैसोइ उदा रावत ।
गम्भारे जनादिन अरु श्री अजु न जीता ।
दामोदर साँपिले गदाधर ईश्वर हेम
विनीता ॥ मयानंद महिमा अनंत, गुढिले
तुलसी दास । हरिके सम्मत जे भगत,
तिनदामन को दास ॥१०५॥

(श्रीनरवाहनजीकी कथा)

गँह भै गाँव नाम नरवाहन साध सेवा
लूटि लई नाव ताको वन्दी ग्यानो दियो है ।
लोडी आवै देन कछु खायवेको आई दया
अति अकुलाय सो उपाय यह कियो है ॥
बोली गधावल्लभ ओ हरिवंश नाम लेओ
पुछै शिष्य कहो आप पूछी कदि दियो है ।
दइ मैगवाय वस्तु रागियो दुराय वात
आय दाम भयो कही रीति पद दियो है ॥४१९॥

(भक्त समूहका वर्णन)

मूल छ०—यहै वचन परमाणा दास गाँवरि
जटियाने भाऊ । वूँदी बनिया राम मंडोते

मोहन बारी दाऊ । मारौं ठी जगदीश दास
लक्ष्मणा चतुथा बल भारी । सुनपथ में
भगवान वसै सलखान गुपाल उधारी ॥
जोबनेर गोपाल के, भक्त इष्टता निर्वही ।
श्री मुख पूजा सन्त की, आपनिते अधिकी
कही ॥१०६॥

(जोबनेर के श्रीगोपालजी की कथा)

जोबनेर नाम मो गोपाल भक्त इष्टताके
कियो निर्वाह बात मोको लागी प्यारी ये ।
आयो हो विरक्त कोउ कुल में प्रमग गिनि
आयो मो परीक्षा लेन द्वार पै विचारिये ।
आय परयो पाँच पाँच धारो निज मन्दिर मे
सुन्दरी न देखो मुख प्रण कैसे दारिये ।
चलो प्रण टारो जनि रहंगी किनारो करि
चले तब द्विपी नेक देखी याके मारिये ॥४२०॥
एक पे तमाचो दियो दूमरे ने रोप कियो
देवो या कपोल पै हु वाणी कही प्यारी है ।
मुनि भरि आँसू आय गले लपटाय लाये
कही कैसे जाय यह रीति कछु न्यारी है ॥

भक्त इष्ट सुन्यो मेरे बड़ी अचरज भयो
लई में परीक्षा भई शिक्षा मोको भारी है ।

बोल्यो अकुलाय अजू कहाँ यह भाव तोपै
साधु सुख पाय कहै याहीने जिवारी है ॥४२१॥
(वानर वंशीय सन्त श्रीलात्वाजी की कथा)

मूल छ०—मरुधर खंड निवास भूप सब
आज्ञाकारी । राम नाम विश्वास भक्त
पदरज व्रत धारी । जगन्नाथ के द्वार दंडो-
तन प्रभु पै धायो । दई दासको दादि हुंडो
करि फेरी पठायो । आँच सुरधुनी संग
ज्यों, जात बदल कुत्तिसत नरो । परमहंस
वंशीन में, भया विभागी वानरौ ॥१०७॥

लाम्बा नाम भक्त जाको वानरो बग्यानि कह्यो
कहै जग 'डाम तामो मेरो शिरमोर है ।
करै साधु सेवा वह पाक डारि मेवा मन्त
जँवत अनन्त सुख पावै कौर कौर है ॥

ऐसे में अकाल परयो आवै धरि माल जाल
कमे प्रतिपाल करै ताको और टोर है ।

१ राजस्थान में डाम नामकी एक गायक जाति है जो हालुका
कथक आदि नामों से भी प्रसिद्ध है । ये लोग अने को श्रोतनुमान
बंगीय कहते हैं और कृत्य गान कला में अत्यन्त प्रवीण होते हैं ।
बहुत लोगों का मत है कि श्रीनाभा स्वामीजी भी इसी कुल में उत्पन्न
हुए थे ।

प्रभु जू सपन दियो कियो मैं जतन एक
 गाड़ी भरी मेहूँ भैस आनै करो गोर है ॥४२२॥
 मेहूँ कोठी डारि मुह मूँदि नीचे देवो खोलि
 निकमै अतोल पीमि गरी लै बनाइये ।
 दूध जितो होय सो जगाय के विलोय लीजे
 दीजयो चुपरि मंग छाछले जिमाइये ।
 खुलि गई अग्नि भाई तियासोजू आज्ञा भई
 भई मन भाई अजु हरिगुण भाषिये ।
 भोर भये गाड़ी भैस आई वही रीति करी
 करी माधु सेवा नाना भाँति न रिझाइये ॥४२३॥
 आई कौन रीति ताकी प्रीतिह बखान कीजे
 लीजे उर धारि मार भक्ति निग्धार हो ।
 रक्षो ढिग गाँव तहां सभा एक ठाँव भई
 टूट गयो भाई सो उगाही को विचार हो ॥
 बोलि कह्यो कंऊ यो व्याहार का तो मार चुक्यो
 लीजिये मैंभार लाखा सन्त भव पार हो ।
 लाज दबि तिन दियो मेहूँ लै पचाम मन
 दई निज भैस जो सबका सरदार हो ॥४२४॥
 मारवाड़ देश तैं चलयो सो साष्टांग करतो
 हिये जगन्नाथ देव याही प्रण जाइये ।
 नेह भरि भारी देह वारफेर डारी कैसे
 करे तनधारी नेक श्रम मुरझाइये ॥

पहुँच्यो निकट जाय पालकी पठाई आप
 कहै लाखा भक्त कौन बेगि सो बनाइये ।
 काहू कहि दियो जाय कर गहि लियो अजु
 चलो प्रभुपास याही छिन ही बुलाइये ॥४२५॥
 केमे चढो पालकी में प्रण प्रतिपाल कीजे
 दीजे मोको दान याही भाँति जा निहारिये ।
 बोले प्रभु कही भाय माला जो बनाय लाये
 आय पहिरावै मोको सुनि उरधारिये ॥
 चढे यही जानि जीमें चाहै चढ़ बढ़ कियो
 पढ़ि पढ़ि पोथी प्रेम मोपै विमलारिये ।
 जायकं निहारे तन मन प्राण वारे प्यारे
 जगन्नाथ जू के नेक दिगने न टारिये ॥४२६॥
 बेटी एक क्वारी व्याह हेत न विचार मन
 धन हरि माधुन को केमे के लगाइये ।
 कीजे वाको काज कही जगन्नाथ देवजू ने
 द्रव्य मोपै लीजे ऊन नंकहू न लाइये ।
 विदा पै न भये चले दृग भरि लये, गये
 आगे नृपभक्त मग चौकी अटकाइये ।
 दियो है स्वपन प्रभु हट जनि करो अजु
 हुंडी लिखि दह लई विनय के जताइये ॥४२७॥
 हुंडी सो हजारकी सो लौके गृह द्वार आये
 तामें ते लगाय सोक बेटी व्याह कियो है ।

और सब सन्तन बुलाय के खवाय दिये
लिये पग, दाम्य सुखराशि, पन लियो है ॥
ऐमे ही बहुत बार वाही क निमित्त ली ली
मन्त भुगताय चुके हरषित दियो है ।
चरित अपार कछु मति अनुसार कहे
पायो जाने स्वाद मोतो पाय निधि जीयो है ॥४२८॥

(श्रीनरसिंह (नरसी) महताजीकी कथा)

मूल छ०—महा स्मार्त सब लोग भक्ति
लवलेश न जानै । माला मुद्रा लखे
तामुकी निन्दा ठानै । एसे कुल उत्पन्न
भयो भागवत शिरोमणि । ऊपर ते सर
कियो खंड दृषण खोयो जिन ॥ बहूत ठौर
परचे दिये, रस रीति प्रीति हिरदे धरी ।
जगत विदित नरसी भगत, गुर्जरधर
पावन करी ॥१०८॥

जुनागढ़ वास पिता माता तन नाश भयो
रह्यो एक भाई औ भोजाई रिस भरी है ।
डोलत फिरत आय बोलत पिताओ नीर
भाभो मो न जानी पीर बोली जरी बरी है ॥

१ प्रदेश । २ गुजरात की भूमि । ३ जल ।

आवत कमाय जल प्याये बिन सरै कैमे
पीओ यों जवाव दिया, देह थर धरी है ॥
निकमे विचारि कहूँ दीजे तन डारि जाय
शिव पै पुकार करे यही चित्त धरी है ॥४२९॥
बीने दिन मात 'शिव धामने' न जात कहूँ
पर काहु 'तुच्छ' द्वार मोहु सुधि लेत है ।
इतनी विचारि भूखप्यास दई टारि लियो
प्रकट स्वरूप धारि भयो दिये हेत है ॥
बोले वर मांगो 'अजी माँगि' में न जानत हों
तुम्है जोई प्यारो सोई देवो चित चेत है ।
'परचा' शोच भारी मेरी प्राणप्यागी नारी तामों
कहत डरत, वेद कहे नेति नेति है ॥४३०॥
दियो में बृकामुर का वर उर भयो डर
जैसे डर कोटि कोटि यापै बारि डारे हैं ।
बालक न होय यह मालक है लोकन को
मन मो विचारि कहा दीजे प्राण प्यारे हैं ॥
जोपै नहीं देऊँ मेरो बोलबो ही मोघ होय
दियो निज हेत तन अली रूप धारे हैं ।

१ शिवमन्दिरसे । २ छोटे आदमीके दरवाजे । ३ नरसीजीने कहा ।
४ शिवजी सोचमें पड़गये कि मुझको प्रिय तो भगवान हैं जिनकोमें
अपनी प्राण प्रिया पत्नी से भी नहीं कहता और वेद भी जिनको नेति
नेति कहते हैं ।

लाये वन्दावन राशमंडल जटित मणि
प्रिया अगणित बीच लालजू निहारे हैं ॥४३१॥

हीन खचित रास मंडल नचत दोऊ
रचत अपार नृत्य गान तान प्यारिये ।

रूप उजियारी चन्द्र चाँदनी न सम ताकी
देत करतारी लाल गति लेत न्यारिये ॥

श्रीशकी डुरनि कर आँगुरी मुरनि मुख
मधुर सुरनि सुनि श्रवण तयारीय ।
वजत मृदंग मुहवंग मंग अंग अंग
उठत नरंग रंग छवि जी की ज्यागीये ॥४३२॥

दई ले ममाल हाथ निरखि निहाल भई
लाल डीठि परी कोऊ नई यह आई है ।

शिव महचरी रंगभरी अटकरी बान
मृदु मुमकान नैन कोर सौ जनार्द है ॥

चाहें याहि टारयो यह चाहें प्राण वारयो तब
रयाम दिंग आय कही नीकें समझाई है ।

जाओ यह ध्यान करो करो सुधि आऊँ तहाँ
आये निज ठौर चटपटी सी लगाई है ॥४३३॥

कीन्ही ठौर न्यारी विप्रमुता भई नारी एक
सुत उभै वारी जग भक्ति विमतारी है ।

१ श्रीकृष्ण भगवान । २ जडा हुआ । ३ स्याम-धर । ४ पत्नी ।
५ दो । ६ पुत्री ।

आवं बहु सन्त सुखदेत हैं अनन्त गुण
गावत रिभावत है सेवा विधि धारी हैं ॥

जेती द्विज जात दुःख भयो अतिमान मान्यो
बड़ो उतपात दोष कर न विचारी है ।

येतो रूप मागरमें नागर मगन महा
मकै कहा करि चहुँ ओर गिरिधारी है ॥४३४॥

तीरथ करत साधु आये पुर पूछे कोऊ
हुंडी करि देवों हमें द्वारिका मिधारिये ।

वे जे रहे विप्र द्वेमी कही तिन बात पेमी
नरमी विदित साह आगे दाम डारिये ॥

चरण पकरि गिरिजाओ यों लिखाओ अहो
कहो बार बार सुनि विनती न टारिये ।

दियो लौ बताय घर जाय वही रीति करी
भरी अँकवार मेरो भाग कहा वाग्ये ॥४३५॥

मान सौ रूपैया गनि ठेरी कर दई आगे
लाशि पग देवों लिखि कही बार बार है,

जानी बहकाये प्रभु दामदे पटाये लिखी
किये मनभाये साह साँवल उदार है ॥

याही हाथ दोजिये लो कीजिये निःशंक काज
गये यदुराज राजधानी सो बजार है ।

द्वंडि फिरि हारे भूख प्याम मीठि हारे पुर
तजि भयो न्यारे दुःख मागर अपार है ॥४३६॥

१ धारण की है । २ प्रसिद्ध । ३ गले लगाकर । ४ द्वारिका ।
२८

साहको स्वरूप धरि आये कांधे थैली धरि
 कौन पास हुंडी दाम लीजिये गिनायके ।
 बोलि उठे दूँडि हारे भले जू निहारे आज
 कही लाज हमें देत में हूँ पाये आय के ॥
 मेरा है 'इकोसो वास जानै हरिदास कोऊ
 लेवां सुख रास करो चीटी दीजे जायके ।
 धरे हैं रुपैया ढेर लिख्यो करो बेर बेर
 फेर आय पाती दई लई गरे लायके ॥४३७॥
 देखि आये साह दौरि मिले उत्साह अंग
 वेऊ रंग बारे सन्त संगको प्रभाव है ।
 हुंडी लिखि दई दाम लिये सो खवाय दिये
 किये प्रभु पूरे काम सन्तन सों भाव है ॥
 सुता समुरार भई 'झुझक विचार साम
 देत बहु गारी जाके निपट अभाव है ।
 पिता सों पठाई कहि छाती ले जराई इन
 जो पै कछु दियो जाय आओ यहि दाव है ॥४३८॥
 चले गाडी टूटी सी ले बूढे उभौ बैल जोरि
 पहुँचे नगर 'छोर द्विजकही जायके ।
 तुनतहि आई देखि मुँह 'पिचकाय कही
 दाम नहीं नेक तुम कियो कहा आयके ॥
 चिंता जनि करो जाय सास ढिंग ढरो लिखि

१ एकान्तमें । २ पुत्र जन्मोत्सव । ३ किनारे । ४ विगाडकर ।

कागद में धरो अति उत्तम अधाय के ।
 कही समझाय सुनि निपट रिमाय उठी
 कियो परिहास लिख्यो गाँव खुनसायके ॥४३९॥
 कागद ले आई देखि दूसरे फिराई पुनि
 भूलि पै न जाई जान पाथर लिखाये हैं ।
 रहबेको दई ठौर फूटी डही पौरि जाकी
 बैठे शिरमौर आय यहु सुख पाये हैं ।
 जलदे पठायो भली भाँति ते औठायो भई
 वरषा सिरायो यों समोयके नहाये हैं ।
 कोठरी सँवारि आगे परदा सो दियो डारि
 ले बजाये ताल बेम अगणित आयें हैं ॥४४०॥
 गाँव पहिरायो ब्रवि द्वायो यशगायो अहो
 हाटक रजत उभ 'पाथर हूँ आयें हैं ।
 रहि गई एक भूले लिखत अनेक जहाँ
 लेहों ताही पास जापें सब मिलि पाये हैं ॥
 विनती करत बेटी दीजिये जू लाज रहे
 दिये मँगवाय हरि फेरिके बुलाये हैं ।
 अंग ना समात सुता तातको निरखि रंग
 संग चलीआई पति आदि विसराये हैं ॥४४१॥
 सुता रही दोय भोय भक्ति रही घरही में
 एक पति त्यागि एक पति ही न कियो है ।

१ पत्थर ।

पुरमे फिरत उभै 'गायिका सुचावन सों
 धन सों न भेट काहु नाम कहि दियो है ॥
 आय लगी गायवे सो कही समझाय अहो
 पायवे को नहीं कछु पावै दुःखहियो है ।
 चाहो हरि भक्ति तो मुगडायके लडाय लीजे
 किये बार दूर रही प्रेमरस पियो है ॥४४२॥
 मिलि उभै सुता रंग भिली मंग गायन मे
 चावन सों नृत्यकरै भावन बतायके ।
 सालंग हो नाम मामा मंडलीक मंत्री रह्यो
 कछो विपरीत बड़ी राजामों सुनायक ॥
 बडे बडे 'दंडी और पंडित समाज कियो
 करों बाकी 'मंडी देश दीजिये छुडायक ।
 आयें चार चोपदार चलो जू विचार कीजे
 भयो दरबार हमें दिये हैं पठायके ॥४४३॥
 'चारों तुम 'जाओ टरि भयो हमें राजडर
 'मकें कहाकर अजू चले मंग संग ही ।
 नाचत बजावत ये चली ढिंग गावत सो
 भावन मगन भई भीजीभई रंग ही ॥
 आये याही भाँति मभा प्रभाहत भई तोऊ
 बोले कहा रीति यह युवती प्रमंग ही ।

१ गानेवाली=वेश्या । २ सन्ध्यामी । ३ बेहजती । ४ दो पुत्री
 और दो गायिका । ५ अलग चली जाओ । ६ लनने कहा ।

कह्यो भक्ति गन्ध दूर पड़े पोथी परी धर
 श्रीशुक सराही तिया 'माथुरन मंग ही ॥४४४॥
 बोलि उठयो विप्र एक छूटक प्रमंग देख्यो
 कह्यो रसरंग भरयो ठरयो नृप पाव में ।
 कही जू विराजो गाजो नित सुख साजो जाय
 करों हरिराय वश भीजे रहो भावमें ॥
 धारो उर और शिरमोर प्रभु मन्दिरमें
 सुन्दर केदारो राग गावें भरे चावमें ।
 श्याम कंठमाल छुटि आवत रमाल हिये
 देखि दुःख पावै परे विमुख स्वभाव में ॥४४५॥
 नृपति मिखायो जाय वृथा यश लायो काचे
 मृत में पुवायो हार हटें ग्यान करो है ।
 माता हरि भक्ता भूप कही जनि करों कान
 तऊ 'वाण राजसर्का माया मति हरी है ॥
 गयो ढिंग मन्दिर के सुन्दर मंगाय पाट
 तागो बटवाय गुहि माल करि धरी है ।
 प्रभु पहिराय कही गाओ अव जानि पैं
 भर सुर राग और गायो पै न परी है ॥४४६॥
 विमुख प्रमन्न भये तब तो उराहने दे
 नये नये चोज हरि सनमुख भाषिये ।
 जाने भाल वाल एक माल गहि रहे हिये

१ यशकर्ता चतुर्वेदी । २ आवत ।

जीय लाग्यो याही रूप कहों लाख लाखिये ॥
 नारायण बडे महा मेरे भाग्य आप लिखे
 करे कोन दूर छविपूर अभिलाषिये ।
 मेरो कहा जाय आय परमै कलंक तुम्हे
 राखिये निशंक द्वार भक्त मारनाखिये ॥४४७॥
 गिरवी धरयो हो राग केदारो सो साह घर
 धारि रूप नरसी को जाय सो छुड़ायो है ।
 कागद लै डारयो गोद मोदभरि गाय उठे
 आय भक्त भक्त श्याम द्वार पहिरायो है ॥
 भयो जैजैकार नृप पाँय लपटाय गयो
 गह्यो हिये भाव सा प्रभाव दरसायो है ।
 विमुख ग्विमाने भये गये उठि नये नहि
 विना हरि कृपा भक्ति पन्थ कानै पायो है ॥४४८॥
 बन्धक धरयो हो राग सोई साह व्याही दाँय
 छोटी कहैं बार बार दरस कराइये ।
 नरसी कही हो भले सोई प्रभु कीन्दी साँची
 जाय दरवाजे सो पुकारयो नाम आइये ॥
 मोवत रह्यो सो साह कहों छोटी तिया सो जू
 दाम लेय देओ लखे सोई जाई धाड़ये ।
 लिये दाम कियो काम कागद गहाय दियो
 दियो कछु खाइवेको मोह हरि पाइये ॥४४९॥

१ लगेगा । २ भुके । ३ किसने । ४ अच्छा ।

करन सगाई आयो विप्र वर भायो नहीं
 घर घर फिरयो सोई नरसी बतायो है ।
 आय सुख पाय पूछयो सुत सो दिखाय दियो
 कियो लै तिलक मन देखत चुरायो है ॥
 'अजू हम लायक न तुम सब लायक हो
 मायक सो छुट्यो जाय नाम लै मुनायो है ।
 'मुनतही माथो धुनि कहै तालकटा वह
 बाल चोरि आयो जाओ फेरि दुःख दायो है ॥४५०॥
 काटिके अंगटा डारो तब सो उचारो बात
 मनमें विचार कियो तिलक बनाय के ।
 जाने मुता भाग ऐसे रहे सोच पागि सब
 आयो जब व्याहिने को धनदैं अघाय के ॥
 लगनहु लिखि दियो लियो द्विज आयि दियो
 डारि राख्यो कहैं गावै ताल ये बजायके ।
 रह दिन चार पे विचार नही नेक मन
 आयो कृष्ण रुक्मिणी जू भूमि मिले धाय के ॥४५१॥
 ठौर ठौर पकवान होत तिया गान करे
 घुरत निमान कान मुनिये न बात है ।
 चित्र मुख किये लो विचित्र पटरानी आप
 'घोरी रंग बोरी पे चढ़ायो सुत रात है ॥

१ कन्याका सम्बन्ध । २ नरसीजी ने कहा । ३ ब्राह्मणने कहा ।
 ४ कन्याके माता-पिता । ५ बोली ।

करी सो ज्योंनार तामें 'मानस अपार आये
 द्विजन विचारि 'पोटे बांधी पै न मान है ।
 मणिमय माजबाज गज रथ ऊँट कोर
 भक्तके किशोर आज सजी यों बरात है ॥४५२॥

नरसीमों कहैं गहैं हाथ तुम साथ चलो
 अन्तरिक्ष होहुँ चलूँ, एती वान मानिये ।
 कही अजी जानो तुम में तो हिये आनों यहै
 लहै सुख मन मेरो फेंट ताल आनिये ॥

आपही विचारि सब भार सो उठाय लियो
 दियो डेरा पुरी समधीकी पहचानिये ।
 मानस पठायो दिन आयो पै न आये अहो
 देखे ब्रह्मि द्वाये नर पृच्छे सो वखानिये ॥४५३॥

'नर सी बरात मत जानो यह नरसी की
 नरसी न पावै ऐसी समझ अपार है ।
 आयके सुनाई सुधि बुधि विमराई काहे
 करत हँसाई बात भाषी निगधार है ॥

गयो जो मगाई करि फूलन सो आयो विप्र
 निज अंग मानै कैम रंग विमलार है ।
 'कही मात्र घास धनगशि सो न पूजै कहूँ
 'चहुँ दिशि पुर रही देखो भक्तिमार है ॥४५४॥

१ मनुष्य । २ गठियाँ । ३ मनुष्यों जैसी । ४ पशुओं के लिये तृणके लिये कहा सो भी कृपा पक्ष वालोंकी सारी सम्पत्तिसे नहीं पूरा पडा ।
 ५ बारात चारों दिशाओंमें फैल रही थी ।

चले अचरज मानि देखि अभिमान गया
 लयो पाखो ब्राह्मणको हमै राखि लीजिये ।
 जाय गहि पाँय कहो भाय भरि दया करो
 गये दृग भरे पाँव परे कृपा कीजिये ॥

मिले भरि अंकले दिखाया मो मयंक मुख
 हाजिये निःशंक इन्हें भार मुता दीजिये ।
 व्याह करि आये भक्ति भाव लपटाये सब
 गाये गुण जाने जेने सुनि सुनि जीजिये ॥४५५॥

(श्रीधरोधराजी की कथा)

मूल छ०— सुत कलत्र मंवंन्धि सबे
 गोविन्द परायण । मेवत हरि, हरिदास
 द्रवत मुख राम रसायण । मीना पति
 के मुयश प्रथम हरिगमन बखान्यो ।
 'द्वे मृत दीजे मोहि कवित सबही जग
 जान्यो ॥ गिरा गदित लीला मधुर,
 सन्तन आनंद दायिनी । दिवदास वंश
 यशधर सदन, भई भक्ति अन-
 पायिनी ॥१०९॥

१ राम नाम रूपी एवं राम यश रूपी महोपाधि । २ श्रीविश्वामित्रजी के यज्ञकी रक्षार्थ प्रथम गये । ३ कविता का प्रथम चरण है ।

(श्रीनन्ददासजीकी कथा)

मूल छ०—लीला पद रस रीति ग्रन्थ
रचनामें 'नागर । सरस 'उक्ति युत युक्ति
भक्ति रसगान 'उजागर । 'प्रचुर जलधि
लों सुयश रामपुर ग्राम निवासी । 'सुकुल
शुक्ल संवलित भक्त पदरेणु उपासी ॥
चन्द्रहास अंगज मुहद, परम प्रेम पथ
महँ पगे । नन्ददास आनन्द निधि,
रसिक गु प्रभुहित रंगमगे ॥११०॥

(श्रीजनगोपालजीकी कथा)

मूल छ०— भक्ति तेज अति भाल सन्त
मंडल को 'मंडन । बुधि प्रवेश भागवन
ग्रंथ मंशय को खंडन । नरहड ग्राम
निवास देश 'वागड निस्तारयो । नवधा
भजन प्रबोध 'अननि दासन व्रत धारयो ॥
भक्त 'कृपावांछो सदा, पदरज राधात्ताल
की । मंसार सकल व्यापक भई, 'कजगे

१. चतुर । २. वरुण । ३. प्रसिद्ध । ४. महान केला हुआ ।
५. शुक्लवस्त्रधर विभूषित सुन्दर वंश । ६. सगोपित कर्मवाने ।
७. वाकांक्ष राज्य की परभूमि को वागड प्रदेश कहा जाता है । ८.
अनन्य । ९. वाहा । १०. गायन विशेष ।

जन गोपाल की ॥१११॥

(श्रीमाधवजीकी कथा)

मूल छ०—प्रसिद्ध प्रेम की रास 'गढागढ
परच्यो दीयो । ऊंचे ते भयो पात श्याम
साँचो प्रण कीयो । सुत नाती पुनि
सदृश चलत बाही परिपाटी । भक्तन
साँ अति प्रेम नेम नहिं कोउ 'अंगघाटी ॥
नृत्य करत नहिं तन सँभार, सम सर
'जनकनकी सकाति । माधव दृढ महि
ऊपरै, प्रचुर करी 'लोटन भगति ॥११२॥

गढागढ पुर नाम माधो बड़ी प्रेम भूमि
लोटेँ जव नृत्य करें भूलोसुधि अंग की ।
भृगति विमुख झूठ जानिके परीक्षा लई
आनि तीन 'छात पर देखी गति 'रंगकी ॥
नूपुर सो बांधि नाच साँच सो दिखाय दियो
गिम्हो सो 'कराहमथ्य जीयो मति पंगु की ।
बडो 'ग्राम भयो नृप 'दाम विश्वाम बाढ्यो

१. ग्रामका नाम है । २. कुछ भी कभी । ३. पितृ परम्पराकी शक्तिके ।
४. पृथिवी पर जोर फलोट करने हुए नृत्य गान करना । ५. मज्जित ।
६. नृत्य गान की । ७. प्रतप्त धृति कराह कहाही में । ८. मरजानेका
वर । ९. भक्तोंका ।

वाढयो उरभाव रीति न्यारी या प्रमंग की ॥४५६॥

(श्रीअंगदजी की कथा)

मूल छ०—'नग अमोल इक ताहि सवहि
भूपति मिलि 'याचें' । साम दाम बहु
करें दास नाहिन मति 'काँचें' । एक
समय संकट में लै 'पानीमँह डारयो ॥
प्रभो ! तिहारी वस्तु वदन ते वचन
उचाग्यो ॥ पाँच दीय शत कोसते,
हरि हीरा लै उरधरयो । अंगदको
अभिलाप शुभ, पुरुषोत्तम पूरण
करयो ॥११३॥

रायमेन गढ वाम नृप सो मिलाहदीज
ताको यह काका रह्यो अंगद विमुख है ।
नारी ताकी प्यारी प्रभु साधु सेवाधारी उर
आये गुरु घर कहै कृष्णकथा सुख है ॥
बैठ मौन कौन देखि कैसे मौन रह्यो जान
बोल्या तिया जान कहा करौ नर रुख है ।
सुनि उठि गये गुरु अन्न जल त्याग्यो तानै
लिये पाँव जाय विषे वश भयो दुःख है ॥४५७॥

१ रत्न-हीरा । २ मांगते थे । ३ कचाते नहीं थे । ४ तलाब में ।

मुख न दिखावै याहि देख्यो ही मुहावे कही
भावे सोही करो नेक वदन दिग्वाइये ।
मैं हूँ जल त्यागि दियो अन्नजात कापै लियो
जीवों तबही मैं जब तूहँ कछु खाइये ।
बोली मोसों बोली जनि छाँडों तन याही जिन
प्रण साँचो होतो जब सुनत समाइये ।
कहो अब करौ 'सोई', मेरी मति गई खोइ
भई उर दया बात कही समझाइये ॥४५८॥
'वेही गुरु करो जाय पाँयनमें परो, गयो
चावनि लिवाय लायो भयो शिष्य दीन हूँ ।
धारी उरमाल 'माल निलक बनाय कियो
लियो 'शीथ प्रीति पेमी उपजी नवीन है ॥
चढी फौज मंग बैंगी चढ्यो पुरमाहि वढ्यो
'कढ्यो टोपी लेके हीग शत एक पीन है ।
डारे सब बैच 'पाग पैच मध्य राग्यो एक
भाष्यो यों अमोल करो जगन्नाथ लीन है ॥४५९॥
काना कानी भई नृप बात सुनि लई कही
हीरा वह देय तोपै और माफ किये हैं ।
आय समझावै बहु युक्ति सो बनाय लोग

१ वही-सन्त सेवा । २ उनको ही गुरु बनाओ । ३ लजाटपर ।
४ शीथ-उच्छिष्ट प्रसाद । ५ वह टोपी-नाज लेकर घर से निकल गये
कि जिसमें १०० हीरा सामान्य और १ बड़ा बड़ा हीरा जड़ा हुआ था ।
६ पागड़ी के पैच-लपेटायें ।

मन नहीं आवैं याके जाय कहि दिये हैं ॥

अंगद वहिन, लागै नृप भूआ पागै तासों
देवो विष मारो कहि ताके पग छूये हैं ।

करत रसोई घोर गरल मिलायो पाक
भोग सो लगाय कहि आओ बोलि लिये हैं ॥४६०॥

ताकी एक सुता संग लैके बैठै जैन को
आई सो त्रिपाय कही जेओ कहुँ गई है ।

जैवत न बोधि हारी तब सो विचारी प्रीति
भीति रोय मिली गरे रीति कही सारी है ॥

प्रभुलै जिवाये रांड भांड के निकामि दर्ई
देकर किंवार सब पायो, ओप नई है ।

वहै दुख रह्यो हिये कह्यो कैमे जात काह
वात सुनी नृपहू वो जैसी भाँति भई है ॥४६१॥

चले नीलाचल हीरा जाय पहिराय आवैं
आय घेरि लीन्है नृप नगन्हि खिसायके ।

कही डारि देओ के लराई मनमुख लेओ
वश न हमारो भूप आज्ञा आये धायके ॥

बोले नेक रहो मैं नहाय पकराय देत
हेत मन और जल डारयो लै दिखायके ।

बस्तु ये तिहारी प्रभु लीजिये उचारी इमि

१ दुर्दशा करके । २ शोभा नई हो गई=बढ़ गई । ३ विषभोग
लगानेका । ४ श्रीजगन्नाथपुरी । ५ दे देता हूँ ।

वाणी लागी प्यारी उर धारयो सुख पायके ॥४६२॥

येनो घर आये वेतो जलमध्य कूद छाये
अति अकुलाये नेक खोज नहीं पायो है ।

राजाचलि आयो सब नीर कटवायो कीच
देखि सुरभायो दुःख मागर नहायो है ॥

जगन्नाथ देव आज्ञा दर्ई वाहि सुधि देओ
आयके सुनाई नर, तन विसरायो है ।

गयो जाय देख्यो उरपर जगमगा रह्यो
लह्यो सुख नैनन सो कापै जात गायो है ॥४६३॥

राजा हिय ताप भयो दियो अन्न त्यागि कह्यो
आवैं जोपै भाग्य मेरे ब्राह्मण पठाये हैं ।

धरणोदे रहे कहे नृपके वचन सब
तब हूँ दयाल आप पुरहिंग आयो हैं ॥

भूप सुनि आगे आय पाँय लपटाय गयो
लयो उर लाय दृग नीर सों भिजाये हैं ।

राजा सखम दियो जियो मो भजन कियो
हियो सरसायो गुण जाने जिते गायो हैं ॥४६४॥

(करोली नरेश श्रीचतुर्भुजसिंहजीकी कथा)

मूल छ०-भक्तागमन सुनत सम्मुख
याजन इक जाई । सदन आनि सत्कारि

१ भगवानको । २ श्रीअंगदजी । ३ राजभृत्य । ४ पता । ५ अंगदजी
को । ६ शरीर की सुधि । ७ वक्षस्थल ।

सरस गोविन्द बडाई ॥ पद प्रक्षालित
स्वकर राय रानी मन साँचे । धूप दोष
नैवेद्य बहुरि तिन आगे नाचे ॥ यह
रोति करालो धोशकी, तन मन धन आग
धरें । नृपति चतुर्भुज भक्ति को, कौन
भूप सरवर करै ॥११४॥

पुर डिंग चारो ओर चौकी राखी योजन पै
जोई जन आवै तिन्है लावत लिवायके ।
मालाधारी दाम कोऊ आवै जो पै द्वार तो पै
करै वही रीति जो ममाई छपै गाय के ॥
सुनी एक भूप भक्त निपट अनूप कथा
मनको भंडार खोलि देत बोल्यो धाय के ।
पात्र औ अपात्र को विचार ही जो नाहि होवे
कहा ऐसी बात दई लोगन उडायके ॥४६५॥
भागवत गावै भक्त भूप घर विप्र एक
बोलके सुनावै ऐसी मन मत लाइये ।
पावै आशैं कौन हिये मोन में प्रवेश करि
भरि अनुराग कहा उर मधि आइये ॥
करीलौ परीक्षा भाट समझाय भेज्यो एक
कीजे भाल टीको द्वार दाम यों सुनाइये ।

१ विचित्र । २ कथा करते थे । ३ उनने कहा ।

गयो भूति, गया छूलि कुल विमनार कयो
लियो पहिचानि अब जान कैसे पाइये ॥४६६॥
बीते दिन बीम तीम भई तब मीख सुधि
कही हरिदाम कोऊ आयो यों सुनाइये ।
बोले निःशंक जाओ गाओ गुण गोविन्द के
आये घर मध्य भूप करी जैसी भाइये ॥
भक्तिके प्रसंग को न रंग क्योंहु नैक जानें
जान्यो उनमानि सो परीक्षा मँगवाइये ।
दियो सो भण्डार खोलि लियो मन मान्यो दई
संपुट में कौडी एक जरी लपटाइये ॥४६७॥
आयो बाही राजा पाम मभा में प्रवेश कियो
लियोधन दियो पाजे मोई लै दिखायो है ।
खोलिक लपटा मध्य सम्पुट निहारी कौडी
समझ विचारि हार मनमें न आयो है ॥
बडां भागवत विप्र पंडित प्रवीण महा
निशि रम लीन जानि आयके बतायो है ।
कह्यो उनमानि भक्त मानियो प्रमाणजरी
मूँदिके पठाई मोई गुण समझायो है ॥४६८॥
राजा रीझ पाँव गहे कहे जू वचन नीके
पे पै नैक आप जाय तत्व याको लाइये ।
आये दौरि पाँव लपटाये भूप भाव भरे

१ राजाका सिखावन । २ कौडी । वास्तविक मध्य ।

परे प्रेम सागर में चरचा चलाइये ॥
 चलये न देत सुखदेत चले लोल मन
 खोलके भण्डार दियो लियो न रिझाइये :
 उभे सुआ सारौ कही एक कर धारो मेरे
 दई शकुलाय, लयी मानो निधि पाइये ॥४६६॥
 आया राजा सभा बहु वातन अखाडो जहाँ
 बोलि उठी मैना कृष्ण कहा भारि डार ह ।
 पूछे नृप कहा अहो लहौ सब याही सों जू
 पक्षी वा समाज रहैं हरि प्राण प्यारे हैं ॥
 कोटि कोटि रसना बग्यानों पै न पाऊँ पार
 सुनि मार भक्ति आय सीम पाँव धारे हैं ।
 गखो यह खग पगि रह्यो तन मन श्याम
 अनि अभिराम रीति मिले औ पधारे हैं ॥४७०॥

(श्रीमीराबाईजीकी कथा)

मूल छ०—सदृश गोपिका प्रेम प्रकटि कलि
 युगहि दिखायो । निर अंकुश अति
 निडर रसिक यश रसना गायो ॥ दुष्टन
 दोष विचारि मृत्युको उद्यम कीयो । वार

१ शुक=तोता । २ मैना । ३ मेरा हाथ में दे दो । ४ व्याकुल
 होकर । ५ यथार्थ भक्ति । ६ कुस राजाने आकर चरण पकड़े । ७ पक्षी
 लाँटा कर कहा । ८ श्री चतुरभुज नृपति उनसे मिले और प्रार्थना पर-
 वस हो उनके नगर में पधारे ।

न बाँको भयो गरल अमृत ज्यों पीयो ॥
 भक्ति निशान बजाय की, काहू ते नाहिन
 लजी । लोक लाज कुल शृंखला, तजि
 मीराँ गिरिधर भजो ॥११५॥

मेरतो जनमभूमि भूमि हित नैन लगे
 पगे गिरिधारीलाल पिता ही के धाम में ।

राणा के सगाई भई करी व्याह सामा नई
 गई मति चूडि वा रंगीले घनश्याम में ॥
 भाँवरी परत मन साँवरे सरूप माँझ
 ताँवरे भी आवे चलिवेको पति ग्राम में ।
 पूछे पिता माता पट आभरण लीजिये जू
 लोचन दूरत नीर कहा काम दाम में ॥४७१॥

देओ गिरिधारी लाल ज्यों निहाल कियो चाहो
 और धन माल सब राखिये उठाव के ।
 बेटी अति प्यारी प्रीति रंग चढयो भारी
 सोय मिली महतारी कही लीजिये लडाय के ॥
 डोला पधराय दृग दृगसों मिलाय चली
 सुख न समाय चाय प्राणपति पायके ।

पहुँची भवन सासु देवी पै गमन कियो
 निया अरु वर गठजोरी करी भायके ॥४७२॥

१ मेरसा मारवाड प्रदेश में है । २ द्रव्य में ।

देखो पुत्राणां कियो लै उपाय सासु
 वरपै पुजाय पुनि पूजो बहु भाषिये ।
 बोली जू विकारों माथो लाल गिरिधारी दाय
 और को न नवै एक वेही अभिलाषिके ॥
 बढ़त सुहाग याके पूजे, ताते पूजा करो
 करो जनि दृढ शीश पाँयन पै राखिये ।
 कही बार बार तुम यही निरधार जानो
 वही सुकुमार जापै बारि फेरि नाखिये ॥४७३॥
 नव तो खिसानी भई अति जर वर गई
 गई पुत्र पाम यह वधु नहीं कामकी ।
 अब ही जवाब दियो कियो अपमान मेरो
 आगे क्यों प्रमाण कर भर स्वाम चाम की ॥
 राणा मुनि कोप करयो धारयो हिय मारिवोई
 दई ठौर न्यारी देख रीभी मति धाम की ।
 लालन लडावै गुण गायके हल्लावै साधु
 संग मन भावै जिन्हें लागी चाह श्यामकी ॥४७४॥
 आयके ननद कहै गहै क्यों न चेत भाभी
 साधुन सों हेत में कलंक लागै भारी ये ।
 राणा देशपति लाजै बापकुल रति जाय
 मानि मेरी बात वेगि संग निरवारिये ॥

१ कही । २ धीगिरिधारीलाल । ३ क्रुद्ध हो गई । ४ भावैगी । ५ चर्मकी
 धोऊनी सर्रावे लेंगे लेंगे बवास । ६ श्रीमतीराजी । ७ वेप । - लोचने ।

लागे प्राण साथ सन्त देत है अनन्त सुख
 जाको दुःख होय ताको नीके करि ठारिये ।
 सुनिके कटोराभरि गरल पठाव दियो
 लियो करि पान रंग चढयो यों निहारिये ॥४७५॥
 गरल पठायो सोतो शीश लै चढायो संग
 त्याग विप भारी ताकी भार ना मँभारी है ।
 राणा लै लगाये चर बैठे साधु द्विग दर
 तबही खबर करो मारों यह धारी है ॥
 राजै गिरिधारी लाल तिनही मो रंगजाल
 बोलन हँमत ख्याल कान परी प्यारी है ।
 जायके सुनाई भई अति चपलाई आयो
 लिय नरवार पट खोल यों पुकारी है ॥४७६॥
 जाक मंग रंगभीजी करति प्रमंग नाना
 कहाँ वह नर गयो वेगि ही बताइये ।
 आगे ही विराजै कछु तोमों नहीं लाजै अभ
 देवि सुख साजै आँखें खोलि मरसाइये ॥
 भयो सो खिसानो राणा लिख्यो चित्र भीति मानो
 उलटि पयानां कियो नेक मन आइये ।
 देख्यो सो प्रभाव ऐपै भावमें न मीच्यो हियो
 विना हरि कृपा कहो कैसे कर पाइये ॥४७७॥

१ सत्संगके त्यागका । २ वेगी । ३ आतुरता । ४ क्रिवाड ।
 ५ अभी भी । ६ बापस चला गया ।

विषयी कुटिल एक साधु वेप धारि लियो
 कह्यो यों प्रसंग आय अंग मंग कीजिये ।
 आज्ञा मोको दई आप लाल गिरिधारी अहो
 शीश धरि लई करि भोजन हू लीजिये ॥
 मन्तन ममाज में विद्याय मेज बोलि लियो
 शंक अब कौनकी निशंक रम भीजिये ॥
 श्वेत मुख भयो विषै भाव मत्र गयो नयो
 पाँयन पै आय मोको भक्तिदान दीजिये ॥४७८॥
 रूप की निकाई सुनि अकबर मन आई
 लियो तानसेन मंग देखिये को आयो है ।
 देखिके निहाल भयो छवि गिरिधारीलाल
 पद सुखजाल एक तबही चढ़ायो है ॥
 वृन्दावन आई जीव गुमाई सौ मिलि भिली
 तिया मुख देखिये को प्रण ले छुड़ायो है ।
 देखि कुञ्ज कुञ्ज लाल प्यारी सुखपुंज भरे
 धरि उग्याभि आय देश 'वन गायो है ॥४७९॥
 राणा की मलोन मति देखि बसी द्वारावती
 रति गिरिधारीलाल नितही लड़ाइये ।
 लागी चटपटी भूप भक्ति को स्वरूप जानि
 अति दुःख मानि विप्र श्रेणी लै पठाइये ॥
 बेगिलेके आओ मोको प्राणदे जियाओ अहो

गये द्वार धरणा दे विनती सुनाइये ।
 सुनि विदाहोन गई राय रण छोड़जीपै
 छाँडत हो राखो लीन भई नहीं पाइये ॥४८०॥
 श्रीमीराजी के अपार वरित्रों में से जो सुन पाये चन्दी का
 श्रीमिथादामजी महाशय ने चयन किया है । श्रीमीराजी के श्रगुरुदेव
 श्रीमिथादामजीका नाम एवं गोस्वामी पादके साथ पत्राचार आदि जो
 श्रीराजी के पदों से प्रत्यक्ष सिद्ध हैं उनका उल्लेख नहीं कर पाये हैं
 अतः वे आगे दिये जा रहे हैं ।

निम्न के राणाजी के कुचक्रोंसे आक्रान्त होकर जब श्रीमीराजीने
 दारिका रहनेका विचार किया तब एक पद पत्रके रूपमें लिखकर श्रीगाम-
 चरित मानसकार गोस्वामी पाद श्रीतुलसीदासजीके पास भेजा जिसमें
 कर्तव्य पथ प्रदर्शन करनेकी प्रार्थनाकी है वह पद यह है—
 श्रीतुलसी मुम्बनिधान, दुख हरण गुमाई ।
 चारदिवार प्रणाम करूँ, मम हरहु शोक समुदाई ॥
 घरके स्वजन हमारे जेते, मवन उपाधि बढ़ाई ।
 माधु मंग अरु भजन करत में, देत कलेश महाई ॥
 चालपने ते मीरा कीन्ही, गिरधरलाल मितार्ई ।
 मोतो अब छुटत नहिं क्योंहु, लगी लगन बरियाई ॥
 मेरे मान पिताक मम हो, हरि भक्तन सुखदाई ।
 हमको कहा उचित करिवो है, सो लिखियो समझाई ॥
 श्रीगोस्वामी पाद ने इसके उत्तर में यह पद लिख भेजा जो
 विनयपत्रिका में देला जाता है ।
 जाके प्रिय न राम वैदेही ।
 तजिये ताहि कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही ॥

तजे पिता प्रह्लाद विभीषण बन्धु भरत महतारी ।
बलि गुरु तजे केन्त ब्रज बनितनि भइ जगमंगलकारी ॥
नातो नेह रामसौ मनियत मुहुद मुमेव्या जहाँलों ।
अंजन कहा आँख जेहि फूटे बहुतो कहौ कहाँलों ॥
सो नृलमी मव भाँति परमहित पूज्य प्राण ने प्यारो ।
जामो होय मनेह राम पद एतो मतो हमारो ॥

श्रीगोस्वामी पाद की यह सम्मति प्राप्त करके ही आप द्वारिका पधारी थी ।

श्रीमीराजीने अपने अनेक पदोंमें श्रीरैदासजी का अपना गुरु कहा है उनमें से २ पद यहाँ दिये जा रहे हैं ।

मीरां मनमानी सुरत मेल समानी ।

जय जय सुरत लगे वा घरकी, पल पल नैनन पानी ॥

सो हिय पीर तीर सम साले, कमक कमक कमकानी ।

रात दिवस में नौद न आवत, भावत अन्न न पानी ॥

ऐसी पीर विरह तन भीतर, जागत रेन बिहानी ।

कामो पीर कहौ तनकी री, में तो भरमी खाली ॥

खोजत फिरौ भेद वा घरको, कोइ न करत बसानी ।

श्रीरैदास मिले मोहि सदगुरु, दीन्हि सुरत सहदानी ॥

मैं मिलि जाय पाय पिय अपना, तब मोरी पीर बुझानी ।

मीरां स्वाक खलक शिर डारी, अरु अपना घर जानी ॥

श्रीमती पद्मावती शयनम द्वारा संग्रहीत मीराजीके वृहदपद संग्रह के पृष्ठ ३१९ पर अंक ५८० में भी यह पद संछेदित हुआ है ।

मेरो मन लाग्यो हरि जू सौं, अब ना रहेंगी हटकी ॥

गुरु मिलिया रैदासजी, दीन्हि ज्ञानकी गुटकी ।
चोट लगी निज नाम हरी की, म्हारे हिवडे खटकी ॥
मोती माणक लडी न पहरे, में कद ही की नटगी ।
महणो तो म्हारे माला दुलडी, धरु चन्दन की कुटकी ॥
गणा कुलकी लाज गैवाई, माथाँ की मँग भटकी ।
नित उठ हरिजी के मंदिर जावां, नाचां दे दे चुटकी ॥
भग मुख्या म्हाँका माधु मंग मूँ, साँवरिया मूँ लटकी ।
जेठ बह की काँण न मानूँ, धुंधट पडगई पटकी ॥
परम गुरां के शरणो रहस्यां, दंडोत करस्यां लुटकी ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर जनम मरण से नुटगी ॥

ये दोनों पद निम्नलिखित महानुभावों ने भी अपने मीरां विषयक प्रकाशनों में ग्रहण किये हैं और श्रीमीराजीको श्रीरैदासजीकी शिष्या स्वीकार किया है ।

१. श्रीहनुमान प्रसादजी पोंडार ने अंग्रेजी भाषामें प्रकाशित मीरां बाई हैं ।

२. श्रीनरेशचन्द्रदासजी स्वामी ने मीरां शब्दावली में पृष्ठ २०, २५ और ३७ पर तीन पद दिये हैं जो बेलवोदियर पेस प्रयागसे प्रकाशित हुई हैं ।

३. श्रीकृष्णप्रभाकर एवं श्रीबांकेविहारीने "ब्रजचन्द्र चकोरी मीरां" में, जो राधिका पुस्तकालय प्रकाशन ट्रस्ट राधाकृष्ण भवन वृन्दावनसे प्रकाशित है ।

श्रीमीराबाईने श्रीरामनाथ और श्रीगणेश रूपका भी पञ्चुर यश वर्णन किया है परन्तु उनकी उपासना श्रीगिरधर नागर भगवान् श्रीकृष्णकी ही थी इसी बातको लेकर उनके विषयमें लिखनेवाले अनेका-

नेक लेखक भ्रममें पड़ गये हैं और किसीने उनको श्रीवल्लभ संप्रदायके प्रसिद्ध कवि और गायक मन्त श्रीसूरदासजी की शिष्या कह दिया है और किसीने श्रीगोरांग महाप्रभुकी शिष्या । परन्तु श्रीपीतृजीने अनेकानेक सन्तोंका गुणमान करते हुए भी अन्य किसी को अपना गुरु किसी पदमें नहीं कहा, जबकि श्रीसूरदासजी को अनेक पदोंमें कहा है । अतः इस पृष्ठ प्रमाणके अस्तित्व पर भी जो लोग किसी प्रकार के आग्रह या भ्रम वश उनको श्रीगमानन्द संप्रदायानुयायिनी माननेमें शंका करते हैं तो यह आश्चर्य ही की बात है । वे लोग मायदा यह समझते हैं कि श्रीगमानन्द संप्रदायमें भगवानके आश्रय रूपके अनि-
रिक्त अन्यरूपोंकी उपासना असंभव है परन्तु भक्तमालके देखनेसे उनका यह भ्रम निर्मूल हो जाना चाहिये । श्रीगमानन्द संप्रदायमें प्रधान रूपसे भगवान श्रीगणेशकी उपासना होते हुए भी भक्तकी विशेष रुचि एवं परिस्थितिके अनुसार श्रीकृष्ण नृसिंह नारायण आदि रूपोंकी उपासना का उपदेश किया जाता है । इतनाही नहीं श्रीनामास्वामीने भक्तमालके आरंभमें भगवानके २४ अवतारोंकी वंदनाकी है और श्रीपियादासजीने लिखा है :—

जिते अवतार सुख सागर न पारावार,
करैं विमलार लीला जीवन उधार को ।
जाही रूपमाँझ मन लागै जाको पागे ताहि,
जागै हियमाय वही पावै क्यों न पारको ॥
सबती हैं नित्य ध्यान करत प्रकाशे चित्त,
जैसे रंक पावै वित्त जानै रत्नसार को ।
केशन कुटिलताई त्योही मीन सुखदाई,
अगर सुरीनि भाई बमौ उर हार को ॥

श्रीपियादासजीको आचार्य शिरोभूषण श्रीअग्रदेवाचार्यजीकी यह

रीति अत्यन्त प्रिय लगी कि आप भगवानके सभी नाम रूपोंको नित्य अपरिमित सुखाम्बु निधि और हृदय प्रकाशक मानते हैं और कहते हैं कि जिस भक्तका मन जिस नाम रूपमें लग जाय वह उसी नाम रूपमें परात्पर प्रभुको वसी प्रकारसे पालेता है कि जिस प्रकार मन्तके मार (महामूल्यवानता) को जानने पर एक कंगाल भी उसका पूरामूल्य प्राप्त कर लेता है । पाठक देखेंगे कि भक्तमालमें अनेकानेक श्रीगमा-
नन्द संप्रदायके आचार्य, श्रीनरहर्यानन्दाचार्य स्वामी आदि । और अनेकानेक भक्तराज (आमेर नरेश श्रीपृथ्वीराजजी आदि) के श्रीगुवर यदुवर यश मान और श्रीद्वारिकाधीशादिके दर्शनादिके प्रथम प्रचुर परिमाणमें वर्णित हैं ।

(आमेर नरेश श्रीपृथ्वीराजजीकी कथा)

मूल छ०—कृष्णदास उपदेश "परमतत
परच्यो पायो । निगुण सगुण निरूपि
तिमिर अज्ञान नशायो ॥ 'काछ' 'वाच'
'निकलंक मनो' 'गाँगेय युधिष्ठिर । हरि
पूजा प्रह्लाद धर्मध्वज धारी जग पर ।
पृथ्वीराज परच्यो प्रकट, हरि आशुध
अंकितकियो । आमेर अछत नृप कर्मको,
द्वारिकेश दर्शन दियो ॥११६॥

पृथ्वीराज राजा चलो द्वारिका श्रीस्वामी संग
अति रम रंग भरयो आज्ञा प्रभु पाई है ।

१ तत्व । २ लंगोट । ३ वचन । ४ कलंक हिन सच्चे ।

५ शीघ्र पितामह ।

सुनिके दीवान दुःख मानि निशि कान लगयो
 कहिपायो माधु सेवा भक्ति पुग छाई है ॥
 देखिये निहारिकं विचार कीजे इच्छाजोई
 लीजे नहि माथ जाओ वात लौ दुराई है ।
 आयो भोर भूप हाथ जारि के मो टाढो रह्यो
 कह्यो गद्दो देश सो निदेश नहि आई है ॥४८१॥
 'द्वारावती नाथ देखि गोमती में स्नान करो
 धरो भजछाप आप मन अभिलाषिये ।
 'चिंता जनि करो तीनो वात यही लीजिये जू
 'दीजे जंई आज्ञा मोई शीश धरि राखिये ॥
 आय पहुँचाय दूर नैन जन पुरि रहे
 दहै उर भारी कहाँ मग रस चाखिये ।
 बीने दिन दोय निशि रहेहु ते मोय, भोय-
 गई भक्ति गिरा, आय वाणी मधु भाषिये ॥४८२॥
 अहो पृथ्वीराज कही म्वासी ही मो वाणी लही
 आयो उठि दौर वाही ठौर प्रभु देखे है ।
 धूम्यो कह्यो कान धरो गोमतीमें स्नान करो
 सुनिके नहायो पुनि वे न कहूँ पेखे है ॥
 शंख चक्र आदि छाप तन सब व्याप गई
 भई यो अँवार रानी आय अवरेखे है ।

१ राजा ने कहा । २ श्रीपयोहारीजी ने आज्ञा दी । ३ राजाने कहा ।
 ४ श्रीपयोहारीजीको ।

बोले 'रह्यो नीर मो शरीर ले सगाव कीजे
 लीजे हिये नाथ, 'निज भाग्य करि लेखे है ॥४८३॥
 भयो जब भोर पुर बडो भक्ति शोर पग्यो
 करयो आय दरमन भीर भई भारी है ।
 आये बहु सन्त ओ महन्त बडे बडे धाय
 अति सुख पाय देह रचना निहारी है ॥
 नाना भेट आवै 'हित महिमा सुनायौ राजा
 सुनत लजायौ जानी कृपा बनवारी है ।
 मन्दिर करायो प्रभु रूप पधरायो मव
 जग यश गायो कथा माको लागी प्यारी है ॥४८४॥
 विप्र दृग हीन सो अनाथ वैजनाथ द्वार
 परयो चत चाहै माम केनही विहाने है ।
 आज्ञा वार दोय चार भई येन फिर मोई
 याको दृष्ट मार देखि शिव पिघलाने है ॥
 पृथ्वीराज अंगक अंगोछा सो अंगोछो जाय
 आयकें सुनाई द्विज गौरव डगने है ।
 नयो मंगवाय मो छुवाय दियो छुयो नैन
 खुले भयो चेन जन लखि मरसाने है ॥४८५॥

(भक्त नरेशोंका वर्णन)

मूल छ०-लघु मथुरा भेडता भक्त अति
 जयमल पापे । टोडे भजन निधान

१ बचा चला । २ राजीने । ३ प्रेयसी ।

रामचंद्र हरिजन तांसे । अभयराम
इकरसहि नेम नीमाके भारी । करमसि
में भगवान वोर भूपति व्रतधारी ॥
ईश्वर अक्षय रायमल, मधुकर नृप
सरवस दियो । भक्तन का आदर अधिक,
राजवंश में इन कियो ॥११७॥

(श्रीजयमलजीकी 'दूसरी कथा)

मेरने वमत नृप भक्तिको स्वरूप जाने
'जैमल अनृप जाकी कथा कहि आये हैं ।
करी साधु सेवा रीति प्रीतिकी प्रतीति भई
नई एक सुनो हरि कैसे के लड़ाये हैं ॥
नीचे मानि मन्दिर सो सुन्दर विचारी बान
छात पर बंगला विचित्र लौ बनाये हैं ।
विविध विछोना सेज राजत उठौना पान-
दान धरि मोना जरी परदा सिंवाये हैं ॥४८६॥
ताकी दारु सांढी करि रचना उतारि धरें
मैं दूर चौकी आप भाव स्वच्छताई है ।
मानसी विचारें लाल सेज पगधारे पान
स्वात लौ उगार डारें पौढें सुखदाई है ॥

१ प्रथम कथा पिछाही कवित्त २३१ में वर्णित है । २ इनकी
कोई कोई सन्त श्रीमीरा बाई के भ्राता कहते हैं ।

निया हू न भेद जानै सो 'निसेनी धरी बान
देखौ को किशोर सोयो फिरी भोर आई है ।
पतिको सुनाई भई अति मनभाई वाकां
खीझि डरपाई जानी भाग्य अधिकाई है ॥४८७॥

(श्रीमधुकर शाहजी की कथा)

मधुकर साह नाम कियो लै सफल जानै
मेप गुणमार गहैं तजत अमार है ।
'ओरछे को भूप भक्तभूप सुखरूप भयो
कियो प्रण भारी जाके और न विचार है ॥
कंठीधरि आवै कोय, धोय पग पीवै सदा
भाई दर्सा, खर गर डारयो माला भार है ।
पाँव प्रक्षालि कही आज जू निहाल कियो
हिये द्रये दुष्ट पाँव गहैं दृग धार है ॥४८८॥

(श्रीखेमालारत्नजी राठोडके पुत्र पौत्रादि)

मूल छ०—'रेना पर गुण राम भजन
भागवत उजागर । प्रेमी परम 'किशोर
उदार 'राय रत्नाकर । हरिदासनके दास
दशा ऊँचो ध्वजधारो । निर्भय अननि
उदार रसिक यश रसना भारी ॥ दशधा

१ सिद्धी । २ ओरछा फिसगद-बुन्देल खण्ड । ३ श्रीगामरेन
जी । ४-श्रीकिशोरसिंहजी । ५ श्रीगामरत्नाकरजी ।

सम्पत्ति सन्त बल, सदा रहत प्रफुलित
वदन । खेमाल रत्न राठौर के, अटल-
भक्ति आई सदन ॥११८॥

(श्रीरामरैनजी राठौरकी कथा)

मूल छ०—'अजर धर्म आचर्यो लोकहित
मनहुँ नोलकंठ । निन्दक जग अनि-
राय कहा जानैगो भूसठ । रोति तैं गन्धर्व
व्याहिमुता दुष्यन्त प्रमारो । भरत पुत्र
भार्गव स्वमुख शुकदेव बखानै ॥ और
भूपको छवै सकै, दृष्टि जाय नाहिन
धरो । कलियुग भक्ति करी कमान, राम
रैन करी करी ॥११९॥

पूनों में प्रकाश भयो शरद समाज राम
विविध विलास राग रंग नृत्य भारी है ।
बैठे रस भीजे दोऊ बोल्यो रामराजा रीझि
भेट कहा कीजे बीप्र कही जो ही प्यारी है ॥
प्यार जो विचारें तो निहारें नहीं नेक छटा
सुता रूप घटा अनुरूप सेवा 'ज्यारी है ।

१ सदा नवीन । २ भगवान् शंकर । ३ सौंदर्यकी चढती हुई
वेदली । ४ जीवन ।

रही मभा सोच आप जायके लिवाय लाये
भेष नों दिवाये केरे संपत्तिले वारा हैं ॥४८६॥

(राजा श्रीराम रैनजीकी रानीकी कथा)

मूल छ०—आरज को उपदेश सुतहु उर
नीके धारयो । नवधा 'देशधा प्रीति आन
'सब धर्म विसारयो ॥ 'अच्युत कुल
अनुराग प्रकट पुरुषार्थ जान्यो । सारा
सार विवेक बात तीनों मन मान्यो ॥
दासत्व अनन्य उदारता, सन्तन 'मुख
'राजा कही । श्रीहरि गुरु हरिदास सों,
राम 'घरनि साँची रही ॥१२०॥

आये मधुपुरी राजा राम अभिराम दोऊ
दाम पै न राखे साधु विप्र 'भुगताये हैं ।
ऐसे ये उदार राह खरब संभार नहीं
चलवे विचार भयो 'चूड़ा 'दीठि आये हैं ॥
मुद्रा शत पाँच मोल खोलि तिया आगे धरे
दीजे बेचि गये नाभा कर पहिराये हैं ।
पतिको बुलाय कही नीके देखि रीझे भीजे
काढिके करज पुर आये दे पठाये हैं ॥४८६०॥

१ प्रेमाशक्ति । २ सन्तों से । ३ सामने । ४ श्रीरामरैनजी ।
५ पत्नी रानी । ६ सन्तोंमें खर्च कर दिये । ७ कंगन । ८ देख पडे ।

खेमाल रतन तनु त्याग समै अश्रुपात
सुत पूछै बात अजू नीके खोल दीजिये ।

क्रीजे पुण्यदान बहु सम्पत्ति 'अमान भरी
धरी हिय दांही सोई कही सुन लीजिये ॥

विविध बडाई में समाई मति भई पै न
नितही विचार अत्र मनपर खीभिये ।

नीर भरि घट शीश धरके न लायो और
नूपुर सो बांधि नृत्य किया नहीं लीजिये ॥४६१॥

(श्रीखेमालरत्न पौत्र श्रीकिशोरमिहजी की कथा)

मूल छ०—पायन नूपुर बांधि नृत्य 'नग
घर हित नाच्यो । राम कलश मन
रल्यो शीश ताते नहिं 'वाँच्यो ॥ बाणी
विमल उदार भक्ति महिमा विस्तारी ।
प्रेमपुंज सुठिशील विनय सन्तन रुचि-
कारी ॥ सृष्टि सराहै राम सुत, लघु
वयस लछन 'आरज लिये । अभिलाश
उभय खेमाल के, ते किशोर पूरण किये ॥

रहे चुप चाप मभी जानी काम आपही को
बोल्थो यों किशोर नाती आज्ञा मोको दीजिये ।

१ अतुल । २ श्रीगिरिधर लालजी । ३ बचाया । ४ पिता पितामह ।

यही नित करौ नहीं टरौ जौलों जोवै तन
मनमें हुलाम उठि छाती लाय लीजिये ॥

बहु सुख पायो, 'पाये, वैमेही निभाये प्रण
गाये गुण लाल प्यारी अति मति भीजिये ।

भक्ति विस्तार कियो 'वैस 'लघु भीज्यो हियो
दियो सनमान सन्त सभा सब रीभिये ॥४६२॥

(द्वितीय पौत्र श्रीहरिदासजी की कथा)

मूल छ०—हरीदास हरिभक्त भक्त मन्दिर
को कलसो । भजन भाव परिपक्व हृदय
भार्गीरथि जलसो ॥ 'त्रिधा भाँति अति
'अननि 'रामकी रीति निवाही । हरिगुरु
हरिजन भाँति तिनहिं सेवा 'दृढशाही ॥
पूण इन्दु प्रमुदित उदधि, त्यों दास
देखि बाढै रली । खेमाल रतन राठौड के
सुफल बेलि मोठी फली ॥४६२॥

(श्रीचतुर्भुजदासजी की कथा)

मूल छ०—गायो भक्ति प्रताप सबहिं दासत्व
दृढायो । राधावल्लभ भजन 'अननिता

१ निव्यधाम प्राप्त किया । २ अवस्था । ३ लोटी । ४ तीनों प्रकारसे ।

५ अनन्यता । ६ श्रीगामरत्नजीकी । ७ बादशाहो-ठाठबाठसे ।

वर्ग बढ़ायो ॥ मुरलीधर की छाप कवित
अलिहो निर्दूषण । भक्तन को पद रेणु
सोई धारी शिर भूषण ॥ सत्संग महा
आनन्द मय, प्रेम रहत भोज्यो हियो ।
हरिवंश चरणवल चतुरभुज, गौड देश
तीरथ कियो ॥१२३॥

गौडवाने देश भक्ति लेशहू न देख्यो कहुँ
मानुषको मारि इष्टदेव को चढ़ाये है ।
तहाँ जाय देवनाको मंत्र लै सुनायो कान
लियो उन मानि गाँव सपन सुनाये है ॥
स्वामी चतुर्भुजजीक बेगि सब दाम बनो
नातो होय नाश सब गाँव भागे आये है ।
ऐसे शिष्य किये माला कंठी पाय जिये
पाँव लिये, मन दिये, ओ अनन्त सुख पायो है ॥४६३॥
भोग लै लगावै नाना सन्तन लडावै कथा
भागवत गाँव भाव भक्ति विस्तारिये ।
भाग्यो धन लेके कोऊ धनी पाछे परयो सोऊ
आयके दुबकि बैठ रह्यो न निहारिये ॥
निकसी पुराणवात नयो गात करै दीक्षा
शिक्षा सुनि शिष्य भयो गह्यो यो पुकारिये ।

कही या जनममें न लियो कछु दियो फारो
हाथ लै उवाच्यो प्रभु रीति लागी प्यारिये ॥४६४॥
राजा झूठ मानि कह्यो करो वाको प्राणविन
माधु ये विराजमान लै कलंक दियो है ।
चले ठौर मारिचेको धारि यह मकें कैमे
नेन भर आये नीर बोल्यो धन लियो है ॥
कहै नृप माँचो होके झूठो जनि हजे सन्त
महिमा अनन्त कही स्वामी ऐमो कियो है ।
भूप सुनि आयो उपदेश मनभायो शिष्य
भयो नयो तन पायो भीज गयो हियो है ॥४६५॥
पाक रह्यो खेत मन्त आयकर तोड लेत
जिते रम्बवारे मुख श्वेत शोर कियो है ।
कह्यो स्वामी नाम मनि कही बड़ा काम हुयो
यह तो हमारो सोई आप सुनि लियो है ॥
लेय सो मिष्टान्न आये सम्मुख बखान कियो
लियो अपनाय आज भोज्यो मेरो हियो है ।
ले गये लिवाय नाना भोजन कराय भक्ति
चरचा चलाय चाव हित रस पीयो है ॥४६६॥

(श्रीकृष्णदासजी चालक की कथा)

मूल छ०-शक्र कोप सुठि चरित प्रसिध
पुनि पंचाध्यायो । कृष्ण रुक्मिणी

केलि रुचिर भोजन विधि गाई ॥ गिरि
राजधरताकी छाप गिरा जल धर ज्यों
गाजै । सन्त शिखंडी खंड हृदय आनंद
के काजें ॥ जगजडता जाडा हरण, कृष्ण
दास देहो धरी । चालक चांचरि चहूँ
दिशा, उदधि अन्तलो अनुसरो ॥१२४॥

(श्रीमन्नदासजी की कथा)

मूल छ०—गोपीनाथ अनन्त भोग छप्पन
भुंजाये । पृथु पद्धति अनुसार देव
दम्पति दुलराये । भगवत भक्त समान
ठौर द्वैको बल गायो । कवित शूरसों
मिलत भेद कछु जात न पायो ॥ जन्म
कर्म लीला युगति, रहस भक्ति भेदी
भरम । विमलानन्द प्रबोध कुल, सन्त-
दास सीमा धरम ॥१२५॥

बसन निवाई ग्राम श्याम सों लगाई मति
ऐसी मन आई भोग छप्पन लगाये हैं ।
प्रीति की मचाई यह जगमें दिखाई सेव
जगन्नाथ देव आप रुचि सों जा पाये हैं ॥
राजा को स्वपन दियो नामले प्रकट कियो

सन्तही के गृहमें तो जेंवो यों रिझाये हैं ।
भक्ति के अधीन सब जानत प्रवीण जन
ऐसे हैं रंगीले लाल ठौर ठौर गाये हैं ॥४६७॥

(श्रीमदन मोहन सूरदासजी की कथा)

मूल छ०—गान काव्य गुण राशि हृदय
सहचरि अवतारो । राधा कृष्ण उपास्य
रहस्य सुखके अधिकारो । नव रस मुख
सिंगार विविध भाँतिन करि गायो । वदन
उच्चरत वेर सहस पाँयनि हैं धायो ॥
अंगीकार की अवधि यह, ज्यों आख्या
भ्राता यमल । मोहन मोहन सूरकी,
नाम श्रृंखला जुरि अटल ॥१२६॥

सूरदास नाम नैन कंज अभिराम फूले
भूमि रंग पीके नीके जिये और ज्याये हैं ।
भये सो अधीन यों सँडीले के नवीन रीति
प्रीति गुड देखि दाम वीम गुने लाये हैं ॥
कहा पुचा पावैं आप मदन गोपाल लाल
परे प्रेम ख्याल लादि झकरा पठाये हैं ।
आये निशि भये श्याम कियो आज्ञा भोग लागे
अब ही जगाओ भोग जागे फेरि पाये हैं ॥४६८॥

पद लैं वनायो भक्ति रूप दरसायो दूर
सन्तनकी पानही को रक्षक कहाऊँ मैं ।
काहू सीख लियो साधु लियो चाहै परच्यो सो
आये द्वार मन्दिर के खोलि कही आऊँ मैं ॥
रह्यो जाय बैठ जूनी हाथमें उठाय लानी
कीन्ही पूरी आस मारी निशिदिन गाऊँ मैं ।
भीतर बुलाये श्री गुँमाई वार दोय चार
सेवा मोपी सार कही जनपद गाऊँ मैं ॥४६६॥
पृथ्वीपति सम्पत्ति ले सन्तन खवाय दीन्ही
कीन्ही नहीं शेक यों निशंक रंग पागे हैं ।
आये मो खजानो लेन मानो यह बात अहो
पाथर ले भरे आप आधी निशि भागे हैं ॥
रुक्का लिखि डारयो दाम गटकं ये सन्तन ने
याने हम सटक चले हैं जब जागे हैं ।
पहुँचे हजूर भूप खोलके मंदक देव्ये
पेग्ये अंक कागद में रीझि अनुरागे हैं ॥४००॥
लेनको पठाये कही निपट रिझाये हमें
मनमें न लाये, लिखि, वन तन डारयो है ।
टोडर दिवान कह्यो धनको विरान कियो
लाओरे पकरि मूढ फेरके मँवारयो है ॥
लै गये हुजूर नृप बोल्यो मोसो दूर राखो
ऐसे महा क्रूर सोंपि दुष्ट कह डारयो है ।

दोहा लिखि दीन्हो अकबर देखि रीझि लीन्हो
जाओ वाही ठौर तोपै द्रव्य सब वारयो है ॥४०१॥
आये वृन्दावन मन माथुरो में भीज रह्यो
कह्यो सोई पद सुन्या रूप रस राम है ।
जादिन प्रकट भयो गयो शत योजन पै
जन पै सुनत पद बाढी जग प्यास है ॥
मूरदास द्विज निज महल टहल पाय
बहल पहल हिय युगल प्रकाश है ।
मदन मोहन जो हैं इष्ट इष्ट महाप्रभु
अचरज कहा कृपा दृष्टि अनायाम है ॥४०२॥
(श्रीकाल्यायनीजी की कथा)

मूल छ०—मारग जात अकेल गान रसना
जु उचारै । ताल मृदंगी रीझि वृक्ष अम्बर
तहँ डारें ॥ गोपनारि अनुसार गिरा
गद्गद आवेशी । जग प्रवंच से दूर अजा
परसे नहिं लेशी ॥ भगवान रोति अनु-
राग को सन्त साखि मेली सही । काल्या-
यनि के प्रेमकी, बात जाय कापै
कही ॥१२७॥

१ लिखा गया । २ सौ योजन (८०० मील) जगदीशपुरी ।
३ दामके दाम । ४ भगवान के । ५ सेवा । ६ आनन्दोल्लास ।

(श्रीमुरारी दासजी की कथा)

मूल छ०—विदित विलौंदा गाँव देश 'मरु
धर सब जानैं। महा महोत्सव मध्य सन्त
परिषद परमानैं। पगनि घूँघरू बाँधि
रामको चरित दिखायो। देशी शरंग
गाय 'हंस ता संग पठायो ॥ उपमा जाकी
जगतमें, 'पृथा बिना नाहिन बियो।
कृष्ण विरह कुंतो तज्यो, त्यो मुरारि
तनु त्यागियो ॥१२८॥

श्रीमुरारीदाम रहे राज गुरु भक्तदास
आवत सो स्नान करि कान ध्वनि कीजिये।
जातको चमार करै सेवा सो उचार कही
प्रभु चरणामृत को जो पात्र हो सो लीजिये ॥
गये घर मोँह वाके देखि डरि काँप उठ्यो
लाओ देखो हमें अहो पान करि जीजिये।
कही में तो न्यून तुच्छ बोले हमहुतें स्वच्छ
जानें कोऊ नहीं तुम्हें मेरी मति भीजिये ॥१२९॥
बहै दृग नीर कहै मेरे बड़ी पीर भई
आप मतिधीर नहीं मेरी योग्यताई है।

१ मानवाह । २ रागका नाम है । ३ प्राण=आत्मा । ४ कुन्ती ।

लियो ही निपट हरि, बडे पटु साधुता में
श्याम प्यारी भक्ति, जानि पाँतिले बहाई है ॥
फैल गई गाँव वाको नाँव लौ चवाव करें
भरें नृप कान सुनि बाहु ना सुहाई है।
आये प्रभु देखवे का गयो वह रंग उडि
जन्यो सो प्रसंग सुन्यो वही बात गाई है ॥५०४॥
गये सब त्यागि प्रभु मेवाली सों 'राग जिन्है
नृप दुःख 'पागि गयो सुनि यह बात है।
होत हो समाज सदा भूपके बरस मोँह
दरस न काहु होत मान्यो उत्पान है ॥
चले सो लिवायवेको जहाँ श्रीमुरारीदास
करी साष्टांग दाम नेन अश्रुपात है।
मुखहु न देखें वाको विमुख के लेखें अहो
पेखें लोग कहैं ये तो गुरु शिष्य 'ख्यात हैं ॥५०५॥
ठाडो हाथ जोरि, मति दीनतामें बोरि, कीजे
दंड मोपै कोटि पै निहार मुख भापिये।
घटत न मेरी आप कृपाही की घटत है
बढ़तीमी करी ताते न्यूनताई राखिये ॥
सुनि के प्रसन्न भये कहे लौ प्रसंग नये
वाल्मीकि आदि दै दै नाना विधि नाखिये।

१ प्रेम । २ सनगया । ३ प्रसिद्ध ।

आये निज ग्राम नाम सुनि सत्र साधु आये
भयो सो समाज ऐसो देखि अभिलाषिये ॥५०६॥

आये बहु गुणीजन नृत्य गान आई ध्वनि
ऐपै सन्त सभा मन 'स्वामी गुण देखिये ।

जनिकेर प्रवीण उठे नृपुन नवीन बाँधि
सप्त भ्रर तीन ग्राम लीन भये देखिये ॥

गायो रघुनाथज को वन को गमन ममे
ताही सँग गये प्राण चित्र मम लेखिये ।

भयो दुःख राशि कहाँ पैये श्रीमुरारीदाम
गये राम पाम बेतो हिये 'अचरेखिये ॥५०७॥

(आचार्यवर्य गोस्वामीपाद श्रीतुलसीदासजीकी कथा)

मूल छ०—त्रेता काव्य निबन्ध करी शत-
कोटि रमायण । इक अक्षर उद्धरै ब्रह्म
हत्यादि परायण । अब भक्तन सुखदेन
बहुरि लोला विस्तारो । राम चरण रस
मत्त रहत निशिदिन व्रतधारि ॥ संसार
अपार के पारको, सुगम रूप 'नवका-
दयो । कलि कुटिल जीव निस्तार हित
वाल्मीकि तुलसी भयो ॥१२९॥

१ श्रीमुरारीदासजी । २ ध्यान करो । ३ श्रीरामचरित मानस ।

तियामों सनेह विन पूछे पितु गेह गई
भूलि सुधि देह 'भजे वाही टौर आये हैं ।

'बधू' कहँ लाजभई रिसमें निकम गई
प्रीति राम नहीं तन हाड चाम आये हैं ॥

मुनी जब बात मानो होय गयो प्रात वह
पाछे पछतात तजि काशीपुरी धाये हैं ।

कियो तहाँ वास प्रभु सेवा ले प्रकाश कीन्हो
लीन्हो दृढ भाव नैन रूपके तिमाये हैं ॥५०८॥

शौच जल शेष पाथ भूतहु विशेष कोऊ
बोल्हो मुख मानि हनुमानजु व्रताये हैं ।

रामायण कथा सो रमायन हैं कानन्ह को
आवत प्रथम पाछे जान घृणा आये हैं ॥

जानि पढ़चानि मंगचले उर आनि आये
वनमध्य जानि धाय पाँय लपटाये हैं ।

करै तिरम्कार कही सकोगे न टारि में तो
जाने 'रसमार रूप धरयो जैसो गाये हैं ॥५०९॥

माँग लीजे वर, कही दीजे राम भूप रूप
अतिही अनूप नित नैन अभिलाषिये ।

कियो संकेत वाही दिन सों जू लाग्यो हेत
आई सोई सम वेत कब छवि चाखिये ॥

आये रघुनाथ साथ लक्ष्मण घोडन चढे

१ दोहे हुए । २ पत्नीको । ३ आपका वास्तविक तत्व । ४ दर्शन ।

पट रंगवारे हरे कैसे मन राखिये ।
पाछे हनुमान आयें चोले देखे प्राणप्यारे
नेक न निहारे में तो भले फेर भाषिये ॥५१०॥

हत्या करि विप्र एक तीरथ करन आयां
कहै मुख राम भिक्षा डारिये हत्यारे को ।
सुनि अभिराम नाम धाममें बुलाय लियो
दियो लो प्रसाद कियो शुद्ध गाओ प्यारे को ॥

भई द्विज सभा कहि बोलिके पठाये आप
कैसे गयो पाप संग लैके जेये न्यारे को ।
पोथी तुम वाँचो हिये मार नहीं साँचो
अजु ताते भक्तकाचो दूर करे न अंध्यारेको ॥५११॥

देखी पोथी वाँच नाम महिमा ह कह्यो साँच
रापे हत्या करे कैसे तरै कहि दीजिये ।
आवे ज्यों प्रतीति कहो, कहो याके हाथ जेवैं
शिवजी को बैल तब पंगत में लांजये ॥

थारमें प्रसाद दियो चले जहाँ प्रण कियो
बोले आप नामके प्रताप मति भीजिये ।
जैसो तुम जानो तेसो कैसे कै बखानों अहो
सुनि हो प्रसन्न पायो जै जै ध्वनि रीझिये ॥५१२॥

आये निशि चोर चोरी करन हरन धन

१ प्यारे श्रीरामजी । २ अष्टा फिर । ३ कहा । ४ तब ।
५ अभी । ६ इसीसे । ७ मन्त्रव्य दृढ नहीं है । ८ अन्धकार । ९ नदी ।

देखे घनश्याम हाथ चाप शर लिये हैं ।
जब जब आवें वाण साधि डरपावें ये तो
अति मंडरावे छेपे बली दूर किये हैं ॥
भार आय पृथ्वी अजु साँवरो किशोर कौन
सुनकर मौन रहे आँसू डारि दिये हैं ।
दिये सो लुटाय जानि चौकी राम दर्ई आप
लई उन दीक्षा शिक्षा शुद्ध भये हिये हैं ॥५१३॥
कियो विप्र तन त्याग तियाचली मंगलाग
दूर ही तें देखि कियो चरण प्रणाम हैं ।
बोले हो सुहागवती, मरवां पति होऊँ सती,
अब तो निकस गई जीवै सेवा राम हैं ॥
बोल के कुटुम्ब कह्यो जोपै भक्ति करो सही
गही सब वान, जिवादियो अभिगम हैं ।
भये सब साधु व्याधि मेरी लो विमुखता की
जाकी वाम रहै तो न सूके श्याम धाम हैं ॥५१४॥
दिल्लिपति वादमाह अहरी पठाये लेन
ताको सो सुनायो सूत्र, विप्र ज्यायो जानिये ।
देखवे को चाहै नीके सुखसों निवाहै आय
करी बहु विने गहि चले मन आनिये ॥
पहुँचे नृपति पास आदर प्रकाश कियो
दियो उब आसन लो बोल्यो मृदु वानिये ।

१ मातः काल । २ दत्त ।

दीजे करामात दिखलाय सब मात किये
कही झूट बात एक राम पहिचानिये ॥५१५॥

देखूँ राम कैसे, कहि कंद किये, किये हिये
हुजिये कृपालु हनुमानजू दयाल हैं ।

ताही समै फेलि गये कोटि कोटि कपि नये
नोचें तन खोचें चीर भयो यों विहाल है ॥

फोरे 'कोट' मारे चोट किये डारें लोट पोट
लीजे जाय 'कोन' 'ओट' मान्यो प्रलै काल है ।

खुल गई आँखें दुःख सागर को 'चाखें' अब
'येही' हमें राखें भाषें 'वारो' धन माल है ॥५१६॥

आय पाँय लिये तुम दिये हम प्राण पाँय
आप समझाजें करामात नेक लीजिये ।

लाज दविगयो नृप, तब राखि लयो, कद्यो
भयो घर रामजूको वेगि छाँड दीजिये ॥

मुनि तजि दियो और कियो लौके 'कोट' नयो
अब हूँ न रहै कोऊ वामें तन बीजिये ।

काशी जात वृन्दावन आय मिले नाभाजी सों
सुन्यो सो कवित्त निज रीझ मति भीजिये ॥५१७॥

मदन गोपाल ज को दरसन करि कही
सही राम इष्ट मेरे दृष्टि भाव पागी है ।

१ दीवार । २ किनकी । ३ आश्रय । ४ अनुभव करने लगे ।

५ श्रीगोस्वामीजी ही । ६ निहावर करो । ७ निवासस्थान ।

बैमोही स्वरूप कियो दियो लै दिखाय रूप
मन अनुरूप ब्रवि देखि नीकी लागी है ॥

काहू कही कृष्ण अवतारी जू प्रशंम महा
राम अंश सुनि बोले मति अनुरागी है ।

दशरथ सुत जानों सुन्दर अनूप मानों
ईशता बताई 'रति' बीमगुणी जागी है ॥५१८॥

कवि कुल मुकुट मणि श्रीसम्प्रदायाचार्यवर्य विश्वरन्ध श्रीराम-
चरितमानसादि ग्रंथों के रचयिता गोस्वामीपाद श्रीतुलसीदासजी के
विषय में अचनक का उपलब्ध गद्यपद्य साहित्य एकत्रित करने से वह
श्रीरामचरितमानस से कई गुना अधिक होगा और दिव्य या अपका-
शित (जिसका अवतरण उल्लेख आदि से पता लगता है) भी यदि
उममें मिला दिया जाय तो संभव है यह महाभारतसे भी अधिक हो
जाय । यह बात काशी की नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित
श्रीतुलसी ग्रंथावलीके भूमिका भाग को देखनेसे सुस्पष्ट हो जाती है ।

इतना होते हुए भी आपके जन्मस्थान कुल माता-पिता के नाम
एवं जन्म तिथि आदि में अभी विवाद उपस्थित ही हैं । बाँदा जिलेके
राजापुरके और बाराह क्षेत्र (सोर्ग) के निकटतत्त्वती तरी नामक ग्राम
के निवासी या हिमाचली यह कहते ही हैं कि श्रीगोस्वामीपाद के जन्म
स्थल होने का सौभाग्य हमारे ग्राम को ही प्राप्त है ।

आपका प्रादुर्भाव ब्राह्मण कुल में हुआ है, इसमें मतभेद न होते
हुए भी कान्यकुब्ज और सनाढ्य कुल एवं पाराशर और गर्ग गोत्रका
विवाद चल ही रहा है । भक्तमाल मूल अथवा श्रीविषादासजी की
टीका के वर्णनों से इन विवादों पर कोई असर नहीं पड़ता क्योंकि
उनमें इस विषय को स्पर्श ही नहीं किया गया । केवल कुछ चरित्र या

१ मीनि ।

चमत्कार मात्र ही कहे हैं। परन्तु श्रीगोस्वामीपाद के शिष्य श्रीवेणी माधवदासजी कृत मूल श्रीगोस्वामी चरितके प्रकाशित हो जाने पर भी लोग जो इन विवादोंको खला रहे हैं इसमें इन पंक्तियों के लेखक को तो प्रान्तीयता एवं जातीयता का दुराग्रह ही एक मात्र मुख्य कारण मानीत होता है जो कि भारत राष्ट्र की ध्वनि में भी गोंडा बना रहता है। दूसरा गौण कारण यह भी है कि मूल श्रीगुसाई चरित के प्रकाश में आने से पूर्व से ही पाश्चात्य और उनके पद विन्दों का अनुसरण करनेवाले भारतीय विद्वानों के द्वारा अटकलें लगाई गई हैं, और श्रीगोस्वामीपाद की गुरु परंपरा संप्रदाय दार्शनिक सिद्धान्त एवं उपासना आदि विषयों के साथ साथ कुल गोत्र कर्मभूमि आदि पर भी आधिक्य मन निर्धारित किये गये हैं जिनसे आगे चलकर आग्रहका रूप ले लिया है।

यहां कहना यही है कि श्रीगोस्वामी पाद के चरित्र को बनाने वाला मूल श्रीगुसाई चरित ही इस समय एक मात्र विश्वसनीय साधन हमारे सामने उपस्थित है, उसमें शंकायें करके निवादों में पड़े रहना व्यर्थ और अनर्थ कारी है, अतः हम मूल श्रीगुसाई चरितको यहाँ अविकल उद्धृत कर रहे हैं।

श्रीजानकी वल्लभो विजयते । श्रीमते हनुमते नमः ॥
श्रीमतेरामानन्दाय नमः । गोस्वामी श्रीनृलसीदामाय नमः ॥
श्रीमद्गोस्वामि तुलसी चरण चर्चक बाबा श्रीवेणीमाधवदासजी कृत

मूल श्रीगोसाँई चरित ।

सो०—मन्तन कहउ व्रथाय, मूल चरित पुनि भाषिये ।
अति मंक्षेप सुहाय, कहें सुनिय नित पाठ हित ॥१॥
चरित गुसाँई उदार, वरणि सकें नहि महम फणि ।
हैं मति मन्द गँवार, किंस वरणौ तुलसी मुखस ॥२॥

अपि आदि कवीश्वर ज्ञान भिधि । अवतरित भये अनु आप त्वधी ॥
शत कोटि बखानेउ राम कथा । तिहु लोकमें जाँटेउ शंख यथा ॥
दश स्पन्दन वेद दशांग मय । श्रुति त्रैविधि तानिउँ गानि जय ॥
श्री राम मणव श्रुति नत्व पर । निज अंशन पुत नर देह धरं ॥
इमि कीन्ह पचन्ध मुनीश यथा । हरि कीन्ह चरित्र पवित्र नथा ॥
हनुमन्त प्रणव प्रिय प्राण रमै । परतन्व रमै तिसु लीश लमै ॥
याहि भाँति परात्पर भाव लिये । शुचि राम परत्न बखान किये ॥
मुनिराज लखे अद्भुत रचना । कपिराज सों कीन्ह इहै जचना ॥
यह गुप्त रहस्य है गोप्य धरें । बिनती हमरी न प्रकाश करें ॥
तब अंजन नन्दन शाप दियो । हैंसके मुनि धारण श्रीश कियो ॥
दो०—सहन शीलता निरखि मुनि, पवन कुमार मुजान ।

बहु विधि मुनिहिं प्रशंसि पुनि, दिये अमय वरदान ॥१॥

कलिकाल में लेहहु जन्म जवै । कलितैं तव त्राण सदा करवै ॥
तेहि शापके कारण आदि कवी । तम पुज निवारण हंत रवी ॥
उदये हुलमी उदघाटी ते । सर सन्त सगेक से विकसे ॥
सखाग सुरेश के विप्रवदे । शुचि गोल पराशार देक कहे ॥
शुभधान पतेजि रहे पुरखे । तेहिहैं कुल नाम परधा भुखवे ॥
पमुना नठ दूबन को पुरवा । वस तहैं सब जातिन की कुरवा ॥
सुकुनी सतपात्र सुधी मुखिया । रजिया पुर राज गुरु मुखिया ॥
निनके घर द्वादश मास परे । जब कर्क के जीव हिमांशु चरे ॥
कृत समय अष्टम भानुनय । अभिजित शनि सुन्दर मौक समय ॥
दो०—पन्द्रह मै चञ्चन विपै, कालिन्दीके तीर ।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धरयो शरीर ॥२॥

मन जन्म व्रथाय लगे बजने । मजने छजने रजने गजने ॥
इक दासि कही तेहि अवसर में । कहि देव बुलावन हैं घर में ॥

शिशु जन्मत रंचहु रायो नही । सो बोल्यो राम गिरथो ज्यों मही ॥
 अब देखिए दन्त बनीसि जमी । नहि बोटव पाति में नेक कमी ॥
 जस बालक पांच को देखियजू । तम जन्मतुआ निज लेखियजू ॥
 हम बूढ़ भई भरि जन्म नही । शिशु ऐसे देख्यो तात कही ॥
 महारिया कहति सुनी शंख धुनी । तबही ते समय शिशु नार सुनी ॥
 जो तियये रही कपती बकनी । कोउ राक्षस जन्मेउ कहि सकती ॥
 महाराज नलिय अब बेगि धरें । समझाय प्रभुतिको ताप हरें ॥
 दो०—उठे तुरत भृगुवंश मणि, सुनत चरिके बैन ।

ठाढ़ प्रसूती द्वार भे, पूरित जलसों नैन ॥३॥

छन्द :—

पूरित मलिल दृग निगमि शिशु परितापयुत मानस भये ।
 मनमहँ पुगकृत पाप को परिणाम गुणि बाहर गये ।
 तब जुरं मरहित मित्र बांधव गणक आदि प्रसिद्ध जे ।
 लागे विचारन का करिय नवजात शिशु कहँ कहहि ते ॥
 दो०—पंचन यह निर्णय कियो, तीन दिवस पश्चान ।

जियत रहै शिशु तब करिय, लौकिक वैदिक बात ॥
 दशमी पर लागी ग्यारम ज्यों । यदि आठक रात गई तब त्यों ॥
 हुलसी दासी मो लागि कहँ । सखि प्राण फेरु उदान चहँ ॥
 अबही शिशु लंगवनहु हरिपुर । बसते जहँ तेरेव सासु समुर ॥
 तहँ जोहव पालव मोर लला । इगिजू करि हँ सखि तोर भला ॥
 नहि तो ध्रुव जानहु मोरे भुये । शिशु फँकि पवारहिगे भकुष ॥
 सखि जान न पावै कोउ बनिपाँ । चलि जावहु मग रतिपाँ रतिपाँ ॥
 तेहि गोद दियो शिशु दारस दे । निजभूषण दे पुनि दीन्हि पटै ॥
 चुप चाप चली सो तबै शिशु लै । हुलसी उर सुवन बियोग फरै ॥
 मोहराय रमेश भदेश विधी । बिनती करे राखवि मोर तिधी ॥

दो०—ब्रह्म मुहूर्त इकादशी, हुलसी तज्यो शरीर ।

होत प्रात अन्तेष्टि हित, लैगे यमुना तीर ॥५॥

घरि पांचक दिवस चढ़े मुनियाँ । निज सासके पाँच गढ़े चुनियाँ ॥
 सब हाल हवाल बताय चली । सुनि सास कही बहु कौन्हे भली ॥
 घर माहि कलार को दूध पिया । बिन माय को है शिशु लेहु जिया ॥
 तहँ पालन सो लागि मेह भरी । जेहि तैं शिशु रीझै मोह करी ॥
 यदि भौति मा पैसठ मास गये । शिशु बालन होलन योग्य भये ॥
 चुनियाँ सुरलोक सिधार गई । दस्यो पन्नग सो ज्यों कोरार गई ॥
 तब राज गुरु को कहाव गयो । मुनिके तिनहु दुख मानि कयो ॥
 हम का करबै अम बालक सौ । जेहि पाली सोऊ पुनि पावै छै ॥
 जन्मेउ सुत मेरे अभागो महीं । सो जिये वा परे मोहि मोच नहीं ॥
 दो०—बेणी परब जन्मकर, कर्म विपाक प्रचण्ड ।

बिना भुगाये तरत तहँ, यह सिद्धान्त अखंड ॥६॥

छन्द—

सिद्धान्त अटल अखंड भरि ब्रह्मांड व्यापित सत यथा ।
 जहँ मुनि वरन की यह दशा तहँ पामरन की का कथा ॥

निज क्षति विचार न रखौ कोऊ दया दृग पाछे दियो ।
 होलन सो बालक द्वार द्वार विलोकि तेहि विदरत हियो २

सो०—बालक दशा निहारि, गौराँ माई जग जननि ।

द्विज तिय रूप मँवारि, निताहि पवा जावहि अशन ॥३॥

है बन्मर कीतेउ थाहि रमे । पुर लोगन कौतुक देखि कमे ॥

तेहि जोहन कहँ हिय आय जके । परिचय द्विज वाम न पाय सके ॥

घर नारि हती तहँ सो परखी । जब माय लबाय लला टक्की ॥

परि पाँच करी हठ जान न दे । जगदम्ब अदृश्य भई तबते ॥

शिव जानि प्रियावत हेतु दियो । जनलौकिक मुलम उपाय कियो ॥
प्रिय शिष्य अनन्तानन्द हत । नरहर्यानन्द मुनाम छने ॥
बर्म गम सु शैल कुटी करि के । तन्लीन दशा अति प्रिय हरि के ॥
निन कहैं मय दर्शन आप दियो । उपदेशहु टैं कृत कृत्य कियो ॥
प्रिय मानम राम चरित्र कहे । पठये तहैं जहैं द्विज पुत्र रहे ॥

दो०—लौ बालक गवनहु अवध, विधिवत मंत्र सुनाय ।

मम भाषित रघुपति कथा, ताहि प्रबोध कराय ॥७॥

जब अन्तर्दृग मूलहिं गे, तब सो कहि हि बनाय ।

लरिकाई को पैरिवां, आगे हांत सहाय ॥८॥

सो०—शम्भु वचन गम्भीर, मुनि मुनिअति पुलकित भये ।

मुमिरि राम रघुवीर, तुरत चले हरिपुर तक ॥९॥

पुरहिके बालक गोद लिये । द्विजपुत्र अनाथ सनाथ किये ॥
कसो राम बाला जनि सोच करे । पालिहि पोसिहि सब भाँति हेरे ॥
सो जानेउ दीन दयाल रही । यम हेतु सु मन्त्रको रूप धरी ॥
पुर लोगन केर रजाय लिये । सह बालक मन्त्र पयान किये ॥
पन्तहु ये इकमठ बाघ मुटी । तिथि पंचमि ओ भृगुवार उटी ॥
सरथु तट विषम यज्ञ किये । द्विज बालक कहैं उपवीत दिये ॥
सिखये बिन आपुहि मो वरुआ । द्विज मंत्र सर्वात्र मु उच्चरवा ॥
विस्मय युत पंडित लोभ भये । कहे देखत बालक विज्ञ ठये ॥

दो०—नरहरि भवामी मंत्र किये, संस्कार विधि पाँच ।

राममंत्र दिय जहि छुटे, चौरामीको नाच ॥१०॥

दस मास रहे मुनिराज तहाँ । दनुमान मुटीला विराज जहाँ ॥
निन शिष्यहि विद्या पठाय रहे । अरु पाणिनि मंत्र धुकाय रहे ॥
लघु बालक धारण शक्ति जमी । अनुरक्ति मधुक्ति दिखान लगी ॥

हर्ष गुणग्राम विचारि दिये । पद चापत आशिष भूरि दिये ॥
जवते जन्मेउ तबते अब लौ । निज दीन दशा कहियो गुरु सौ ॥
ठगिमे रहिगे मुनि बाल कथा । कल्याण उरमें उपजाई व्यथा ॥
मुनि धीर भरे दृग नीर रहे । गुरु शिष्य दशा कवि कौन कहै ॥
ममकाय बुलाय लगाय दिये । कहि भावि भलाइ प्रशान्त किये ॥
हरि प्रिय श्रुत लाग हिमन्त जव । मिय मंग लै कीन पयान तब ॥

दो०—कहत कथा इतिहाम बहु, आये शूकर खेत ।

संगम सरथु घाघरा, सन्त जनन मुख देत ॥१०॥

तहँवा पुनि पाँचहि वर्ष बसे । तपमें जपमें सब भाँति रसे ॥
जब शिष्य तृचोच भयो पढिके । मति युक्ति प्रवीण भई गढिके ॥
मुधि आई मदेश मिखावन की । परतत्व प्रबन्ध सुनावन की ॥
सब मानस राम चरित्र कहे । मुनिके मुनि बालक तत्व गहे ॥
पुनि पुनि मुनि ताहि सुनावत से । अति गूढ कथा समझावन से ॥
याहि भाँति प्रबोध मुनीस भले । बसु पर्व लगे सह शिष्य चले ॥
विश्राम अनेक किये मगमें । जल अन्न को खेल मच्यो जगमें ॥
कतहूँ सुरुनिन उपदेश करें । कतहूँ दुखिया दुख दाप हरे ॥

दो०—विचरत विहरत मुदित मन, आये काशी धाम ।

परम गुरु मुस्थान पर, जाय कीन्ह विश्राम ॥११॥

मुठि घाट मनोहर पंच गंगा । गंगिया कर कौतुक केलि मँगा ॥
पुनि मिद्ध सु पृष्ट मतिष्ठित सो । बहुकाल यतीन्द्र रहे जु नमो ॥
तहँवा रहे शेष सनातन जू । वपु हृद्ध बरंच पुत्रासन जू ॥
निगमागम पारम ज्योति फव । मुनि मिद्ध तपोधन जान सब ॥
ने रीति भये बरुपै जयही । गुरु स्वामी सौ सुन्दर बात कही ॥
निज शिष्यहि देहय मोहि भुनी । तिसु वृत्ति दुनी नहि ध्यान भुनी ॥
हो ताहि पठाउब चेष्ट चहूँ । अरु आगम दर्शन शास्त्र छहूँ ॥

इतिहास पुराण रु काव्य कला । अनुभूत अलक्ष्य प्रतीक फला ॥
विद्वान महान बनाउव जू सुनि आप महा मुख पाउव जू ॥
दो०—आचारज विनती सुनत, पुलकित भे मुनिधीर ।

बटु बुलाय सौंपत भये, पावन गंगा तीर ॥१२॥

कछुदिन रहिगे यति प्रवर, पढ़न लग्यो बटु भाम ।

चित्रकूट कहँ तब गये, लखि मव भौनि सुपास ॥१३॥

बटु पन्द्रह वर्ष तहाँ रहिके । पढ़ि शास्त्र सब पढ़िके गढ़िके ॥
करिके गुरु सेव सहृदय तन से । गतदेह क्रिया करि सो मनमे ॥
चले जन्म बली को विपाद भरे । पहुँचे रजियापुर के बसरे ॥
निज भौन बिलोकेउ दृढ़ दृढ़ । कोव जानन योग न लोग रहा ॥
इक भाट बखानेउ ग्राम कथा । द्विज वंश को नाश भयो जु यथा ॥
कलौ जादिन नाई से राजगुरु । तब त्यागार्क बालेउ बात कुरु ॥
तह बैठ रह्यो तप तेजधनी । सिन शाप दियो गहि नागफनी ॥
षट मासके भीतर राजगुरु । दश वर्ष के भीतर वंश मरु ॥
मुनके तुलसी मन शोक छये । करि श्राद्ध यथा विधि पिड दये ॥

दो०—पुर लोगन अनुरोधते, लियो भवन बनवाय ।

रहन लगे अरु कहत भे, रघुपति कथा सुहाय ॥१४॥

यमुना पर तीर मों तारिपतो भगवान मु श्रोतकों विष इतो ॥
कतिकी दुनिया कर न्हान लगे । सकुदुम्ब सो आपव संग सबे ॥
करि मज्जन दान गये तहँवाँ । दुलसी सुत बाँच कथा अईवाँ ॥
छबि व्यास बिलोकि प्रमत्त भये । सब लोगन नृत्ति स्वयम्भ गये ॥
पुनि माधव माममें आव रहे । कर जोरि के सुन्दर बात कहे ॥
महाराति जइ नमिचाय रही । सपने जगदम्ब चैताय कही ॥
शुभ राखर नाम बताय रही । सब ठाँव ठिकान बताय रही ॥
हौं हेरत हेरत आयो इत । मोहि राखिय हो अब जाउँ किन ॥

दुहिता मम व्याहिय देव ! कहै । कहिके अस सो पदकंज गहे ॥

दो०—मुनत विनय सोचन लगे, पुनि बोले सकुचाय ।

व्याह वरेखी ना चह्यो, अनत पधारिय पाय ॥१५॥

द्विज मानै नही धरना धरिके । नहि खाव पियै सगना करिके ॥
दुसरे दिन जब स्वीकार कियो । तब विप्र इठी जल अन्न लियो ॥
पर जाय सो धायके लगन धर्यो । उपरोहित भैजि प्रसन्न कर्यो ॥
इतने पुरलोग न योग दिये । मव साज समान बरात किये ॥
पन्द्रह सौ आर तिरामि विषै । शुभ जेठ सुदी गुरु तेरम वै ॥
अध राति सो लगे फिसी भैरगी । दुलहा दुलही की पड़ी पवरी ॥
ललना मिलि कोटवर माहि रमी । वर नाथक पंडित सो विहंसी ॥
तिसरे दिन मांडव चार भयो । शुचि भक्ति सो दान दहेज दयो ॥

दो०—विदाकरा दुलही चले, पंडितराज महान ॥

आये निजपुर अरु किये, लौकिक चार विधान ॥१६॥

पुर नारि जुगि गुरु भौन गई । दुलही मुख देखि निहाल भई ॥
दुलसी सुत देखेउ नारि छटा । मुख इन्दु सो घुघट कोर हटा ॥
मन प्राण प्रिया पर बारि दिये । अस कौशिक मेनका देखि भये ॥
दिन रात मदा संग राते रहे । मुख पासे रहे ललचाते रहे ॥
जब वर्ष पुरस्सर चाय चये । पल उषो रस केलि में बान गये ॥
नाई जान दै आपन जाय केही । पल एक प्रिया विन चैन नहीं ॥
दुखिया जननी मुख देखन को । पितु ग्राम सुआसिन पेलन को ॥
सह बन्धु गई चुपके सौ सती । वरखासन ग्राम रहे जुपती ॥
जब साँझ सयै निज गेह गये । घर सुन निहारि सनोच भये ॥
तब दासि जनापड सो कहि कै । निज बन्धु के संग गई मैके ॥
मुनि ते उठि के समुसल चले । अति प्रेम प्रगाढ़ विशेष पले ॥
कवनिउ विधिते सरि पार किये । पहुँचे सब सोवत द्वार दिये ॥

छन्द०—दैं द्वार सावहिं लोम नीद तुराह मुहरावन लग ।
 स्वर चीन्हि द्वार कपाट खोले भूमकि भामिनि सगवगे ॥
 बोली विहँमि वाणी विमल उद्देश मानी कामिनी ।
 कम चलदिये प्रेमांध ज्यों नहिं सुधि अंधेरी यामिनी ॥
 दो०—हाड मांसकी देह मम, तापर जितनी प्रीति ।
 तिसु आधी जो रामप्रति, अवशि मिटति भव भीति ॥
 सो०—लाग वचन जिमिवाण, तुरत फिरे विग्ने नहिं ।
 सोचेउ निज कल्याण, तब चित चढेउ जो गुरु कहेउ ॥
 दो०—नर हरि कंचन कामिनी, रहिये इनते दर ।
 जो चाहिय कल्याण निज, रामदरस भरपूर ॥
 सो०—लखि रुख तिय अकुलाय, बोली वचन सकोप तब ।
 त्याग न उचित कहाय, विनु तिय मुख खरिया खचे ॥
 उठि दहरि मनावन सार गयो । पिछु आये रघो जब भोग भयो ॥
 नहिं फिरे फेरे फिर आयो फिरी । भगिनी निज मूर्च्छित देखि परी ॥
 छुर्छानु इटी उठि बोली सती । पियको उपदेशन आई हली ॥
 पिप मोर पयान कियो वनको । हौं प्राण पठाई तजौं तनुको ॥
 कहिके अस मो निज देह तजौ । सुरलोक गई पतिधर्म धुजौ ॥
 शन पन्द्रह युक्त नवामि सर । सु अषाढ़ बंदी दशमीहु धरे ॥
 बुध तामर धन्य मो धन्य धरी । उपदेशि पिया तनु त्याग करी ॥
 भयो सोर कई कोउ मिद्ध सुनी । परमास्थ बिन्दक तत्र गुनी ॥
 द्विजगंड में शारद देह धरी । रति रंग रमारस राम धरी ॥
 दो०—कांउ कही तियके मुखन, बोले श्रीभगवान ।
 माह निवारेउ भक्तकर, साहिव शील निधान ॥१६॥

हुलसी सुत नीरय राज गये । अरु मज्जि धिक्खेण कृतार्थ भये ॥
 गृह वेष विमर्जन कीन्ह तहाँ । मुनि वेष संवारि चले फफर्या ॥
 गढ़ होलक धेनुमती तमसा । पहुँचे रघुवीर पुगी सहसा ॥
 तहँवा चौमासक लौं पसिके । प्रिय मन्त अनन्त विभू रासके ॥
 चले वेगि पुगी कहें घाम महा । विथाम पचीसक बीज रहा ॥
 तिनमें दुइ ठाध प्रधान गुनो । वरदान रु शाप की बात सुनो ॥
 धरिचार हुर्बोली में पास कियो । हरि राम कुमारहि शाप दियो ॥
 सो ममिद्ध सुप्रेत भयो तेहिते । हरि दर्शन आप लहे जेहिते ॥
 दो०—जगन्नाथ सुखधाम में, कछुक दिवस करिवास ।
 लिखे वाल्मीकी स्वकर, जब तब लहि अवकास ॥२०॥
 रामेश्वर कहें कीन्ह पयाना । तहँने द्वारावति जम जाना ॥
 बहुरि तहँति चलि हर्षाई । बदरी धामहि पहुँचे जाई ॥
 नारायण श्रुति न्यास सुझये । दरस दिये पानम गुण गाये ॥
 तहँने अति दुर्गम पथ लयऊ । मान सरोवर कहें चलिगयऊ ॥
 जियको लोभ नजै जो कोई । सो वहं जाय कृतारथ होई ॥
 नहँ करि दिव्य मन्त मन्तसंगा । जाते होवै भवरस मंरा ॥
 दिव्य सहाय पाय मुतिराई । जात रुपाचल देखेउ जाई ॥
 नीलाचल कर दर्शन कीन्दे । परम सुजान शुशुषिहहि चीन्दे ॥
 लोटि सरोवर पै पुनि आये । गिरि कैलाश मदच्छिन लाये ॥
 दो०—हमि करि तीर्थार्थन सकल, निचसे भववन आय ।
 चौदह वरम रु मामदस, सतरह दिवस विनाय ॥२१॥
 ठिकिके तहँ चातुर मास कियो । नित राम कथा कहि हषि हियो ॥
 वनवासि सु मन्त मुनै नित सो । सति होहि अनन्दिन ते चितमो ॥
 वन में एक पिप्पल रुख इनो तिहि ऊपर प्रेत नियाय छनो ॥
 जल शौच गिरावहि तामु तरे । सोइ पानिय प्रेत पियाम हरै ॥

जब जानेउ सोकि अहैं मुनि ये । जिन बालपने मोहि शाप दिये ॥
तब एक दिना सो प्रनच्छ कह्यो । कहिये सो करों जम भाव अयो ॥
हुलसी सुत बोलेउ मोरे मना । रघुनन्दन दर्शन की चहना ॥
सुनि प्रेत कह्यो जु कथा सुनिवै । नित आवत अंजनपूत अर्थ ॥
सचते प्रथमहि मो आवहि जू । सब लोग न पाछे सो आवहि जू ॥
मो०-येष अमंगलधारि, कुटीको वपु जानिये ।

अवसर नीक विचारि, चरण गहिय हठ ठानिये ॥ ७ ॥

अनन्द :—

हठ ठानि निन पहिचानि मुनिवर विनय बहुविधि भाषेऊ ।
पद गहि न अडिहु पवन मुत कह कहहु जो अभिलाषेऊ ।
रघुवीर दर्शन मुहि कराइय मुनि कहेउ गदगदचन ।
तुम जाय सेवहु चित्रकूटहि तहं दरम पैहहु दगन ॥
दो०-श्रीहनुमन्त प्रमङ्ग यह, विमल चरित विस्तार ।

लहेउ गुसाईं दरम रम, विदित सकल संसार ॥
चित्त चेति चले चित्रकूट चितय । मनमाहि मनोरथ को उपचय ॥
जब सोचहि आपन मन्द कृती । पग पाछे पदै न रहै जु धृती ॥
सुधि आवत राम स्वभान जबै । सब पावत मारम आवतुर है ॥
यहि भाँति गुसाईं तहाँ पहुँचे । किय आसन राम मुखाट विचे ॥
इकवार प्रदक्षिण देन गये । तहँ देखत रूप अनूप भये ॥
धुम राजकुमार सु अश्व चढे । मृगया वन खेलन जात कहे ॥
छवि सो लखिके मन मोदेउ पै । अस को तनुधारि मो जानि सकै ॥
हनुमन्त बनायउ भेद सबै । पछताइ रहे लखचाइ तबै ॥
पुनि धीरज दीन्हेउ वायु तनय । पुनि होइहि दर्शन प्राप्त समय ॥
दो०-सुखद अमावस मौनिया, बुध सोरह मै सात ।

जा बैठे तिसु घाट पै, विरही होतहि प्राप्त ॥ २३ ॥

मो०-प्रकटे राम सुजान, कहेउ देहु बाबा मलय ।

शुक वपु धरि हनुमान, पढेउ चितावनि दोहरा ॥ ८ ॥

दो०-चित्रकूट के घाट पर, भई मन्तन की भीर ।

तुलसिदास चन्दन धिमै, तिलक देत रघुवीर ॥ २४ ॥

छ०-रघुवीर अवि निरखन लगे विसरी सबै सुधि देह की ।

को धिमै चन्दन दगनते बहि चली सरित मनेह की ।

प्रभु कहंउ तउ पुनि नाहि चेतैउ स्वकर चन्दन लै लिख ।

दे तिलक रुचिर ललाट पै निज रूप अन्तर्हित किय । ५ ॥

दो०-विरह व्यथा तलफत पडे, मगन ध्यान इकतार ।

रैनि जगायउ वायुमुत, दीन्ही दशा मुधार ॥ २५ ॥

शुक पाठ पढावत नारि नरा । कर पर लेकर शुक को पिजरा ॥

हुलसी सुत भक्ति महा महिमा । तत्कालहि छाया रही माँहि माँ ॥

दिन एक प्रदक्षिण कामद दे । पहुँचे मौमित्रि पहाडो पै ॥

तहँ श्वेतक सर्प पड्यो मग ये । सिन गान मनोहर या जग में ॥

निहि ओर बिलोकि गुसाईं कहे । चन्द्रोपम सुन्दर नाग अहँ ॥

हरि सृष्टि विचित्र कहे न वनै । निगमागम शारद शेष भनै ॥

अपि दृष्टि पढी तिसु पाप गयो । तब पन्नग ज्ञानि ललाम भयो ॥

मोहि लुह के तारिय नाय अबै । कूतेहि गयो सो भुजंग बिलै ॥

योगश्री मुनि तहँ प्रकट भये निज पूर्व कथा कहि वास लये ।

दो०-यह प्रभाव मुनिनाथ कर, सुनि गुनि सन्त मुजान ।

आवन लागे दरश हित, भीर भई ऋषि थान ॥ २६ ॥

बह भीर निहार गुफा में हुके । बहिरन्तर हानि विचारि लुके ॥

मुनि आवहि योगी तपी यती । विन दर्शन जाहि निगस अती ।

दरियानंद स्वामिहु आय रहे निज आसन टेक जमाय रहे ॥

लघु शंका हेतु गुमाई कहे । करजारि सो स्वापि भये जु ठहे ॥
कहे नाथ है होत अनोति वही । क्षमिये कहियो मैं बान कही ॥
लघु शंका लगे बहिगन हैं जू । सुनि साधु गिरा छुपि जान है जू ॥
दुख पावन मज्जन है तिहि ते । विनती हा करो सुनिये इहि ते ॥
हो देत मवान बंधाय आवै । तिहि ऊपर आसन नाथ कवै ॥
करि दर्शन हाव निहाल सर्व । सुठि सन्त समागम होय जब ॥

दा०—विनती दरियानन्द को, मानि सजाय मचान ।

बैठत दिन भर लहत सुख, माधक मिद्ध सुजान ॥२७॥
नित नव सत्संग उमाह बंद । शुचि सन्त हृदय रसरंग बंद ॥
नित नित्य विहारहु देखन है । मृगयाकर कौतुक देखन है ॥
वृन्दावन ते हरिवंश हिनू । मियदास नवल निजशिष्य भूनु ॥
पठये तिन आय जुहार किये । गुरु दत्त सुबोधि सप्रेम दिये ॥
यमुनाएक गथासुधाभिधि जू । अरु गधिकानंत्र महा विधि जू ॥
अरु पालि दये हिल हाय लिखी । सारह मै नव जन्माष्टमि की ॥
तिहि पाहि लिखी विनती लहृगं । साइ बान मुखार से कहुगं ॥
रजनी महागम की आधनजू । चिन मार सदा ललचावन जू ॥
रमिके रममें तनु त्याग चहा । माहि आशिष देइय कु ज लहैं ॥
सो०—सुनि विनती मुनिनाथ, एवमस्तु इति भाषेऊ ।

तनु तजि भये सनाथ, नित्य निकुंज प्रवेश करि ॥२८॥

दा०—सडीला ते आयके, वसु स्वामी नंदलाल ।

पढी राम रक्षा विवृति, जो भक्तन को डाल ॥२९॥
षट मास रहे सत्संग लहे । चलती बिरियाँ कछु चिन्ह चहे ॥
दइ शालग्राम कि मूर्ति भली । निज कर लिखि कवच और कमली ॥
इमि यादव माधव बेणि उभय । विसुख कछुअन अनन्त सदय ॥
तैसै सुमुखारि उधार यती । विरही भगवन्त सुभाग्य वती ॥

विमवानंद देव दिनेश मिले । अरु दक्षिण देश के स्वार्पि पिने ॥
सब रंग रंगे सत्संग पगे । अहमादि कुनीद मुषुभि जगे ॥
कहे अन्य गुमाई जु जन्म लये । लहि दर्शन हम कृत कृत्य भये ॥
दृग नीर दर नहि बोल सरै । मय जाहि सप्रेम प्रमोद भरे ॥
बहु संवत साधु समागम सों । कटिगे नहि जानि परे किमि धौं ॥
दा०—मोरह मै मोरह लगे, कामद गिरि दिग वाम ।

शुभ एकान्त प्रदेश पहुँ, आवे सूर सुदास ॥२६॥

पठये गाकुलनाथ जी, कृष्ण रंगमें बोरि ।

दृग फेरत चित चातुरी, लीन्ह गुमाई आरि ॥३०॥

कवि सूर दिखायउ सागर को । शुचि प्रेम कथा नट नागर को ॥
पद द्वे पुनि गाय मुनाय रहे । पद पंकज पै शिर नाथ कहे ॥
अस आशिष देइय श्याम हरै । यह कीर्ति मोरि दिगन्त चरै ॥
मुनि कांपल बैन सुजादि दिये । पद पोधि उठाय लगाय दिये ॥
कहे श्याम सदा गम चाखत है । कवि मेवक की हरि राखत है ॥
तनिका नहि संशय है यहमा । श्रुति शेष बखानत है यहमा ॥
दिन मात रहे सत्संग पगे । पदकंज गहे जब जान लगे ॥
गहि चाहै गुमाई प्रबोध किये । पुनि गोकुल नाथको पत्र दिये ॥
लै पालि गये जब सूर कवी । उगमें पधराय के श्याम छवी ॥
दा०—तव आयो मेवाडते, विप्रनाम सुखपाल ।

मीराबाई पत्रिका, लायो प्रेम प्रवाल ॥३१॥

पडि पाती उत्तर लिखे, गीत कवित्त बनाय ।

मय तजि हरि भजियो भलो, कहि दिय विप्र पठाय ॥३२॥

तदके डक बालक आन लग्यो । सुठि सुन्दर कंठ सों गान लग्यो ॥
तिसु गान पे रीकि गुमाई गये । लिखि दीन्ह तब पद चार नये ॥
कार कठ मुनायउ दूजे दिन । अरि नाथ सो नूतन गीत बिना ॥

मिश्र पाहि बनावन गीत लगे । उर भीतर सुन्दर भाव जगे ॥
जब सोरह मै बसु नीम चढयो । पद जोरि सबै शुचि ग्रन्थ गढयो ॥
निसु राम गिनावलि नाथ घरयो । अरु कृष्ण गितावलि गँचि मरयो ॥
दोउ ग्रन्थ सुधारि लिखे कचि सो । पुनि सुना दीन्ह इतुमन्तहि सो ॥
तब माकनि हँके प्रमत्त कछो । करि प्यान अवधपुर जाय रहो ॥
इमि इष्टको आयसु पाय चले विग्ने सुठि तीरथाज भले ॥
दो०—तेहि अवसर उत्तम परब, लाग्यो मकर नहान ।

योगी तपी यती मती, जुरे सयान अयान ॥३३॥

तिहि पर्वते पाछे गये दिन छै । बट छाँह तरे सोलखे मुनि है ॥
तप पुँज दोउ मुख कान्ति तपै । छवि छाँइ छषाकर छन्द छपै ।
करि दंड प्रणाम सु दग्दिते । कर जोरिके ठाढ़ भये तिन ते ॥
मुनि सैन साँ एक हैकारि लिये । अपने दिग आसन चारु दिये ॥
तिहि दारिके भूमिमें बैठ गये । परिचय निजदै परिचायलये ॥
सोइ रामकथा तहँ होत रही । गुरु शुकरखेतमें जाँन कही ॥
विष्मय युत बुझेउ शुभ मता । तब जागवलिक मुनि दीन बता ॥
हर विरचि भवानिहि दीन्ह सोई । पुनि दीन्ह अशुनिहहि तत्व गोई ॥
हो जाय अशुनिहते सोई लही । भरद्वाज मुनी प्रति आय कही ॥
दो०—यहि विधि मुनि परितोष लहि, पदगहि पाय प्रसाद ।

सुनेउ युगल मुनिवर्थकर, तहाँ विमल संवाद ॥३४॥

तिहि ठाँव गये जब दूजे दिना । थल सून निहार मुनीश बिना ॥
बट छाँह न सो नहि पर्यकुटी । मन विस्मय बाढेउ मर्य पुटी ॥
उर राखि उभय मुनि शील चले । हरि अरित काशी की ओर दले ॥
कहु दर गये सुधि आइ जवै । मन मोचत का करिये जु अवै ॥
जो भयो सो भयो अब यही जु सधै । हर दर्शन करि चलिहाँ अवधै ॥
मन ठीक किये मग आगे बढे । चलिहो पुनि सुस्सरि तीर कहे ॥
तब तीरहि तीर चले चितदै । यह सोँक जहाँ ही तहा बिकि गै ॥

दिग वारि पुरा बिच सीता मही । तहँ आसन दारत वृत्ति चही ॥
नहि भुव न नीद विक्षिप्त दशा । उर पुरब जन्म परमं वमा ॥
दो०—सीता बट तर तीन दिन, यमि मुकविन बनाय ।

बन्दि छुडावत विन्ध्य नृप, पहुँचे काशी जाय ॥३५॥

भक्त शिरोमणि घाट पे, विप्रगेह करि वाम ।

राम विमल यश कहि चले, उपज्यो हृदय हुलास ॥३६॥

दिनमें जितनी रचना रचते । निशि माहि सुमचित ना चचते ॥

यह लोप क्रिया प्रति दिवस सरै । करिये सो कहा नहि वृत्ति परै ॥

अठवै दिन शंभु दियो सपना । निज बोली मै काव्य करो अपना ॥

उचटी निर्दिष्टा उठ बैठे मुनी । उर सूँज रही सपने की धुनी ॥

प्रगटे शिव संग भवानि लिये । मुनि आठहुँ अंग प्रणाम किये ॥

शिव भाषेउ भाषामे काव्य रचो । सुर वाणि के पीछे न तान परो ॥

मधकर हित होय सोई करिये । अरु पूर्व मथा मन आचरिये ॥

तुम जाय अवधपुर वाम करा । तहँ ही निज काव्य प्रकाश करा ॥

पम प्रणय प्रसाद सो काव्य कला । होहि सप सामञ्जस्य सकला ॥

सो०—कहि अम शंभु भवानि, अन्तर्धान सो मे तुरत ।

आपन भाग्य बखानि, चले गुमाई अवधपुर ॥३७॥

दो०—तेहि दिन माहि ममान में, उदय लख्यो सम्मान ।

तेहि दिन पहुँचे अवधमें, श्रीगुमाई भगवान ॥३८॥

सग्य करि गज्जन गव दिन में । बिचरै पलिनारण बोधिन में ॥

इक सन्त मिले कहने सो लग । थल रम्य लखै महवीर लगे ॥

ले संग सो अँव दिवायो भले । बट की बिटपावलि पुण्य धन ॥

तिनमें बट एक विशाल पही । निसु मूल में वेदिका सोई रही ॥

तापर बैठ सिद्धासन से । इक सिद्ध प्रतिद्ध हुतासन से ॥

थल देखि लुभायो गुमाई मना । धमिये यहि ठाँव कुटीर बना ॥
जब मिट्ट की मन्त्रिधि में गुदरे, तजि आसन सो जय जय उचरे ॥
सो कह्यो गुरु मोर निदेश दियो । निहि कारण हों यहँ वास लियो ॥
गुरु मोर बतायो मर्म सबै, सो देखत हों प्रत्यक्ष आवैं ॥
कुं०—मम गुरु कहैउ कि करहि किन सिद्ध पृथुल वास ।

कछु दिन बीते कहहिंगे, हरिचश तुलसीदास ।
हर्नियश तुलसीदास कहेंगे यहि थल आई ।
आदि कवी अवतार वायुनन्दन बल पाई ॥
राजराज बट रोपिदियो मर्याद समुच्चय ।
धमि यहँ ठाहर ठाटु मानि अतिहित शामन मय ॥१॥

मो०—जब ऐहँ यहि ठाम, हूलसी मुत निमु हेनु दिन ।
मौपि कुटी आराम, तनु तजिऐहहु मम निकट ॥११॥

उपदेश गुरु मोहि नीक लग्यो । बहु जन्म पुगवन पुण्य जग्यो ॥
बसिके रसिके तपिके चोरी । हों जोवत बाट गयो रंगी ॥
अब राजिय गाजिय नाथ यहाँ । हों जावत वसे गुरु मोर जहाँ ॥
कहिके अम वेदिका तैं उतरयो । गिर नाथ मिथारेड दूरि परयो ॥
तहँ आसन पारिके ध्यान धरयो । निमु योग हुतासन गात जरयो ॥
यह कौतुक देखि गुमाई कहै । धनुधारि तोरी बलिहारि आई ॥
निवसे तहँ सौख्य सुषाम लहे । दह संघम जो मम योग कहै ॥
पप पात करैं सो एक समय गुरुवीर भरोम न काहुक भय ॥
पुन कन्मर बीते न वृत्ति दग्यो । इकनाम को संवत आई लग्यो ।
दो०—राम जन्म तिथिवार सब, जस त्रेता में भाम ।

तम इकतीसा में जुरे, योग लग्न ग्रह राम ॥३॥
नवमी मंगलवार शुभ, प्रात समय हनुमान ।

प्रगटि प्रथम अभिषेक किय, करन जगत कल्याण ।
हर गौरी गणपति गिरा, नारद शेष सुजान ।

मंगलमय आशिष दयी, रवि कवि गुरु गीर्वाण ॥३६॥
सो०—यहि विधिमा आरम्भ, रामचरितमानम विमल ।
सुनत मिटत मद दम्भ, कामादिक संशय सकल ॥१२॥

दुः कन्मर मात सो माम परे । दिन छविम भाँझ मो पूर करे ॥
तैतीम को संवत औ मैगमर । शुभ औस सु राम विवाहहि पर ॥
मुठि सप्त जहाज तयार भयो । भव सागर पार उतारन को ॥
पाखण्ड प्रपंच बहावन को । शुचि सान्त्विक धर्म चलावन को ॥
कलि पाप कलाप नशावन को । हरि भक्ति छटा दग्गावन को ।
मन वाद विवाद मिटावन को । अह प्रेम को पाठ पढ़ावन को ॥
सन्तन वित्त चाव चढावन को । सज्जन घर मोद बढावन को ।
हरि रस हर बस समझावन को । श्रुति सम्मत मार्ग सुझावन को ॥
पुन सप्त सोपान समाप्त भयो । सहग्रन्थ बन्यो सुमबन्ध नयो ॥

दो०—महिमुत वामर मध्य दिन, शुभ मिति तत्सत कूल ।

सुर समूह जय जय किये, हविर्त वपें फूल ॥३१॥
जिहि छिन यह आरम्भ भो, तिहि छिन पूरेउ पूर ।
निर्बल मानव लेखनी, खींचि लियो अति दूर ॥३२॥

पाँच पात गणपति लिखे, दिव्य लेखनी चाल ।
मन शिव नागरु द्यू दिशाय, लांक गयउ तत्काल ॥
मनके मानम में बसेउ, मानस राम चरित्र ।

वन्दन ऋषि कवि पद कमल, मन क्रम वचन पवित्र ॥
वन्दौ तुलसी के चरण, जिन कीन्हो जग काज ।

कलि समुद्र बूझन लग्यो, प्रकरयो सम जहाज ॥४५॥

परम मधुर पावन करणि, चार पदारथ दानि ।

तुलसी कृत रघुपति कथा, के सुरमरि रमखानि ॥४६॥

मो०—प्रगटे श्रीहनुमान, अथ सौ इतिलो सब सुने ।

दिये मुभग वरदान, कीरति त्रिभुवन वश करी ॥४५॥

मिथिला के सन्त मुजान हते । मिथिलाधिप भाव पां रहते ॥

शुचि नाम कपाहण स्वामि जुते । तेहि अवसर आंध पै अये हुते ॥

प्रथमहि यह पानम तिनहि सुन्यो । तिनही अधिकारी गुमाई गुन्या ॥

स्वापी नन्दलाल के शिष्य पुनी । तिसु नाम दयाल मु दाम गुनी ॥

लिखिके पोथी निज दाम भये । भुक्के दिग जाय सुनाय दये ॥

यमुना तट पै त्रय वनसरनी । रसखानहि जाय सुनावत भो ॥

तवने बहु संख्यक पान लिखै । कछु लोगन श्री निज हाथ आपै ॥

सुकना मणि दाम जु आयो तो । हरि शयन को गीत सुनायो हतो ॥

तिसु भावहि पै सुनि रीझि गये । पलपै पल भाँजत सिद्धि दये ॥

दो०—तब हरि अनुशामन लहे, पहुँचे काशी जाय ।

विश्वनाथ जगदम्ब प्रति, पोथी दयी सुनाय ॥४७॥

दो०—पाथी पाठ समाप्त केके धरे शिवलिंग द्विग रातमें ।

मुख्य पंडित सिद्ध तापम बुरे जब पट खुलेउ प्रात में ॥

देखे तृपित दृष्टिने सब जने कीन्ही सही शंकरम् ।

दिव्याक्षर मे लिखे पढे धुनि सुने मत्स्य शिव सुन्दरम् ॥

शिवकी नगरी रमरंग भरी । यह लीला पाटि सई मगरी ॥

हैं नर नारि जुहार क्रिये । जय जय धुनि बोलि बलैयां लिपे ॥

पै पंडित लोगन शीघ्र भये । सब मान महानम जीव गये ॥

पंडि है यह पोथी प्रगाढ़ मयी । तब पूछि हैं कौन हमे मर्द ॥

दल बाँधि ते निन्दन वागत मे । मुरखानि सगहन वागत मे ॥

कोऊ ग्रन्थ चुगवन हेतु रचे । फरकन्द अनेक पपंच पचे ॥

निगुआ सिलुआ युग चोर भये । रखवार विलोकि निहाल भये ॥

तिन पूछे गुमाई ते कौन धुही । युग श्यामल गोर धरे धनुही ॥

सुनि वैन परे जल नैन कहै । तुम धन्य हत हरि दर्श लहे ॥

दो०—तजि कुकरम तम्कर तरे, दड़ सब वस्तु लुटाय ।

जाय धरी टोडर मदन, पोथी यतन कराय ॥४८॥

पुनि दूसर पान लिखै रचि सौ । तिन्हिन्हें लिपि पै लिपि होन लग्यो ॥

दिन दून पचार बढ़यो लिखिके । सब पंडित हारे हिये कबि के ॥

तब मिश्र वंदेशर तात्रिक ही । दुख दाह सुधीगण रोय कही ॥

तिन मारण के प्रयोग कियो । हठि बैरव प्रेरि पत्राय दियो ॥

हनुमन्त से रक्षक देखि डरे । बलते सु वंदेशर प्राण डरे ॥

तब हारि चले दलको सजिके । मधुसूदन सरस्वती मठपै ॥

कहे कीन्ह प्रमाण महेश सही । किमु कोटिका है मो न बात कही ॥

श्रुति शास्त्र पुगणेनिहास ह्ये । केहिके सम कक्ष निले कहिये ॥

यतिराज कहे मगवाउब बजू । तब पोथि विलोकि बताउब जू ॥

दो०—ते मँगाय पोथी पढी, उपज्यो परमानन्द ।

फेरि दयी लिखि श्लोक यह, जयति सच्चिदानन्द ॥४९॥

श्लोक—आनन्द कानने ह्यस्मिन् जंगमस्तुलसी तरुः ।

कविता मंजरी भाति राम अमर भूषिता ॥

जब पंडित आये कहै तिनमे । किन वृक्षिय बात सदा शिवसे ॥

निगमागम शास्त्र पुगण सबै । क्रमते धरे मानम मोच फवै ॥

जब होन विहान खुलेउ पटको । सब दृष्ट परे तिहि देखन को ॥

लखि वेद के ऊपर मानस ही । सब पंडित लाज गरे तितही ॥

चरणों में पड़े चरणोदक ले । अपराध कराय क्षमा घर भै ॥

नदिया को सु पडित दत्त रवी । सब शास्त्र विशाद आशु कवी ॥
 मुनि ते हठि वाद विवाद कियो । अरु हारि विषाद बढायो हियो ॥
 जब न्हान गुसाई चले मठ ते । तब मारण हेतु भयो लठ ले ॥
 हनुमन्त मु रक्षक देखि भज्यो । अपनी करनी पर आप लख्यो ॥
 पुनि जाय गुसाई रिक्ताय लियो । वर हेतु सुखी हठ भूरि कियो ॥
 छं०-मागेउ सो वर तजियेपुगी मुनि विवशमे वरके दिये ।
 कार्गानाथ कहि निवसतहो कविन बनाय दृढ निश्चय किये ।
 सो लिख्य घर हर मन्दिहि प्रस्थान दक्षिण दिशि किये ।
 शिव दे दाम ममभक्त्य करे चुनित मन धीर त्र दिये ॥
 दं०-गति प्रस्थान मुदित हो, मया दशश नि धीर ।
 नन्द भये पर धनि दृष्टे, कोप सहित रभीर ॥
 से०-पद गुसाई मनाउ, पग रति नर रिश्वरी नय हरि ।
 पद नई जाय लपट, ला लो लडा, र न लर ॥
 मुनि देखि आव कस विनतो । मुनि मानय सेवक जा मनता ॥
 मिथ बट अगी पर मोन नत । वनके मठ बट नरार भयो ॥
 बसिसे गलमा गल देख्य ज । पदकन गदा हथ लेख्य ज ॥
 मुख पानि मये नेहि घाप वसे । रघुवर गुणावनि माहि रसे ॥
 कालि अयेर गति दृगण लिये । सुनि रहै वरु भावि त वल दये ॥
 साक्ष्य जन्म वरु पायि निजे । नहु दाहदा ताहि हो चतु अये ॥
 कहिक अथ मानु सिवायो जये । मुनि ल्यान धरउ हरि हेतु नये ॥
 हनुमन्त कहैर मानन । मनि हे यप वनजेवा वर महा दर्शन ॥
 लिखिक वनगोपाल देहु मही । तब दण्ड दियाउव तान थोही ॥
 दं०-नोनादित राम विनयावली, मुनि तब निमित्त भोन्ह ।
 मुनि ताहि माखी पुत प्रभु, मुनिहि अभय कर दीन्ह ॥

मिथिलापुर हेतु पयान किये । मुकती जनको मुख शान्ति दिये ॥
 भृगु आश्रय में दिन चार रहे । कर हीन बुझा कर पाय रहे ॥
 दिन एक वसे मुनि ईस पुरा । परसी को मुद्राग दिया बहुग ॥
 गड घाट में रात्र गैपीर धरे । दुइ वासस्तां तहैवा ठहरे ॥
 ब्रजोश सुदर्शन कैके चले । पुनि कान्त ब्रजपुर भाँ निकले ॥
 सेवक सुन पैगल ग्वाल हनो । दुहि दूध दियो सुद माधु स्तो ॥
 वर दीन्ह तजे चोरहाइ सहै । निर्वशन होवहुगे कबहुँ ॥
 तब वेनापतार में आय रहे । तहै दाम धनो निज कष्ट कहे ॥
 छं०-कहे कष्ट आपन कान्हि जाइहि प्राण मन पानक वयो ।
 मुखा रसायो भाग कांठ कहि स्वात हरि मोहै किया ॥
 रघुनाथि ज्ञान्यो दगा करिकप मो भेलैउ मुने ॥
 नरु नि शरन गगुन मदितापि नथ निश्चय मुन ॥
 दं०-मुनि र धीरज हो, कसी रसेउ मधु नर
 मां न रन कान्ह, अरु लख डहि तापि कहेउ ॥
 दं०-... अउ जगन लोपी पयन नमोनि ।
 ... भव्य पुर्णि ताहि देवा दान ज नमनि ॥५२॥
 निज गड पवित्र कगवन का । लैगा मुनि हो नर नथक मो ॥
 तहै भक सु गविन्द मिथ मिथे । निमु दष्टि लेलाह वन विधव ॥
 मुनि गाँव के नाँव में केर कर्यो । रघुनाथ पुग निमु नाथ धर्या ॥
 ताने चलिके विचरे विचरे । कृपि हरिहर स्वन में जा पथरे ॥
 पुनि गंगाय पवित्र चले अपद । निवगाये द्विहपुरी छरही ॥
 अरि बालिका रूप विदेह लकी । वहराय के खीर खवाय चली ॥
 जब जानेउ वर्य कहा कहिये । मनही मन मोच कथा रहिये ॥
 द्विज लोग नक्षत्राके घेरि रहे । अरु आपन घोर त्रिपति कहे ॥

दो०—दया लागि कर्तव्य गुनि, सुमिरे वायु कुमार ।
दण्डित करि बहुरायऊ, सुखयुत द्विज परिवार ॥
मिथिलाने काशी गये, चालिस मंवत लाग ।
दोहाबलि मंग्रह किये, सहित वमल अनुभाग ॥५४॥

लिम्बे वाल्मीकी बहुरि, इकतालिस के माहिं ।
मँगमर मुदि मतमी रखी, पाठ करन हिन ताहि ॥५५॥
माधव मित मिय जन्मतिथि, व्यालिस मंवतघोच ।
मत्मेया वरणे लगे प्रेम वारिते मीचि ॥५६॥

सो०—उत्तरु शनीचरि मीन, मरी परी काशी पुरी ।
लोग होय अनिदीन, जाय पुकारे ऋषि निकट ॥५६॥

छ०—लागिय नाथ गुहार अपर बल कछु न वमाना ॥
राखें हरि के दाम कि मिरजनहार विधाता ॥

दो०—करुणामय मुनि सुनि व्यथा, तन्त्र कथित बनाय ।
करुणानिधि सौ विनयकरि, दीन्ही मरी भगाय ॥५७॥

कवि केशव दास बड़े रमिया । धनश्याम शुकुल नभके रमिया ॥
कवि जानिके दर्शन हेतु गये । रहि राहर मूचन भेज दये ।
मुनिके जु गुमाई कहे इतनो । कवि प्राकृत केशव आव न दो ॥
फिरिगे भट केशव सो मुनिके । निज तुच्छता आपन ही गुनिके ॥
जब सेवक डेरहु गे कहिके । हौं येतिहों काल्हि विनय गहिके ॥
धनश्याम रहे घासीराम रहे । बलपद रहे विश्राम लहे ॥
रवि राम मुचन्द्रिका रातिहि में । जुरे केशव जू अमि घाटिहि में ॥
मत्संग जम्हो रसरंग मच्यो । दोउ प्राकृत दिव्यविभूति स्वच्यो ॥
मिट केशव को संकोच गयो । उर भीतर मीति की सीति रयो ॥

दो०—आदित्यशाही राज के, भाजन दान बनेत ।
दत्तात्रय सो विप्रवर, आये ऋषय निकेत ॥५८॥
करि पूजा आशिष लही, माँगा पुण्य प्रसाद ।
लिखित वाल्मीकी स्वर, दयो सहित अद्वाद ॥५९॥
अमरनाथ योगी निया, बैरागी हरि लीन ।
ताने कोपि तिनहि रहित, कंठी माला कीन्ह ॥६०॥
मच्यो कुलाहल साधु सब, आये मुनिवर पास ।
फेरि मिली सो आसनहि, ऋषय कृपा अनयासा ॥६१॥
आयो सिद्ध अधोग्रिया, अलख जगावन द्वार ।
छिनमहँ सिद्धाई हरी उपदेशेउ श्रुतिमार ॥६२॥

निमिमार को विष सुधर्मता । बन खंडी मु साय विगोह गता ॥
सब तीरथ लुप्तन चाहै थपै तिमु हेन सदाशिव मंत्र जपै ॥
इक प्रेन मोता दिग डाढ़ भयो । बहु द्रव्य गडो सो दिवाय दयो ॥
सो कछो धन लै शुभकाज सरो । इहि योनिने मोर उचार करो ॥
मन हपित विष कछो मोहिका । चहुं वाय घुपय मृतीरथपौ ॥
सब काशी गुमाई के तीर चली । निज दर्शन होय तुम्हार भजो ॥
सुखमानिके समोड प्रेन कियो । नभ माँझ असीपर छक छियो ॥
जन शोर मच्यो बहु लोग जुरे सब कौतुक देखहि अंग फुरे ॥
निज आश्रमते कहि आये मुनी । नभते भई जय जय कार धुनी ॥

दो०—दिव्यरूप धरि यान चढ़ि, प्रेन गयो हरिधाम ।
नृलसी दरम प्रतापते, सोभ भयो विधि वाम ॥६३॥
बनखंडी महिपै गिरयो, पग छुड़ कियो प्रणाम ।
मुनि मन सब व्योरा कयो, वसेउ रसेउ तेहि ठाम ॥६४॥

तासु विनय मुनि मुनि चले, तीरथ थापन काज ।

पहुँचे अत्रधर्हि पांचदिन, तहाँ टिके ऋषि राज ॥६५॥

है राम गीताबलि गायक को । जे गावहि यश गनुनायक को ॥

मन बोध निवारिहि औंथ छटा भव कंचन मय वन भूमि अटा ॥

दिखलाके चले स्वनाहि टिके । पुनि शूकर खेत में जाय धिके ॥

मिया नाम सुगाँव में बाध लिये । तहाँ सीता कुपको पाध पिये ॥

पहुँचे जयन्त पुर मोद धरे, अरु अनुमाना तट पे उतरे ॥

कहुँ दीनन को प्रतिपाल करें । कहुँ साधुनके मन मंद भरे ॥

कहुँ लखन लालका चरित बँधे । कहुँ प्रेम मगन हो आप लहे ॥

कहुँ रामायण कलमान सौ । उन्माद कुलाहल मूरि मचे ॥

कहुँ आनन जनको नाप धरे । कहुँ अमानन उर जान धरे ॥

दो० निर्धन साह उपोदधि, आशिषदे करि कल ॥

उर विपुल धन । लखत, की का कहना प्रयोग ॥६६॥

तहाँ न नलिख साह में, आन मनन निताज

राम, यण नि मन विप जज नयन लटमान ॥६७॥

पुनि पत्न्य तथः निवे, मोद पत्नी जाय

तन पत्नी जाय । मन मकि दिव जत नय ॥६८॥

पान जाय विद्वर में रेनि धरे, मरि मज्जन पक में जाय धरे ॥

गाहि बह निवारिह जन्हु सुता । तन ताये जरा जु रही न बुता ॥

तहाँ ने रनि जय मदान परे । गौरा शंकर गुह माथ धरे ॥

कही या घर में लहे जन्म पन्था । मनपखा स्वयं श्रीकृष्ण मया ॥

कहुँ काल मये भाइ जन्म वच्यो । वंशीधर नाकर नाम पच्यो ॥

काव सो मुनिवर उपदेश कियो । पद राम मुने तनुन्यागि दियो ॥

तिहि व्ये म विपान पै जान लख्यो । हनुवाइ मुमिख प्रवीण भख्यो ॥

सत्संगी देखि निहाल भये । उपदेश सनातन पुर लये ॥

दो०-संडीले ते मुनि चले, मग ठाकर क्षिति पाल ।

नमन कियो नहिं मद मतो, तुरत भयो कंगाल ॥६९॥

सो०-विप्र किये अपमान, ताते ते निर्धन भये ।

कंथन किय सम्मान, सुखी भये धन वंश लहि ॥७०॥

दो०-जुरे जुलाहे भेट धरि, लहे विपुल धन धान्य ।

पहुँचे नेपिप वन मुनि, मरि तत्र सम्मान्य ॥७१॥

शाधि मकल तीरथ थप, किय त्रय माम निवाम ।

मिल पि । नी क मुत्तल, लम्बन लग उनयान ॥७२॥

लैगवाइ के सिद्ध मरीण धरे । मुनि आति योग ते जाय परे ॥

करि नहिं निगल च । पिनापिप । मंग पेवन खडि चरि कपिप ।

पुनि नव च । मुखरी शिवर । पु राम मुनेन तुनेन उतरे ॥

लप लेखन रंदा विमोहि रहे । सब पालन मता नहिं राह गहे ॥

विह राम मन्थो पग दी मगरे । करि ते विनी पद धरि रहे ॥

तन नाइ पर निपु धन वस । हनुनहि धरि तन विजये ॥

वर्षन नन धरयो वर रच । मन्थर गुह म म राम रचय ॥

मुन्दा । म न ननु मये । मुह राम मन्थर प दान लये ॥

वर गुह ची शुधि मन्थ पुर । मुनि दशन का जर नाहि जरे ॥

दो०-शनी नाना निग मन्, ताकन ननु सम्मन ।

उन्माद पवराय मुनि, पुने मोहित विधान ॥७३॥

विप्र मन्त नाना मोहन, हरि दशन न देना ।

मय उगाई मुडित मन, मोहन मदल निकल ॥७४॥

राम उपामक जानि प्रभु, तुरत धरे धुरान ।

दशन । दये सनाथ किये, भक्त बल्लल भगवान ॥७५॥

वरमाने में लीला सो व्यापि गई । मुनि आसन पै बडि भीर भई ॥
कछु कृष्ण वषामक द्वेष भरे । धनु बाण धरे पर मोह सरे ॥
निनकी ममभाये मुनत्व महा । जनको मख राम न शत्रयो कहा ॥
शुभ दक्षिण देश से जात हुनो । हरि मूर्ति अवधार्हि थापन को ॥
विश्राम भयो यमुना तट पै । लखि मूर्ति मोहे विष उदै ॥
सो चला हरि विग्रह वहाँ थपै । विनती किय जाय गुमाइहि पै ॥
न उठाये उठै जब सो प्रतिमा । तब थापित कीन्ह तहै जिजिमाँ ॥
निहि नाम कौसल्या नन्दन जू । मुनिराज धरे जगवन्दन जू ॥
नैददाम कनौजिया प्रेम महे । जे शेष सनानन पास बडे ॥
शिक्षा गुरु बंधु भये नेहिते । अति प्रेम सो आय मिले हिते ॥

दो०—हित सुत गोपीनाथ प्रति मद्रिमा अवध बस्थानि ।
जेहि नहि ठाँव टिकान कहूँ, तिनहि वसावन आनि ॥

फेरि अमनियाँ दिये पुनि, मखरा ताहि बनाय ।

हलवाई वणिकन्ह मदन, बालकृष्ण दिग्वराय ॥७६॥

सो०—इमि लीला दरमाय, भक्तन उर आनन्द भरि ।

चित्रकूट महँ जाय, कियो कछुक दिन वाम तहँ ॥१८॥

सत काम मुविष गुमाइ लगे । दीक्षा दिन आयो सुवर्तन जगे ॥
लखि काम विकार न शिष्य किये । टिकि गो तैंह सो हठ ठानि हिये ॥
जब रगतमें रानि कदम्बलता । आइ तामु विलोकन सुन्दरता ॥
तिन दीपक वाति बढाय लई । लखिके मुनि सुन्दर सीख दई ॥
सो विष लजाय के पाँच परया । करके मुनि छोड़ विकार हम्यो ॥
पुनि विष हरिद्र महा जलपा । मन्दाकिनि ह्वन हेतु चला ॥
तिमु प्राण बचावन हेतु अषय । सुठि दारिद्र्य मोच शिला प्रकटय ॥
पुनि साह खवास पठायउ जू । मुनि राजहि दिखित बुलायउ जू ॥

दो०—चले यमुन तट नृप तिनक, माधु कियो सर नाम ।

राधावल्लभ भक्ति दइ, रीके श्यामा श्याम ॥७७॥

उडह्ये केशव दाम, प्रेत हते धरे मुनिहिं ।

उधरयो विनहिं प्रयास, चढि विमान स्वर्गहिं गया ॥७८॥

वरवारिके ठाकुर की दुहिता । तिसु सुन्दरता पै जग मुहिता ॥
इक नारिहि ते तिसु व्याह भयो । जब जानेउ दाहण दाह दख्यो ॥
शर की जननी जनमावतही । मो प्रमिद्ध कियो नेहि पुन कही ॥
अनुकूलहि माज समान किये । जे जानत हे तिन पूजि दिये ॥
यहि कारण धोका भयो बहुनै । अब रावन भीजन हाथ मवै ॥
तिन घेरे दया लयी मन्न दिये । तिसु हेतु नवान्हिक पाठ किये ॥
विश्राम लगाये सो जानिय जू । तिसु शब्द प्रथम यह आनिय जू ॥
हिय सल अह कीन्हहु श्याम लगा । आँ राम शैल पुनि हासियमा ॥
कह यामन सुत अहै तहँ पुण्य । इति पाठ नवान्हिक ठाम अयं ॥

दो०—नारी ते नर हो गयां, करतहि पाठ विसम ।

पुनक्तिन जय तुलसी कहै, जय जय मातागम ॥७९॥

तहँते पंचये दिन मुनि, पहुँचे दिल्ली जाय ।

खबर पाय तुगतहि नृपति, लिय दरबार बुलाय ॥८०॥

दिल्ली पति विनती करी, दिखराबहु करामात ।

मुकरि गये कन्दी किये, कीन्है कपि उत्पात ॥८१॥

बेगम के पट फारेऊ, नगन भई सब वाम ।

हाहाकार मच्यो महन्व, पटक्यो नृपति भ्राम ॥८२॥

मुनिहिं मुक्त तक्षण कियो, क्षमापराध कराय ।

विदा किन्ह मम्मान युत, पीनस पै पधराय ॥८३॥

बलि दिल्ली ते आये महा बनमें । निशि वास कियो जु अहीरन में ॥
 इक खाल भगीरथ पै दुर्गिगं । निहि मिद सुमन्त बनावत मे ॥
 दसयें दिन अवधहि आय रहे । भरि पाख तहाँ सुस्ताय रहे ॥
 हरिदास मुपक्त सुगीत रयो । तेहि महँ कछु शब्द अशुद्ध भयो ॥
 सुधगायो मुनी पै न बाध भयो । तिसु कीर्तन में अवगोध भयो ॥
 सपने मुनिसे रघुवीर कह्यो । नहि शुद्ध अशुद्ध मुभाव गयो ॥
 तब आय मुनी तिसु भाव भरो । जम गावत हो तम गाथा करो ॥
 मुनि बाल चरित्र अनन्तित है । मुनि तुष्ट कियो सुपटम्बर दै ॥

दो०-देव मुरारी भेंट मिलि, सहित मलूका दास ।

पहुँचे काशी महँ ऋषय, कियो अखण्ड निधाम ॥८३॥

शुचि पाधमें गंग नहात हते । सारि भीतर मंत्र महा जपते ॥
 तनु वृद्ध सो कापित रोम अडे । गणिका रहि देखत तीर खडे ॥
 कटि के मुनि सीचेउ वस्त्र धरे । दुइ बुन्द सोइ गणिका पै परे ॥
 वेश्या मनमें निर्वेद जग्यो । जग दृश्य निरय दिखलान लग्यो ॥
 सब पाप प्रपंच से दूर भगी । उपदेश लै हरि गुण भान लगी ॥
 हरिदत्त सु विप्र दरिद्र महा । तिसु गंगके पार में बाम रहा ॥
 मुनि के दिग आय विपत्ति कही । जम दीन दशा घरकेर रही ॥
 ऋषि अस्तुलि गंग बनाय करी । सुरसरि दै भूमि विपत्ति हरी ॥

दो०-निन्दक मुनि अरु भक्ति पथ, भुलई साहु कलार ।

निधन भयेउ टिकटी धरे, लैगे फुंकन हार ॥८४॥

तासु तिया रोवत चली, मुनि दिग नायउ शीश ।

सदा मुहागिनि रहहु नुम, मुनिवर दीन्हि अर्शाश ॥८५॥

विलखि कही सो निज दशा, शव मुनि लीन्ह मगाय ।

चरणामृत मुख देइके, तुरनहि दियो जिवाय ॥८६॥

निहि वासरते मुनि नेम लिये । अब बाहर बैठव त्याग दिये ॥
 रहे तीन कुमार बडे सुकृती । मुनि चरणन में तिनकी भगनी ॥
 ऋषि केश रह्यो मणिकणिकापै । विश्वनाथ के मन्दिर शान्तिपदै ॥
 अनपूर्णा में दाता दीन रहै । रहनी गहनी सम साध गहै ॥
 मुनि दर्शन को नित आवतजू । चरणोदक लै घर जावतजू ॥
 पाँहचानि सुग्रीनि पुनी तिनकी । शुचि टेक विवेक समीचिनकी ॥
 तिनके हिलही बहिराये मुनी । दैके दर्शन भितगाय पुनी ॥
 सब दर्शक वृन्द चबाइ करें । मुनि पै पक्षपातको दाप धरें ॥
 दिन एक परीक्षा लीन्ह मुनी । बहिराये नहीं सोइ भाव गुनी ॥
 तनु तीनिउँ ताकिन त्याग किये । चरणोदक जीवनदान दिये ॥

दो०-सोरह मै उनहत्तरो, माधव मित तिथि थीर ।

पूरण आयू पायके, टोडर तज्यो शरीर ॥८७॥

भीत विरहमें तीन दिन, दुखित भये मुनिधीर ।

ममकि ममकि गुण भीत क, भरे विलाचन नीर ॥८८॥

माम मास बीते परे, तेरम सुदी कुजवार ।

युग मुत टोडर बीच मुनि, बाँट दिये धर वार ॥८९॥

नख-शिख कर्ता आशुकवि, भीष्म सिंह कनगोय ।

आयो मुनि दर्शन किये, त्यागैउ तनु हरिजोय ॥९०॥

गंग कहेउ हाथी कवन, माला जपेउ सुजान ।

कठमलिया वंचक भगत, कहि सो गयो रिसान ॥९१॥

क्षमा किये नहि शाप दिय, रँग शान्ति रस रंग ।

मारगमें हाथी कियो, भूपटि गंग तनु भंग ॥९२॥

कवि रहीम बरव रचे, पठये मुनिवर पाम ।

लखि तेहि सुन्दर वृन्द में, रचना कियउ प्रकाश ॥९३॥

मिश्रिला में रचना किये, नहछु मंगल दोय ।
 पुनि वांचे मंत्रित किये, मुख पावे मय लोय ॥६४॥
 बाहु पीर व्याकुल भये, बाहुक रचे मुधीर ।
 पुनि विराग सन्दीपनी, रामाज्ञा शकुनीर ॥६५॥
 पूर्व रचित लघु ग्रंथ सब, दुहराये मुनिधीर ।
 लिखवाये सब आनते, भो अति क्षीण शरीर ॥६६॥
 जहाँगीर आया तहाँ, सत्तर संवत बीत ।
 धन धरती देवों चहै, गहै न गुण विपरीत ॥६७॥
 विश्वल की चरचाचली, जो पटुवाग विलास ।
 बुद्धिपाय नहिं हरिभजे, मुनि किय खेद प्रकाश ॥६८॥
 अवध पुरीको चूहरा, अवध वासि प्रिय जानि ।
 हृदय लगायो प्रेमवश, राम रूप निहि मानि ॥६९॥
 मिद्ध ध्वन्द गिरिनारक, नभते उत्तरे आय ।
 करि दर्शन पुलकित भये, प्रश्नकिये सत भाय ॥१००॥

सो०—नमहिंन व्यापै काम, अतिकराल कारण कवन ।

कहिय तान मुख धाम, योग प्रभाव कि भक्ति बल ॥

दो०—योग न भक्ति न ज्ञान बल, केवल नाम आधार ।

मुनि उत्तर सुनि मुदित मन, सिद्ध गये गिरनार ॥१०१॥

बैठ रहे मुनि घाट पर, जुरे लोग बहुताय ।

आयो माट सुचन्द्रमणि, विनय करी परिपाय ॥१०२॥

स०—पन दोऊक भोग विषय अस्मान अब जो रह्यो सो न खसाइयजू ।

अबलों सब इन्द्रिय लोग हैंस्यो अब तो जनि नाय हैसाइयजू ।

मदमोह महा खल काम अनी मम मानमते निकमाइयजू
 रघुनन्दन के पदके मदके तुलसी मोहि काश भयाइयजू ॥१०॥

दो०—विनय सुनत पलविन भये, कृति कृपिण तन मन ।

कनक मुखेन इत नदा, बाह गम गुणगन ॥१०३॥

हृषीकेश उर आयऊ दिगन्ध निगु नाम ।

दर कट नलन गया, राम राम पुनि का ॥१०४॥

इष्ट तान मुनि भजन ने सुनत निशो जलपय ।

पद पद पेजत दिगु अपि कयो कृपिण ॥१०५॥

तुलसी जीक मुखना, धोयेत निजमे राय ।

ताक प्रयाग पेवरा, मार ल का चोम ॥१०६॥

मनमोर व्याधो तन, योतन ॥१०७॥

ज्ञाने यनी निगु मुखतुर भये साक ॥१०८॥

कनक आनक गृह गे, कृपिय मना मनन ।

कहे जो नाम प्रनाप सो, बाँचहुँ वेद पुनण ॥१०९॥

क्यों निग्यो तो है मरी, होत न पै विश्वासा ।

मन मान जान कृपिय, मोड कनक्य प्रकाश ॥११०॥

कहे जा शिवको नादिया, अहे तामुकर ग्राम ।

तब तो निश्चय अपजै, सबके मन विनयाम ॥१११॥

मुनि प्रसाद पमेइ भयो, चहुँ दिशि जय-जयकार ।

निन्दक मय मार्गी क्षमा, गगपरि बारम्बार ॥११२॥

राम नाम दिनभर रटें, लोभ विवश मुनिधान ।

माक मनय निमु विप्रका, द्रव्य दन हनुमान ॥११३॥

राम दशहिन कमलभव, हठेउ कहउ मुनिगय ।
 तस्ते कदि त्रिशूल पे, दरम लहु किल जाय ॥११३॥
 गार्गिशूल अरु विटप चटि, हिम्मत हारेउ पात ।
 लखउ पक्षी वीर इक, अश्व चढे मग जात ॥११४॥
 पृछेउ मर्म सो कहि कथा, सो चटि निपटे तुरन्त ।
 कदेउ उर विद्याम धरि, दरम दीन्ह भगवन्त ॥११५॥
 अन्न माय हनुमन्त दियो, तत्त ज्ञान को बंध ।
 राम नाम ही बीज है मृष्टि वृक्षाय मोध ॥११६॥
 पर प्रमन की गुम घडी, आगी निकट निचार ।
 कहेउ प्रचारि सलीम तब, आपन दशा निवार ॥११७॥
 रामचन्द्र कण वरणि क भयो बल्लभ अरु मोर ।
 तुलसी के मुख दर्शिये, अरुनी तुलसी मन ॥११८॥
 संवत नारद मै अरु, प्रमी गो के तीर ।
 श्रवण व्यास नाना शनि, तुलसी नाना शरीर ॥११९॥
 मूल गुमाड चारन नित पाठ करे जो कोय ।
 गोरी पाप नदमत कृपा, राम परमदण होय ॥१२०॥
 मोरह मै नाना मि मित्र, नरमी कानिक नाम ।
 विरच्यो यहि नित पाठ हित, बेणी माधवदाम ॥१२१॥

इम मूल श्रीगोमाई चरित में कवि १, कुण्ड लिया १, मंला १, छन्द २, चौपाई ९, सोरठा १९, दोहा १२१ और मोटक ४३१ हैं ।

५० रामधारी पांडेय ग्राम माकन डा० ओवरा जि० राय स्टेशन रामरंज के यहां १६८७ के संवत की लिखी प्रति देखी जा सकती है । यह बात पूर्व प्रकाशित प्रतियां में उल्लिखित है ।

(श्रीमानदास जीकी कथा)

मू० छं०—करुणा वार सिंगार आदि उज्ज्वल
 रस गाये । पर उपकारा धीर कवित कवि-
 जन मन भाये ॥ कंशलेश पद कमल
 अननि दरसन ब्रतलीना । जानकीजीवन
 सुयश रहत निशि दिन रंग भानो ॥
 रामायण नाटकहिको, रहस्य उक्ति भाषा
 धरी । गान्धकेलि रघुनाथकी, मानदास
 परगट करी ॥१२०॥

(गोस्वामी श्रीगिरिधरलालजीकी कथा)

मूल छं०—दसवि काम अरु माक्ष भक्ति
 अनपायिनी जाना । हस्तामल श्रु तिसमृति
 सवहि शास्त्रन के जाता । परिचर्या ब्रज-
 राज कुंवर के मनको कपें । दर्शन परम
 पुनात सभामहँ अमृत वपें ॥ बिहलेश
 नन्दन शुभाव, जग कोऊ नहि ता समान ।
 बल्लभ जूके वंशमें, सुरतरु ॥ गिरिधर
 भ्राजमान ॥१२१॥

१ अनन्य । २ सेवा । ३ पत्र ।

हितकारी । आरज गुण तन अमित भक्ति
दशधा व्रतधारी ॥ दर्शन पुनीत आशय
उदार, आत्माप रुचिर सुखधाम को ।
रसिक रंगीलो भजन निधि, मुठि बनवारी
श्याम को ॥१३२॥

(श्रीनारायण मिश्रजीकी कथा)

मूल छ०—नाम नरायणामिश्र वंश नवला
जु उजागर । भक्तनकी अति भीर भक्ति
'दशधाके आगर । आगम निगम पुराण
'सार शास्त्रनके देखे । सरगुरु शुक सन-
कादि व्यास नागद जु विरोधे ॥ सुधा बाध
मुख सुरधुनी, यज्ञ वितान जगमें तन्यो ।
भागवत भली विधि कथनको, धन जननी
एकै जन्यो ॥१३४॥

(श्रीरावदास जीकी कथा)

मूल छ०—काम क्रोध मद माह लोभकी लहर न
लागी । सूरज ज्यों जलग्रह बहुगि ताही ज्यों
त्यागी । सुन्दर शील स्वभाव सदा मंतन

१ मेमा । २ तत्व ।

गंगा व्रत । धर्म 'निकश निवेद्या विश्व में
विदित बडो भूत ॥ अल्हराय रावल कृपा,
आदि अंत धुकती धरो । कलिकाल कठिन
जग जीतियो, राघवको पूगे परो ॥१३५॥

(श्रीबावनगीकी कथा)

मूल छ०—अच्युत कुलसों द्वेप हृदय
मपनेहुँ नहिं आने । तिलक 'दाम अनुराग
मबन गुरुजन करि जाने । सदन माहि
वैराग्य विदेहन की सो भाँती । रामचरण
मकरन्द रहत मनसा मद माती । यांगा-
नंद कुल प्रसिद्ध कर, निशि दिन हरि गुण
गावना । हरिदास भक्तपूजन भजन बाल
बावन ज्यों बख्यो बावलो ॥१३६॥

(स्वामी श्रीपरसुरामदासजी की कथा)

मूल छ०—ज्या चन्दनको पवन निम्बहू
चन्दन करई । बहुत काल तम निविड
उदय 'दोषक ज्यों हरई । श्रीभट
पुनि हरिव्यास सन्त मारग अनुसरई ।

१ कसोटी । २ माला=कंठी । ३ शूर्य ।

कथा कोरतन प्रेम स्मन हृदिगुण उच्चरई॥
गोविन्द भक्ति जग रांग तलि, तिलक 'दास'
सद्वैद्य 'हृद' । जंगली देश के लोग सब,
परशुराम किये 'पारपद' ॥१३७॥

गजमी सन्त दोष गयो कोट 'अन्त' लेन
पेल्या जु अतन्त्र हरि सगे पाया दामिने ।
चल संग नाथ त्यागि पत्नी से कर्षण अंग
बड़े गिरि कन्दरा में लागी ठौर पहरिये ॥
नाथ अनिजारे आय सगरी बहाय दई
दये चोर पालकी हू मलिन निरुपम ।
जाय लपटायो पाँव माय में न जान्यो लव
अब उ म.म. शरण प्रणम दहिये ॥१३८॥

(श्रीगदाधरजी भट्ट की कथा)

मूल छ०—सज्जन सुहृद सुधीन वचन
'आरज' प्रति पालय । निर्मलसर लिपिधाम
कृपा करुणा का आलय । अनन भजन
दृढ करन धरया वपु भक्तन काजै । परम
धम को मनु विदित वृन्दावन गाजै ॥

१ माला—कटी । २ सीमा पाज । ३ भगवान् के समीप से उक ।
४ पता । ५ पूर्वाचार्यों के ।

भागवत मुधा वर्ष वदन, काहूको नाहिन
दुखद । गुण निकर गदाधर भट्ट अनि,
सबही का लागै सुखद ॥१३८॥

'श्याम रंग रंगी' पद 'निकर गुण' जीव
पत्रों पत्रों 'उम' साधु बनि धार्य है ।
'गोविन्द रंग' केसे चढये उ नि शाच चढये
कागद सा प्रेम पद्यों ल' त्यों आय है ॥
'पुर' दिग' कृप' त' दैठ' स' रूप' दक
एकदा इन छापों मां नाथने रनाये हैं ।
रहो कान्ठ शिर नीचे वृन्दावन धाम
नाम तुल्य मुखा हू है गिरे 'ला' पाये है ॥१३९॥
कहा किना भट्ट श्रीगदाधरजी यों जानो
भोग पदों पाया नाथ के निकर जियाय है ।
दिया पत्र ता' लिये शीत रंग लगाय चाय
बचनी चल बाग वृन्दावन आय है ॥
'नल श्रीगुण' जू मो नाथ रंग आय नीर
वृन्दावन शीत मां धार वही माये हैं ।
पद सव अन्त संग नाथकृपा कविरंग
रस की उमंग अंग अं । भाव जाये हैं ॥१४०॥

१ एक पद का प्रथम शब्द है । २ दो । ३ रंग सलाने का
साधन । ४ नगर के सर्वाप । ५ परधाय को भाग हो गये । ६ जैसे
तो उस श्रीजीवगोस्वामीजी के पत्रों फिर से जीवित कर दिया ।

नाम हो कल्याणविह जात राजपूत पुत
 बैठयो आय कथा सा अमृत रंग नाम्यो है ।
 निपट निकट वाम धोहरा गाँव तामे
 हाम परिहाम नज्यो तिया दुःख पाग्यो है ॥
 जानी भद्र संग मो अनंग वाम दूर भई
 कगी रीति नई युक्ति दिये काम जाग्यो है
 मांगत फिरत हती युवती सा मभवती
 कही लो रुपया वीम तक कहू राग्यो है ॥५२५॥
 नदाधर भद्रज की कथा में प्रवेश कहत
 अहां कृपाकरी अब मंगे सुधि लाजिये ।
 दई लाडी मंग. लाम रंग चित्त भंग कियो
 दिये ले बताय बोली मेरो काम कीजिये ॥
 बोले आप बैसिये जू ध्यान नित करो हिय
 मेरो पाप नही गई दरसन दीजिय ।
 श्रोता दुःख पाय भाष भुटी गहि मार नाथ
 साँची कही राखे सुनि तन मन दीजिये ॥५२६॥
 फटजाय भूमि तो समाय जाय श्रोता कहें
 बहै दग नीर है अधीर सुधि गई है ।
 गधिकावल्लभदाम प्रकट प्रकाश आम
 मयो दुःख राम सुनि मो उलाय लई है ॥
 साँच कही दोजे नहिं अभी जाँव लाजे, डगी
 मव कहि दियो सुख लियो संज्ञा भई है ।

काटि तखवार तिया मारिवे कल्याण चल्थो
 दयो परबोध प्रभुकरी दया नई है ॥५२७॥
 रहें काहु देश सो महन्त आये कथा मौझ
 आगे लो बैठाये देखै सबे साधु भीजे हैं ।
 मेरे अश्रुपात क्यों न होत रोच आत पर
 करे लो उपाय मो लगाय मिच बिकहें ॥
 मन्त एक जानिके बताययी भद्रज को
 गये उठि मव तब मिलि अति रीकहें ।
 ऐसी चाह होय मेर रोवकें पुहारि कही
 चली जलधार नैन प्रम आप धाँजे हैं ॥५२८॥
 आयो एक चोर घर सम्पत्ति बटोर गाँठ
 बाँची लो गरमि क्याहै उठ नही मारी है ।
 आयक उठाय दयो देखी ताने रीति नई
 पूज्यो नाम प्रीति भई मूल्यो में विचारी है ॥
 बोले आप लो पधारो होत ही मँवारो आवे
 और दशगुनी मेरे तोरी यह ज्वारी है ।
 प्राणन को आगे धरो तरण उपाय करो
 रहे मयभाय भयो गिर्य चोरी टारी है ॥५२९॥
 मम की टहल निज करन करत आप

१ मध्याश्रुगणसे भाँज गये हैं । २ किसी प्रकारसे भी । ३ जिवारी-
 जीविका । ४ संसार से तनने का उपाय कर दीजिये । ५ छोड़ दी ।
 ६ हाथ से ।

भक्तियों प्रभाव जानै भागवत गाई है ।
 देत हूत चौका कोऊ सिध्य वह भेट ल्यायो
 दूरीनि दैलि दाम आय सो जनार्द है ॥
 धीमे दास वैद्यो आप मुनिक सिमर रटे
 सेवा ही में चाव, प्राये स्वीकृत सरभाई है ।
 हिये तिमिराण जग आमको निनाश कियो
 पियो प्रेमरस ताकी बात ल दिख्य है ॥५३०॥

(चारण भक्त हुन्द वर्णन)

मूल छ०— 'चौमुखचौग' 'चंड' 'जगत'
 'इश्वरगुण जानै' । 'कर्मनिंद' अरु 'काल्ह'
 'अल्ह' अक्षर परखाने । 'माधव' भक्षुग
 'मध्य' साधु 'जीवानंद' सीवा । 'हुदै'
 'नरायणदास' नाम 'माँडन' नतग्रीवा ॥
 चौगामी रूपक चतुर, नगोत वारणा जू
 जुआ । चरणा शरणा चारणा भगत, हरि-
 गायक पुता हुआ ॥५३१॥

(श्रीकृष्णमानन्दजी चारण की कथा)

कर्मजानन्द चारण की वाणी उन्मत्तममें
 दास जो यिं लेय सोऊ पिघलाइये ।
 दिवा मूढ त्याग दार भवा अनुगम भरे

१. आप के नाम हैं । २. भक्तों के नाम हैं ।

बहुधा सो शीवा हाथ छडी 'पधराय' ॥
 बाहु रोर जाये भवि गोनी पधराय नावे
 ल्याये उ प्रभु भूत आय कट पाइये ।
 फेर पर भई दुई भक्तियों जगय जल
 लव मंगाय दैलि गान ले भिखारी ॥५३१॥

(श्रीकोल्हजी और अल्हजी चारणकी कथा)

को ह अल्ह भई दि कना मुसलद दुलो
 पति विरक्त रूप नाम भरी ल्याये ।
 छिनी क रूप गुण दाणा मे उधार कर
 येर भक्ति भाव लिय ताकी वह अपर है ॥
 दानो बहुधा जग जग पर उन्मत्त
 सपन की गाव प्रभु कभु गाय जान है ।
 बड़े क रथीन गेह लई बड़े गोई कर
 ईश कर गहे आप दैन्य में मान है ॥५३२॥
 बड़े आप कही चलो डारिका निहरे सही
 भिखा जग भोग या में आयु ही विगत है ।
 आला क अधीन चल्या आये पुगलीन भये
 नये चौज मन्दिर के मुनो कान बात है ॥
 कील्ह ने मुनाये सब जे जे नाना छन्द गाये
 पात्र अल्ह दायचार कहि सुकुचात है ।
 भयो ही हुंकारो प्रभु कही माना गर डारो

१ श्रीकृष्णजी के बहुधा । २ रखत थे । ३ छडी बूत आवे ।

लाय पहिरावे कल्लो मेरो बडो आत है ॥५३३॥
 याहो दई मोहि नहीं बडो अपमान भयो
 गयो बूढयो मागर में दुख को न पार है ।
 बूढन ही आगे भूमि पाई चल्यो भूमि प्रीति
 मा अर्नाति भूले नाही मानो ललवार है ।
 मोई आये लन हरिजन मन चैरामल्यो
 मिल्यो जाय कृष्ण पायो अतिमुख्य स्वार है ।
 बैठे जब भोजन को दई उसे पानर लो
 दुमरी जू केयो कही वही भाई प्यार है ॥५३४॥
 सबे दिप भयो दुख भयो मोही हुग नयो
 दयो पयोध प्रभु वात मुनि लीजिये ।
 नेरो छोरो भाई मेरो सक्त मुखदाई ताकी
 कथा ल चलाई जामे आगही सो धीजिय ॥
 प्रथम जनप मांक बडो राजपुत्र भयो
 गयो गृह त्यागि मदा मासो मति लीजिये ।
 आयो वन कोऊ भूप संग राग रंग रूप
 देखि चाह भई दह दई भोग कीजिये ॥५३५॥
 नेरो ही वियांग अन्न जल सब त्यागि दियो
 जियो नहिं जात वापै बेग मुधि लीजिये ।
 हाथ पै प्रमाद दीन्हो आय घर चीन्ह लीन्हो
 सपनो सो गयो वीति प्रीति वासो कीजिये ॥
 दारिकाको संग सुन्यो आवत सो आगे चल्यो

मिल्यो भूमि परि दग भरि बहै दीजिय ।
 कही सब वात श्याम धाम नज्वा ताही छिन
 कश्यो वनराम दोऊ अति मति लीजिय ॥५३६॥

(श्रीनारायणदासजी चारण की कथा)

अन्क ही के वन में प्रशंस थाहि जान लेंद्र
 बडो भाई और छोटा श्रीनारायणदास है ।
 दीध कमाऊ लघु उपज्यो उडाऊ भाभी
 दियो भोग भोजन ले भयो दुख राम है ॥
 दयो नाका नानो कार नानी वह कोथ भरि
 कही लो हुवासा भरी तब दियो होम है ।
 सयो गृह त्यागि दीपागि कही बैसा जी जो
 भक्तिवश श्याम कियो प्रकट प्रकट है ॥५३७॥

(बीकानेर नरेश श्रीपृथ्वीराजजी की कथा)

मूल छन्द—गोत सबेया इलाक बेतिदाहा
 गुण नवरस । पिंगल काव्य प्रभाण विविध
 विधि गाये हरियश । पर दुख विदुप
 'स्ताध्य वचन रचना जु विचारें । अर्थ
 वित्त निर्मालि सबै सायर उर धारें ॥
 "रुक्मिणी लता" वर्णन अनूप, 'वागीश

१ वासी । २ गम्प । ३ बाबाने । ४ हंसुली—कठ भूषण । ५ प्रशंस-
 नीय । ६ ग्रंथका नाम है । ७ सरस्वती जिसके मुख पर रहती थी ।

बदन कल्याण सुव । नर देव उभय भाषा
निपुण पृथ्विराज कविराज हुव ॥१४०॥

मणवाड इश जी-राज को नमन वडो
पुर्वराज नाम भक्त ज कविराज है ।
मेवा अरुणम और निपुण निपुण भक्त
ससी पवित्रानी नानी मानी देखी राज है ॥

मयो तो दिश नदी मानसी प्रण हिमो
जिया नदी कुव मे नो नत राज है ।
वीन दिन तीन प्रभु रचित न दाह परे
पादो हरि दाहि रया मय को मनाज है ॥१४१॥

निपुण क पदम नेश सुन्दर मन्दर सह
मन्दिर न देख हरि वीन दिन तीन है ।
निपुण आपा माच वीन अनि हो प्रमन्न मयो
लागे राज बैठ प्रभु आदर प्रीण है ॥

सुनो मक और यो प्रतिज्ञा करि हिये धरी
मधुग शरीर त्याग करे मम लीन है ।
पृथ्वीपति जानिके मुहीम दई काधुल की
बल अधिकई नही कालक अधोन है ॥१४२॥

जावन अवधि रह निपट अलप दिन
कलप मगान वीन पल जो विहात है ।

१ अकल्याण मिहजी के पुत्र । २ हन्दी और संस्कृत दोनों ।
३ कारीगर । ४ बादशाह । ५ सेना पतिव ।

आगम जनाय दियो चहै इन्हें साँचो कियो
लियो भक्ति भाव जाके छायो गात गात है ॥
चल्यो चढि साँदनी पै लई मधुपुरी आनि
करि असनान प्राण तजे सुनी बात है ।
जय जय धनि भई व्यापि गई चहुँआर
भूपति चकोर यश चन्द्र दिन रात है ॥५४०॥

(काबा नरेश श्रीशिवजी की कथा)

मूल छ०—असुर अजीज अनीति अग्नि-
मय हरिपुर कीधो । साँगन सुत नैषाद
राय रणछोडै दोधो ॥ धरा धाम धन
काज मरणा बीजाहू माँडै । कमधुज
कुटके हुओ चौक चतुभुजनो चाँडै ॥
वाढेल बाढ कीनी कटक, चाँद नाम चाँडै
सबल । द्वारिका देखि पपलंटतो, अचढ
सिबै कीनहीं अटल ॥१४१॥

१ ऊँटनो । २ दावानल मई । ३ द्वारिका को । ४ कर दिया =
जला दिया—आग लगा दा । ५ साँगन के पुत्र । ६ निषाद राज को
श्रीराछोड भगवान ने दर्शन दिये । ७ दूसरे भी । ८ ठानते हैं ।
९ कमधुज कुटका ग्राममें हुआ, चौक और चतुर्भुजनी चढि ग्राम में
हुए, बाढेल ने बाढ नामक ग्राम में सेना जुटाई, चाँडा नामक ग्राम में
चाँद बडा वनी हुआ, इन सबको साथ लेकर द्वारिका को बदलती
(खाम्ब होती देखकर शिवा नामक निषादराजने अटल अचढ (अगम्भ
और अपगजिता) बना दी ।

काव्यर पति शका मुन माँगन को प्यारी हरि-
 द्रगवती ईश यों पुकारे रक्षा कीजिये ।
 मदा मगवान आप भक्त प्रति पाल कर
 करो प्रति पाल मेरी मुनि प्रति भाँजिये ।
 तुरक अजीज नाम धामको लगाइ आग
 लई बाग घोरन की आय टुक कीजिये ।
 दुष्ट मव मारे प्रभु कष्टते उबारि निज
 प्राण चारि डारे यह नयो रस पीजिये ॥५४१॥
 (आमेर राज्य कुलवधू श्रीरत्नावतीजी की कथा ।)

मूलच्छ०—कथा कीरतन प्रीति भोर भक्तनकी
 भावै । महा महोत्सव मुदित नित्य नँद-
 लाल लड़ावै ॥ मुकुन्द चरण चिन्तवन
 भक्ति महिमा ध्वज धारो । पति पर
 लोभ न कियो टेक अपनो नहिं टारो ॥
 भक्त पन सबै विशेष ही, आमेर सदन
 सुख नाजितो । पृथ्विराज नृप कुल वधू
 भक्त भूप रत्नावती ॥१४२॥

मानमिह राजा ताको छोटी भाई माधोमिह
 ताकी जानो तिया जाकी बात ले बग्वानिये ।
 ढिंग जो खवासिन सो श्वामन भरत नाम
 रटत जटित प्रेम रानी उर आनिये ॥

नवलकिशोर कभू नन्दके किशोर कभू
 वृन्दावन चन्द्र कहि आंगे भरे पानिये ।
 सुनत विकल भई सुनवे की चाह भई
 रीति यह नई कछु प्रीति पहिचानिये ॥५४२॥
 बार बार कहै कहा कहै उर गहै मेरी
 बहै दग नीर आं शरीर सुधि गई है ।
 पृथो मत बात सुनव करो दिन रात यह
 मही निजगात रानी ! माधु कृपा भई है ॥
 अति उनकंठा देखि कह्यो सो विशेष सब
 गमिक न रेशन की वाणी कहि दर्द है ॥
 टहल छुड़ाई मिरहान लै विठाई वाहि
 गुरु बुद्धि आई यह जानो रीति नई है ॥५४३॥
 निशिदिन मुन्यो करै देखिव को अरवरे
 देखे कैसे जात जलजात दग भरे हैं ।
 कछु हू उपाय कीजे मोहन दिखाय दीजे
 नवही तो जीजे वेतो आन उर अरे है ॥
 दर्शन दूर राज छोड़े लौटै धुरि पै न
 पावैं छवि पूर एक प्रेम वश करे हैं ।
 करो हरि मेवा भरि भाव धरि मेवा रस-
 पान पकवान के बखान मन भरे हैं ॥५४४॥
 इन्द्रनीलमणि रूप प्रकट स्वरूप कियो
 लियो वही भाव यों स्वभाव मिलि चली है ।

नाना विधि राज भोग लाइको प्रयोग जा में
 यामिनी स्वपन याग भई रंग रली है ॥
 करत सिंगार छवि सागर न पारावार
 रहत निहारि बाही माधुरीमों पली है ।
 कोटिक उपाय करे योग यज्ञ पार पर
 'तोपै नहिं पाव यह दूर प्रेम गली है ॥५४५॥
 देख्योई चहति तऊ कहति उपाय कहा
 अहो चाह बात कहि कौन को सुनाइये ।
 कह्यो जू बनाओ टिंग महल के ठौर एक
 चौकीले बैठाओ चहुँ ओर ममभाइये ॥
 आवैं हरि प्यारे तिन्हें लावैं मो लिवाय यहां
 रहें ते धुपाय पाँव रुचि उपजाइये ।
 नाना भाँति पाक सामाँ आगे आनि धरे आप
 डारि चिक देखो श्याम दृगनि लम्बाइये ॥५४६॥
 आवैं हरि प्यारे साधु सेवाकरि टारैं दिन
 'किहूँ पगधारे जिन्हें वृजभूमि प्यारिये ।
 युगलकिशोर गावैं नैनन बहावैं नीर
 हों गई अधीर रूप दृग न निहारिये ॥
 पूछी वा खवामिन सों रानी कौन अंग जाके
 इतनी अटक भग 'मंग सुख भारिये ।

१. तो भी । २. जालीदार परदा । ३. किमी प्रकार अपना
 कभी । ४. सत्संग के महान सुख ।

चली उठि हाथ गह्यो रह्यो नहीं जात अहो
 सहो दुःख लाज बड़ो तनक विचारिये ॥५४७॥
 देख्यो में विचारि हरि रूप रम सारता को
 कीजिये अहार लाज 'कान नीके टारिये ।
 रोकत उतरि आई जहाँ साधु सुखदाई
 आय लपटाय पाँव विनती लौ धारिये ॥
 सन्तनजिमाय बेकी निजकर अभिलाष
 लाख लाख भाँतिन सो कैसे के उचारिये ।
 आज्ञा जोई दीजे साई कोजे सुख बाही में जू
 प्रीति अवगाहि कही करो लागी प्यारिये ॥५४८॥
 प्रेम में न नेम हेम थार ले उमगि चला
 चली दृगधार सो परोसि के जिमाये हैं ।
 भीजि गये साधु नेह सागर अगाध देखि
 नैनन निमेष तजे भये मन भये है ॥
 चन्दन लगाय पुनि बीरी सो खवाय श्याम
 चरचा चलाय चाव रूप मरमाये हैं ।
 धूम परी गाँव भूमि आयो सब देखिवे को
 देखि नृप पास लिखि मानस पठाये हैं ॥५४९॥
 होकर निशंक रानी वंक गति लई नई
 दई तजि लाज बैठी मांडन की भीर में ।
 लिख्यो लै दीवान नर आयो सो वखान कियो
 १ मर्यादा ।

बाँचि सुनि आग लागी नृपक शरीर में ॥
 प्रेम मिह सुत ताही काल सो रसाल आयो
 भालपै तिलक माल कंठी कंठ तीर में ।
 भूपको सलाम कियो नरन जनाय दियो
 बोले आव मोडीके रे परयो मन पीर में ॥५५०॥
 कोप भरि राजा गयो भीतर सो सोच नयो
 पाछे पूछ लयो कह्यो नरन बखानि के ।
 तब तो विचारी अहो मोडा ही हमारी जाति
 भयो दुःख गात भक्ति भाव उर आन के ॥
 लिख्यो पत्र माजीको जू प्रीति हिये साजी जोपै
 शीशपर बाजी आवै राखो तजि प्राण के ।
 सभा मध्य भूप कही मोडीके विरूप भयो
 रहै अब मोडीकेही भूलो मत जानके ॥५५१॥
 लिखि लै पठाये वेगि मानस लै आये जहाँ
 रानी भक्ति सानी हाथ दई पाती बाँचिये ।
 आयो चडि रंग बाँचि सुतको प्रमंग वार
 भीजे जे फुलेल दूर किये प्रेम साँचिये ॥
 आवै मेवा पाक निशि महल बसत जहाँ
 ल्यायो याही ठौर प्रभु नीचे गाय नाचिये ।
 राज्य अन्न त्याग दियो, दियो लिखि पत्र पुत्र
 भई मोडी आज तुम हित करि जाचिये ॥५५२॥

गये नर पत्र दियो शीश में लगायो सुत
 बाँच के मगन हिये रीझ बहु दर्ई है ।
 नौवत वजाय द्वार बाँटत बधाई काहू
 नृपहि सुनाय कही कहा रीति नई है ॥
 पूछी भूप लोग कही मिटे सब शोक भये
 मोडी के ही योग्य स्वांग कियो बनि गई है ।
 भूपहि सुनत बात अति दुःख गात भयो
 लयो वैर भाव चढयो त्यारी हत भई है ॥५५३॥
 नृपहि बुझाय राख्यो देशमें चबाव ह्वे ह्वे
 बुद्धिमान जन आय सुत सो जनाई है ।
 बोल्यो विषै लागि कोटि कोटि तन खोये एक
 भक्तिपद आवै काम यहै मन आई है ॥
 पाँयपरि माँगि लई दर्ई जो प्रसन्न होय
 राजा निशि चल्यो जाय करूँ जिय भाई है ।
 आये निज पुर डिंग दुरि नर मिले आय
 कह्यो मो बुझाय सब चिन्ता उपजाई है ॥५५४॥
 भवन प्रवेश कियो मंत्री का बुलाय लियो
 कह्यो अब कटी नाक लोहू निगवारिये ।
 मारियो कलंक ह न आवै यो मुनाई भूप
 काहू बुद्धि मन्त ने उचारी ने विचारिये ॥
 नाहर जो पिंजरे में दीजे छाँडि लीजे मारि
 पाछे ते पकरि यह बात दाव डारिये ।

सवन सुहाई जाय करी मनभाई आयो
 खवासिन देखि कही सिंह जु निहारिये ॥५५५॥
 करै हरि सेवा भरि रंग अनुराग दृग
 मुनि यह बात नेक नैन उन टारे हैं ।
 भावही सों उठि जाय अति मनमाने अहो
 आज मेरे भाग्य श्री नृमिहजी पधारें हैं ॥

भावना मचाई वही शोभा लै दिखाई फूल-
 माल पहिराई राव टांको लागै प्यारें हैं ।
 मौन ते निकमिधाये मानो स्वभ फारि आये
 विमुख समूह तत्काल मथि डारें हैं ॥५५६॥
 भूपको खबर भई रानीजी की सुधि लई
 सुनि नीकी भाँति आप नम्र हँक आये हैं ।
 भूमि परि करी दंडवत भक्ति मति हरी
 भरी दशा आय दामी वचन सुनाये हैं ॥

करत प्रणाम राजा बोली अजू लालजू को
 नेक फिरि देख्यो एक ओर ये लगाये हैं ।
 बोले नृप राज्य धन सबही तिहारो धागे
 पति पै न लोभ कही करौ मुख भाये हैं ॥५५७॥
 राजा मानमिह माधो सिंह उभय भाई चढे
 नाव पर कट्टे तहाँ बूडबे को भई हैं ।
 बोल्यो बडो आता अब कीजिये यतन कौन
 भौन तिया भक्त कहि छोटे सुधि दई हैं ॥

नेक ध्यान कियो नाव आयकें किनारो लियो
 हियो हुलमायो जेठ चाह नई लई हैं ।
 कियो आय दरशन विनै करि गयो भूप
 अतिही अनृप कथा हिये व्यापि गई हैं ॥५५८॥
 (पुगेहित श्री जगन्नाथजी काँथड्याकी कथा)

म० छं०—रामानुजकी राति प्राति प्रण
 हिन्दे धारचा । मंस्कार सम तत्त्व हंस
 ज्यों बुद्धि विचारचा ॥ सदाचार मुनि
 वृत्ति इंदिरा पधति उजागर । रामदास
 मृत मन्त अननि दशधा को आगर ॥
 पुरुपोत्तम परसाद ते, उभय अंग पहि-
 रयो वरम । पारोख प्रसिध कुल काँथ-
 ड्या, जगन्नाथ सोमा धरम ॥१४३॥

(श्री मथुरादास कीर्तनियाकी कथा)

मूल छ०—सदाचार सन्तोष सुहृद मुठि
 शील मृभाशौ । ज्यों कर दीपक मैटि
 भवन तम वस्तु प्रकाशौ ॥ हरिको हिय
 विश्वास नन्द नन्दन बल भारी । कृष्ण

१ शुभ आशय । २ भगवानके लिये नित्य जलका कलश
 लाने का ।

कलश को नेम जगत जानै शिर धारो ॥
वर्धमान गुरु वचन रति, सो संग्रह
नहिं छाँडियो । कीतेन करत कर सपने
हूँ, मथुरादास न माँडियो ॥१४४॥

बसिके तिजारे गाँव भक्ति रमराशि करी
करी एक बात ताको प्रकटि सुनाइये ।
आयो वेषधारी कोऊ करें शालिग्राम सेवा
डोलत मिहामन सो आय भीर छाड़ये ॥
स्वामीके जो शिष्य तिनहु को देखि भाव भयो
वाहीको प्रभाव आय कहाँ हिये भाड़ये ।
नेक आप चलिके वा रीति को विलोकियेजू
बडे सरवज्ञ कही दुखे नहीं जाड़ये ॥५५६॥

पाँय पार लेके गये जायडिंग ठाडे भये
चाहत फिरायो पै न फिर शोच परयो है ।
जानि गयो आप कछु इन्हां को प्रताप इन्हें
मारों करि जाष यों विचार मन धरयो है ।

मूठ सो चलाई भक्ति तेज आगे आई नहीं
वाहो लपटाई भयो ऐमो मानो मरयो है ।
है कर दयानु जा जिवायो समझायो प्रीति
पन्थ दरसायो हिय भायो शिष्य भयो है ॥५६०॥

(श्रीनारायणदासजी नर्तक की कथा)

मूल छ०-पद लीन्हो सुप्रसिद्ध प्रीति
जामें दृढ नातो । अक्षर तन्मय भयो
मदन मोहन रँग रीतो । नाचत सब
कोउ अहो काहि पै यह बनि आवै ।
चित्र लिखित सो रहै त्रिभङ्ग देशो जु
दिखावै ॥ 'हँडिया सराय देखत दुनी,
हरिपुर पदवी को चढ्यो । नृतकनरायण
दास को, प्रेम पुंज आगे बढ्यो ॥१४५॥

हरी हीके आगे नृत्य करें हिये धरे यही
ढेरें देश देशनमें जहाँ भक्त भीर हैं ।
हँडिया सराय मध्य जायके निगम कियो
लियो सुनि नाम सो मलेच्छ जानि भीर हैं ॥
बोलिके पठाये महाजन हरिजन सब
आयो है सदन गुणी न्याओ चाह पीर हैं ।
आयके सुनाई भई बड़ी कठिनाई अब
कीजे जोई भाई वह निपट अधीर हैं ॥५६१॥
बिन प्रभु आये नृत्य करिय न नेम यह
मेवा वाके आगे कहाँ कैसे विमतारिये ।
कियो यों विचार उच्च मिहामन मालाधारि
१ शाय का नाम है ।

तुलसी निहारी हरि गान कियो भारिये ॥

एक ओर बैठ्यो मीर निरख्यो न दृग कोर
मगन किशोर रूप सुधिले विसारिये ।

चाहै कछु वारों परे औचकही प्राण हाथ
रीझ मनमान कीन्हो मीच लागी प्यारिये ॥५६२॥

(भक्त समूह का वर्णन)

मूल छ०—बोहित राम कुमार कुमर वर
गोविंद माडिल । छोट स्वामि यशवन्त
गदाधर अनन्ता नन्द भल । दीनदास
हरिनाभ मिश्र बछपाल कन्हार यश
गायन । नारद गांसू राम श्याम पुनि
हरिनारायण ॥ कृष्ण जीवन भगवान
जन, श्याम विहारी अमृतदा । गुणगण
विशद गुपाल के, ए जन गाये
भूरिदा ॥१४६॥

मूल छ०—उद्धव रामरेणु परसा गंगा
'धूपेत निवासी । अच्युत कुल विश्राम
'शोपसाई के वासी । किंकर 'कुंढा कृष्ण
खेम 'सोढा गोपानन्द । 'जय तारण विदुर

१ श्याम है ।

दयाल दमोदर अस मोहन परमानन्द ॥
उद्धव खनुनाथी पुनि चतुरो, 'कुंज ओक
जे बसत अब । जे 'निवृत भये संसारते,
ते मेरे यजमान सब ॥१४७॥

(जयतारण निवासी श्रीविदुरजीकी कथा)

'भीथडा समीप 'जैतारण विदुर भयो
भयो हरिभक्त माधु सेवा मति पागी है ।
बरपा न भई सब खेती सुखिगई चिन्ता
नई प्रभु आज्ञा दई बडो बडभागी है ॥
खेतको कटाओ ओ गहाओ लै उडाओ पाओ
दो हजार मण अन्न सुनि प्रीति जागी है ।
करी वही रीति लोग देखें न प्रतीति होत
गाये गीत हरि राशि लागी अनुरागी है ॥५६३॥
(स्वामी श्री चतुरो नगनजी की कथा)

मूल छ०—सदायुक्त अनुक्त भक्त मंडल
का पोपत । पुर मथुरा व्रज भूमि रमत
सबही को तोपत । परम धर्म दृढ करण
देव श्री गुरु आराधे । मधुर वचन सुठि
ठोर ठोर हरिजन सुख साधे ॥ सन्त
महन्त अनन्त जन, यश विस्तारत जासु

१ व्रजभूमि । २ अलग ।

नित । श्री स्वामी चतुरो नगन, मगन
रैन दिन भजन हित ॥१४८॥

आये गुरु गह यों मनह सों ले सेवा कर
धरे हिये भाव माँचा अति मति भीजये ।
टहल लगाय दर्ई नई रूपवती निया
कहि बासो दियो स्वामी कहे मोही कीजिये ॥
देख्यो उरभाव अंग संग को लखाव भयो
दयो घर धन वधू कृपा करि लीजिये ।
धाम पधराय मुख पायके प्रणाम करि
धरि ब्रजभूमि उर बसे रम पीजिये ॥१४९॥
श्रीगोविन्दचन्द्रजू को भोग ही दरम कर
केशव सिंगार राजभोग नन्द गाम में ।
गोवर्धन राधाकुंड हों के आवे घृन्दावन
मन में हुलाम करें नित चार याम में ॥
रहे पय पावन पै भूखे दिन तीन बीने
आये दूध लै प्रवीण येहु रंगे श्याम में ।
माँग्यो नेक पानी लाओ फेर वह प्राणी कहाँ
दुःख मति मानी निशि कह्यो कियो काम में ॥१५०॥
पानी सों न काम ब्रजभूमि में विराजि दूध
पीओ घर घर यह आज्ञा प्रभु दर्ई है ।
ये तो ब्रजवासी सब क्षीरके उपासी कैसे

मोको लन दहें कही देहें सुनी नई है ॥
डोले धाम धा । श्याम कहाँ मोही मानलियो
दिना परच्यो हू परतीति लव भई है ।
काऊ जा बिपावें पात्र बेगि आप हूँ द लावें
अति मुख पावें कीन्ही लीला रसमई है ॥१५१॥

(मधुकर भक्त समूह का वर्णन)

मूल छ०—गोमा परमानन्द द्वारिका मथुरा
'खोरा । 'कालख 'साँगानेर भलो भगवान
को जोरा । विठ्ठल 'टाडे खेमपैडा 'गोनैरें
गाजें । श्याम सेनके वंश चिधर पोपा रवि
राजें ॥ 'जयतारण गोपालके, केवल कूवे
मोल लियो । मधुकरी मगि सेवें भगत,
तिन पर हो बलिहारियो ॥१४९॥

(श्री केवल कृपाजी की कथा)

कहत कुम्हार जग कुल निसनार कियो
केवल सुनाम साधु सेवा अभिराम है ।
आये बहु सन्त प्रीति करी लै अनन्त जाको
अन्त कोन पावै ऐपै सीधो नहि धाम है ॥
बड़ीही गरज चले करज निकासिवेको
वनिया न देत कूआँ खादो कीजे काम है ।

१ सब नाम श्रावों के है ।

कहीं बोल दिया तोल लिया नीके रोलकर
हितमों जिमाये जिन्हें प्यारे एक श्याम हैं ॥५६७॥

गये कुआ खोदवेको सुवा ज्यों उचरें नाम
हुआ काम जानि बाभो भयो सुख भारी है ।
आई रल भूमि भूमि माटी गिरी दवे वामें
केतिक हजार मण होत कैसे न्यारी है ॥

शोक करि आये धाम राम नाम धुनी काहु
कान परी बीते मास कही बात प्यारी है ।
चले बाही टौर स्वर सुनि प्रीति भौर परे
रीति कछु और यह सुधि बुधि टारी है ॥५६८॥

माटी दूर करि सब पहुँचे निकट जाय
बोलके सुनाये राम वाणी लागी प्यारीये ।
दरशन भयो मत्र पाँय लपटाय गये
रही महारावसी हूँ कबहुँ निहारिये ॥

धरयो जल पात्र एक देखि कृपा पात्र जानि
आनि निज गेह पूजालागी अति भारिये ।
भई द्वार भीर नर उमडि अपार आये
महिमा विचारि बहु सम्पत्ति लौ वारिये ॥५६९॥

सुन्दर स्वरूप श्याम लाये पधरायवेको
साधु निज धाम आय कुवाजूके वसे हैं ।

१ भोजन कराये । २ तोता । ३ रेत । ४ प्रेमके चक्रमें ।
५ गोलाकार ।

रूपमों निहारि मनमात्रि ये विचार कियो
करं कृपा माँ पै, प्रभु अचल हूँ लमे हैं ॥
करत उपाय मन्त टग्न न नेऊ क्योह
कहीजू अनन्त रि गीमे स्वामि हमें हैं ।
धरयो जानगय नाम जानिलई ही की बात
अंगमें न मात मदा सेवा सुख रसे हैं ॥५७०॥

चने डारावती छाप लवें यह मति आई
आज्ञा प्रभु दई फिर धरही को आये हैं ।
करो माधु सेवा भाव धनो दृढ हिये माझ
टग्न जान क्योह काजे नोजो मन भाये हैं ॥
गेहरी में शंख चक्र आदि निज देह भये
नये नये कौतुक प्रकट जग गाये हैं ।
गोमती को सागर में मंगम हो रह्यो सुन्यो
सुमिलनी पटायके यों दोऊ लौ गिलाय हैं ॥५७१॥

भये शिष्य शाम्बा अभिलाषा साधु सवाही की
गहिमा अगाध जग प्रकट दिखाई है ।
आये धर मन्त तिया करत रमोई कोई
आयो बाको भाई ताको स्वीर लौ बनाई है ।
कुवाजी निहारि जानी याको हिन दूसरे सो
करत विचार एक सुमति उपाई है ॥

१ मृत्ति । २ अचल-न उठ सकने वाले । ३ शोभा देने लगे ।
४ किसी उपाय से भी ।

कहि भरि लाओ जल गढ़ डरि जैन पै न
लई तममई सब भक्तन खवाई है ॥५७२॥

बेगि जल ल्याय देखि आग सी बराई हिये
भाँके मुख भाई दुःख सागर हुवाई है ।
विमुख विचारि ताहि कृवाजी निकारि दई
गई पति कियो और ऐमी मन आई है ॥

परिगो अकाल बेटा बेटी नहीं पाल सके
तकै कोऊ और मति अति अकुलाई है ।
लियो संग कियो ताहि पुत्र सुता आदि सब
आपसी भाँखडामें स्वामी को सुनाई है ॥५७३॥

नाना विधि पाक होत सन्त आवैं जैमे मोन
मुख अधिकाई रीति कैमे जात गाई है ।
सुनत वचन दीन वाके दुख लीन महा
निपट प्रवीण मनमोह दया आई है ॥

देख पति मेरो और तेरो पति देख याहि
कैसे कै निवाह सके परी कठिनाई है ।
रहो द्वार भारयो करो पहुँचै अहार तुम्हें
महिमा निहारि दग धार लै बहाई है ॥५७४॥

कियो प्रति पाल लिया कुटुम अकाल माम

१ आ दुमरा पति किया था । २ नदी में जल के स्रोत=भरत ।
३ लम स्त्रीके । ४ दुख में सनेहुष । ५ श्री कृवाजी ने भगवानकी
और इशारा करके कहा ।

भयो जब समो विदा कीन्ही उठि गई है ।
अब पछतावै वह वान अब पावै कहाँ
जहाँ साधु संग रंग सभा रममई है ॥
करें जाको शिष्य सन्त सेवाही बतावै करो
जो अनेक रूप गुण चाह मन भई है ।
नामाजू बखान कियो मोको इन मोल लियो
दियो दरसाय शब्द लीला नित नई है ॥५७५॥

(आचार्यवर्य श्रीअग्रदेवजीके १५ शिष्यों का वर्णन)

मूल छ०—जंगो प्रसिध प्रयाग विनो पुरण
वनवारो । नरसिंह भल भगवान दिवाकर
दृढ व्रतधारी । कोमल हृदय किशोर
जगत जगनाथ सतूषो । औरो अनुम
उदार खेम खीची लवु उधौ ॥ त्रिविध
ताप माचन सबै, सौलभ सबशिर प्रभु
भुजा । अग्र अनुग्रहते भये, शिष्य सबहि
धमध्वजा ॥१५०॥

(श्रीमाकेन निरामाचार्य श्रीश्रीलाजीकी परम्पराका वर्णन)

मूल छ०—अंगद परमानन्ददास योगी
जग जागै । खरतर खेम उदार ध्यान हरि-
जन अनुरागै । सस्फुट त्योंला शब्द

लोहक वंश उजागर । हरोगम कपि
प्रेम सबै नवधाके आगर ॥ अच्युत कुल
सेवै सदा, दासन तन दशधा अधट ।
भरत खंड भूधर सुमेर, टीलाकी पद्धति
प्रकट ॥१५१॥

(श्री कान्हरीजी की कथा)

मूल छ०—चारिउ आश्रम बगो रंक राजा
अन पावै । भक्तनका बहुमान विभुष
कोऊ नहिं जावै । बागो चन्दन वसन
कृष्णके कातेन वपै । प्रभुके शृणु देय,
महामन अतिशय हवै ॥ विद्वत सुत
विलग्यो फिर, दास चरण रजशिर धरै ।
मधुपुरी महात्सव दूसरा, कान्हरी को सो
को करै ॥१५२॥

(श्री खेतसीजी नीमाकी कथा)

मूल छ०—आवहिं दास अनेक उठि शुभ
आदर काजे । चरण धोय दंडवत सदन
में डेरा दोजे । ठौर ठौर हरिनाथा हृदय
अति हरिजन भावै । मधुर वचन मुख-

लाय विविध भातिन मूलडावै ॥ साव-
धान सेवा करै, निदृपणा रति चेनसी ।
भक्तन सो कलिघुग भली, निबही नीमा
खेतसी ॥१५३॥

(श्रीभगवानसिद्धजी तैवर की कथा)

मूल छ०—यह अचरज भयो एक खांड
घृत पैदा वपै । रजत रूपको रति मृष्टि
सब ही मन कपै । भाजन रास प्रित्तास
कृष्णको कीर्तन कोन्ही । भक्तन को बहु-
मान दान सबदिन को दोन्ही ॥ कीर्ति
कोन्ही भीम सुत, भूप मनांरथ आनके ।
वसन बहे कुंती वधू, निधि त्या तैवर
भगवान के ॥१५४॥

वीरन वरम माम आवे मधुपुरी कर
प्रेम सो महेश्वर सो हेम ही लुटाइय ।
मन्तन जिमाय नाना पट पहिगवै पाछे
द्विजन गुलाब कछु पूरे नो न भाइये ॥
आयो कोऊ काल धन मान जा विमान भवा
चाँ प्रण राख्यो कही अल्प कराइये ।
१ नामा वेश्य जाति सेवाक में है ।

रहे विप्र दूखि सुख भयो सुनि भव बर्द्ध
 आयो ये समाज करो 'स्वारी मन आइये ॥५७६॥
 अति सनमान कियो लायो मोई सौंप दियो
 लियो गौठ बांधि तब बिनती सुनाइये ।
 सन्तन जिमावो भावो राम करवावो भावो
 जेओ सुखपावो कीजे जोई मन भाइये ॥
 मीधां लाय कोठे धरयो रोक हो सो थैली भरयो
 द्विजन बुलाय देत क्योंहू निघटाइये ।
 जितनो निकारौ ताते मौ गुनो बढत और
 एक एक ठौर बीस गुनो दे पठाइये ॥५७७॥

(श्रीयशवन्तमिहजी राठौडकी कथा)

मू० छ०—भक्तन सों अति भाव निरन्तर
 अन्तर नाहीं । कर जोगे इक पाँव मुदित
 मन आज्ञा माहीं । श्रीवृन्दावन वास
 कुंज क्रीडा रुचि भावे । राधावल्लभ लाल
 नित्य प्रति तिनहिं लडावे ॥ परम धर्म
 नवधा प्रधान, सदन साँच निधि प्रेम
 जड । यशवन्त भक्ति जयमालकी, रूडी
 राखी राठवड ॥१३५॥

१ परेशानी ।

(श्रीहरिदासजी वैश्यकी कथा)

मूल छ०—अमित महागुण गुप्त सारवित
 साँई जानें । देखत तुला साधरें दूर आशय
 अनुमानें । देय दमामो पैज विदित
 वृन्दावन पायो । राधावल्लभ भजन प्रकट
 परताप दिखायो ॥ परम धर्म साधन
 सुदृढ, कामधेनु कलिमहँ गन्यो । हरी-
 दास हरिभक्त हित, धन जननो एकै
 जन्यो ॥१३६॥

हरिदास वणिक सो काशी दिग वास करे
 ताको यह प्रण तन त्यागो ब्रज भूम ही ।
 भयो ज्वर नाडी क्षीण ओड गए बौद्धनीन
 बान्यो यों प्रवीण वृन्दावन रस भूम ही ॥
 बेटीचार सन्तनको दई अंगीकार करो
 धरा डोली माँझ मोको ध्यान दग घूमही ।
 चले सावधान राधावल्लभ को गान करे
 करे अचरज लोग परीगाम घूमही ॥५७८॥
 आवन ही मगमाँझ छूट गयो तन प्रण
 माँचो कियो श्याम वन प्रकट दिखायो है ।
 आय दरशन कियो इष्ट गुरु प्रेमभरि

१ श्री वृन्दावनमें ।

नेम पायो पुरो जाय चीरघाट न्हायो है ॥

पाछे आये लोग मोग करत भरत नेन

बन सब कहे कही ताही दिन आयो है ।

भक्ति को प्रभाव यामें भाव और जानो जनि

बिन हरि कृपा यह कैसे जान पायो है ॥५७६॥

श्री गोपालदासजी और श्री विष्णुदासजी कथा

मूल छ०—वाँवोली गोपाल गुणान गम्भार

गुणारट । दक्षिण विष्णु सुदास ग्राम

काशीर भजन भट । भक्तन सों मतभाव

भजे गुरु गाविंद जेमे । तिलक दाम

आधान सो वर सन्तन प्रति तैमे ॥

अच्युत कुल प्रसा एकुस, निवह्यो ज्यों

श्रीमुखगदित । भक्ति भार जूझो युगत,

धर्म धुरन्धर जग विदित ॥५७७॥

रह गुरु भाई दोऊ भाई साधु सेवा द्विय

ऐसे सुखदाई नई रीति लै चलाइये ।

जायँ महोत्सव में बुलाये हुलसाये अंग

संग गाडी सामा सो भंडारी दे मिलाइये ।

याको तात्पर्य सन्त घटती न सही जात

चातवे न जानैं सुख मानै मन भाइये ।

१ अन्य=भूत-प्रेत आदिका ।

गुरु बड़े सिद्ध जग महिमा प्रसिद्ध अति

बिने करजोरि करी मनमें जो आइये ॥५८०॥

चाहत महोछो कियो हुलमत हियो नित

गुरु सुनि बोले करो वेगि लै तयारिये ।

चहँ दिशि डारवा नीर करयो न्यातो ऐमे धीर

आये बहू भीर मन्त ठौर न सँवारिये ।

आये हरि प्यारे चारों कँटने निहारे नेन

जाय पग धारे शीश बिनै लै उचारिये ।

भोजन कराये दिन पाँच लगि छाये रहे

पट पहिगये सुखदियो अति भारिये ॥५८१॥

आज्ञा गुरु दई भोर आओ फिरि आस पाम

महा सुवराशि नामदेव जू निहारिये ।

उज्जल वसन तन एक लै प्रसन्न मन

चले जान वेगि शीश पायन पै धारिये ।

वेई बतलावै तुम्हें श्रीकवीर धीर साधु

चले दोऊ भाई परदक्षिणा विचारिये ।

प्रथम निरखि नाम हरपि लपटि पग

लागि रहे छोंडत न बोले सुनि धारिये ॥५८२॥

१ हाथमें जल लेकर चारों दिशाओंमें फेक दिया, इसीसे चारो दिशाओंके मन्तोंको निमन्त्रण पहुँच गया । इसी प्रकारसे निमन्त्रण किया गया, किसी मनुष्यको नहीं भेजा गया । २ देखाग । ३ धर देना । ४ श्री नामदेवजी । ५ हम जो कहते हैं उसको सुनकर मनमें धारण करो ।

'माधु अपराध जहाँ होत तहाँ 'आवत न
 होय मनमान 'मत्र मन्त तहाँ आइये ।
 दग्वि प्रीति रीति हम निपट प्रमन्न भये
 लये उर लाय जाओ श्रीकवीर पाइये ।
 आगे जा निहारे भक्तराज दृग धारे चली
 'बोले हँसि आप कोउ मिल्यो सुखदाइये ।
 कह्यो हौं जू नामदेव भई कृपा पूरण, यों
 सेवा को प्रताप कहीं कहीं लागि गाइये ॥५८॥

(श्रीकृष्णदेवाचार्यजीके कृपापात्र जन)

मूल छ०—आशकराज ऋषिराज रूप
 भगवान भक्त गुर । चतुरदास जग अभय
 छाप छीतरजु चतुर वर । लाखा अद्रुत
 राय क्षेम मनसा क्रम वाचा । रसिक
 रायमल गौर देव दामोदर राचा ॥ सर्व
 सुमंगलदास दृढ, धर्म धुरन्धर भजन
 भट । कीलह कृपा कीरति विपद, परम
 पारपद शिप प्रगट ॥१५८॥

(श्रीनाथभट्टजीकी कथा)

मूल छ०—आगम निगम पुराण सार

१ भागवतापराध । २ हम नहीं आते । ३ छोटे बड़े सब मन्तोंका
 ४ श्री कवीरजी बोले ।

शास्त्रन जु विचार्यो । ज्यों पारो दे
 पुटनि सबनि को सार उधारयो । रूप
 सनातन जोब भट्ट नारायण भाष्यो ।
 सो सरवस उर साँच यत्न करि नोके
 राख्यो ॥ फणी वंश गोपाल सुत, 'रागा
 'अनुगा को अयन । रस राम उपामक
 भक्त नृप, नाथ भट्ट निर्मल वयन ॥१५९॥

(श्रीकरमैतीजीकी कथा)

मूल छ०—नश्वर पति रति त्यागि कृष्ण-
 पद सों रति जोरी । सबै जगत की फाँमि
 तरकि तिनका ज्यों तोरी । निर्मल कुल
 काँथड्या धन्य परसा जेहि जाई । विदित
 वृन्दावन वाम मन्त मुख करत बडाई ॥
 मंगार स्वाद मुख 'वान्त करि, फेर नहीं
 तिन तन चहौ । कठिन काल कलियुग
 विपै, करमैती 'निकलैक रही ॥१६०॥

सम्भावत नृपक पुण्डित की बटी जानो
 वाम है खंडेला करमैती जो नखानिये ।

१ परमा भक्ति । २ परा भक्ति । ३ वयन । ४ निष्कलक ।

वसे उर श्याम अभिराम कोटि कामहू ते
 भूली धाम काम सेवा मानसी पिछानिये ।
 वीतजात याम तन वाम अनुकूल भयो
 फूलि फूलि अंग गति मति छवि मानिये ।
 आयो पति गौनो लेन भायो पितु मातु हिये
 लिये चित चाव पट आभरण आनिये ॥५८४॥
 परयो शोक भारी कहा कीजिये विचारी हाड
 चामसों सँवारी देह रतिके न कामकी ।
 ताते देवो त्यागि मन सोचो जनि जागि अरे !
 मिटै उर दाग एक साँची प्रीति श्यामकी ।
 लाजको न काज जोपै चाहै ब्रजराज सुत
 बहोई अकाज जोपै करै सुधि धामकी ।
 जानी भोर गौनो होय मानी अनुगग रङ्ग
 संग एक वही चली भीजी मति वामकी ॥५८५॥
 आधी निशि निकसी यो बम्पी हिय मूर्खति मो
 पूरित सनेह तन सुधि विमगाई है ।
 भोर भये शोर परयो परे पितु मातु शोच
 करयो लौ यतन ठौर ठौर दुँडवाई है ।
 चारों ओर दौरे जन आये दिग दुरि जानि
 ऊँटके करक मध्य देह जा दुगाई है ।
 जग दुरगंध कछु ऐसी बुरी लागी जातै
 बाकी दुरगंध ह सुगन्ध सी सुहाई है ॥५८६॥

वीते दिन तीन वा करक ही में शंक नहीं
 बाँकी प्रीति रीति यह कैसे करि गाईये ।
 आयो कोऊ मंग ताही मंग गंगातीर आई
 दिए सब भूषण नहाय बन आइये ॥
 दूँडत परसराम पिता मधुपुरी आये
 पता सो बतायो जाय माथुर मिलाईये ।
 सधन विपिन ब्रह्म कुँड पर बट एक
 चढकर देखी भूमि आँसुन भिजाईये ॥५८७॥
 उतर के आये रोय पाँव लपटाय गये
 कटी मेरी नाक जम मुख ना दिखाइये ।
 चलो गेह वास करो लोक उपहाम मिटे
 साम घर जाओ मत सेवा चित लाइये ॥
 कोऊ सिंह व्याघ्र अजू वपुको विनाश करे
 वाम मेरे होत 'फिरि मृतक जिवाइये ।
 थोली कही साँच विन भक्ति तन ऐसो जानो
 जो पै जियो चाहो करो प्रीति यश गाइये ॥५८८॥
 कही पिता कटी नाक 'कटै जो पै होय कहूँ
 नाक एक भक्ति, नाक लोक में न पाइये ।
 वरम पचाम लागि विपै ही में वाम कियो
 तऊ न उदाम भये चबेको चवाइये ॥
 देखे सब भोग पै न देखे एक श्याम कभूँ

ताने तजि काम मन सेवा में लगाइय ।

एने उपदेश तम गयो ज्यों प्रभात भयो
दर्यो ले 'स्वरूप प्रभु गयो हिये आइये ॥५८६॥

आये निशि घर हरि सेवा पधराय चाव
मनको लगायो वाही दहल सुहाई है ।

कहँ जान आवन न भावन मिलाप कहँ
आय नृप पृछे दिज कहाँ सुधि आई है ॥

बोल्हो कोऊ जन धाम श्याम संग पागे मुनि
अनि अनुसंगे वेग खवर मगाई है ।

कहो तुम जाय ईश यहाँ ही अशीश करों
कही भूप आया हिय चाह उपजाई है ॥५८७॥

देखी नृप प्रीति रीति पृच्छी सब बात कही
नैन अश्रुपात बहै रंगी श्याम रंग में ।

बरजत आया भूप जाय के लिवाय लाऊँ
पाऊँ जो पै भाग मेर बढी चाह अंग में ॥

कालिन्दी के तीर डाढी नीर दृग भूप लखी
रूप कछु ओरें कहा कहें वे उभंग में ।

कियो मना लाख वेर ऐपै अभिलाप राजा
कीनी कुटी आये देश भोजे मो प्रसंग में ॥५८८॥

(कायस्थ श्री खड्गसेनजीकी कथा)

मूल छ०—गोपि ग्वाल पितु मातु नाम

१ भगवानकी मूर्ति ।

निगांय कियो भारी । 'दानकेलिदीपक
सु प्रचुर अति बुद्धि उचारी ॥ सखा
सखी गोपाल, काल लीला में बितयो ।
कायस्थ कुल उद्धारि भक्ति दृढ अनत न
चितयो ॥ गौतमी तंत्र उर ध्यान धरि,
तन त्याग्यो मंडल शरद । गोविन्दचन्द्र
गुण ग्रथन को, खड्गसेन वाणी विशद ॥

ग्वालियर वाम मदा रामको समाज करें
शरद उजारी अनि रंग चढयो भारी है ।
भावकी बडनि दृग रूपकी चढनि तन—
थेई की रडनि जोरी सुन्दर निहारी है ॥
खलत में जाय मिले त्यागि तन भावना सों
भिलत अपार सुख रीति देह वारी है ।
प्रेमकी सचाई ताकी रीति लो दिखाई भई
भाउकन मरसाई बात लागी प्यारी है ॥५८९॥

(श्री गंगग्वालजी की कथा)

मूल छ०—श्यामाजू की सखी नाम अगाम
विधि पायो । ग्वाल गाय ब्रज गाँव प्रथक
नीके करि गायो ॥ कृष्ण केलि सुख

१ दान लीला दीपक ग्रंथ का नाम है ।

सिंधु अघट उर अन्तर धरई । ता रसमें
नित मग्न असत आलाप न करई ॥
ब्रज वास आस ब्रजनाथ गुरु, भक्त चरण
रज अननि गति । सखा श्याम मनभाव
तो, गंग ग्वाल गंभोर मति ॥१६२॥

पृथ्वीपति आयो वृन्दावन मन चाह भई
'सार्ग' सुनावै कोऊ 'जोरावरी' लाये हैं ।
वल्लभहु संग स्वर भरत ही आयो रंग
अति ही रिभायो दृग अँसुवा बहाये हैं ॥
ठाढो कर जोरि 'विनै करी पै न धरी हिये
जीवै ब्रजभूमि ही सौ वचन सुनाये हैं ।
कैद करि साथ लिये दिह्योते छुडाय दिये
हरिदास तँवर ने आय प्राण पाये हैं ॥१६३॥

(श्री दिवाकरजी की कथा)

मूल छ०—परम भक्ति परताप धर्मध्वज
'नेजाधारी । सोतापति को सुयश बदन
शोभत अति भारी ॥ जानकि जीवन
चरण शरण धाती थिर पाई । नरहरि

१ सारंग राग । २ जबरदस्ती । ३ दिह्यो चलने की । ४ गम=
दंड जिसपर ध्वजा फहराई जाती है ।

गुरु परसाद पूत पोते चलि आई ॥ राम
उपासक छाप दृढ, और न कछु उर
आनियो । श्रोत्रि श्याम्य सन्तन सभा,
द्वितीय 'दिवाकर जानियो ॥१६३॥

(श्री लालदासजी की कथा)

मूल छ०—हृदय सु हरि गुण खानि सदा
सतसंग अनुरागी । 'पद्म पत्र' ज्यों रह्यो
लोभ की लहर न लागो ॥ विष्णु रात
की नोति 'बधेरै' त्यों तन त्याज्यो ।
भक्त बराती वृन्द मध्य दलह ज्यों
राज्यो ॥ खरी भक्ति 'हरिषोपुरै', गुरु
प्रताप गाढी गही । जीवत 'यश' पुनि
'परमपद' लालदास दोनों लही ॥१६४॥

(श्री माधवजी ग्वाल की कथा)

मूल छ०—निशिदिन यहै विचार 'दास'
जिहि विधि सुख पावै । तिलक दामसों
प्रीति हृदय अति 'हरिजन भावै ॥ परमा-

१ सूर्य । २ पद्मपत्रमिवाम्भसा । ३ बधेरा नामक ग्राम में ।
४ हरिषोपुर नामक ग्राम में । ५ कीर्ति । ६ श्री भगवद्गाम ।
७ भगवद्दास=सन्त ।

रथ सों काज हृदय स्वारथ नहिं आवै ।
 'दशधा मत्त' मराल सदा लोला गुण
 गावै ॥ 'आरत हरिगुण शील सम, प्रीति
 रीति प्रतिपाल की । भक्तन हित भगवत
 रची, देहो माधव ग्वाल की ॥१६५॥

(श्री प्रयागदासजी की कथा)

मूल छ०—मानस वाचा काय राम चरणान
 चित दीनो । भक्तन सों अति प्रेम भावना
 करि 'शिर लीनो ॥ रासमध्य' निर्वाण
 देह युति दशा दिखाई । 'आडो बलियो
 अंक महोत्सव पूरो पाई ॥ क्यारे कलश
 औली ध्वजा, विदुष श्लाघा भाग की ।
 अग्राचार्य प्रतापते, पूरी परी प्रयाग की ॥

(श्री प्रेमनिधिजी की कथा)

मूल छ०—सन्दर शील स्वभाव मधुर
 वाणो मंगल करु । भक्तन को सुख दन
 फरयो बहुधा दशधा तरु ॥ सदन वसत

१ प्रेमाभक्ति । २ हंस । ३ दीन । ४ माधेय । ५ परलोक गमन ।
 ६ आडा बलियाके समीप क्यारे नामक ग्राम के कलशोत्सव का आरंभ
 आडा नामक ग्रामके ध्वजोत्सवका पुरी प्रसाद दोनों ग्रामोंके बीचमें
 बैठकर पाया ।

निर्वेद सार भुक् जगत असंगी । सदाचार
 औदार्य नेम हरिदास प्रमंगी ॥ दया दृष्टि
 बसि आगरे, कथा लोक पावन कियो ।
 प्रकट अमित गुण प्रेमनिधि, धन्य विप्र
 ज्यो नाम दियो ॥१६७॥

प्रेमनिधि नाम करे सेवा अभिराम श्याम
 आगरे शहर निशि शेष जल ल्याइये ।

ब्रह्मा की ऋतु अति मार्ग में कीच भई
 भई चित चिन्ता कैसे 'अपरम आइये ॥

जोपै अन्धकारही में चले तो विगार होत
 चले यों विचार नीच छुवै न सुहाइये ।

निकमत द्वार तब देख्यो सुकुमार एक
 हाथ में 'ममाल' याके पात्रे चले जाइये ॥१६४॥

जानी यह वान पहुँचाये कहूँ जात यह
 अवही विलात भले चैन कोऊ धरी है ।

यमुना लों आया अचरज सो लगायो मन
 तन अन्हवायो मति बाहो रूप हरी है ॥

घट भरि धरयो शीश भट वह आय गयो
 प्राय गयो घर नहीं देखी कहा करी है ।

१ अन्वर्ष—विना किसीके छूये गतिवन्तापूर्वक । २ चरण ।

लगी 'चट पटी' अटपटी न समझ परै
'मटमटी' भई नई नैन नीर झरी है ॥५६५॥

कथा ऐसी कहैं जामैं गहैं मन, भाव भरे
कर कृपा दृष्टि दुष्टजन दुःख पायो है ॥
जायके सिखायो बादशाह उर दाह भयो
कही तिय भली को समूह घर छाया है ॥

कहैं चौपदार आय, चलो 'याहिवार' आप
भारी भरि प्रभु आगे धर शोर लायो हैं ।
चले तब संग गये पूछी नृप रंग कहा ?
तियन प्रसंग करो कहिके सुनायो है ॥५६६॥

कान्ह भगवान ही की बात सो बखान कहों
आय बैठ नारीनर लागै कथा प्यारी हैं ।
काहुको विडारै 'भिरकारे' नेक टारै विषे-
दृष्टि सों निहारै ताको लागै दोष भारी है ॥

कही तुम भली, तुव गलीही के लोग मोसों
आयके जताई वह रीति कछु 'न्यासी' हैं ।
बोल्हो याहि राखो सब करों निरधार नीके
चले चौबदार लौके रोके प्रभु धारी हैं ॥५६७॥
सोयो बादशाह निशि आयके सपन दियो
कियो वाको इष्ट वेष कही प्यास लागी है ।

१ लालसा । २ अनोखी । ३ कमक । ४ इमी समय ।

५ अलग ही=दूसरी ही ।

पीओ जल कही, अवखाने लौ बखाने तब
अनिही रीमाने को पियावै कोऊ 'रागी' है ॥
फेर मारी लात अरे सुनी नहीं बात मेरी
आप फरमावैं सोई प्यावै बडभागी है ।
सो तो तैने कैंद करयो सुनि अरवरयो, डरयो,
भरयो हिय भाव, मति सोवत सो जागी है ॥५६८॥
दौरे नर ताहि समै बेगि सो लिवाय लाये
देखि लपटायो पाँय नृप दृग भीजे हैं ।
साहिव तिमाये जाय अबही पियाओ नीर
और पै न पीवैं एक तुमही सो रीभे हैं ॥
लेओ देश गाँव सदा पाँयन सों लाग्यो रहों
'गहों' नहीं नेक धन, पाय बहु 'लीजे' हैं ।
मंगदे मसाल ताही काल में पठाये योंही
खुले सो कपाट लाल प्यायो जल धीजे हैं ॥५६९॥

(श्री द्वारदासजी की कथा)

मूल छ०—सदाचार गुरु शिष्य त्याग-
विधि प्रकट दिखाई । बाहर भीतर विपद
लगी नहिं कलियुग काई ॥ राघव रुचिर
सुभाव असत आलाप न भावै । कथा
कीरतन प्रेम मिल्यो सन्तन गुण गावै ॥

१ मेरी । २ श्री प्रेमनिधिजी ने कहा । ३ नष्ट हो गये हैं ।

ताप तोल पुगे निकष, घन अहरन होरो
सहत । दूबरो जाहि दुनिया कहै, भक्त
भजन माटो महत ॥१६८॥

(भक्त समूह वर्णन)

मूल छ०—हरि नारायण नृपति पद्म 'वेरछे
विराजै । गाँव 'हुसंगाबाद अटल अधव
भल छाजै ॥ 'भेलै तुलसोदास ख्यात-
भट देव कल्याणो । 'बोहित बोगाराम
'सोहिले परम सुजानो ॥ 'औलो परमा-
नन्द के, ध्वजा धर्म की भल गडी ।
दासन के डासन लगे, चौकस चौकी
ये पडी ॥१६९॥

(अथवा भक्त वृन्द वर्णन)

मूल छ०—देमा परगट दुनी रामबाई
हीरामणि । लाली नोरा लच्छि पोखरी
युगल जगत धनि ॥ खीचनि केशी धना
गामती भक्त उपासिनि । बादरायनी
विदित गंग यमुना रैदासिनि ॥ जेवा

१ ये सब ग्रामों के नाम हैं ।

हम्पा जाइसिनि, कुँवरि राय कीरति
अमल । अबला शरीर साधन सबल,
ये बाई हरि भक्ति बल ॥१७०॥

(श्रीकान्हरदासजीकी कथा)

मूल छ०—श्रीगुरु शरणौ आय भक्तिमार्ग
सत जान्यो । संसार धर्मको तज्यो भूँठ
अरु साँच पिछान्यो । ज्यों द्रुम शाखा
चन्द्र जगत साँ यहि विधि न्यारी । सर्व
भूत समदृष्टि गुणान गँभीर अति भारी ॥
भक्त भलाई बदन नित, कुबचन कबहूँ
नहिँ कह्यो । कान्हर सन्तन की कृपा,
हरि हिरदे लाहो लह्यो ॥१७१॥

(सपरिवार श्री केशव लदेराजीकी कथा)

मूल छ०—कहनी रहनी एक, एक प्रभु
पद अनुरागी । यश वितान जग तन्यो
सन्त सम्मत बडभागी ॥ तैसोई पृत
सपृत नूत फल जैसोई परसा । हरि
हरिदासन टहल कवित रचना पुनि

१ नानी-पौत्र ।

सरसा ॥ सुरसुरानन्द संप्रदाय दृढ
केशव अधिक उदार मन । 'लख्यो लटेरा
आन विधि, परम धरम अतिपीन पन ॥

(श्री केवलसामजी की कथा)

मूल छ०—भक्ति भागवत विमुख जगत
गुरु नाम न जानें । ऐसे लोग अनेक
ऐंछि सन्मारग आनैं ॥ निर्मल रति
निष्काम 'अजाते सदा 'उदासी । तत्व-
दर्शि तम हरण शील करुणाकी राशी ॥
तिलक दाम 'नवधा रतन, कृष्ण कृपा
करि दृढ दिये । केवल कलियुग विषय
अति, पतित जीव पावन किये ॥१७३॥

घर घर जाय कहैं यहै दान दीजे मोको
कृष्ण सेवा कीजे नाम लीजे चित लायके ।
देखैं वेपधारी दश बीम कहूँ अनाचारी
देव प्रभु सेवन को रीति दें सिखाय के ॥
करुणा निधान कोऊ सुने नहि कान दूज
'बैलको लगाया साटो, लोटे दया आनिके ।

१ दुर्बल । २ माया से । ३ उदासीन=तटस्थ । ४ नवधा भक्ति
रूपी रत्न ।

उड्डया प्रगट तन मनकी सचाई अहो
भयें नदाकार कहौ कैम समभायके ॥६००॥

(नरवरपुर नरेश श्री आमकरणजी की कथा)

मूल छ०—धर्म शील गुण सौव महा भाग-
वत राज ऋषि । पृथ्वीराज कुलदीप भीम
सुत विदित काल्ह शिपि ॥ सदाचार
अति चतुर विमल वाणी रचना पद ।
गूर सुधीर उदार विनय भलपन भक्तन
हृद ॥ सोतापति राधा सुवर, भजन नेम
कूरम धरचा । माहन मिश्रित पद कमल
आशकरणा यश विस्तरचा ॥१७४॥

नरवरपुर ताका राजा नरवर जानो
माहन जू धारि हिय सेवा नीके करी है ।
घरीदश मन्दिर में रहै चौकी चौपदार
पावत न जान कोऊ ऐसी मति हरी है ॥
परयो कोऊ काम आय अवही लिवाय ल्याओ
कही पृथ्वीपति कोऊ कान में न धरी हैं ।
आई फौज भारी सुधि दीजिये हमारी सुनि
बोहू बात टांगी परी अति म्वरभरी है ॥६०१॥

काहके पठाई 'कहो कीजिये लडाई' सुनि
 रुचि उपजाय चलो 'पृथ्वीपति' आयो है,
 परयो सोच भारी तब बात यों विचारि कही
 आप एक जाओ गयो अचरज पायो है ॥
 सेवा करि सिद्ध साष्टांगहूँक भूमि पर
 देखि बड़ी वेर पाँव खडग लगायो है ।
 कटिगई एडी ऐपै टेढीहु न भौह करी
 करि नित्य नेम रीति धीरज दिखायो है ॥६०२॥
 उठे चिक डारयो तब पाले को निहारि कियो
 मुजरो विचारि बादशाह अत रीके है ।
 हिनकी सचाई यह नेक न कचाई होत
 चरचा चलाय भाव सुनि मुनि भीजे है ॥
 बीते दिन कोऊ भक्त नृप सो समायो दुख-
 पायो 'पृथ्वीपति' सुनि 'भोग' हरि छाँज है ।
 करे विप्र सेवा ताहि गाँव लिखि न्यारं दिये
 'दाके' प्राण प्यारे लाड करो कहि धीजे है ॥६०३॥

(श्री हरिवंशजी की कथा)

मूल छ०—कथा कीरतन प्रीति सन्त सेवा
 अनुरागी । खरिया खुरपा रीति ताहि
 ज्यों सरबस त्यागी । सन्तापी सुदि

१ बादशाह । २ भगवान के भोग में कमी हो गई है । ३ मगध
 पुर नरेश श्री आसकरणी के ।

रीति असद आलाप न भावै । काल वृथा
 नहिं जाय निरन्तर गोविंद गावै ॥ शिप
 सपुत श्रीरंग को, उदित पारपद अंश
 के । निष्किंचन भक्तन भजे, हरि प्रताति
 हरिवंश के ॥१७५॥

(श्रीकल्याणजी की कथा)

नव किशोर दृढ व्रत अनन्य मारग
 इक धारा । मधुर वचन मन हरण
 सुखद जानत संसारा ॥ पर उपकार
 विचार सदा करुणा की राशी । मन वच
 सर्वस रूप भक्त पद रेण उपासी ॥
 प्रमदास सुत शोल सुठि, मान्यो कृष्ण
 'भुजान' के । हरि भक्ति भलाई गुण
 गभीर, बाँट परी कल्याण के ॥१७६॥

(श्री विठ्ठलदामजीकी कथा)

आदि अन्त निर्वाह भक्त पद रज
 व्रतधारो । रह्यो जगत सों ऐंठ तुच्छ
 जाने संसारो ॥ प्रभु सेवा पितु पथति

१ चतुर मधवा मित्र ।

प्रकट कुलदीप प्रकाशी । महत सभा में
मान जगत जानै रैदासी ॥ पद पढत
भई परलोक गति, गुरु गोविंद युग फल
दियो । विठलदास हरि भक्ति का, दुहुँ
हाथ लाडू लियो ॥१७७॥

(भक्त समूह वर्णन)

मूल छ०—काहव श्रोगं सुमति सदानंद
सर्वस त्यागो । श्यामदास लघुलम्ब
अनन्य लागे अनुरागा ॥ मरू मुदित
कल्याण परशु वंशी नारायण । चेता
ग्वाल गुपाल शम्भु लीला पारायण ।
सन्त सेव कारज किया, तोपत श्याम
सुजान को । भगवन्त रचे भागो भगत,
भक्तन के सम्मान को ॥१७८॥

(बीकावत नृपति श्री हरिदासजी तँवर की कथा)

मूल छ०—शरणागतको शिवी दान दाधीच
टेक बलि । परमधर्म प्रह्लाद शीश जग
देव देन कलि । बीकावत बानैत भक्ति-
प्रण धर्म धुरन्धर । तँवर वंशके दीप सन्त

सेवा नित अनुसर ॥ 'पार्थ' पीठ अचरज
कवन सकल जगतमें यशालियो । तिलक-
दाम परकाम हित, हरीदास हरि
निर्मयो ॥१७९॥

प्रह्लाद आदि भक्त गुण गाथे भागवत
देखे एक ठौर आये मत्र हरिदाम में ।
रीति देनमाहिं जगदेव जो बखान कियो
जानत न कोऊ सुनो करौं ले प्रकाश में ॥
रही एक नटी 'शक्ति' रूप गुण जटा गावै
लागै चटपटी मोद पावै मृदुलाम्य में ।
राजा रिक्तवारि करे देवे को विचार पै न
पावै 'मार' काट शीश 'रख्यो' तेरे पास में ॥६०४॥
दियो कर दाहिनों में यामों नहीं पावों कहूँ
मुन्यों एक राजा भेद भाव मो बुलाई है ।
नृत्य कियो गाई रीति कही लेखो आई देहु
झोड़यो कर बावों रिस भरि मो सुनाई है ॥
इतो अपमान, हाथ दाहिनों में दियो अहो
नृप जगदेवजूको ऐसी कहा पाई है ।

१ अनुनकी गद्दी । २ देवी । ३ अवनार । ४ तन्व याग्य वस्तु ।
५ जगदेवजी ने कहा यस्तक काटले । ६ नटी ने कहा मैं आपहो के
पास (चरोहर) रखती हूँ अर्थात् जब आवश्यकता होगी तब
लेलूंगी ।

तामों दश गुणी लीजे मोको सो दिखाय दीजे
दर्ह नहीं जाय 'क्यों हूँ मोहि ये सुहाई है ॥६०५॥

कितो समझायो कहै लाओ यही 'जक लागी
गई वड़ भागी पास वस्तु मेरी दीजिये ।

काटि दियो शीश तन रघो ईश शक्ति लम्बा
लाई वकशीश थार टाँकि देखि लीजिये ॥

ग्योलके दिखायो नृप मुबित गिरायो तन
धन की न बात अब याको कहा काजिये ।

मैं जो दीन्हों हाथ जानि, आनि श्रीवा जोरि दीन्हों
लिन्हो वही पद रीफि तन सुनि जीजिये ॥६०६॥

सुनी जगदेव रीति प्रीति नृपराज मुता
पितामों बग्वानि कही उनही का दीजिये ।

तब तो बुलाये समझाये बहु भाँति खोलि
बचन मुनाये अजी वेटी मेरी लीजिये ॥

नख्यो शतवार तब कह्यो डारो मारि चले
मारिये को बोली वह मारो मत भीजिये ।

दृष्टिमों न देखै कहो ल्याओ काटि भँडलाये
चाहै शीश आँखन को गयो फिरि रीफिये ॥६०७॥

निष्ठा रिक्तवार रीति कीन्ही विमत्तार यह
सुनो माधु सेवा हरिदामजी जाँ करी है ।

परदा न मन्त मोँ है देत है अनन्त सुख
रह्यो रुख जानि भक्त मुता चित्तधरी है ॥

दोऊ मिलि मोये ऋतु ग्रीष्म की छात पर
गात पर गात नींद मुधि नहि परी है ।

दातन मो करिये को चढे निशिशेष आप
चादर उढाय नीचे आये ध्यान हरी है ॥६०८॥

जागे जब दोऊ अरवरे देखि चादर को
पेखि पहिचानी मुता पिताही की जानी है ।

मन्त दृग नये चले गैठे मग पग लये
गये लै एकान्त में यो विनती बग्वानी है ॥

नेक मावधान होक कीजिये निशंक काज
दुष्टराज छिद्रपाय कहैं कट्ट वाणी है ।

तुमरो जु नाम धरें जर सुनि दियो मेरो
छरें निन्दा आपनी न होत सुख दानी है ॥६०९॥

इतनी जनावनी में भक्ति को कलंक लग
ऐपै शंक वही साधु घटती न भाइये ।

भई लाज भारी विषे वास धोय डारी नीके
जीकी दुःख राशि चाहैं कहूँ उठजाइये ॥

निपट मगन कियो नाना विधि सुख दियो
दियो पै न जान मिलि लालन लडाइये ।

गोविन्द 'अनुज जाके बाँसुरी को 'माँचो प्रण
मनमें न लायो नृप कहे विधि गाह्ये ॥६१०॥

(श्रीकृष्णदासजी स्वर्णकार की कथा)

मूल छ०—तान मान स्वर ताल सुनय
सुन्दर मुठि सोहै । सुधा अंग भ्रमंग
गान उपमाकों को है । रत्नाकर संगीत
रागमाला रंग राशी । रिभये राधा लाल
भक्तपद रेणु उपासो ॥ स्वर्णकार खरग
सुवन, भक्त भजन प्रण दृढ लियो ।
नन्दकुँवर कृष्णदासको, निजपग ते
नूपुर दियो ॥१८०॥

कृष्णदास हे सुनार राधा-कृष्ण सुखमार
सेवाकरि पाछे नित्य नृत्य विमत्तारिये ।
होकर मगन काहु दिन सुधि भूली एक
पग गिरयो नूपुर सो रही न सँभारिये ॥
लाल अतिरंग भरे जानी जति भंग भई
पाँय निज खोलि आय बाँधो सुख सारिये ।

१ गोविन्दजी आपके छोटे भाई थे । २ इनके भगवान के आगे
वंशी बजाने का प्रण था । बादसाह के कहने पर भी नहीं सुनाई यही
प्रण की सत्यता थी । ३ संगीत रत्नाकर और रागमाला पुस्तकों
के नाम हैं ।

फेर सुधि आइ देखि धारा ले बहाई नैन
कीरति यों लाई जग भक्ति लागी प्यारिये ॥६११॥

(सन्यासी भक्त गण)

मूल छ०—चित्सुख टाकाकार भवित सर्वो-
परि राखी । श्रीदामोदर तीर्थ राम अर्चन
विधि भाखी । चन्द्रोदय हरि भक्ति
नृसिंहारण्य जु कोन्ही । मधुसदन माधव
सु परमहंस कीरति लोन्ही ॥ राम भद्र
परबाध पुनि, जगदानंद कलियुग सु
धनि । परमधर्म प्रतिपोष कहँ, ये सन्यासी
मुकुट मणि ॥१८१॥

(श्रीप्रबोधानन्द सरस्वतीजी की कथा)

श्रीप्रबोधानन्द बड़े रसिक आनन्द कन्द
श्री चैतन्यचन्द्रजू के पारपद प्यारे हैं ।
'राधाकृष्ण-कुंजकेलि निपट नवेली कही
भेलि रसरूप दोऊ किये दृग तारे हैं ॥
वृन्दावन वासको हुलास लै प्रकाश किया
दियो सुख सिंधु कर्म धर्म सब तारे हैं ।
ताहि मुनि मुनि कोटि कोटि जन रङ्ग पाय
विपिन मुहाये बसि तन मन वारे हैं ॥६१२॥

१ पुस्तक का नाम है ।

(श्रीद्वारिकादासजी की कथा)

मूल छ०—सरिता कूकस गाँव सलिल में
ध्यान धरचो मन । राम चरण अनुराग
सुदृढ़ जाके साँचो पन । सुत कलत्र
धन धाम सबन सों सदा उदासी ।
कठिन मोह को फन्द तरकि तोरी कुल
फाँसी ॥ कीलह कृपा बल भजन के, ज्ञान
खड्ग माया हनी । अष्टांग योग तन
त्यागियो, द्वारिकादास जाने 'दुनो ॥१८२॥

(श्रीपूर्णदासजी की कथा)

मूल छ०—उदय अस्त परबतन गहर
मधि सरिता भारी । योग युक्ति विश्वास
तहाँ दृढ़ आसन धारी । व्याघ्र सिंह
गर्जते तदपि कछु शंक न मानें । निज
अपान जो पवन उलटि ऊरघ सों आनें ॥
साखि शब्द निर्मल कहे, कथिया पद
निर्वाण । पूर्ण प्रकट महिमा अनंत,
करिहै कौन बखान ॥१८३॥

१ पुत्र पौत्र । २ दुनिया ।

श्रीलक्ष्मण भट्टजीकी कथा

मूल छ०—सदाचार मुनि वृत्ति भजन
भागवत उजागर । भक्तन सों अति प्रीति
भक्ति दशधा को आगर । सन्तोपी मुठि-
शील हृदय स्वारथ नहि लेशी । परमधर्म
प्रतिपाल सन्त मारग उपदेशी ॥ श्रीभाग-
वत बखानि के, क्षीर नीर विवरण करचो ।
रामानुज पद्धति प्रताप, भट्ट लक्ष्मण
अनुसरचो ॥१८४॥

(आचार्यपाद पयोहारी श्रीकृष्णदासजी की दूसरी कथा)

मूल छ०—कृष्णदास कलिजोति न्यांति
'नाहर' पल दीयो । अतिथि धर्म प्रति-
पालि प्रकट यश जगमें लीयो । उदासी-
नता अवधि 'कनक' 'कामिनि' नहि
रातो । रामचरण मकरंद रहत निशि
दिन मद मातो ॥ गलते गलित अमित
गुण, सदाचार सुठि नीति । दधोचि
पाछे दूसरेकरी, कृष्णदास कलि जीति ॥

१ सिंह । २ मांस । ३ धन । ४ स्त्री ।

बैठे हे गुफा में देखि सिंह द्वार आय गयो
 लियो यों विचारि ये अतिथि आज आयो है ।
 दर्द जाँघ काटि डारी कीजिये अहार अन्न
 महिमा अपार धर्म कठिन बतायो है ॥
 दियो दरसन प्रभु साँच पै न रह्यो जाय
 निपट सचाई दुःख जान्यो न विलायो है ।
 अन्न जल देवे ही में स्वीकृत जगत नर
 कर कौन सकै जन मन भरमायो है ॥६१३॥

(श्रीगदाधरदासजी की कथा)

मूल छ०—लाल विहारी जपत रहत
 निशि वासर फूल्यो । सेवा सहज हनेह
 सदा आनंद रस भूल्यो । भक्तन सों
 अति प्रीति रोति सबही मन भाई ।
 आशय अधिक उदार रसन हरि करति
 गाई ॥ हरि भरोस हिय आनिके, आन
 आस स्वपने न की । भलीभाँति निबही
 भगति, सदा गदाधरदास की ॥१८६॥

बुद्धानपुर ढिग राग तामें बैठे आय
 करि अनुराग गृह त्यागि पागे श्याम सों ।
 गाँव में न जात लोग किने हा हा ग्यात मुख
 मान लियो मान नहीं काम और काम सों ।

परयो अति मेह दह वसन भिजाय डार
 तब हरि प्यारे बोले स्वर अभिराम सों ।
 रहे एक साह भक्त कही जाय उन्हें ल्याओ
 मन्दिर कराओ तेरो भयो घर दाम सों ॥६१४॥
 नीठ नीठ ल्याये हरि वचन मुनाये जव
 तब करवायो ऊँचो मन्दिर मँगारिके ।
 प्रभु पधराये नाम लाल ओ विहारी श्याम
 अति अभिराम रूप रहत निहारिके ।
 करै साधु सेवा जामै निपट प्रमन्न हान
 वामी न रहत अन्न मोवै पात्र भाँक ।
 करत रमोई सोई राखी ही छुपाय मासों
 घर आये सन्त आप कही ज्याँवा प्यारके ॥६१५॥
 बोल्यो प्रभु भूखे रहे याके लिये राख्यो कछु
 भाष्यो तब आप काटो भोर और आवगो ।
 करके प्रसाद दियो लिया सुख पाय मय
 सेवा रीति देखि कही जग यश गावैगा ।
 प्रात भये भूखे हरि गये तीन याम हरि
 रहे क्रोध भरि कहै कबधो छुटावगो ।
 आयो कोऊ ताही समै दोषगो रूपैगा धरे
 बोले गुरु मार्गे शीश लेक कितां पावैगो ॥६१६॥
 डरयो वह साह मत मोपै कछु कोष कियो
 कियो समाधान सब बात समझाई है ।

तब तो प्रसन्न भयो अन्न लगे जितो देत
 सेवा सुख लेत साधु रुचि उपजाई है ।
 रहे कछु दिन पुन मधुपुरी वास लियो
 पियो ब्रज रस लीला अति सुखदाई है ।
 लाल ले लड़ाये सन्त नीकें भुगताये गुण
 जाने जिते गाये मति सुन्दर लगाई है ॥६१॥

(स्वामी श्रीनारायणदासजी की कथा)

मूल छ०—भक्ति योग युत सुदृढ देह
 निज बल करि राखी । हृदय स्वरूपा-
 नन्द लाल यश रसना भापी । परिचय
 प्रचुर प्रताप ज्ञानि मणि रहस सहायक ।
 श्रीनारायण प्रकट मनो लोगन सुख-
 दायक ॥ नित सेवत सन्तन सहित,
 दाता उत्तर देश गति । हरि भजन सीव
 स्वामी सरस, श्रीनारायणदास अति ॥

आये वद्वानाथ जू मों मथुरा निहारि नैन
 नैन भयो रहे जहाँ केशोजू को द्वार है ।
 आनै दरमन लोग जूतिनको सोम दिये
 रूपको न भोग होत कियो यों विचार है ।

१ कर्ज बुकाये=दिये ।

करै रखवारी सुख पावत हैं भारी कोऊ
 जानै न प्रभाव उर भाव सो अपार है ।
 आयो दुष्ट पोट पुष्ट बाँधि सोई शीश दई
 लेइ मग चले ऐमे धीरज को सार है ॥६१॥
 कोऊ बड़े नर मग देखि पहिचान लिये
 कियो परणाम भूमि परि भरि नेहको ।
 जानके प्रभाव पाँव लीन्हे त्योंही दुष्टने ह
 कष्ट अति पाया छूट्यो अभिमान देहको ।
 बोले आप चिंता जनिकर तेरो कामहोत
 नैन नीरसात मुख देखो नहीं गेहको ।
 भयो उपदेश भक्ति देश उन जान्यो माध
 शक्तिको विशेष यहाँ जानो भाव मेहको ॥६१॥

(श्रीभगवानदासजी की कथा)

मूल छ०—भजन भाव आरूढ गूढ गुण
 बलित ललित यश । श्रोता श्रीभागवत
 रहस ज्ञाता अक्षर रस । मथुरापुरी
 निवास आस पद सन्तन इकचित ।
 श्रीयुत खोजी श्याम धाम सुखकर अनु-
 चर हित ॥ अति गम्भीर सु धीर मति,
 हुलपत मन जाके दरस । भगवानदास

श्रीसहित नित, सुहृद शील सज्जन
सरस ॥१८८॥

जानबेका प्रण पृथ्वीपति मन आई सो
दुहाई नै दिवाई माला निलक न धारिये ।
मानि अण प्राण लोभ कंतिक न त्यागि द्विये
द्विये नही जान जानि बेगि मार डारिये ।
सम्मानदाम उर भक्ति मुख राशि भरयो
करायो नै सुदेश वेष नाति लागी प्यारिये ।
रीक्या नृप देखि, रीक मथुरा निवास पायो
मन्दिर करायो हरिदेव सो निहारये ॥६२०॥

(श्रीकल्याणजी की कथा)

मूल छ०—जगन्नाथ को दाम निपुण अति
प्रभु मनभायो । परम पारपद समझि
जानि प्रिय निकट बुलायो । प्राण पयानी
करत नेह रघुपति सों जोरयो । सुत
दारा धन धाम नेह तिनका ज्यों तोरयो ।
कौंधनो ध्यान उरमें लस्यो, राम नाम
मुख जानकी । भक्तन पक्ष उदारता,
यह निबहो कल्याण की ॥१८९॥

(श्रीसन्तदामजी एवं श्रीमाधोदामजी की कथा)

मूल छ०—सन्तदाम सद्वृत्ति जगत छोई
करि डारयो । महिमा महा प्रवोण भक्ति,
वित् धर्म विचारयो । बहुरो माधोदाम
भजन बल परच्यो दीन्हों । करि योगिन
सों वाद वसन पावक प्रति लीन्हों । परम
धर्म विस्तार हित, प्रकट भये नाहिन
तथा । सादर शोभू रामके, सुनो सन्त
तिनकी कथा ॥१९०॥

(श्रीकान्हड़जी एवं श्रीआत्मारामजी की कथा)

मूल छ०—कृपणा भक्ति को स्तम्भ ब्रह्म-
कुल परम उजागर । क्षमाशील गंभीर
सर्व लक्षणा को आगर । सर्वस हरिजन
जानि हृदय अनुराग प्रकाशैं । असन
वसन सम्मान करत अति उज्ज्वल
आशैं ॥ शोभूराम प्रसाद तें, कृपा दृष्टि
सब पर बसी । बूडिये विदित कान्हड़
कृपा, आत्माराम आगम दृषी ॥१९१॥

? छूँछ=नि.मार । २ सहोदर-आई । ३ ग्रामका नाम ।

(प्रथम भक्तमाली श्रीगोविन्ददासजी की कथा)

मूल छ०—रुचिर शील 'घननील' लील
रुचि सुमति सहित पति । विदित भक्त
अनुरक्त व्यक्त बहु चरित चतुर अति ।
लघु दीर्घ स्वर सिद्ध वचन अविरोद्ध
उच्चारण । विश्ववाम विश्वास दास परि
चय विस्तारण ॥ जानि जगतहित सब
गुणनि, सु समझि नारायणदास दिय ।
भक्त रत्न माला सुधन, गोविन्द कण्ठ
विकास किय ॥१९२॥

(महाराजा श्रीजगतमिहजी की कथा)

मूल छ०—श्रीनृत नृपमणि जगत सिंह
दृढ भक्ति परायण । परम प्रीति किय
स्ववश शील लक्ष्मी नारायण । जामु
सुयश सहज ही कुटिल कलि कल्पजु
घायक । आज्ञा अटल सुप्रकट सुभट कट-
कनि सुखदायक ॥ अति प्रचंड मार्तण्ड
सम, तम खंडन दीर्घ वर । भक्तेश

१ घनश्याम श्रीरामजीकी लीला । २ प्रकट ।

भक्त भव तोषकर, सन्त नृपति 'वासा
कुँवर ॥१९३॥

'जगत को प्राण मन सेवा श्रीनारायणजु
भया पैसा पारायण डोला रहै संग ही ।
तरिखे काँ चले तब आगे मदा पाछे रहै
ल्यार्थ जल शीश ईश भयो हियो रंगसी ॥
सुनि यशवन्त जयनिह के हुलाम भयो
देख्यो दिल्ली माँझ नीर ल्यावन अभंग ही ।
भूमि परि विनै करी धरी देह तुमही ने
जाने पायो नेह मल भाजे यों प्रमंग ही ॥६२१॥
नृप जयनिहजी मो बोले कहा नेह मरे
तुम्हरी बहिन की तो गन्ध हुन पाऊँ मैं ।
नाम दीपकमणि मो बड़ी भक्तिमान जानो
वहै रम्यगनि गेपै कछुक लडाऊँ मैं ।
सुनि मुख भयो भारी हुती रिम वामों टारी
लिये गाँव काटि फेर दिये हरि ध्याऊँ मैं
निग्विके पटाई बाँडे काँ मोई करें दीजे
लाजे माधु सेवा करि निशिदिन गाऊँ मैं ॥६२२॥

(श्रीगिरिधर खालजी की कथा)

मूल छ०—प्रेमी भक्त प्रसिद्ध गान अति

१ माताजीका नाम है । २ श्रीजगतमिहजी ।

गद्गद वाणी । अन्तर्प्रेभुसों प्रीति प्रगट
रह नाहिन छानी । नृत्य करत आमोद
विवस तन वसन विसारै । हाटक पट
हितदान रीति तत्काल उतारै । 'माल
पुरे मंगल करन, रास रच्यो रस रंगका ।
गिरिधरन ग्वाल गोपालको, सखा
साँचलो संगको ॥१९४॥

गिरिधर ग्वाल साधु मेरा ही को ग्वाल जाक
देखिके निहाल होत प्रीति माँची पाई है ।

मन्त तन छूटे हूँ पे लेत चरणामृत जो
और मव रीति कहो कापे जात गाई है ॥

भये द्विज पंच एक ठोर सो प्रपंच मान्यो
आनि मभा माँक कहें छोड़ो न सुहाई है ।

जाके हो अभाव सो न लेवो, मे प्रभाव जानो
मृतक यों बुद्धि ताको चारो सुनि भाई है ॥६२३॥

(श्रीगोपालीपाईजी की कथा)

मूल छ०-प्रगट अंगमें प्रेम नेम सों मोहन
सेवा । कलियुग कलुष न लग्यो दास तें
कवहुँ न छेवा । वाणी शीतल सुखद
सहज गाँविंद धुनि लागी । लक्षणा कला

१ मालपुरा नामक ग्राम में । २ अलगाव ।

गाँभीर धोर मन्तन अनुरागी ॥ अन्तः
शुद्ध सदा रहे, रभिक भक्ति निज उर
धरी । गापोली जनपापका, जगत यशादा
अवतरी ॥१९५॥

(श्रीरामदासजी की कथा)

मूल छ०-शीतल परम मृशील वचन
कामल मुख निकसै । भक्त उदित रवि
देखि हृदय वारिज जिमि विकसै । अति
आनंद मन उमगि मन्त परिचर्या करई ।
चरण धोय दंडवत विविध भोजन
विस्तरई ॥ 'बछवन निवास विश्वास हरि,
युगल चरण उर जगमगत । रामदास
रस रीति सों, भलीभाँति सेवत भगत ॥१९६॥

सुनि एक साधु आया भक्ति भाव देखवैको
बैठे रामदास कहै रामदास कौन है ।

उठे आप धोये पाँव आनै रामदास अब
रामदास कहो मेरे चाह औ गोण है ॥

बलो जू प्रसाद लीज, दीज रामदास आनि
यही रामदास पगधारे निज भोन है ।

१ वत्सवन वृन्दावनके निकट है ।

लफटानो पाँयन मों चावन ममात नाहीं
 भावन मों भरयो हियो छायो यश जौन है ॥६२४॥
 वेटीको विवाह घर बडो उतमाह भयो
 किये पकवान नाना कोठे माँक धरे हैं ।
 करं रसवारी सुत नाती दिये तारो रहें
 और ही लगाय तानी म्यो ल्यो नही डरें हैं ॥
 आये गृह सन्न निन्हें पोह बंधवाय दयी
 पायो सो अनन्त सुख ऐस भाव भरे हैं ।
 सेवा श्रीविहारीलाल गार्ड पाक स्वच्छताई
 मेरे मन भाई सब साधुद्विय हरे हैं ॥६२५॥

दिनबर श्रीगणेशजीकी कथा

मूल छ०—भक्ति ज्ञान वैराग्य याग
 अन्तर्गति पाग्यो । काम क्रोध मद मोह
 लोभ मत्सर सब त्याग्यो ॥ कथा कर-
 तन मगन रहे आनंद रस भूल्यो । सन्त
 निरखि मन मुदित उदित रवि पंकज
 फूल्यो ॥ वैर भाव जिन द्रोह किय, तासु
 पाग खसि भुईं परा । विप्र सारस्वत
 घर जनम, रामनाथ हरि रति करि ॥३५७॥

१ मस्तक की पगड़ी । २ खिसककर । ३ भूमिपर ।

श्रीभगवन्तजीकी कथा

मूल छ०—कुंज विहारो केलि सदा अभ्य-
 न्तर भाग्ये । दम्पति सहज सनेह प्राणि
 परमिति परकार्ये ॥ अनलि भजन
 रस रीति पुष्टि मारग की देखी । विधि
 निषेध बल त्यागि पगो रति हृदय
 विशेषी ॥ माधव सुत सम्मत रसिक
 तिलक धरि दाम सेव लिय । श्रीभगवन्त
 उदार यश, रस रसना आस्वाद किय ॥

मूवा के दिवान भगवन्त रमवन्त भये
 वृन्दावन वागिनकी सेवा ऐसी करी है ।
 विप्र वा गुमाई माधु कोई ब्रजवासी जाय
 देत बहुधन एक प्रीति मतिदारी है ।
 सुनी गुरुदेव अधिकारी श्रीगोविन्द देव
 नाम हरिदाम जाय देखें चित्तधरी है ।
 योग्यताई सीमा प्रभु दूध भात माँगि लियो
 कियो उतमाह कब देखें झरवरी है ॥६२६॥
 सुन्यो गुरु आवत अमावत न क्यों हैं अङ्ग
 रंगधरि तियामो यों कही कहा कीजिये ।

१ अनन्य । २ प्रीति । ३ कही तिल धनी वैष्णव मात्रकी सेवा ग्रहण की ।

बोली घरवार पट सम्पति भंडार सब
 भेट करि दीजे एक धोनी धारि लीजिये ॥
 रीझे सुनि वाणी माँची भक्ति तूही जानी मर
 अदि मनमानी कहि आग्ये जल भीजिये ।
 यही बात परी कान श्रीगुसाईं लई जानि
 आये फिरि वृन्दावन प्रण मनि धीजिये ॥६२॥
 गयो उत्साह उरदाह कां न पागवार
 कियो लै विचार आजा माँगि वन आये हैं ।
 रहे मुख लहे नानापद रचि कहे, एक
 रस निरवहे, ब्रजवासी जा छुटाये हैं ॥
 कीन्ही घर चोरी तरु नेक नामा मोरी नाहि
 बोरि मति रंग लाल प्यारी दृग आये हैं ।
 बडे कडमारी अनुरागी रति जागी पिता
 माधव रसिक बात सुनो जिमि पाये हैं ॥६२॥
 आयो अन्तकाल जानि वेमुध पिछानि मव
 आगरे ते लेके चले वृन्दावन जाइये ।
 आये आधी दूर मुधि आई बोले चूर हूँ के
 कहाँ लिये जात कूर कही जाई आइये ॥
 कहाँ फेरो तन वन जायये को पात्र नाही
 जरे बास आवै प्रिय प्रियाको न भाइये ।
 जानदारो हागो मोही जायगो युगल पाम
 ऐसे भाव राशि नाही ठौर चलि आइये ॥६२॥

श्रीलालमती बाईजीकी कथा

मूल छ०—गौर श्याम सौ प्राति प्रीति
 यमुना कुंजन सौ । वंशोवट सौ प्रीति
 प्रीति ब्रजरज पुंजन सौ ॥ गोकुल गुरु-
 जन प्रीति प्रीति वन बागह वन सौ ।
 पुर मथुरा सौ प्रीति प्रीति गिरि गांवधन
 सौ ॥ बास अटल वृन्दाविपिन, दृढ़
 करि सो नागरि कियो । दुर्लभ मानुष
 देह का, लाल मती लाहो लियो ॥१९९॥

(मक्त कहिमा)

मूल छ०—कविजन करत विचार बडा को
 ताहि भनोजे । काउ कह अवनी बडी
 जगत आधार बनोजे । सो धारी शिर
 शेष शेष शिव भूषण कीन्हां । शिव
 आसन केलाश भुजा भरि रावण लोन्हो ॥
 रावण जोत्यो बालि 'सो, बालि राम
 इक शर दँडे । अग्र कहै त्रय लोक में,
 'हरि उरधारे ते बडे ॥२००॥

१ उस वाली का । २ पंखे सर्वोत्कृष्ट श्रीरामजी को जिनने
 अपने हृदय में रख लिये वे भक्त ही बडे हैं ।

(भक्त यश महिमा)

मूल छ०—'नंह परपर अवट निबह
चारोंयुग आयो । अनुचर को उत्कर्ष
श्याम अपने मुख गायो । ओत प्रात
अनुराग प्रीति सबही जग जानै । पुर
प्रावशत रघुवीर भृत्य कोरतिहि बखानै ॥
'अग्र अनुग गुण वरणाते, सीता पति
नित होत वश । हरि सुयश प्रीति हरि-
दास के, त्यों हरि भावै दास यश ॥२०१॥

(सन्त उत्कर्ष)

मूल छ०—'दुर्वासा प्रति स्वयं दास वशता
हरि भाखी । ध्रुव गज पुनि प्रह्लाद राम
शबरो फल साखी । राजसूय यदुनाथ
चरणा धो जूठ उठाई । पांडव विपत्ती
हरी 'दियो विष विषयापाई ॥ कलि
विशेष परचे प्रगट, आस्तिक हूँ के चित

१ भगवान और भक्तोंमें स्नेह । २ लंका विजय करके लौटने पर सर्व
मयम श्रीगुरु वशिष्ठादि से दासोंका ही यश कहा है । ३ श्रीभगवाचार्यजी
कहते हैं कि दासों का गुण वरण करने से श्रमसाकान्त सदा वश में
हो जाते हैं । ४ श्रीअम्बररीषजी की कथा में । ५ श्रीचन्द्रदासजी ने

दाका

]

कपसंहार दोहा

५६५

धरा । उत्कर्ष सुनत शुभ सन्तको, अच-
रच कोऊ जनि करो ॥२०२॥

दोहा

पादप की जड़ सौंचते, पावै अँग अँग
पोष । त्यों 'पूरबजन वरणा ते, सब
मानिय सन्तोष ॥२०३॥
भक्त जिते भूलाक में, कथे कौन पै जाय ।
समुद्र पान इच्छा करै, कहँ 'चिरि पेट
समाय ॥२०४॥

श्रीमूरति सम भक्त सब, लघु बड़ गुणान
अगाध । आगे पीछे वरणाते, जनि
मानिय अपराध ॥२०५॥

फल को शाभा लाभ तरु, तरु शोभा
फल हाय । गुरु शिष्य की कीर्ति में,
अचरज नाही काय ॥२०६॥

चार युगन में भक्त जे, तिनके पद की
धूरि । सरवस शिर धरि राखिहाँ, मेरी
जीवन भूरि ॥२०७॥

१ परानायकों के वर्णनसे । २ विद्विद्या ।

जग कोरति मंगल उदय, तीनों ताप
नशाहिं । हरिजन के गुण वरणा ते हरि
हृदि अटल बसाहिं ॥२०८॥

हरिजन को यश वरणा ते, करै अमृया
आय । यहाँ उदर बाढे व्यथा, अरु पर
लोक नशाय ॥२०९॥

हरी मिलन की आस ज्यो, तो हरिजन
गुण गाव । 'भुंजे' बोज ज्यो सुकृत नतु,
जन्म-जन्म पछिताव ॥२१०॥

'भक्तदाम संग्रह करै, कथन श्रवण अनु-
मोद । सा प्रभु प्यारी पुत्र ज्यों, बढे
हरि का गोद ॥२११॥

अच्युत कुल यश बेर डक, जाकी मति
अनुराग । श्रीहरि की दृढ भक्ति महँ,
तिनको निश्चय भाग ॥२११॥

भक्तदाम जिन जिन कथी, तिनकी

१ नहीं तो किये हुए सब पुण्य उमी तरह व्यर्थ हो जायगे जैसे
भुंजा हुआ अन्न बीज रूप में बोने से उगाया ही नहीं । २ भक्तमाल ।

जूठन पाय । मति अनुहर द्वै अक्षरें,
कीन्हो 'शिलो' बनाय ॥२१३॥

काहू के बल 'जोग' जग, कुल करणी
की आस । भक्तमाल श्रीअग्रपद, उर
'नारायण' दास ॥२१४॥

(टीकाकारके श्री गुरुदेवजीका वर्णन और उपसंहार)

रसिकाई कविताई जिन दीनी तिनपाई
भई मरमाई द्विय 'नव नव' चाव है ।

उर रंग भवन में राधिका रमण बसे
लसे ज्यो मुकट मध्य प्रनिविष्ट भाव है ॥

रसिक समाज में विराज रमराज कहैं
चहैं मुख सब फूलों सुख ममुदाय है ।

जनमन हरि लालमनोहर नाम पायो

'उन्हू' को मन हरि लीनो नाने राय है ॥६३०॥

इनही के दास दास दास प्रियादास जानो
ताने ले बग्यानों यह टीका मुग्धदाई है ।

१ एकत्रिन । २ योगाभ्यास । ३ यज्ञानुष्ठान । ४ श्रीनागचणदास
(नामा), स्वामीजी कहते हैं कि हमारे हृदय में एक भक्तों की पक्ति
और श्रीअग्रदेवाचार्यजी के चरणों की ही आशा है । ५ नया नया ।
६ पगवान का भी ।

गोवर्धन नाथजू के हाथ मन परयो जाको
करयो वाम वृन्दावन लीला मिलि गाइ है ॥

मति अनुमान कद्यो लख्यो मुख सन्तन के
अन्त को न पावै जाई गावै हिय आई है ।

घट बढ जानि अपराध मेरो क्षमा कीजे
साधु गुण आद्री यह मानि मै सुनाई है ॥६३१॥

कीन्ही भक्तमाल सुरमाल नामा स्वामी जू ने
तरे जीव जाल जन जन मन मोहनी ।

भक्ति रस बोधिनी सुटीका मति शोधिनी है
बाँचत कहत अथ लागै अति मोहनी ॥

जोपे प्रेम लक्षणा की चाह अवगाहो याहि
मिटे उर दाह नेक नैननहू जोहनी ।

टीका और मूल नाम भुलि जात मुनै जब
रसिक अनन्य मुख होत विश्वमोहनी ॥६३२॥

नामा जू को अभिनाय पूरण लै कियो मैतो
ताकी साखी प्रथम सुनाई नीक गायके ।

भक्ति विश्वास जाके ताही मो प्रकाश कीजे
भीजै रंग हियो लीजे मन्तन लड़ायके ।

संवत प्रसिद्ध दश मात शत उन्हतर
फलगुन माम बढी मममी निवारके ।

नारायणदास सुखरास भक्तमाल लोके
प्रियादास दास उर बसो रहो आयके ॥६३३॥

आगमें जराओ लके जलमें डूबाओ भावे
सूलीपै चढाओ घोर गरल पिवाय बी ।

बीछू कटवाओ घोर साँप लपटाओ हाथी
आगे डरवाओ ईति भीति उपजाय बी ।

सिंहपै खवाओ चाहे भूमि गडवाओ तीखी-
अनी विंधवाओ मोहि दुःख नहीं पायबी ।

ब्रज जन प्राण कान्ह वात यह कान करो
भक्ति मो विमुख ताको मुख न दिखायबी ॥६३४॥

— :: :: —

इति श्री अनार्य वैदिक श्री सम्प्रदाचार्य रमिकाधिराज
अनन्त श्री अग्रदेवाचार्य चरण कमल चंचरीक
कहण वरुणालय स्वामी श्री नारायणदासजी
उपनाम श्रीनाथ स्वामीजीकी कृत

भक्तमाल

(सन्त श्रीप्रियादासजी कृत भक्तिरसबोधिनी टीका एवं
जानकीदास श्रीवैष्णव कृत अर्थप्रकाशिका
टिप्पणी सहित) सम्पूर्णम् ।

(सन्त महिमा)

जैसे प्रभु मानुष वपुष परि लीला करें,
तैसे सुखशीला हैं चरित सब संतके ।

रावन की कुमति शिला सन्त सुशीला करें,
भजैं भवचाप ज्यों कुदोष जे दुरन्त के ॥

बिमल बचन बनुवाए ही ते बातुधान,
काम कोह लोभ मोह मारैं चर अन्त के ।

चारों युग जीवन उधार करें रसराम,
सन्त अवतार सम राम भगवन्त के ॥१॥

माया को दिखायके छिपात भगवन्त जब,
सब सन्त बुद्धि सों बतावत अनन्त को ।

चारैं भगवन्त जब मानुष वपुष तब,
सन्त भगवन्त कहै गावैं रसवन्त को ॥

ईश्वर न कोई जीवनश्वर कुवादी कहैं,
तिन्है वाद जीति सन्त थारैं सीताकन्तको ।

नाम को सुनाय के जनावैं रसराम रूप,
सन्त बिन कैसे कोऊ जानै भगवन्तको ॥२॥

(भक्तमालकार श्रीनाभास्वामी महिमा)

छ०—उन हरि आज्ञापाय सकल ब्रह्मांड उपायो ।

इन गुरु आज्ञा पाय भक्त गुण महन को गायो ॥

चार युगन के भक्त गुणन की गूँथी माला ।

सब अंगन मुनिवित्र बनी यह परम रमाला ॥

ब्रजवल्लभ अचरज कहा, सीतापति जाप रये ।

कमल नाम अज विष्णुकें, त्यों अग्रनाभ नाभा भयो ॥

स०—चार सरोज से छप्यै सुहावन सन्तन के मन भुंग लुभाये ।

सादर पान कहैं रस कों त्यों चकोर मयंक को नेह झुलाये ॥

प्रेम परागको त्यों ब्रजवल्लभ गंध मनोहर है जग छाये ।

पावन भक्तन के गुण गाय के माल अनूपम नामा बनाये ॥

श्रीमते रामानन्दाय नमः

श्रीभक्तमाल-भास्कर

रचयिता—यण पर्वत श्रीप्रयोध्याजी निवासी मानस तत्वान्वेषी
पं० श्री रामकुमारदासजी रामायणी ।

अरुणादय

संस्कृतभाषा

श्रीगुरुवर पद वन्दि राम सिय चरण मनावौ ।

हरि भक्तन पद ध्याइ भक्ति युत जन यश गावौ ॥१॥

प्रथमहि श्रीगुरु परम्परा शुचि सुमिरण करिके ।

करउँ रामपद आस भक्तपद रज उर धरिक ॥२॥

अरुणदगुरु-परम्परा

राम मंत्र श्रीराम दीन्ह मिय कहैं सुखदाई ।

हनुमत विधि रु वशिष्ठ पराशर क्रमते पाई ॥३॥

व्यास रु शुक पुरुषोत्तमार्य गंगाधर पायो ।

सदाचार्य रामेश्वरार्य द्वारानंदगायो ॥४॥

देवानन्दाचार्य कीन्ह अमिताक्षर व्याख्या ।

श्यामरु श्रुत चिदु, पूर्ण, श्रियहु हर्यानंद आख्या ॥५॥

थावारज राघवानन्द श्रीमठ शुचि थाप्यो ।

रामानन्दाचार्य चरणलसि कलि अति काँप्यो ॥६॥

चारि वर्ण नर नारि सबहिं हरि भक्ति दृढ़ायो ।

शिष्य अनन्तानन्द आदि आदित्य सुहायो ॥७॥

श्रीअनन्त हरि भक्ति सिन्धु वेला रचि दीन्हें ।
 मृत्यु जयी पयोहारि कृष्णदामहिं शिष कीन्हें ॥८॥
 अग्रदेव आचार्य रेवासा श्रीहरि थाप्यो ।
 रचे अनेकन ग्रन्थ पढत सुनतें यम काप्यो ॥९॥
 भगवान सु लक्ष्मणदाम और श्रीमस्तरामजी ।
 लक्ष्मीदास रु नन्दलाल, हरिदास चरणश्री ॥१०॥
 विन्दाचार्य सु रामप्रसादाचार्य अवध रहि ।
 रचे जानकी कृपा भाष्य वेदान्त सूत्र लहि ॥११॥
 राम नेवाज मुदाम शिष्य तिनके शुचि भयऊ ।
 माणिकगम मुदाम गादि वगही निर्मयऊ ॥१२॥
 नगही वगही अरु खरा महें श्रीहरि थापी ।
 सदारामदासजू रामायणि शिष्य प्रतापी ॥१३॥
 सदाराम रामायणि कुटिया अवधहिं कीन्हो ।
 तपसी रामदयालदाम शिष तिनके चीन्हो ॥१४॥
 श्रीहरिनाम मुदास तिनहि के शिष्य उजागर ।
 तिसु कुमार मति मन्द वसत मणि पर्वत नागर ॥१५॥
 उदय करन वह भक्तमाल भास्कर परकाशा ।
 जामु किरण लहि होय हृदय तम को अतिनाशा ॥१६॥
 यहि विंशति-शति भक्त साधुता जे हियधारे ।
 वरणों कछु तिन नाम सन्त सब पूज्य हमारे ॥१७॥
 आगे पाछे नाम देखि कोउ जनि दुख मानौ ।
 जेहि क्रम परिचय जामु लखौ तेहि क्रमते जानौ ॥१८॥

सकल सन्त यश नाम सिंधु कहि पार लेहें को ।
 उदित भास्कर गगन मुहिय वपु जाय गहैं को ॥१९॥
 कछु प्रथमहुँ के भक्तन करषद सुमिरण करिके ।
 लिखि हौं कछु हरिभक्त नामहिय आनंद भरिके ॥२०॥
 संप्रदाय, कुलजाति, वरण, वपु, नहिं अभिलाषो ।
 जिनके उर हरिभक्तिलेश तिन्ह कहैं कछु भार्षो ॥२१॥
 जिमि अनंत हरिनाम रूप गुण विभव विलासा ।
 तिमि अनन्त हरि प्रेम नाम गुण जे हरि दासा ॥२२॥
 अमुक लिखे अरु अमुक छांड़ि दोन्हें कहि ख्वारी ।
 इमि कोउ नख न वृष्णि परम अज्ञता हमारी ॥२३॥
 भक्त नाम यश सुनत सदा श्रीपति मुद भरिके ।
 तेहिते भक्तन नाम चरित गावहु रुचि करिके ॥२४॥

श्रीहनुमानजी १

मिय सन मंत्र ओ भक्ति अजर अमरण वर पायो ।
 लंक दाहि खल मारि गरुड़ नर गर्व नसायो ॥
 सकल शास्त्र आचार्य मंत्र विधि घटजहि दीन्हें ।
 चुटकी मेवा लीन्ह पगजित शनि शिव कीन्हें ॥
 आंजनेयपद सुमिरि जन, राम रूप मुख निधि पर ।
 आदि भक्त हनुमंत यश, कौन सकल वर्णन करै ॥

श्रीब्रह्माजी २

सकल सृष्टि निर्मायि निरन्तर हरिपद ध्यावैं ।
 खलन देह वर बहुरि नाशहित हिरहिं बुलावैं ॥

सावित्री अरु सरस्वती निय दुहुँ दिशि राजै ।
 राम मंत्र लहि दीन्ह मानसिक सुतन सुजाजै ॥
 हरि आज्ञा लहि जग सृजत, पाप पुण्य नहिं हिय गहत ।
 ब्रह्मदेव पद कमल भजि, चतुरानन पुर सुख लहत ॥

श्री वशिष्ठजी ३

राम मन्त्र लहि चतुरानन सौ पौत्रहिं दीन्है ।
 रविकुल गुरु आचार्य होइ बहु शुचिमुख कीन्है ॥
 ब्राह्मण-ऋषिवर बनइ कौशिकहिं मन्त्र बनाये ।
 अरुन्धती तिय रत्न गगन समर्पि सुहाये ॥
 संहिता स्मृति किय वेदावित, आथर्वण प्रख्यात जग ।
 मुनिवशिष्ट विधि शिष्यसुत सतत चलत हनुमंत मग ॥

श्री पराशरजी ४

गर्भहिं में सरहस्य वेद गावत सत्पुत्राये ।
 श्रीयमुना मधि जाइ व्यास सो सुत उपजाये ॥
 लहि वशिष्ठ सौ राम मन्त्र व्यासहिं पुनि दीन्है ।
 विष्णुपुराण सुधर्म शास्त्र श्रुतिशास्त्र जु कीन्है ॥
 पश्यन्ती गर्भज शक्ति सुत, पौत्र वशिष्ठरु व्यास पितु ।
 भक्त पराशर पद कमल, नमन पाव जन परम हितु ॥

श्री वेदव्यासजी ५

श्रुति पुराण उद्धारि विरचि भागवत महानिधि ।
 पंचम वेद समान महाभारत, सुसर्व सिधि ॥
 श्रुति न समन्वय करन अर्थ पंचक के हेतु ।

ब्रह्मसूत्र रचि दीन्ह विज्ञ लखि होत सचेतू ॥
 पागशर सो प्राप्त करि राममन्त्र पुनि शुकहिं दिय ।
 नारायण मुनि व्यास वनि सकल जगत उद्धार किय ॥

श्री शुकदेवजी ६

जीवनमुक्त स्वरूप जीति मायहिं जग राजै ।
 परम मनोरम रूप मनो हरि आप विगजे ॥
 वक्ता श्रीहरि चरित सरस उर अति अनुरागू ।
 अजर अमर स'इ दर्श लहै जाकर बड़ भागू ॥
 पितु समीप लहि भागवत राम मंत्र लहि जप निरत ।
 शुक मुनि परमाचार्य जग अमित जनन पावन करत ॥

श्री पुरुषोत्तमचार्यजी ७

प्रभु शिशु केलि बिलांकि छले विधि शापित भयऊ ।
 शङ्कर सुत उपवर्ष होइ पाटलिपुर गयऊ ॥
 कर्मदेव अरु ब्रह्म भिमांसा धृति बनाये ।
 कर्म ज्ञान अरु भक्ति समन्वय शुचि दर्शाये ॥
 करि तप व्यास कुमार सौ राम पडत्तर मन्त्र लिय ।
 पुरुषोत्तम आचार्य होइ अमित जनन उद्धार किय ॥

भगवान श्रीरामानन्दचार्यजी ८

जब लहि यवन अनीति धरा व्याकुल भइ भारी ।
 अति कृपालु रघुनाथ तबहिं मुनि रूप सँवारी ॥
 जैन बौद्ध मत नाशि याविनी अनय विनामे ।
 भगवद्धर्म प्रचारि मु बैष्णव तत्व प्रकाशे ॥

शिष्य द्वादशीदित्य सम ज्ञान किरण जग तम हरे ।
रामानन्दाचार्य कर धर्मध्वजा जग फरहरे ॥

श्रीअनन्तानन्दाचार्यजी ९

शिशुपन धेनु चराह कृष्ण संग बहु मुख लूटे ।
पढ़ि श्रुति शास्त्र पुराण सु श्रीमठ गुरुपद जूटे ॥
त्याग विराग प्रचारि धर्म हरि भक्ति दृढायो ।
जेहि शिर दिय, करकमल लोक पति सदृश बनायो ॥
हरि भक्ति मिन्धु बेला रन्यो श्रीन ज्ञान हरि प्रीति नद ।
आचार्य अनन्तानन्द विधि सुमिरि लहै रघुनाथ पद ॥

श्रीपीणजी १०

गागरौन गढ़ राज्य त्यागि मुनि बनि तप कीन्हे ।
बहु नृप रंकन ज्ञान देह हरिपद रति दीन्हे ॥
परम मिद्धिता प्रगटि साधु मेवन शुचि करिके ।
सतिय जीति कलि सिंह शिष्य किय पातक हरिके ॥
पैठि मिन्धु श्रीकृष्णपद दर्श प्रमाद अनन्त लिय ।
श्रीमनु पीषा रूप धरि कलि पुनि धर्म प्रचार किय ॥

श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजी ११

हरि मानुल बनि संस्कार सब मँह जिमुआये ।
राम राम श्रुति गान मकल लोगन करवाये ॥
बल करि दान जो यवन बरा तेहि तुलसी कीन्हे ।
आचारज पद दौंठि पुल्लि दश प्रश्न जु लीन्हे ॥
सुरसुरी महित करि काम जय पञ्च रात्र उद्धारि लिय ।
नारद बनि सुरसुरानन्द जग मल भक्ति विस्तार किय ॥

श्रीसुखानन्दाचार्यजी १२

करि परास्त रँगराजहि जयकर लेन छुटायो ।
मालव मार्गहि जीति सु श्री मठ गुरुपद आयो ॥
शापित सर्प उभारि जाइ कामदगिरि तप करि ।
यक्ष पक्षि दे ज्ञान अत्रि लोमश लखि दृगभरि ॥
वेदान्तार्य अरु जमिल कहँ प्रेम भक्ति दिय चायिनी ।
सुखानन्द बनि शम्भु दिय भक्ति मकल मुख दायिनी ॥

श्रीरमादास (रैदास जी) १३

वर्णाश्रम अभिमान आनि द्विज वाद किये बहु ।
दे श्रुति शास्त्र प्रमाण कह्यो हरि भक्ति सबहि गहु ॥
पारम द हरि लान्द परीक्षा तब हुँ डिगे नहि ।
काम क्रोध कलि जित्यो मत्त गुरुगम कृपा लहि ॥
भक्तहि जाति न, शिष्य बनि, मीरा भाली मंत्र लिय ।
रमादास बनि धर्म पति, भक्ति महात्म्य दिखाइ दिय ॥

श्रीबनानन्द जी १४

बाल पने हरि रोटी भस्त्रि सँग गाय चराये ।
सन्त जिमाये खेत बिना बोये उपजाये ॥
काशी श्रीमठ जाइ शरण आचार्य चरणगहि ।
गुरु आज्ञा शिर धारि गाँव गए परम भक्तिलहि ।
ज्ञान भक्ति बहु जनन दै सकल दिव्य सार्जहि सजे ।
श्रीबलि कलियुग आइकर धना जाट बनि हरिभजे ॥

श्री सेनानन्दजी १५

सन्त सेव मँह मगन देखि हरि नापित वपु धरि ।
 नृपहिं सेइ करि मुक्त-सेव मन नृप कुल गुरु करि ॥
 संत मंग करिवाद जाइ गुरु चरण निहारेउ ।
 रामानन्दाचार्य शिष्य करि घर लौटारेड ॥
 नटवर वपु हरि दर्श लहि नित पार्षद बनि सेव लिय ।
 गांगेय भीष्म कलि सेन बनि बान्धव भक्ति प्रचार किय ।

श्रीकबीरदासजी १६

काशी सरमधि प्रगटि यवनगृह वयस विताये ।
 काम क्रोध मद मारि नृपहिं बहु सिद्धि दिखाये ॥
 हिन्दू नरकहिं एक भाव लखि ज्ञान प्रचारे ।
 करि कुनिन्द कुल कर्म प्रेम सन्तोषहिं धारे ॥
 राम नाम जपि प्रेम दृढ़, विनु तनु तजि हरि पद लमे ।
 बनि प्रह्लाद कबीर जू भेद भाव मायिक नसे ॥

श्री योगानन्दाचार्यजी १७

श्रीगुरुपदरज सेइ सकल शास्त्रन मधि लीन्हे ।
 विजय नगर मँह जाइ चरक कहँ विजयजु कोन्हे ॥
 श्री रंगम पुरि जाइ बाद करि बर बर जीत्यो ।
 चित्रकूट ब्रज अवध अनन्दहिं बहु दिन वीत्यो ॥
 गुर्जर धर्म प्रचार करि कलिहिं धर्म सह जिन जये ।
 योग सुपथ उद्धार हित योगानन्द कपिल भये ॥

श्री भावानन्दाचार्यजी १८

परम तीव्र वैराग्य त्यागि निय यति वपु लीन्हो ।
 पुनि गुरु आयसु मानि जाइ गृह धर्म सुकीन्हो ॥
 त्रय कुमार हरिभक्त मुक्ति कन्या इक जायी ।
 पुनि गुरु पद मँह जाय योग जप धर्म कमायो ॥
 अनुमानंदहिं शिष्य करि कीन्ह तिन्है वैष्णवाधिपति ।
 रामानन्दाचार्य पद अनुगामी मिथिला नृपति ॥

श्रीमालवानन्दाचार्यजी १९

रामानन्दाचार्य चरण सेवन मन लायो ।
 योग शक्ति हरि भक्ति पाइ काश्मीर मिथायो ॥
 विष्णुरान नृप सदमि यथा भागवत मुनायो ।
 त्यो काश्मीर नरेशहि श्रीहरि भक्ति ददायो ॥
 गालव व्याम "कुमार" मुनि विजय कीन्ह सब पुहुमि थल ।
 ज्यो द्वापर त्यो कलिहिं पुनि कीन्ह भक्ति प्रचार भल ॥

श्रीनरहरियानन्दाचार्यजी २०

श्रुति पुराण आयन्त विना पुस्तक नित गाये ।
 अनुसूया पद परमि दरस मिय रघुवर पाये ॥
 योग किया सब कीन्ह राम जपि मल्लन सुधारे ।
 हरि गुरु पद नित सेइ जीति कलि मनहिं पढारे ॥
 मन्त सेव हित दण्ड मँह देवी सन लकड़ी लिये ।
 नरहरि बनि कलि मनक जी तुलसी कहँ मानस दिये ॥

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी २१

हनुमत शामन मानि भए नर कलियुग आई ।
गुरु नर हरि पद बैठि भक्ति हरि मानम पाई ॥
कृत निधि वेद प्रचारि रु त्रेता मुनि रामायण ।
कलि मानम रचि कीन्ह विविध नर धर्म पमायण ॥
कीन्ह दूष नहि काह मन मवहि करन चह हरि भगत ।
गीत कवित दादा विनय रचि तुलसी जग जगमगत ॥

स्वामी श्रीनारायणदास (नाभा) जी २२

अद्भुत प्रज्ञावानु कृपा गुरु दोउ दम पाये ।
मन्त चरण जल अरु प्रमद लहि सिद्धि सुपाये ॥
श्रीनारायण दाम मुभाषा अष्टयाभ रचि ।
मन रच क्रम गुरु चरण लागि हरि प्रेम हृदय मचि ।
सब रहस्य गुरु मेह लहि शुचि निदश नामा जयी ।
काहि वेद गाभा रच्यो भक्तमाल आभासयी ॥

श्रीराम प्रमदाचार्य जी (विन्दाचार्य) २३

रामायण किय गान जन्म भरि राम नाम जपि ।
रच्यो जानकी कृपा भाष्य वेदान्त भक्ति श्रपि ॥
गीतापनिषत्सुभाष्य धर्म शिक्षा पत्री रचि ।
भक्ति ज्ञान प्रचारि यवन सिद्धता विनसि तचि ॥
जनकलली निज कर कमल जासु माथ विन्दी दिये ।
अवध चित्रकूटहि सुधासिराम प्रमद सुवश लिये ॥

श्री हरिदासाचार्यजी २४

अप्रतिभट विद्वान महा महिमा गुण गणी ।
मथि श्रुति शास्त्र पुराण राम मिय तत्व प्रकाशी ।
रामानन्दाचार्य तत्व विस्तारन हेतू ।
रवे अनेकन ग्रन्थ मनहु भव निधि कर मतू ।
नाममात्र हरिदाम ही रामदाम निज मुख कयों ।
श्रीहरिदामाचार्य वर राम भक्ति दृढ़ करि गह्यो ॥

स्वामी श्री मणि रामदासजी महाराज २५

बाल्मीकि कृत सहस्र पाठ कामद वधि कीन्हें ।
हनुमत आज्ञा पाइ अवध वामहि चित दोन्हें ।
श्री रामायण सुनन हेतु श्री हनुमत आए ।
विग्रह वीर विराजि सु कौतुक बहुत दिवाए ॥
आजु लगे रस एक ही तहाँ माधु सेवा चलत ।
सिद्ध मन्त मणिराम की महिमा मन्त सबै कहत ॥

स्वामी श्री रामचरणदासजी कल्या मिन्धु) २६

श्री मानस पर सर्व प्रथम टीका रचि दीन्हें ।
शृङ्गारिक भावना प्रसरि बहु साधक कीन्हें ॥
मन्त मेव बहु करन स्वयं मधुकरी सुपाये ।
सर्वोपरि श्रीराम परत्वहि धृति न थराये ॥
राम नौरतन आदि हैं बहुत ग्रन्थ मात्तिक रचे ।
रामचरण कर दाम बनि करुणामिन्धु कलिहि वचे ॥

स्वामी श्री रघुनाथदासजी (बही छावनी श्रीअवध) २७

दिय न नौकरी चिन्त साध सेवन रँग लहरो ।
जिनके बदि रघुनाथ सिपाही बनि दिय पहरो ॥
छाँड़ि बूढ़िश् चाकरी अवध वसि सन्तन मेई ।
सरयु धार सन श्रुत मँगाय भनि ऋण पुनि देई ॥
श्री हरिनाम सुमिरिनी रचि कवित्तमय ग्रन्थ भल ।
रघुनाथदाम बड़ि छावनी सन्त सेव थापी अटल ॥

श्री युगलानन्यशरणजी महाराज २८

ईशरामपुर प्रगटि ईश करि रामहिं ध्याये ।
परमैकान्तिक सरस भाव कान्ता प्रगटाये ॥
श्री रघुवर पद युगल छाँड़ि कहँ मन नहिं लाये ।
दिव्य भाव मय ग्रंथ छियाँमी रुचिर बनाये ॥
श्री जीवाराम सुकृपा लहि कान्ताभाव सुपरम विभु ।
युगलानन्यसु शरण श्रीरसिकराज महाराज प्रभु ॥

श्री जानकीवरशरणजी महाराज २९

श्री गुरूपद शुचि प्रीति प्रीति सियवर पद पीना ।
महल टहल युत भाव मीय महचरि मुप्रवीना ॥
हिन्दी संस्कृत और फारसी कर कवि पण्डित ।
सन्त सेवि दिय मरल अमित शुभ गुणगण माण्डित ॥
प्रीतिलता अति प्रीति सिय पद प्रमन्न जब जो मिले ।
पण्डित श्रीजानकीवर शरण अवध लक्ष्मण किले ॥

भारतेन्दु बाबू श्री हरिश्चन्द्र जी ३०

प्रीति राधिका कृष्ण चरण गुरु वल्लभ दीपा ।
धीर सरस गम्भीर त्याग महँ कर्ण महीपा ॥
नाट्य कवित इतिहाम भक्तिमय रचि बहु ग्रन्था ।
कीन्ह नागरी गुणागरी कर मार्जित पन्था ॥
गिरधरनदाम मुन मान्य नृप भारतेन्दु मचमुच रहे ।
हरिश्चन्द्र हरिचन्द्र सम दान सत्यव्रत दृढ़ गहे ॥

श्री रसरंगमणिजी महाराज ३१

मानेहु रामहिं अनुज आपु बड़ सम्य मँभारेहु ।
तूण बाँण धनु धरउ नित्य हरि रक्ष्य विचारेहु ॥
भावुक परम गँभीर कवित अति सरस मुहाए ।
श्री नाभा कृत भक्त माल शुचि तिलक बनाए ॥
विविध ग्रन्थ हरि भक्तिमय कहेउ भागवत अति मग्ग ।
राम सखा रम रंगमणि रहेउ सदा जगमों विरम ॥

स्वामी श्रीजीवारामजी ३२

रमिक प्रकाश सुभक्तमाल अति सरस बनाये ।
दूर नाभा प्रगटि मनहु हरि जन गुण गाये ॥
कृष्णा मिन्धु सुचरण बेठि शृंगार भाव लहि ।
सियवर पद जो प्रीति को पार लहे ताहि कहि ॥
सरयू तट मिय महल रटि छपरा चिरान वसि रम रमे ।
स्वामी जीवारामजी युगलप्रिया प्रभु पद लसे ॥

विश्राप मागर कार श्रीगुनाथ दामजी राम सनही ३३

(राम सनेही घाट वारावकी)

वारावकी जिले प्रगटि कायथ कुल में मदि ।
रहि भरि जन्म गृहस्थ वप सब वेद शाम्भु पदि ॥
श्रीगुरु देवादाम आस पत्र कबहुं न छाड़्यो ।
रचे ग्रन्थ विश्राप मागर शास्त्र निचोड़्यो ॥
मरेहु अस्मि नित राम रटि रुचि दिखराई जासु की ।
रघुनाथ दाम जू राम मेनही घाट भूमि शुचि जासु की ॥

स्वामी श्रीकृष्णानन्दजी गौड़ीय वैष्णव ३४

अनि उदार विद्वान परम शुचि हरिपद प्रमी ।
संग लाय बहुजनन नित्य हरि कीर्तन नेमी ॥
प्रबल तर्क अरु वेदादिकमो दै सुप्रमाना ।
वहु शास्त्रार्थन जिने आर्य अद्वैति महाना ॥
वहु विमुखनि चतन्यपद दीन्हो भक्ति अनन्द जू ।
श्री ब्रजेन्द्र नन्दन सखा स्वामी कृष्णानन्द जू ॥

श्री गोमतीदामजी महाराज (श्रीमतीशरणजी) ३५

बहुतप करि भणि कूट भिद्धि सब करतल कीन्ही ।
पै न प्रलाभित तनिक राम मुमिरण मत दीन्ही ॥
निमि दिन सीता राम चरण सेवे चित चीन्हे ।
होइ श्रीमती शरण टहल महली वपु लीन्हे ॥
हनुमन्निराम शुचि सरयु तट आंजनेय आपित मुघट ।
श्रीमदुगोमतिदास जू नित श्रीसीताराम रट ॥

श्रीमाणिकरामदामजी (वगही) ३६

सुभग देश सरवार बैठि वगही रचि आसन ।
लोगन को मन्याय कीन्ह लखि यवन कुशामन ॥
यवन दण्ड गहि अंग नीति पथ ते नहि डोल्यो ।
तासु काज भव भिद्ध जासु हित मुख कछु वाल्यो ।
नगही वगही हरिहिं थपि सेग अन्त सुखाम चले ।
माणिकराम मुदामजू राम भक्ति महं रंग रले ॥

गुण्डेव स्वामी श्रीहरिनामदामजी महागज ३७

युवती तिय सुतविभव त्यागि श्री अवधहिं आई ।
गमायणि कूटिया महँ रहि बहु विभव बढ़ाई ॥
बहुत जनन दै राम मंत्र भवपार लगाये ।
वन प्रमोद की नजि महंथि भणि तर्वत आए ॥
राम धाम चलि जात भे अवध बाम बहु काल करि ।
श्रीहरिनामाचार्य वर नित सियराम सुप्रेम भरि ॥

श्रीस्वामी पं० श्रीराम बल्लभाशरणजी महाराज श्रीजानकी घाट ३८

परम सुसरल सुभाव मिष्टवच मन आकर्षत ।
कहत कथा उपदेश दैत जनु अमृत वर्षत ॥
सब शास्त्रान मथि तत्व रामसिय यश हिय धारे ।
मनहुँ व्यास पुनि प्रगटि संत वनि भक्ति प्रचारे ॥
बहु नर करि हरिभक्त रचि हनुमत वागरु वाटिकै ।
रामवल्लभाशरण जू राम धाम गौ मोदलै ॥

महान्त श्रीराम बल्लभा शरणजी सद्गुरु सदन ३९

रामवल्लभाशरण जु सद्गुरु सदन मुहाए ।
हरि शृंगार रस रुचिर सकल ऋतु पद्य बनाए ॥
श्रीगुरु चरणन सेव कीन्ह अहमिति विमरार्ह ।
गोरक्षण हिन जाइ वन्दिगृह भक्ति दृढ़ार्ह ।
वर्ष तिरासी धारि वपु हरि मन्मुख बहु जनन करि ।
युगल विहारिनि कुँज में सिय पिय सेवत मोद भरि ॥

वेदोपनिषद्भाष्याकार स्वामी श्रीभगवदाचार्यजी महाराज ४०

महाकाव्य त्रय और स्तोत्र शुभ रचे अनेका ।
वेदोपनिषन्मुभाष्य विरचि किय भक्ति विवेका ॥
ब्रह्मसूत्र कर तत्व संहिता मन निरुवार्यो ।
प्रतिवादी अति डरत त्याग वैराग्य प्रचार्यो ॥
सम्प्रदाय श्री जामवल आजु अनूपम लहत द्वि ।
स्वामि भगवदाचार्यजी अप्रतिभट विद्वान कवि ॥

स्वामी श्रीजगजीवनदासजी (कोठवा) ४१

जिमि दिग्गज महि चारि चारि पावा थापे तिमि ।
चौदह गद्दीथपे कल्प प्रति मन्वन्तर जिमि ॥
बाँधेउ धागा हाथ यज्ञ जिमि मंगल मूना ।
राम नाम उपदेशी कीन्ह बहु नर जग पूता ॥
गृही वेष त्यागी परम राम नाम जप निरत भल ।
श्रीजगजीवन दासजी सत्यनाम पथ किय अटल ॥

महन्त श्रीभगवानदासजी खाकी, श्रीअयोध्याजी ४२

रामानन्दी सुदृढ़ प्रबल वक्ता विज्ञानी ।
राजनीति महँ कुशल कूटनीतिहु बहु छानी ॥
सम्प्रदाय मर्मज्ञ सुलेखक चतुर गँभीरा ।
वैष्णव पंच प्रकाशि थपे ग्रन्थालय वीरा ॥
समय ममय उत्सव करत हरि मन्दिर महँ रहत तहँ ।
भगवानदास खाकी लमत विन्दाचार्य मुवंश महँ ॥

श्रीरामप्रपन्नजी चौबे, चौबेवंत बलिया ४३

रूपकला मत्संग, करी हरि मंग मिताई ।
रामार्पण करि सकल कुमभता दुर्गि भगाई ॥
अष्टोत्तर शत पाठ सकल तुलसी कृत को करि ।
सहस पचीस मुराम नाम नित जपत नेम धरि ॥
जन्म महोत्सव अवध वसि नेम निवालो जन्म भरि ।
चौबे राम प्रपन्नजी रामधाम मे राम ररि ॥

महामहोपाध्याय स्वामी श्रीरघुवराचार्यजी शिंगड़ा ४४

शिंगड़ा मठ काठियावाड़ महँ परम सुहावा ।
तहँकर नृपति महन्त प्रतिष्ठित पद अति पावा ॥
अवध निवसि लहि शास्त्र लसत लश्करी वेश री ।
गीता भाष्यहि तिलक वृत्ति वेदान्त केशरी ॥
महामहोपाध्याय की पदवी दीन्ही बृटिश पति ।
रघुवराचार्य विद्वान शुचि सम्प्रदाय श्री प्रीति अति ॥

दार्शनिक सावर्भाष स्वामी श्रीवासुदेवाचार्यजी, ४५

अल्प वयस महँ सकल शास्त्र पारङ्गत भयऊ ।
कर्वी कालिज केर प्रेमपल होइ यश लहेऊ ॥
सार्भभौम दार्शनिक कर बड़ि पदवी राखत ।
हनुमन्त थापि करि ब्रह्मसत्र मन्त्रों मृदु भाषत ॥
प्रतिवादी जेहि नाम सुनि कर न शास्त्र वादहि सुडर ।
विन्दाचार्य सुवंश महँ वासुदेव आचार्य वर ॥

न्याय वेदान्त केशरी स्वामी श्रीवैष्णवाचार्यजी ४६

प्रश्नोपनिषन्मुभाष्य परम वैष्णवी सुहाये ।
औरहु ग्रन्थ अनेक लिखे विद्वान मन भाये ॥
रामानन्दाचार्य चरण मन निष्ठहि राखत ।
सम्प्रदाय अत्रिरुद्ध नीति मय प्रिय वच भाषत ॥
अध्यापक अति शुचि कुशल सीय-राम पद रत भजन ।
वैष्णवाचार्य विद्वान श्री वैष्णव परम गँभीर मन ॥

स्वामी श्रीरामसुन्दरदासजी महाराज "रामायणी" ४७

ख्यात अवध में मणीराम जू केरि जावनी ।
तहँ तुलसी कृत काव्यन की कह कथा भावनी ॥
भक्ति शास्त्र श्रुति गदित सन्तजन नीति सुधारत ।
दुखित सन्तलखि होइ दयालु सब काज सँवारत ॥
रामायणी सुख्यात जग श्री वैष्णव मग धारि उर ।
रामसुसुन्दरदास जी कवहुं न त्यागत अवधपुर ॥

महन्ध श्रीरामशोभादासजी, अयोध्याजी ४८

ख्यात महन्धन केर मुकुटमणि हरिपद प्रेमी ।
सदाऽऽचार्य दृढ़ निष्ठ सन्तमेवी शरनेमी ॥
परम तपस्वी सुहृद त्याग वैराग्य भजन रुचि ।
सुनेहु कथा करि नियम कायमन वचन परम शुचि ॥
मणीराम की जावनी होइ महन्ध पालेहु धरम ।
राम सुशोभादास जी मरल सुबुध भावुक परम ॥

महन्ध श्रीरामशोभादासजी (आबू राज) ४९

श्री गुरुपद अति प्रीति नीतिरत नियम सँभारत ।
रामानन्दाचार्य चरण पर तन मन वारत ॥
सर्वेश्वर रघुनाथ सैद्ध अति सुन्दर मन्दिर ।
रचेउ स्वच्छ सुस्फटिक केर लखि मोह पुनन्दर ॥
आब पर्वत पर निवसि नित मेवत मियकान्त जन ।
रामसुशोभादास श्री वैष्णवाचार्य शुचि शान्तमन ॥

श्री नारदानन्द सरस्वती नेमिपारखम ५०

शुभ ऋषि कुल प्रस्थापि सुवदिक धर्म प्रचारें ।
मायिक मद मारादि दुष्ट, माधन करि मारें ॥
उपदेशक अति प्रबल सरल शुचि हरिपद प्रीती ।
हो कल्याण महान मिश्रव प्रार्थना सुनीती ॥
नेमिपारखि काटन चहत कलियुग कर दुख दुन्द हैं ।
मन्यामिन महँ शुचि सरल आजु नारदानन्द हैं ॥

खजुरी ताल के सन्त जन ५१

रीवे खजुरी ताल पाठशाला रचि थपि हरि ।
 श्री पुरुषोत्तमदास भजन रत शिष महन्थ करि ॥
 अध्यापक शुचि सरल श्यामसुन्दर जू शर्मा ।
 बसै खड़गडै आप निरत गृह वैष्णव धर्मा ॥
 राम सुभूषणदास जू रामायण प्रेमी सुहृद ।
 छात्र मन्त सेवत मतत पुरुषोत्तम प्रिय रामपद ॥

महन्थ श्रीनृसिंहासजी, अहमदाबाद ५२

परम सरल सुठि सुहृद सन्त मेरी दृढ़ नेमी ।
 अति उदार जन कर्ण प्रगट कलि हरिपद प्रेमी ॥
 धेनु वमन गज वाजि वृषभ जो चाहैं लेवैं ।
 सहमन मुद्रा नित्य आपने कर नित दवैं ॥
 गुर्जर सावर्गमती तट रहे अहमदाबाद महैं ।
 रचि मन्दिर जगदीश बस सिद्ध सुनरमिह दाम तहैं ॥

श्रीप्यारेमोहनदासजी पानीघाट वृन्दावन ५३

वैद्यक विद्या कुशल जाइ रोगी तेहि सेवैं ।
 देत सुऔषधि सबहि दाम कछु माँगि न लेवैं ॥
 राव गंक सन एक भाव व्यवहारहि राखत ।
 रचि गौडीय सुभक्ति शास्त्र कटु भूलि न भाषत ॥
 पानिघाट वृन्दाविपिन जम्ब बाग बनाइ करि ।
 प्यारे मोहनदासजी जित मदादि हिय कृष्ण धरि ॥

महाकवि श्री जयशामदेवजी, वृन्दावन ५४

सुरति योग महँ सुरुचि करत अभ्यास निरन्तर ।
 नाम वियोगी ख्यात वमत वृन्दावन अन्तर ॥
 कविता मधुर गंभीर मनहुँ अमृत भरि भाषत ।
 भाषत अति मृदु बौन रंनि दिन हरि उर राखत ॥
 रामानन्दायन विरचि महा कवी पद पदक लहि ।
 श्री जयशाम सुदेवजी रहत भक्ति शुचि टेक गहि ॥

समुदाय ५५

विज्ञ माधवाचार्य परम वैष्णव विज्ञानी ।
 धर मृत सुत शव त्यागि कीन्ह मत्संग सुखमानी ॥
 श्रीवल्लभाचार्य परम विद्वान अवध बसि ।
 विजय गधवर्हि सुथपि मन्त मधि कथा कह लमि ॥
 श्रीसुदर्शनाचार्य इक वृन्दावन पंजाब एक ।
 अति उद्भट विद्वान दोउ रामानुजि वैष्णव तिलक ॥

समुदाय ५६

रचिमंडप बैकुण्ठ अवध पुर नजर बाग महँ ।
 सीतारामाचार्य विज्ञ हरि भजन सतत तहँ ॥
 त्यागी परम उदार तितिक्ष पुष्कर राजें ।
 वीरराधवाचार्य रमावैकुण्ठ विराजै ॥
 विद्वान रुचिर वक्ता प्रबल मन्त सुप्रेम उदार भट ।
 विश्वकमेनाचार्य बहु यज्ञकरत बसि गंग तट ॥

श्रीगणदासजी शास्त्री ५७

चार सम्प्रदा थान ख्यात वृन्दावन में अति ।
 सेवत श्रीघनश्याम भावना सकय सरसमति ॥
 श्री गुरु कृष्णानन्द चरण अम्बुज अनुगामी ।
 हरि गुरु उत्सव करत मन्त सेवत बड़ भारी ॥
 महाप्रभू चैतन्यपद अनुगामी ब्रजवास रुचि ।
 रामदाम शास्त्री मुहद नाम प्रेम हरिभाव शुचि ॥

करपात्री श्रीहरिहरानन्द जी सम्प्रदायी ५८

रघुवर यदुवर चरित परम मधुरे स्वर भाषे ।
 परम नितीक्ष सन्त जीति मन इन्द्रिन राखे ॥
 धर्म संघ रचि जगत सुशौदिक धर्म प्रचारत ।
 चहन करत निर्मूल अधर्म रु अनय उच्चारत ॥
 कलियुग भट मों नित लरत अध्यात्मिक उर धारि बल ।
 हरिहरानन्द करपात्रि जू शुचि धार्मिक नेता प्रबल ॥

विश्व वन्द्य महान्या श्री गाँधी जी ५९

सदाचार शुचि सद्भिचार दृढ़ वचन सत्यरत ।
 रघुपति राघव राम जपेउ हिय भेद स्वपर गत ॥
 कदाचार खल शत्रु दीन दुख भेटन काग्न ।
 दिव्य अहिमा अस्र धारि किय वृष्टि निवारन ॥
 परम महात्मा त्यागि वपु भारत कीन्ह स्वतन्त्राहित ।
 गाँधी मोहनदास जी सिद्ध पुरुष जग अवनति ॥

ब्रह्मचारी श्रीप्रभुदत्तजी, भूमी प्रयाग ६०

बालक सम अति सरल नम विद्वान गँभीर ।
 मौन धारि लिखि ग्रन्थ प्रचारत भक्ति सुधीर ॥
 जनु दूसर गौरांग प्रसारत श्री हरि नामहिं ।
 भूमी वसत प्रयाग गंगतट रचि शुचि धामहि ॥
 भागवत भाष्य भाषा कियो श्रीशुकमान जनु प्रगटि महि ।
 ब्रह्मचारि प्रभुदत्त की महिमा कापे जाय कहि ॥

पं० श्रीसियाबिहारीशरणजी (सौखी) ६१

मिया बिहारीशरण मनहु श्री मिया बिहारी ।
 दीन दुखित तन सेव हृदय अति करुणा धारी ॥
 परम सरल विद्वान मुहद भावुक हरि प्रेमी ।
 कहत कथा भागवत परम जन सकरुण क्षेमी ॥
 गोमतीदास कर शिष्य शुचि मिथिला लखन पटी लमत ।
 भ्रमण करत बहु तीर्थ नित सेवत संत गँभीर मत ॥

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण जी गुप्त ६२

राम भक्त शुचि सरस हृदय श्री सम्प्रदाय दृढ़ ।
 राष्ट्र भावना जटित स्वेउ बहु काव्य भक्ति वृढ़ ॥
 पंचवटी साकेत द्वापरादिक बहु ग्रन्था ।
 रचे धर्म मर्याद लोक श्रुति दर्शक पन्था ॥
 महावीर की कृपा बढि आजु अमित कविकरण थे ।
 युग सुप्रवर्तक राष्ट्रकवि गुप्त मैथिलीशरण थे ॥

परिहृत भीरामभरोसे पाण्डेय ६३

बाराबंकी प्रान्त ग्राम बहुते रुचि राजे ।
तहँ रामायण सभा थपे सब जनहित काजे ॥
चैत्र कृष्ण नित रामचरित उत्सव घर करहीं ।
राम मंत्र जप निरत संत मिख उर नित धरहीं ॥
बहु थल कीर्तन सभा थपि रामायण सुप्रचारत ।
पाण्डे रामभरोस जी रामभरोसे चित निरत ॥

पं० श्रीद्वारकाप्रसाद जी पाण्डे ६४

अति शौकी सुकुमार प्रतिष्ठा बहुत कमाये ।
बहुना रामभरोस भक्त कर सतसंग पाये ॥
विषयन मे मन ऐंचि राम चरणन महँ लाये ।
मानम कर सुख वर्ष वर्ष दें सबहि सुहाये ॥
होत निकट जहँ हरिचरित तहँ पहुँचत बहु कष्ट महि ।
धन्य हननपुर ग्राम भो श्री द्वारकाप्रसाद लहि ॥

महन्थ श्री रघुबरदासजी शिवधाम ६५

वक्ता परम गंभीर दास उपनाम सुधारे ।
करत कवित अति विमल कान्य गुणदोष विचारे ॥
बौद्धक कला प्रवीण सन्त गुरु हरिपद सेजे ।
सम्प्रदाय श्री धर्म पालि औरहुँ सिख देजे ॥
रायबरेली शिवगढ़ श्री शिवनाम सुग्राम जहँ ।
नागा रघुबरदासजी शुचि महन्थ विद्वान तहँ ॥

पं० श्री रत्नमणिनन्दन त्रिवेदी व्यास ६६

शुचि मन्तन महँ प्रीति नाम जापक हरि प्रेसी ।
भक्तयान श्री रामचरित मानस कर नेमी ॥
धारि प्रीति उपनाम राममिष पश नित गावें ।
बागवन्की जिले त्रिवेदा गंज स्ताने ॥
उर्ध्वगुह तृल्लमालमत नित मुतमहँ रहि हरि भगति ।
रत्नमणिनन्दन द्विज गुहद रामकथा कह रुचिर अति ॥

सन्ध्यासी समुदाय ६७

मन्तराम अलमन्त रहत आनंद मन छाके ।
स्वामि सच्चिदानन्द अमित मद्गुण हिय जाके ॥
भजनानंद व्याख्यान परम पटु भक्ति प्रचारक ।
ब्रह्मानंद शुकदेव ख्यात मद्गुणि सुधारक ॥
कृष्ण भारती नीथ दोउ व्याख्याता विद्वत्प्रबल ।
वक्ता हीरानन्द शुचि सन्ध्यासी ये सन्तमल ॥

सन्त समुदाय ६८

श्री कौशल्यादास मन्त मेवत जयपुर बसि ।
सूर्यप्रकाश सुमन्त अहमदाबादहि में लसि ॥
बृन्दावन महँ साधु सेवकिय मुस्ली दामा ।
लालदास कलकता थान बहु मन्त निवासा ॥
भागवती दास हुबली निवसि माँगि सेइ पङ्दर्शनी ।
इन सन्तन अपनाय लिय साधुमेव महिमा धनी ॥

सन्त समुदाय ६९

छोटी कुटिया अवध निवसि वेदान्त थहायो ।
 रामकिशोर सुदास शीघ्र साकेत सिधायो ॥
 वैष्णव वीर उदार लिखे बहु ग्रन्थ मुहावन ।
 सूर्यदास जू श्री सरयूतट निवसि विमल मन ॥
 शृङ्गार भवन महँ निवसि बहु माधव रामकिशोर दोउ ।
 रामकृष्ण पण्डित सरल वन प्रमोद बमि गए सोउ ॥

श्री मधुसूदनाचार्यजी चाँदवारा (बाँदा), ७०

श्री रामानुज सम्प्रदाय दृढ़ रामचरण गहि ।
 अवध सुमदगुरु सदन आय सम्बन्ध पत्र लहि ॥
 रामचरित मानम प्रचारि भण्डली पुमावत ।
 लीला तनु सियाराम समय पद विरचि सुनावत ॥
 रचि बौदेही वाटिका पधराये सियाराम तहँ ।
 श्री मधुसूदनाचार्य वर भे चाँदवारा गाँव महँ ॥

महन् श्री जयदेवदासजी कर्वी (चित्रकूट) ७१

वैष्णव कालिज थापि अमित विद्वान वनाये ।
 सदाचार की सीवँ चलत श्रुति पंथ सुहाये ॥
 नीति कुशल अति विज्ञ विज्ञ जन आदर दीन्हें ।
 रामानन्दाचार्य धमपथ चित दृढ़ कीन्हें ॥
 धर्म राजनय भक्तिवर सेइ गए हरि धाम पर ।
 जयदेवदास कर्वी रहे सेवत सन्त सुविज्ञ वर ॥

पं० श्री रामटहलदासजी दारागंज (प्रयाग) ७२

रामानुज मत निष्ठ रहे श्री रामानन्दी ।
 लिखि बहु ग्रन्थ प्रकाशि किये वितरण स्वच्छन्दी ॥
 शिष्य होइ डाकोर रहे भरि जन्म प्रयागा ।
 भगवत धर्म प्रचार किये हियभरि अनुरागा ॥
 बहु शास्त्रन मथि काटि किय वैष्णव धर्म प्रचार जग ।
 रामटहल पण्डित गये रामटहल हित राम मग ॥

भक्त समुदाय ७३

दुखीदास रैदाम भगत शुचि वचन पटी महँ ।
 करि मन्दिर निर्माण जु जांखनदास अवध रह ॥
 धोबी मन्दिर रहत खरारी लालू दासा ।
 ग्वाल दुखहरनराम करत गंगा तट वासा ॥
 हाफिज अहमदशाहजी मऊगंज कं सन्त सिधि ।
 होत कृपा हरि की अमित तब पावत कोउ भक्ति निधि ॥

सन्त समुदाय ७४

रामप्रभाद सुशरण रामवन तट हरि आये ।
 दुर्जनपुर बसि दुर्जनता उर कबहुँ न लाये ॥
 मिथिला भूमि मिथलाल शरण हरि भक्ति प्रचारें ।
 दूधमती तट रामा बाबा बहु जन तारे ॥
 श्री सुतीक्ष्ण जपि राममिय कुविध निवारेउ मर्यकर ।
 परम सरल शुचि सन्त ये राम उपासक रसिक वर ॥

सन्त समुदाय ७५

काशी सीताराम शरण जी परमहंश वर ।
नित सेवत मिय चरण राममिय जपत निरन्तर ॥
मिय रघुनाथ जु शरण वसेउ संकटमोचन तट ।
गुरु चरणन अनुगग राममिय रामराम रट ॥
रघुनाथदास मोर्ना जपत राममीय मिंगरीर महँ ।
वेर्णाभाधवदास जी राम जपत अरविन्द जहँ ॥

पं० श्रीरामगुलाम जी द्विवेदी मिर्जापुर ७६

श्री हनुमत पद मेह भाव मानम बहु पाये ।
मिर्जापुर वसि सकल ग्रन्थ तुलसीकृत गाये ॥
छादश काव्यन खोजि शोधि किय जगत प्रकाशा ।
मिय रघुवर पद त्यागि भूलि नहि दूमरि आशा ॥
विश्वनाथ बान्धवाधिपति लखि प्रभाव किय चरण रुचि ।
रामगुलाम द्विवेदिवर रामायणी महान शुचि ॥

श्री छक्कनलालजी ७७

कायथ वंश पदीप वड़ी पियरी काशी वसि ।
अवगाहेउ नित रामचरित मानम सरयू लगि ॥
श्रोता रामगुलाम द्विवेदि कर अति अधिकारी ।
तिनते तुलसी काव्य पाइ किय कण्ठ सुखारी ॥
परिहृत रामकुमार कहँ मानम दीन्हेउ वृद्ध हाइ ।
मानेहु छक्कनलाल जो मानस पाठ सुअर्थ सोइ ॥

पं० श्री रामकुमारजी वर्मा रामायणी ७८

रामायणी जु आयु लगे कोउ भयउ न रोमो ।
मे काशी महँ रामकुमार सुपरिहृत जैमो ॥
परम सन्त द्विज वृत्ति संतोषहि हिय अति धारेउ ।
रचि मानम टिप्पणी सुभास्कर वृत्ति मैवारैउ ॥
कहेउ कथा अद्भुत परम रामचरित मानम विमल ।
रामधाम कहँ गयउ चलि तजि महिमानम यश धवल ॥

महामानसी परिहृत श्रीवन्दन पाठक जी ७९

मानम शंकावली जासु मानम लघु ताली ।
मानम पर अधिकार, वाटिका मानस माली ॥
मानम महँ जो नाम नहीं सो वस्तु न लीन्ह्यो ।
लोक येद कर मय प्रमाण मानममधि दीन्ह्यो ॥
रामनाम जप निष्ठ शुचि संतसवि विद्वान वर ।
वन्दन पाठक मानसी मानम वक्ता अति प्रवर ॥

श्री माधवदास जी रामायणी ८०

रामदास जिमु शिष्य परम रामायणी सुख्याता ।
वसि प्रसाद वन अवध किये मानम प्रख्याता ॥
कहेउ कथा अति सरस भाव मय सन्तन माँही ।
मानेउ मानम इष्ट राममिय तुल्य सदाही ॥
अन्त समय काशी निवसि मे हरि धाम प्रशस्त मग ।
श्रीमन्माधवदास जी रामायणी प्रसिद्ध जग ॥

भक्त प्रवर श्रीरामाजी ८१

नाशे बबुआ रूप रामकर अति मन भावत ।
 लखि वरात वर रामरूप गुनि चमर दुरावत ॥
 रामायण कहँ रामगीय थपि करत विवाहा ।
 दूल्हा हरि पद प्रीति जन्म भरि नेम निवाहा ॥
 निज बित सर्व लुटाइ करि रामचरण नित रंगरये ।
 छपरा खेदाय रामा भगन कायथ कुल भूषण भये ॥

वैष्णव रत्न श्रीरूपकलाजी ८२

महो मुवारक पूर केरि बड़ि भई मुवारक ।
 शिवव्रति तपसी राम केरि सुत भा कुल तारक ॥
 रामदास श्री हंशकला गुरु श्याम नायिका ।
 लहि जग में हरि भक्ति मार्ग जन प्रेम दायिका ॥
 अवधवाम करि अवधि भरि रूप गृही हिय धारि यति ।
 योग ज्ञान जैराग्य निधि रूपकला गम्भीर मति ॥

ब्रह्मचारी श्री विन्दुजी ८३

नाग नन्दिनी हिरण्यगर्भ आख्यान सुराजै ।
 कथामुखी साहित्य गगन जिमि इन्दु विराजै ॥
 विरह काव्य किय "मंजुर्कोश" निज नामधारि करि ।
 सिय सहचरि बनि रामधाम गे पग विमान धरि ॥
 साहित्य शास्त्र अरु संनमत मथि किय लेखक काव्यवर ।
 ब्रह्मचारी श्री विन्दु जी नित हरि धाम विहार कर ॥

महान्या श्री बालक रामजी विनायक ८४

विज्ञ जानकी वर जु शरण कर शिष्य उजागर ।
 संस्कृत अरबी पालि फारसी प्राकृत आगर ॥
 अंग्रेजी अरु देवनागरी कर बड़ पण्डित ।
 कवित कहानी ग्रन्थ लिखेउ बहु हरि यश मण्डित ॥
 साहित्यरु दर्शन सन्तमत भक्ति योग विज्ञान निधि ।
 श्री श्री बालकरामजी ख्यात विनायक भाव सिधि ॥

पं० श्री सूर्यप्रसाद जी ८५

नागर सूर्यप्रसाद विप्र लखनऊ निवासी ।
 सम्मेलन श्री रामचरित कर सुदृढ़ प्रकाशी ॥
 परम भागवत मन्त सुमानस मधुरे गावैं ।
 धरि निपाद गुह स्वांग राम पग धोइ लड़ावैं ॥
 सुमिरत सीताराम नित भव्य आचरण शुद्ध मन ।
 अवध वास बहु काल करि राम धाम गे त्यागि तन ॥

श्री वेणीमाधव लाल जी (पौराणिक) ८६

लोकनाथ पुर निवसि जियन नित हरि रँग राँच्यो ।
 सत्रःपुराण पढि कियो तीर्थ भारत नहिँ बाँच्यो ॥
 प्रबल विपक्षिन सों रण किय पर कबहुँ न हार्यो ।
 मानस गाइ सप्रेम सन्त पद रज शिर धार्यो ॥
 ज्येष्ठ भवानि सहाय जू जासु पुत्र हरि भक्त भल ।
 वेणीमाधव लाल जू पौराणिक ज्योतिपि प्रबल ॥

श्रीभवानीमहाय लालजी (रामायणी) ८७

लोकनाथपुर ग्राम जिला सुल्तापुर ठयऊ ।
संत मंग कार व्यसन चरम गाँजहु कर लयऊ ॥
रामायण कह प्रीति नीतिरत भक्त सुभारी ।
ज्येष्ठ गजाधर पुत्र परम हरिजन ब्रह्मचारी ॥
करि अथार्पाक वाम गृह मय साधु कहि मान दिय ।
श्रीमद्भवानी महाय जू रामचरण अश्रयण लिय ॥

पं० श्री राममालकदास जी रामायणी ८८

नित तुलनी कृत काव्य अवध वसि कान्ह प्रकाशा ।
मुपदि अनेकन शिष्य भये गानम शुचि व्यासा ॥
वाणी भव्य गंभीर रूप दर्शक मन कर्षे ।
कहत कथा शुचि राम चरित जनु अमृत वर्षे ॥
बड़ी छावनी अवध वसि रामायणी प्रमिद्ध जग ।
बालकराम सुदाम जू किय पयान साकेत मग ॥

परमहंस श्रीराममंगलदास जी ८९

नित ब्रह्मानंद सुरा छके जनु रहत मगन मन ।
भावुक परम उदार दुखिन सेवहि दे धन तन ॥
सुरति योग अभ्यास निरत साधकन मिखावत ।
वैद्यक कला प्रवीण विविध उपचार करावत ॥
तुलसी रामानन्द पद परम प्रीति सीता रमन ।
श्री श्री मंगलदास जी अवध वसत गोकुल भवन ॥

बोकेमर श्रीरामदासजी गौड़ ९०

रामदास जी गौड़ कथान प्रोफेसर काशी ।
भाव बद्ध वात्मल्य मेह मियराम सुपासी ॥
वैज्ञानिक अनि प्रबल पम० ए० साहित्याचारज ।
रचे अनेकन ग्रन्थ मानि तुलसिहि आचारज ॥
मंस्कृत प्राकृत पालि हु फार्मी अर्वा विज्ञवर ।
रामदास गे धरि अमर हिन्दुत्व आदि निजकृति अमर ॥

स्वामी श्रीअवधकिशोरदासजी ९१

मध्य जनकपुर आश्रम रामानन्द वनाये ।
राम भक्ति मय ग्रन्थ अनेकन लिखे छपाये ॥
वक्ता परम गंभीर लेखनी महँ बल भारी ।
श्रीहरि गुरुपद प्रीति नीतिरत रहत सुधारी ॥
निज गुरु मथुरा दामजी सीतारामिय चरणवर ।
अवध किशोर सुदाम हरि भक्ति प्रचारक विज्ञवर ॥

स्वामी श्रीदेवेन्द्राचार्यजी ९२

रामानन्दाचार्य चरण सेवक मति नागर ।
प्रगति तत्व श्रीसम्प्रदाय पुस्तिका उजागर ॥
अवधवास कछु काल कान्ह कुञ्ज वसे प्रयागे ।
राम सुरक्षादास शास्त्र पढ़ि नित मंग लागे ॥
धार्मिक ग्रन्थ विचारि नित हिय ध्यावत मियराम छवि ।
श्रीदेवेन्द्राचार्य अति सरस हृदय विद्वान कवि ॥

६० श्रीजानकीश्वरजी स्तवना (राभायणी ९३

शिष्य गायत्री दाम करे मन्त्रिनावहि ठानउ ।
 रागायणी गुह्यमान आशु कवि सब लखि मानउ ॥
 विद्यानल नव भक्तभाव पनावलि गाये ।
 मानस पर मार्तण्डक दीपके चतु बनाये ॥
 श्रुत भाषी निर्भीकचिन्त मिथदासी तत्सुख लखउ ।
 नेहलता क नेह बस आ मिय मिदापय नित रहउ ॥

परमहंस श्रीराधादेवदासजी, चित्रकूट ९४

धारि परम हंसी सुवृत्ति नित मन्त्रहि मेवें ।
 चित्रकूट जानकी कगड तपकलि सुख लेवें ॥
 राम यज्ञ अति बृद्ध राजकोटहि कखाय ।
 मंत्रमयिहि यपि विद्यालय शिष्य पढ़त पढ़ाये ॥
 दीन दुस्मिन दुख लखि हत नत्र यज्ञ लित नगन रह ।
 राधादेवदास स्वामी परम हंस हंसवन ज्ञान गह ॥

श्री बालमुन्ददासजी तपस्वी

तपसी बालमुन्ददास अति सिद्ध सुखमे ।
 चापा डोला बाट नाम सुमिरन मन लाये ।
 तीर्थ यज्ञ प्रति वर्ष पुगी तगदुल पहचारे ।
 सन्तन गऊ जिनम आशु नित पाछे स्तारे ॥
 सती राम जला मुक्त नगर धय शाला खे ।
 योग विलासपुर जिला नर्मदापथक विलास ॥ १०० ॥

स्वामी श्रीराम रत्नदासजी करण । ९६

कथा सुनत इतिदर्श पाय हरि शरणहि आए ।
 राम रत्न गुप्त नान राम धरि हृदय मुहाये ॥
 करह विकट वन बीच वर्ष नव अति तप कीन्दो ।
 हृदय दयामय राम मन्त्र संवन मन दीन्दो ॥
 कीर्तन अखण्ड श्रुति राम यपि सकल जनन आनंद दियो ।
 बड़भागी जन पहुँचिके दृग श्रुति मन वच मुख लियो ॥

बाबा श्रीरामदासजी राभायणी ग्वालियर । ९७

राम भक्ति भर्मज्ञ राम यश अति बड़ भागी ।
 मृदुभाषी विनयी दयालु हरिपद अनुगामी ॥
 गुरु आज्ञा लदि चारि माम जत्र यज्ञ कराया ।
 विष्णु यज्ञ रचि मवा लक्ष जत्र अन्न विवायो ॥
 भक्त समागम जारि नित किर्तन कथाय हरि यश कहत ।
 रामदास मिय राम की भक्ति जगत बांटत रहत ॥

कोष्ठावाले बाबा स्वामी श्रीरामकिशोरशरणजी हनुमन्त, निवास ९८

बहू शृङ्गार स्मकेर अन्ध छपवाड़ सुवाँटे ।
 मायिकदल जनु जीति मदादिक मैनिक डाँटे ॥
 शुचि शृङ्गार रुचिभाव मदा मियपति पति मानत ।
 निखर रहम विलास अव्य निज वास सु ठानत ॥
 हनुमन्त निवास महँ जामु मुख राम चरित अमृत भरत ।
 राम किशोर मुशरण कर मन्त्र सकल आदर करत ॥

पं० श्रीराम किशोर शरणजी शुक्ल ९९

त्यागि वकालत निज उनाव सों अवधहि आये ।
रामवल्लभाशरण चरण मह वाम बनाये ॥
श्रीनाभा कृत भक्तमाल अरु मानस गावत ।
राम भजन नित करत मन्न पथ चित्त लगावत ॥
बमेउ जानकी घाट नित कथा सुनउ हरिगुरु भजेउ ।
राम किशोर सु शरण जू शुक्ल अवध सेवन मजेउ ॥

पं० श्री श्रीकान्तशरणजी 'रामायणी' १००

पण्डित श्री श्रीकान्तशरण अति मिय प्रिय प्रेमी ।
सम्प्रदाय तत्त्वज्ञ नाम जापक दृढ़ नेमी ॥
श्री तुलसीकृत ग्रन्थन कर शुचि भाव बखानैं ।
अष्टयाम पद बद्ध रचे भावुक मन्मानैं ॥
सिद्धान्त तिलकटीका रुचिर सुमिरनि विवरण अति द्रजत
अवध सुमद्गुरु कुटी रचि वाम करत हरिपद भजत ॥

श्री प्रेमदासजी रामायणी १०१

परम भव्य शुचि वेष तिलक श्री अति द्युतिकारी ।
बसि बहु दिन श्री अवध पदे तुलसी कृत मारी ॥
बड़ बड़ नगरन जाइ राम यश मचहि सुनावत ।
पूर्वापर सों शोधि सकल तुलसी कृत गावत ॥
व्यास पनो अरु भजन कर योग सुफल दिय गहि रत ।
प्रेमदास रामायणी तुलसीकृत सुन्दर कहत ॥

पं० श्री ब्रजभूषण शर्मा रामायणी १०२

श्री ब्रजभूषण विप्र जौनपुर जिला निवासी ।
गहि रामानुज शरण सुमानस कथा विकाशी ॥
कथाकार जग अति प्रसिद्ध श्री भूषण अग्रज ।
गहि श्री वैष्णव धर्म कहत मानस हरिपद भज ॥
धर्म गृहस्थाश्रम रुचिर पालत नित सुत महित जग ।
कालक्षेप शुचि जगकरत श्रीगुलसांकृत कथा मम ॥

पं० श्री राधवल्लभाशरणजी रामायणी १०३

घाट भौमला नृपति रचे काशी गंगा पर ।
द्विज गंगापरमाद निवसि तहैं सेवे मियवर ॥
राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन धरि सुत नामा ।
मानस प्रवचन नाम रटन कछु और न कामा ॥
भजेहु राममिय कृपालहि कबहुं न कलि कृत तप तये ।
श्रीयत राधवल्लभाशरण रामपुर बलि गये ॥

श्री रसिक विहारी (महाति श्रीजानकी प्रसाद) जी १०४

रामसन्धा अति विमल कनक गृह गहे महन्ता ।
बालपने मरि जिये विविध खल कहुं क्रिय मन्ता ॥
लहि मारुनि आदेश रचेउ शुचि राम रामायन ।
और काव्य बहु रचे राममिय भक्ति परायन ॥
सिद्ध हस्त कवि मन्त शुचि रामनाम जप ध्यान रत ।
जानकी प्रसाद रसिकेश जू रसिक विहारी कवि भगत ॥

श्री सुदर्शनसिंह जी (चक्र) १०५

रत्नवंशी लक्ष्मी सुधीर मन श्री हरि भक्ती ।
लिखत कगनी भक्ति परक जग नहि अनुक्ती ॥
शुचि मध्या अथ्यगनशील अति शान्त मगल मन ।
स्वास्थ लागि न भक्तन रग्वत हिय कृष्ण परम धन ॥
सम्पादक लेखक विपल मन तन विलम्बत सिंह श्री ।
कृष्ण मया अति विमल हिय चक्रमुदर्शनसिंह जी ॥

बाबू श्री शारदा प्रसाद जी मानस मंत्र १०६

मानस मंत्र सुदर्शन करन मानस परचार ।
मानस भार प्रचार करन मानस मणि द्वाग ॥
सतना गृह निय त्यागि रात्र वन रुचिर बनाये ।
मानस मार्गनि भवन मानसर रचे सुदाये ॥
परमात्मागो पश्चिमी मानस हित लयलीन मन ।
शारदाप्रसाद हरिभक्त मन वाक्स्मृत्त सुस्थूल तन ॥

स्वामी श्री राममुखदाम जी राममनेही १०७

राममनेही पन्थ माहिं शुचि राममनेही ।
परम भक्त अति मगल शुद्ध मन मन वच देही ॥
गीतापनिपत्पराण आदि मधुभावन डेग मे ।
माह अन्धिय सुनि छुटत रंग न नोहन रंग मे ॥
धारि मधुकरी वृत्त मन्त्र श्री हरि निशिदिन मगन मन ।
दाम राम सुख प्रेममय ज्ञानी भक्त उदार जन ॥

श्री हरिबाबा जी १०८

मवाँ वदायुँ बाँधि बांध मनानि मुख दीन्ह ।
निशिदिन सुभिरत जान हृदय हरि रूपहि लान्ह ॥
महाराग दिखराय जिन्हें हरि एका दीन्ह ।
उन गुरु चरणन पैठि नाम निष्ठा रुचि लीन्ह ॥
रूप चरित हरि निष्ठ बड प्रतिभण हरि नावनि जपत ।
हरि बाबा भवतः प्रकाश जो बहूत जनन पावन करत ॥

श्री रुडिया बाबा जी १०९

विभव पूर्ण तजि दीन्ह महान्ती काम रूपकी ।
दर्शक गेटी छाँडि लेहे व्रजचन्द्र सुपरी ॥
बहुदिन गहि भ्रमि भक्ति ज्ञान लेगन उपदेश ।
करि वृन्दावन कसड दवान्तल नाम सुदर्श ॥
श्री हरि लीला कथा नित होत नमन बहु मन्त थे ।
मन्यामिन महँ सुकुटमणि उदि न भवति लमन्त थे ॥

पन्नावाले बाबा श्री रामविजयशरण (शंकरदास) जी ११०

बालक मन अति मस्त तपस्वी पन्त बासी ।
राममने राज राति रात मैग नख्य सुपासी ॥
राजगुरु पन कर मान मन तनिक न राखत ।
मोवल काहु न लख्यो प्रगट हनुमन मो भापत ॥
अति संकीर्ण सुगुफा महँ पैठि जपत हरि रातदिन ।
बाबा शंकरदास जी व्यर्थ न वितवत एक दिन ॥

श्री जयदयाल गोयन्दकाजी १११

परम भक्त विख्यात निरन्तर गीता गावें ।
शास्त्र गृहस्थ सुवर्णिक मरिम आचरण वनावें ॥
लेखक भजन गंभीर चित्त सब जन सनमानें ।
निष्ठ तत्व अद्वैत कृष्णपद रुचि अति ठानें ॥
सतमंगति सुख लाभ द हरिपद भजहिं भजावहीं ।
जय दयाल गोयन्दका कृष्ण चरित नित गावहीं ॥

श्री हनुमान प्रसादजी पोदार ११२

बालपन भक्त्य भवन तर जाहि बचाये ।
युवाधरे हरि बाँह रेलतर कटन न पाये ॥
सम्पादक कल्याण यशस्वी लेखक ज्ञानी ।
परम भागवत कृष्ण तत्व वक्ता स प्रमानी ॥
शान्त दान्त गम्भीर शुचि गृही वेप पर विरत मन ।
श्री हनुमान प्रसाद जू पोदार संच कृष्ण धन ॥

सहाय ११३

मानस शंका मोक्षनादि बहु ग्रन्थ वनायो ।
भक्तमाल कर तिल लिख्यो अति सरस सुहायो ॥
परम मन्त जयसामदास जी वसि प्रमोद वन ।
राम भजन करि राम धाम गे होइ प्रसन्न मन ॥
लिखि मानस मंजीवनी आलाप्रसाद द्विज सदयकर ।
रवि मानस परचारिका जानकि दाम भये अमर ॥

नंग परमहंस श्रीअन्नचविहारीदास जी ११४

अन्नचविहारीदाम परम रामायण प्रेमा ।
बोल प्रचण्ड उदण्ड नास्तिकन कहैं दुख देनी ॥
नास्तिक वादहिं ग्यगिड मुमानस टीका कीन्हे ।
मोधि उचित मत उत्तर सकल प्रति पक्षिन दीन्हे ॥
दिशा वाम हरि आस चित मोध चिपणी तट बसे ।
रामायण अरु भक्ति हरि बहु प्रचारि हरिपद लसे ॥

भीमवगमदासजी "दीन" रामायणी ११५

बृटिश अनुचरी त्यागि गम अनुचर भे आई ।
नागा बाबा पदन बैठि शुचि मानस पाई ॥
मानस शंका समाधान कल्याण प्रकाश ।
रवि मानस मुहम्य बहुत अज्ञान विनासे ॥
नम मुक्ता दानि जनु राम आपन धाम लिय ।
जयगमदासजी दास शुचि मानस भाव प्रचार क्रिय ॥

श्रीरघुवीरदामजी (चित्रकूटी) ११६

रामायणी सुख्यात कथा अति सरस उज्ज्वली ।
श्रीनृलसी कुल एक निष्ठ शनिदत्त नित भारी ॥
सहस्रन मन्तन संग राखि विचरउ सदाचार ।
बहुत नास्तिकन कान्ह आम्हिक दे हरिनाथ ॥
धर्म प्रचारक मुमट अति जगत चित्रकूटी निर्दिन ।
रघुवीर दाम अति सरस मति जासु भजन वत अत अद्विज

रायसाहब श्रीराजेन्द्रप्रसाद जी ११७

मायिक द्वन्द्वहिं जीति रामायण भजहु निरन्तर ।

लीला बधु पद प्रांत परम बाहर अभ्यन्तर ॥
 आप तथा सरकार त्यागि तुम कहेंउ न काह ॥
 परम त्याग कर रीति करेउ भरि जन्म निवाह ॥
 मृदुप्रिय भाषी नम्र मन दर्श राम निय हृग लहेउ ॥
 श्रीराजेन्द्र प्रसादजी राय स्तन अनुपम रहेउ ॥

सीतारामाय श्रीराजेन्द्र प्रसाद जी ११८

वैष्णव धर्म विचारि त्यागि सबजजि पद दीन्ह्यो ।
 अवध वास करि सन्त चरण वन्दन नित कीन्ह्यो ॥
 शुचि आचार विचार नियम दृढ़ मन्त्र जापकर ।
 रूपकला पद पदुम मेह पथ लहेहु भक्ति कर ॥
 रामचल्लभाशरण के पद मकरंद मनिन्द होइ ।
 भक्त ब्रजेन्द्र प्रसाद जू श्रीसीतारानीय मांइ ॥

वेदान्त शिरोमणि श्रीरामानुजाचार्यजी ११९

परम सरल शुचि सन्त विज्ञ वेदान्त शिरोमणि ।
 मन्दिर श्रीहरि देव देवकर सब महन्त भनि ॥
 सदाचार की सीम तत्व शरणागति भाषत ।
 वक्ता परम उदार हृदय कहु कपट न राखत ॥
 परम धर्म भाषत लिखत सुनि पढ़ि भक्ति दृढ़ाई मन ।
 श्रीकमलापति पद लमत रामानुज आचार्य मन ॥

समुदाय १२०

श्रीपरांकुशाचार्य कुँज गलते मथुरामहँ ।
 वृन्दावन श्चुनाथ दाम श्रीरंग मन्दिर जहँ ॥
 वेदान्त विभूषण चक्रपाणि आचार्य सुगज ।

धनी राम वेदान्त धनी अति विज्ञ विराजें ॥
 श्रीधरणाधर विदुष अति हरि गुरु चरणन नित नये ।
 वृन्दावनवासी परम वैष्णव शुचि विद्वान ये ॥

१० श्रीअमोलकरामजी शास्त्री १२१

परम मान्विकी वृत्ति सदागृह रहि हरि ध्याये ।
 भाष्य उपनिषद् रचेऽध्याम गिरि बत्र सुहाये ॥
 आत्म परत्वादृश ग्रन्थ औरहु बहु कीन्हे ।
 लोभ पिसाचिहिँ मारि चित्त हरिपद नित दीन्हे ॥
 वेदान्त न्याय साहित्य के परम प्रबल विद्वान भे ।
 शाम्भ्रि अमोलकराम द्विज हरि दामी मनि मान भे ॥

पण्डित राज स्वामी श्रीसूर्यदामजी महागज १२२

अप्रति भट विद्वान सुपाणिनि शब्द शाम्भ्रकर ।
 निरखि वेष नहिँ जानि मकन कोउ तिनहिँ विश्वर ॥
 परम सरल शुचि साद्विचार अति सरस पढ़ावें ।
 सीढ़ीपुर मन्दिरै शाम्भ्र कण्ठाग्र सुहावें ॥
 थपे पाठशाला बहुत शिष्य मुभट विद्वान भनि ।
 परिहृत सूर्यदामजी विद्वज्जन महँ मुकुट मनि ॥

भक्त श्रीगमशरणदासजी पिलखुआ (मेरठ) १२३

बमत पिलखुआ ग्राम जाइ सतमँग नितकरही ।
 सेइ सन्त गृह आनि परम हित सिख उर धरही ॥
 सन्त चरित उपदेश सुलिखि सब जग महँ बाँटत ।
 लइ हरिनाम सप्रेम पाय पवल्ल करि पाटत ।
 परम धर्म हरि भजन रत गृही धर्म आचार मन ।

राम शरण दामहि कहत परम भक्त सब सन्तजन ॥

महन्ध श्रीअवधविहारीदामजी, पड़ी कुटिया १२४

परम रमिक श्रीरामचरण अनुराग अगाध ।
अति शुचि मरल सुभाव निरन्तर सेवत माध ।
दियउ न कबहुँ जवाव माँगि सन्तन मुख डारेउ ।
नियम धर्म आचार पालि सुविचार प्रचारेउ ॥
अवध विहारीदामजी बन प्रमोद कटिया बड़ी ।
मरम हृदय सन्तत प्रगन सन्त सेव रुचि हिय गड़ी ॥

महन्ध श्रीरामपूजाजी दिव्य कला कुँज १२५

रूप कला पद शिष्य परम पूजन अनुगामी ।
ताते पूजा राम कहत सब जन बड़भारी ॥
दिव्य कला डक कल्ल परम सुन्दर निर्मायो ।
मन्त्रित महित श्रीगोपराज तहँ पर पधगया ॥
प्रमी मरल सुभाव श्री दिव्य कला अति शुभग गुन ।
हरि सेवन कर मन्त्रित दिव्य भाव तनमन बचन ॥

वेदान्ती श्रीरामपदारथ दामजी परागज १२६

रामवल्लभाशरण चरण की लहि शरणागति ।
न्यायाचार्यरु उभय गिरांभा मकलशाम्भ गति ॥
मरल सुभाव सुमधुर बोल मिय राम भजन नित ।
शुचि मन्दिर रचि राम मीय यपि उचित व्यये वित ॥
सन्त सेव विधिवत करत नित जग मान महानकर ।
रामपदारथदासजू शुचि महान्त विद्वान वर ॥

पं० श्री अखिलेश्वर दासजी १२७

ज्योतिष अरु वेदान्त न्याय महँ परम प्रवीना ।
सेवत सीता राम चरण बनि वाल नवीना ॥
रामवल्लभाशरण चरण लहि जन पद पाये ।
अति उज्जल शृंगार भाव महँ चित्त लगाये ॥
मणीगम की छावनी में बहु काल कथा करे ।
श्री अखिलेश्वर दामजू अवध वाम महँ रुचिधरे ॥

समुदाय १२८

वृन्दावन वंशीधर तट शुचिरामा नन्दी ।
सन्त मुदामादाम सन्त पद प्रीति अनन्दी ॥
चित्रकूट कुधरामदाम जी सन्त सेव करि ।
तपमी मीता कुण्ड अवध जन सेव उमंग भरि ॥
राम सुभूषण दामजी मणि पर्वत तट सेव जन ।
भोरी किराय सेवत भगत तिन सन्तन पद सुभिरु मन ॥

स्वामी श्रीमाधवदासजी भक्तमाली १२९

वृन्दावन टट वाम लली अरु लालहि मेवें ।
शुचि गंभीर शृङ्गार भाव अधिकारिहि देवें ॥
भक्तनाम मालिका औरहू ग्रन्थ बनाये ।
बन विहार वमि त्यागि जु टोपी कुँजहि आए ॥
मन वाणी दोउ मृदु सरस अली माधुरी भक्ति वित ।
श्रीमन्माधवदास जन कवि सुभक्तमाली विदित ॥

बाबा श्री केशवदास जी भक्तमाली १३०

क्षण भंगुर चित वृत्ति परम रुचि कथा कहन महँ ।

भगवद्धर्म प्रचार करत शुचि शिष्य लहत जहँ ॥
 भक्तमाल कर भाष्य लिखत करि मति मनषाही ।
 दोहन महँ लिखि अर्पव वितरने सदाही ॥
 शिष्य जनार्दन दामकर त्यागी उदार रुचि भजन मन ।
 भक्तमाल शुचि कथा कह केशवदाम मुमय्य तन ॥

महन् श्री कौशलकिशोरदास जी १३१

बड़ी छावनी विदित अवध बहु मन्त रदाही ।
 श्री तुलसी कृत कथा मुनन जहँ बहुजन जाही ॥
 विद्यामों अति प्रेम पढत पद पाइ महत नित ।
 निज आचारज धर्म निवाहत मन्त मुहद चित ॥
 सन्त गऊ सेवन करत नियम अटल आचार बल ।
 शिष्य मुईश्वरदामकर कौशलकिशोर शुचिदाम भल ॥

श्री दीनबन्धुदासजी नासिक १३२

गौर कृष्ण चैतन्य चरण महँ प्रीति निभावत ।
 हरि कीर्तन नित करत और भक्तन करवावत ॥
 सम्प्रदाय दृढ प्रेम परम शुचि ग्रन्थ प्रकाशत ।
 राधावर यश गाय मुजन अज्ञान विनाशत ॥
 वृन्दावन तजि नाम हरि सुधा सवहि वाँटत रहत ।
 दीनबन्धुकर दाम शुचि दीनदया करि यश लहत ॥

स्वामी श्रीरामकृष्णदासजी मौनी १३३

सुख सम्पति परिवार त्यागि श्री अवधहि आए ।
 श्री मौनी पद कृपा राममिय जनरुचि पाए ॥

रहत राममिय राम निरन्तर दृग जल बहही ।
 काउकर बहु अपकार लखहुँ कहुँ हि न कहही ॥
 तनमन पवित्र मृति भरलाचिब मन्तवण महँ भावमल ।
 रामकृष्ण शुनिदानवर कलिहि जितत निज भजनबल ॥

महन् श्रीकृष्णदामजी अलवर १३४

धनि महन्त श्रीकृष्णदामजी अति बड़ भागी ।
 सम्प्रदाय श्री परम सुउन्नति जेहि लव लागी ॥
 कामधेनु फिरवाइ मन्त मेवत तन मन मे ।
 सम्प्रदाय भाहित्य प्रकाशन वचे मुधन से ॥
 परम सन्त मुठि मुहद वर नद्विचार आचार मन ।
 अलवर अद्वामहँ वमत रामानन्दाचार्य जन ॥

महन् श्रीरामदासजी उड़िया, हरीकेश १३५

हरीकेशपद ध्याइ वमत हरीकेश सदाही ।
 मनोकामना मिद्ध हनू थपि मन्दिर माही ॥
 ब्रामि सुरमरितद मनन मन्त भगवन्तहिं सेवें ।
 सम्प्रदाय दृढ प्रेम नेम खल त्याग न लेवें ॥
 मद कुचालिमों अति घृणा सदाचारमों प्रीतिमन ।
 रामदास उड़िया हृदय राखत हरिपद परम धन ॥

कविक श्रीराघवदासजी, वृन्दावन १३६

भव्य भक्ति भरि भाव भक्त भगवत यश भापे ।
 सतत सख्य रम मिन्धु सुधा सीतापति चाखे ॥
 कविता कला निधान कहत सब रस उपजावें ।

रामकृष्ण गुणभक्त गाढ़ अमृत वर्षावे ॥
श्री रामानन्दी प्रवल शुचि एक सम्प्रदायी गहन ।
कविवर राघवदास श्री राम मिताई सुख लहन ॥

श्री अञ्जनीनन्दन शरण जी १३७

त्यागि वकालत सन्त शीत परमादहि पावन ।
अवधवास नित करत राममियगटि अवि ध्यान ।
रवि मानस पीयूष कथकड़ी बहुत बनाये ।
विनय पियूषहु लिखित मन्त यश चित्त लगाये ॥
श्री तुलसीकृत काव्य अरु भक्तमालमहँ परम रुचि ।
श्रीअंजनिनन्दनशरण रूपकलाप्रिय शिष्य शुचि ॥

परमहंस श्रीरामगोपालदासजी १३८

श्री वैष्णव मठ स्वाजि मवन कर परिचय लीन्हें ।
रवि श्री वैष्णववेप परम सुख मन्तन दीन्हें ॥
लेखक सुहृद उदार परम त्यागी अनि ज्ञानी ।
सन्त शील जिमु देखि कुममता दरि परानी ॥
मणि गिरि मथुरादामक शिष्य शास्त्र महँ स्तरेहे ।
राम गोपाल सुदाम वर परम हंस पदवी लहे ॥

गोस्वामी श्री विन्दुजी (वृन्दावन) १३९

अखिल भारतिय-राम-चरित-पानम सम्मेलन ।
थापि सतत हरि यश प्रचारि कछु राष्ट्रवाद मन ॥
कवित गान पद सरस मनहुँ शतपद ते धाये ।
मानस वक्ता ख्यात भाव नव नव उपजाये ॥

नाट्यकार अति कुशल गुरु रामसखा मीताशरन ।
बमि वृन्दावन विन्दु कवि रामधाम कीन्हे गमन ॥
अवध वास सुखराम उपमक श्री "राघव" के ।
फिर वृन्दावन वाम कहैं कछु गुण यादन के ॥
स्वर मंगीत प्रवीन मुने गन्धर्व मन हरपत ।
कविता भाव नवीन मुने वध जन आहर्षत ॥
ज्यों रामचरित मुगमे कटत अघृत वाणी में भरा ।
इन्दु वरावरि क्या करे जब मिन्धु विन्दु में हे भरा ॥

श्रीजानकीदासजी जयपुरिया १४०

ममुत सुमार्तिक वनि महानुज हरिजन मेहँ ।
मन्दिर वाग सुविर्चि राम जपि त्रिय सुख लेहँ ॥
रामवल्लभाशरण चरण दृढ़ शिष्य उपामी ।
सन्त पत्र मदग्रन्थ अनेकन सुखद प्रकाशी ॥
रामानन्द मुमप्रदाय कर शचि मेवक गम्भीरम ।
वंशीधर तजि जयपुरहि जानैकिदाम सुअवधवम ॥

श्रीकण्ठात्री मीनो श्रीअवधविहारीशरणजी जनकपुर १४१

मिथिला बमि तृपमिस्वइ मनेच्छन दरि भगाये ।
रवि परिकरमा मार्ग मध्यमे मरग्य दराये ॥
सम्मेलन हरिनाम करइ कामद यश लीन्हे ।
रामसखे कुल ख्यात राम लघु बन्धु मुचीन्हे ॥
कर माला कोपीन कटि कदलिन कवहुँ वस्त्र धरि ।
मौनी कर पात्री विदित अवधविहारीशरण हरि ॥

पं० श्रीगोवर्धन पाण्डे शत्रुघ्नचारी, हनुमान गढ़ी १४२
 विविध दास्य अरु ज्ञान कला महेंद्रम विशारद ।
 करि मधुकरि हरि भजन अवध विचरत जनुनारद ॥
 शत्रुघ्नचारी मुख्याल दलचारी सब जानै ।
 बसत गढ़ी हनुमान मन्त्र, सबही मन्मानै ॥
 तजि प्रपद्य हरिपद भजन शास्त्रवाद प्रिय विमल मन ।
 गंगाधर पाण्डे परम मानस प्रिय महाराष्ट्र जन ॥

मधुदाय १४३

सूमी बालमुकुन्ददास नित मन्तन मेव ।
 बलुआघाट सुगमदेवदासहु यश लेवै ॥
 श्री वैष्णव शुचि धर्म निरत तहँ भगवत दासा ।
 सेवत मन्तन कहत रामयश हरिगुण आशा ॥
 जाति दागगंज श्रीवलदेवदास शुचि भंतजन ।
 पुरी प्रयाग ये सन्तजन मेवत मदा उदारमन ॥

डा० श्रीगणेश्वरदासजी योगिगण (गोवत्स) १४४

रामस्वरूप सुदाम कवी गोवत्स कह्यै ।
 मधुदाय श्री वृद्धि हेतु मनवृद्धि लड़ावै ॥
 हिन्दीमंस्कृत ज्ञान इमालमहु बी. ए. तक पढ़ि ।
 मधुवेदना काव्य प्रगात जननिज अनुभव मढ़ि ॥
 योगतत्व ज्ञाता परम मानीभक्त सुगुह्य वर ।
 थापि नवयुवक दल करत मेवत भुजन चढ़ाव पर ॥

स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती १४५

श्री शांकर वदान्त न्याय साहित्य सुपसिद्धत ।

द्विज मान्तनुविहारि द्विवेदी हरि रुचि मण्डित ॥
 कृष्ण भक्तिरस मसम प्रथम लिख लेख मुखवन ।
 मन्थामी होइ बसत अधिक वृन्दावन पावन ॥
 कहत भागवत अतिमरम मगल प्रकृति शुचि मव्य नन ।
 स्वामि अखण्डानन्द कर ज्ञान अखण्ड उदार मन ॥

महन्त श्रीश्यामसुन्दरदासजी रामायणी, कदा (पयाग) १४६

श्रीप्रयाग के निकट कड़ा गंगा तट राजै ।
 तहँ पर कवरी घाट सुभग हरि धाम विराजै ॥
 रचै सुमानस निलक अर्थ प्रतिपद नौ भाषित ।
 वेद सुतत्व प्रकाशिकाहि रचि किये प्रकाशित ॥
 श्रीहरि गुरुपद प्रीति अनि माधु आचरण विशद तर ।
 श्याम सुसुन्दरदामजी राम उपासक विज्ञवर ॥

पं० श्री वासुदेवदासजी वेदान्ती मणि पर्वत १४७

पितृ सुत तिय धर त्यागि अवध गे वन प्रपोंद महँ ।
 शिष्य सुश्री हरिनामदास कर होइ मणि गिरि रह ॥
 सुन्दर बहु बलवान अखार मल्लन जीती ।
 ब्रज सुदर्शनाचार्य निकट कह कथा मप्रानी ॥
 परिहृत बड़ वेदान्त कर परम निम्पृही मन्तपुर ।
 वासुदेव जू दाम गे गुरुपद सेइ सुरामपुर ॥

पं० श्रीकिशोरदासजी वृन्दावन १४८

अति त्यागी विद्वान सरग मति गति हरिपद महँ ।
 श्री भिम्बार्काचार्य चरण प्रतिपादित मग गह ॥

आचार्यन कृति खोजि प्रकासेउ सम्प्रदाय हित ।
जीवन भरि हरिव्यामदेव कुल उन्नत चितवित ॥
भजननिष्ठ वक्ता मुहुरद लिख्य ग्रन्थ बहु भक्ति पथ ।
दागकिशोर मुर्वेशिवट वृन्दावन लिय कृष्ण गथ ॥

सम्प्रदाय १४९

मुनिार गवतदाम परम प्रति वादि भयंकर ।
रामायणि शिवराम दाम काशी मुकाम कर ॥
पर्वति गगणुलान दाम गुचि मानस आशा ।
वेदान्ती अति मन्त अवध श्रीगुवर दामा ॥
रामखेलावन दाम मे नैयायिक नियमग जन ।
मणिगिरि मथुरादाम मे मरलमुभाव उदार मन ॥

पुजारी श्रीनमदेवशरणजी, कनक भवन १५०

कनक भवन मियराम पुजि रखि सखी भाव हिय ।
अवध नगर वसि कबहुँ न पद पदत्राण छत्रलिय ॥
कथा मुनन अति प्रेम नेम ते छावनि जाने ।
उत्सव जन्म निवार गमकर राज्य कराने ॥
युगलनाधुरी कुंज अपि नियम निवाहि सुजन्म भर ।
जगदेवशरण मियराम जपि रामधाम नितवामकर ॥

श्री प्रियाअलीजी "खाकी बाबा" (मैरीटार बलिया) १५१
मैरीटार सुगाँव जिला बलिया महँ अहर्ड ।
तहाँ नारामुत महित पूजि हनुमत छाव लहर्ड ॥
रामप्रिया शुचिशरण नाम निज प्रिया अली कह ।
खाकी बाबा ख्यात रसिकता अरु सिद्धी महँ ॥

रूपकला पद कृपात रहि गृह लहि हनुमत कृपा ।
कर जोड़े द्वारे खड़े रहत अनेकन नर नृपा ॥

महन्त श्रीलालदासजी, चितौड़गढ़ १५२

प्रेमी परम उदार नियम हट भजन भाव रति ।
शिष्य जानकीदाम संग पंडित मु मरल मति ॥
मन्दिर भव्य मविरचि और थपि ग्रन्थागार ।
भुवनमिह हरिभक्त आन वसि भक्ति प्रचार ॥
श्री वैष्णव गुचि विज्ञवर राम नाम जपमहँ निरत ।
लालदास चितौड़गढ़ चारिभुजा मन्दिर लमत ॥

महन्त श्रीभीष्मदासजी, पुष्कर १५३

श्रीवृन्दावन हंसदाम निम्बार्क कोट रचि ।
कहउ कथा नित भक्तमाल हरि भक्ति हृदय भवि ॥
श्रीहरि व्यासाचार्य अनुग गुचि मन्त गम्भीरा ।
नित किय बहु गुचि शिष्य परम निर्मल मतिधीरा ॥
हंस दाम कर शिष्य गुचि भूत प्रेन जेटि लखि सजत ।
श्रीपुष्कर शुभ क्षेत्रमहँ भीष्मदास हरिजन भजत ॥

ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमार शरणजी १५४

श्रीनिम्बार्कचार्य अनुग अति विज्ञ उजागर ।
हरि हरिजन कछु मेव करहु विद्यानुधि आगर ॥
महा सभा निम्बार्क कर मंत्री जु प्रधाना ।
विद्यालय शुभ थप अपर किये कार्य महाना ॥
वृन्दावन बहु वास करि श्रीगोलोक सुवस वसे ।

नन्दकुमार सुशरण नृ ब्रह्मचारी वृध महँ लमे ॥

समुदाय १५५

युगलमाधुरीशरण भक्तमाली अति ज्ञानि ।
निज गुरु श्रीजगदेव शरण पद रुचि अतिमानी ॥
कनक भवन हरिमेव विप्र बलदेव प्रमादा ।
परम निष्ठ कैकर्य सीध भज युत अह्लादा ॥
जयपुर मन्दिर अवध बस परमानन्द भावुक परम ।
राममोहिनीशरण नृ मानस वेत्ता कथ धरम ॥

श्रीरामदेवजी, मिरदाहा टोला (पटना) १५६

द्युतमय व्यभिचार परायण पिता पितामह ।
तेहि कुल जन्म सुगमभक्त मे पति मातुल महँ ॥
परम सती निय संग भजन हनुमत रघुवर मिय ।
आलू कय मिस अश्व यान अहि हरि दर्शन दिय ॥
मानस प्रमी अति प्रबल सन्त मेवि निष्कण्ठ मन ।
रामदेवजी मिरदाहा टोला पटना राम जन ॥

श्रीरामदास कहार १५७

स्वर्णा भूषण लोभ पुरोहित जेहि सुत मारेउ ।
सत्यदेव सुनि कथा लाश सुत टकि घर धारेउ ॥
द्विज कुलगोत जिवाइ सतिय मन जहर खान गुनि ।
सन्त रूप हरि प्रगटि जिवायो तासु पुत्र पुनि ॥
पटना से दक्षिण मुवमि कोस अठारह महँ लियो ।
रामदाम अति धीर मति कुल कहार पावन कियो ॥

श्रीरामरत्नदामजी तख्त (जयपुर) १५८

मोहमयी मधि निर्वाचि माह माया जग त्यागी ।
कलाकार अति मिद्धहन्त हरि गुरु अनुरागी ॥
दामान्तहि शुचि रामरत्न शुभ नाम गुरू दिय ।
तरुण हृदय नित जानि नाम निज तरुण ख्यात किय ॥
शब्दचित्र मुन्दर लिखत रंग चित्र जन मुजस मन ।
तरुण निष्ठ ह रमकि पथ मदाचार रत विमल मन ॥
स्वामी श्रीरामदासाचार्य पिडौरी धाम गुग्दासपुर (पंजाब) १५९
राममंत्र जप निगन विज्ञवर विद्या व्यमनी ।
सेवत सन्तन म्वपर भेदगत धर्म सकुसनी ॥
विविध मभा महँ मभापनी बनि धर्म प्रचारि ।
रामानन्दाचार्य चरण पथ तनयन वारे ॥
पद्दर्शन माधु मदासभा भये धर्म समाज ही ।
श्रीरामदाम आचार्य वर पिडौरी महँ राज ही ॥

परमहंस श्रीबाबा राधवदासजी (वरहज) १६०

पेकीनी श्री पयाहारि जी के शुभ वंशहि ।
वरहज मरयू निकट राम मन्दिर अवन्तमहि ॥
अपि रामायण समिति करत मानस मुप्रचार ।
भारतहित गौरांगजेल गवने बहु वाग ॥
जन मेवक नेता प्रबल नित रामबहु हरि आस जी ।
परमहंस जग विदित अति बाबा राधव दामजी ॥
मानस राजहंस पं० श्रीविजयानन्दजी त्रिपाठी, भदौनी काशी, १६१
यद्यपि काशी मध्य बहुत मानसी कहावत ।

निजरुचि कलाविकाशि सर्वै नित गला बजावत ॥
परम मानसी कलाकार श्रुति साहित पण्डित ।
जापक श्रीशिव मंत्र रामपद प्रीति अम्बण्डित ॥
परम प्रतिष्ठा लहेउ तऊ कष्टु अभिमान न उर धरेउ ।
विजयानन्द त्रिपाठि लखि राम भक्त उर मुख भरेउ ॥

व्याकरण वेदान्ताचार्य स्वामी श्रीजानकीदासजी (जगद्गुरु) १६२
शब्द शास्त्र अति निपुण न्याय वेदान्त यदायो ।
राय गटहि की तजि महन्ति श्रीअवधहि आयो ॥
करत शास्त्र शुचि दान पढन हित जो कोउ जावै ।
तन मन बन भरिपुर गढी श्री अवध रहवै ॥
वक्तापरम प्रबगडशुचि लिखत जगद्गुरु नाम धरि ।
स्वामि जानकीदासजी अवध बने पग राम पारि ॥

स्वामी श्रीरामचरण शरणजी शास्त्री विहारी, १६३
वैष्णव वीर उदार विमल उर अति उत्साही ।
रामनारायण नरण शरण शिष श्रीपथ राही ॥
रामचरण शरणान्त नामवर विज्ञ विगर्जे ।
सम्प्रदाय जित हत मत बहु साजत माजे ॥
विविध शास्त्र अभ्यस्त किय लेखकला व्याख्यान पढे ।
बसि विहार जागृत करत शुचि वैष्णव विद्वान भट ॥

ब्रह्मचारी श्रीमत्सत्यव्रतजी (बरहज) १६४

बाबा गवबदास चरण शुचि शिष्य सरल अति ।
धर्मप्रचारक मुमट राममिय भजन विमल मति ॥

मध्य दिवस तक मानधार नित श्रीहरि भजहीं ।
आमोद्योग प्रचार हंत सब साधन सजहीं ॥
संस्कृत हिन्दी इंगलिश यपि स्कूल जगहित करत ।
सत्य व्रतहिं नित रत रहेउ ब्रह्मचारि श्री सत्यव्रत ॥

पं० श्रीरामाकान्त त्रिपाठी एम० ए० १६५

ढवनेमे पढ़ि देववाणि बहु शास्त्र थहाई ।
रूपकला पद कृपा राम जपि शुचि रुचि पाई ॥
रामबल्लभाशरण चरण गहि राममंत्र लै ।
विविध नरन मुख देत राम जपवाइ द्रव्य दे ॥
रूपकला कुंजहि अवध यपि अखण्ड कीर्तन लमेउ ।
रमाकान्त त्रिपाठी जी डालमिया नगरहि बसेउ ॥

महन्त श्रीबाँकेरामजी मिश्र, तुलसीघाट काशी १६६

तुलसी गादी कर महन्त शुचि सरल विमल मति ।
विजयानन्द मुगुरू पाइ मानस भावहि अति ॥
संकटमोचन हनुमान पद प्रीति परम शुचि ।
रामजनन लखि लहि अनन्द प्रभु पद मेवन रुचि ॥
श्री तुलसी पद पादुका नाव खण्ड नित पूजहीं ।
पण्डित बाँकेरामजी हनुमत भजेउ न दूजहीं ॥

महन्त श्री देवदासजी, ढाकोर १६७

धनुधारी पद पूजि अवध श्री सीय कृपालहि ।
लहि श्रीकामद दरस शास्त्र सिद्धान्त रुचिर गहि ॥
भक्तिलता पत्रिका साधु सर्वस्व प्रकाशे ।

लिखेहु बहुमुखी लेख धर्म साहित्य विकाशे ॥
वक्ता प्रखर गंभीर श्री सम्प्रदाय दृढ़ प्रेम रुचि ।
देवदास डाकोर बस विन्दाचार्य सुवंश शुचि ॥

स्वामी श्रीगणदेवजी, जामेश्वर (कानपुर) १६८

सन्यामी सुविरक्त शब्द साहित्य मैफायो ।
श्री शांकर वेदान्त केर मय अंग थहायो ॥
शुचि उपदेश गंभीर वाक् सुस्पष्ट सुहावै ।
कथा भागवत सरम रुचिर तुलसी कृत गावै ॥
परम तिलिछु त्यागवद्द सम दसादि साधत सुयश ।
श्रीजामेश्वर कानपुर रामदेव स्वामी सुवम ॥

परम तवस्वी परमहंस श्रीगणेशदासजी १६९

बागवंकी प्रान्तभांदि बहलीपूर इक ।
त्यागो रानाधारदास तर कीन्हे तहँ टिक ॥
इक आनन पर वेदि वर्षे छत्तिम तक रहेऊ ।
गये अंगभटि भूमि मंग जनु विधि निर्मवऊ ॥
कृतयुग ऋषिजाजुलि गया यहि कलियुग किय कठन तप ।
विन्दाचार्य सुवंश महँ राममंत्र इकना जप ॥

श्रीवियोगी हरजी १७०

गृहवेष शुचि सन्त सरल बाल ब्रह्मचारी ।
श्रान्तद नन्दन चरण सकय विज उग निवधारी ॥
गद्य पद्य दोउ सरम परम प्रतिभानय लेन्ना ।
दीन दुग्धित लखि करत हृदय अतिशोच अलेखा ॥

श्रीहरिप्रसाद शुचि नाम प्रिय अल्लद्विवेदी विप्रवर ।
ईश वियोगी जानि निज क्ख्यात वियोगी हरि सुकर ॥

ब्रह्मचारी श्री बासुदेवाचार्यजी संपादक "विरक्त" १७१

वक्ता अति निर्भीक अधर्मिन कहँ रिपुभासैं ।
शुचि विरक्त मधि अनय चहत जड़मूल विनासैं ॥
रास्त्रधर्म मय लेख श्यामपट पत्रन मधि लिख ।
सामाहिक सुविरक्त काढि नितदेत परम शिख ।
थपे वाचनालय सुभग सम्प्रदाय श्री विमल यश ।
बासुदेव आचार्यजी ब्रह्मचारि श्री अवध वम ॥

राजकुमार श्रीगुर्वीरदासजी अमगवाला १७२

देश काठियावाड़ राज्य बगसरा विराजै ।
राज कुँअर रघुवीरदास अधिपति तहँ राजै ॥
अमरा बाला क्ख्यात परम वैष्णव विद्वाना ।
ग्रंथ लेख शुचि लिखत योग माजत मानमाना ॥
श्रीगणवन्तभाशरण की कृपापाइ सुरहस्य मल ।
राजकाज नित करत हँ राममंत्र जापक प्रबल ॥

भक्तवर श्रीरामप्रसाद स्वर्णकार (मिवनी चाँपा) १७३

करत सुमानसपाठ नित्य शुचि सन्तन सेव ।
सुनै कथानित जाइ चित्त जग में नहिं देव ॥
युवक पुत्र मरिगयउ तबहुँ नहिं कीर्तत छौंड़े ।
नितवत मन्दिर जाई राम हरि कीर्तन छौंड़े ॥
परम शान्त नित भजन इत परमानन्द मुमगन मन ।

मिवनी विलासपुर प्रांत वम रामप्रसाद सुरामजन ॥

फलाहारी श्रीगोविन्द दामजी १७४

फलाहार नित करेहु सन्त सेयेहु मन लाई ।
श्रीतुलसी कृत काव्यन पर अतिप्रीति मुहाई ॥
सरल हृदय तप निरत निकट व्यमनन्हि नहि जावै ।
पाइ मानमिन मुहद हृदय अति प्रेम मुहावै ॥
बहुत जनन उपदेशि नित धर्म रामपद स्तकरत ।
त्यागी गोविन्ददामजी धाम नाम हरि चरितरत ॥

श्रीस्वामी बलरामदासजी मछलदा (इलाहाबाद) १७५

जहाँ न पूछत बात सन्तकी कबहुँ कोई ।
तहाँ थपे सिय राम सन्त सेवन नित होई ॥
परम सरल सुठि शील सतत हिय रामनाम रत ।
विद्यामन अति प्रीति अविद्या अनय उग्वारत ॥
प्रांत इटावै विकट महि तहँ प्रचारि हरिभक्ति मत ।
बलरामदास स्वामी परम सन्त अछलदै हरि भजत ॥

मिविला घाले श्रीसुतीक्षणजी १७६

दूधमती तट बहुत काल बसि सीय राम रटि ।
रामावावा संग निवसि सिय राम चरण सटि ॥
बालक सम अति सरल परमहंशी वृत्ति आई ।
महानाग डसि लपटि राम रटि विषहि भगाई ॥
सरयू रजमहँ लुटत नित शीत धाम नहिं कुछ रलेउ ।
श्रीमतीछण तजि जबलपुर अवध राम महलिन मिलेउ ।

महन्त श्रीनरोत्तमदासजी घोंटा कुँज (वृन्दावन) १७७

त्यागि वंगभू वास कीन्ह श्री श्री वृन्दावन ।
परम निष्ठ चैतन्यचरण हिय रखत कृष्ण धन ॥
सरल मुहद शुचि सन्त मेव महँ प्रीतिमृ हरिपग ।
करि मुनियभ हरि नाम जपत नहिं चलत अन्धमग ॥
यमुना तट वशावट निकट घोंटा कुञ्ज सुखचि शुचि ।
सन्त नरोत्तमदासजी वर महन्त हरि चानि मुख ॥

गमायणी श्रीउद्धवदासजी अयध्या १७८

वाँस वरंली जनमि अवध पटि मानम लीन्है ।
बसि कानद दिग करवी महँ सुर वाणिहिं चीन्है ॥
लीला विग्रह रामभीय पर प्रेम परम रुचि ।
राम कोट महँ जन्म भूमि दिग थपि मन्दिर शुचि ॥
द्वेष न कबहुँ काहु मन सरल भाव सवमों रहत ।
श्री श्री उद्धव दाम जी तुलसी कृत सुन्दर कहत ॥

श्री हंसदासजी महाराज (वृन्दावन) १७९

भावुक परम गंभीर अपन मानन गोपी तन ।
राधा कृष्ण वरत्व भक्ति नित रंगे रहत मन ॥
श्री निम्बार्क मुकोट विरचि वृन्दावन वमिगे ।
भक्त्य भागवत भाव भाषि भगवत पद लमिगे ॥
बहुत जनन हरि शरण करि सेवत प्रीतम प्रियहि नित
हंस दास जू भागवती सेवी सन्त उदार चित ॥

श्री विनीतविहारीदास जी १८०

रघुवर यदुवर चरित कहत जनु अमृत वर्षत ।
भक्ति भावना भरित भक्त भावुक मन कर्षत ॥
विनयी परम सुशील हृदय अभिमान न राखत ।
हृदय फुरत हरिभाव सरस कविता करि आपत ॥
नित पद रचना नियम इक भक्त चरित गावत रतत ।
सुकवि विनीत विनीत हैं श्रुति पुनीत हरि चरित रत ॥

महन्त श्रीगंगादासजी छोटाछत्ता पुरी १८१

राम प्रसादाचार्य वंश अवतंस विमल मति ।
श्रीमानम नित कहत प्रेम पगि हरि गुरु पद रति ॥
छोटा छत्ता पुरी मध्य शुचि वैष्णव सेवा ।
परम उदार चरित्र दिव्य वपु जनु कोउ देवा ॥
वैष्णव वपु धरि जाय जो मन चाहै जव लगि रहै ।
श्री श्री गंगादास के सन्त प्रेम कोउ किमि कहै ॥

नवद्वीप के सन्त गण १८२

महा भागवत मिद्ध मन्त ललिता सखि नामा ।
रचि समाज वाईहि मंत सेवत सुवधामा ॥
ललिता मर्वा प्रमिष्य मिद्ध श्रीरामदास विभु ।
श्री अद्वैताचार्य वंश अद्वैत दाम प्रभु ॥
सेवत वैष्णव प्रेम युत निन गोंगड़ पदाब्ज रति ।
श्री नवद्वीप सुधाम महँ परम सन्त ये विमल मति ॥

श्रीअभिरामदासजी रामायणी (मानस कोकिल) १८३

कोकिल सम करि कुहू कुहू श्रोतन आकर्षत ।
भव तापित जनहृदय राममिय यश जल वर्षत ॥
श्रवण सुखद अति ललित गान तुलसीकृत गावत ।
मुनन बधुर गुंजार लोग सब तजि भक्ति आवत ॥
सम्प्रदाय श्री विमलयश रघुपति भक्ति प्रचारहीं ।
अभिरामदास कोकिल सदा मानस कथा उचारहीं ॥

परमहंस श्रीरामचन्द्रदासजी रामघाट अयोध्या १८४

वक्ता परम प्रचण्ड चण्ड शारद वच मण्डित ।
प्रखर तेजमय वाक्य शब्द साहित्य सुपण्डित ॥
मानम जानहिं निरत सतत निर्भीक रहत चित ।
राष्ट्रनीति अति कुशल चहत नित करन सकलहित ॥
सम्प्रदाय हित रहत नित तन मन धन अर्पण किये ।
रामचन्द्र के दाम शुचि परमहंस पदवी लिये ॥

फलाहारी श्रीगणनालकदासजी (सुलतानपुर) १८५

बालक सम मन सगल राम बालक दामहिं के ।
गुणगण सकै न गाइ रहन हारेउ पामहिं के ॥
फलाहार नित करेहु वर्ष चालिम लौ तन लगि ।
अतिथि मन्तकहँ खूब जिभावत तेहि रुचिमहँपगि ॥
सुलतानपुर तट गोंगती मन्त फलाहारी विदित ।
श्री रामानन्दाचार्यपद प्रीति बाल प्रभु गुरुगदित ॥

रामायणी श्रीप्रीतमदासजी, जौरा (मुरैना) १=६

जिला मुरैना राज्य ग्वालियर जौरा गावें ।
पुर बाहर वन मध्य रुचिर रचि गुफा रह्यो ॥
प्रीतमदास मुनाम प्रिया प्रीतमपद प्रेमी ।
मानम वक्ता कुशल मंत्र जापक दृढ़ नेमी ॥
रामदासजी करह गुरु तिननं सब गुण पाव्यो ।
परम प्रतिष्ठा प्राप्त तऊ गर्वी तनऊ नहिं लाव्यो ॥
विन्दुगाद्याचार्य जगद्गुरु स्वामी श्रीगुरुप्रसादाचार्यजी १८७
करत नियम आचार यथा गादी की रोती ।
पूजन पाठ सनेम धनुधर प्रभुपद प्रीती ॥
गोरक्षा हित हेतु वाम कारागृह कीन्हे ।
तदपि न गोचर भूमि तनऊ म्लेच्छनकहँ दीन्हे ॥
ब्रह्मनीति नृपनीतिमय रक्षक धर्माचार्य के ।
गुणगण कहँलगि कह कोउ (श्री)रघुवरप्रसाद आचार्यके ॥

पौहारी श्रीउपेन्द्रदासजी महाराज (पैकोली) १८८

श्री पौहारी थपित मुभग गादी पैकोली ।
चरण पादुका वैकुण्ठपुर तेहितर पुनि औलो ॥
तहँ व्रतमान उपेन्द्रदास शास्त्री बड़ भारी ।
नियम धर्म कुलरीति यथाविधि पालत मारी ॥
मन्तगाथ हरि सेवकर नियम एकरस अटल रह ।
लौ जमाति विचरत तदपि प्रीति वास साकेतमहँ ॥

परमहंस श्रीरामचरणदासजी वेदान्ती, अरैल (प्रयाग) १८९

बहुत काल रहि अवध व्यास दर्शन पाड़ि गयऊ ।
शास्त्रनसार सँभारि राम सुमिरण मन दयऊ ॥
परम निष्ठ गुरुचरण मन्त मेवत मन लाये ।
सर्वम मीनाराम नाम महँ चित्त लगाये ॥
परमहंस वेदान्ति क रामचरण दासह मदा ।
जिमिजलजपत्रजलमहँ रहततिमि रहत मन्त विचमम्पदा

वांणी भूपण पं० श्रीगमस्वरूपदासजी (भागवत व्यास) १९०
ख्यात कानपुर निकट गौरियापुर इक ग्रामा ।
विद्यालय तेहि ठाम मन्दिगृह महँ नियगमा ॥
पण्डित रामस्वरूपदास तेहि कज सँभारत ।
परम ललित भागवत बखानत रहत यज्ञ रत ॥
वाणीभूषण व्यास कहि आहत मन्त समाज में ।
मदाचार रत निष्ठ श्रीरामानन्दाचार्य में ॥

मण्डलेश्वर महन्त श्रीरामबालकदासजी योगीश्वर १९१

प्रांगधरा काठियावाड़ के मण्डलेश्वरजो ।
राम मुबानकदास ख्यात कहि योगेश्वर सो ॥
राम महल अध्यक्ष विश्व कन्याण प्रचारेउ ।
शान्त मुशीन मुबोध मन्त गुण बहु उर धारेउ ॥
श्री रामानन्दाचार्य पद प्रेम अटल नित मार्ग पर ।
अवध वास दृढ़ निष्ठ रुचि सम्प्रदाय आचार पर ॥

श्रीमद्वन्त अर्जुन दासजी तेरह भाई त्यागी १९२

परम तितिक्षा मय जीवन रख त्याग सुभारी ।
गयेउ न व्यसन नगीच यदपि तन भस्म सुधारी ॥
संग तपस्विन रखत तिन्है सुख प्रतिपल देई ।
पालत नियम अचार राम जपि हिय सुख लेई ॥
त्यागी तेरह भाइ कर श्रीमद्वान्त पद लहि बड़ो ।
श्री श्री अर्जुन दास कर इन्द्रिन्ह पर साशन कड़ो ॥

श्रीसीतारामाचार्य शास्त्री (नासिक) १९३

सीतारामाचार्य राष्ट्र सेवक दृढ़ नेमी ।
वक्ता सुदृढ़ उदार सरल विद्वज्जन प्रेमी ॥
शास्त्री परम गँभीर वचन अविरोध उचारेउ ।
सम्प्रदायहित कार्य सदा बढ़ि अग्र सँभारेउ ॥
सदाचार की सीम अति नासिक रहि श्रीहरि भजे ।
विद्या ज्ञान विराग वय बृद्ध सन्तगँण महँ छजे ॥

त्यागी महान्त श्रीरामचरणदासजी (बंगाली) १९४

राम चरण अनुराग सन्त सेवन रुचि भारी ।
गीतामानस कथा कहत बहु भाँति सँवारी ॥
सहित राजसो ठाट राममिय पूजन राखत ।
मायापुरि बड़ अधिप तऊ सब सन प्रिय भाखत ॥
रामचरणदासहिँ सबै बंगाली कह सन्त जन ।
श्रीरामानंद आश्रम भये सन्तसेव थिर टेकि मन ॥

लाल श्री पन्नगेशजी बस्ती (भूत-पूर्व मैनेजर कनक भवन) १९५
ब्रज भाषा के सुकवि लाल श्री पन्नगेशजी ।
मानसिंह द्विजदेव पितामहँ पितु भुनेश जी ॥
मैनेजर बनि कनक भवन सिय सियपिय सेई ।
पिंगल साहित्य रीति सरस काव्यन लिखि लेई ॥
सौमित्रविजय शुचि काव्य अरु नारान्तक बध आदि है ।
सकल तनय युत काव्य रस लेत सकल सुखवादि है ॥

पं० श्रीजागेश्वर जी शर्मा (पराम वाराह क्षेत्र) १९६

ऊर्ध्व पुण्ड्र सुविंशालभाल गल तुलसि युगल धरि ।
मृदु भाषी विनयी शुशील सन्तोष हृदय करि ॥
श्री भागवतरु वाल्मीकि रुचि कथा बखानै ।
राम चरण दृढ़ प्रीति सन्तलहि अति सुखमानै ॥
संगम सरयू घाघरा क्षेत्र ख्यात वाराह जो ।
पंडित जागेश्वर सुद्विज सम्प्रदाय श्री राह सो ॥

पं० श्री रामउजागिर तिवारी, पुरुषार्थ (अयोध्या) १९७

अलहदत अति विख्यात प्रथम पुनि हरियश गाये ।
करेहु प्रेम युत सेव सन्त जो घर चलि आये ॥
वसि पुरुषार्थ ग्राम अवध तट सतत सत्य मन ।
करेहु नवान्हिक पाठ सदा मानस हरिपद मन ॥
राम कुमार कनिष्ठ सुत पालक परम पिता वचन ।
राम उजागिर विप्र सुठि नम्र विवेकी परम जन ॥

महन्त श्रीजानकी वल्लभ शरणजी, श्रीरामलीला मठ (छपरा) १९८
 सारन सिकटी ग्राम छबीला राम तिवारी ।
 युगल बिहारी शरण चरण के शरण मुखारी ॥
 पट ऋतु उत्सव करत रामसिय देवा देवी ।
 देश भक्त मानस प्रेमी हरि हरिजन सेवी ॥
 गुरु गद्दी छपर लहो राम लिला मठ भरण जू ।
 संगीत शास्त्र ज्ञाता निपुण जानकिवल्लभ शरण जू ॥

महान्त श्रीरघुनन्दनशरणजी (हनुमत निवास) १९९

गुरुपद तल नित निवसि सकल विधि सेवा करिके ।
 विज्ञ सरल शुचि शान्त दान्त उर आनन्द भरिके ॥
 गुरु प्रसाद लहि नाम धाम रुचि ध्यान सुपावन ।
 सम्प्रदाय दृढ़ नेम प्रेम लीला छवि छावन ॥
 सन्त सेव सियराम गुरु आचारज उत्सवनिरत ।
 हनुमन्निवास रडि हरि भजत श्रीरघुनन्दनशरण नित ।

डा० श्रीरामतबक्या शर्मा एम० ए०, डी० लिट०, पटना २००

मानस पर इमि शोध ग्रन्थ नहिं काहु बनायो ।
 लै अनार्थ शुचि काव्य भाव तुलसी कर गायो ॥
 वक्ता परम गंभीर सत्य वच परम सरल शुचि ।
 सन्तभाव ग्रह रहत रैन दिन रखत शास्त्र रुचि ॥
 रामतबक्या विप्रवर एमे पढ़ि डी० लिट० भये ।
 सदाचारि निर्भीक अति राम चरण शुचिरंग रये ॥

स्वापी श्रीरामवल्लभाशरणजी खेडर २०१

कान्य कुब्ज द्विज जन्म प्रेम राघव के पद में ।
 समता मिलत न कोइ विनय वक्ता यहि जग में ॥
 वसि बिठर दृढ़ नियम देह जनहु नहिं छुवावैं ।
 भक्त मण्डलाकार बीच सरयु जब जावैं ॥
 श्रीरामवल्लभाशरण की ख्याती सकल समाजलों ।
 अस अद्वितीय आचरण पन देख्यो सुन्यो न आजुलों ॥

महन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी अयोध्या २०२

श्री श्री नृत्य गोपाल दासजी सन्तन सेवैं ।
 विविध शास्त्र पढ़ि रुचिर कथा कहि शुचियश लेवैं ॥
 परम सात्विकी वृत्ति जीति इन्द्रिय मन राखैं ।
 अति गम्भीर उदार सरस सबसों मृदु भाष ॥
 मणीराम की छावनी अवध जगत विख्यात अति ।
 करत महन्धी तहाँ शुचि रुचि गुरु हरि हरिजनन प्रति ॥

पं० श्री सीताराम शरण जी लक्ष्मण किला २०३

श्री भागवतरु राम चरित भरिभाव सुनावैं ।
 परम रसिक रस विज्ञ सीय रघुवर यश गावैं ॥
 वक्ता परम गंभीर विज्ञ जन आदर देवैं ।
 लखन किला आचार्य रीति आचार्यन सेवैं ॥
 लोक वेद व्यवहार की मर्यादा सब जानहीं ।
 परिदृत सीतारामशरणको सुभग संत सब मानहीं ॥

१० श्रीरामगोपाल शर्मा (आगरा) २०४

परम सात्विकी वृत्ति सन्त सेवी बुधि मन्ता ।
वात्सल्यमय मातु सीयपद प्रीति अनन्ता ॥
सुर नर दूनहुँ बानिहि पद रवि हरि यश गायो ।
वैद्यक साहित्य ज्योतिष अरु व्याकरण थहायो ॥
मानस भारत भागवत गाइ अन्त तक भाव भरि ।
शर्मा रामगोपाल जू मे गोपालपुर चाव करि ॥

॥ इति भक्तमाल-भास्कर पूर्वार्द्ध ॥

श्रीगुरु परम्परा वन्दन

श्रीराम सीता हनुमान ब्रह्मा वशिष्ठ पराशर व्यास शुक बोधाय-
नाख्य पुरुषोत्तम । गंगाधर सदाचार्य रामेश्वर द्वारानन्द देवानन्द
श्यामानन्द श्रुतानन्द पूज्योत्तम ॥ चिदानन्द पूर्णानन्द श्रियानन्द
हर्षानन्द राघवानन्द श्रीरामानन्द भाष्यकारोत्तम । इन पूर्वाचार्यन को
सप्रेम प्रणाम जिन रोप्यो हैं श्रीसम्प्रदाय कल्पद्रुम सर्वोत्तम ॥ १ ॥

श्रीमद्रामानन्द योगानन्द मयानन्द पुनि श्रीतुलसीदास भागवती
नैनराम हैं । स्वामचौशानी हैं ऊधोमैदानीजू खेमदास रामदास
ओ लक्ष्मणदास भक्ति धाम हैं ॥ देशदास मगवानदास बालकृष्णदास
बेणीदास श्रीरामधवलदास नाम हैं । श्रीरामवचनदास प्रेमगुरु
श्रीमद्रामवल्लभाशरणजू को कोटिन प्रणाम हैं ॥ २ ॥

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

ठाकुरप्रसाद एन्ड सन्स बुकसेलर,

राजादरवाजा, कचौड़ीगली, बाराणसी ।

भक्तमालका शुद्धी पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	३	चंचकरी	चंचरीक	१२१	१८	हनके	इनके
"	११	सकाल	भकल	"	२२	तैवेथ	नैवेथ
१६	१८	पर्व	परं	१२२	१२	रंजन	गंजन
२१	६	कबू	तोपैकबू	१२५	१४	प्रस्तुत	प्रस्तुत
२४	२	कसे	कैसे	१२६	२३	जालमें	कालमें
३०	७	अलाप	अलाप	१३३	१	अज्ञेश	अज्ञेश
"	११	रज	राजा	१३८	१६	थो	को
"	१४	ध	धरै	"	२२	आश्रय	आश्रम
३८	२०	ब्रज	बज्र	१४२	२१	श्रीमदाचार्य	श्रीमदाचार्य
४१	१	चाह	चहि				पादके
४६	१८	बालि	बलि	१६०	११	विद्वज	पद्विज
४७	१८	री	मेरी	१६४	७	रामदि	रामादि
४९	१४	कोरो	कोरोसोई	१८६	१८	परप्राथ	परमाथ
५०	७	शमीक	शमीक	१९०	६	अष्टम	दशम
५२	८	अमु	प्रभु	२१०	१५	वैद्य	वैराग्य
५२	१६	रूपराशि	इन नवधा	२३८	२१	समाधानाथ	समाधानाथ
		भगवान	भक्तिके आश्रय	२४२	११	कृष्णदास	अनन्तानन्द
५५	१०	बोधायन	बोधायन	२४३	१	सत्यु, सत्य	सत्यु, सत्य
"	१८	विद्वों	विद्वद्वों	"	४	बर्ग्या	बर्ग्या
८२	६	बादराज	बरदराजा	२४५	१६	प्रवज	प्रसन्न
"	६	रंभम	रंगम्	२४६	१६	चप्पर	झप्पर
८८	२४	राम	राज	२५८	११	गायो	रायो
९३	१४	पुर	पुरा	२७१	२	मिलत	मिलत
"	१५	वष	वषे	"	१६	गावतो	गावतो
१००	१७	कथि	कथितं	२७२	१४	प्रति	प्रोति
१०७	२	सज्जनारयण	ससज्जनारयण	२८०	१६	के आगे २ पाँच और पदें	
१०६	४	धाय	धाम				
११६	१३	शुक्ल	शुक्ल				

बोलाहू न साथे तब भरकत हियो हैं ।
कहैं सोही करें हम पाँव तेरे परैं अब

पृष्ठ पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८४ ६	बनो	वाना	४६३ २०	किमगद	कोकमगद
३२८ १४	काहि	बाहि	४६४ ७	रीतिरेगन्धर्व	गन्धर्वरीतिरे
३३२ २२	भानिरोचो	भानिपाँचो	४६५ ११	करा	करा
३३५ २	मरयो	भरयो	४६५ ५	देशवा	वरावा
३६१ १६	दुःख	दुःख	४७० २	धरता	धरण
३७७ ७	द्वितीज	द्वितीय	४७६ ५	जानिकेर	जानिके
३८० ६	विपुव	विदुष	४८२ १३	गोल	गोल
३८२ ११	आगार	आगर	४९३ १४	प्रताप	प्रताप
४०३ १८	कुण्डै	कुण्ड,	४९४ ११	मथुरा	मथुरा
४०६ १७	विशिष्यो	विशेष्यो,	५२६ १४	ण	पा
४२० ३	द्वदश	द्वादश	५३० १	कावर	कावा
४२५ ३	धक्त	भक्त	५४४ ४	बाको	बाको
४२५ ३	गोविन्दजनमई	जनमई	५५६ १७	आगम	आगम
४२५ ४	जनादेन	गोविन्द- जनादेन	५६२ १६	सन्दर	सुन्दर
४२७ ८	आद्य	आद्य	५७६ ८	स्वण	स्वर्ण
४४३ ६	सकति	सकति	५८७ ६	रंगसा	रंगदा
४६१ २०	मेडता	मेडता	५९१ ८	धरिदाम	दामधरि
			५९२ २०	विलधारी	विलकधारी

काहूके भरोसो गणनाथ शुद्धिसिन्धु को है काहूके भरोसो
भानु तिमिरहरण को । काहूके भरोसो शक्ति शत्रुगण गंजनी को
काहूके भरोसो शंभुतारणतरण को ॥ ज्ञान को विराग को भरोसो
काहू भोमनिधि काहू के भरोसो हरि पीलउद्धरण को । मेरे है भरोसो
सीताराम-पदपत्र-भृंग श्रीगुरु उदार रामवल्लभाशरण को ॥ १ ॥

दीन :-

जानकीदास श्रीवैष्णव

श्रीवैष्णव-साहित्य-संस्थान, श्रीमयोध्याजी

श्रीरामवल्लभाशरणाश्रम, आगरा रोड, जयपुर ।